[मारवाड़ का हिंदी नाटक]

यह चांडाल चौकड़ी, बड़ी अलाम है।

लेखक - दिनेश चन्द्र पुरोहित

श्री दिनेश चन्द्र पुरोहित ने इस पुस्तक का शीर्षक "अलाम" शब्द से शुरू किया, जो पुस्तक की कहानी के लिए पूर्ण उपयुक्त है। हिंदी साहित्य के नाटकों में ऐसे भी पात्र होते हैं जो आदतन शरारती होते हैं, और उन पर किसी का वश नहीं चलता..ये अलाम, जबरे या कुबदी श्रेणी में आते हैं। इस पुस्तक में ऐसे अलाम किरदारों की गतिविधि के बारे में जब आप पढेंगे, तब आप हंसते-हंसते लोट-पोट हो जायेंगे।

रवि रतलामी

[संपादक, ई पत्रिका 'रचनाकार']

प्रकाशक –

राजवीणा मारवाड़ी साहित्य सदन, १४९ अंधेरी-गली, आसोप की पोल के सामने, जोधपुर

[राजस्थान].

प्राक्कथन

नाटक “यह चांडाल चौकड़ी, बड़ी अलाम है”

लेखक के विचार - “यह चांडाल चौकड़ी, बड़ी अलाम है” नामक हास्य-नाटक मैंने उन कर्मचारियों की हास्य-गतिविधियों को आधार बनाकर लिखा है, जो साथ में उठने-बैठने वाले अपने उन अफ़सरों से परेशान रहते हैं..**जो इतने कंजूस हैं कि वे अपने साथ इन साथ उठने-बैठने वाले कर्मचारियों पर एक पैसा ख़र्च नहीं करते। बल्कि, सच्चाई यह है “वे अधिकारी लोग इन अधीनस्थ कर्मचारियों से ख़र्चा करवाकर, यश ख़ुद लुट लेते है।”** ऐसे अफ़सरों से पैसा ख़र्च करवाना, आसमान से तारे तोड़कर लाने के बराबर है। आख़िर, इन कर्मचारियों ने इन अधिकारियों को सुधारने का बीड़ा अपने हाथ में उठा लिया। इस तरह, ये कर्मचारी अपनी तमाम कोशिशें करते हैं, मगर सफ़लता हासिल नहीं कर पाते। क्या कहें..? यहाँ तो इनके साथी अफ़सर मोहनजी इनके बराबर ही बड़े अलाम निकले। जो इनसे दस क़दम आगे रहते हैं, और वे कभी इनके फैलाए ज़ाल में नहीं फंसते। वे तो कोई सच्चा-झूठा बहाना बनाकर, किसी तरह पैसे ख़र्च करने से बच जाते। मोहनजी को इन कर्मचारियों के साथ उठने-बैठने से कोई एतराज़ नहीं है, कभी-कभार रेलगाड़ी में जगह न मिलने पर आली जनाब मोहनजी अपने इन साथियों के साथ पाख़ाने के पास बैठ जाया करते हैं..वहां बैठकर सभी ताश के पत्ते खेला करते हैं। मगर, दूसरे अधिकारी दयाल साहब को पाख़ाने के पास बैठना, अच्छा नहीं लगता। वे इनसे दूरी बनाकर, किसी दूसरे डब्बे में जाकर बैठ जाया करते हैं।

इन लोगों की हास्य-गतिविधियों को आधार बनाकर मैंने ऐसा ताना-बाना बुना है, जिससे नाटक का हर खंड एक-दूसरे से जुड़ा रहे। इस नाटक के कुल १५ खंड है। मुझे आशा है कि, हर खंड को पढ़ते-पढ़ते पाठक हंसते-हंसते लोट-पोट हो जायेंगे। मैंने इस नाटक की कहानी इस तरह तैयार की है, जिससे इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना पाठक की इच्छा इस पुस्तक को रखने की नहीं होगी। क्योंकि, इसकी रफ़्तार ही कुछ ऐसी है कि, पाठक इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना नहीं रह पायेगा। एक बात और है कि, इस नाटक के पात्रों की बोली-चाली और संस्कृति जोधपुर के भीतरी शहर के निवासियों से मिलती है, अत: पाठकों को कई दफ़े ऐसा लगेगा कि, वे इन पात्रों को अच्छी तरह से जानते हैं। इन पात्रों के संवादों में अदब भरा है, इसी कारण जोधपुर के निवासियों की तरह ये एक-दूसरे के नाम के पीछे “जी” या “सा” लगाकर उन्हें संबोधित करते हैं। जैसे गोपसा, मोहनजी, रतनजी आदि, ये इसके ज्वलंत उदाहरण है। इसके अलावा जिन लोगों का परिवेश जोधपुरी “खां” साहब लोगों का है, वे उनकी तरह “जा रिया है” अरे ओ नूरिया, आदि

वाक्यों को जोधपुरी खां साहब की तरह बोलते हैं। इनकी यह ऐसी बोली है, जो हिंदी और मारवाड़ी भाषा के संगम से बनी है। मुस्लिम औरतों के वाक्यों में आप मरदूद, नासपीटे, करमज़ले, खबीस आदि गालियों को पायेंगे। ये अल्फ़ाज़, मैंने लबों पर हास्य-लहर लाने के लिए किये। मुझे पूरी आशा है, यह पुस्तक ज़रूर पाठकों को पसंद आएगी।

पाठकों से निवेदन है कि, वे इस पुस्तक को पूरी पढ़कर अपने विचार मेरे ई मेल **dineshchandrapurohit2@gmail.com** और dineshchandrapurohit2018@gmail.com पर अवश्य भेजें।

आपके ख़त की इन्तिज़ार में

दिनेश चन्द्र पुरोहित

१४९, अँधेरी-गली, आसोप की पोल के सामने, जोधपुर [राजस्थान].

--

एफ़ सी.आई. के सेवानिवृत भाई यादव पुरोहित के विचार

श्री दिनेश चन्द्र पुरोहित ने इस नाटक को लिखने का सफ़ल प्रयास किया है। वास्तव में देखा जाय तो रतनजी, ओमजी, रशीद भाई जैसे कई कर्मचारी डिपो में मिल जायेंगे। कोई रतनजी और ओमजी की तरह मेहनती होतें हैं तो कोई रशीद भाई जैसे कर्मचारी अस्थमा, वी.पी. आदि बीमारी का बहाना गढ़कर काम से बचे रहते हैं। इस पुस्तक में डस्ट-ऑपरेटर, पीकर, मज़दूर आदि कर्मचारियों की समस्याओं का उजागर किया है, जो सत्य है। मैं ख़ुद इस महकमे में विद्युत तकनीकी के पद पर कार्य करता था, मैंने स्वयं इन कर्मचारियों की समस्याओं को इन आँखों से देखी है। जो सत्य है। कर्मचारी के सेवानिवृत हो जाने के बाद सरकार उस कर्मचारी की पोस्ट ख़त्म कर देती है व उसके स्थान पर कभी नए कर्मचारियों की नियुक्ति नहीं करती। यह भी सत्य है, कर्मचारी के सेवानिवृत हो जाने के बाद उसे पेंशन नहीं दी जाती। इस तरह, काम का बोझ और भविष्य सुरुक्षित न होने से कर्मचारी सरकार से संतुष्ट नहीं है। इस नाटक में हास्य-रस की ओट में श्री पुरोहित ने, गुड़ में लपेटकर जिस तरह समस्याओं को पाठकों के सामने रखा है, यह इनका प्रयास तारीफ़े-क़ाबिल है।

यादव पुरोहित

सेवानिवृत विद्युत तकनीकी

जोधपुर।

--

इस पुस्तक के कुल १५ खंड हैं, अब आप - पहला खंड -

“माल ज़रूर उड़ाओ, मगर घर का नहीं।”

पढ़िए।

नाटक “बड़ी अलाम है, यह चांडाल-चौकड़ी।” का

पहला खंड

“अफसर, जो कोहनी पर गुड़ चढ़ाए रखते हैं...?”

लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

[खंड १ से ख़ास कथन]

ये आली जनाब, चाय क्या पायेंगे..? अरे जनाब, आली जनाब ठहरे, अफसर। जो कोहनी पर गुड़ चढ़ाए रखते हैं..ख़ुद ख़र्चा करते नहीं, मगर अपने नीचे वाले कार्मिकों से ख़र्चा करवाकर यश ख़ुद लुट लेते हैं। ये महाशय तो...

[मंच पर प्रकाश फैलता है, जोधपुर पचेटिया पहाड़ी के पीछे सूरज देव उदय होते दिखायी देते हैं। रफ़त: रफ़त: चारों ओर उनका उज़ाला फैलता जा रहा है, अब उनकी रौशनी में जोधपुर का क़िला ‘मेहरानगढ़’ सोने की तरह चमकने लगता है। पेड़ों पर बसेरा करने वाले परिंदे अपने बसेरे को छोड़कर, भोजन की तलाश में जा चुके हैं। धूप बढ़ती जा रही है, मगर मकान की छत पर नींद के आगोश में पड़े मोहनजी, अभी तक उठे नहीं है। उनकी धर्म पत्नि लाडी बाई, उनको जगाने के

लिए सीढ़ियां चढ़कर, मुंडेर पर आ रही है। सीढ़ियों की रेलिंग पकड़कर, वह ज़ोर से आवाज़ लगाती हुई उन्हें कहती जा रही है।]

लाडी बाई – [ज़ोर से आवाज़ देती हुई] – अजी ओ, गीगले के बापू। उठिये, जी। उठिए, जल्दी उठिए। अरे भगवन, धूप तेज़ हो गयी है..! अब कब उठेंगे, आप ?

[लाडी बाई मोहनजी के बिल्कुल, निकट आ जाती है। फिर आवाज़ देती है, मगर मोहनजी ठहरे बड़े आलसी..जो उठने का नाम नहीं लेते। कई आवाजें लगाने के बाद भी, वे आराम से लेटे हैं। ऐसा लगता है, उनको किसी तरह का, व्यवधान नहीं पहुंचा है। इधर तेज़ हवा के झोंके से, लाडी बाई का रिदका सर से उतरकर कंधे पर आ जाता है। रिदके से वापस सर ढकती हुई, लाडी बाई एक बार और आवाज़ लगाती है। तभी मोहनजी बड़े आराम से अंगड़ाई लेते है, और ओढ़ी हुई चादर हट जाती है। अब उनकी नंगी टांगो का दिखना क्या, यहां तो जनाब मोहनजी ख़ुद ख़ाली कच्छे-बनियान अपने दीदार देने लगे ? यह मंज़र देखना, लाडी बाई को कहां बर्दाश्त...? गुस्से से काफ़ूर होकर, वह अब उन्हें कटु शब्द सुना बैठती है।]

लाडी बाई – [कटु शब्द सुनाती हुई] – उठिए, क्या पड़े हो, सूअर की तरह ? चादर हट गयी है, नंगे दिख रहे हो..? कहीं छत पर खड़े पड़ोसियों ने, यह नज़ारा देख लिया..तो रामा पीर की कसम, सारी इज़्ज़त ख़ाक में मिल जायेगी कि इसका.....!

मोहनजी – [आँखे मसलते हुए, कहते हैं] – उठ रहा हूं, भागवान। ज़रा, धीरज रखो।

[मोहनजी का यह तौर-तरिका देखकर, अब परेशान होकर लाडी बाई उनके समीप आती है। फिर तकिये के नीचे से लुंगी निकालकर, उनके मुंह पर दे मारती है। इतने में लाडी बाई की निगाह, पड़ोस की छत पर खड़ी पड़ोसन चूकली पर गिरती है। वह मोहनजी की नंगी जांघों को, टकटकी लगाए देखती जा रही है। इस मंज़र को देखकर, गुस्से से लाडी बाई चादर को नीचे खींचकर उनकी जांघें ढक देती है। फिर चूकली पर ज़हरीली नज़र डालती हुई, वह उसे गुस्से में देखती है। फिर क्या ? बेचारी चूकली डरकर झट, सीढ़ियां उतरकर चली जाती है। अब चूकली पर आये क्रोध को लाडी बाई, मोहनजी पर निकालने का प्रयास करती है। गुस्से से हुई लाल सुर्ख आंखो से, मोहनजी को ऐसे देखती है, मानो जंगल की कोई शेरनी अपने शिकार को देखती जा रही हो ? मगर जनाबे आली मोहनजी पर इन नज़रों का कोई प्रभाव होता दिखाई नहीं देता, फिर उनके उठने का सवाल कैसे पैदा होगा ? आख़िर परेशान होकर, उन्हें कड़े लफ़्ज़ सुना बैठती है।]

लाडी बाई – [गुस्से से कहती हैं] – भले आदमी, धूप निकल चुकी है। [दोनों हाथों से अपना सर पीटती हुई] ए मेरे रामा पीर, अब तो ये पाली जाने वाली गाड़ी चुका देंगे। है राम। बाद में ऐसे बोलेंगे, जैसे..[मोहनजी की बोली की नक़ल उतारती हुई] के "ए चितबंगी गेलसफ़ी, मेरी गाड़ी चूका दी तूने..

[बेचारे मोहनजी उनके कटु शब्द सुनते-सुनते, कड़ाव में तली जा रही पुड़ी के माफ़िक झिल जाते हैं। वे होंठों में कहते है..]

मोहनजी – [होंठों में ही] – अरे रामसा पीर। यह नार तो नीचे जाती दिखायी देती नहीं, अगर यह कमबख्त यहां इतनी देर यहां खड़ी रह गयी तो सर-दर्द अलग से पैदा कर देगी।

[अब उठने के पहले, वे हमेशा की तरह जोधपुर के क़िले के दीदार करना चाहते हैं। इधर-उधर नज़र दौड़ाकर, वे क़िले को देखने की कोशिश करते हैं। और साथ में, कहते जाते हैं..]

मोहनजी – [किले के सामने नज़र दौड़ाते हुए] – अरे ठोकिरा **कढ़ी खायोड़ा मेंहरान गढ़ के किले, तू कहां जा रिया है...?**

लाडी बाई – [गुस्से से बेकाबू होकर, कहती है] – कहीं नहीं जा रहा है, यह जोधपुर का क़िला। कल जहां था, आज़ भी वहीँ है।

मोहनजी - क्या कहा, आपने ?

लाडी बाई - मारवाड़ के लोगों की हालत यह है, के 'इस जोधपुर के क़िले को देखे बिना, उनके हलक़ से रोटी का निवाला नीचे नहीं उतरता।

मोहनजी – भागवान, आगे कहिये।

लाडी बाई - **जब भी उठो, उस वक़्त यह क़िला ज़रूर इनको दिखना चाहिए। क़िला चलेगा, तो हम चलेंगे।"** [परेशान होकर, कहती है] क्यों, मेरा तेल निकाल रहे हो..? उठ जाओ, अब तो भगवान के लिए।

[आख़िर मोहनजी लुंगी पहन कर, तनकर खड़े हो जाते हैं। फिर ज़र्दे की पुड़िया, ढूंढने की कोशिश करते दिखायी देते हैं। जिसे वे कहीं रखकर, भूल गए हैं। पुड़िया को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते, वे लाडी बाई से पूछ बैठते है।]

मोहनजी – [ज़र्दे की पुड़िया ढूंढते हुए] – भली औरत, ज़र्दे की पुड़िया मिल नहीं रही है..? [बड़बड़ाते हुए] ओ मेरी ज़र्दे की पुड़िया....तू **कहां जा रही है, कढ़ी खायोड़ी.....?**

[फिर क्या..? तकिये के नीचे रखी ज़र्दे, चूने की पुड़िया और पेसी बाहर निकालकर, लाडी बाई, उन्हें मोहनजी को थमा देती है। इनके ऐसे बर्ताव से परेशान होकर, लाडी बाई होंठों में ही बड़-बड़ करती है।]

लाडी बाई – [होंठों में ही] – अरे, मेरे रामा पीर। मेरी तो किस्मत फूट गयी, किस बदतमीज़ आदमी के साथ मेरी शादी करवा दी..मेरी मां ने। इस महापुरुष में कोई सभ्यता नाम की कोई चीज़ नहीं, ये तो ख़ाली नाम के मोहनजी है..मगर, काम में पूरे अघोरमलसा..और शक्ल में कहां कृष्ण की तरह मोहित करने वाले आदमी ? ये तो पूरे बुगला, भक्त ठहरे ? थोथा चना, बजता है बहुत। ये कैसे, हितंगिये अफ़सर..? ढाई कमाते हैं, और यहां खाने वाले हैं चार। बस, इनको तो दिखता रहे, जोधपुर का क़िला...और इनके जेब में पड़ी रहनी चाहिए, यह गेलसफ़ी ज़र्दा की पुड़िया।

[मगर, मोहनजी के व्यवहार में, कोई फर्क आने वाला नहीं..? वह क्यों सोचेंगे ? के 'लाडी बाई अपने दिल में, क्या सोचती जा रही है..?' वे तो झट ज़र्दे और चूने की पुड़िया खोलकर, पेसी भर लेते हैं। फिर अपनी हथेली पर ज़र्दा रखते हैं। फिर पेसी से चूना हथेली पर रखकर, उसे अंगूठे से ज़र्दे के साथ मसलते हैं। अच्छी तरह मसलने के बाद, दूसरे हाथ से लगाते हैं...उस पर, ज़ोर का फटकारा। ज़र्दे की खंक फैलती है, अब यह खंक लाडी बाई के नासा-छिद्र में चली जाती है। फिर, क्या...? लाडी बाई लगा देती है, छींकों की झड़ी। पल्लू से अपना नाक साफ़ करके, लाडी बाई क्रोधित होकर अनाप-शनाप बकने लगती है।]

लाडी बाई – [गुस्से से] – ऐसी ज़र्दे की तलब, क्या काम की ? पीक थूक-थूक कर, पूरे घर को नाथी का बाड़ा बना डाला आपने। ऊपर से झूठा प्रेम दिखाते हुए, झूठे सपने दिखाते जा रहे हैं आप..? [मोहनजी की आवाज़ की, नक़ल उतारती हुई] 'लाडी बाई, मेरी जीव की जड़ी। तेरा-मेरा प्यार, महेंदरा-मूमल जैसा।'

मोहनजी – [ज़र्दे को होंठों के नीचे दबाते हुए] – भली औरत, मैंने क्या ग़लत कह दिया आपको..? राम राम, प्रेम की उपमा आप जैसी मोहतरमा को क्यों नहीं अच्छी लगती ?

लाडी बाई – [मज़ाक उड़ाती हुई कहती है] – वाह। क्या कहना है, आपका..?

मोहनजी – [खीजते हुए, कहते हैं] - और ऊपर से मेरे प्रेम को ख़ना जतालाकर, मेरी हर बात का तखालुफ़ करती हैं भागवान..अरे रामसा पीर, किस्मत अच्छी...जो मेरे जैसा धान का अफ़सर, मिला आपको...!

लाडी बाई – [तुनक कर] – अरे क्या कह दिया, गीगले के बापू। धान का अफ़सर..? कभी एक बोरी धान की, इस घर में लाये नहीं ? और कहने लगे, जनाब...

मोहनजी – [बात पूरी करते हुए] - अपने आपको, धान का अफ़सर ? धान का अफ़सर हूं, फिर मुझे कहने में क्यों शर्म आयेगी ?

लाडी बाई – [चिढ़ती हुई कहती है] - ऐसे अफ़सरों को तो मैं, कुत्तों के आगे डाल दूं..क्या काम के..?

मोहनजी – [आंखे दिखाते हुए] – क्या कह रही हो, भागवान..? दिमाग़, ठिकाने तो है..?

लाडी बाई – क्या ग़लत कह दिया, गीगले के बापू..? आप से तो अच्छे हैं, अपनी पड़ोसन चूकली के शौहर। जो जब कभी सरकारी दौरे से लौटते हैं, तब उस अनपढ़ गंवार चूकली के लिए कुछ ना कुछ लेकर आते हैं। और, हाय रामा पीर। यहां मेरी जैसी पढ़ी-लिखी विदुषी महिला, वंचित है..इन सुखों से।

मोहनजी – ऐसा क्या ? नवलखा हार लाकर दे दिया, उस चूकली को..? आप तो ऐसे कह रही है, जैसे कहीं से क़ारू का ख़जाना लाकर वे उस पर लूटा रहे हैं ?

लाडी बाई – [तुनक कर कहती है] – हां, हां..लाते हैं, लाते हैं। सोने-चांदी के गहने, बनारसी सिल्क की साड़ियां और पंच मेवा की मिठाई..और, और..अरे जी उनका क्या कहना है, सदका उतारुं...कहीं मेरी नज़र, उन्हें ना लग जाय ?

मोहनजी – [ज़र्दे से भरे मुंह से ज़र्दा उछालते हुए, कहते हैं] – क्या बोली, भागवान..? चोरी करके लाऊं, या डाका डालकर लाऊं, या लाऊं रिश्वत खाकर..? [आँगन पर, पीक थूकते हुए] ये खीं-खाफ़ की साड़ियां..ग्ग् ग्..गहने..?

लाडी बाई – [पीक से बचने के लिए, दूर हटती हुई कहती है] – कीमती साड़ियां और गहने तो लाने की, आपमें औकात नहीं। मगर इस घर में चारों ओर थूककर, इसे खाकदान [कचरादान] ना बनाएं तो अच्छा।

[इतना कहने के बाद, सीढ़ियां उतरती हुई कहती है]

लाडी बाई – [सीढ़ियां उतरती हुई कहती है] - अब तशरीफ़ रखिये। आपको पत्ता नहीं, चाय ठंडी हो रही है..? फिर जनाब कहेंगे 'ऐसी ठंडी चाय क्या पीनी ?' अरे रामसा पीर, इनसे तो अपना सर खपाना... ?

[लाडी बाई सीढ़ियां उतरती दिखाई देती हैं, और उनके पीछे-पीछे मोहनजी भी नीचे उतरते दिखायी देते हैं। सीढ़ियां उतरते वक़्त, वे सीढ़ियों पर छाये नीम के पेड़ की डाली से दातुन तोड़ लेते हैं। फिर नीचे आकर वाशबेसिन के पास खड़े होकर, दातुन करने लगते हैं। तभी उनका लाडका बेटा "गीगला", उन्हें याद आता है। फिर क्या ? झट उसे आवाज़ देते हुए, वे कहते हैं।]

मोहनजी – [आवाज़ देते हुए] – ए रे, मेरे कालजे के टुकड़े..गीगलेSS..! **तू कहां जा रिया है, कढ़ी खायोड़ा ?** अब कहां गिया रे, इधर आ तो सही..बेटा।

लाडी बाई – [सर पकड़कर, ज़ोर से कहती है] – अरे भगवन, कहीं नहीं गया आपका लाडेसर। तड़के उठकर आ गए इसके नालायक साथी, और ले गए इसे अपने साथ क्रिकेट खेलने। अरे गीगले के बापू, अब चाय पीकर जल्दी चले जाइये..बाथ रूम में।

[इतना कहकर, चाय से भरा प्याला पास रखे स्टूल पर रख देती है। फिर, लाडी बाई किचन में चली जाती है। मोहनजी आराम से कांच में देखते हुए, नीम के दातुन से दांत साफ़ करते जा रहे हैं। थोड़ी देर बाद, मंच पर अँधेरा छा जाता है। कुछ वक़्त बाद, घुसलखाने से निकलकर वे डाइनिंग रूम में चले आते हैं। वहां बालों में तेल डालकर, कांच को देखते हुए कंघे से बाल संवारते है। बाल संवारते-संवारते, वे ज़ोर से कह रहे हैं।]

मोहनजी – [बाल सवांरते हुए, ज़ोर से कहते हैं] – अजी ओ, गीगले की बाई। ज़रा सुनो, मैं क्या कह रहा हूं..? अरी भली औरत, ख़ाली पेट यात्रा करनी सहज नहीं है...ज़रा दो परामठों के साथ, आम का अचार लेती आना। रामा पीर, आपका भला करे, इस बन्दे को थोड़ा नाश्ता...

लाडी बाई – [गुस्से में, किचन से बोलती है] – भले आदमी, आपको दिखायी नहीं देता है या नज़र नहीं आता..? या जानकर भी अनजान बन रहे हैं, आप..? आटा पड़ोसन से, मांगकर लाई...फिर रोटियां-सब्जी तैयार करके आपका सट तैयार किया है, और अब सुबह के नौ बज गए हैं।

[चार खानों वाला "भोजन का सट" लेकर आती है, फिर उसे मेज़ पर रखकर कहती है।]

लाडी बाई – [हिदायत देती हुई] – सुन लो, गीगले के बापू। आपको रवाना होते वक़्त हिदायत दे देती हूं, के **"मुट्ठियों में थूक कर भाग जाने से काम नहीं चलता है, श्रीमानजी। अंधेरा होने से पहले-पहले आप आटा पीसाकर ला देना जी, नहीं तो आगे क्या होगा ? जो आप जानते ही हैं के...**

मोहनजी – [बैग में सट और पानी की बोतल रखते हुए कहते हैं] – नहीं तो, क्या..? बोलो आगे, कैंची की तरह चल रही ज़बान पर...अक्समात, अलीगढ़ का ताला कैसे लग गया..?

लाडी बाई – नहीं तो, भूखे सो जाना..फिर, मुझे क्या...? रामजी राज़ी और झालर बाज़ी ...!

मोहनजी – [बैग को बंद करते हुए] – भली औरत, आपको पूरा दिन मिला। फिर क्या किया, आपने..? छोटा सा काम..आटा पीसाने का, आपसे होता नहीं..?

[मेज़ पर रखा क्रीज़ किया हुआ, सफारी सूट उठाकर पहन लेते हैं और तौलिये को खूंटी पर टाक देते है। तभी उन्हें, लाडी बाई की तल्ख़ आवाज़ सुनायी देती है।

लाडी बाई – [तल्ख़ आवाज़ में कहती है] – फिर, आप ख़ुद क्या करते हैं..? मेरी सास का धाबलिया, और मेरी धोती...टाका लगा-लगा कर, काम चला रही हूं।

[सब-टीवी चैनल के टी.वी. सिरियल 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' के नायक जेठा लाल जयंती लाल गड़ा की तरह, अपने दोनों हाथ कमर पर ऐसे रखती है, जैसे वह लड़ने के लिए उतारू हो..? फिर, वापस तल्ख़ आवाज़ में कहती है।]

लाडी बाई – [कमर पर, हाथ रखती हुई कहती है] – आपने शर्म-हया सब बेच खायी है, कब से पागलों की तरह बातें करते जा रहे हैं..आप ? सुनो, मैं आपको, सावधान कर देती हूं..अब आप, कभी इस तरह नहीं बोलोगे...

मोहनजी – तो चुप बैठ जाऊं, क्या..?

लाडी बाई – सुनिए, पहले। [मोहनजी की नक़ल, उतारती हुई कहती है] – नीत की हीणी, आपको शर्म नहीं आती...मेरे खारची जाने के बाद, आप माल-मसाला ठोकण में आगे रहती हैं ? और मुझ बेचारे कढ़ी खायोड़े को, राबड़ी के भी फोड़े पड़ते हैं। [हाथ नचाती हुई, अपनी आवाज़ में कहती है] फिर, मैं बोलूंगी..

मोहनजी – [जेब से रुमाल निकालकर, ललाट पर छाये पसीने को साफ़ करते हुए कहते हैं] – क्यों बिगड़ी सांडनी की तरह, रिड़क रही हो..? देरी हो रही है, मेरी लक्ष्मी। जल्द बांच लो..पाबूजी सा की पुड़।

लाडी बाई – [ठंडी सांसें लेती हुई, आगे कहती है] – देखिये गीगले के बापू, कल घर और आटे की चक्की के बीच चक्कर लगाते-लगाते मैं दोनों टांगों का दर्द ले बैठी। क्या करती, जी..? यह चक्की तो, बंद की बंद....

मोहनजी – आगे क्या हुआ, मेरी मां..?

लाडी बाई – आख़िर पूछा, पड़ोसी से। वह कहने लगा, के 'बाई क्यूं खोटी हुवै..? चक्की वाळां छोटजी रा भईजी, श्रीजी सरण व्हेग्या है। अबै तौ उठावणा पछै इज़, आ चक्की खुलेला।"

मोहनजी – फिर, बाद में क्या हुआ..? फटा-फट बक दो, देर हो रही है..!

लाडी बाई – फिर, गयी...बाजरी का डब्बा लेकर, पड़ोसन के घर। वह मीठे नीम की तरह, जराफ़त से बोली, के "भाभीजी, आप क्यों पागलों जैसी बातें करती जा रही है ? बोलिये आप, सेर-भर बाजरी कैसे पीसी जाय ? कैसे कहूं, आपको...? घर में घटी तो है, मगर, उसके चाकड़ी और कील कहां है ? राजूड़े के बापू..."

मोहनजी – आगे बोलो, अपनी बातों की गाड़ी चलती रखो। रोको, मत।

लाडी बाई – आगे बोली के "राजूड़े के बापू, कल या परसों खाती को बुलाकर लायेंगे और....

मोहनजी – फिर क्या हुआ, भागवान ? [धीरे-धीरे कहने लगे] मां का माथा..स्याणी बन गयी..फिटोल कहीं की ? बैठ गयी होगी, पड़ोसन से हफ्वात हांकने..?

लाडी बाई – [आँखे तरेरकर, कहती है] – क्या बड़-बड़ करते जा रहे हैं, आप..? थोड़ा ज़ोर से बोलिए, तो मैं जानूं।

[आराम से लम्बी सांस लेती है, फिर आले में पड़ी नशवार की डब्बी उठाती है। फिर चिपटी भरकर, नशवार सूंघती है। चार-पांच छींकें खाने के बाद, वो आगे कहती है।]

लाडी बाई – लो बेटी का बाप, आगे सुनों..क्या कह रही थी, मैं..? के, मेरी मां का माथा..अरे नहीं जी, आपकी मां का माथा। फिर गयी, गीगले के बापू..पाल गाँव, यह डब्बा ऊंचाये ?

मोहनजी – [चिढ़ते हुए, कहते हैं] – काहे वक़्त बरबाद करती जा रही हैं, भागवान..? आगे, क्या हुआ ? जल्दी, बयान करो। शहर के हर मोहल्ले में चक्की उपलब्ध है, फिर हफ्वात हांकने के लिए गयी होगी पाल गाँव..अपनी मासी की बेटी, बहन के घर..

लाडी बाई - वहां बड़-बड़ की आवाज़, करती हुई डीज़ल से चलने वाली चक्की से पिसाया आटा। आसियत का अंधेरा पड़ने के बाद घर पहुंची, और आपके इस लाडके गीगले को रोटी बनाकर खिलायी। बाद में..

मोहनजी – अब तो मैं, जाऊं..? अब तक बांच ली होगी आपने, पाबूजी की पुड़ ..?

लाडी बाई – अब मैं आपको सावधान कर रही हूं, वापस आकर बाजरे की बोरी पीसाकर रख देना...ताकि देर-सवेर गेंहू का आटा तैयार न हो तो बाज़री की रोटी तो बन सकती है। नहीं तो, आप जानते ही हैं..

[लाडी बाई का बोलने का भोंपू, बंद होने का सवाल नहीं..? वो तो बके ही जा रही है, रुकने का कोई नाम ही नहीं। लाडी बाई को तो यह भी मालुम नहीं, के 'उनके शौहर, चुप-चाप जा चुके हैं। और वह यहां खड़ी-खड़ी, बकती जा रही है।' बरसाली में दाख़िल हो रहे, गीगले ने देख लिया, के 'उसकी मां खड़ी-खड़ी, पागलों की तरह बकती जा रही है..?' फिर, क्या..? वह मां के निकट आकर, मां से कहता है।]

गीगला – बाई, आप किस से बातें करती जा रही हैं...? मुझे तो यहां कोई नज़र नहीं आ रहा है, जिससे आप बातें करती जा रही है ?

लाडी बाई – किस से क्या..? तेरे बाप से बात कर रही हूं, और किससे करूंगी..अब, तू बोल। आख़िर, तू कहना क्या चाहता है ?

गीगला – [हंसता हुआ कहता है] – मगर बाई, बापू को गए काफ़ी देर हो चुकी है। अब आप, इन दीवारों को, क्यों सुना रही हैं..? [हंसता है, फिर तालियाँ बजाता हुआ कहता है] बाई गेली, बाई गेली...!

लाडी बाई – [क्रोधित होकर, कहती है] – इधर आ तो एक बार, भंगार के खुरपे। मेरे सामने, बोलता जा रहा है...? तेरा बाप नहीं बोल पाता, मेरे सामने..और तू आया छोटा सा चूहा, मेरे सामने ज़बान चलाता जा रहा है..?

[यह गीगला तो ठहरा, कुचमादी का ठीकरा। वह निखेत तो जीभ बाहर निकालकर, लाडी बाई को चिढ़ाता जा रहा है। लाडी बाई उसे पीटने के लिए, उसके पीछे दौड़ती है। मगर वह शैतानों का काका दौड़कर, बाहर चला जाता है। मंच पर अब, अंधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच रोशन होता है। जोधपुर रेलवे स्टेशन का मंज़र, दिखायी देता है। प्लेटफार्म नंबर पांच पर जाने के लिए, मोहनजी उतरीय पुल की सीढ़ियां चढ़ते जा रहे हैं। इस वक़्त मोहनजी बहुत ग़मगीन है, वे अपने ज़ख़्मी दिल को संभाल नहीं पा रहे हैं। उनके दिमाग़ में पत्नि के बोले गये कटु-वचन, बार-बार चक्कर लगा कर उनके दिल के कुरह को कुरेदते जा रहे हैं। उनका दिमाग़ उनके काबू में नहीं है, बस बेचारे अंतर्मुखी बने बड़बड़ाते ही जा रहे हैं।]

मोहनजी – [बड़बड़ाते हुए] – ऐसी निखेत औरत मिली है मुझ बेचारे ग़रीब को, नालायक़ मेरा खून पी गयी। अरे रामसा पीर, आपको घणी घणी खम्मा। ज़रा, इस औरत को कुछ तो सदबुद्धि दे दो आप..! करूं क्या, इस नागिन पर मेरा कोई ज़ोर नहीं चलता..?

[उनके पास चल रही भिखारन **“खां साहबणी”,** उनके बोले गए जुमले को सुन लेती है। फिर वह ऊंचा मुंह करके, इनको अचरच से देखने लग जाती है। इनकी बड़बड़ाने की आदत, उसकी समझ से परे है। वह होंठों में ही, कहती है..]

खां साहबणी – [होंठों में ही] – हाय अल्लाह पाक। यह आदमी लगता तो है, दानिशमंद समझदार इंसान। मगर, यह क्या ? यह आदमी अब ऐसी पागलपन की हरक़तें क्यों करता जा रहा है..?”

[तभी उतरीय पुल उतरते एक कुली की निग़ाह, इस भिखारन पर गिरती है। उसको इस तरह बांका मुंह किया हुए मोहनजी पर नज़र गढ़ाए, देखकर वह ज़ोर से हंस पड़ता है। फिर हंसता हुआ, एक जुमला बोलकर नीचे उतर जाता है।]

कुली – [हंसता हुआ कहता है] – ए, गतराली निक्कमी रांड। तू इस भोले आदमी के पीछे लग गयी, तो यह मासूम आदमी जिंदा भी नहीं बचेगा।

[मगर, मोहनजी तो अपने ख़यालों में ऐसे खो चुके हैं, उनको कुछ पता ही नहीं...उनके आस-पास गुज़र रहे लोग उनके बारे में क्या-क्या जुमले बोलते जा रहे हैं..? वे तो अभी भी, बड़ाबड़ाते जा रहे हैं..]

मोहनजी – [बड़ाबड़ाते हुए] – कैसे चले, इस पर मेरा ज़ोर इस जहरीली नागिन पर..? अरे, रामा पीर क्या कहूं आपसे ? यह औरत, मेरी ज़िंदगी में आयी पहली औरत नहीं है। [अमिताभ बच्चन की तरह, हथेली आगे बढाते हुए कहते हैं] पहली पत्नी मर गयी, दूसरी भाग गयी..अब, यह है तीसरी।

[मोहनजी की आदत है, वे अपने-आपको अमिताभ बच्चन ही समझते हैं..बोलते वक़्त वे अपने एक हाथ की हथेली, स्वत: आगे बढ़ा दिया करते हैं। जैसे कोई भीखमंगा, भीख मांगता जा रहा हो ? हथेली आगे बढ़ाये, इनको बड़बड़ाते देखते हैं आस-पास गुज़रते लोग। तभी पास से गुज़र रहे मियां कमालुद्दीन ने भी यही सोचा, के 'शायद इस इंसान की खातूनेखान का, इन्तिकाल हो गया है..? इसलिए बेचारा यह ग़रीब, कफ़न के लिए रुपये मांग रहा है ? झट रहम खाकर बड़े मियां, उनकी हथेली पर दो रुपये का सिक्का रख देते हैं। फिर उनकी मृत बीबी के लिए, दो लफ्ज़ बोलकर आगे बढ़ जाते हैं।]

मियाँ कमालुद्दीन – [हथेली पर सिक्का रखते हुए] – अल्लाह तेरी मरहूम बीबी को ज़न्नत नसीब करे, आमीन। [आगे बढ़ जाते हैं]

[उनको देखकर पीछे आ रहे कई पाकिस्तानी जायरीन, सवाब लेने में पीछे रहने वाले नहीं। उनके पास भारतीय सिक्का न होने पर, वे उनकी हथेली पर पाकिस्तानी सिक्के रखते नज़र आ रहे हैं। मगर, मोहनजी को कहां होश ? वे तो बड़बड़ाते हुए, पुल की सीढ़ियां चढ़ते जा रहे हैं। प्लेटफार्म पर खड़े जी.आर.पी. इंचार्ज सवाई सिंहजी की निग़ाहें उन पाकिस्तानी जायरीनों के ऊपर उस वक़्त गिरती है, जब वे मोहनजी की हथेली पर पाकिस्तानी सिक्के रख रहे थे। अब वे मोहनजी को संदेह की नज़रों से देखते हैं, फिर कुछ दूर खड़े अपने जवानों को आवाज़ देकर अपने पास बुलाते है। मगर, मोहनजी को इस बात का कोई भान नहीं...वे तो बराबर बड़बड़ाते हुए आगे बढ़ते ही जा रहे हैं।]

मोहनजी – [बड़ाबड़ाते हुए] – क्या कह रहा था, मैं ? याद आ गया, मुझे। दूसरी भाग गयी..मुझे छोड़कर। और यह तीसरी, मेरे ख़ानदान को चिराग़ देने वाली..मेरे लाडले गीगले को जन्म देने वाली..सौ नखरों में पली हुई, लाडी बाई है।

[तभी एक देहाती आदमी अपने छोटे बच्चे को कन्धों पर बिठाकर पुल उतर रहा था, बेचारे बच्चे को सू-सू लगी हुई है। बेचारा नन्हा-मुन्ना बार-बार अपने अब्बू को कहता आ रहा है, के..]

बच्चा – [रोता हुआ, कहता है] - अब्बू, मुझे सू-सू लगी है। सू-सू लगी है..ज़ोर की लगी है, अब्बू।

[मगर, वह देहाती उसकी बात सुन नहीं रहा था। क्योंकि, उसकी खातूनेखान उससे काफ़ी आगे निकल गयी थी। आख़िर उस बच्चे की लघु-शंका की समस्या नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाती है, बर्दाश्त न होने पर वह सू-सू की धार चला देता है। वह धार सीधी जाकर, ख़यालों में खोये मोहनजी के काली सफ़ारी सूट पर आकर गिरती है..खुदा जाने, क्यों नहीं उनकी ख़यालों की दुनिया में कोई ख़लल पैदा होता दिखाई देता है ? वे तो लगातार बड़बड़ाते हुए, पुल चढ़ते जा रहे हैं।]

मोहनजी – [ख़यालों में खोये हुए, जनाब बड़बड़ाते जा रहे हैं] - दस साल पहले इस गीगले का जन्म हुआ, उस वक़्त को याद करता हूं, तब वे सारी दर्द-भरी यादें उभर जाती है..मेरे मानस में।

[उतरीय पुल के मध्य समतल हिस्से पर खड़ा गुलाबा नामक हिज़ड़ा, अपने बैग से केला निकालता है। फिर केला छिलता हुआ, वह मोहनजी की कही बात सुन लेता है। वह सोचने लगता है..]

गुलाबा – [होंठों में ही] – अरे रामसा पीर। इस कमबख्त का छोरा भी पैदा हो गया, और मुझे मालुम नहीं ? अब कहां सारे मियें मर गये, और रोज़े घट गए..? अब भी मैं इसकी जेब ख़ाली करवाकर, नेत वसूल कर लूंगी।

मोहनजी – [बड़बड़ाते हुए] - तब जवानी ढल रही थी, पैसे से पूरा टूट चुका था। बस अस्पताल जाना, और भारी बिलों का भुगतान करना। मगर अब..मैं इस गीगले को अपनी पलकों से दूर होने नहीं देता, यह छोरा किधर भी जाता है..और बस फ़िक्र के मारे, एक ही जुमला बरबस मेरे मुंह से निकल पड़ता है के **"कहां जा रिया है, कढ़ी खायोड़ा..?"**

[इस तरह बड़बड़ाते हुए मोहनजी, बार-बार अपना तकिया-क़लाम **"कहां जा रिया है, कढ़ी खायोड़ा"** को बोलते ही जा रहे हैं, और बदहवाशी में चलते-चलते आ जाते हैं....उतरीय पुल के, मध्य समतल हिस्से पर। जहां से, दूसरे प्लेटफार्म पर उतरने की सीढ़ियां लगी है। वहां चलते-

चलते, वे आगे चल रहे सरदार निहाल सिंह से टक्कर खा बैठते हैं। टक्कर लगते ही बेचारे सरदारजी जाकर गिर पड़ते हैं, पास खड़े किन्नर गुलाबो के ऊपर। बेचारा गुलाबा किन्नर, खड़ा-खड़ा अरोग रहा था केला। केला खाकर जैसे ही वह छिलके को नीचे गिराता है, बस तभी सरदारजी धड़ाम से आकर उसके ऊपर गिर पड़ते हैं। वह बेचारा कोमल बदन वाला हिंज़ड़ा, कैसे सरदारजी का वज़नी शरीर को संभाल पाता ? बस, फिर क्या ? चिल्लाता हुआ आकर गिरता है, उस केले के..छिलके के, ऊपर। छिलके के ऊपर गिरते ही, वह बेचारा ऐसे फिसलता है मानो वह बर्फ की शिला पर फिसल रहा हो..? उठते वक़्त वह अपना पाँव वापस रख देता है, उसी केले के छिलके के ऊपर। बस, फिर क्या...? क़िस्मत का मारा, बेचारा गुलाबा, एक बार और गिरता है फ़र्स पर। उसके गिरने की आवाज़ सुनकर, मोहनजी ख़यालों की दुनिया से निकलकर लौट आते हैं वर्तमान में। अब इस मंजर को देखते ही, मोहनजी ठहाके लगाकर हंसते हैं। उनका ठहाका लगाकर हंसना, गुलाबा को काहे पसंद आये..? बस वह कुचमादिया का ठीईकरा, मोहनजी के गले पड़ जाता है। फिर, क्या ? वह उन्हें बाहुपोश में झकड़कर, उनके तकिया-क़लाम की..यूं के यूं, नक़ल कर बैठता है।]

गुलाबो – [तकिया-क़लाम की, नक़ल उतारता हुआ] – कहां जा रिया रे, कढ़ी खायोड़ा मेरे सेठ..? [मोहनजी को अपने बाहुपोश में झकड़ लेता है] अब मैं तो कहीं नहीं जा रही हूं, मेरे सेठ। खम्मा घणी सेठ, अब आप खोल दीजिये कड़का-कड़क नोटों की गड्डी...नहीं तो मैं आपकी पतलून की चेन खोल दूंगी, और फिर आपकी चड्डी का..?

[इतना कहकर, गुलाबा उन्हें छोड़ देता है। फिर वह उनके चारों और ताली बजाता हुआ, नाचने लगता है। इतने में सीढ़ियां चढ़कर आ रहे उसके दूसरे साथी हिंज़ड़े भी, नाच में शामिल हो जाते हैं। इन हिंजडो को नाचते देखकर, सरदारजी का दिल भी नाचने के लिए उतावला होता जा रहा है। आख़िर, सरदारजी अपने दिल को काबू में नहीं रख पाते। और पंजाबी गीत गाते हुए, सरदारजी भांगड़ा डांस कर बैठते हैं।]

निहाल सिंह – [नाचते हुए, गाते हैं] – अरी कुड़ी पंजाबण आ गयी, मेनु दिल को चुरा कर ले गयी..हाय हाय रबा अब क्या करूं, ना इधर का रहा न उधर का रहा। अरी कुड़ी पंजाबण आ गयी, मेनु दिल को चुरा कर ले गयी।”

[अब इस पुल के ऊपर आते-जाते यात्रियों की भीड़ जमा हो जाती है, और अब इस भीड़ में खड़े ये तमाशबीन तालियाँ बजा-बजा कर मज़े लेते जा रहे हैं। कई मुसाहिब तो ऐसे रसिक हैं, जो खुश होकर, इन हिज़ड़ो पर रुपयों की बरसात करते जा रहे हैं। अब तो चारों तरफ़ कोलाहल-पूर्ण वातावरण बन जाता है, कई रेलवे मुलाज़िम भी वहां आकर, इस मज़में में सम्मिलित हो जाते हैं।

शान्ति भंग होती जा रही है, तभी टी.टी.ई. आसकरणजी और जी.आर.पी. के जवान अपने इंचार्ज सवाई सिंहजी के साथ वहीँ आ जाते हैं। आसकरणजी बैग से चालान डायरी बाहर निकालकर, सवाई सिंहजी से कहते हैं, के..]

आसकरणजी – [सवाई सिंहजी से] – बोलो, सवाई सिंहजी। इस मूंछों वाले मानुष ने भीड़ एकत्रित करके, स्टेशन की शान्ति भंग की या नहीं...?

[अब सवाई सिंहजी को पाकिस्तानी जायरीनों वाली बात, याद आ जाती है। फिर, क्या ? वे इरादा कर लेते हैं, के 'मोहनजी को हवालात ले जाकर, उनसे पूछ-ताछ करनी ज़रूरी है। आखिर, उनके क्या सम्बन्ध हैं इन पाकिस्तान जायरीनों के साथ ?' अब वे झट, आसकरणजी से चालान डायरी ले लेते हैं..]

सवाई सिंहजी – [आसकरणजी से चालान डायरी लेते हुए कहते हैं] – जी हां, आपने शत प्रतिशत सही कहा। अरे जनाब, यह तो पूरा चार सौ बीस मिस्टर नटवर लाल है, इसने न मालुम क्यों इन पाकिस्तानी जायरीनों से..

गुलाबा – [रोनी सूरत बनाकर] – साहब, नटवर लाल क्या..? यह तो एक नंबर का गुंडा है, इसने धक्का देकर सरदारजी को मेरे ऊपर गिरा दिया। साहब, आप इसे गिरफ्तार कर लीजिये।

सवाई सिंहजी - [गुलाबा से कहते हैं] – क्यों रे, गुलाबा..? हवालात के अन्दर इसे ले जाने के लिए तेरी और सरदारजी की गवाही बहुत ज़रूरी है, या नहीं..? [मोहनजी से कहते हैं] बोल भाई, तेरा क्या नाम लिखूं..?

मोहनजी – [भयग्रस्त होकर धूजती जबान से] – हुकूम, फु..फु..फुठरमल कढ़ी खायोड़ा।

['**कढ़ी खायोड़ा** तकिया-क़लाम' सुनते ही, वहां खड़े तमाशबीन ज़ोर से हंसी के ठहाके लगाते हैं। इधर चालान डायरी को देखते ही, मक्खी-चूष मोहनजी का पूरा बदन धूजने लगता है। फिर, क्या..? एका-एक मोहनजी के धूजते हाथों में पकड़ी हुई पानी की बोतल, नीचे गिर पड़ती है। इधर बेचारे मोहनजी को पत्ता नहीं, के 'उस बोतल का ढक्कन ढीला था..!' इस कारण गिरते वक़्त वह ढक्कन खुल जाता है, और पानी से उनकी पतलून [पेंट] गीली हो जाती है। अब वह गीली पतलून, सरदार निहाल सिंह की निगाहों में आ जाती है। वे इस गीली पतलून को देखते ही, ठहाके लगाकर हंस पड़ते हैं। फिर किसी तरह अपनी हंसी दबाकर, सरदारजी सवाई सिंहजी से शिफ़ाअत लगा बैठते हैं। और उधर ठोकिरे गुलाबे को, हास्य-विनोद की मीठी चिमटी काटने की

कुबद पैदा हो जाती है। वह अपनी कमर लचकाता हुआ आता है, मोहनजी के पास। उनके पास आकर, ताली बजाकर उनसे कहता है।]

गुलाबो – ओ, मेरे सेठ। आप कहो तो, चार ठुमका लगाकर सवाई सिंहजी को रेडी-रेड कर दूं ? और, आपका मामला निपटा दूं चुटकियों में। मगर जनाब, आपको नोटों की गड्डी खोलनी होगी।

[मोहनजी को कहां पसंद, के कोई हिंज़ड़ा बीच में आकर उनके मामले को सुलझाये..? बस, फिर क्या..? जनाब एक धक्का मारते हैं, उस बेचारे को..और, उसे एक और धकेलकर हटा देते हैं। उस हिंज़ड़े को एक तरफ़ धकेले जाना, मोहनजी के लिए भारी महंगा सौदा साबित होता है। क्योंकि, धकेले जाने पर वह हिंज़ड़ा गिर पड़ता है सवाई सिंहजी के ऊपर। बेचारे सवाई सिंहजी मुंह बाएं गिर पड़ते है, सरदार निहाल सिंह के ऊपर। सरदार निहाल सिंहजी ठहरे, पंजाबी सरदार..! जिन्होंने पानी पी रखा है, पंजाब का। फिर क्या..? अपनी फड़कती भुजाओं से जनाब थाम लेते हैं, जी.आर.पी. के रणबंका बांकड़ली मूंछों वाले इंचार्ज सवाई सिंहजी को। फिर आंगन पर गिरी चालान डायरी को उठाकर, सवाई सिंहजी को थमा देते हैं। फिर हाथ जोड़कर, कह देते हैं..]

निहाल सिंह – [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – अरे साहब, आपका रब भला करेगा..बस आप इस मूंछों वाले आदमी को छोड़ दीजिये, ना। देखो, इसकी पतलून की क्या हालत हो गयी ? यह तो डरकर मूतता जा रहा है, नामाकूल। वाहे गुरु, ऐसा मोटा इंसान मूतता मेनु कभी देख्या नहीं। आप तो इसे मुआफ़ करो, हुजूर।

[गुलाबा और सरदार निहाल सिंह की बातें सुनकर, सभी हाज़िर लोग मोहनजी गीली पतलून देखते हैं। अब इन महापुरुष की गीली पतलून देखकर, उपस्थित लोग अपनी हंसी को दबा नहीं पाते..बरबस सभी ठहाके लगाकर, हंसते जा रहे हैं। अब सवाई सिंहजी व आसकरणजी का दिल, इस तमाशे को देखकर बाग़-बाग़ हो जाता है। अब, वे भी ज़ोर-ज़ोर से, हंसी के ठहाके लगाते हैं। इन ठहाकों की गूंज, दूर बैठे मोहनजी के साथी सेवाभावी रशीद भाई के कानों में जाकर गिरती है। फिर, क्या...? सेवाभावी से वहां, बैठा रहा नहीं जाता। जनाब झट उठकर, आ जाते हैं यहां। यहां बेचारे मोहनजी को पुलिस और टी.टी.ई. के सीखंजे में पाकर, रशीद भाई दुखी हो जाते हैं। आसकरणजी को देखते ही वे पहचान जानते हैं, के 'ये जनाब तो वही भा'सा है, जो बड़ी वाली चताणी व्यास की गली में रहते हैं..जो पुष्ठीमार्गीय वल्लभ कुल सम्प्रदाय के चौपासनी वाले गुसाईजी महाराज के चेले हैं, और बाल गोपाल के परम भक्त हैं।' झट वे आसकरणजी के निकट आकर, उनसे शीरी ज़बान से कहते हैं..]

रशीद भाई – [शीरी ज़बान से, कहते हैं] – भा’सा, जय श्री कृष्ण। यह क्या कर रहे हैं, जनाब..? अजी जनाब, आपको क्या कहूं ? ये मोहनजी भी, हमारे एम.एस.टी. वाले साथी है। अब लीजिये, आप तैयार सुर्ती..

[जेब से ज़र्दे की पुड़िया बाहर निकालकर, हथेली पर थोड़ी सुर्ती रखकर उनकी मनुआर करते हैं।]

रशीद भाई – [हथेली पर सुर्ती रखकर] – भा’सा, लीजिये मालिक चखिए कलकत्ती जर्दा । इसको होंठों के नीचे दबाते ही, आपकी कली-कली खिल जायेगी..! जनाब आपकी दुआ से, अक़सर मैं असली कलकत्ती ज़र्दा ही रखता हूं ।

[आसकरणजी हथेली से सुर्ती उठाकर, होंठों के नीचे दबाते हैं। फिर अपने लबों पर मुस्कान छोड़कर, रशीद भाई से कहते हैं..]

आसकरणजी – जीते रहो, खां साहब। आपके घुटने, हमेशा सलामत रहे। अब कहिये, हमारे लायक कोई काम।

रशीद भाई – मालिक, माफ़ कीजिये, हमारे साहब मोहनजी को। भले आदमी है, बेचारे।

[मोहनजी से बैग लेकर, फिर उनसे कहते हैं]

रशीद भाई – [बैग लेकर, मोहनजी से कहते हैं] - अरे साहब, आप इनको जानते नहीं, ये टी.टी. साहब हमारे मालिक है...आप तो झट भूल गये, इन्हें।

मोहनजी – मैं तो भूल गया, रशीद भाई। अब आप, वापस याद दिला दीजिये।

रशीद भाई – [ज़र्दे की पुड़िया जेब में रखते हुए कहते हैं] - ये वही टी.टी. साहब “आसकरणजी भा’सा” है, जो आपको आरक्षित कोच में बैठने देते हैं। आप कभी इनसे, पगेलागणा करते नहीं। तब, ये कैसे पहचानेंगे आपको..? [रौब में] अब करो, इनको पगेलागणा।

[फिर, क्या..? रशीद भाई मोहनजी पर रौब गांठकर, जबरदस्ती उनसे पगेलागणा करवा देते हैं। आसकरणजी भा’सा राज़ी होकर, मोहनजी को खूब दुआएं देते हैं।]

रशीद भाई – अरे मोहनजी, बिदामें खाना चालू कर दो, आपकी भूलने की बीमारी बढ़ती जा रही है। कल तो आप हमारी भाभीसा को भी, भूल जाओगे..?

आसकरणजी – [सवाई सिंहजी को, जाने का इशारा करते हैं] – सवाई सिंहजी, अब आप जाइये। ये तो, अपने आदमी ही निकले।

[आसकरणजी को चालान डायरी सौंपकर, सवाई सिंहजी अपने कांस्टेबलों के साथ पुल की सीढ़ियां उतरकर चले जाते हैं। उन लोगों के चले जाने के बाद, मोहनजी आसकरणजी से कहते हैं, के..]

मोहनजी – [रोनी सूरत बनाकर, कहते हैं] – साहब, पतलून के अन्दर मैंने पेशाब नहीं की। जनाब, बोतल का ढक्कन ढीला था। उससे पानी निकलकर, पतलून पर गिर गया..!

रशीद भाई – [रौब गांठते हुए] – अरे साहब, अब झूठ मत बोलो। आसकरणजीसा स्याणा मिनख है, इसका मतलब यह नहीं के वे "गेले-गूंगे" हैं..मानो, उनको कुछ दिखाई नहीं देता..?

मोहनजी – क्या कहा, आपने..?

रशीद भाई - रामसा पीर की कसम खाकर कहता हूं, अब अगर आप झूठ बोले तो ज़रूर आसमान से धोलिये भाटे [ओले] गिरेंगे आपकी टाट पर।

[मोहनजी का हाथ थामकर, रशीद भाई उनसे कहते हैं।]

रशीद भाई – [उनका हाथ थामकर, कहते हैं] – अब चलिये मोहनजी, प्लेटफार्म नंबर पांच पर। गाड़ी आने का वक़्त हो गया है, चलिये..चलिए, जनाब।

[मोहनजी का हाथ थामकर, रशीद भाई पुल की सीढ़ियां उतरते दिखायी देते हैं। थोड़ी देर बाद, वे प्लेटफार्म नंबर पांच पर पहुंच जाते हैं। अब रशीद भाई उन्हें प्लेटफार्म पर रखे तख़्त [bench] पर बैठाकर, उनका बैग उन्हें सम्भला देते हैं। अब ठंडी ताज़ी हवा का अहसास पाकर, वे लम्बी-लम्बी साँसें लेते हैं। इतने में दाल के बड़े बेचने वाला वेंडर, अपना ठेला तख़्त के पास लाकर खड़ा करता है। अब तले जा रहे दाल के बड़ों की ख़ुशबू, चारों तरफ़ फ़ैल जाती है। यह ख़ुशबू, प्लेटफार्म पर बैठे यात्रियों की भूख बढ़ाती जा रही है। मोहनजी को उस झग़ड़े से बचाना, कोई हंसी-खेल नहीं था। बेचारे रशीद भाई, काफ़ी थक गए हैं। इधर इनको अस्थमा की बीमारी अलग से है, इस कारण वे हाम्फते-हाम्फते कहते हैं..]

रशीद भाई – [हाम्फते-हाम्फते कहते हैं] – खुदा रहम। अब कहीं जाकर साँसें ठिकाने आयी, और अब कलेज़े को ठंडक मिली। [वेंडर के ठेले में, तले जा रहे बड़ों को देखते हुए] मोहनजी, वाह क्या ख़ुशबू आ आ रही है इन लज़ीज़ बड़ों से..?

मोहनजी – [बनावटी गुस्सा दिखाते हुए कहते हैं] – रशीद भाई। आपको पूरे दिन दिखायी देते हैं, ये आकरे-आकरे बड़े..? अब क्या कहूं, कढ़ी खायोड़ा रशीद भाई आपको ? अगर खावण-खंडा कह दूं, वह भी ग़लत नहीं होगा। आगे क्या कहूं, आपको ? आपको यह दिखायी नहीं दिया, के...!

रशीद भाई – क्या फरमाया, हुज़ूर ? मैं तो सेवाभावी ठहरा, सबको एक नज़र से देखता हूं, जनाब।

मोहनजी – रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा, एक नज़र से क्यों देख रहे हो भाई ? काणे हो, क्या ?

रशीद भाई – साहब आप मुझे कुछ भी कह दीजिये, मैं बुरा नहीं मानूंगा। मगर अभी आप इन तले जा रहे आकरे-आकरे बड़ों की बात कर रहे थे, मालिक ? अगर आपको बड़े खाने हैं, तो दे दीजिये पैसे। अभी ले आता हूं, ये आकरे-आकरे बड़े।

मोहनजी – बड़ों को मारो गोली, अब मैं यही बात साफ़-साफ़ कहूंगा..के, आपको कुछ दिखायी नहीं देता ? के, इस हिंज़ड़े के झगड़े में मेरे दो रुपये गुम हो गए..? आपको कुछ भी पता नहीं, फिर कैसे बन बैठे मेरे हितेषी..कढ़ी खायोड़े..?

रशीद भाई – [अन्दर ही अन्दर, पछताते हुए] – हाय ख़ुदा, यह कैसा है मेरा साथी..? यह पशु है, या इंसान..? तू जाने, मेरे परवरदीगार। इसको हिंज़ड़े से बचाया, टी.टी. बाबूजी के जुर्माने से बचाया, मगर..कहां गया, मेरा अहसान..? इस खोजबलिये ने तो, दो रुपये का इलज़ाम मेरे ऊपर लगा दिया..? अच्छा होता, मैं उस हिंज़ड़े की तरफ़दारी करता..! ख़ुदा रहम, उस हिंज़ड़े की दुआ तो काम आती..?

[अब रशीद भाई के चेहरे पर, ग़म के बादल छाने लगते हैं। इस स्थिति में उन्हें मालुम नहीं होता, के "रतनजी, ओमजी और अन्य एम.एस.टी. वाले मित्र यहां आ चुके हैं, और सभी उनके पास आकर तख़्त पर बैठ गए हैं।" तले जा रहे आकरे-आकरे बड़ों को देखकर, अब रतनजी कहते हैं..]

रतनजी – [बड़ों की सुगंध का अहसास पाकर, कहते हैं] – दाल के बड़े, वाह रशीद भाई कैसी ख़ुशबू आ रही है..? [रशीद भाई का कंधा थपथपाते हुए] अरे रशीद भाई, कहां खो गए भाई ? कही आप यहां बैठे-बैठे, इन लज़ीज़ बड़ों को खाने का सपना तो नहीं देख रहे हैं..? वाह क्या मंजर होगा, इस सपने का....? कहीं ये गरमा-गरम बड़े ख़ुद चलकर आपके मुंह में घुसते जा रहे हैं..?

रशीद भाई – [अपना दिल जलाते हुए, कहते हैं] – सपना तो सपना ही होता है, जनाब। सच नहीं होता।

मोहनजी – [जेब में हाथ डालते हुए, कहते हैं] – केवल दो रुपये ही खोये हैं, या और कुछ..? [हथेली पर सिक्के रखकर, उन्हें देख़ते हुए] अरे रामसा पीर, ये पाकिस्तानी सिक्के कहां से उड़कर आ गए मेरे पास ? ओ कढ़ी खायोड़ा, सुन रहे हो..?

रशीद भाई – आये कहाँ से ? प्लेटफार्म पर आये पकिस्तान के जायरीनों ने आपको भिखारी समझकर दे दी होगी, खेरात...और क्या ? आख़िर, परायों की चुपड़ी रोटी खाने से ही आपको आनंद मिलता है।

ओमजी – [हंसी उड़ाते हुए कहते हैं] – अच्छा हुआ जनाब, पाकिस्तानी जायरीन भीख में इतने सारे सिक्के देकर चले गए आपको ? अब तो जनाब, हिसाब बराबर..?

रतनजी – रमजान चल रहा है, सवाब तो उनको लेना ही था..ये बेचारे, कब-कब जाते हैं ग़रीब-नवाज़ की मज़ार पर..? पाक-स्थान पर आयें और खेरात न निकाले...ऐसा कैसे हो सकता है ?

[अब उनके साथी ओमजी, रशीद भाई का उतरा हुआ चेहरा कैसे देखते ? मोटर-साइकल की चाबी को बार-बार घुमाते हुए, वे कहते हैं...]

ओमजी – [चाबी घुमाते हुए, कहते हैं] – अरे रशीद भाई, ऐसे मत बोलो मेरे भाई के 'सपना तो सपना ही होता है।' आप जानते नहीं, जहां अफ़सर बिराजमान होते हैं..वहां सपना नहीं, असली मंजर होता है जनाब।

[मोहनजी सिक्के गिनकर जेब में डाल देते हैं, उनके दिल को राहत पहुँचती है..जो पैसे गये हैं, वे डबल होकर लौट आये।]

मोहनजी – [सिक्कों को, जेब के हवाले करते हुए] – अब क्या गिनना, इन सिक्को को ? मगर दो रुपये का नुकसान तो हुआ ही है, इस गुलाबे के झोड़ में।

ओमजी – [मोहनजी पर, निग़ाह डालकर कहते हैं] – अब गिनने का काम, बंद कीजिये। जनाब मोहनजी, मेरी बात सुनिये। जो मैंने कहा, मालिक..वो सच्च है या नहीं..? मालिक, आप हो हमारे अफ़सर। बस अब आप, ये गरमा-गरम बड़े खिला दीजिये हमें।

रशीद भाई – [मुस्कराते हुए] – ऐसे कहो, भाईजान। के, 'जहां अफ़सर बिराज़मान होते हैं, वहां खर्चा अफसरों को ही करना पड़ता है।' बस यही क़ायदा है, इस ख़िलक़त का।

ओमजी – [मुस्कराते हुए] - अगर हम लोगों ने खर्चा कर डाला तो, आपकी थू-थू हो जायेगी। खर्चा तो हम कर देंगे, इसमें हमारा कुछ नहीं जायेगा। केवल आप ही बदनाम होंगे, के आपने हम जैसे छोटे आदमियों के बड़े खा लिए। [रतनजी से] कहिये रतनजी, सच्च कहा या झूठ ?

रतनजी – [हंसते हुए, मोहनजी से कहते हैं] – साहब, बात तो ओमजी ने मार्के की कही है। हम तो आपका ख़्याल रखकर, कह रहे हैं। खर्चा न करने से, बदनामी होगी तो आपकी होगी। हमें, क्या ?

[इतना सुनने के बाद भी, मोहनजी अपने मुंह से एक शब्द नहीं निकालते हैं। और बैठ जाते हैं, चुप-चाप..भोले पंछी जैसा मुंह बनाकर। कुछ देर बाद मुंह से थूक उछालते हुए, कहते हैं के..]

मोहनजी – [मुंह से थूक उछालते हुए, कहते हैं] – खिला देता, यारों..ये आकरे-आकरे बड़े। मगर करूं, क्या..? जेब में पड़े थे दो रुपये, इस गुलाबा के झग़ड़े में गुम हो गए। यह देखो इधर, ये बैठे हैं कढ़ी खायोड़े रशीद भाई..मेरे हितेषी। आख़िर, इन्होंने क्या ध्यान रखा मेरा..?

[बेचारे रशीद भाई, लाचारगी से उनका मुंह ताकने लगे। आख़िर यह कैसा है, यह इंसान..? यह तो बार-बार सुनाता ही जा रहा है, के 'सारी ग़लती मेरी है..?' फिर, क्या..? बेचारे रशीद भाई बैठ गये, चुप-चाप। उनको इस तरह चुप बैठे देखकर, मोहनजी का चुप बैठे रहना..उनके वश की बात नहीं। झट अपने बोलने का भोंपू, रशीद भाई की ओर घुमा देते हैं। और फिर वापस, बोलना शुरू कर देते हैं।]

मोहनजी – रशीद भाई, मेरे दो रुपये खो गये..यह बात, आपसे छुपी नहीं है। अब आप खरगू की तरह, चुप-चाप क्यों बैठे हैं..? कमबख्त इन बड़ों की सुगंध ने, अब भूख बढ़ा दी है मेरी...

रशीद भाई – [बात काटते हुए, कहते हैं] – साहब, आप घर से भूखे निकलने वाले पूत नहीं हैं।

मोहनजी – क्या करूं, रशीद भाई..? सुबह-सुबह भागवान ने नाश्ता करने नहीं दिया मुझे, कहने लगी मुझे के "नौ बज गयी है, अब आप गाड़ी चूक जाओगे।"

[जेब से ज़र्दे की पुड़िया और पेसी निकालते हैं। फिर सुर्ती तैयार करने के लिये, ज़र्दे व चूने को हथेली पर रखते हैं। उस ज़र्दे और चूने को मिलाकर, उन्हें अंगूठे से अच्छी तरह से मसलते हैं। फिर दूसरे हाथ से लगाते हैं, ज़ोर का फटकारा। फिर क्या..? ज़र्दे की खंक उड़ती है, पास बैठे सभी साथियों के नासा-छिद्रों को खोल देती है। और बिना सर्दी-जुकाम, वे छींकों की झड़ी लगा देते हैं। फिर आराम से उस तैयार सुर्ती को, मोहनजी अपने होंठों के नीचे दबाकर कहते हैं..]

मोहनजी – [मुंह से ज़र्दा उछालते हुए, कहते हैं] – बे-शउर भागवान के कारण, मुझे घर से भूखा आना पड़ा। अब मैं भूखा मर रहा हूं, आप लोगों में से कोई भला आदमी मुझे..

रतनजी – [बात काटते हुए कहते हैं] – भगवान का शुक्र है, साहब ने आज़ हम बदमाशों को भला तो कहा है। [मोहनजी से कहते हैं] अच्छा साहब, आप आगे क्या कह रहे थे ?

[मोहनजी के मतलब की बात, सुनने को तैयार हैं रतनजी। जानकर, वे खुश हो जाते हैं]

मोहनजी – [पीक थूककर, कहते हैं] – बाबा रामसा पीर के नाम कोई मुझे बड़े खिला दे, तो बाबा रामदेव उनका भला करेगा। [रोनी सूरत बनाकर] अरे रामसा पीर, हाय मेरे दो रुपये..कहां गुम हो गये..? अगर मेरे दो रुपये नहीं खोते, तो तो मैं ज़रूर आप लोगों को गर्म-गर्म बड़े खिला देता।

रशीद भाई – हां, हुकूम। अब तो सब लोग जान गये हैं, आपके दो रुपये गुम गये हैं और वे खोये रुपये वापस लौटकर भी आ गए हैं...पाकिस्तानी करेंसी बनकर। [होंठों में ही] बड़े आये, दानवीर कर्ण बनकर..? ऐसा वेंडर कहां मिलेगा, जो दो रुपये के बड़े तोलकर दे देता इनको ?

[आख़िर सभी जानते हैं, तेल तो तिलों से ही निकलता है। इस कारण रशीद भाई को अपनी जेब से ही, बीस रुपये निकालकर उस बड़े वाले वेंडर को देने पड़े..! वेंडर को रुपये थमाकर, उससे कहते हैं..]

रशीद भाई – [वेंडर को बीस रुपये थमाते हुए, कहते हैं] – ऐ रे मेरे बड़े भाई, तू फटाफट ढाई सौ ग्राम गरमा-गरम बड़े तोल कर दे दे...

[ढाई सौ ग्राम बड़े तोलकर, वेंडर उन्हें बड़े अख़बार पर रखकर रशीद भाई को थमा देता है। साथियों को खिलाने के लिये, रशीद भाई बड़ो को तख़्त पर रखते हैं। फिर रशीद भाई, उनसे कहते हैं]

रशीद भाई – लो साथियों, अब चेप लो..आकरे-आकरे, गरमा-गरम बड़े। जल्दी करो, साथियों। कहीं ये बड़े, ठंडे ना हो जायें ?

[अब बड़े खाने का मंजर कुछ अजीब सा लग रहा है, हर एक साथी एक-एक बड़ा जहां उठाता है, वहां मोहनजी उठाते हैं चार-पांच बड़े एक साथ। इस मंजर को देखते हुए, रशीद भाई सोचते जा रहे हैं..]

रशीद भाई – [सोचते हुए] – **“असली अफ़सर वे होते हैं, जो अपनी कोहनी पर गुड़ लगाये रखते हैं। वे कभी खर्चा करते नहीं, मगर अपने अधीनस्थ मुलाज़िमों से खर्चा करवाकर..ख़ुद दूसरों से, वाही-वाही लूट लेते हैं। इन बेचारे ग़रीब मुलाज़िमों को तो, अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए खर्चा करना ही पड़ता है।”**

[इधर मोहनजी कुछ अलग ही सोच रहे हैं, के ‘मुझे बड़े खाते देखकर यह खोड़ीला-खाम्पा रशीद भाई, कहीं मुझ पर बुरी नज़र ना लगा दे..?’]

मोहनजी – [होंठों में ही] – क्यों मेरे सामने देख रहा है, कढ़ी खायोड़ा रशीद..? खाने दे रे, मत लगा रे नज़र। निखेत, करमठोक इंसान। क्यों इन एम.एस.टी. वाले लंगूरों को, बड़े खाने का न्योता दिया..? भूखा तो मैं था, मेरे लिए आये थे ये बड़े। ये है कौन, खाने वाले..? न जाने कहां से आ गए, ये फड़सा..?

[आख़िर, मोहनजी उठा लेते हैं बड़ों का दूना। और एक साथ बचे हुए सारे बड़े, डाल देते हैं अपने मुंह में। फिर दूने को ज़मीन पर फेंक कर, बोलने का भोंपू वापस चालू कर देते हैं।]

मोहनजी – भाई लोगों, धीरज रखो। आपने खूब खा लिए बड़े, कब्बूड़ा बनकर। [इंजन सीटी देता है, उसकी आवाज़ सुनकर कहते है] अब, गाड़ी आ रही है। बैग उठा लो, और चलो जल्दी।

[धड़-धड़ की आवाज़ करती हुई, गाड़ी प्लेटफार्म नंबर पांच पर आकर रुकती है। सभी यात्री अपना बैग लेकर, गाड़ी के निकट चले आते हैं। डब्बों के दरवाज़े खुलते ही, लोगों की भीड़ धक्का-मुक्की करती हुई डब्बे में चढ़ती है। मगर इस भीड़ में फंसे हुए मोहनजी, एक क़दम आगे बढ़ा नहीं पाते। इधर डब्बे के अन्दर घुसते वक़्त, बेचारे मोहनजी का पाँव किसी यात्री के पांव के नीचे आ जाता है..और बेरहमी से, कुचला जाता है। फिर, क्या..? बेचारे वहीं से चिल्लाते हुए, कहते हैं]

मोहनजी – [चिल्लाते हुए, कहते हैं] – ठोकिरा, मेरा पाँव कुचल डाला रे। अब दूं तेरे माथे पे, कहां मर गया, कढ़ी खायोड़ा..? [डब्बे में, चढ़ रहे यात्रियों से कहते हैं] अरे, नामाकूलों। काहे की उतावली करते जा रहे हो, शैतान कढ़ी खाने वालों...क्या कभी तुमने, रेलगाड़ी देखी नहीं ? मरो मत, तुम्हारी संख्या कम है..मगर, सीटें हैं बहुत। हटो रे करमज़लों, अब आने दो मुझे।

[मंच पर अँधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद, मंच रोशन होता है। शयनान डब्बे का मंजर, सामने दिखायी देता है। इस शयनान डब्बे में, कई तो सरकारी और कई गैर सरकारी महकमे के मुलाज़िम यात्रा कर रहे हैं। ये रोज़, जोधपुर और खारची के बीच आना-जाना करते हैं। ये सभी, विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी महकमों में नौकरी करते हैं। इनमें कई लोग तो विशेषत:

शिक्षा विभाग़, एफ़.सी.आई.डिपो, जलदाय और मेडिकल विभाग के कर्मचारी है। जो महानुभव अभी सामान रखे जाने वाली पछीत [बर्थ] पर बिराजमान है, वे मीणाजी हैं। जो सांवले वर्ण के हैं और इनके सर पर अफ़्रीकी लोगों की तरह बाल छोटे-छोटे है। जो एक मात्र, कृषि विभाग के हैं। अब इस वक़्त ये सज्जन, योगी बाबा रामदेव के बताये निर्देशों के अनुसार...अपने दोनों हाथों की अँगुलियों के नख, घिसते जा रहे हैं। इनका कहना है, के 'इस तरह नख घिसने से, इंसान के बाल हमेशा काले रहते हैं।' ये मूंछों वाले सज्जन, जो काली सफारी पहने बैठे हैं...मोहनजी है। इनको खिड़की के पास वाली सीट पर ही बैठना पसंद है, ये हमेशा ऐसी ही सीट बैठने के लिए ढूंढा करते हैं। सीट पर कब्ज़ा करने के बाद, मोहनजी का पहला काम है..पास लगी खाना खाने की फोल्डिंग टेबल पर, सट रखकर उसे खोलना और पहली पारी का भोजन अरोग लेना। यदि कभी पास में यह फोल्डिंग टेबल न हो तो, जनाब मोहनजी जिस तख़्त [bench] पर बैठते हैं...वे वहीँ बैठे-बैठे पास वाली सीट पर सट रखकर, खाना खाने बैठ जाते हैं। खाना खाने के बाद, वे कभी उस सीट को साफ़ नहीं करते हैं..जिस पर उन्होंने, अभी-अभी सट खोलकर खाना खाया हो। इस तरह वे अपने वस्त्र तो ख़राब करते ही हैं, मगर दूसरे यात्रियों को वहां बैठाकर उनके वस्त्र भी गंदे करवा देना उनका स्वाभाविक गुण है। उस तेल से सनी सीट पर किसी को भी बैठाकर उसकी पतलून ख़राब ज़रूर करेंगे ही, और इसके साथ जर्दे की पीक थूकते वक़्त ध्यान नहीं रखेंगे के 'उनकी पीक, कहां जाकर गिर रही है..?' कारण यह है, पीक थूकते वक़्त आस-पास की सीटें तो ख़राब करेंगे ही, मगर साथ में आस-पास बैठने वालों के कपड़े ज़रूर इस पीक से गंदे कर लिया करते हैं। ये जनाब बोलते हुए, मुंह से ज़र्दा और थूक उछालेंगे ज़रूर। और साथ में सामने बैठे सज्जन के चेहरे का मेक-अप, मुंह से उछलते जर्दे और थूक से कर डालते हैं। और इसे अपनी, शान समझ लिया करते हैं। कारण यही है, जैसे ही ये मुअज़्ज़म अपना मुंह बोलने के लिए खोलते है, तब थूक के साथ ज़र्दा उछलता रहता है। इन्हें कोई परवाह नहीं, के 'वह ज़र्दा, कहां जाकर गिरता है..?' चाहे वह ज़र्दा किसी के मुंह पर गिरे, या उनके वस्त्रों पर..मोहनजी जनाब को, इससे कोई सारोकार नहीं। मोहनजी का यह ख़ासा जिसको भी पसंद है, वही ख़ुशअख्तर इंसान इनके पास बैठ सकता है। अब डब्बे के अन्दर, जगह-जगह ये बूट-पोलिस करने वाले छोरे, भिखारी, चाय वाले वगैरा फ़ैल जाते हैं। अब इन लोगों की, आवाजें बढ़ती जाती है। डब्बों में ताश के पत्ते खेलने वालों का गुट, कुछ अलग ख़ासा रखता है। इनका बोस है, गालियां बोलने के उस्ताद श्रीमान १०१ जनाबे आली गोपसा। जो जल-दाय विभाग में काम करते हैं, और जोधपुर की जय नारायण व्यास यानी दाबो-कोलोनी में रहते हैं। ये श्रीमानजी करीब ३५ बरसों से इस गाड़ी से रोज़ का आना-जाना करते आ रहे हैं, अल्लाह पाक ने इनको इतनी ताकत दी है...के 'ये अभी-तक, थके नहीं हैं..कभी-कभी तो ये भाईजान इतवार को भी, इस रेल गाड़ी में बैठ कर पाली चले आते हैं..और दफ़्तर में अपने सहकर्मियों को बुलाकर, ताश खेलने बैठ जाते हैं।' इनके दल के लोग डब्बे में आते ही, अपने सारे दोस्तों को बैठाने के लिए उनकी सीटें रोक लिया करते हैं।

इनके किसी भी मेंबर की सीट, यदि किसी यात्री को ख़ाली दिखायी दे जाय..और वह अभागा इन लोगों से, सीट के बारे में तहकीकात करने की ग़लती कर बैठता है, के “भाई साहब, क्या यह सीट ख़ाली है..” बस, फिर क्या ? ये लोग फटाक से तड़क कर, एक ही जवाब देने के तैयार रहते हैं के “ख़ाली नहीं हैं, साहब गये हैं पेशाब करने।” वह यात्री बेचारा, मुंह फाड़े खड़ा रहा..तो इन लोगों में से कोई, व्यंग में यह भी कह देगा के “यहां क्यों खड़ा है, भाया..? अगर आपके पास कोई काम नहीं है, तो लीजिये यह ज़र्दे की पेसी..और बनाइये हमारे लिए सुर्ती।” फिर, क्या..? उस बेचारे का जवाब बिना सुने ही, वे उसे थमा देते हैं पेसी। बेचारा लिहाज़ के मारे, अपनी हथेली पर ज़र्दा व चूना रखकर मसलता रहेगा। और उन महापुरुषों के लिये, सुर्ती बना-बनाकर इन लोगों को चखाता रहेगा। इधर आख़िर इनका साथी आता दिखायी नहीं दिया, तो ये लोग झट उसे भी जबरदस्ती ताश खेलने के लिए बैठा देंगे। ताश खेलने के पहले, इस नए खिलाड़ी को खेल के सारे नियम-क़ायदे बताने का फ़र्ज़ इनके दल के नेता “गोपसा” निभा लिया करते हैं। और उसे हिदायत देते हुए, यह अवश्य कहेंगे के “देख भाई, इस शर्त के साथ तूझे खेलना है..के, हारने वाला खिलाड़ी लूणी स्टेशन पर गरमा-गरम दाल के बड़े सभी खिलाड़ियों को खिलायेगा।” आज़ इन लोगों को छोड़कर सेठ करोड़ी मल भी यात्रा कर रहें हैं। इनका ख़्याल है, के “दुश्मन की नज़र, हमेशा आदमी के जूतों पर टिकी रहती है।” इस कारण ये जनाब, अपने जूतों पर धूल का एक कण भी जमा नहीं होने देते। यह मुअज़्ज़म जूत्ते तो रखेंगे उज़ले, मगर पहनेंगे फटे व पेबंध लगे कपडे। इस तरह ग़रीब दिखने का स्वांग, ये आली ज़नाब ज़रूर दिखाया करते हैं। इनका तो बस एक ही उसूल है, बूढ़े माता-पिता व फटे कपड़े आदमी का व्यक्तित्व निखारते हैं...बिगाड़ते नहीं। सेठ करोड़ी मल अपनी जूतियों पर नज़र गढ़ाये बैठे हैं, तभी एक दस बरस का छोरा, बूट-पोलिस की थैली थामे इस केबीन में आवाज़ लगाता हुआ आता है। इस बूट-पोलिस करने वाले छोरे का नाम है, अजिया।]

अजिया – [आवाज़ लगाता हुआ] – बूट-पोलिस..बूट-पोलिस। [थैली से ब्रश और पोलिस की डिबिया बाहर निकालता हुआ कहता है] सिलाई करा लीजिये, बैग की, जूत्तों की..[सेठ करोड़ी मल के पास आकर कहता है] सेठ, पोलिस..?

सेठ करोड़ी मल – छोरा बैठ जा यहां, फिर पोलिस कर दे मेरी काली जूतियों की।

अजिया – सेठ साहब, मैं तो पांच रुपये लूंगा। अच्छी तरह से देख लेना, चमा-चम क्रीम और असली चेरी पोलिस लगाऊंगा। अजी जनाब, फिर अपना मुंह देख लेना अपनी जूतियों में। आपको कांच की भी ज़रूरत नहीं रहेगी, सेठ साहब।

[सेठ साहब, बेचारे क्या ज़वाब देते..? उससे पहले हमारे मोहनजी चेत जाते हैं, झट उठकर उस छोरे से ब्रश छीनकर ले लेते हैं। फिर, अपने धूल लगे बूटों को साफ़ करने बैठ जाते हैं। इधर, उस छोरे का मुंह देखने लायक..? बेचारा मुंह में अंगुली दबाकर, बेहताशा उनका मुंह देखता जाता है। अपने बूट और सीट साफ़ करके, जनाबे आली मोहनजी ब्रश वापस पकड़ा देते हैं..छोरे को। **यह तो मक़बूले आम बात है, के मोहनजी बेफिज़ूल के कामों में अपना पैसा खर्च करते नहीं...वे तो मुफ़्त में, अपना काम निकाल लेते हैं।** उनका यह व्यवहार देखकर, अजिया आश्चर्य-चकित होकर कहता है..]

अजिया – [आश्चर्य करता हुआ, बोल उठता है] – यह क्या, सेठ...?

मोहनजी – अरे कढ़ी खायोड़ा, मेणे की तरह क्या देख रहा है.....? अबे ओ..कुचमादिये के ठीकरे। आँखे दिखा रहा है, मुझे....? कमबख़्त, तेरी आँखे निकालकर गोटी खेल लूंगा। समझता क्या है, अपने-आपको..? टीटी बाबूजी के बूटों की पोलिस करता है, मुफ़्त में..! और..

अजिया – [उनकी बात काटता हुआ, कहता है] – तो क्या हो गया, साहब..?

मोहनजी – तेरी मां का सर, और क्या...? अरे कढ़ी खायोड़े समझ थोडा, ये हरामजादे रेलवे के कर्मचारी सीटें साफ़ नहीं करते हैं..फिर, क्या..? ख़ाली सीटें ही, साफ़ की है मैंने। कोई, हीरे-पन्ने तो नहीं जड़े..?

[अब तो मोहनजी मालिक इस तरह आँखे तरेरकर उस बेचारे छोरे को ज़हरीली नज़रों से देखते हैं, जैसे अभी उठ कर छोरे को चार लाप्पे नहीं मार दें...? मगर, यहाँ तो जनाब मोहनजी को चुप रहना किसी ने नहीं सिखाया। वे तो धड़ा-धड़, बिना रुके बोलते ही जा रहे हैं ?]

मोहनजी – [आँखे तरेरकर, कहते हैं] – अब छोरे तेरी और इन रेलवे कर्मचारियों की शिकायत, दर्ज कराऊंगा रेलवे के मिनिस्टर लालू भाई के पास।

अजिया – [डरा हुआ कहता है] – शिकायत मत कीजिये, जनाब। [हाथ जोड़ते हुए] आपको हाथ जोड़ता हूं, जनाब। रहने दीजिये, इस बात पर मिट्टी डाल दीजिये।

मोहनजी – [गुस्से से काफ़ूर होकर कहते हैं] – नालायक कढ़ी खायोड़ा, मुझे क्या तू मेहतर समझता है, जो मिट्टी डालने की गेलसफ़ी बात करता जा रहा है ? मिट्टी डालेगा, तू और तेरा बाप..

[मोहनजी, अभी कहां चुप होने वाले ? वे तो अब उसकी सात पुश्तों को सुना रहे हैं, गालियां]

मोहनजी – अब तू देखना, कढ़ी खायोड़ा हरामखोर...क्या करता हूं, मैं ? मंत्रीजी को लिखूंगा, के 'एक तो ये कमबख्त रेलवे कर्मचारी, ड्यूटी अच्छी तरह से करते नहीं..और, दूसरे तुम लोग..? दिन-भर गाड़ियों में बैठकर, मुफ़्त में सैर करते हो ?

[मोहनजी की गूंज़ती हुई आवाज़ सुनते ही, पड़ोस के केबीन में बैठे रतनजी, रशीद भाई और ओमजी झट उठकर इधर चले आते हैं, इस केबीन में तीनों ही मुसाहिब मोहनजी के पास आकर बैठ जाते हैं, परायी पंचायती करने। फिर, क्या...? फिर, रतनजी उस अजिये पर प्यार न्योछावर करते हुए कहते हैं..]

रतनजी – अरे राम रे, राम। ऐसा कौन पापी है रे, जो इस बेचारे ग़रीब छोरे को डरा रहा है...? [मोहनजी की तरफ़ इशारा करते हुए, कहते हैं] अरे छोरे, सुन। ये हमारे अफ़सर है, मोहनजी।

ओमजी – ये अफ़सर तो बहुत रहम-दिल इंसान है, तू इनसे कुछ मांग ले। गधा, तूझे तो हमारे ये साहब दिल खोलकर बख़्सीस देंगे। मांग लेSS, मांग लेSS!

रशीद भाई – अरे छोरे, साहब लोगों की ख़िदमत किया कर। फायदे में, रहेगा तू। मैनेजर साहब है, धान के डिपो के। समझा, अब ? मांग ले, एक बोरी धान की।

रतनजी – [मुस्कराकर कहते हैं] – मोटे अफ़सर है, जनाबे आली। इनके जैसा दिलदार, इस दुनिया में कोई नहीं। [रशीद भाई और ओमजी की तरफ़ देखते हुए] आज़ तो हम यहीं कहेंगे, दोस्तों। अब लूणी स्टेशन पर, हमारे अफ़सर जनाबे आली मोहनजी ज़रूर पिलायेंगे एम.एस.टी. कट स्पेशल मसाले वाली चाय।

ओमजी – [मोहनजी की तरफ़ देखते हुए, कहते हैं] – क्यों साहब, ठीक है ? इंतज़ाम पक्का...?

मोहनजी – [होंठों में ही, कहते हैं] – ये तीनों ही मिले हुए हैं, गधे कढ़ी खायोड़े। क्या कहूं, इनको..? साले तीनों ही है, राहू, केतू और शनि। अब इस वक़्त ये लोग़ मेरी तारीफ़ कर रहे हैं, या मेरी इज़्ज़त की बखिया उधेड़ रहे हैं...? कहीं ये तीनों कढ़ी खायोड़े, मुझे मोडा करने का इरादा तो नहीं रख रहे हैं ?

ओमजी – [उनके दिल की बात जानकर, मुस्कराते हुए कहते हैं] – हुज़ूर, हम तीनों ग्रह एक साथ आपको लग गये..तो रामा पीर जाने, आगे क्या होगा ?

रशीद भाई – सच कह रहे हैं, अफ़सरों। आप कहे तो, कुछ करके दिखायें..?

[इतनी बातें सुनकर, बेचारे मोहनजी तो हो गए ऐसे चुप। और, ऐसा भोला चेहरा बना देते हैं अपना..मानो, उनके जैसा कोई सीधा आदमी इस ख़िलक़त में ना हो..?]

अजिया – [उनको चुप-चाप बैठा देखकर, सोचता है] – मैं अब समझ गया, के 'यहां तिलों में तेल नहीं है, कमबख्त अपना टाइम पास कर रहे हैं ?' फिर क्या..? अपुन क्यों, अपने धंधे का वक़्त ख़राब करेगा..?

[वह तो झट, रुख़्सत हो जाता है। अब इधर खिड़की के बाहर एक पुड़ी वाला वेंडर ग्राहकों को आवाज़ लगाता हुआ, ठेला लिए गुज़रता है।]

पुड़ी वाला वेंडर – [आवाज़ लगाता हुआ] – अरे भाई, पुड़ी-सब्जी खाइये। पुड़ी-सब्जी दस रुपये पाव, ले लो भाई ले लो। ले लो पुड़ी-सब्जी, दस रुपये पाव।

[मोहनजी के कानों में, उस पुड़ी वाले की आवाज़ गिरती है। इस आवाज़ को सुनते ही, उनके पेट में चूहे कूदने लगे। आख़िर भूख बर्दाश्त न होने पर, वे खाने का सट खोलकर सबसे कहते हैं..}

मोहनजी – [सट खोलकर, कहते हैं] – मैं तो भूखा मर रहा हूं, इस पेट में ये दाल के चार बड़े....क्या भूख मिटायेंगे, मेरी..? भूख कम होनी तो दूर, कमबख्त रशीद भाई ने चार बड़े खिलाकर भूख अलग से बढ़ा दी मेरी। अब अच्छा यही है, भोजन अरोग लूं।

रतनजी – [बीच में बोलते हुए] – यह ग़लत काम मत करना, अफ़सरों। खारची पहुंचोगे और तब लगेगी आपको भूख, उस वक़्त क्या खाओगे जनाब..? फिर तो खाने के लिए ख़ाली, रामजी का नाम है।

रशीद भाई – खाने की बातों को, मारो गोली। अगर इनको भूख लगेगी तो ये जनाब खा लेंगे सर, अपने दफ़्तर के मुलाज़िमों का। आप तो इनसे यह मालुम कीजिये, इन्होने पानी की बोतल भरी या नहीं..?

रतनजी – पानी की बोतल से, आपका क्या तात्पर्य..?

रशीद भाई – आप समझे नहीं, भाईजान। गाड़ी रुकी हुई है, अभी नीचे उतरकर, मैं पानी भर कर ला दूंगा। और, क्या ? आख़िर जनाब, हम ठहरे सेवाभावी।

मोहनजी – [ख़ुश होकर] - लीजिये, जनाब। रशीद भाई को मेरी फ़िक्र सताती है, आप कढ़ी खायोड़ा रतनजी कितना ही भड़काओ इन्हें..अब, कोई फर्क नहीं पड़ने वाला नहीं।

रतनजी – क्यों जी, ऐसी आप में क्या ख़ासियत है..?

मोहनजी – ख़ासियत रखते है जी, आख़िर हम है कढ़ी खायोड़ा मोहनजी। तभी तो जनाब, ये रशीद भाई ठहरे, मेरे शुभचिंतक। आप क्या जानते हो, जनाब ? ये तो निस्वार्थ सेवा करते आये हैं, मेरी।

रतनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – नहीं तो फिर, आपसे मिलने वाला क्या ? केवल मुफ़्त में आप इनके मुंह का मेक-अप, अपने मुंह से उछलते ज़र्दे से कर सकते हैं ?

[किसी से मुफ़्त में काम करवाना, मोहनजी के लिए बाएं हाथ का खेल है..? अब इतनी बात होने के बाद, मोहनजी कभी किसी से यह नहीं कहते, के "भय्या, आप भी खाना खायेंगे..?" बस वे तो टिफ़िन खोलकर अपने मुंह में फटा-फट निवाले डालते दिखाई दे रहे हैं, कहीं कोई उनसे पूछ ना ले..के, "मोहनजी, क्या अरोग रहे हैं जनाब..? हमारे लिए भी, कुछ चखने के लिये रखेंगे या नहीं..?" ख़ुदा जाने, उनको तो यह भी मालुम नहीं 'रोटी का निवाला कहां जा रहा है..? सब्जी, कहां गिर रही है..?' वे क्यों देखना चाहेंगे, के उनकी मूँछों के बाल कढ़ी की सब्जी से भींग चुके है ? इधर इनका सफ़ारी बुशर्ट और मफलर भी, कढ़ी की सब्जी से ख़राब हो चुका हैं ? बस, वे तो झट कढ़ी खलास करके कढ़ी खायोड़ा बनने की कोशिश कर रहे थे। इस मंज़र को देख रहे रशीद भाई, कभी तो मोहनजी का इस तरह खाने का तरीका देख रहे हैं..कभी वह गोद में रखी अस्पताल की किताब में छपे व्यंग-चित्र को, देख डालते हैं..? दोनों में, इतनी समानता..? मोहनजी खाना खाते वक़्त वस्त्रों का ध्यान रखते नहीं, और इस व्यंग-चित्र में दिखाये नन्हे बालक को भी खाने की कोई सुध नहीं। इसलिए, उस नन्हे बालक की मां उस व्यंग-चित्र में कह रही है "इस बच्चे को खाने की कोई सुध नहीं, इस कारण मैं इस बच्चे को नग्न ही रखती हूं..अगर जनाब इसे कपड़े पहना दिये गये, तो यह बन्दर बार-बार कपड़े ख़राब करता रहेगा। और मैं अभागन कब तक, इसके कपड़े बदलती रहूंगी ?" इधर मोहनजी को, क्या मालुम ? रशीद भाई उनके बारे में, क्या सोचते जा रहे हैं..? बस वे तो रोटी का निवाला मुंह में डालते-डालते, बोलते ही जा रहे हैं..!]

मोहनजी – [मुंह से थूक उछालते हुए, कहते हैं] – रशीद भाई, कढ़ी खायोड़ा..मैं आपसे क्या कह रहा था, के..?

[आगे, जनाब क्या बोलते..? अचानक उनकी निग़ाह उस व्यंग-चित्र पर जाकर गिरती है, उस व्यंग-चित्र को देखते ही वे नाक-भौं सिकोड़कर कह बैठते हैं..!]

मोहनजी – [चिढ़ते हुए, कहते हैं] – क्या मैं इस छोरे की तरह, लापरवाह होकर खाता हूं..? कढ़ी खायोड़ा, कहीं आप यह तो नहीं सोच रहे हैं....मेरे बारे में ?

रशीद भाई – [मुस्कराते हुएकहते हैं] – हम तो अच्छा ही सोचा करते हैं, मालिक। आप, क्यों फ़िक्र करते जा रहे हैं..?

मोहनजी – अरे नहीं रे, कढ़ी खायोड़ा..मेरा प्रश्न यह है, के 'क्या मैं इस व्यंग-चित्र वाले छोरे की तरह, खाना खाया करता हूं..?' अब आप लोगों का प्लान, मुझे नंगा करने का तो नहीं है..?

रशीद भाई – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – वाह साहब, आप तो हमें जबानी बोल-बोलकर कढ़ी की सब्जी खिला रहे हैं..? हमने कोई कढ़ी खाई नहीं, ज़नाब आप काहे कहते जा रहे हैं हमें, के कढ़ी खायोड़ा...? मगर आपको एक सत्य बात कह दूं, पहले आप यह बता दें..क्या आप, नाराज़ तो नहीं होंगे ?

[मोहनजी मुंह में पानी का एक घूँट पीकर, नाराज़गी दिखाते हुए आगे कहते हैं]

मोहनजी – [नाराज़गी से कहते हैं] – अब तूझे बोलने की इज़ाज़त का इजरा जारी करके मारूं, तेरे मुंह पर ? बोल, अब क्या बकता है..?

रशीद भाई – साहब, मैंने कढ़ी की सब्जी नहीं खायी है। कढ़ी की सब्जी खा रहा है, आपका मफलर और आपका यह कीमती सफ़ारी सूट। आपको नंगा करने की, हमें कहां ज़रूरत..? [मारवाड़ी में कहते हैं] आप ख़ुद, नागा इज हो....आपनै म्हा लोग, कांई नागा करां ?

रतनजी – सच्ची बात है, रशीद भाई। [मारवाड़ी में कहते हुए] मालक तौ पैला सूं, नागा इज है सा। बतलावता ई, झौड़ करेला ?

रशीद भाई – [मुस्कराते हुए कहते हैं] – अरे सावंतसा, इन्हें आप "नंगा" बोलकर नंग-धड़ंग कालिया भूत मत बना देना। मारवाड़ी भाषा में 'नागा' शब्द का मतलब है 'बिना बात झगड़ने वाला इंसान। और, मारवाड़ी में नागा शब्द का अभिप्राय नंगा भी माना जाता हैं।'

रतनजी – फिर, मैं क्या कह रहा हूं ? यही कह रहा हूं, के 'ये जनाब ऐसे हैं, इनको बतलाते ही..ये जनाब झगड़ने बैठ जाते है।' बस इनको बतलाना, और अपना सर फुड़वाना दोनों बराबर है।

[बात बिगड़ती देखकर, अवसरवादी जनाब मोहनजी रशीद भाई की खुशामद करने को उतारू हो जाते हैं।]

मोहनजी – [रशीद भाई की खुशामद करते हुए कहते हैं] - नाराज़ मत हो, मेरे रशीद भाई। आप तो मेरे शुभचिंतक क्या, मेरे कलेजे के टुकड़े हो। अब, सुनो। मैं यह कह रहा था, के...

रशीद भाई – [नाराज़गी से, उनकी बात काटते हुए] – मैं आपके कलेजा का टुकड़ा नहीं हूं, रोटी का टुकड़ा ज़रूर हूं..जिसे आप पूरा ही निगल जाते हैं, और डकार भी नहीं लेते।..

मोहनजी – [नाराज़गी से कहते हैं] – क्यों रे, माता के दीने..? एक तो तेरी तारीफ़ कर रहा हूं, और तू..ऊपर से मेरी क़ब्र ही, खोदता जा रहा है..?

रशीद भाई – मैं क्यों खोदूंगा, साहब ? मैं कोई खारकान [कब्र खोदने वाला] तो हूं नहीं, मैं तो बेचारा एफ.सी.आई. का डस्ट-ओपेरटर हूं। जिसे आप चाहे तो यों कह दें, धूल उड़ाने वाला।

रतनजी – [मुस्कराते हुए] – डस्ट यानि धूल, और ओपरेटर...

रशीद भाई – [जुमला पूरा करते हुए] – ओपरेटर यानि उड़ाने वाला..पूरा मफ़हूम यह हुआ जी, 'धूल उड़ाने वाला'।

मोहनजी – तुम, क्या मफ़हूम बताते हो ? मैं बताता हूं, सुनो। आप, क्या हैं ? ऑफ़िस का काम नहीं करके, एफ.सी.आई. महकमें की धूल उड़ाने वाला इंसान कह सकते हैं आपको।

रतनजी – इन्हें छोड़िये, आप कम कहां पड़ते हैं महकमें की धूल उड़ाने में..? इनसे तो आप, बेहतर उड़ाते हैं महकमें की धूल। अरे साहब, एक काम की बात कहता हूं। आपके बदन पर अगर धूल जम गयी है, तो हमारे रशीद भाई अच्छी तरह से झटक लेंगे। इनके हाथों में इल्म है, आप जब चाहे तब इन्हें बुला लीजिये।

रशीद भाई – मगर मालिक अर्ज़ है, काम करने के बाद मुझे उलाहने मत देना के [धीरे से बोलते हैं] हाथ भारी पड़ गया तो..!

रतनजी – साहब रहने दीजिये, आप तो बड़े साहब है। आपके बदन पर धूल जमने का सवाल, पैदा ही नहीं होता। आप तो मालिक, एयर-कंडीशन में बैठने वालें हैं। बस आप तो रशीद भाई को हुक्म दीजिये, उनको करना क्या है..?

मोहनजी – [खुश होकर, कहते हैं] - रशीद भाई आपसे निवेदन करता हूं, के आज़ शाम को आप उम्मेद अस्पताल चले जाइये। मगर जाना ज़रूर, बहाना मत बनाना। वहां जाकर मेरे मेडिकल बिलों पर डॉक्टर साहब से दस्तख़त ज़रूर करवा लेना, कढ़ी खायोड़ा।

रशीद भाई – मगर, बात यह है, के.....

रतनजी – अगर-मगर कहने की कहां ज़रूरत है, रशीद भाई..?

ओमजी – [बात काटते हुए, कहते हैं] – साफ़-साफ़ बोलो ना, दर्द हो रहा है पेट में..और, दिखला रहे हो सर..? शर्म करने की, अब कहां ज़रूरत..? साहब को अब आप घर का ही आदमी समझ लीजिये, मैं यह भी जानता हूं जनाब। के, 'आप हैं पैदल चलने वाले पद-यात्री। स्कूटर रखते नहीं..फिर, क्या ? मांग लीजिये, साहब से..इनका, प्रिया स्कूटर।'

रतनजी – हम सब जानते हैं, के 'साहब ने अभी-अभी नया प्रिया स्कूटर ख़रीदा है।' अब आप मांग लीजिये इनसे, प्रिया स्कूटर..आराम से जाओगे अस्पताल।

मोहनजी – [मुस्कराकर] – क्या करूं, रशीद भाई..? मुझे तो आता नहीं स्कूटर चलाना, और गीगले की मां स्कूटर को बाहर निकालने देती नहीं। ऊपर से कहती है..

रतनजी – [बात काटते हुए] – 'बाहर ले गये स्कूटर, तो आप फूटी हंडिया की तरह हड्डियां तुड़वाकर वापस घर आओगे।' साहब, भाभीसा यही बात कहती होगी..?

मोहनजी – हां भाई रतनजी, सच्च कहा आपने। अब घर में पड़ा-पड़ा, वह स्कूटर दूध दे रहा है। अब क्या करूं और किसे क्या कहूं, मेरे रामा पीर..?

रशीद भाई – [गुस्से के आवेश में आकर, कहते हैं] – स्कूटर को घर पर रहने दीजिये, पड़ा-पड़ा अगर दूध देवें तो थोडा-बहुत दूध मेरे घर भी भेज देना साहब।

रतनजी – [प्लेटफार्म पर लगी, घड़ी को देखते हुए] – अरे साहब, सुनो मेरी बात। गाड़ी रवाना होने का वक़्त है, ९ बजकर १५ मिनट। इस वक़्त यह स्टेशन की घड़ी समय बता रही है, पूरे दस। जनाब, आपकी घड़ी में कितने बजे हैं..?

मोहनजी – [तेज़ी खाकर, कहते हैं] – दस बजे हैं, दस। मगर भले आदमी, आप मेरे ऊपर भरोसा क्यों कर रहे हैं..? [रेडिओ पर उदघोषक की, एनाउंस की हुई आवाज़ सुनायी देती है।] अब सुन लीजिये, उदघोषक की घोषणा। वह क्या बोल रहा है ?

[सभी उदघोषक की घोषणा सुनने के लिए, अपने कानों पर हाथ देते हुए दिखायी देते हैं।]

उदघोषक – [घोषणा करता हुआ] – सभी यात्री ध्यान दें “अहमदाबाद जाने वाली लोकल गाड़ी, प्लेटफार्म संख्या पांच से ९ बजकर १५ मिनट पर रवाना होगी..'' ************

[उधर प्लेटफार्म पर सरदार निहाल सिंह और क़ाज़ी सईद अहमद सिद्दीकी, खड़े-खड़े बातें करते जा रहे हैं। इधर रशीद भाई को, साहब की ख़िदमत में पानी की बोतल भरनी याद आती है। वे साहब से कहते हैं, के..]

रशीद भाई – जनाब, पानी की ख़ाली बोतल दे दीजिये, भरकर ले आता हूं। ना तो आप..जब इंजन की सीटी सुनेंगे, तब आप कहेंगे के “अरे, जा रे रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा, पानी ला। प्यासा मर रहा हूं।”

[अचानक रशीद भाई की निगाह, आली जनाब क़ाज़ी सईद अहमद सिद्दीकी पर गिरती है। उनके दीदार पाते ही, रशीद भाई झट अपना मुंह नीचा करके मुंह छुपाने का प्रयास करते हैं। जनाब क़ाज़ी साहब ठहरे, रशीद भाई के दोस्त। और साथ में इनकी रोज़ की आदत है, पांच वक़्त नमाज़ पढ़ने की। मगर रशीद भाई इस सरकारी नौकरी के चक्कर में, ख़ाली जुम्मा-जुम्मा नमाज़ पढ़ पाते हैं।]

मोहनजी – [बोतल देते हुए कहते हैं] – लीजिये, बोतल। जाइये जनाब, अब मुंह काहे छुपा रहे हैं..? अरे ओ कढ़ी खायोड़े, सेवाभावी। इस तरह तो, औरतें भी मुंह नहीं छुपाती।

रशीद भाई – [बोतल लेकर जाते हुए कहते हैं] – पानी लाने में, मुझे कोई लज्जा नहीं आती। आख़िर आप लोगों ने, मुझको सेवाभावी का तुकमा जो दे रखा है।

[प्लेटफार्म पर खड़े क़ाज़ी साहब और सरदार निहाल सिंह, गुफ़्तगू कर रहे हैं। क़ाज़ी साहब की तरफ़, अंगुली से इशारा करते हुए रशीद भाई कहते हैं।]

रशीद भाई - इस काजी की औलाद की नज़रों से, बचना चाहता हूं...? कमबख्त मेरा रफ़ीक [मित्र] ज़रूर है, मगर यह मेरी निजी जिन्दगी में ख़लल डालने से बाज़ नहीं आता। बस, यही कारण है जनाब। मैं इसके सामने, जाना नहीं चाहता।

रतनजी – मियां रशीद, काहे की शर्म ? आप क्या, उनकी बहू बेग़म हैं..?

रशीद भाई - [झिझकते हुए] – सावंत भाई, क्यों उड़ा रहे हैं मेरी मज़ाक..? बात यह है, अभी यह माता का दीना पूछेगा के ‘रमजान चल रहा है, मस्जिद क्यों नहीं आ रहे हैं...नमाज़ पढ़ने..?’

[इनके कहने के इस अंदाज़ से, सभी हंस पड़ते हैं। मगर उनकी इस हंसी से, रशीद भाई को क्या एतराज़..? वे तो ठहरे, सेवाभावी। झट उस काजी की निगाहों से बचकर, जा पंहुचे शीतल जल के नल के पास। वहां जाकर वे बोतल में पानी भरने लगते हैं, मगर बदकिस्मत से सरदार निहाल सिंह से गुफ़्तगू करते हुए क़ाज़ी साहब उधर ही तशरीफ़ ले आते हैं, जहां रशीद भाई बोतल में पानी भर रहे हैं। अब बेचारे रशीद भाई, उस शैतान के चच्चा की काक निग़ाह से कैसे बच पाते..?]

सरदार निहाल सिंह – [गुफ़्तगू करते हुए] – अजी क़ाज़ी साहब, यह उदघोषक क्या बोल रहा है, मेनु तो की समझ में आया नहीं..? ऐसा लगता है, वह झूठ बोलता जा रहा है..अरे रब, अब तो सरकारी महकमें वाले भी सफ़ा-सफ़ झूठ बोलते जा रहे हैं..?

क़ाज़ी सईद अहमद सिद्दीकी – [रीश को हाथ से सहलाते हुए] – इन मुड़दो पर केस ठोकूंगा, मरदूद पुरानी केसेट चलाते हैं। अब इधर देखिये जनाब, इनको आख़िर समझायें कौन..? अब दस बज गयी, मगर....

[जनाब की निग़ाह, अचानक रशीद भाई पर गिरती है। फिर, क्या..? झट अपने बोलने के भोंपू की दिशा सरदार निहाल सिंह से हटाकर, रशीद भाई की तरफ़ कर देते हैं।]

काज़ी सईद अहमद सिद्दीकी – [रशीद भाई से] – असलाम वालेकम रशीद मियां, तशरीफ़ रखें हुज़ूर..इस तरह ईद का चाँद मत बनिए, जनाब। अभी रमजान का पाक महिना चल रहा है, आप नमाज़ पढ़ने मस्जिद क्यों नहीं आते ?

रशीद भाई – [पानी भरते हुए] – हुज़ूर, वालेकम सलाम। क्या करूं, जनाब ? घर में सबको हो गया, चिकुनगुनिया का बुखार। अरे जनाब, अल्लाह ने ऐसी बीमारी पैदा की है, जिसमें घुटने भी नहीं मुड़ते..फिर ख़ाक नमाज़ पढ़ूंगा, मस्जिद में आकर..?

[इतना कहकर, झट-पट पानी भरकर चल देते हैं अपने डब्बे की तरफ़। पीछे से आली जनाब क्या फरमा रहे हैं, इनको करना क्या ? ये रशीद भाई आख़िर, सुनेंगे क्यों ? उनके लिए तो पीछे से क़ाज़ी साहब का बोलना, दीवारों को सुनाने के बराबर है। रशीद भाई तो झट घुस जाते हैं, डब्बे के अन्दर। केबीन में दाख़िल होते हुए, वे कहते हैं।]

रशीद भाई – यहां कौन सुने, उनका जवाब..? **न सुनना ही अच्छा, ना तो नमाज़ पढ़ने जायें और ना रोज़ा गले पड़े..?**

मोहनजी – [रशीद भाई की आधी-अधूरी बात सुनकर] – तेरे गले कौन पड़ता है रे, कढ़ी खायोड़ा..? मै तो बेचारा, चुप-चाप बैठा हूं।

रशीद भाई – [मोहनजी को बोतल सौंपकर, कहते हैं] – अफ़सरों। वहां पाली दफ़्तर में तो, काम करके बदन से निकालना पड़ता है...पसीना। वो भी, ऐसी धूल उड़ाओ नौकरी में। मगर इस काजी की औलाद को लगता है, हम पाली में बैठे-बैठे मलीदा खा रहे हैं। [दोनों हाथ ऊपर ले जाते हुए] या ख़ुदा रहम कर, माफ़ी दिला दे इस रोज़े से।

[मोहनजी खाना अरोगने के बाद, सट को बंद करते हैं। फिर खिड़की से हाथ बाहर निकालकर, ठण्डे पानी की बोतल खोलकर अपने जूठे हाथ धोते हैं। हाथ धोने से उस बोतल का ठंडा-ठंडा पानी, खिड़की के नीचे सो रहे काबरिये कुत्ते के ऊपर गिरता है। पानी गिरने से, बेचारा कुता घबरा जाता है। वह डरकर, सरपट दौड़ता है। उसके रास्ते के बीच में, बेचारे काजी साहब आ जाते है। फिर क्या..? वो तो झट उनके पिछवाड़े पर पेशाब की धार चला देता है, फिर उनके पायजामे से अपने बदन को रगड़ता हुआ उनकी दोनों टांगों के बीच में से निकलकर नौ दो इग्यारह हो जाता है। इस तरह उनके पहने पाक वस्त्र, नापाक हो जाते हैं। अब वे नाराज़ होकर, हाय तौबा मचाते हैं। और, वे सरदार निहाल सिंह से कहते हैं।]

क़ाज़ी सईद अहमद सिद्दीकी – [दोनों हाथ ऊपर करके, ज़ोर से चिल्लाते हुए कहते हैं] – अरे नापाक कर दिया रे, मुझको। हाय अल्लाह, अब कैसे जाऊँगा पीर दुल्लेशाह की मज़ार पे..? ओ मेरे बाबा, अब मैं क्या करूं..?

सरदार निहाल सिंह – [हंसते हुए कहते हैं] – नहा लेना, यार। क्या फर्क पड़ता है, कौनसे आप रोज़ नहाते हैं..? जुम्मा-जुम्मा नहाते हैं, आप। इस रमजान माह में, रोज़ नहाया करो। आपको सवाब मिल जाएगा, मेरे यार।

[उन दोनों की गुफ़्तगू सुनकर, रशीद भाई अपनी हंसी रोक नहीं पाते..और वे, खिल-खिलाकर हंसते हैं। इनको इस तरह हंसते पाकर, रतनजी उनसे हंसने का कारण मालुम करना चाहते हैं।]

रतनजी – रशीद भाई, क्या बात है..? आप तो पागलों की तरह, काहे हंसते जा रहे हैं..?

रशीद भाई – [लबों पर, मुस्कान बिखेरते हुए कहते हैं] – वाह भाई, वाह। आख़िर, बाबा ने पर्चा दे ही दिया। दूसरों को मज़हब के उसूल बताना आसान है, मगर जब ख़ुद पर मुसीबत आन पड़ती है तब अहसास होता है। [काजी साहब को देखते हुए] अब जाइए, और मज़हब के कायदों को मानकर नहा लीजिये जनाब।

ओमजी – अरे रशीद भाई, बाबा ने कोई पर्चा नहीं दिया है। पर्चा दिया है, मोहनजी ने..बोतल का ठंडा पानी, कुत्ते के ऊपर डालकर।

मोहनजी – [आधी-अधूरी बात सुनकर] – ठोकिरा कढ़ी खायोड़ा। कैसी पागलों जैसी बातें कर रहे हैं, आप ? पर्चा तो मुझको मिल गया, क्यों मैं इतना जल्दी यहां आ गया..स्टेशन पर ? कुछ खा-पीकर आता तो अच्छा होता, क्योंकि गाड़ी तो अभी तक खड़ी है..

ओमजी – तो हो गया, क्या ? आपने गाड़ी में बैठकर, टुक्कड़ तोड़ लिए ना अब ? फिर, क्या ?

मोहनजी – अभी तक गाड़ी रवाना नहीं हुई है, इसलिए कह रहा हूं। के, आज़ फायदा उनको हो गया जो देरी से आये हैं।

रशीद भाई – अफसरों आप तो चुप-चाप बैठ जाइये, आपके कर्म ही ऐसे हैं..आप उठते हैं लेट, और भाभीसा के ऊपर आरोप जड़ देते हैं, के 'उन्होंने नाश्ता, करने नहीं दिया।' [खिड़की से, बाहर झांकते हुए] अरे देखो, गार्ड साहब ने हरी झंडी दिखला दी है।

[इंजन की सीटी सुनायी देती है, धीरे-धीरे गाड़ी स्टेशन छोड़ देती है। बाहर प्लेटफार्म पर खड़े यात्री दौड़कर, डब्बों में घुसते हैं। अचानक रशीद भाई की बुलंद नज़र दरवाज़े के पास गिरती है, वहां किसी को आते देखकर वे उन्हें ज़ोर से आवाज़ देकर अपने पास बुलाते हैं।]

रशीद भाई – अरे, दीनजी भा'सा आ गए हैं। [रास्ते में खड़े यात्रियों से कहते हैं] अरे, भले इंसानों। ज़रा भा'सा को निकलने का रास्ता तो दीजिये, ना। जानते नहीं, ये ज़रा भारी शरीर वाले ठहरे।

[यात्री गण थोडा परे हटकर, दीनजी भा'सा को निकलने की राह देते हैं। राह मिलते ही दीनजी भा'सा आते हैं, और उनके पीछे-पीछे नगर परिषद के दफ़्तरे निगार [लिपिक] बोड़सा आते हैं। अब सब अपनी-अपनी सीटों पर बैठ जाते हैं।]

रशीद भाई – [अपनी सीट से उठते हुए] – अरे भा'सा आपकी तो साँसे समा नहीं रही है, छाती में। ज़रा, सो जाइये..तबीयत दुरस्त हो जायेगी।

दीनजी – [अपने बैग को, खूंटी पर लटकाते हुए] – रहने दीजिये, रशीद भाई। मैं ठीक हूं, ठीक हूं। बस बात यही है, ग़लत प्लेटफार्म पर उतर गया था..इधर यह खुराफ़ती उदघोषक कभी कुछ कहता है, कभी और कुछ..

रशीद भाई – [सीट पर बैठते हुए] – फिर क्या हुआ, भा'सा ?

दीनजी – होना क्या ? पुलिया वापस चढ़ना, और उतरना और क्या ?

रतनजी – [हंसते हुए, कहते हैं] – और भा'सा, रामा पीर ने कसरत करवा दी आपको। यों तो आप, रामदेवरा जाने के लिए पद-यात्रा करते नहीं..?

दीनजी – [हाम्फते हुए, कहते है] – हां..हां जनाब, पहले मेरी बात सुन लो। इधर जनाब इंजन ने सीटी मार दी, और मेरा तो उस पुलिये से उतरना हो गया मुश्किल।

रशीद भाई – फिर क्या, हुआ भा'सा ?

दीनजी – [सीट पर बैठते हुए, कहते हैं] – हाम्फते-हाम्फते, पकड़ा इस डब्बे को। अब तसल्ली से बैठा हूं, जनाब।

बोड़सा – [अपना बैग थमाते हुए, कहते हैं] – अजी भा'सा, अभी कहां तसल्ली..? अब आप इस बैग का ध्यान रखना, मैं युरीनल जाकर आ रहा हूं। [सीट से, उठते हैं]

दीनजी – [बैग थामते हुए] – वाह बोड़सा, वाह। अभी तो आप स्टेशन के बाहर मूतकर आये, और यह क्या जनाब..वापस तैयार..?

रशीद भाई – [हंसते हुए कहते हैं] – बोड़सा उस्ताद, इतना जल्द मत उतारो यार..अभी तो आप..

ओमजी – [अधूरा जुमला पूरा करते हुए] – 'जवान हैं।' रशीद भाई, जाने दीजिये इन्हें। अभी तो मूतने का कोम्पिटेशन लगा है, आगे-आगे ही आपके उस्ताद मोहनजी युरीनल गये हैं।

[बोड़सा ठहरे मधुमेह के रोगी, वे अब कैसे रुक सकते ? वे तो सरपट दौड़ते हुए जा पहुंचे युरीनल के पास। वहां उन्होंने पतलून की चेन थामे, मोहनजी को खड़ा पाया। बेचारे बेसब्री से, युरीनल का दरवाज़ा खुलने का इंतज़ार कर रहे हैं। अब बीच में आ गए फाडी फंसाने वाले बोड़सा, उनको देखते ही वे कह देते हैं के..]

मोहनजी – पहले मैं आया हूं, पहले मैं जाऊंगा..

[तभी एक युरीनल का दरवाज़ा खुलता है, यात्री के बाहर आते ही मोहनजी झट युरीनल के अन्दर घुस जाते हैं। बेचारे मधुमेह रोगी बोड़सा की हालत पतली हो रही है, लघु-शंका नाकाबिले बर्दाश्त हो जाती है। तभी उनकी किस्मत से, पड़ोस वाले युरीनल का दरवाज़ा खुलता है। फिर क्या..? बोड़सा चैन की सांस लेते हैं, और झट बन्दूक की गोली की तरह वे दाखिल हो जाते हैं युरीनल

के अन्दर। अब गाड़ी की रफ़्तार धीमी हो जाती है, भगत की कोठी का स्टेशन आ जाता है। गाड़ी रुक जाती है, उसके रुकते ही धक्का-मुक्की करते हुए यात्री डब्बे के अन्दर दाख़िल होते हैं। कई गाँव वाले, लाईनमेन भोमजी की घरवाली किसना बाई को ऊँचाये हुए डब्बे में दाख़िल होते हैं। और उनके पीछे-पीछे आते हैं, भोमजी। लूणी वाले भैरूजी के थान का भोपा भी, अलख निरंजन अलख निरंजन का गुंजारा करता हुआ डब्बे में दाख़िल हो जाता है। डब्बे के अन्दर, रास्ते में ठौड़-ठौड़ फ़कीर बैठे हैं। जो यात्रियों को आसानी से, आने-जाने नहीं दे रहे हैं। बड़ी मुश्किल से गाँव वाले, बीमार किसना को आँगन पर लिटाते हैं। लिटाते वक़्त, एक फ़कीर आँखे निकालकर गाँव वालों को देखता है। फिर वह नाराजगी ज़ाहिर करता हुआ, गाँव वालों से पूछ बैठता है।]

फ़क़ीर – [नाराज़गी से] – क्या हुआ, रे..?

एक गाँव वाला – होता क्या..? तेरी मां का सर, और क्या ? दिखता नहीं, इस औरत को भूतनी लगी हुई है। पास मत फटकना इसके, नहीं तो...

दूसरा गाँव वाला – [फ़कीर को डराता हुआ] - अब तू इससे दूर ही रहना, अगर तूझे भूतनी लग गयी तो..तू गाड़ी के मुसाफिरों को, आराम से सोने-बैठने नहीं देगा। अब दूर हट रे, बीमार औरत को सोने दे..हट।

[भूतनी का नाम सुनकर, अब सारे फ़क़ीर दूर हट जाते हैं। उनके दूर हटते ही, गाँव वाले किसना को अच्छी तरह से फर्श पर लेटा देते हैं। काम निपट जाने के बाद, गाँव वाले डब्बे से उतरकर चले जाते हैं। इंजन ज़ोर से सीटी देता है, गाड़ी प्लेटफार्म छोड़कर तेज़ी से पटरियों पर दौड़ने लगती है। अब भोमजी और भोपा सामान की गांठ व बाजरे के आटे की बोरी अच्छी तरह संभालते हुए, किसना बाई के निकट आकर बैठ जाते हैं।

भोपा – क्या-क्या सामान लाया रे, यजमान..? कागज़ बनाकर दिया, वो सारा सामान आ गया क्या..?

भोमजी – [हाथ जोड़कर कहते हैं] – हुकूम, आपके हुक्म से लूणी वाले भैरूजी के थान पर सवा-मन रोट चढ़ाने के लिए पीसी हुई बाजरी का आटा, माली-पन्ना, सिन्दूर, धान, तेल व गुड़ आपकी बतायी हुई सभी चीजें ला दी हुज़ूर।

भोपा – ला दिखा, क्या-क्या लाया तू ?

[भोमजी अब, बोरी व गांठ खोलकर दिखलाते हैं। अब भोपा गांठ से पतकाली मिर्चे, माली-पन्ना और माचिस निकालकर अपने पास रख लेता हैं। फिर अपना त्रिशूल ऊंचा-नीचा करता हुआ, अगम गाथा में लीन हो जाता हैं।]

भोपा – [गुंजारा करता हुआ, कहता है] – जय बाबा भैरू नाथ। कर दे, कल्याण। ओ यजमान, इस मिट्टी को फर्श पर अच्छी तरह से सुला दिया ? [त्रिशूल ऊँचा-नीचा करता हुआ] यह कोई आश्रम नहीं है, बाबा। गाड़ी का डब्बा है, बाबा।

[भोमजी और उनके पास बैठे यात्री भोपा को आश्चर्य से देखते हैं, उन्हें लगता है बाबा ज़रूर चमत्कारी है ? वह किस तरह, भैरू नाथ से प्रत्यक्ष बात कर रहा है ? अब यह भोपा, भोमजी को डराता हुआ वह बोलता जा रहा है]

भोपा – बाबा क्या करेगा जी, यह तो मिट्टी है बाबा। यह शरीर लगता है, दीमक है। मटके का नंबर चाहिए, बाबा। कैसे, बोलेगा..? किच-किच नहीं करेगा, बाबा। बोलो ना, बाबा। चिड़िया का वक़्त पूरा हो गया..सबका होता है, बाबा।

भोमजी – [होंठों में ही] – अरे रामा पीर, ये भोपा क्यों उलाहना देता जा रहा हैं..? इसका क्या मतलब है, के “चिड़िया का वक़्त पूरा हो गया..?” यह भोपा क्या बक-बक करता जा रहा है, रामा पीर ? क्या, यह इसकी चेतावनी है ?

[डर के मारे भोमजी की हालत बुरी हो जाती है, किसना बाई की सम्म्भावित मौत की आशंका समझकर वे घबरा जाते हैं। उनके हाथ-पाँव, कांपते जा रहे हैं। अब वे हाथ जोड़कर, उससे प्रार्थना करते हैं]

भोमजी – [हाथ जोड़कर कहते हैं] - बाबजी, मैं आपकी शरण में हूं । मेरी किसना बाई को बचा दे, बाबा। मेरा घर, टूटने मत दे।

[फिर क्या..? भोमजी तो घबराकर, ज़ोर-ज़ोर से रोते जा रहे हैं। इधर इन भोमजी को स्वत: अपने ज़ाल में फंसा पाकर, भोपा उन्हें लूटने की तरकीब सोचता है। थोड़ी देर बाद, वह उनसे कहता है]

भोपा – देखो बच्चा, रोग बढ़ गया है। बस एक ईलाज़ बाकी है, मगर है महँगा। तेरी हिम्मत हो तो कर, इंतज़ाम ख़ाली पांच हज़ार रुपयों का। सुन, जाप करूंगा..मसान भैरू जगाऊंगा। जय भैरू नाथ, अलख निरंजन।

[इस भोपे की भाषा, बोली-चाली, जात-पांत, रहन-सहन ऐसे गड्ड-मड्ड लग रहे हैं, के 'कोई समझदार इंसान इसको देखकर ही, समझ लेता है..यहां कोई ज्ञान, सिद्धि, और शक्ति कुछ नहीं है।' भोपा तो एक नश्वरता का ज्ञान बखान करता हुआ, पल्ला झटक लेता है]

भोमजी – [भोपा के पांवो में, गिरकर कहते हैं] – कुछ करो, मेरे माई-बाप।

[अब उनके पास बैठे फकीर भी, भोपा से मिन्नत अलग से करते जा रहे हैं। इन बेचारे फ़कीरों के पास, रखा क्या है ? या तो बीड़ियों का बण्डल, या गांजे की चिलम। बस उन्होंने सोचा, के 'किसी तरह इस भोपे को बीड़ी या गांजे की चिलम पिलाकर खुश कर दिया, तो वह जरुर तंत्र-मन्त्र से इस औरत को ठीक कर देगा ?']

एक फकीर – [भोपा से] – बचा ले बाबा, इस औरत को। दुआ लगेगी तुझको, अल्लाह पाक तेरे सौ गुन्हा माफ़ करेगा।

दूसरा फकीर – [भोपा को बीड़ी देता हुआ, कहता है] – अरे बाबा इस बीड़ी के चार कश लगा ले, और बचा ले इस अल्लाह की बंदी को।

[अब मामला कुछ गंभीर होता जा रहा है, भोपा के आस-पास यात्रियों का जमाव होने लगा। इस तरह पाख़ाने की तरफ़ जाने वाला रास्ता, बिल्कुल जाम हो जाता है। अपने चारों तरफ़ इतने सारे तमाशबीन यात्रियों को देखकर, भोपा अपना रंग ज़माना चालू कर देता है। उसने झट पतकाली मिर्चे [लाल सूखी मिर्चें] जलानी शुरू की, फिर किसना बाई का नाक भींचकर मन्त्र पढ़ने का ढोंग करता है। पतकाली मिर्चों के जलने की गंध, किसना बाई के पास पहुंचती है..उस बेचारी की आँखे जलती है, उधर उस भोपे ने उसका नाक अलग से भींच रखा है ? तभी भगवान जाने अचानक किसना बाई के बदन में, न जाने कहां से इतनी ताकत आ जाती है..? के झट उस भोपे को, ऐसा ज़ोर का धक्का मारती है..जिससे बेचारा वह भोपा जाकर गिरता है, युरीनल से बाहर आ रहे मोहनजी पर। और मोहनजी जाकर गिरते हैं, दूसरे युरीनल से बाहर निकल रहे बेचारे बोड़सा के ऊपर। बेचारे बोड़सा को ऐसा लगता है, मानो किसी ने उनके ऊपर धान की बोरी डाल दी है..? इस तरह बेचारे बोड़सा के लिए, यह मूतने का कोम्पीटेशन पड़ जाता है महँगा। इधर हनवंत स्टेशन आ जाने से, अक्समात गाड़ी रुक जाती है। गाड़ी के रुकने से ज़ोरों का लगता है, झटका। इस झटके के कारण, यात्री एक-दूसरे ऊपर आकर गिरते हैं। यात्री जब-तक संभले, तब-तक टी.टी.ई. आसकरणजी रेलवे पुलिस कांस्टेबलों को साथ लिए डब्बे में दाख़िल हो जाते हैं। उनको देखकर, पूरे डब्बे में खलबली मच जाती है। सभी यात्री, अपने-अपने टिकट संभालते हैं। और अब मुफ़्त यात्रा करने वालों में, भय व्याप्त होना स्वाभाविक है। वे घबराकर, युरीनल में जाकर छिप

जाते हैं। इस भाग-दौड़ में भोपे के पास रखे माली-पन्ने बिखर जाते हैं, इधर बेटिकट यात्रियों की धर-पकड़ कर रहे आसकरणजी के पांव उन माली-पन्नों के ऊपर रख दिए जाते हैं। यह मंज़र देखते ही भोपा नाराज़ हो जाता हैं, फिर कड़वे शब्दों का इस्तेमाल करता हुआ आसकरणजी को अपशब्द कहता है]

भोपा – [गुस्से में त्रिशूल को ऊंचा-नीचा करता हुआ कहता है] – अरे, ओ नराधम प्राणी। तूने, यह क्या कर डाला ? अब तो तू ज़रूर, सीधा जाएगा नर्क में, तेरे पिछवाड़े में पड़ेंगे कीड़े।

आसकरणजी – [माली-पन्ने के सिट्टे गाड़ी से बाहर फेंकते हुए कहते हैं] – नराधम तू, और तेरा बाप। साल्ले पाखंडी, मेरी गाड़ी में बिछा रहा है, ज़ाळ। तुझको मेरी ही गाड़ी मिली, लोगों को लूटने के लिए..? कमबख्त, निकाल तेरा टिकट..!

[टिकट का नाम सुनकर, भोपा घबरा जाता है। उसका बदन, पसीने से तर-बतर हो जाता है। अब, टिकट हो तो बतायें..? फिर दारुण नज़रों से अपने यजमान भोमजी को देखता है, शायद भोमजी उसका टिकट दिखलाकर उसे बचा दे..?]

आसकरणजी – [क्रोधित होकर, कहते हैं] – इनको क्या देखता है रे, माता के दीने ? ये भोमजी तो है, हमारे स्टाफ़ के। तू अपना टिकट, दिखा। ना तो ठोकिरे, हो जा तैयार सरकारी ससुराल की हवा खाने के लिए।

[पुलिस वाले युरीनल से बे-टिकट सफ़र करने वाले यात्रियों को, बाहर निकालते हैं। फिर, आसकरणजी के सामने हाज़िर करते हैं। उनको देखकर आसकरणजी गरज़ती हुई आवाज़ से, उन पुलिस वालों को हुक्म दे डालते हैं।]

आसकरणजी – [ज़ोर से] – जवानों। इन सबको सरकारी गहने पहना दो, और साथ में इस पाखंडी बाबा को भी ले लो। यह कमबख्त तो, मेरी गाड़ी में ही भोले यात्रियों को लूटता जा रहा है..?

[आसकरणजी की ज़ोरदार बुलंद आवाज़ सुनकर रतनजी, कई एम.एस.टी. वालों को साथ लेकर वहां चले आते हैं। आसकरणजी को देखकर, रतनजी कहते हैं।]

रतनजी – [आसकरणजी के नज़दीक आकर कहते हैं] – भा'सा, जय श्री कृष्ण। कैसे हो, जनाब ? क्या हाल-चाल है, आपके ? वाह भाई, वाह। आज़ तो जनाब, आपने इतने सारे सरकारी दामादों को इकठ्ठा कर लिया है। क्या आप इन्हें, सरकारी ससुराल ले जा रहे हैं..?

आसकरणजी – [बेरुखी से कहते हैं] – मैं तो ठीक हूं, भय्या। मगर, आपके क्या हाल हैं ? गपों का बाज़ार, गर्म करते जा रहे हैं आप ? और भूल गए आप, इंसानियत..? यह बेचारी बीमार औरत पड़ी है, ठण्डे फर्श पर। और आप अपनी सीटों पर बैठे-बैठे, हंसी-मज़ाक करते जा रहे हैं..?

रतनजी – क्या कहा, जनाब..?

आसकरणजी – सुना नहीं, आपने..? यह भोमजी की बेर [पत्नी] है, बेचारी तकलीफ़ पा रही है। क्या आप भूल गए, हमारे भोमजी बन्ना को..? बस इतना ही हमारे स्टाफ़ वालों का, आप लोग ध्यान रखते हैं..?

[अब रतनजी, भोमजी व उनकी बेर पर निग़ाह डालते हैं। फिर देखते हैं, उस पाखंडी भोपे को। जो सरकारी गहने पहना हुआ, बे-टिकट यात्रियों के साथ बैठा है। उन लोगों के पास ही, पुलिस वाले मुस्तेदी से खड़े हैं। भोमजी लाईनमेन को पहचानकर, रतनजी उन्हें उलाहना देते हुए कहते हैं।]

रतनजी – अरे ओ भोमजी, आप यहां इन फकीरों के पास आकर कैसे बैठ गए..? अरे बेटी का बाप, कहीं इनके पास बैठकर गांजा पीने की तलब तो नहीं आ गयी आपको ? अब उठिए, भोमजी..चलो हमारे साथ।

[इतना कहकर, पास खड़े एम.एस.टी. वालों से कह बैठते हैं।]

रतनजी – [एम.एस.टी. वालों से] – उठाओ रे, भाभी को। [भोमजी से] भोमजी, ज़रा आप भी थोडा हाथ लगाना।

[सब मिलकर किसना बाई को सहारा देकर, ले आते हैं, मोहनजी वाले केबीन में। वहां ले जाकर, सीटें ख़ाली करके उसे लिटाते हैं। पीछे से, भोमजी भी उसी केबीन में चले आते हैं।]

रशीद भाई – [तख़्त से सामान दूर लेते हुए] – आओ भोमजी, आओ। आप आराम से बिराज जाइए, खिड़की के पास। मोहनजी गए हैं, मूतने।

रतनजी – [हंसते हुए, कहते हैं] - आज़ तो यह काका बार-बार जा रहा है, युरीनल। वो आये तब, उन्हें भेज देना हमारे पास...हम लोग, पास वाले केबीन में ही बैठे मिलेंगे।

[अब सभी एम.एस.टी. वालें अपना सामान उठाकर, पास वाले केबीन की तरफ़ जाते हैं। भोमजी अब, मोहनजी वाली जगह पर आराम से बैठ जाते हैं। रशीद भाई अपने बैग से जोड़ मसलने की ट्यूब व पेरासिटामोल की गोलियां निकालकर, भोमजी को देते हुए कहते हैं।]

रशीद भाई – [ट्यूब और गोलियां देते हुए] – भोमजी सा, आप यह सोच लीजिये के भाभीसा को ना तो कोई भूत लगा है, ना भूतनी। यह लीजिये, ट्यूब और गोलियां। भाभीसा को हुआ है, चिकुनगुनिया का बुखार।

भोमजी – [ट्यूब और गोलियां लेते हुए, कहते हैं] – क्या, यह सच्च है..?

रशीद भाई – शत प्रतिशत सही है, गाँव-गाँव और शहर-शहर में यह बुखार फ़ैल गया है। इसलिए जनाब, मैं जैसा कहता हूं आप वैसा ही कीजिये। अरे भोमजी सेठ, मैं तो अक़सर पेरासिटामोल की गोलियां व जोड़ मसलने की मूव ट्यूब, अपने बैग में अपने साथ ही रखता हूं ।

भोमजी – रशीद भाई, क्या यह सच्च है...किसना बाई को, कोई भूतनी नहीं लगी है ?

रशीद भाई – यही बात समझा रहा हूं, आपको। इस बुखार में बदन के सभी जोड़ टूटते हैं, औरतें तो जनाब अपने बाल खींचती है..अरे जनाब, आपको क्या कहूं ? गंवार समझते हैं, के 'इसको भूतनी लग गयी है।' फिर क्या ? फ़टाफ़ट बुला लाते हैं, किसी भोपे या ओझा को। वह इन्हें मूर्ख बनाकर, रुपये-पैसे लूट लेता है।

भोमजी – [हंसते हुए, कहते हैं] – अरे मालिक अब आप मुझे गंवार मत समझना, आप लोगों का साथ करके मैं तो समझदार इंसान बन गया हूं। अब आप यह बताइये, ये गोलियां कैसे लेनी हैं..?

रशीद भाई – भोमजी यार आप तो अभी, भाभीसा के हाथ-पाँव के जोड़ों पर ट्यूब की मालिश कर लीजिये। अभी आराम मिलता है, लूणी स्टेशन आये तब...थड़ी वाले से चाय लेकर, भाभीसा को चाय के साथ गोली दे देना।

[अब रशीद भाई जाने के लिए अपना बैग उठाते हैं, फिर भोमजी से कहते हैं।]

रशीद भाई – [बैग उठाकर, कहते हैं] – अब चलते हैं, अब आप भाभीसा का ध्यान रखना।

भोमजी – जो हुक्म, मालिक। मेरे लायक कोई काम हो तो रशीद भाई, आप ज़रूर कहें।

रशीद भाई – मोहनजी आये तब उन्हें, पास वाले केबीन में भेज देना। अब आप आराम से बैठकर मालिश कीजिये, भाभीसा के जोड़ों की। अब हम, चलते हैं।

[रशीद भाई और उनके सारे साथी, पास वाले केबीन में चले जाते हैं। मंच पर, अंधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच वापस रोशन होता है। मोहनजी अपने लबों पर मुस्कान लाकर, युरीनल से बाहर आते हैं। उनके बाहर आते ही, झट बाहर खड़े बोड़सा बन्दूक की गोली की तरह युरीनल में घुस जाते हैं। अब मोहनजी डब्बे के दरवाज़े के पास आकर, खड़े हो जाते हैं। वहां खड़े-खड़े, बाहर का नज़ारा लेते दिखायी देते हैं। गाड़ी की रफ़्तार, धीमी होती है। लूणी स्टेशन आता है, गाड़ी प्लेटफार्म पर आकर रुक जाती है। अब प्लेटफार्म पर चारों और थड़ी वालों की आवाजें गूंज़ती है, तभी सामने वाले प्लेटफार्म पर मोहनजी को एक मालगाड़ी खड़ी दिखायी देती है। वह मालगाड़ी, उन्हें धान की बोरियों से लदी हुई लगती है। अब कई यात्री चाय-नाश्ता करने के लिए, नीचे उतरकर प्लेटफार्म पर आते हैं। और इधर पुलिस वाले बे-टिकट यात्रियों व उस भोपे को साथ लिये, स्टेशन मास्टर के दफ़्तर की तरफ़ जाते दिखायी देते हैं...और उनके पीछे-पीछे, आसकरणजी क़दमबोसी करते हुए दिखायी देते हैं। धान की बोरियों से लदी हुई माल गाड़ी को पाकर, मोहनजी खुश हो जाते हैं। अब वे, बड़ाबड़ाते हैं।]

मोहनजी – [बड़बड़ाते हुए] – अरे ठोकिरा, यह तो विशेष मालगाड़ी है..जिसमें आस्ट्रेलिया के लाल गेंहू की बोरियां भरी है। वाह, अब तो अपनी किस्मत चमक गयी है। अब तो तीन-चार दिन का टूर पैदा हो गया। पहले से स्वीकृत की हुई छुट्टियां, अब रद्द समझो।

[प्लेटफार्म से गुज़रते हुए, एक ग्रामीण के ऊपर उनकी निग़ाह गिरती है। जिसने सर पर पचरंगी पगड़ी और बदन पर सफ़ेद कुर्ता व ऊंची धोती पहन रखी है। जो एक ही नज़र में, देहाती लग रहा है। उसे देखते ही, वे उसे ज़ोर से आवाज़ देते हुए कहते हैं।]

मोहनजी – [ग्रामीण को ज़ोर से आवाज़ लगाते हुए, कहते हैं] – अरे, ओ पगड़ी वाले भईजी। हम एफ़.सी.आई. के अफ़सर हैं, हमें थोडा बताकर जाओ..वह मालगाड़ी कहां से आयी है, और कहां जा रही है..?

[वह पगड़ी वाला ग्रामीण, एक बार ज़रूर मोहनजी की तरफ़ देखता है..मगर, कोई जवाब नहीं देता...बस, अनसुना करके, प्याऊ की तरफ़ क़दमबोसी कर बैठता है। हुक्म की तामिल नहीं होने से, मोहनजी को आ जाता है अफ़सरशाही का ताव। फिर क्या..? झट गाड़ी से नीचे उतरकर पहुँच जाते हैं, उसके पास। फिर उसका हाथ पकड़कर, ऊंची आवाज़ में कहते हैं।]

मोहनजी – [पगड़ी वाले का हाथ पकड़कर, कहते हैं] – कहां जा रिया है, कढ़ी खायोड़ा..? ए पगड़ी वाले भय्या, सुनता क्यों नहीं..बहरा है..? बता अब, यह मालगाड़ी कहां से आ रही है, और कहां जा रही है..? नहीं जानता है तो जा, माल बाबू को पूछकर आ।

[मगर वह कुछ बोलता नहीं, ऐसा लगता है मानो उसने अपने होंठों की सिलाई कर रखी है ? इधर गार्ड साहब ने, हरी झंडी दिखला दी। और उधर, मोहनजी के कानों में इंजन की सीटी गूंज़ती है। फिर, क्या ? मोहनजी तेज़ क़दम चलते हुए, अपने डब्बे की तरफ़ बढ़ते है। मगर रास्ते में पुड़ी वाला वेंडर उनका रास्ता रोकता हुआ, ऐसी करुण आवाज़ में उनसे निवेदन करता है....मानो, वह कह नहीं रहा है, बल्कि रोता जा रहा है ।]

पुड़ी वाला वेंडर – [रोवणकाळी आवाज़ में] – इंऽऽ इंऽऽ पुड़ी-सब्जी ले लो, पुड़ी खाइके। [मोहनजी से] ओ एफ.सी.आई. के अफसरों ले लो पुड़ी-सब्जी..पैसे कम लगा दूंगा। ले लो, दस रुपये पाव पुड़ी-सब्जी।

मोहनजी – [मोल-भाव करते हुए] – थोड़े और पैसे कम करो, भईजी। आप कौनसा बढ़िया तेल वापरते हैं, भईजी ? [इतने में गाड़ी प्लेटफार्म छोड़ती हुई, दिखाई देती है] अरे कढ़ी खायोड़ा, मेरी गाड़ी तो छूट रही है..

[गाड़ी, धीरे-धीरे चलने लगती है। मोहनजी दौड़कर, डब्बे के दरवाज़े की तरफ़ बढ़ने का प्रयास करते हैं। बेचारे घबरा जाते हैं, इस घबराहट के मारे उनके हाथ-पांव फूल जाते हैं। दरवाज़े का हेंडल थामने की कोशिश करते हैं। मगर वो हेंडल, इनके कांपते हाथ से पकड़ा नहीं जा रहा है। वहां दरवाज़े के पास खड़े ओमजी, अपना हाथ बाहर निकालकर उन्हें पकड़ने की कोशिश करते हैं। बहुत मुश्किल से बेचारे मोहनजी की कलाई उनके हाथ में आती है, वे उन्हें खींचकर डब्बे में लाते हैं। तभी वह पुड़ी वाला वेंडर अपना ठेला बढ़ाता हुआ दरवाज़े के निकट चला आता है, और ज़ोर-ज़ोर से मोहनजी को आवाज़ देता हुआ उन्हें कह बैठता है।]

पुड़ी वाला वेंडर – [ठेला बढ़ाता हुआ] – अफसरों ले लो, सब्जी-पुड़ी। कढ़ी की सब्जी, आपको मुफ़्त में दूंगा। ले लीजिये, जनाब ले लीजिये।

[मुफ़्त की चीज़ छोड़ने की, मोहनजी की इच्छा होती नहीं। और वो भी मुफ़्त, उनकी फेवरेट कढ़ी की सब्जी..? अब वे गाड़ी से उतरने की कोशिश करते हुए, कहते हैं।]

मोहनजी – **कहां जा रिया है, कढ़ी खायोड़ा..?** पुड़ी-सब्जी देता जा रे, ठोकिरे।

[उतरने की, कोशिश करते हैं। मगर ओमजी उनकी कलाई थामें रखते हैं, जिससे वे नीचे उतर नहीं पाते। मगर उनका दिल, पुड़ी-सब्जी लेने का बना रहता है।]

मोहनजी – [उतरने की कोशिश करते हुए, कहते हैं] – कहां जा रिया है, पुड़ी वाले..? पुड़ी-सब्जी, देता जा। कढ़ी की सब्जी देना, भूलना मत।

ओमजी – [मोहनजी को खींचकर वापस लाते हुए, कहते हैं] – ख़ुदकुशी, करनी है क्या..? हम तीन ग्रहों से परेशान हो गए हो तो, मरो जाकर..हमें क्या ?

[मोहनजी की कलाई पकडे हुए ओमजी, उनको लाकर उनकी सीट पर बैठाते हैं। मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच वापस रोशन होता है। लूणी स्टेशन का प्लेटफार्म दिखायी देता है, वहां प्याऊ के पास वो पगड़ी वाला खड़ा है। प्याऊ वाला इस समय, उस पगड़ी वाले को फटकारता हुआ कह रहा है।]

प्याऊ वाला – [डांटता हुआ, कहता है] – ओ भईजी, ऐसा किस बात का घमंड है..आपको ? उस एफ.सी.आई. के अफ़सर को जवाब देने में, आपको मौत आयी थी ?

[इतने में उसके पहलू में बैठा एक लाइनमेन, बोल उठा]

लाइन मेन – [पगड़ी वाले से] - वो बिचारा मासूम, कितना ज़रूरतमंद दिखायी दे रहा था ? आपके कारण बेचारे की गाड़ी छूट जाती तो, भईसा..आपके बाप का, क्या जाता ?

पगड़ी वाला – [हकलाता हुआ कहता है] – क..क क्या बताऊं ? मैं हक़ हकला हूं, झग..झगड़ा हो जाता।

प्याऊ वाला – [हंसता हुआ कहता है] – अच्छा हुआ, नहीं बोला तो। अभी बहन की ठौड़ रांड बोल देता, तो रामा पीर जाने तेरी क्या गत होती..?

[मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच वापस रोशन होता है। मोहनजी और उनके साथी, केबीन में बैठे हुए दिखायी देते हैं। मोहनजी की साँसे अभी सामान्य नहीं हुई, इसलिए वे हाम्फते हुए बोलते जा रहे हैं।]

मोहनजी – [हाम्फते हुए, कहते हैं] – अरे..अरे रामा पीर, इतना दौड़ा इतना दौड़ा..बाद में मेरे हाथ में आया यह कमबख्त ह..ह हेंडल।

ओमजी – अफसरों झूठ मत बोलो, हेंडल नहीं..पकड़ में आया मेरा हाथ। बेटी का बाप, आज़ तो आप ख़ुद तो मरते, और साथ में..मेरी भी ख़ुदकुशी करवा देते..?

रशीद भाई – ख़ुदा रहम। देख लीजिये, जनाब। आप तो हमें, राहू, केतू और शनि ग्रह कहते हैं..फिर हम में से एक ग्रह का हाथ थामकर, आपने जीवन की डोर पकड़ ली। कहिये, हम लोग आपके मित्र हैं या दुश्मन..?

मोहनजी – [लबों पर मुस्कान लाकर, कहते हैं] – रशीद भाई आप ठहरे, सेवाभावी। आप सच्च ही कहते होंगे, अब आप अपनी भरी हुई पानी की बोतल थमाकर मित्र का धर्म निर्वाह कीजिये। अरे यार, प्यासा मर गया..

[रमजान का पाक महिना, और यह अंगार उगलती गर्मी। और इधर, यह रोज़ का आना-जाना। गाड़ी में बैठे रशीद भाई ने रोज़ा न रख पाने की, अल्लाह पाक से माफी मांग ली थी। रोज़े से तो छुटकारा मिल गया, मगर अब मोहनजी को प्यासे मरते देखकर उनका दिल पसीज गया। वे अपने दिल में ही सोचने लगे, के..]

रशीद भाई – [सोचते हुऐ] – देखा जाय तो यह मोहनजी है कुपात्र, दया करने के लायक नहीं। अभी इसको पानी से भरी हुई बोतल दूंगा, तो यह ज़रूर मुंह लगाकर इसे जूठी कर देगा। फिर तो अल्लाह मियां, मुझे प्यासा ही रहना होगा ? इधर चल रहा है रमजान, रोज़े ना रखे तो क्या..? इसे पानी पिलाकर, अब सवाब ले लेना ही अच्छा है।

[इतना सोचकर, वे पानी से भरी हुई बोतल मोहनजी को थमा देते हैं। फिर कहते हैं, उनसे..]

रशीद भाई – [बोतल थमाते हुए, कहते हैं] – भर-पेट पानी पी लीजिये, जनाब। और इस बोतल को भी, अपने पास रख लेना। क्योंकि, हमारा तो पाली स्टेशन आने वाला ही है। [सोचते हुए] रोज़ा नहीं रखा, तो क्या..? प्यासे को पानी पिलाकर सवाब तो ले लिया, ख़ुदा के फ़ज़लो करम से।

मोहनजी – [बोतल लेते हुए कहते हैं] – ओ भले मानुष, रशीद भाई कढ़ी खायोड़े। तेरा भला हो..[केबीन में भोमजी को आते हुए देखकर, कहते हैं] अरे ये लीजिये, भोमजी सेठ भी आ गए..? अरे रामसा पीर, बोरी ऊंचाकर यहां क्यों लाये..भोमजी ?

[रशीद भाई के पास, आटे से भरी बोरी लाकर रखते हैं। फिर हाथ जोड़कर, उनसे निवेदन करते हैं।]

भोमजी – [हाथ जोड़कर कहते हैं] – आपका भला हो, रशीद भाई। क्या गोली दी, आपने..? भागवान तो उठकर बैठ गयी है, जोड़ों का दर्द तो बिल्कुल ही खत्म हो गया। अब मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूं, आशा है आप मेरा काम ज़रूर करेंगे।

[इतना कहकर, भोमजी रशीद भाई के पहलू में बैठ जाते हैं।]

रशीद भाई – हुक्म कीजिये, भोमजी सेठ।

भोमजी – करमज़ला भोपा तो गया, धेड़ में..काला मुंह करने। भैरूजी बाबजी को रोट चढ़ाने के लिए, लाया था..मन भर, बाजरी का आटा। अब आप इस आटे की बोरी को, ले लीजिये..

रशीद भाई – अरे भोमजी सेठ, मैं क्या करूंगा इस आटे का ? सवाब के लिए निकाली गयी चीज़, घर ले जा नहीं सकता..इधर रमजान का पाक माह, अलग से चल रहा है....

भोमजी – [हंसते हुए, कहते हैं] – अरे साहब, रामापीर बचाये मुझको..आप जैसे भले आदमी को, पुण्य की चीज़ खिलाये तो ? अगर ऐसा हो गया तो, रामा पीर मुझे नर्क मिले। बस मालिक..

रशीद भाई – कहिये, भोमजी सेठ, क्या कहना चाहते थे आप..? शर्म मत कीजिये, आप फरमाइये।

भोमजी - मेहरबानी करके आप अपने दफ़्तर के ग्राउंड में, इस आटे से कीड़ी नगरे सींचते रहना। मुझे मालुम है, आपके वहां बहुत सारे कीड़ी नगरे है।

[भोमजी की बात सुनकर, मोहनजी को लाडी बाई के बोले गए कड़वे शब्द याद आ गये, के "अब मैं आपको सावचेत कर रही हूं, वापस आकर बाजरे की बोरी पिसाकर रख देना...नहीं तो, आप जानते ही हो..." अब उन्हें, अनायस बाजरे के आटे का इंतजाम होता दिखायी देने लगा। वे खुश होकर, अपने दिल में सोचने लगे के..]

मोहनजी – [होंठों में ही] – **कहां जा रिया रे, कढ़ी खायोड़ा..**भोमजी ? इसको मत दे रे, यह बोरी बाजरे के आटे की। यह रशीद ठहरा, धूल उड़ाने वाला। दफ़्तर में कुछ काम करता नहीं, अस्थमा की बीमारी का बहाना लेकर। मुझे यह बोरी दे दे यार भोमजी, मेरा काम सलट जायेगा।

[रशीद भाई के हां या ना कहने के पहले ही, मोहनजी झट बोरी को खिसका कर रख लेते हैं अपने पास। और फिर, शीरी जबान से कहते हैं।]

मोहनजी – [शीरी ज़ुबान से, कहते हैं] - भोमजी सेठ। मेरे दफ़्तर के पास भी, बहुत सारे कीड़ी नगरे हैं। मैं यह बोरी ले जा रहा हूं, रोजाना कीड़ी नगरे सींचता रहूंगा..बस, आप बेफ़िक्र हो जायें। अब आप ऐसा कीजिये, भोमजी..

भोमजी – बोलो हुकूम, हुक्म दीजिये।

मोहनजी – देखो भोमजी, ऐसे तो यह बीमारी जाती नहीं, आज़ आप पाली उतर जाइए।

भोमजी – अच्छा साहब, आगे हुक्म कीजिये।

मोहनजी – पाली उतरकर आप दोनों सीधे रुई कटला जाना, वहां है डॉक्टर तुलसी दासजी पुरोहित की डिस्पेनसरी। वहां भाभीसा को दिखलाकर, ईलाज़ ले लेना। उनकी दी हुई दवाई, कार करती है। तुलसी दासजी पाली के, माने हुए अनुभवी डॉक्टर हैं।

[डायरी से पन्ना फाड़कर, उसमे डॉक्टर साहब का पूरा पत्ता लिखते हैं। फिर उस कागज़ को, भोमजी को थमा देते हैं।]

मोहनजी – [कागज़ थमाते हुए, कहते हैं] – लीजिये भोमजी, इसमें डॉक्टर साहब का पूरा पत्ता लिख दिया है। अब आप उनसे पूरा ईलाज़ ले लेना, भाभीसा जल्द ठीक हो जायेगी।

[भोमजी मोहनजी से पत्ता लिखा कागज़ ले लेते हैं, फिर कहते हैं..]

भोमजी – आपका भला हो, साहब। मेरे लिये और कोई काम हो तो, हुक्म दीजिये। मुझे बहुत ख़ुशी होगी, अगर मैं आपके कोई काम आ सका।

[भोमजी के ऐसा कहते ही, मोहनजी ने अपने लबों पर मुस्कान छोड़ दी..फिर अपने साथियों को खारी-खारी नज़रों से देखते हुए, भोमजी से कहते हैं।]

मोहनजी – [लबों पर मुस्कान लाकर, कहते हैं] – भोमजी सेठ, कहना नहीं चाहता। मगर, आप इतना ज़ोर देकर कह रहे हैं...

भोमजी – [उठते हुए, कहते हैं] - शर्म मत कीजिये, साहब। फरमाइए, हुकूम।

मोहनजी – अभी आप पाली में उतरो तब खारची के माल बाबू से मेरी सिफ़ाअत लगाकर कह देना, के 'मोहनजी आपको जो माल देवे, वह माल जोधपुर पहुंचा देवे।' वे जोधपुर में, गार्ड बाबू से माल ले लेंगे।

[गाड़ी के इंजन की सीटी सुनायी देती है। थोड़ी देर में, पाली स्टेशन आता हुआ दिखायी देता है।]

भोमजी – जय रामजी सा। पाली स्टेशन आ गया है, अब रुख़्सत होने की इज़ाज़त चाहता हूं । आप फ़िक्र करना मत, उतरते ही सबसे पहले माल बाबू को फोन लगा दूंगा।

[गाड़ी की रफ़्तार धीमी हो जाती है, गांठ ऊंचाये हुए भोमजी अपनी बेर के साथ डब्बे के दरवाज़े की तरफ़ कदम बढ़ाते दिखायी देते हैं। अब ओमजी रशीद भाई के कान में, कुछ कहते नज़र आते हैं।]

ओमजी – [कान में फुसफुसाते हुए कहते हैं] – देख लीजिये, रशीद भाई। साहब का चेहरा चमकने लगा है, आख़िर साहब ने सेटिंग कर ही ली।

मोहनजी – [लबों पर मुस्कान लाकर] – रशीद भाई सुबह आपने बड़े खिलाये, अब मैं शाम को आऊंगा तब आप सबको चाय ज़रूर पिला दूंगा। अब आप सब लोग, आराम से जाना। जय बाबा री, सा।

[गाड़ी रुक जाती है, मोहनजी को छोड़कर सभी साथी अपने बैग उठाकर प्लेटफार्म पर उतर जाते हैं। नीचे उतरने के बाद रतनजी, खिड़की के पास बैठे मोहनजी की तरफ़ देखते हुए जुमला बोल देते हैं।]

रतनजी – ये आली जनाब, चाय क्या पायेंगे..? अरे जनाब, आली जनाब ठहरे, अफसर। जो **कोहनी पर गुड चढ़ाए रखते हैं..**खुद ख़र्चा करते नहीं, मगर अपने नीचे वाले कार्मिकों से ख़र्चा करवाकर यश ख़ुद लुट लेते हैं। ये महाशय तो...

ओमजी - मुट्ठियों में थूककर, अहिंसा एक्सप्रेस से भाग जायेंगे जोधपुर। सभी जानते हैं, यह गाड़ी कभी पाली नहीं रुकती है।

[सर्वोदय कोलोनी वाली रेलवे फाटक के पास, आया हुआ सिंगनल डाउन हो चुका है। सर्वोदय कोलोनी वाली फाटक, अब बंद दिखाई दे रही है। अचानक मोहनजी को कुछ याद आता है, झट खिड़की से मुंह बाहर झांककर रशीद भाई को आवाज़ लगाते हुए कहते हैं।]

मोहनजी – [खिड़की से बाहर झांकते हुए, कहते हैं] – **कहां जा रिया रे, कढ़ी खायोड़ा** रशीद भाई ? पानी की बोतल तो...

[आगे उनकी आवाज़ सुनाई नहीं देती है, क्योंकि मारवाड़ जंक्शन से आ रही एक माल गाड़ी की तेज़ रफ़्तार से पैदा हुई खरड़-खरड़ आवाज़ से प्लेटफार्म का कम्पन बढ़ चुका है। उसकी खरड़ खरड़ आवाज़ के आगे, कुछ सुनायी नहीं दे रहा है। मंच पर, अंधेरा छा जाता है।]

माल ज़रूर उड़ाओ, मगर घर का नहीं।

खंड २

[मंच रोशन होता है, पाली रेलवे स्टेशन का मंज़र दिखाई देता है। जम्मू-तवी एक्सप्रेस गाड़ी, प्लेटफार्म पर आकर रुकती है। मोहनजी को छोड़कर, उनके सभी साथी गाड़ी से उतरकर प्लेटफार्म पर आ जाते हैं। खिड़की से बाहर झांक रहे मोहनजी की निग़ाह माल गोदाम पर गिरती है, वहां प्लेटफार्म पर विदेशी गेंहू से भरी हुई बोरियां रखी हुई उन्हें दिखायी देती है। गोदाम के प्लेटफार्म पर एक माल गाड़ी खड़ी है, जो गेंहू की बोरियों से लदी हुई है। कई मज़दूर उस गाड़ी से बोरियां अपनी कमर पर लादकर, उन्हें प्लेटफार्म पर रखते जा रहे हैं। माल गोदाम के मुलाजिम, प्लेटफार्म पर जमायी जा रही बोरियों को गिनकर रजिस्टर में आंकड़े भरते जा रहे हैं। इस मंज़र को देखने के बाद, मोहनजी की निग़ाह पाली स्टेशन के प्लेटफार्म के तख़्त पर बैठे कानजी पर गिरती है। अब उनको रशीद भाई के दीदार होते हैं, जो कानजी की तरफ़ क़दम बढ़ाते जा रहे हैं। और दूसरे साथी रतनजी और ओमजी को कैंटिन की तरफ़ जाते हुए, मोहनजी देखते जा रहे हैं। ये कानजी एफ.सी.आई. पाली के वाचमेन हैं, जो खारची से रोज़ का आना-जाना करते हैं। माल गोदाम के प्लेटफार्म पर रखी इन गेहूं की बोरियों को देखकर, मोहनजी का दिल जलने लगा। अब उन्हें पछतावा होता है, के 'उन्होंने कल से चार दिन की छुट्टियां, क्यों मंज़ूर करवाई ?' सोचते-सोचते, अब वे होंठों में ही बड़बड़ाते जा रहे हैं।]

मोहनजी – [होंठों में ही] – इतना माल..? अरे, बेटी का बाप। यह क्या मूर्खता कर डाली मैंने, चार दिन की छुट्टियां मंज़ूर करवाकर..? अभी हुआ क्या है, कहां मियें मर गए और रोज़े घट गए..? छुट्टियां रद्द करवाकर मारेंगे जी, चार दिन पाली का का टूर। अरे रामसा पीर, फिर तो रखेंगेजी प्रोग्राम '**माल ज़रूर उड़ाओ, मगर घर का नहीं**' व भी इस पाली स्टाफ़ के ऊपर।

[अकस्मात मोहनजी की निग़ाहें गिरती है, रशीद भाई पर। जो, तख़्त पर बैठे कानजी वाचमेन से मिलने जा रहे हैं। उनको देखते ही, उन्हें आवाज़ लगाते हुए मोहनजी कहते हैं]

मोहनजी – [रशीद भाई को आवाज़ लगाते हुए, ज़ोर से कहते हैं] – **कहां जा रिया रे, कढ़ी खायोड़ा रशीद भाई ?** इधर आकर, मुंह तो दिखा मेरे भाई।

[मगर रशीद भाई ने न कुछ सुना, और न मोहनजी की तरफ़ देखा। उनकी आँखे तो, कानजी के दीदार पाने में ही लगी हुई..? कानजी आराम से तख़्त पर बैठे-बैठे, बीड़ी पी रहे हैं। वे पूरे आश्वस्त है, के 'यहां उनकी बेर [पत्नी] खड़ी नहीं है, जो बक-बक करती हुई धुम्रपान के आनन्द का मटियामेट करती हो..?' कानजी को देखते ही, रशीद भाई के क़दम उनकी तरफ़ बढ़ते ही जा रहे हैं। चलते-चलते, वे रास्ते में बड़बड़ा रहे हैं।]

रशीद भाई – [चलते-चलते, बड़बड़ाते हैं] – ख़ुदा की पनाह, यह कानजी तो ठहरा एक नंबर का गतराला ? पूरा स्टाफ़ करता है, मज़ा। मगर यह गेलसफा, खारची से आ जाता है पाली...बराबर एक घंटे पहले। मगर, सच्चाई तो यही है इसकी बेर बोलती है कड़वी..के, **'औरतों की तरह घर पर पड़े मत रहो, और जाकर पकड़ो पाली जाने वाली गाड़ी..समय पर दफ़्तर पहुंच जाओ, शिकायत का मौक़ा मत दो।'**

[प्लेटफार्म के छप्परे पर एक कबूतर ने घोंसला बना रखा है, वह अपनी मादा कबूतर को रिंझाने के लिए घूटर गूं घूटर गूं करता हुआ तख़्त के पास आकर गोल-गोल चक्कर काट रहा है। और इधर अकेले बैठे हैं, कानजी। जो, बीडी से, धुंए के बादल छोड़ते जा रहे हैं। उनको धुम्रपान करते देखकर, अब रशीद भाई उनके नज़दीक आये हैं।]

रशीद भाई - [नज़दीक आकर, कहते हैं] – कानजी सा। मालिक क्या कर रहे हैं आप, यहां अकेले..घूटर गूं घूटर गूं...? अरे यार, इतना जल्दी आते ही क्यों हैं आप ? फिर यहां बैठकर करनी पड़ती है, मटरगश्ती..? अच्छी है यार, तुम्हारी यह मौज-मस्ती ?

[अब कानजी के पहलू में बैग रखकर, वे आराम से तख़्त पर बैठ जाते है। फिर, उनसे गुफ़्तगू करते जाते हैं।]

रशीद भाई – [बैठते हुए, कहते हैं] – ठोकिरा, ऐसे क्या अकड़कर बैठे हो कानजी ? एक घंटा पहले, आते ही क्यों यहां ? फिर तेज़ गति से दफ़्तर आते-आते, आपकी टांगों में दर्द होने लगता है।

कानजी – [मुंह से धुंए का बादल छोड़कर, कहते हैं] – अरे यार रशीद भाई, क्या करना है यार..इस ख़िलक़त में ? पहले, आप आराम की सांस ले लीजिये...

[कानजी अपनी जेब से, घोडा-गाड़ी छाप बीड़ी का बण्डल बाहर निकालते हैं। फिर, रशीद भाई की मनुआर करते हुए, कहते हैं]

कानजी – ऐसा है क्या, रशीद भाई ? जाना तो आख़िर दफ़्तर ही है, कल तो सब कुछ छोड़कर इस ख़िलक़त से भी चले जायेंगे।

रशीद भाई – आपके कहने का, क्या मफ़हूम है यार ?

कानजी – अरे यार, मपुट तो एक दिन आणि ही है। फिर, क्या डरना ? जनाब जब आप ऊपर पहुंचेंगे, तब यम राजजी पूछेंगे के 'भाया, कोई नशा-पत्ता किया या नहीं..?' फिर रशीद भाई, आप जवाब क्या देंगे ?

[थोड़ी देर विश्राम करने के बाद, कानजी आगे कहते हैं]

कानजी – तो मेरे भाई, वहां भी आप जैसे लोगों के लिए कोई ठौड़ नहीं है। जानते हो ? नशा-पत्ता करने वाले आदमियों की मनुआर अच्छी होती है। अरे यार, नशा-पत्ता नहीं करने वालों को कोई आवाज़ देकर भी नहीं बुलाता।

रशीद भाई – अरे मेरे भाई, अभी रमजान का पाक महिना चल रहा है। और आप, काहे नशे-पत्ते की बात लेकर बैठ गये ? अब यह बीड़ी का बण्डल, वापस आप अपनी जेब में रख लीजिये। इस रमजान के पाक महीने में, नशा करना गुनाह है मेरे भाई।

कानजी – जानते नहीं ? मरने के बाद रशीद भाई, सब-कुछ यहीं छोड़कर चले जाओगे। इसलिए कहता हूं रशीद भाई, आराम से बिराजिये आप। और यहां बैठकर आराम से बीड़ी उठाकर, धुम्रपान का लुत्फ़ उठाइये। फिर..

रशीद भाई – फिर आप चाय-वाय पिलाओगे कानजी, इसके बाद..[दाल के बड़े बेचने वाले, वेंडर के ठेले को देखते हुए कहते हैं] हम दोनों इस पेट में डालेंगे, ये गर्म-गर्म बड़े।

कानजी – [धुंए का गुब्बार छोड़कर, कहते हैं] – फिर..?

रशीद भाई - तब कहीं जाकर थकावट मिटेगी, और साथ में नशा जमेगा। फिर हम, सहजता से दफ़्तर की ओर क़दम बढ़ाएंगे।

कानजी – [धुम्रपान करते हुए, कहते हैं] – नहीं, तो क्या ? आख़िर, करना क्या है ? बस, धान की हिफ़ाज़त और क्या ? उसके लिए आप, ओमजी, रतनजी वगैरा आप सब हो..फिर, मुझे फ़िक्र करने की कहां ज़रूरत ?

[रशीद भाई का प्रतीक्षा करते-करते मोहनजी, आख़िर हो गए परेशान। वो बेचारे, आख़िर करते क्या ? यहां तो बाबा आता है, तो घंटा बजाये ? बापू आये, तो बारी दे दे...? मकबूले आम बात यही है, उपासरे के अन्दर कंघे का क्या काम ? दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं, बिना काम रशीद भाई क्यों आते..? हताश होकर, आख़िर, बैग थामे...मोहनजी उठते हैं, और रशीद भाई के नज़दीक आकर कहते हैं]

मोहनजी – [तख़्त पर बैठते हुए, कहते हैं] – रशीद भाई मैंने तो आख़िर-तजवीज ले लिया, के तीन दिन तक पाली में ही काम करूंगा।

रशीद भाई – साहब, यह क्या कह रहे हैं जनाब ? बड़ी मुश्किल से आपने, तीन दिन का अवकाश मंज़ूर करवाया है...बड़े साहब से। आख़िर, आपको इन छुट्टियों में ससुराल भी तो जाना है..फिर, काहे पाली में..?

मोहनजी – अब यार रशीद, छोड़ इन पुरानी बातों को। इन धान की बोरियों को देखकर, मंज़ूर करवायी गयी छुट्टियां रद्द। कुछ ऐसा ही समझ ले, ठोकिरा। अब तो मेरा धोतिया और पोतिया यहीं सूखेगा ।

[कैंटिन के पास खड़ा वाचमेन चम्पला, चाय पी रहा है। सहसा मोहनजी की बुलंद निग़ाह, उस पर गिरती है। उसको देखते ही, उनके चेहरे पर मुस्कान छा जाती है। फिर वे ज़ोर से, उसे आवाज़ लगाकर अपने पास बुलाते हैं।]

मोहनजी – [आवाज़ लगाते हुए, कहते हैं] – ए रे, चम्पला। ठोकिरा, **कहां जा रिया रे कढ़ी खायोड़ा ?** थोडा इधर आ रे, कमबख्त..कहां मर गिया रे, तेरा ठेकेदार कढ़ी खायोड़ा ? तू आ तो सही, चम्पला..

[चम्पला आता है। मोहनजी अब रशीद भाई की तरफ़ देखते हुए, इस तरह कहते हैं..जैसे वे, उनकी उधारी उतार रहे हैं..?]

मोहनजी – रशीद भाई, आपने मुझे दाल के बड़े खिलाये थे..अब सुन लो मेरे भाई, अब मैं आप सबको खिला दूंगा मलीदा। अब क्या देख रहे हो, मेरा मुंह..? जाओ आवाज़ देकर बुला लो, अपने साथियों को। [होंठों में] अरे यार, क्या कहूं ? अब तो स्कीम तैयार, **माल ज़रूर उड़ाओ, मगर घर का नहीं।** [दूर से, इंजन सीटी देता हुआ दिखाई देता है।]

चम्पला – [उतावली करता हुआ कहता है] – बाबजीसा। इंजन सीटी दे चुका है, बैठ जाइये गाड़ी में..नहीं तो चलती गाड़ी में चढ़ोगे तो बापूड़ा, मरोगे बेमौत।

मोहनजी – लम्बा मर चम्पला कढ़ी खायोड़ा, खर्चा करने वाला ठहरा ठेकेदार, फिर तेरा कलेजा क्यों जलता है रे..?

चम्पला – इसमें, आपके कहने का क्या मफ़हूम..? बस, मैंने कह दिया..आपको, खारची जो जाना है..!

मोहनजी – [पेट को सहलाते हुए, कहते हैं] – तेरे दिमाग़ में यह बात अच्छी तरह से बैठा ले, के 'पहले खायेंगे मिर्ची बड़े....वो भी, मसाले वाली चाय के साथ।'

चम्पला – [अचरच करता हुआ] – फिर आगे क्या, मालिक..? गाड़ी तो आपके कहने से रुकेगी, नहीं...? वह चली गयी, तो फिर अगली गाड़ी जल्दी मिलने वाली नहीं।

मोहनजी – [रशीद भाई को देखते हुए कहते हैं] – ए रे रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा, लबों पर मुस्कराहट क्यों नहीं लाता है रे मेरे यार..?

रशीद भाई – [रोनी सूरत बनाकर, कहते हैं] – मालिक, चेहरे पर मुस्कान कैसे छा सकती है ? पेट के अन्दर तो, अभी से चूहे कूद रहे हैं..इधर आप, ज़बानी कढ़ी खिलाकर भूख को और बढ़ाते जा रहे हैं।

मोहनजी – सुनो मेरी बात, पेट में रोटी-बाटी ठोककर आये हैं अपुन सब। मगर खाए हुए, काफी वक़्त गुज़र चुका है। इसलिए पहले....

रशीद भाई – [मुस्कराकर, कहते हैं] – पाली का गुलाब हलवा खिलाओगे, साहब..?

मोहनजी – अरे नहीं रे, कढ़ी खायोड़ा। सबसे पहले, ठेकेदार साहब से मंगवायेंगे गरमा-गरम मिर्ची बड़े। इसके बाद, चाय-वाय मंगवाकर पी लेंगे भाई..ताकि थकावट दूर हो जायेगी रे कढ़ी खायोड़ा..समझ गये, रशीद भाई ?

चम्पला – [बीच में बोलता हुआ] – अरे मालिक, ठेकेदार साहब तो..

मोहनजी – [चम्पले को फटकारते हुए, कहते हैं] – अब यहां क्यों पड़ा है, मेरे बाप ? जा जल्दी जा गोदाम में, ठेकेदार साहब को इतला कर मेरे आने की।

[उधर रतनजी और ओमजी चाय पीकर, कैंटिन के काउंटर पर ख़ाली कप रखते हैं। फिर, वे माल गोदाम की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा देते हैं। चम्पला माल गोदाम की तरफ़ जाता हुआ दिखायी देता है, और उसके पीछे-पीछे मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी की टीम भी जाती हुई दिखायी देती है। अब इंजन सीटी देता है, थोड़ी देर में गाड़ी जाती हुई दिखायी देती है। मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर पश्चात मंच वापस रोशन होता है। अब माल गोदाम का मंज़र, सामने दिखायी देता है। मोहनजी व उनके साथी, माल गोदाम पहुंच जाते हैं। वहां पटरी पर माल गाड़ी खड़ी है, जो धान की बोरियों से लदी हुई है। कई मज़दूर इन बोरियों को कमर पर लादकर ला रहे हैं, और उन्हें प्लेटफार्म के ऊपर थप्पी-वार रखते जा रहे हैं। तभी वहां दीवार के पास खड़ा, एक फ़कीर दिखायी देता है। जिसे देखकर ऐसा लगता है, मानो उसने जमकर दारु पी ली है...? मोहनजी की निग़ाहें उस फ़कीर के ऊपर गिरती है, उसे देखते ही उन्हें गाड़ी में बीता हुआ सुबह का वाकया याद आ जाता है। उस वाकये को सोचते हुए, उनकी आंखो के आगे वह मंज़र छा जाता है। मोहनजी, राजू साहब, दयाल साहब, रतनजी और ओमजी सभी साथी, जम्मू तवी एक्सप्रेस गाड़ी के शयनान डब्बे में बैठे हैं। राजू साहब पाली डिपो के मैनेजर हैं, और दयाल साहब इसी डिपो में गुणवत्ता अधिकारी है। मोहनजी ख़ुद, खारची डिपो के डिपो मैनेजर हैं। आज़ भी वे हमेशा की तरह खिड़की के पास वाली सीट पर बैठे हैं, और उनके पास रतनजी और ओमजी बैठे हैं। राजू साहब और दयाल साहब, उनके सामने वाली सीटों पर बैठे हैं। मोहनजी अपने साथियों के सामने, तबादला होने के बाद आयी तकलीफों का बयान करते जा रहे हैं।]

मोहनजी – [अपना दुःख बयान करते हुए, कहते हैं] – उस वक़्त क्या फितूर आ गया मेरे दिमाग़ में, अरे रामसा पीर बैठा था आराम से जोधपुर में...और बदक़िस्मत से, कर बैठा उल्टा काम।

दयाल साहब – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – अरे मोहन लाल, यह क्या सुन रहा हूं ? तू ग़लत काम भी करता है, आज़कल ? अरे कमबख्त, तेरी सी.आर. ख़राब कर देंगे बड़े साहब।

मोहनजी - अरे कढ़ी खायोड़ा, यह बात नहीं है। बात यह है, जनाब। बाटी खाते हुए को बूज आयी..और लिख डाली मैंने, आपे-थापे बदली [स्वैच्छिक तबादले] की दरख्वास्त। अब पड़ा हूं, खारची...मक्खियां मारने।

राजू साहब – आपको क्या हो गया, जनाब ? नयी जगह, देखने को मिली है। वह भी, सरकारी हुक्म से।

मोहनजी – अरे जनाबे आली, करूं क्या इस हुक्म को लेकर..चाटूं..? इस खारची का खारा पानी पी-पीकर, पूरा पेट ख़राब कर डाला मैंने। अजी जनाब, आपसे क्या छुपी हुई मेरी दास्तान ?

राज़ू साहब – मुझे कुछ याद नहीं, आप वापस कह दीजिये जनाब। पेट में बात रख लेने से, अपच की बीमारी हो जाया करती है, फिर पेट-दर्द बढ़ेगा जो अलग। बार-बार, पाख़ाने जाते भद्दे लगेंगे आप।

मोहनजी – क्या कहूं, जनाब..? आते-जाते लोगों से मांग-मांगकर, मीठा पानी लेकर पीना पड़ता है। मीठा पानी लाने के लिए, लोगों की गर्ज़ अलग से करनी पड़ती है।

दयाल साहब – अरे सांई मोहन लाल, पानी सूट नहीं करता है..तो कह दूं हेड-ओफिस वालों को..

मोहनजी – [बात काटते हुए, कहते हैं] – जी हां, कहिये, कहिये..कीजिये ना मेरी सिफारिश, रामसा पीर आपका भला करेगा..कढ़ी खायोड़ा, बेटी का बापां।

दयाल साहब – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – कह दूंगा उनको, लगा दो इस मोहन लाल को बांसवाड़ा। वहां तुमको खूब मिलेगा, मीठा पानी।

मोहनजी – [आश्चर्य करते हुए, कहते हैं] – अरे बेटी का बाप, यह क्या ? मैं ग़रीब तो चाहता हूं, जन्नत की सैर करना..मगर आप तो मुझे डाल रहे हैं, दोज़ख में..? ऐसा मैंने क्या बिगाड़ा, आपका ?

[उन्होंने सोचा, शायद रशीद भाई उनके समक्ष उनका पक्ष रखेंगे। यह सोचकर वे, उनकी तरफ़ देखते हुए कहते हैं।]

मोहनजी - अरे रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा, कुछ तो बोलो आप। आप तो ठहरे, सेवाभावी।

रशीद भाई – क्या बोलूं, मालिक ? आप सभी बैठे महानुभव हमारे अफ़सर, और मैं बेचारा हूं डस्ट ओपरेटर। क्या कहूं, आपको ? कहते हैं, गधे के अगाड़ी और अफ़सर के पिछाड़ी रहना ही बेहतर है..मालिक।

मोहनजी – अरे यार रशीद, अब तू मुझे अफ़सर समझकर मत बोल। तेरे अफ़सर तो हैं ये पाली वाले, राज़ू साहब और दयाल साहब। मैं तो तेरा गाड़ी का साथी हूं रे, कढ़ी खायोड़ा।

रशीद भाई – [मुस्कराकर कहते हैं] – अगर सच्च कहूं तो मालिक, आप नाराज़ मत होना।

मोहनजी – [ख़ुश होकर कहते हैं] – बोल यार, बोल रशीद..कुछ तो बोल। आख़िर है तो तू, सेवाभावी।

रशीद भाई – मालिक, आपने जन्म से ही धुन्दाड़ा गाँव का खारा पानी ही पीया है..और अभी तक आपके नसीब में, खारा पानी पीना ही लिखा है। अब कहिये, इस तकलीफ़ को दूर करने में..मैं क्या, मदद कर सकता हूं आपकी ?

राजू साहब – कोई सलाह दे दे रे, रशीद। शायद, इनका भला हो जाय..तुम तो आख़िर, ठहरे सेवाभावी और साथ में तुम इनके गाड़ी के दोस्त भी हो। बोल रशीद, बोल। क्या मैं सही कह रहा हूं, या नहीं..?

रशीद भाई – साहब, आख़िर मैं भी तो यही कहना चाहता हूं। जोधपुर स्टेशन पर जहां मोहनजी खारा पानी अपनी बोतल में भरते हैं, वह स्थान तो ये ख़ुद ही जानते हैं। स्टेशन पर, मैं मीठा पानी ही पीया करता हूं। और बोतल में भी, मीठा पानी ही भरता हूं..वह भी जनाब, ठंडा पानी।

राजू साहब – **हां भय्या, ठंडा पानी ही भरोगे। आख़िर प्लेटफार्म के ऊपर ठौड़-ठौड़, रेलवे मंत्री लालू प्रसादजी यादव ने शीतल-जल की व्यवस्था कर रखी है।**

रतनजी – [मुस्कराते हुए] – अब तो जनाब, इन वेंडरों से ठन्डे पानी की बोतले खरीदनी बंद कर दी है..लोगों ने। मगर फिर भी हमारे साहब, न जाने कहां से खारा और गर्म पानी भरकर ले आते है..?

[यह सुनकर रशीद भाई, ज़ोर से ठहाका लगाकर हंसते हैं। फिर मुस्कराते हुए, वे एक तरकीब बताते हैं।]

रशीद भाई – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – यह तो क़िस्मत का लेखा है, जनाब। अगर, आली जनाब मोहनजी कहते हैं तो, मैं इनको खारची से वापस जाने की तरकीब बता तो दूं...? मगर जनाब, ये मेरा कहना मानेंगे नहीं। [मोहनजी की तरफ़ मुंह करके, कहते हैं] कहिये मोहनजी, बता दूं ? कहीं आप, नाराज़ तो न होंगे जनाब ?

[खीजे हुए मोहनजी, कहते हैं]

मोहनजी – [गुस्से में, कहते हैं] – बताने में, तूझे क्या मौत आ रही है..कमबख्त कढ़ी खयोड़ा ? [फिर, शांत होकर कहते हैं] आख़िर, हम तुम्हें सेवाभावी क्यों कहते है...? अब, बाबा रामदेव तेरा भला करेगा। कहिये रशीद भाई, क्या कहना चाहते थे आप ?

रशीद भाई – अगर आप में हिम्मत है तो, मैं कहूं जैसा ही कीजिये। सुनिए, आप अपने बड़े अफ़सर के ऊपर थूक दीजिये। या फिर कर लीजिये, उससे हाथापाई। मगर, यह काम आपसे होगा नहीं। ऐसा अगर आपने करके दिखला दिया, तो स्वत: आपका तबादला हो जायेगा।

राजू साहब – ऐसा मत बोल रशीद, आली जनाब मोहनजी बड़े होनहार है। हर काम करने की क़ाबिलियत, रखते ही होंगे ?

रशीद भाई – क्या कहें, हुजूर ? वैसे आपका कहना भी सच्च हैं, सच्चाई यही है....ये अपने अधीनस्थ छोटे-बड़े कर्मचारियों से गाली-ग़लोज या अनर्गल बकवास ज़रूर कर सकते हैं। इसके अलावा, मोहनजी कुछ नहीं कर सकते। अरे जनाब, क्या कहूं, आपसे.....

रतनजी – [बीच में बात काटते हुए, कहते हैं] – क्यों फ़िज़ूल की बातें करते हो, रशीद भाई..? यह तो आप जानते ही हैं, के मोहनजी आपकी सलाह मानने वाले नहीं...ये तो छुपे रुस्तम ठहरे। दिल के अन्दर, पदोन्नति के लड्डू फोड़ते हैं। फिर, क्यों अपने अधिकारी के ऊपर थूकेंगे या उनके साथ मार-पीट करेंगे ?

दयाल साहब – रशीद तू कुछ समझता नहीं, यह मोहन लाल सांई जितना बाहर दिखायी देता है, उससे ज़्यादा तो यह ज़मीन में गड़ा हुआ है। ख़ाली तूझे बेवकूफ बनाने के लिए, सलाह मांगता है।

मोहनजी – [लपक कर, कहते हैं] – वाह रशीद भाई, एक तो आप उल्टी-उल्टी सलाह देते हैं। अगर आपके कहने से चलूं तो मेरा बेडा गर्क हो जाय, फिर मेरे छोटे-छोटे बच्चों को कौन पालेगा ?

रतनजी – [व्यंगात्मक मुस्कान लबों पर बिखेरकर] - रशीद भाई आप इतना भी नहीं जानते, साहब जल्द ही सेवानिवृत होने वाले हैं। इनकी सेवानिवृति के बाद, क्या आप पालोगे इनके बच्चों को..या उनको ले जाकर, किसी यतीमखाने में दाख़िला दिला दोगे ?

रशीद भाई – [नाराज़गी से कहते हैं] – आप अपनी जानो, मैं तो अब करता हूं आराम। किसी के फटे में, पांव फंसाने की मुझे कोई रूचि नहीं।

मोहनजी – [खीजे हुए कहते हैं] - आपके गालों में तो जनाब, घोड़े दौड़तें हैं। आपके बच्चे कमाने लग गए हैं, मगर मेरे नन्हें-नन्हें बच्चे अभी पढ़ रहे हैं..आपको, क्या मालुम ? हर विषय की ट्यूशन कराने के, पांच-पांच सौ रुपये...

रतनजी – [बात पूरी करते हुए कहते हैं] – खर्च होते हैं, कढ़ी खायोड़े..जीमते हैं आप, रावले आपको क्या मालुम..इस ग़रीब अवाम का हाल ? [मोहनजी की तरफ़ मुंह करके कहते हैं] जनाबे आली मोहनजी, आप यही कहना चाहते हैं...न ?

रशीद भाई – [मुंह बनाकर, कहते हैं] – मालिक, अपना भला-बुरा आप जानों। फिर आप, मेरे जैसे ग़रीब को काहे परेशान करते हैं ? हमारे क़ाज़ी साहब ने कहा है..

रतनजी – क्या कहा..? कहिये..कहिये।

रशीद भाई – उन्होंने कहा 'शेख, अपनी-अपनी देख।' [मोहनजी की तरफ़ देखते हुए, कहते हैं] मालिक मोहनजी, आप जानों और आपका काम जाने। ख़ुदा रहम, हफ्वात करने से तो अच्छा..अल्लाह पाक की, इबादत करता रहूं।

[इतना कहकर, रशीद भाई अपनी आँखे बंद करके चुप-चाप बैठ जाते हैं। इधर जनाबे आली मोहनजी को, रशीद भाई की दी हुई सलाह पसंद आती नहीं ? बस, वे तो नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए झट उठते हैं....और फिर, पाख़ाने की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा लेते हैं। मोहनजी ने पाख़ाने के आस-पास रास्ते में कई फकीरों को, बैठे देखा..उनका आगे बढ़ना हो जाता है, मुश्किल ? इधर तेज़ लगी लघु-शंका के मारे, उनका हाल बेहाल है। जाने की उतावली में वे राह में बैठे एक फ़कीर को, देख नहीं पाते। सहसा उसे टिल्ला मार देते हैं, जिससे बेचारे के हाथ में थामी हुई दारु की बोतल नीचे गिर जाती है और बोतल का सारा दारू आँगन में फ़ैल जाता है। दारु का इस तरह हुआ नुकसान , फ़क़ीर के लिए नाक़ाबिले बर्दाश्त है। वह आँखे तरेरकर, जनाबे आली मोहनजी को देखता है। इस तरह उसका देखना, अधिकारी मोहनजी को क्यों अच्छा लगेगा..? वे तो उस पर अफसरशाही का रौब जतलाते हुए, कड़े लफ़्ज़ों में कहते हैं..]

मोहनजी – [टक्कर खाकर, कहने लगे] – दूर हट, कढ़ी खायोड़ा...यहां आँखे दिखलाकर, क्या तू मुझे डरा रहा है..?

फ़कीर – [गुस्से में] – अरे बाबू, मैंने कहां कढ़ी खायी है..? यह बाबा तो, तीन दिन से भूखा है। भीख के पैसों से दारु लाया, वो भी तूने गिरा दी। अब देता जा, दारु के पैसे।

[इस फ़क़ीर की यह बात सुनते ही, मोहनजी को बहुत अचरच होने लगा....वे उसका मुंह गौर से देखते हैं, और सोच बैठते हैं के 'एक तो यह फ़क़ीर है, बेटिकट यात्री। यहां बैठा यह, मुफ़्त की यात्रा कर रहा है..और ऊपर से कमबख्त, मुझसे ही दारु के पैसे मांग रहा है..?']

फ़क़ीर – [क्रोधित होकर, कहता हैं] – ए बाबू, मेरा मुंह काहे ताक रहा है ? देना है तो, जल्दी दे। [उनका मुंह देखकर, कहता है] अरे, तू...? तू क्या देगा रे ? तू तो ठहरा, एक नंबर का कंजूस। चल तेरी क़ाबिलियत अनुसार मांग लेता हूँ, रुपया या दो रुपया देगा क्या...बोल, क्या देगा ?

मोहनजी – नामाकूल, गाड़ियों के अन्दर मुफ़्त में सफ़र करता है...और मुझ ग़रीब से, पैसे मांगता है ? कमबख्त, पेशाब-घर जाने का पूरा मार्ग रोक डाला तूने ?

फ़क़ीर – बाबू, फिर कहां बैठूं, क्या तेरी गोद में आकर बैठ जाऊं ? फिर, मुझे झूले देते रहना। तब मैं, आराम से नींद ले लूंगा। वैसे भी यहां, पेशाब की दुर्गन्ध के मारे नींद कहां आ रही है ?

मोहनजी – [गुस्से में कहते हैं] – काबुल के गधे, कमबख्त तेरा नौकर हूं ? जो तूझे गोद में लेकर, झूले देता रहूंगा ? अब ठोकिरे ठहर जा, वापस आकर तूझे जी.आर.पी. वालों को नहीं पकड़ाया तो मेरा नाम मोहन लाल नहीं।

[पेशाब-घर का दरवाज़ा खोलकर मोहनजी, बन्दूक की गोली की तरह अन्दर घुस जाते है। अन्दर जनाब, दाख़िल क्या हुए ? बेचारे मोहनजी की जान आफत में फंस जाती है, अन्दर खड़ा है एक छक्का। यह छक्का तो वही है, जो गाड़ी के अन्दर यात्रियों से पैसे मांगा करता है..पैसे नहीं देने पर, वह उस यात्री की इज़्ज़त की बखिया उधेड़ देता है। यह छक्का कभी तो अपने सर पर, विग रखता है तो कभी अपने रुख़सारों पर पोतता है लाली-पाउडर..और कभी अपने होंठों पर लगा लेता है, लिपस्टिक। इस छक्के के रंग-ढंग को देखते ही, मोहनजी एक बार घबरा जाते हैं, इधर तेज़ लगी लघु-शंका नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाती है। वे क्रोधित होकर, कहते हैं..]

मोहनजी – [गुस्से से बेकाबू होकर, कहते हैं] – कमबख्त, तू छोरा है या छोरी ? अब निकल, बाहर। इधर मैंने खोली पतलून की चेन, और इधर तू नाज़र आ गया मेरे सामने..? गधे कहीं के, मूतने नहीं दे रहा है..अब, ए मेरे मालिक, तेरा अब करूं क्या... ?

छक्का – [ताली बजाता हुआ, कहता है] – **सेठ। जैसा तू वैसा मैं, फिर क्या करना सेठ ? तू मुझे युरीनल में रखकर, करेगा क्या ? बूढ़े हो गए हो..तुम। बड़े बदनसीब ठहरे तुम, औजार काम में आने बंद हो गये तुम्हारे..?**

मोहनजी – [गुस्से में] - अरे, कमबख्त। तू बूढा, तेरा बाप बूढा। अरे बर्दाश्त नहीं होती, तेरी शक्ल। जाता है..या मारू तेरे पिछवाड़े पर लात ?

[यह कमबख्त नाज़र मोहनजी को पेशाब करने नहीं दे रहा, और इनकी लघु-शंका होती जा रही है नाक़ाबिले बर्दाश्त..अगर अब यह नालायक बाहर नहीं गया, तो जनाब की पतलून शत प्रतिशत गीली हो सकती है। खुदा रहम, खुदा के मेहर से उस नाज़र को आ जाती है अक्ल। वो ताली पीटता हुआ, चला जाता है बाहर।]

छक्का - बाहर जाता हूं, यहां रूककर किसको अपना धंधा ख़राब करना है ?

[ताली बजाता हुआ, छक्का युरीनल से बाहर आता है। इस छक्के के रंग-ढंग देखकर मोहनजी बहुत घबरा गए हैं, वे सोचते जा रहे हैं के **'यह नाज़र तो बड़ा कमीना निकला। कहीं इस नाज़र के बोले गए शब्द, किसी एम.एस.टी. वाले ने सुन लिए तो बनी बनायी सारी इज़्ज़त धूल में मिल जायेगी..? फिर क्या इज़्ज़त रहेगी मेरी, उन लोगों के सामने ?'** उन्होंने तो झट दरवाज़ा बंद किया, कहीं यह नाज़र वापस न आ जाए..? थोड़ी देर बाद, पेशाब करके मोहनजी युरीनल से बाहर आते हैं....अपने साथियों के पास। फिर वहां अपनी सीट पर बैठकर, उन मंगते-फकीरों की शिकायतें लेकर बैठ जाते हैं।]

मोहनजी – आख़िर करूं क्या, कढ़ी खायोड़ों ? अब तो मुझे, रेलवे मिनिस्टर लालू भाई के पास इन नालायक मंगतों-फकीरों की शिकायत दर्ज करानी होगी। **यह लालू भाई आख़िर, जानता क्या है..? उसे तो केवल बिहार की...**

रतनजी – [उनकी बात को पूरी करते हुए, कहते हैं] – **'फ़िक्र है, बिहार में नयी रेलवे लाइन कैसे बिछानी ?' यही कहना चाहते थे, साहब ?**

मोहनजी – जी हां। बस 'यश लूटने के लिए लालू भाई लोक-कलाकारों को चलती गाड़ी की छत्त पर नचा दिया करते हैं, जैसे एक बार किसी डाइरेक्टर ने शाहरुख खान को 'छय्या-छय्या' के गीत पर नचा दिया था। इसके अलावा, लालू भाई के पास काम क्या है ?'

रशीद भाई – [मुस्कराकर कहते हैं] – अरे मालिक, और भी काम है। 'पासवानजी के साथ खड़े होकर गुलाब के पुष्पों की मालाएं पहननी, और भाषण देते हुए फोटो खिचवाना।'

मोहनजी - और इनसे, क्या आशा की जा सकती है..?

रतनजी – मगर आख़िर हुआ क्या, आपको ? क्यों आप, बेचारे लालू भाई को गालियां देते जा रहे हैं ? क्या जानते हैं, आप ? गली-गली में भटकते कलाकारों को रोज़गार देकर, कितना अच्छा काम किया है लालू भाई ने ?

मोहनजी – मैं बेचारा करूं, क्या ? परेशान कर दिया, इन बदतमीज़ फ़क़ीर और हिंज़डों ने। क्या करें ? रोटी खायें तो सामने आ जाते हैं मंगते-फ़क़ीर, खाने नहीं देते कमबख्त।

रतनजी – और, कोई शिकायत ?

मोहनजी - मुफ़्त में यात्रा करते हुए, ठौड़–ठौड़ टट्टी-पेशाब करके पाख़ाने की व्यवस्था बिगाड़ डाली इन कम्बख्तों ने। और आगे क्या कहूं, आपको ?

रशीद भाई – कह दीजिये, साहब। आप तो जनाब जानते ही है, शिकवे बार-बार बयान नहीं किये जाते। कह दीजिये, दिल हल्का हो जाएगा।

मोहनजी – पेशाब करने जायें युरीनल में, वहां भी ये हिंज़ड़े तैयार। नालायक, कच्छे के तिजारबंद को खोलने ही नहीं देते ? इधर तेज़ी से लगी, यह कमबख्त लघु-शंका..नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाती है।

रशीद भाई – कहीं ऐसा तो नहीं हुआ, आपकी चड्डी गीली हो गयी..और, अब आप..

मोहनजी – अरे नहीं रे, कढ़ी खायोड़ा, इतना तो रामा पीर का मेहर है मेरे ऊपर।

रशीद भाई – अजी जनाबे आली, छोड़िये इन बचकानी बातों को। ऐसा, क्या हो गया..? दिल बड़ा रखिये, जिसमें रहम की दरिया बहती रहे। ना तो जनाब, आपका जीवन काटना दूभर हो जायेगा।

मोहनजी – आप जाते कब हैं, युरीनल ? पीर दुल्हेशाह हाल्ट आयेगा, तब आपके लिए आयेगा पीर बाबा का हुक्म। तब तक, आपको युरीनल से क्या काम ? अब तो कढ़ी खायोड़ा मैंने तो अब, आख़िर तजवीज ले लिया के....

रशीद भाई – ज़ाहिर कर दीजिये, मालिक। हम, ज़रूर सुनेंगे।

मोहनजी – दिल तो यह करता है...के, जी.आर.पी. वालों को कहकर, इन फकीरों और हिंज़ड़ो को गिरफ्तार करवा दूं। अब तो कढ़ी खायोड़े, इन जी.आर.पी. वालों का ही आसरा बाकी रहा है।

गाड़ी की रफ़्तार धीमी हो जाती है, गाड़ी रुक जाती है। लूणी स्टेशन आ जाता है। मोहनजी खिड़की से मुंह बाहर निकालकर, प्लेटफार्म पर खड़े जी.आर.पी. वालों को देखते हैं। उनको देखते ही, वे उन्हें ज़ोर से आवाज़ लगाकर कहते हैं।]

मोहनजी – [दोनों को हाथ ऊपर करके, उनको आवाज़ देते हुए कहते हैं] – पकड़ो..पकड़ो, ओ हवलदार साहब पकड़ो..

[गाड़ी का मंज़र ख़त्म होता है, अब वापस माल गोदाम का मंज़र सामने आता है। मोहनजी बड़ाबड़ाते हुए, हाथ ऊपर करते हैं। हाथ ऊपर करते वक़्त, धान की बोरियां रखने वाले उस हमाल को लग जाता है टिल्ला..जो उनके पास ही, बोरी रख रहा था। टिल्ला लगते ही वह हमाल घबरा जाता है, और उसके हाथ से बोरी छिटक कर पास खड़े वाच मेन चम्पले के पांव पर गिर जाती है..जो बेचारा खड़ा-खड़ा, धान की बोरियां गिन रहा था। अब बेचारा चम्पला दर्द के मारे, ज़ोर से चिल्ला उठता है।]

चम्पला – [चिल्लाकर कहता है] – अरे रामा पीर मार दिया रे, कढ़ी खायोड़ा अफ़सर ने। यात्रा-भत्ता के पैसे कमाने के ख़ातिर, मेरा पांव तोड़ डाला रे...रामा पीर।

[चम्पले के चिल्लाने से, मोहनजी के मानस में छायी हुई विचारों की कड़ियां टूट जाती है, और वे चेतन होकर आँखे मसलकर आँखें खोलते हैं। फिर, कहते हैं, के..]

मोहनजी – [आँखे मसलते हुए कहते हैं] – अरे, तू कौन ? कहां गए, वे जी.आर.पी. वाले ? [चम्पले को नज़दीक से देखते हुए] अरे तू तो है, चम्पला कढ़ी खायोड़ा..? अरे रामा पीर, मैंने कोई स्वप्न देख डाला क्या..**दारुड़े फ़क़ीर का** ?

["दारुड़ा फ़क़ीर" शब्द, कुछ उन्होंने ज़ोर से बोला, जिससे दीवार के पास खड़े दारुड़े फ़क़ीर को वे शब्द सुनायी दे जाते हैं। दारु पी रहे दारुड़े फ़क़ीर को ऐसा लगता है, शायद मोहनजी उसे भीख देने के लिए बुला रहे हैं ? यह ख़याल मानस में आते ही, दारु का अंतिम घूँट पीकर दारु की बोतल को रख देता है दीवार के ऊपर। फिर दौड़कर जा पहुंचता है, मोहनजी के पास..फिर, वह कहता है..]

दारुड़ा फ़क़ीर – [पास आकर कहता है] - ए सेठ साहब, क्यों बुलाया मुझे ? एक या दो रुपये दे दे, अल्लाह पाक के नाम..! वो, तेरा भला करेगा। कुछ तो दे दे, सेठ।

[यह बेचारा फ़क़ीर ऐसा क्या बोल गया, मोहनजी को ? मोहनजी ऐसा समझते हैं, कहीं वह फ़क़ीर उनके चेप न हो जाय ? यानि, अब वह कुछ लेकर ही जायेगा। मोहनजी तो ठहरे, मक्खीचूस नंबर एक। जेब से रुपये-पैसे निकालने का, कोई सवाल ही पैदा नहीं होता ? बस, फिर क्या ? झट, उससे पिंड छुड़ाने की तरकीब सोचते हैं। तभी मोहनजी को सामने से, पुलिस का हवलदार आता

दिखायी देता है। उसे देखते ही, जनाब ख़ुश हो जाते हैं। और ख़ुश होते हुए, उस फ़क़ीर से कहते हैं..]

मोहनजी – [हवलदार की ओर, अंगुली का इशारा करते हुए कहते हैं] – देख उधर, कौन साहब आ रहे हैं ? [हवलदार को पुकारते हुए, कहते हैं] ओ हवलदार साहब, इस फ़क़ीर को अपने गंगा राम की प्रसादी खिलाना..जो इसने, अभी तक खायी नहीं है।

[उस हवलदार को नज़दीक आते देखकर, वो फ़क़ीर डरकर दबे पांव भाग छूटता है। उस फ़क़ीर के भगने के बाद, मोहनजी चम्पला से कहते हैं..]

मोहनजी - [चम्पले से कहते हैं] – ए रे चम्पला, कढ़ी खायोड़ा। तू तो यार, जवान आदमी ठहरा। गेलसफा, अब क्यों मुंह फाड़े बों-बों कर रहा है ? ख़ाली एक बोरी तो गिरी है, कोई पहाड़ आकर तो नहीं गिरा तेरे ऊपर ?

चम्पला – [रोनी आवाज़ में, कहता है] – अरे मालिक, इस तरह आप क्यों कह रहे हैं ? पहाड़ नहीं गिरा है, तो मालिक अब लाकर गिरा दीजिये इस ग़रीब पर।

मोहनजी – ऐसी बात नहीं है रे, कढ़ी खायोड़ा। मैं तो यह कह रहा हूं के यों हिम्मत हार जायेगा तू, तो आगे काम कैसे चलेगा ?

[मगर चम्पला तो रोता जा रहा है, उसके रोने की आवाज़ ऐसी लग रही है मानो "कहीं कोई सियार, ऊंचा मुंह किया हुआ रोता जा रहा है ?" उधर इस चम्पले के रोने की आवाज़ सुनकर, ठेकेदार साहब हाथ में बैग लिए इधर तशरीफ़ रखते हैं।]

ठेकेदार – [नज़दीक आकर, मोहनजी से कहते है] – क्या हुआ, साहब ? आख़िर हुआ क्या, खैरियत तो है ?

मोहनजी – [भड़कते हुए, कहते हैं] – "क्या हुआ, क्या हुआ" कहते हुए, आप कढ़ी खायोड़ा आ गये यहां ? अभी मेरे आदमी की टांग टूट जाती तोऽऽ, आपके बाप का क्या जाता ? मेरा बेचारा चम्पला, अभी बोरी के नीचे आ जाता ?

ठेकेदार – [घबराते हुए] – साहब, कुछ करो। भाया को खड़ा करो..

मोहनजी – [बात काटकर कहते हैं] – आपको तो दिखायी देता है ख़ाली, अपनी मां का धाबलिया। इसके अलावा, आपको कुछ दिखायी देता नहीं। आप तो नेग देकर बड़े अफ़सरों के पास बैठकर जीम लेते हैं, मगर हमारे आदमी सुबह से भूखे हैं...

ठेकेदार – [घबराकर कहते हैं] – क्यों फ़िक्र कर रहे हैं, आप ? ये लीजिये साहब, सौ रुपये। आपके आदमियों को मिर्ची बड़े मंगवाकर खिलाओ, और इस भाया के पाँव पर तेल की मालिश कर दीजिये..दो मिनट में रेडी..!

[ठेकेदार साहब एक सौ रुपये का नोट, मोहनजी को थमाते हैं। अचानक ठेकेदार साहब को, सामने से दो बड़े अफ़सर आते दिखायी देते हैं। उनके दीदार होते ही, वे बहाना बनाकर चले जाते हैं..उन अफ़सरों से मिलने।]

ठेकेदार – अभी आ रहा हूं, साहब। [रूख्सत होते हैं]

[उनके जाते ही, रशीद भाई तशरीफ़ लाते हैं। इधर मोहनजी, चम्पले को सौ का नोट थमाकर कहते हैं।]

मोहनजी – ये ले, सौ रुपये। और जा, कुछ खाकर आ ज़ा। आते समय, हमारे लिए मिर्ची बड़े व चाय-वाय लेते आना। अब खड़ा होता है, या तेरी टांग पकड़कर तूझे खड़ा करूं ?

[सौ का नोट हाथ में आते ही, झट उठकर खड़ा हो जाता है चम्पला। ऐसा लगता है, मानो उसको कुछ हुआ ही नहीं। मगर रशीद भाई कोई कम नहीं, झट अपने बैग से मालिश करने की मूव ट्यूब निकालकर थमा देते हैं उस चम्पले को। मगर यहां तो जनाबे आली मोहनजी ठहरे, उनसे ज़्यादा चालाक। चम्पले से वापस ट्यूब छीनकर, थमा देते हैं रशीद भाई को। फिर जनाब, मुस्कराते हुए कहते हैं..]

मोहनजी – [रशीद भाई को ट्यूब थमाते हुए कहते हैं] – रखो अपनी ट्यूब, अपने पास। चम्पले को मिल गया, विटामिन एम.। अब इसका पांव, अपने-आप हो गया ठीक।

[उनके ऐसे व्यवहार को देखकर, चम्पला हैरान होकर उनका मुंह देखता रह जाता है। इधर मोहनजी चले जाते हैं, उस ठेकेदार के पास...जो अभी, धान की बोरियों को तुलवाने में व्यस्त है। वे ठेकेदार से, कहते हैं।]

मोहनजी – ठेकेदार साहब कढ़ी खायोड़ा, आप क्या जानते हैं..मेरी आपबीती ? तड़के उठकर बाजरी का सोगरा और कांटे वाले बैंगन की सब्जी, ठोककर आया। मगर, अब भूख लग गयी है..आप रोटी-बाटी खिलाओ, तो काम बने।

[मगर मोहनजी की कही हुई बात, बेकार साबित होती है। ठेकेदार साहब को वही दोनों बड़े अफ़सर वापस आते हुए दिखायी देते हैं, तत्काल वहां का काम छोड़कर वे उनके पास चले जाते हैं। जाते-जाते, मोहनजी को कह देते हैं 'मालिक, अभी आ रहा हूं।" फिर क्या ? वे तीनो ऐसे गायब हो गए हैं, उनके गए तीन घंटे बीत जाते हैं मगर उनके आने का कोई समाचार नहीं। इधर मोहनजी के बदन में भूख बर्दाश्त की क्षमता नहीं, बस कमज़ोरी के कारण उनको चक्कर आने लगते हैं। वे अचेत होकर, ज़मीन पर गिर पड़ते हैं। पास खड़ा हवलदार, हमाल को आवाज़ देकर ट्रोली मंगवा देता है। उसमें मोहनजी को बैठाकर, उन्हें रिक्शे के पास ले जाया जाता है। अब उन्हें रिक्शे में, अच्छी तरह से बैठा देते हैं। थोड़ी देर बाद यह रिक्शा, बांगड़ अस्पताल पहुंच जाता है। रिक्शा रुकते ही, वार्ड बोय ट्रोली [स्ट्रेचर] में मोहनजी को लेटाकर इमरजेंसी-रूम में ले आता है। वहां उन्हें, आराम से बेड पर लेटा देता है। फिर ट्रोली को लेकर, वह वापस चला जाता है। उनके पास वाले बेड पर, आठ-दस साल का एक शैतान लड़का भी लेट रहा है। डॉक्टर साहब आकर, मोहनजी के सीने पर स्थसस्कोप लगाकर जांच करते हैं। इसके बाद बी.पी. इंस्ट्रूमेंट से, ब्लड-प्रेसर की जांच करते हैं। जांच करने पर, उनका रक्त-चाप कम यानि ९० पाया जाता है। इसलिए डॉक्टर साहब उनकी पर्ची पर ग्लूकोज़ और जी.डी.डब्लू. ५% तथा एम.वी.आई. इंजेक्शन लिखकर, उस मेल नर्स को ज़रूरी निर्देश दे डालते हैं।]

डॉक्टर – इस मरीज़ की यह हालत तो, भूख के कारण हुई है। अब लगाइए इसे, ग्लूकोज़ की ड्रीप। बाद में चढ़ा देना, एम.वी.आई. का इंजेक्शन।

[इतना कहने के बाद, डॉक्टर साहब अपने ड्यूटी रूम में चले जाते हैं। उनके जाने के बाद, मेल नर्स ग्लूकोज़ की ड्रीप चढ़ाता है। ड्रीप चढ़ते ही, मोहनजी को पर्याप्त ऊर्जा मिल जाती है, अब वे अपनी आँखे खोलते हैं..मगर सामने एम.वी.आई. से भरा तैयार इंजेक्शन हाथ में लिए, उस मेल नर्स को क्या देख लेते हैं..बेचारे मोहनजी ? उनके, होश उड़ जाते हैं। अब जैसे ही, बांह के नज़दीक उस इंजेक्शन को लाया जाता है....जनाबे आली मोहनजी की साँसे, ऊंची चढ़ जाती है। बेचारे इंजेक्शन को देखते ही, ऐसे घबराकर उछलते हैं..मानो कोई बन्दर, किसी सांप को देखकर उछलता जा रहा है...? इस तरह, वे घबराये हुए कहते हैं....]

मोहनजी – [घबराये हुए, कहते हैं] – मैं इंजेक्शन नहीं खाऊंगा, यह कोई खाने की चीज़ है ? [मेल नर्स को, और नज़दीक आते देखकर] अरे जनाब मुझे नहीं, इस छोरे को लगाओ। [उस शैतान लड़के की ओर, इशारा करते हैं]

[सुनते ही बेचारा मेल नर्स हक्का-बक्का हो जाता है, के आख़िर 'यह इंजेक्शन, लगाना किसे है ?' वह बेचारा मेल नर्स तो, मोहनजी के इस तरह उछलने के कारण भूल गया..के, उसको 'डॉक्टर साहब से क्या निर्देश मिले थे ?' फिर क्या ? वह उस छोरे के पास आता है, और उसकी बांह पकड़कर लगा देता है इंजेक्शन। मगर यहां तो हो गयी, गड़बड़। उतावली बरतने से, वह नीडल चमड़ी से आर-पार हो जाती है। और इंजेक्शन में भरी दवाई की धार, छूट जाती है दीवार पर। इस मंज़र को देखकर, वो शैतान छोरा ज़ोर से हंसता है। और, कहता है..]

छोरा – [हंसता हुआ कहता है] – अजी डॉक्टर साहब, क्या कर रहे हैं आप ? बेचारे इस छोटे बच्चे पर रहम कीजिये, दवाई मेरे बदन में नहीं..दीवार..

मेल नर्स – [डांटता हुआ कहता है] – चुप बे, बेअदब। दांत निपोरकर, हंसता जा रहा है कमबख्त ? समझता नहीं, यार। बदन में समायेगी उतनी ही दवाई अन्दर आयेगी, बाकी तो बाहर आकर ही गिरेगी।

[छोरे की बांह पर, स्प्रिट से भींगी रुई मसलते ही मेल नर्स को डॉक्टर साहब के दिए निर्देश याद आ जाते हैं। फिर क्या ? वह झट, मोहनजी को तैयार होने के लिए कहता है।]

मेल नर्स - [स्प्रिट से भींगी रुई से, चमड़ी मसलता हुआ कहता है] – अब मालिक मोहनजी, तैयार हो जाओ..अब आपकी बारी आ गयी है। इस बार, अगर मोहनजी आप बन्दर की तरह उछले तो, आपको रस्सी से बांधकर ठोक दूंगा इंजेक्शन।

[इंजेक्शन में भरी जाने वाली दवाई की विअल, अब मेल नर्स को दिखायी नहीं दे रही है ? बेचारा भूलने की आदत के कारण भूल गया, के 'उसने एम.वी.आई. विअल ३० एम.एल. कहां रख दी ?']

मोहनजी – [हाथ जोड़ते हुए, कहते हैं] – मालिक, माफ़ कीजिये। ऐसा आधा-अधूरा इंजेक्शन मुझे नहीं खाना, इस छोरे के लगे इंजेक्शन को देखकर ही मेरी तबीयत ठीक हो गयी है। अब इसे लगाने की, क्या ज़रूरत ?

[तभी कमरे के अन्दर, चपरासी दाख़िल होता है। आते ही, वह मेल नर्स से कहता है..]

चपरासी – कम्पाउंडर साहब, बड़े साहब आपको बुला रहे हैं..जल्दी आइये।

[चपरासी के साथ वो मेल नर्स, ड्यूटी रूम की ओर जाता हुआ दिखायी देता है। उन दोनों को जाते देखकर, मोहनजी की जान में जान आती है। फिर क्या ? मोहनजी तो झट जूते पहनकर अड़ी-जंट तैयार हो जाते हैं, स्टेशन जाने के लिए। फिर क्या ? बेचारे मोहनजी उल्टे पांव, रेलवे स्टेशन की ओर अपने क़दम बढ़ा देते हैं। वहां आकर स्टेशन मास्टर साहब से, जोधपुर जाने वाली गाड़ी की तहकीक़ात करते है।]

मोहनजी – मास्टर साहब, मुज़रो सा। अब जनाब आप यह बताइये, के 'जोधपुर जाने वाली गाड़ी कब आयेगी ?'

[इनकी बात सुनकर स्टेशन मास्टर साहब, ऐनक को ऊपर चढ़ाते हुए उनसे कहते हैं..]

स्टेशन मास्टर – [ऐनक ऊपर चढ़ाते हुए, कहते हैं] – अरे मोहनजी, आप अब आये ?

मोहनजी – ऐसा क्या हो गया, जनाब ?

स्टेशन मास्टर - अरे साहब, ड्यूटी से छिपला खाने की बीमारी को मत पालो। अब भईजी, धान की इतनी सारी बोरियां रखी है..कौन अनाज की बोरियां गिनेगा, भाई ? थोड़ी समझदारी रखो, बेटी का बाप।

मोहनजी – [घबराकर कहते हैं] – ऐसी क्या बात है, जनाब ? आप तो उलाहने देते ही जा रहे हैं..?

स्टेशन मास्टर – माल बाबूजी बुला रहे हैं, आपको। दो घंटे हो गये, आपको ढूंढ़ते।

[फिर मोहनजी जनाब का, क्या कहना..? बस वे तो धर-कूंचो, धर-मचलो..! धर-कूंचो, धर-मचलो..अरे जनाब आख़िर, पांव रगड़ते-रगड़ते वे सीधे जा पहुंच जाते हैं, माल गोदाम के माल बाबू के पास। उनको देखते ही, माल बाबू कहता है..]

माल बाबू – अरे बेटी का बाप, यों क्या कर रहे हैं ? यह ठेकेदार आपको ढूँढ़ता-ढूँढ़ता, परेशान हो गया है।

मोहनजी – मैं चला गया तो क्या हो गया, बाकी सभी यहीं बैठे हैं ?

माल बाबू – कुछ समझा करो, मोहनजी। आपके दस्तख़त के बिना यह शैतान का चाचा ठेकेदार माल नहीं उठा रहा है, इधर माल गाड़ी पटरियों पर ख़ड़ी है।

मोहनजी – जनाब, फिर परेशानी किस बात की ?

माल बाबू – बिना माल उठाये, यह क्रोसिंग की फाटक कैसे खुले ? यह छोटी सी बात, आप जानते ही हैं। उधर फाटक के पास खड़ी पब्लिक, हमें अलग से परेशान कर रही है। मगर बड़े भाई, आपका काम पूरा न होने के पहले फाटक कैसे खोलें ?

मोहनजी – धीरज रखिये, साहब। अभी माल ख़ाली होता है।

[माल बाबू के कमरे से बाहर आकर, वे चम्पले को पुकारते हैं..]

मोहनजी – [चम्पले को आवाज़ देते हुए कहते हैं] – **कहां जा रिया है रे, चम्पला कढ़ी खायोड़ा ?** इधर मर, किधर चला गया ? [आवाज़ सुनकर, चम्पला नज़दीक आता है]

चम्पला – हुकूम, कहिये।

मोहनजी – अब देख, सारी बोरियां गाड़ी से ख़ाली करवाकर प्लेटफार्म पर रखवा दे...गिनती वार, थाप्पियाँ लगाकर।

चम्पला – जनाब, अभी ख़ाली होती है गाड़ी। और, कोई हुक्म ?

मोहनजी – हुक्म को मार गोली, अब सुन। पूरा माल उठाकर कागज़ तैयार कर दे, बस ख़ाली मेरे दस्तख़त करने बाकी रहे। ले सुन, दस्तख़त कल आकर करूंगा। सावधानी से काम करना, समझ गया कढ़ी खायोड़ा ?

[चम्पला रूख्सत होता है, अब मोहनजी की निगाह छप्परे के नीचे बैठे मुलाज़िमों पर गिरती है। जो इस वक़्त बैठे-बैठे, मिर्ची बड़े खा रहे हैं। उनको इस तरह अपनी पेट-पूजा करते देखकर, जनाबे आली मोहनजी की भूख बढ़ जाती है। वे सोचते जा रहे हैं, के..]

मोहनजी – [होंठों में ही कहते हैं] – यह ठेकेदार कहां मरा, कमबख्त ? पेट में चूहे कूद रहे है, आख़िर वह गया कहां ? अब इन मुलाज़िमों से ही पूछ लिया जाय, के 'यह कढ़ी खायोड़ा ठेकेदार गया किधर ?'

[अब मोहनजी मुलाज़िमों के पास जाते दिखायी दे रहे हैं, उनके निकट आकर वे उनसे कहते हैं।]

मोहनजी – भाईयों। कहीं आपको, ठेकेदार साहब दिखायी दिये ?

एक मुलाजिम – साहब, दस मिनट पहले ही ठेकेदार साहब इधर आये थे। बहुत ढूँढ़ने के बाद भी, आप कहीं नज़र नहीं आये। ठेकेदार साहब आये तब, वे मिर्ची बड़े, केले, बिस्कुट व सेब वगैरा लेकर ही आये थे..आप मौजूद होते, तो अच्छा होता।

दूसरा मुलाजिम – ये सब खाने की चीजें, हमें देकर चले गये। हम लोगों को बहुत भूख लगी थी, इसलिए हमने उस माल पर हाथ साफ़ कर लिये।

तीसरा मुलाजिम – साहब, आपने कुछ खाया या नहीं ?

मोहनजी – [उखड़े सुर में, कहते हैं] – अभी-तक कहां खाया, मेरे भाई ? यहां तो सुबह से भूखा मर रहा हूं, कढ़ी खायोड़ा ? अब कुछ बचा है, तो कहिये..इस पेट में डाल कर, इस जठराग्नि को शांत कर दूं ?

एक मुलाजिम – बस हुज़ूर, ये दो-चार मिर्ची बड़े ही बचे हैं। आपकी इच्छा हो तो, आप अरोग लीजिये।

[फिर, क्या ? मुलाज़िम मोहनजी को, बचे हुए चार मिर्ची बड़े थमा देते हैं। इन मिर्ची बड़ों को देखते ही, मोहनजी के मुंह से लार टपकने लगती है। अब मोहनजी ख़ुश होकर, होंठों में ही कहते हैं..]

मोहनजी – [होंठों में ही, कहते हैं] – **ठोकिरा, इतनी देर प्रतीक्षा करने के बाद अब मिला है..मुझे, खाने के लिये मुफ़्त का माल।** अब इस मुफ़्त के माल को छोड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता, कढ़ी खायोड़ा। वाह रे, वाह मेरे मालिक...**अब तो हमारा प्रोग्राम सेट "माल ज़रूर उड़ाओ, मगर घर का नहीं..."**

[विचारमग्न मोहनजी अचानक, ख़ुशी से यह जुमला बोल देते हैं।]

मोहनजी – [लबों पर मुस्कान लाते हुए कहते हैं] – **कहां जा रिया है, कढ़ी खायोड़ा ?** अब तो खायेंगे मिर्ची बड़े, भर-पेट। जय हो बाबा रामसा पीर की, भूखों को खिलाने वालों को बहुत पुण्य मिलता है..कढ़ी खायोड़ा।

[अब मोहनजी ने, ना देखा आव और ना देखा ताव। वे तो कब्बूड़ो [कबूतरों] की तरह टूट पड़े, उन मिर्ची बड़ों पर। इधर ज़मीन पर गिरे गेहूं के दानों को देखकर, छप्परे पर बैठे सारे कबूतर उड़कर आ जाते हैं नीचे..और, उन बिखरे दानों पर टूट पड़ते हैं। कबूतरों का इस तरह अनाज के दाने चुगना, कोई नयी बात नहीं। ये तो पूरे दिन, दाने चुगने का ही काम करते हैं। मगर, बेचारे मोहनजी के लिये मिर्ची बड़े खाना ज़ान-ज़ोखिम का काम ठहरा। वे बेचारे सुबह से भूखे थे, उनकी आंते कह रही थी के कुछ ला। इधर उन्होंने पहले से पाली स्टाफ़ पर, **"माल ज़रूर उड़ाओ, मगर घर का नहीं..."** की योजना बना डाली। यहां आते ही अपने साथियों को कह दिया था, के "पेट में रोटी-बाटी ठोककर आये हैं, अपुन सब। मगर खाये हुए, काफ़ी वक़्त गुज़र चुका है। इसलिए सबसे पहले, ठेकेदार साहब से मंगवायेंगे मिर्ची बड़े। इसके बाद, चाय-वाय मंगवाकर पी लेंगे..ताकि थकावट दूर हो जायेगी रे कढ़ी खायोड़ा..समझ गये..!" बस यही कारण रहा, उनको खाना था मुफ़्त का माल। इसलिए वे घर से लाये नहीं, खाने का टिफिन। अब इस वक़्त भूख के मारे, मिर्ची बड़ों को देखते ही उन पर टूट पड़ते हैं। इस तरह, उन्होंने मिर्ची बड़े पूरे अरोग लिए..केवल मिर्चों के डंठल बचाए रखे। अब सुबह घटित हुई घटना, उनकी आंखो के आगे फिल्म की तरह छा जाती है। सुबह चार बजे दोनों पति-पत्नि उठ जाते हैं। उनकी पत्नि लाडी बाई साफ़-सफ़ाई करती हुई, घर का एक-एक कोना झाड़ती है। घर के काम करती हुई, अब वह मोहनजी से कह रही है....]

लाडी बाई – [झाड़ू से, घर की सफ़ाई करती हुई कहती है] – सुना..ओ सुना आपने, गीगले के बापू। घर का काम बहुत बढ़ गया है, अब मेरे पास वक़्त नहीं..खाना बनाने का। आपको भोजन करना है तो..

मोहनजी – तो क्या, भागवान..आपने कहीं मिठाई मंगवाकर रखी है, क्या ? कहो, कहां रखी आपने ?

लाडी बाई – मिठाई क्या, ज़हर भी नहीं रखा है खाने के लिए। आपको खाना है तो, बना लो बाजरी की रोटियां और कांटे वाले बैंगन की सब्जी। ख़ुद भी खा लो, और हमको भी खिला दो। नहीं तो....

मोहनजी – [आश्चर्य चकित होकर, कहते हैं] - ना तो क्या करूं, भागवान ?

लाडी बाई – [मुस्कराती हुई, कहती है] – बना लेना, कहीं जाने का सरकारी-टूर। वहां जाकर अरोग लेना, माल-मसाले....और, क्या ? आख़िर, आप ठहरे धान के अफ़सर। [होंठों में ही, कहती है] एक नंबर के कंजूस, इनकी जेब से एक पैसा निकलने वाला नहीं।

[अब वापस मंज़र माल गोदाम का आता है, इस वक़्त मोहनजी कुछ सोचते हुए दिखायी दे रहे हैं।]

मोहनजी – [होंठों में ही, कहते हैं] – लोगों को कहता जा रहा हूं, के 'खाकर आया हूं, बाजरे की रोटी और कांटे वाले बैंगन की सब्जी।' मगर असल में, मैंने कुछ खाया ही नहीं। अब भूखे मरते खाये, मिर्ची बड़े। और अब ये कमबख्त मिर्ची बड़े, दिखा रहे हैं चमत्कार। [पेट में मरोड़े चलने लगते हैं, अब वे दर्द के मारे पेट को दबाते हैं]

[इधर मोहनजी के पेट में मरोड़े उठते हैं, अब दीर्घ-शंका जाने का प्रेसर बन चुका है। और इधर भूखे-पेट खाये मिर्ची बड़े, उन मिर्चों की जलन जो पैदा हो रही है...वह नाक़ाबिले-बर्दाश्त है। बेचारे मोहनजी पेट को दबाते-दबाते, हो गए परेशान। अब तो यह प्रेसर इतना बढ़ गए है... उनकी ऐसी स्थिति अल्लाह मियाँ देख ले तो, शायद उनको भी रहम आ जाए। अचानक उन्हें दीवार पर रखी दारुड़े फ़क़ीर की बोतल दिखायी देती है। फिर क्या ? झट बोतल में पानी भरकर निकल पड़ते है, वन विभाग जाने वाले मार्ग की ओर। इस सुनसान मार्ग से गुज़रकर, रतनजी, रशीद भाई और ओमजी गाड़ी पकड़ने के लिए रोज़ स्टेशन आते हैं। इस मार्ग के आस-पास, बहुत सारी बबूल की झाड़ियां उगी हुई है। सुबह-सुबह मज़दूर बस्ती के कई लोग, दिशा मैदान के लिये यहां चले आते हैं। अब इस वक़्त मोहनजी इन्ही झाड़ियों के पीछे, चले जाते हैं निपटने। मगर बेचारे मोहनजी रहे ऐसे करम-ठोक इंसान, जिनकी क़िस्मत सही वक़्त कभी साथ नहीं देती। झाड़ियों के पीछे जैसे ही वे शौच जाने के लिए बैठना चाहते हैं, तभी न जाने कहां से वह कुटिल फ़क़ीर वहां आ जाता है...फिर, क्या ? मोहनजी के हाथ में थामी हुई बोतल को, वह पहचान लेता है। पहचानते ही वह उस बोतल को, मोहनजी के हाथ से छीनने की भरसक कोशिश करता है। उनको झिड़कता हुआ, कड़वे शब्दों में कहता है।]

दारुड़ा फ़क़ीर – [बोतल छीनते हुए, कहता है] – अरे ओ कंजूस सेठ, रुपया-दो रुपया तू देता नहीं..अब ऊपर से मेरी बोतल चुराता है, हरामी ? तेरे बाप ने मुझको, कभी दारु पिलायी क्या ?

[ज़ोर से मोहनजी को धक्का मारकर, वह फ़क़ीर उनसे बोतल छीन लेता है। फिर उनका गिरेबान पकड़ता है, इधर मोहनजी का प्रेसर नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाता है। मगर अब उस फ़कीर के हाथों को, कौन रोके..? वह कमबख्त, उन पर हाथ उठाने के लिए उतारू हो जाता है। झाड़ियों के पार, सड़क पर चल रहे उनके साथियों की आवाज़..मोहनजी के कानों में गिरती है। अब उनको पूरा वसूक हो जाता है, इस वक़्त उनके साथी दफ़्तर छोड़कर इधर से ही गुज़र रहे हैं ? क्योंकि इस वक़्त, बेंगलूर एक्सप्रेस के आने का वक़्त निकट आता जा रहा है। इस कारण वे, मार से बचने के लिये..ज़ोर से चिल्लाते हुए, अपने साथियों को आवाज़ दे डालते हैं।]

मोहनजी – [चिल्लाते हुए, कहते हैं] – अरे कोई यहां आकर, मुझे बचाओ रे। ओ रशीद भाई, ओ रतनजी..आकर बचाओ मुझे, इस फ़क़ीर से। यह कमबख्त मुझे, जंगल में शौच के लिये बैठने नहीं देता।

[मोहनजी का अनुमान सही रहता है, उनके साथियों के बारे में। मोहनजी के किलियाने की आवाज़, दफ़्तर से लौट रहे उनके साथी रशीद भाई के कानों में सुनायी देती है। इस वक़्त रशीद भाई, रतनजी और ओमजी दफ्तर छोड़कर, पाली रेलवे स्टेशन की ओर अपने क़दम बढ़ा रहें हैं। चलते-चलते वे सभी यही सोच रहे हैं, के 'अभी ज़्यादा देरी हुई नहीं है, इसलिये बेंगलूरु एक्सप्रेस आसानी से मिल सकती है।' इतनी देर में, रशीद भाई को मोहनजी के किलियाने की आवाज़ एक बार और सुनायी देती है। अब वे अपने कान पर हाथ रखकर, अपने साथियों से कहते हैं।]

रशीद भाई – [कान पर हाथ देते हुए, कहते हैं] – भाई लोगों, कुछ सुना आपने ? मुझे यह आवाज़ मोहनजी के किलियाने की लगती है, ऐसा लगता है कोई उनको पीट रहा है ?

ओमजी – हां रशीद भाई, मुझे भी ऐसा ही लग रहा है..**ये वही मोहनजी है, जिनकी ख़िदमत करते-करते हम लोग अपने घुटने छिला रहे हैं और चांदी चख रहे हैं।**

रतनजी – यारों। मोहनजी तो एक ऐसी कुत्ती चीज़ है, अपुन लोगों को कह दिया के 'अरे साथियों, ठेकेदार से खर्च करवाकर भर-पेट मिर्ची-बड़े, रोटी-बाटी सब खिलाएंगे आप लोगों को ..फिर ऊपर से पी लेंगे चाय, वो भी मसाले वाली।' मगर हम सबको...

रशीद भाई – **'दफ़्तर भेजकर, ख़ुद अकेले माल-मसाला ठोक गए।' बड़ी चालू चीज़ है, भाई।**

[इतने में मोहनजी के किलियाने की आवाज़, और ज़ोर से सुनायी देती है। ख़ुदा की कसम, अब तो शत प्रतिशत ऐसा ही लग रहा है, के 'वह दारुड़ा फ़क़ीर उनका गला पकड़कर, उन्हें पीट रहा है...? और बेचारे मोहनजी, अपने साथियों को इस संकट की वेला में याद कर रहे हैं।']

मोहनजी – [ज़ोर से चिल्लाते हुए, कहते हैं] – अरे, रामसा पीर। यह दारुड़ा फ़क़ीर मुझे मार रहा है, ओ रशीद भाई..अरे ओ रतनजी यार, जल्दी आकर मुझे बचाओ।

ओमजी – [दोनों का हाथ थामकर, कहते हैं] – दोस्तों, जल्दी चलो। वह दारुड़ा फ़क़ीर साहब का गला पकड़कर, उन्हें पीट रहा है।

रशीद भाई – हां..हां क्यों नहीं..? आख़िर, है तो..हमारे गाड़ी के साथी।

[सभी झाड़ियों के पीछे, जाते हैं। वहां आकर, उस फ़क़ीर को जूते मारते हैं....जूते खाकर वह फ़क़ीर, गधे के सींग की तरह गायब हो जाता है। उसके जाने के बाद, रशीद भाई पीने के पानी से भरी बोतल मोहनजी को थमा देते हैं। फिर, कहते हैं..]

रशीद भाई – [पानी से भरी बोतल थमाते हुए, कहते हैं] – हुज़ूर। इन फकीरों से, बोतल क्यों मांगते हैं आप ? यह लीजिये मेरी बोतल, जल्दी निपटकर आ जाइये स्टेशन।

रतनजी - हम तीनों आपको, वहीँ उतरीय पुल की सीढ़ियों पर बैठे मिलेंगे, जहां अक़सर हम लोग बैठे-बैठे गाड़ी का प्रतीक्षा किया करते हैं। समझ गए, साहब ?

ओमजी – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – साहब, अब आप भूल से भी कभी अकेले-अकेले माल-मसाले अरोगना मत। ना तो इसी तरह, पेट ख़राब हो जायेगा...फिर, पूरे दिन पाख़ाना आप जाते रहेंगे ?

[रशीद भाई, रतनजी और ओमजी, स्टेशन की ओर क़दमबोसी करते हुए दिखायी देते है। मोहनजी, उनको जाते हुए देख रहे हैं। उन सबको जाते हुए देखकर, बरबस उनके मुंह से यह जुमला निकल जाता है..]

मोहनजी – [साथियो को जाते हुए देखकर, बरबस बोल उठते है] – **ये भी भूखे, और मैं भी भूखा..अब कहां है, "माल उड़ाओ, मगर घर का नहीं..." ?**

[मंच की रौशनी लुप्त होती है, और मंच पर अंधेरा छा जाता है।]

--

अरे यार, मत हो नौ दो ग्यारह।

खंड तीन

[मंच रौशन होता है, अब पाली स्टेशन का मंज़र दिखायी देता है। उतरीय पुल की सीढ़ियों पर राजू साहब, दयाल साहब, ओमजी, रशीद भाई और दीनजी भा'सा बैठे हैं। अब जसवंतपुरा–जोधपुर एक्सप्रेस ज़ोर से सीटी देती हुई, प्लेटफार्म नंबर एक पर आती दिखायी देती है। इस गाड़ी के शयनान डब्बे में बैठे मोहनजी खिड़की से मुंह बाहर निकालकर, सीढ़ियों पर बैठे साथियों को ज़ोर से आवाज़ देते हुए कहते हैं..]

मोहनजी – [ज़ोर से आवाज़ देते हुए] – आ जाओ, आ जाओ..ओ कढ़ी खायोड़ो। डब्बे में, कई सीटें ख़ाली पड़ी है।

[गाड़ी रुक जाती है। मोहनजी अपना बैग उठाये गाड़ी से उतरते हैं, फिर अपने साथियों की ओर जाने के लिए अपने क़दम बढ़ा देते हैं। उधर सीढ़ियों से उतरकर, राजू साहब और दयाल साहब खम्भे के पास आकर खड़े हो जाते हैं। फिर दयाल साहब अपने साथियों को रुकने का इशारा करते हुए, कहते हैं..]

दयाल साहब – किधर जा रहे हो, सांई ? मत जाओ शयनान डब्बे में, आज़ आबू साइड का टी.टी.ई. लगा है। कमबख्त कर देगा, जुर्माना।

राजू साहब – लोकल डब्बे में बैठ जाते हैं, इसमें सबको फ़ायदा है।

दयाल साहब – शत प्रतिशत सही कहा आपने, ना तो वहां टी.टी.ई. का डर, और न वहां मोहन प्यारे आकर करेगा अपुन को बोर। चलिए राजू साहब, सीटें रोक लेते हैं। [साथियों की तरफ़ देखकर कहते हैं] जल्दी आ जाना, हमारे पीछे-पीछे।

[इतना कहकर, वे दोनों जाते हैं। उनके जाने के बाद, गाड़ी रुकते ही मोहनजी गाड़ी से उतरकर वहां आते हैं।]

मोहनजी – [रतनजी से कहते हैं] – ठण्ड लग रही है, रतनजी। हड्डियां चरमरा रही है, अब आ जाओ शयनान डब्बे में।

रशीद भाई – आपको सर्दी लगने का कोई प्रश्न भी पैदा नहीं होता, क्योंकि आप तो मोहनजी सुबह-सुबह ठोक कर आते हैं...संदीणा [ताकत लाने के लिए बनाए गये, घरेलू दवाई के लड्डू]। फिर जनाब कहां लगेगी, आपको सर्दी ?

मोहनजी – हां रे, कढ़ी खायोड़ा। सुबह-सुबह ज़रूर खाकर आया हूं, अब तो रशीद भाई यह सोच रहा हूं...कल से, खाने का टिफ़िन लाना बंद कर दूं। ओ सेवाभावी, मैंने ठीक कहा या नहीं ?

रतनजी – यह ग़लती आप कभी करना, मत। बेटी का बाप, आपको भूख भी बहुत लगती है। और ऊपर से, आप दवाई की गोलियां भी अलग से लेते हैं...!

मोहनजी – बात तो आपने शत प्रतिशत सही कही, इसलिए कुछ न कुछ खाकर ही गोलियां गिटता हूं। [इंजन की सीटी सुनायी देती है] अरे ठोकिरा, इंजन ने सीटी दे दी है..अब चलिए, देर मत कीजिये।

रशीद भाई – आपको शयनान डब्बे में बैठना हो तो, आप जाकर बैठ जाइए। जनाब हम तो बैठेंगे लोकल डब्बे में, वहां दयाल साहब और राजू साहब सीटें रोकने के लिए गए हुए हैं।

मोहनजी – फिर, मैं क्यों पीछे रहूं, मुझे भी दयाल साहब से काम हैं।

[अब सभी जाकर, लोकल डब्बे में आकर बैठ जाते हैं। मोहनजी को देखते ही, राजू साहब और दयाल साहब उठकर दूसरे केबीन में चले जाते हैं। अब मोहनजी खिड़की की तरफ़ निग़ाह डालते हैं, जहां होम गार्ड दफ़्तर के बाबू मोहनजी जाखड़ बैठे हैं। उनकी सीट पर कब्ज़ा करने की नीयत से, वे मोहनजी जाखड़ के पास जाते हैं। फिर, उनसे कहते हैं..]

मोहनजी – जाखड़ साहब कढ़ी खायोड़ा, यहां खिड़की के पास ही क्यों बैठे हैं..? अरे यार, दूर हटिये, मुझे जर्दे की पीक थूकनी है। अगर नहीं थूकी तो, मुझे चक्कर आ जायेगा।

[मोहनजी जाखड़ उठकर गोपसा के पास बैठ जाते हैं, उनके उठते ही मोहनजी झट बैठ जाते हैं उनकी सीट पर। फिर खिड़की को देखते हुए थू-थू करते हुए, थूक के साथ जर्दा उछालते हैं। इधर हवा के तेज़ झोखे से उनके मुंह से उछलता ज़र्दा, आस-पास बैठे उनके साथियों के मुंह का मेक-अप करता जा रहा है। इसके साथ-साथ, बैठने की सीटें भी ख़राब हो जाती है।

मोहनजी – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – अरे कढ़ी खायोड़ा, इस खिड़की से क्या सुनहरी धूप निकल रही है..? अब तो जाखड़ साहब, मैं यहीं बैठूंगा।

[पहलू में बैठे, जलदाय विभाग के मुलाजिम गोपसा को टिल्ला देते हुए कहते हैं..]

मोहनजी – उधर खिसको, गोपसा। मुझे ढंग से, बैठने दो।

[अब बेचारे गोपसा खिसकना चाहे या न खिसकना चाहे..प्रश्न यह नहीं, मगर जर्दे का मेक-अप मुंह पर हो जाने का डर ज़रूर है। वे झट, थोड़ा आगे खिसक जाते है। उनके खिसकने से, मोहनजी को बैठने के लिए काफी जगह मिल जाती है। फिर , क्या ? वे तो खूंटी तानकर, आराम से पसरकर बैठ जाते हैं तख़्त पर।]

मोहनजी – [आराम से बैठते हुए, रशीद भाई से कहते हैं] – रशीद भाई, क्या हाल-चाल है ?

रशीद भाई – मेरे हाल तो ठीक है, अब उठूं तब आप मेरी चाल भी देख लेना। **कल बोरियां गिनते और दफ़्तर आने-जाने में, हमारे घुटने घिस गए।** अब तो साहब, **आपकी दया से चांदी चखनी रही है।**

मोहनजी जाखड़ – अजी खां साहब, ऐसा क्या किया है मोहनजी ने..जो बेचारे भोले आदमी को मामूकिमा सुनाते जा रहे हैं, आप ?

रशीद भाई – बात कल की है, जनाब। इन्होने, दावत का निमंत्रण दिया..और हम लोगों को दफ़्तर भेजकर, अकेले खा गए माल-मसाला। जब इनको कुछ खिलाना ही नहीं था, तो क्यों खाना खिलाने की बात कही ?

[दफ़्तर की बात का जिक्र आते ही, जनाब मोहनजी को रिपोर्ट वाली बात याद आ जाती है। के, 'उन्होंने अभी-तक दयाल साहब के दस्तख़त रिपोर्ट पर नहीं लिये हैं।' याद आते ही, झट कहते हैं।]

मोहनजी – [रिपोर्ट की बात याद आते ही, कहते हैं] – अरे अच्छा याद दिलाया रे, कढ़ी खायोड़ा। कल जो काम किया, उसकी रिपोर्ट पर दयाल साहब के दस्तख़त लेने बाकी है। अब मैं जा रहा हूं, दयाल साहब के पास।

[मोहनजी उठकर, सीधे चले जाते हैं पड़ोस के केबीन में। यहां बैठे दयाल साहब और राजू साहब के बीच, गुफ़्तगू चल रही है। अब उनकी गुफ़्तगू के बीच फाडी फंसाने, जनाब मोहनजी आकर दयाल साहब के पहलू में बैठ जाते हैं। फिर, कहते हैं..]

मोहनजी – जय बाबा री, सा। दयाल साहब, आप मालिक यहां बैठे हैं ?

दयाल साहब – [बेरुखी से] – क्यों, तूझे क्या तक़लीफ़ ? बोल पहले तू, इधर क्यों आया ? क्या, मुझे परेशान करते तेरा दिल भरा नहीं अभी-तक ?

मोहनजी – बहुत दर्द है, साहब..इस दिल में। फिर भी यह शखिस्ता दिल [चोट खाया हुआ दिल], बार-बार बार-बार अपमान पाकर चोटे खाता जा रहा है।

दयाल साहब – चोट खाए दिल को लिए, काहे घूम रहा है ? जा, घर पर बैठकर आराम कर।

मोहनजी – अरे जनाब, आप मेरी बात को समझिये। यहाँ तो प्रेम के मारे, मैं बार-बार आपके पास आता हूं, मगर आप दोनों उठकर चले जाते हैं ?

राजू साहब – हमारी मर्ज़ी, हम जहां चाहे चले जायेंगे...आखिर...

दयाल साहब – इसके बाप की रेलगाड़ी नहीं।

मोहनजी - अरे जनाब, आप जानते ही हैं के मैं आपका पीछा छोड़ नहीं सकता, जब-तक मेरा काम आप पूरा नहीं कर देते। आख़िर मैं तो ठहरा ऐसा कंसला, जो बदन के ऊपर फेविकोल की तरह चिपक जाता है..बस उसी तरह चिपका रहूंगा आपसे, काम हुए बिना, मै आपका पीछा छोड़ने वाला नहीं।

[अब मोहनजी उनको चिढाने के लिए, फ़िल्मी गीत “पीछा न छोडूंगा सोनिया..” बेसुरी आवाज़ में गाते हैं। इनका गीत सुनकर, बेचारे दयाल साहब के कान पक जाते हैं। इनके व्यवहार से दुखी होकर, दयाल साहब को अब..फटे बांस की तरह बोलने के लिए, मज़बूर होना पड़ता है।]

दयाल साहब – गधे की तरह, क्यों दांत निकाले चिल्ला रहा है..? देख मोहन प्यारे तेरी इच्छा है जहां बैठ..

राजू साहब – [हंसते हुए] – सही बात है, दयाल साहब। यह आपके बाप की गाड़ी नहीं, मगर..

दयाल साहब – [नाराज़गी से] – मगर हमारी इस मोहन प्यारे के पास बैठने की इच्छा नहीं होगी, तो नहीं बैठेंगे इसके साथ....झट, उठकर चले जायेंगे। [राजू साहब से कहते हैं] अब चलिए राजू साहब, अब यहां नहीं बैठना।

राजू साहब – आप कहते हैं तो, ठीक है जनाब। लीजिये चलिए, दूसरे केबीन में। [बैग उठाते हैं]

मोहनजी – [उनको रोकते हुए, कहते हैं] – रुकिए जनाब, आपको कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। पहले मेरी सुन लीजिये, कमेटी बनाकर मैंने माल-गोदाम में काम किया..उस रिपोर्ट पर, दयाल साहब आपके दस्तख़त होने बाकी है।

[इतना कहकर, मोहनजी लम्बी-लम्बी साँसे लेते हैं। फिर सामान्य होने पर, आगे कहते हैं।]

मोहनजी – [बैग से रिपोर्ट निकालकर, सामने रखते हैं] – दयाल साहब, बस आप इस रिपोर्ट पर अपने दस्तख़त कर लीजिये..फिर, मैं स्वत: चला जाऊँगा। आपको कहीं जाने की, ज़रूरत नहीं।

दयाल साहब – [क्रोधित होकर] – कितनी बार समझाऊंगा, तूझे। तू समझेगा नहीं, के मेरी ड्यूटी किसी दूसरी जगह बोलती है। अब नहीं करता दस्तख़त, अब चला जा मोहन प्यारे..न तो हम चले जाते हैं। चलिए, राजू साहब।

राजू साहब – वज़ा फरमाया, आपने। न उठे तो, सर-दर्द नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाएगा।

[दयाल साहब और राजू साहब उठकर, दूसरे केबीन में चले जाते हैं। उनके जाने के बाद सीटें ख़ाली हो जाती है, अब मोहनजी रिपोर्ट को वापस बैग में रख लेते हैं। फिर, आराम से तख़्त पर बैठ जाते हैं। गाड़ी की रफ़्तार बढ़ जाती है। तभी एक एक मंगता डफली लिये इस केबीन में आता है, और वह डफली बजाता हुआ गाता है..]

गाने वला मंगता – [डफली बजाता हुआ गाता है] – हम छोड़ चले इस महफ़िल को.......

[इस नज़्म को सुनते ही, मोहनजी को अतीत की घटना याद आने लगती है। जब वे अपना तबादला करवाकर, खारची डिपो में ड्यूटी जोइन करने आये थे...तब का पूरा वाकया उनकी आंखो के आगे छाने लगता है। मंच की रौशनी लुप्त होती है, थोड़ी देर बाद मंच वापस रौशन होता है। दफ़्तर का मंज़र, सामने दिखायी देता है। खारची डिपो के, पुराने साहब शर्माजी रिटायर हुए हैं। अभी इस वक़्त दफ़्तर के बड़े होल में पुराने वाले साहब की विदाई पार्टी चल रही है, इस पार्टी में आस-पास के सभी एफ़.सी.आई. दफ्तरों के अधिकारी इस मीटिंग में सम्मिलित हुए हैं। चाय-नाश्ते के बाद, यह मिटिंग शुरू होती है। इस बैठक में दफ़्तर के सभी कर्मचारी, ठेकेदार, राशन की दुकान वाले, गांव वाले और आस-पास के एफ़.सी.आई. डिपो के अधिकारी गण वगैरा उपस्थित हैं। इस मिटिंग में, शर्माजी के गुण व कार्य का बखान हो रहा है। अब नए अधिकारी मोहनजी के बोलने की बारी आती है, वे कुछ नया काम करने का मनोबल बनाते हैं। भाषण के स्थान पर वे एक नज़्म पेश करना चाहते हैं, बस फिर क्या ? वे झट लाउड-स्पीकर को थामकर, नज़्म गानी शुरू करते हैं।]

मोहनजी – [नज़्म गाते हुए] – **हिजाबे फ़िला-परवर अब उठा लेती तो अच्छा था। तेरे माथे पे ये आँचल ही खूब है लेकिन, तू इस आँचल से इक परचम बना लेती तो अच्छा था। रुदाद-ग़मे उल्फ़त उनसे, हम क्या कहते, क्योंकर कहते, इक तरफ़ ना निकला होंठों से और आँख में आंसू भी आ गये। उस महफ़िले कैफ़-ओ-मस्ती में, उस अंजुमन-ए-इरफ़ानी में..सब जाम बक़फ़ बैठे ही रहे, हम पी भी गए, छलका भी गए।**

[अब यह नज़्म उपस्थित लोगों को कुछ समझ में नहीं आती, बेचारे श्रोता गण एक-दूसरे का मुंह देखते जा रहे हैं। अब इस स्थिति को भांपकर, मोहनजी दूसरा गीत गाना शुरू करते हैं।]

मोहनजी – [हाथ ऊंचा करते हुए गाते हैं] – **हम छोड़ चले इस महफ़िल को, याद आये तो मत रोना। इस दिल को तसल्ली दे देना, जी घबराये तो मत रोना।**

[मंच के पास कई लोग, फूल-मालाएं लिये खड़े हैं। इस गीत को सुनते ही, उन लोगों को आश्चर्य होता है। वे सोचते जा रहे हैं, के 'यह भाई साहब है, कौन ? और, ऐसा क्यों कह रहे हैं ? छोड़ चले, छोड़ चले..? शायद यह भाई साहब यही कह रहे होंगे, के वे ख़ुद ही सेवानिवृत हुए हैं। कुछ नहीं, अब पास में खड़े इस वाच मेन चम्पले से पूछकर तसल्ली कर लेते हैं।' इधर यह अलामों का चाचा चम्पला, अभी है मज़ाक करने के मूड में। उन लोगों के पूछने पर, वह कह देता है के 'यही साहब जाने वाले हैं।']

एक आदमी – [आश्चर्य करता हुआ प्रश्न करता है] – अरे भाई चम्पला, यह तो बता कौन से साहब जाने वाले हैं ?

चम्पला – [मज़ाक के मूड में, कहता है] – मुझे तो यह गीत गाने वाले साहब ही जाने वाले साहब लगते हैं, बेटी का बापां। देख भाई, इनके दिल में कितना दर्द भरा हुआ है ? कैसे ग़म भरी आवाज़ में गा रहे हैं, कैसा इमोशन है...?

दूसरा आदमी – सच्च, यही साहब है जाने वाले ?

चम्पला – शत प्रतिशत। मैं तो गीत गाने वाले साहब को ही माला पहना दूंगा, चलिए..चलिए, आप भी पहना दीजिये इन्हें।

[तभी ठेकेदार संपत वहां आता है, वह भी चम्पला का समर्थन कर बैठता है।]

संपत – हां रे, चम्पला। तू सच्च कह रहा है, मैं भी इनको ही माला पहना दूंगा। देख, इस बेचारे का मुंह कैसा उतरा हुआ है ? अरे यार, जाने वाले आदमी का ही मुंह ऐसे ही उतरा हुआ रहता है।

पास खड़े गांव वाले – जी हां, आपका कहना सच्च है। चलिए इनको माला पहना देते हैं, चलो चलो।

[फिर क्या ? सभी मंच पर चढ़कर, बेचारे मोहनजी को मालाओं से ढक देते हैं। इन लोगों का यह स्वांग देखकर, जाने वाले शर्माजी का मूड उखड़ जाता है। इस तरह उनके स्थान पर, मोहनजी को

मालाएं पहनाना..? यह बात कभी उन्होंने, सपने में भी नहीं सोची थी। उनके माथे पर पसीने की बूंदे छलकने लगती है, कभी वे रुमाल से पसीने के एक-एक कतरे को साफ़ करने बैठ जाते हैं..और कभी वे, मालाएं पहने मोहनजी को देखते हैं। फिर, क्या ? वे ख़ुद उठकर खड़े हो जाते हैं, शायद कोई उन्हें पहचानकर कोई माई का लाल इनको भी पहना दे..पुष्पों का हार ?]

मोहनजी – [मालाएं गले से निकालकर, टेबल पर रखते हुए कहते हैं] – क्या कर रहे हो, बेटी का बापां ? मैं तो यहां ड्यूटी जोइन करने आया हूं, नया प्रबंधक मैं ही हूं।

[इतना कहकर, उन्होंने शर्माजी के कंधे पर हाथ रखा। फिर वे, आगे कहते हैं..]

मोहनजी - [कंधे पर हाथ रखते हुए, कहते हैं] – अच्छी तरह से देखिये, आप लोग। मेरे बाल पूरे काले हैं, इसलिए अभी मैं जाने वाला नहीं। अभी कई दिनों तक, आपकी छाती पर मूंग दलूंगा रे कढ़ी खायोड़ो।

[इतना कहकर, मोहनजी शर्माजी की कुर्सी खींचकर बैठ जाते हैं। बेचारे शर्माजी करमठोक की तरह अन्दर ही अन्दर पछताते जा रहे हैं, आखिर वे खड़े हुए ही क्यों ? अगर वे खड़े न होते, तो इस लंगूर को कब मौक़ा मिलता उनकी कुर्सी पर कब्ज़ा करने का ? और अब वे, सोचते जा रहे हैं..]

शर्माजी – [सोचते हुए] – ए मेरे रामा पीर। इस खारची दफ़्तर में, मेरा तबादला हुआ ही क्यों ? कार्य भार ग्रहण करने के वक़्त मेरा पोपला मुंह देखकर, यहां के कार्मिकों ने मुझे चपरासी समझ लिया। ऊपर से ये माता के दीने उस वक़्त एक-दूसरे से कह रहे थे, 'अच्छा हुआ यह चपरासी आ गया, और आया नहीं डिपो मैनेजर।' अब मरा है यह नालायक मोहनजी, मेरी शान भिष्ठ में मिलाने ? मालाएं पहननी गयी धेड़ में, कमीना बैठ गया मेरी कुर्सी खींचकर ? अब तो खड़े-खड़े, लोगों का मुंह देखना ही मेरे नसीब में रहा ?

[इस तरह बेचारे शर्माजी खड़े-खड़े लोगों का मुंह ताकने लगे, बेचारे कब तक खड़े रहते..? खड़े-खड़े, उनके पांवों में दर्द होने लगा। उधर जनाबे आली मोहनजी शर्माजी की कुर्सी पर बैठकर, केसरी सिंह नार की तरह दहाड़ रहे हैं]

मोहनजी – [कुर्सी पर बैठकर गरज़ते हुए, कह रहे हैं] - आज़ मैं इस कुर्सी पर बैठ गया हूं, अब सुन लीजिये मेरा प्रशासन बहुत कड़ा है। समझ लें आप, मैं क़ायदा का आदमी हूं। दस बजे दफ़्तर आना, और शाम के पांच बजे ही दफ़्तर छोड़ना।

[तभी दूर से पाली डिपो के मैनेजर राजू साहब आते हुए दिखायी देते हैं, और इधर शर्माजी को मोहनजी की छोड़ी हुई कुर्सी पर बैठने का ख़्याल आता है।]

मोहनजी – आप सभी कर्मचारी सचेत हो जाना, मैं किसी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं करता। सुन लिया, कढ़ी खायोड़ो ?

[अचानक चम्पले की नज़र, सामने से आ रहे राजू साहब पर गिरती है। वह झट मंच पर चढ़ जाता है, और पहुंच जाता है मोहनजी के द्वारा छोड़ी हुई कुर्सी के पास। इधर शर्माजी उस कुर्सी पर जैसे ही बैठते हैं, मगर इससे पहले उस स्थान से चम्पला उस कुर्सी को हटा लेता है। और मोहनजी के दूसरी ओर बाजू में, उस कुर्सी को रखकर राजू साहब को बैठा देता हैं। **बेचारे शर्माजी, को क्या पत्ता ? के, चम्पला ऐसी कारश्तानी कर चुका है। बेचारे अनजाने में नीचे क्या बैठते हैं..? वे तो धड़ाम से, नीचे ज़मीन पर गिर पड़ते हैं।** उनको गिरते देखकर, सभी बैठे लोग ज़ोर-ज़ोर से हंसते हैं। उन लोगों का इस तरह खिलखिलाकर हंसना, खोड़ीले-खाम्पे मोहनजी को कैसे अच्छा लगता ? वे जनाब झट, उन सबको डपटना शुरू कर देते हैं।]

मोहनजी – [डांटते हुए कहते हैं] – सुन लीजिये, कान खोलकर। इस तरह छक्के की तरह हंसना और लोगों की मज़ाक उड़ाना मुझे पसंद नहीं, समझ लीजिये आप..मैं तीन रंग की स्याही के तीन कलम रखता हूं, लाल, आसमानी और हरी।

राजू साहब – [हंसते हुए, कहते हैं] – जनाब, अब बता दीजिये इन तीनों कलमों की महिमा।

मोहनजी – आप भी रख लीजिये, राजू साहब काम आयेगी। सुनो, इसमें से लाल स्याही की कलम तो कभी चलनी ही नहीं चाहिये। अगर चल गयी तो फिर, ब्रह्माजी भी यहां आकर आपको बचा नहीं पायेंगे।

[इस तरह ज़ोर की झटकी पिलाकर, मोहनजी अपना भाषण समाप्त करते हैं। अब उनकी आंखो के आगे, अगला मंज़र छाने लगता हैं। अब वे दो दिन तक लगातार तड़के उठ जाते हैं, और जम्मू-तवी में बैठकर समय पर दफ़्तर आते हैं, व शाम को दफ़्तर की छुट्टी होने के बाद बराबर वक़्त पर दफ़्तर छोड़कर गाड़ी पकड़ते हैं। इस तरह मोहनजी, रात के इग्यारह बजे तक जोधपुर आ जाया करते हैं। इसके बाद, मोहनजी के हाथ की बात नहीं। तीसरे दिन ही, लाडी बाई के गुस्से का कोई पार नहीं..वह क्रोधित होकर, कहती है..]

लाडी बाई - [गुस्से में, कहती है] – ऐसे कौनसे बड़े अफ़सर बन गए आप, जो हम सब को आपने परेशान कर डाला ? **जोधपुर डिपो में थे तब आप जाते थे, बारह बजे। अब किस बावड़ी का भूत या खबीस लग गया आपको, जो...**

मोहनजी – [तुनककर कहते हैं] - आगे बोलो भागवान, चुप मत रहो। सुनाना हो तो तो आज़ ही सुना डालो, इस तरह रोज़-रोज़ की किच-किच से छुटकारा तो मिलेगा।

लाडी बाई – सुन लीजिये, बार-बार मैं कहने वाली नहीं। मेरा भी, सर-दर्द बढ़ जाता है। अब आप कैसे जा रहे हैं, छः बजे की गाड़ी से ?

मोहनजी – मैं किसी भी गाड़ी से जाऊं, इससे क्या फर्क पड़ता है ? कहीं आपकी अक्ल घास चरने तो नहीं गयी है, जो लगातार बेकार की बकवास करती जा रही हैं...आप ?

लाडी बाई – अक्ल आपकी ठिकाने नहीं है, इतना भी सोच नहीं सकते..के, इतना जल्दी मैं कैसे खाने का टिफ़िन तैयार करूं ? क्या मेरे पास कोई, दूसरा काम नहीं है ? अब अफ़सराई अपने डिपो में दिखाया करो, मेरे ऊपर क्यों ?

मोहनजी – [सर पकड़कर कहते हैं] - करूं क्या, आख़िर ? अब आप ख़ुद ही बता दो, करना क्या ?

लाडी बाई – बात यह है, बच्चे हो गए हैं बीमार। इधर इस कमबख्त चिकुनगुनियां बुखार ने तो तोड़ डाले, मेरे घुटने। मगर, आपको क्या ? यदि अप खारची में कमरा लेकर रह जाते, तो मुझे मिलता आराम।

[लाडी बाई की ऐसी कड़वी बातें सुनकर, मोहनजी को बहुत गुस्सा आता है। वैसे उनका सिद्धांत है, के गुस्सा करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। अतः गुस्सा नहीं करना चाहिए..बाईचांस अगर गुस्सा आ भी जाय तो तो दिमाग़ को दूसरी तरफ़ लगाना अच्छा है। इस तरह, माइंड-डाइवर्ट करने के लिए पेसी खोलते हैं। फिर पेसी से जर्दा और चूना बाहर निकालकर उस मिश्रण को हथेली पर रखकर अंगूठे से अच्छी तरह से मसलते हैं। फिर क्या ? सुर्ती तैयार होते ही, वे दूसरे हाथ से थप्पी लगते हैं। थप्पी लगते ही, खंक उड़ती है, जो उनकी घरवाली लाडी बाई के नासाछिद्रों में चली जाती है। अब बेचारी लाडी बाई की बुरी हालत का पूछो मत, वह लगा देती है, छींकों की झड़ी। फिर बेचारी अपने पल्लू से नाक साफ़ करती है, नाक साफ़ करके वह कड़े लफ़्ज़ों में मोहनजी से कहती है..]

लाडी बाई – [गुस्से में] – ऐसे पशुवत इंसानों के पास बैठना, ख़ुद का खून जलाना है। यह ज़र्दा है, या रोटियों का ढेर ? खाने को आपको यही मिला, गीगले के बापू ?

मोहनजी - [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – भागवान, आख़िर, आप चाहती क्या हैं ?

लाडी बाई – भले आदमी, आपको औरत को खुश करना भी नहीं आता ? अगर नहीं आता है बन जाइए, उस चूकली के पति जैसे..तो भी, मैं समझ लूंगी के...!

मोहनजी – [लबों पर मुस्कान लाकर] – आ जाइए, कमरे के अन्दर..आपको पूरी फिल्म दिखला दूंगा। फिर दे दूंगा मैं, मेरी मोहब्बत का सबूत। झट आ जाओ, इस वक़्त बदमाश गीगला भी घर पर नहीं।

लाडी बाई – [गुस्से में उठकर, कहती है] – अब रहने दीजिये, अक्ल नाम की कोई चीज़ आपके खोपड़े में नहीं। ढेरे के ढेरे बने रहोगे, करमठोक इंसान हो..अच्छी बातें आपको करनी आती नहीं, के 'कहीं लिजावूं सैर कराने, आज़ लाया हूं पाली से गुलाब हलुआ..

मोहनजी – [हाथ नचाते हुए, कहते हैं] – गालों के अन्दर घोड़े दौड़ रहे हैं, खोपड़ी के अन्दर अक्ल नाम की कोई चीज़ नहीं। टिफ़िन तैयार करते आती है मौत, ऊपर से बिचारी बोलती है मुंह खोलकर...लाओ, पाली से गुलाब हलुआ..?

[मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच वापस रौशन होता है। गाड़ी के लोकल डब्बे का मंज़र सामने आता है। मोहनजी नींद में, हाथ नचाते-नचाते बड़बड़ाते जा रहे हैं। उनके इस तरह हाथ नचाने से इनके ऊपर, खूंटी पर लटक रहा रशीद भाई का पांच किलो का बैग..धब्बीड़ करता, सीधा उनके सर पर आकर गिरता है। दर्द के मारे बेचारे मोहनजी चिल्लाते हैं, और फिर चेतन होकर सामने देखते हैं। सामने बैठे उनके साथी रतनजी, रशीद भाई और ओमजी खिल-खिलाकर हंसते जा रहे हैं। ये तीनों महानुभव, इस केबीन में दयाल साहब और राजू साहब को न पाकर झट अपने साथी मोहनजी के पास बैठने आ गए। उस वक़्त, जनाबे आली मोहनजी झपकी ले रहे थे। इनके पीछे-पीछे न्याय विभाग के मुलाजिम पंकजजी, आनंदजी, और आर.एफ़.सी.आई. के शर्माजी भी चले आये हैं। अब ये सभी, उनके आस-पास व सामने की सीटों पर बैठे दिखायी देते हैं। **यह सत्य है, इन साथियों को मोहनजी के बिना मन लगता नहीं।** अब इस वक़्त उनको बड़बड़ाते देखकर, वे खिल खिलाकर हंसते जा रहे हैं। उन सबको इस तरह हंसते देखकर, मोहनजी जल-भुन जाते हैं। इनके चेहरे की बदलती रंगत को देखते हुए, रशीद भाई उनसे कहते हैं...]

रशीद भाई – [लबों पर मुस्कान लाकर] – ऐसा कौन है भाग्यशाली, जो आपसे मांग रहा है पाली का गुलाब हलुआ ? उसके लाओ तब, आप मेरे लिए भी ला देना..पैसे तनख्वाह मिलने पर, आपको चुका दूंगा।

[रशीद भाई की बात सुनते ही, रतनजी चुप-चाप बैठने वाले नहीं...झट अनचाही बात कह देते हैं।]

रतनजी – [लबों पर मुस्कान लाते हुए कहते हैं] – रशीद भाई, एक बार सुन लीजिये। इनको पैसे देने का सवाल भी पैदा नहीं होता, आपको याद है ? मोहनजी की पदोन्नति हुई, मगर अभी तक इन्होने मिठाई नहीं खिलायी है।

रशीद भाई – तब ठीक है, यह गुलाब हलुआ इनकी पदोन्नति की मिठाई मानकर खा लेंगे। फिर, और क्या ?

रतनजी – अरे यार रशीद भाई, मंगवाओ तो सही।

मोहनजी – गालों के अन्दर घोड़े दौड़ाने से काम नहीं चलता, रतनजी। समय पर दफ़्तर पहुंचना, कोई हंसी-खेल नहीं। भागवान कभी टिफ़िन तैयार करती है, और कभी करती ही नहीं, मैं तो..

रशीद भाई – साहब आपके दिल में बहुत दर्द भरा है, इस दर्द को बाहर निकाल लीजिये। कहने से, दर्द हल्का हो जाता है।

मोहनजी – ऊपर से भागवान कटु शब्द कहकर, मेरे दिल को छलनी कर देती है। अब तो मैं इस दफ़्तर को लाप्पा देवूं, और बन जाऊं मसानिया बाबा। मैं तो इस औरत के कारण, चारों तरफ़ से परेशान हो गया।

रशीद भाई – आख़िर, भाभीसा ने ऐसा क्या कह दिया आपको ? ऐसा नहीं लगता, वे आपको कुछ कहें ? आपने, कुछ कहा होगा भाभीसा को ?

मोहनजी – भागवान ने ऐसे कहा, 'मैं सुबह नौ बजे के पहले, आपका टिफ़िन तैयार नहीं करूंगी। आप खारची में कमरा किराये पर लेकर वहीँ रह जाओ, तभी मुझे मिलेगा आराम।'

रतनजी – [मोहनजी से कहते हैं] - यही कारण है, भूख से परेशान होकर आप लोगों से चाय मांगकर पी लिया करते हैं।

मोहनजी - अब आप कहिये, कैसे गुलाब हलुआ लाकर आपको खिलाऊं ? मेरे पास जेब में ख़ाली, टेम्पो या सिटी बस का किराया ही रहता है।

ओमजी – साहब, आप बड़े-बुजुर्गों की यह बात याद रखें के 'संतोषी सदा सुखी। जो मिले, उसे प्रेम से बांटकर खाओ।'

[मगर मोहनजी जैसे समझदार इंसान को, ओमजी की सलाह कैसे पसंद आ सकती है ? मोहनजी ठहरे एम.ए.एल.एल.बी. पास, एक दानिशमंद इंसान। फिर, क्या ? वे तो झट, अपने दांत निपोरते हुए कहते हैं..]

मोहनजी – तृप्त इंसानों को ही आपकी बातें अच्छी लग सकती है, यहां तो दो रोटी भी धीरज रखकर मैं खा नहीं सकता। [रशीद भाई को झंझोड़कर, कहते हैं] बोलो ना, रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा।

रशीद भाई – [भोला मुंह बनाकर कहते हैं] – धैर्य रखकर, आपको खाना खाना आता नहीं। खाओ तब आपकी पूरी मूंछें खाती है कढ़ी की सब्जी। पत्ता-गोभी की सब्जी खाता है, आपका मफलर। रोटी का आधा निवाला जाता है आपके मुंह में, और आधा जाता है..

[मोहनजी इनकी बात सुनकर, नाराज़ हो जाते हैं। वे अब, नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए कहते हैं..]

मोहनजी – [नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए, कहते हैं] – मैं बेचारा ग़रीब इंसान यह समझता था, के रशीद भाई मेरे हितेषी हैं। मगर ये जनाब तो ऐसे बोल रहे हैं, मानो मैं मोहन प्यारे नहीं अघोरमल हूं।

रतनजी – गुस्सा करने की, क्या ज़रूरत ? आप जानते नहीं, हमारे रशीद भाई दब्बीर यानि पक्के मुंशीजी ठहरे। ऐसी-ऐसी तरकीबें अपने पास रखते हैं, जिससे आपकी सारी तकलीफ़ें दूर हो सकती हैं।

ओमजी – मगर एक बात यह है, सलाह देने के पहले मूड बनाने के ख़ातिर एक दौर चाय का..आपकी तरफ़ से हो जाय, तो सोने में सुहागा।

रतनजी – ऐसा हो जाय, तो क्या बढ़िया रहे जनाब ?

मोहनजी – मैं तो यह समझता था, रतनजी। इस मूर्खों की मंडली में आप ही एकमात्र समझदार इंसान हैं, मगर आप तो कढ़ी खायोड़ा इन मूर्खों के साथ मिल गये ?

रशीद भाई – क्या करें, साहब ? इनके वश की बात नहीं, मूर्खों के साथ रहते-रहते ये भी आप जैसे बन गये हैं। मगर, ये सज्जन पुरुष आपके हितेषी ज़रूर है। वैसे हम सभी आपके हितेषी हैं, मगर..

[इतनी देर तक बेचारे शर्माजी को बोलने का अवसर मिला नहीं, पहले वे कुछ बोलना भी चाहते थे। अब बिना कोई टोपिक आये, वे **'मैं लाडे की भुवा' बनकर'** झट बीच में टपक पड़ते हुए कह बैठते हैं..]

शर्माजी – [तुली सिलगाते जैसे, बोलते हैं] – रशीद भाई ने कोई ग़लत बात नहीं कही, मगर करें क्या ? मिठाई के नज़दीक मक्खियाँ मंडराती है, और आपको खाना खाते देखकर मंगतियाँ आपके नज़दीक आ जाती है।

रतनजी – वाह भाई, वाह। वह कैसा मंज़र दिखाई देता होगा.? मोहनजी बन जाते होंगे कान्हा, और इनके चारों ओर मंडराती ये मंगतियां बन जाती होगी गोपियां...

पंकजजी – वाह रे, वाह कान्हा.....!

रशीद भाई – [अचानक याद आने का अंदाज़ दिखाते हुए, कहते हैं] – अरे साहब, अब याद आया। वह भिखारन खां साहबणी जब आती है, आपके पास..वह मांगती है एक रोटी, और आप कहते हैं आधी रोटी दूंगा। मगर वह ज़िद्द पर उतर जाती है, के पूरी रोटी लूंगी।

रतनजी - अरे साहब, ऐसे अच्छे गुण है आपमें, तब आपको भाभीसा कैसे समझ सकती है ? राम राम, अब कैसे भाभीसा आपको बता पायेगी, के 'वे आपसे क्या चाहती हैं ?'

रशीद भाई - तब आपको, कैसे सलाह दी जा सकती है ? इसमें, हम लोग क्या कर सकते हैं ? बात सही है, आप ठहरे..दानिशमंद इंसान। आपके जितना पढ़ा-लिखा इंसान, हमारे डिपो में है कहां ?

मोहनजी – [मुंह बनाकर कहते हैं] – अब रहने दीजिये, रशीद भाई। मैंने आपसे चाहा, तकलीफ़ दूर करने का उपाय। मगर जनाब आप ऐसी बातें करते जा रहे हैं, मानो मैं मोहनजी नहीं होकर फूस [कचरा] निकालने वाला फूसाराम कढ़ी खायोड़ा हूं ?

रशीद भाई – [चिढ़ते हुए, कहते हैं] - जी हां, हम सब मूर्ख ही हैं। मुझे बस आप अकेले ही समझदार इंसान लगते हैं, फिर आप हम जैसे मूर्खों से सलाह क्यों ले रहे हैं ? ऐसा लगता है..

शर्माजी – [वाक्य पूरा करते हुए] – 'हमें किसी पागल कुत्ते ने काटा है..? या, आ बैल मुझे मार..बस ऐसे ही, कर्म है हमारे।' रशीद भाई, क्या आप यही कहना चाहते हैं ?

[मगर रशीद भाई शर्माजी से कुछ नहीं कहते, और मुंह फुलाये चुप-चाप बैठ जाते हैं। तब मोहनजी अपने लबों पर, मुस्कान लाकर कहते हैं।]

मोहनजी – [लबों पर मुस्कान लाकर] – अरे यार, रशीद भाई। ऐसे काहे नाराज़ होते हैं आप, यार ? आपको मैंने, ऐसा मूर्ख नहीं कहा है। आप तो जनाब एक पढ़े-लिखे मुलाजिम हैं, कभी-कभी...

शर्माजी – [मुस्कराते हुए] – **'मूर्ख आदमी भी समझदारी की बात करता है। अब माफ़ कीजिये, कढ़ी खायोड़ा।' यही कहना चाहते हो, मोहनजी आप ?**

रतनजी – हमारे मुंशीजी तो रहम की दरिया है, ये जनाब तो माहत्मा गांधी के पक्के चेले हैं।

ओमजी – साहब, आप कुछ नहीं जानते इनको ? इनके एक गाल पर मारो तमाचा, तब ये अपना दूसरा गाल सामने लाते हैं।

रतनजी – जेब के पैसे ख़र्च करके इन्होने हम दोनों को, दस बार फिल्म 'लगे रहो मुन्ना भाई' दिखायी है। अब समझे साहब, ये कितने बड़े महापुरुष है ?

ओमजी – [व्यंग-बाण छोड़ते हर, कहते हैं] - शत प्रतिशत, आपकी बात सच्च है। कौन जानता है, आज़ राजा और कल रंक..? इनको, कोई समझ नहीं सकता। अनजाने में लोगों के पास, ऐसी क्या शक्तियां आ जाती है..

रतनजी – [बात पूरी करते हुए] – और वे अपना रुतबा, दिखाना चालू कर देते हैं। झट अपने अधीनस्थ मुलाजिमों की सी.आर. ख़राब कर देते हैं।

ओमजी – फिर ऐसे साहब लोग, बाद में हेड ऑफ़िस के चक्कर काटते रहते हैं। फिर मानसिक तनाव से गुज़रते हुए, हाफ़-मांइड जैसी बातें करते रहते हैं। [सीटी सुनायी देती है] अरे छोड़ो यार, इंजन सीटी दे चुका है...

रतनजी – लूणी स्टेशन पर चाय पीनी हो तो, निकालो अपनी जेब से रुपये। आख़िर, तेल तो तिलों से ही निकलता है। [रशीद भाई से कहते हैं] रशीद भाई, आप निकाल रहे हो या मैं निकालूं रुपये ?

[रशीद भाई को जेब से रुपये निकालते देखकर, रतनजी उन्हें रोकते हुए कहते हैं।]

रतनजी – अरे रुको, रशीद भाई। चाय पिलाने से पहले मोहनजी से ज़बान ले लीजिये, के चाय पीने के बाद ऐसे नहीं कहेंगे के 'ठोकिरा, बासी चाय पाय दी रे कढ़ी खायोड़ा ?'

मोहनजी – मैं काळी रांड का जाया नहीं हूं, जो खाकर बिगाड़ा करूं ? अगर थूक कर भाग गया तो आप लोग मुझे कह देना, के **'गली का काबरिया कुत्ता दौड़ रहा है।'** इसके अलावा, आप क्या कहेंगे ?

[मोहनजी तो अन्दर ही अन्दर खुश हो रहे हैं, के "मुफ़्त की चाय मिल रही है..पीने को।" जनाब, फिर ख़िदमत करने के लिए पीछे रहने वाले नहीं। वे आगे बढ़कर, कहते हैं..]

मोहनजी – लाइए रुपये, अभी दौड़कर आप सब के लिए गर्म-गर्म मसाले वाली चाय लाता हूं।

[रशीद भाई अपनी जेब से रुपये निकालकर, मोहनजी को थमा देते हैं।]

मोहनजी – [होंठों में ही] – यह डोफा रशीद क्या समझता होगा, इस ओटाल मोहन प्यारे को ? केन्टीन वाले देते हैं, दो रुपयों में एक चाय। और ठेले वाले देते हैं, तीन रुपये में एक। अब लाऊंगा चाय मैं केन्टीन से, मगर बताऊंगा इन्हें..ठेले से, चाय आयी है। इस तरह सीटी बस का किराया, मुफ़्त में निकल जाएगा।

[गाड़ी की रफ़्तार धीमी हो जाती है, थोड़ी देर बाद लूणी के प्लेटफार्म पर आकर रुक जाती है। अब वहां कई चाय बेचने वाले छोरे ग्राहकों को बुलाने के लिए आवाजें लगाते जा रहे हैं 'चायेSS चाये, ऊनी ऊनी मसाले वाली चाय।' कभी बीच में पुड़ी वाले वेंडर शर्माजी की रोनी आवाज़ अलग से सुनायी देती है 'ईइं ईइं..पुड़ी ले लो, दस रुपये में। ई इं ई इं मुफ़्त में सब्जी दाणा मेथी की, पुड़ी खायके..!' ये पुड़ी वाले वेंडर शर्माजी, न्याय विभाग के मुलाजिम आनंदजी के सगे बड़े भाई है। ज़्यादा बिक्री करवाने के इरादे से, अभी शर्माजी के दिल में मची है उतावली। ठेले को तेज़ी से आगे बढ़ाते हुए, रसगुल्ले वाले घेवरसा के ठेले को टक्कर लगा देते हैं। अचानक आये इस टिल्ले को घेवरसा संभाल नहीं पाते हैं, और पास खड़े यात्री को थमाए जा रहे रसगुल्ले उनके हाथ से छिटक कर ज़मीन पर गिर जाते हैं। ज़मीन पर बैठे काबरिये कुत्ते को, ऐसा बढ़िया मौक़ा कब मिल पाता ? वह तो झट उन रसगुल्लों को अपने जबड़ो में दबाकर दौड़ता है, मगर घेवरसा के लिए, रसगुल्लों का नुकसान नाक़ाबिले बर्दाश्त ठहरा। इस तरह उनको आ जाता है, क्रोध। फिर क्या ? घेवरसा झट पांव की जूत्ती निकालकर, उस दौड़ते कुत्ते पर फेंकते हैं। जूत्ती लगते ही, वो कुत्ता दर्द के मारे किलियाता है। इस कुत्ते को शर्माजी रोज़ बची हुई पुड़ियाँ खिलाया करते हैं, इस

वक़्त उस कुत्ते का किलियाना सुनकर उनको बुरा लगता है। वे क्रोधित होकर बेचारे घेवरसा के ऊपर बरस पड़ते हैं।]

शर्माजी – [गुस्से में] – ए मक्खीचूष, इतना कमाकर कहां ले जाएगा रे ? अब यह बता, तूने मेरे कुत्ते को मारी कैसे ? आख़िर, तू है कौन ? साला तू तो है, झूठ का मगरमच्छ।

घेवरसा – ऐसा क्यों कह रहे हैं, शर्माजी ? मैंने, आपका क्या बिगाड़ा ?

शर्माजी – [घेवरसा की बात न सुनते हुए, कह देते हैं] – आख़िर तू है, कौन ? डब्बे के अन्दर ख़ाली रस डालकर, वजन बढ़ा देता है रसगुल्ले का। यही कारण है, ग्राहक अख़बार पर रखे हुए रसगुल्लों को ही ख़रीदना चाहते हैं, मगर तू...

घेवरसा – शर्माजी, आप जो कुछ कहना चाहते हैं वह साफ़-साफ़ कहें..मुझे कुछ भी, समझ में नहीं आ रहा है ? जल्दी कहिये, ग्राहक आ रहे हैं।

[घेवरसा के रसगुल्लों की अधिक बिक्री होने से, ये खोड़ीले-खाम्पे शर्माजी अब बन गए हैं...बलोकड़े [ईर्ष्यालु]। इस कारण शर्माजी कोई मौक़ा नहीं छोड़ते, ताना देने का। अब यही कारण है, अभी वे जलन के मारे आग-बबूला होकर कहते जा रहे हैं।]

शर्माजी – तेरे रसगुल्लों का वजन कराया जाय, तो रसगुल्लों का भार कम निकलेगा और रस का ज़्यादा। यही बात अब स्टेशन मास्टर साहब को बतानी होगी, तब तेरी अक्ल ठिकाने आयेगी।

[इतनी जली-कटी बातें सुनने के बाद भी घेवरसा शांत रहते हैं, कुछ बोलते नहीं। बोलते भी, कैसे..? वे तो बेचारे पहले से ही शर्माजी के अहसान तले दबे हुए हैं, जिस टोकन नंबर से रसगुल्लों की बिक्री करके ये जनाब पैसे कमा रहे हैं...वो टोकन नंबर, लूणी के बदरीजी मास्टर साहब के नाम से आवंटित है। यह तो शर्माजी की रहम-दिली है, उन्होंने मास्टर साहब से बात करके....इनको इस प्लेटफार्म पर, रसगुल्ले बेचने का ठेका दिलाया है। बस इसी अहसान तले दबकर, घेवरसा इन जनाबे आली शर्माजी को कोई तू-तड़ाक का जवाब नहीं दिया करते। इस कारण लिहाज़ बरतते हुए, इस वक़्त भी बेचारे घेवरसा कुछ नहीं बोलते। उनके नहीं बोलने पर, आख़िर शर्माजी कब तक ज़बान लड़ाते ? आख़िर, थककर वे भी शांत हो जाते हैं। मगर शर्माजी की दी हुई धमकी ज़रूर काम कर जाती है, उनको अब वहम हो जाता है, 'कहीं ईर्ष्यालु शर्माजी, स्टेशन मास्टर साहब से शिकायत नहीं कर दे..?' अब वे आले-कट सभी ग्राहकों को, अख़बार पर रसगुल्ले रखकर बेचते नज़र आ रहे हैं। उधर डब्बे का हेंडल पकड़कर आनन्दजी उतरते वक़्त ध्यान नहीं रख पाते, के उनके पांव तले कौनसा जीव कुचला जा रहा है ? उतरते वक़्त वे अपना

पांव, शर्माजी के प्यारे काबरिये कुते के ऊपर रख देते हैं। यह काबरिया कुत्ता पायदान के नीचे बैठा-बैठा अरोग रहा था, रसगुल्ले और शर्माजी की डाली हुई बासी-फफूंद लगी पुड़िया। बेचारा कुचले जाने से किलियाता है, उसके किलियाने की आवाज़ सुनकर शर्माजी गुस्से में बक-बक करने का भोंपू वापस चालू कर देते हैं।]

शर्माजी – [गुस्से में] – कौन है रे, पापी ? मेरे कुत्ते को मारी, पुड़ी खाते हुए ?

[अब आनंदजी शर्माजी के बिल्कुल समीप आकर, उनके कंधे पर अपना हाथ रखकर कहते हैं..]

आनन्दजी – [समीप आकर, मुस्कराते हुए कहते हैं] – पापी मैं हूं, आनंद..आपका, छोटा भाई। सुनो, मोटा पापी है मेरा बड़ा भाई...जो बासी और फफूंद लगी पुड़ियों को, कुत्तों को खिलाकर उन्हें बे-मौत मार रहा है।

शर्माजी – [झींकते हुए, कहते हैं] – परे हट, आनंदिया। भेजा मत खा, अभी धंधे का वक़्त है रे। तू तो एक काम किया कर, तेरे एम.एस.टी. वाले साथियों के पास, मेरी शिफ़ाअत लगाकर मेरी बिक्री बढ़ाया कर। उनको कहना, दाणा-मेथी का अचार फ्री में...

[मगर उनकी बातें, आनन्दजी को क्यों पसंद आये..? वे तो झट, वहां से ख़िसक जाते हैं। अब शर्माजी ठेले को आगे बढ़ाते-बढ़ाते, ग्राहकों को आवाजें देते जा रहे हैं।]

शर्माजी – [रोनी आवाज़ में] – इंई इंई पुड़ी दस रुपये, दाणा-मेथी का अचार फ्री..ले लो भाई ले लो, पुड़ी खाईके।

[मोहनजी डब्बे के दरवाज़े के पास आकर, केन्टीन वाले को आवाज़ देते हैं।]

मोहनजी – [ज़ोर से आवाज़ देते हुए, कहते हैं] – ओ केन्टीन वाले भाई, हम एफ़.सी.आई. के कर्मचारी हैं, चार चाय भेजना जी।

[ग्राहकों से घिरा हुआ केन्टीन वाला, उनके आदेश को क्यों सुने ? आख़िर मोहनजी के बार-बार पुकारने पर, वो केन्टीन वाला भड़ककर ज़ोर से कह देता है..]

केन्टीन वाला – [ज़ोर से कहता है] – ओ मूंछों वाले भाई, आकर ले लो। चाय पहुंचाने के पैसे, हमें मिलते नहीं है। आ जाओ, भय्या आ जाओ।

[मोहनजी डब्बे से नीचे उतरते हैं, और केन्टीन वाले से एक कप चाय पोलीथीन ग्लास में भरवा लेते हैं। तभी इंजन सीटी दे देता है, अब अगले तीन कप चाय लेने का वक़्त कहां रहता है ? झट दो रुपये केन्टीन वाले को थमाकर, वह चाय से भरी पोलीथीन ग्लास उठाकर डब्बे की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा देते हैं। चलते-चलते चाय छलकने लगती है, और थोड़ी चाय छलककर उनके सफ़ारी बुशर्ट पर गिर पड़ती है। मगर, उन्हें कहां इसकी परवाह ? वे तो झट पायदान चढ़कर डब्बे के अन्दर दाख़िल हो जाते हैं, अब वे अपनी सीट पर बैठकर सुड़क-सुड़क की आवाज़ निकालते हुए गर्म चाय अघोरी की तरह पीते हुए दिखाई देते हैं। बेचारे मोहनजी को क्या मालुम, उतावली के कारण चाय उनके सफ़ारी बुशर्ट पर गिकर उसे काफ़ी गंदा कर चुकी है ? इधर गाड़ी की रफ़्तार बढ़ जाती है, अब मोहनजी अपने साथियों को ताने मारते हुए कहते जा रहे हैं..]

मोहनजी – आप लोगों ने, तंग कर डाला मुझे। चाय मंगवावो तो ऐसी जगह...जहां चाय लाने का, पूरा वक़्त नहीं मिलता। मेरे सारे वस्त्र ख़राब हो गए, चाय लाने के चक्कर में। दौड़ता-दौड़ता, चाय लाया जी। [इधर इस डब्बे में लूणी प्लेटफार्म से चढ़े भोमजी लाइन मेन, ने यह सोचा के 'साहब लोगों के केबीन में खिड़की के नीचे, आँगन पर बैठ जाते है। बैठ जाने के बाद, उन लोगों के श्रीमुख से निकली हुई कई काम की बातें मेरे कान में गिरेगी..तो जनाब, फ़ायदा मुझको ही होगा।' भोमजी ऐसा सोचकर, उनके केबीन में आकर खिड़की के नीचे बैठ जाते हैं। इधर बेचारे भोमजी नीचे बैठते हैं, और उधर जनाबे आली मोहनजी चाय पीकर गुड़-मुड़ की हुई ख़ाली पोलीथीन ग्लास खिड़की की तरफ़ फेंकते हैं, ताकि वह ग्लास खिड़की के बाहर चली जाय। मगर क़िस्मत का साथ उन्हें कैसे मिले..? आख़िर जनाब ठहरे, करम-ठोक। फिर क्या ? फेंकी गयी ग्लास का खिड़की से बाहर जाना तो दूर, वो तो सेबरजेट की तरह उड़ती हुई भोमजी के थोबड़े से टकरा जाती है। अब तो बेचारे भोमजी, अपना मुंह साफ़ कर लेते हैं। इसे बड़े अफ़सरों का आशिर्वाद समझकर, वे उस जूठी पोलीथीन ग्लास को उठाकर खिड़की से बाहर फेंक देते हैं। अब मोहनजी चाय पीने के बाद, अपने चाय से भींगे होंठों को साफ़ करके कहते हैं..]

मोहनजी – [होंठ साफ़ करते हुए, कहते हैं] – क्या देख रहे हो, कढ़ी खायोड़ो ? यों मत देखो, मुझे आँखे फाड़कर। मेरे साथियों, थोड़ा धीरज रखो। आप यह सोचिये, मैं कैसे लाता, आपके लिए यह बांसी चाय ? अगर, आप बीमार हो जाते तो..

[रशीद भाई, ओमजी और रतनजी उनका चेहरा देखते रह जाते हैं, अब उनका चुप बैठे रहना ही वाज़िब है। इधर मोहनजी के चुप रहने का, सवाल ही नहीं ? वे जनाब तो, बोलते ही जा रहे हैं..ख़ुदा जाने, बोलने के भोंपू पर ब्रेक क्यों नहीं लगा पा रहे हैं ?]

मोहनजी – अरे जनाब, मैं तो ठहरा 'चखने वाला।' पहले मैं चखता हूं, फिर आप लोगों को देता हूं। ताकि बीमार पड़ना होगा तो मैं पड़ूंगा, आप नहीं। आप फ़िक्र न करें, मैं ज़रूर आपको बढ़िया चाय कहीं मिली, तो ज़रूर पा दूंगा।

[मगर, अब ओमजी से बिना बोले रहा नहीं जाता..आख़िर वे मुंह-तोड़ जवाब देते हैं, जैसे वे पत्थर बरसाते आ रहे हैं..?]

ओमजी – ख़ुद पीते गये, और अब आप न पीने का उपदेश हमें देते जा रहे हैं..? वाह, भाई वाह। ख़ुद गुरूजी बैंगन खाते हैं, और चेलों को उपदेश देते हैं नहीं खाने का। वाह पंडितजी, वाह।

[ओमजी की कही बात का असर तो हुआ नहीं, मगर इधर रशीद भाई अलग से मुंह चढ़ाकर बैठ जाते हैं ? रतनजी से उनका इस तरह बैठना, देखा नहीं जा रहा है ? वे उन्हें समझाते हुए, कहते हैं..]

रतनजी – रशीद भाई, गुस्सा थूक दीजिये। आप तो समझदार आदमी हैं, दे दीजिये कोई सलाह मोहनजी को...इन्होने वादा कर लिया है, चाय पिलाने का।

[इधर अजिया बूट-पोलिस का सामान लेकर केबीन में दाख़िल होता है, अभी इस वक़्त इसके कंधे पर ट्रांजिस्टर लटका हुआ है...जिसमें फ़िल्मी गीत 'याद करेगी दुनिया, ये तेरा अफ़साना..' आ रहा है। बेवक्त ऐसे गीत के सुर, रशीद भाई के कानों में गिरते हैं। उन्हें ऐसा लगता है 'जैसे किसी ने उनके कान में, गर्म कड़वा तेल उंडेल दिया है ?' क्योंकि ये जनाबे आली रशीद भाई, अब-तक मोहनजी के ऐसे स्वार्थ से भरपूर व्यवहार को देखकर पहले से परेशान हैं..और ऊपर से यह खोजबलिया अजिया, समय के प्रतिकूल गीत बजाता हुआ यहां ट्रांजिस्टर लेकर आ गया ? फिर, क्या ? रशीद भाई, अपने गुस्से को क़ाबू नहीं कर पाते..झट अजिया का हाथ पकड़ते हैं, और उसे खींचकर डब्बे के दरवाज़े तक ले आते हैं..और बाद में, उस बेचारे को कड़वे शब्द सूना बैठते हैं।...]

रशीद भाई – [क्रोधित होकर, कहते हैं] – आ गया माता का दीना, यहां ट्रांजिस्टर लेकर ? नासपीटे चला जा, यहां से। वापस आया तो कमबख्त, तेरी टाँगे...

[इतना कहने के बाद, रशीद भाई चुप-चाप आकर अपनी सीट पर बैठ जाते हैं..मुंह फुलाये। मगर रतनजी को उनकी यह अदा, अच्छी नहीं लगती। वे झल्लाते हुए, रशीद भाई से वापस कहते हैं..]

रतनजी – क्यों नखरे दिखला रहे हो, रशीद भाई ? दे दीजिये इन्हें कोई अच्छी सलाह, ये भले आदमी हमेशा आपको याद रखेंगे।

रशीद भाई – मुझे क्या ?

रतनजी – यह कह रहा हूं, जनाब..के आप कोई बढ़िया सलाह दे दीजिये, इन्हें..ये आपको हमेशा याद रखेंगे। [चिढ़ते हुए कहते हैं] अब कितनी बार कहूं जनाबे आली, के इन महापुरुष को कोई सलाह दीजिये। मगर..

रशीद भाई – मगर, क्या ?

रतनजी - [गुस्से से कहते हैं] - आपके कानों को, सुनायी नहीं दे रही है...मेरी बात ?

रशीद भाई – ये महानुभव, मुझे क्या याद रखेंगे ? याद तो मैं रखूंगा, इन्हें। और याद रखूंगा, इनकी आदतों को। इनको, मैं क्या सलाह दूं ? इतना तो ये ख़ुद समझते हैं, के इनके नीचे कई कर्मचारी...

रतनजी – आगे कहिये, जनाब। रुकिये मत, बातों की गाड़ी को चलने दीजिये।

रशीद भाई – इनके नीचे कई कर्मचारी डरे हुए काम करते हैं, उन सब को इकट्ठा करके बस यही कहना है के 'मुझे समय पर, आपका काम पूरा चाहिए। आप कब आते हैं और कब जाते हैं, यह मुझे नहीं देखना।'

रतनजी – समझ गये, मोहनजी ? बस आपको यही कहना है, 'भय्या दफ़्तर का डेकोरेटम मेनटेन रहना चाहिए।'

रशीद भाई – बस, फिर क्या ? मोहनजी भी राज़ी, और कर्मचारी भी राज़ी। और भाभीजी भी राजी, इस तरह सभी खुश रहेंगे।

रतनजी – [मोहनजी से कहते हुए] – देखिये जनाब, आपका पूरा स्टाफ़ रोज़ का आना-जाना करते है गाड़ी से। ये सब, आपसे डरे हुए ही रहेंगे। बाकी कोई, खोड़ीला-खाम्पा करम-ठोक कुछ भी...

रशीद भाई – [बात पूरी करते हुए] – कुछ भी बोले, तो उसकी तरफ़ ध्यान नहीं देना। यही सोच लीजिये तब, के 'हाथी के पीछे, कोई कुत्ता भौंक रहा होगा ?' अरे जनाब, यह ख़िलक़त है..

रतनजी – हाथी चलता है तब, शान से चलता है....

रशीद भाई – वह पीछे मुड़कर नहीं देखता, आप अफ़सर होकर क्यों डरते हैं ? क्यों उनकी ओर, ध्यान देते हैं ? आपको तो वक़्त देना चाहिए, भाभीसा को। और साथ में, संदिणा के लड्डूओं पर रखो ज़ोर।

[इतना सुनते ही, मोहनजी के चेहरे पर मुस्कराहट छा जाती है। अब वे मुस्कराते हुए रशीद भाई से कहते हैं..]

मोहनजी – [मुस्कराते हुए] – रशीद भाई मैं तो इस भागवान को, बहुत राज़ी रखना चाहता हूं। मगर इसे मेरी बदक़िस्मत कहूं, या उनकी नादानी। वह कभी मुझसे, खुश रहती नहीं। जब भी मैं उन्हें नज़दीक आने का कहता हूं, मगर..

रतनजी – नज़दीक लाने में, कितना वक़्त ? कोई पास नहीं है तो उन्हें खींच लो अपने पास, और झकड़ लो बाहुपोश में। और क्या, यह तरीका भी करके आपको सिखायें क्या ?

मोहनजी – अरे रतनजी यार, कहने की बात सरल है। मगर वे ठहरी, चालाक। कहना बेकार है, वे तो मुझसे दूर-दूर ही रहती है। एक बार ऐसा हुआ, गीगला घर में था नहीं..मौक़ा अच्छा था..

रतनजी – [उत्सुकता दिखाते हुए, कहते हैं] – बोलो, आगे क्या हुआ ?

मोहनजी – मैंने टी.वी. को ओन किया, और जनाब आया आया रोमांटिक मंज़र। शाहरुख और काज़ोल रोमांस करते हुए डांस कर रहे थे, मैं बोला 'देखो भागवान, कैसा रोमांस चल रहा है ?' मेरी बात सुनकर, जनाब वह क्या बोली ?

रशीद भाई – फ़रमाइये, हुज़ूर। क्या कहा, उन्होंने ? यही कहा होगा, के 'चलिए आलीजा, छैल-बगीचे में..चलकर, साथ में झूला झूलते हैं।'

मोहनजी – [ग़मगीन आवाज़ में, कहते हैं] – कहां ऐसी क़िस्मत मेरी, जो ऐसा कह दे मुझे ? काश, ऐसा होता ?

रतनजी – आख़िर कुछ तो कहा होगा, कह दीजिये जनाब शर्माइए मत। जो करे शर्म, उसके फूटे कर्म।

मोहनजी – उन्होंने कहा के 'गीगले के बापू! कान खोलकर, सुन लो। इस काजोल को रोमांस करने के मिलते हैं, पूरे पिचहतर लाख रुपये। पिचहतर लाख को छोडो, आप तो मुझे केवल पांच हज़ार रुपये दे दो तो...

रशीद भाई – तो क्या ? कहीं ज़्यादा रुपयों की डिमांड तो न कर डाली, भाभीसा ने ?

मोहनजी – अरे नहीं रे, कढ़ी खायोड़ा। उन्होंने कहा के 'हेमा मालिन जैसे ठुमके लगाय दूं, इस कल की छोरी काजोल का डांस फीका रह जाएगा मेरे सामने। आप, देखते रह जाओगे ?

रशीद भाई – यही बात मैं आपसे कहना चाहता था, के भाभीसा को राज़ी रखना आपको आता नहीं। अब आप ऐसा करना, के कल पाली से आते वक़्त दो किलो गुलाब हलुआ लेते आना..

मोहनजी – फिर, क्या होगा ?

रशीद भाई - फिर भाभीसा भी खुश, और मैं भी खुश आपके परमोशन के मिठाई खाकर।

रतनजी – शत प्रतिशत सही कहा, आपने। फिर इनके घर में उगेगा, चौदवी का चाँद।

रशीद भाई – [खुश होकर] – ऐसा ही हो, फिर उस चांदनी रात में मोहनजी भाभीसा का घूंघट खोलते हुए गीत गायेंगे के 'चौदवी का चांद हो, क्या लाज़वाब हो..'

रतनजी – हां रतनजी, बिल्कुल ठीक। गीत गाते-गाते, वे भाभीसा का घूंगट खोलेंगे तब..

ओमजी – [हंसते हुए] – घूंगट की ओट से चाँद सा मुखड़ा दिखेगा, ज़रूर। मगर, किसका ?

[सभी विस्मित होकर ओमजी का मुंह देखने लग जाते हैं, उनके दिल में यह जानने की जिज्ञासा बढ़ जाती के "अब किसका चेहरा सामने आयेगा ?"]

ओमजी – मुंह दिखायी देगा, उस गुलाबो हिज़ड़े का, और उसे बहुपोश में झकड़ते ही मंज़र आ जायेगा गाड़ी का। आख़िर, मोहनजी सपने गाड़ी में ही देखा करते हैं।

मोहनजी – [गुस्से से यह कहते हुए उठते हैं] – इधर मर, ओमजी कढ़ी खायोड़ा। अब भागना मत, काबरिये कुत्ते की तरह ? कमबख्त, मुझे तू गुलाबो हिज़ड़े के दीदार करवा रहा है ? करम ठोक, ठहर अभी..

[मोहनजी क्रोधित होकर, ओमजी को पीटने के लिए उठते हैं। मगर जनाब ओमजी तो बच जाते हैं, युरीनल की तरफ़ भागकर..और बेचारे मोहनजी फंस जाते है, गुलाबो हिज़ड़े के हाथ। वो हिज़ड़ा अपना नाम सुनते ही, झट पड़ोस के केबीन से निकलकर इधर इस केबीन में चला आता है। फिर ताली पीटता हुआ, कहता है..]

गुलाबो – [ताली पीटता हुआ कहता है] – सेठ साहब, कैसे याद किया..? आज़कल आपको मेरी याद बहुत आती है, लो जी देखिये मेरा जलवा।

[गुलाबो मोहनजी को पकड़कर, वापस उनको सीट पर बैठा देता है। फिर उनके गालों को सहलाता हुआ, कहता है..]

गुलाबो – [गालों को सहलाता हुआ, कहता है] – तेरी घरवाली मेरे जैसी सुन्दर नहीं है रे, मैं तो हूं चौदवी का चाँद..और तू है, मेरा गुलाब का फूल। अरे मेरे गुलाब के फूल, क्या मौसम है आज़ ? आ जा, अपुन मिलकर डांस करें।

[इतना कहकर, वह झट हाथ पकड़कर मोहनजी को खड़ा कर देता है। फिर उनकी कमर में हाथ डालकर, जबरदस्ती उनसे ठुमके लगवा देता है। उनको ठुमके लगाता हुआ देखकर, सभी खिल खिलाकर हंसने लगते हैं।]

गुलाबो – [मोहनजी को नचाता हुआ गाता है] – मौसम है आशियाना, ए दिल कहीं तू..

[रशीद भाई झट अपनी जेब से कड़का-कड़क दस का नोट निकालकर, मोहनजी के ऊपर गोळ करके..[वार कर] वह नोट, गुलाबा को थमा देते हैं। फिर वे, गुलाबा से कहते हैं।]

रशीद भाई – [मोहनजी पर दस रुपये गोळ के गुलाबा को थमाते हुए] - ए रे गुलाबा, अब तू छोड़ हमारे साहब को। [रुपये देते हुए] ये ले रुपये, अब आगे जाकर कमा..!

[अब गुलाबो मोहनजी को छोड़ देता है, फिर उनके गालों पर चुम्मन लेकर वापस गाने लगता है।]

गुलाबो – [नाचता हुआ गाता है] – चोली में क्या है, चोली में है मेरा दिल [ब्लाउज़ के अन्दर, हाथ डालकर नोट रखता हुआ] दूंगी, मेरे यार को।

[ब्लाउज़ में नोट ठूंसकर गुलाबो चला जाता है, दूसरे केबीन में। यह गाड़ी एक्सप्रेस होने के कारण छोटे स्टेशनों पर रुकती नहीं, मगर न मालुम इस समय यह गाड़ी सालावास स्टेशन पर आकर क्यों रुक जाती है ? गाड़ी के रुकते ही, गाड़ी के मुसाफ़िर खिड़कियों से मुंह बाहर निकलकर बाहर

झांकने लगते हैं। कई यात्री प्लेटफार्म पर आकर खड़े हो जाते हैं, इस वक़्त वे गाड़ी के गार्ड साहब से गाड़ी के रुकने का कारण मालुम कर रहे हैं। गार्ड साहब उन्हें बता रहे हैं, के 'सामने से माल गाड़ी आ रही है, उसके निकल जाने के बाद यह गाड़ी रवाना होगी।' खिड़की से बाहर झांक रहे मोहनजी ने जैसे ही गार्ड साहब की बात सुनते हैं और, वे बहुत खुश हो जाते हैं..वे तो सोच चुके हैं, के 'अब तो यह कुचामादिया का ठीकरा गुलाबा डब्बे से उतरकर चला गया होगा..तो, फिर क्या ? दरवाज़े के पास चलकर, बाहर का नज़ारा देख लेते हैं।' अब वे दरवाजे के पास आकर बाहर का नज़ारा देखते हैं, मगर उन्हें वहां कहीं भी गुलाबा नज़र नहीं आता..मगर सामने दूसरे प्लेटफार्म पर, धान की बोरियों से लदी हुई माल गाड़ी खड़ी दिखायी देती है। उनके मुंह में ठूंसे हुए ज़र्दे के कारण उनसे बोला नहीं जा रहा है, मगर बिना बोले उनसे रहा नहीं जाता..बस ज़र्दा उछालते हुए अपने तकिये कलाम का प्रयोग करते हुए कहते हैं।]

मोहनजी – [मुंह से ज़र्दे की बरसात करते हुए, कहते हैं] – **कहां जा रयी है, माल गाड़ी कढ़ी खायोड़ी ?** [पीक थूकते हैं]

[इधर वे पीक थूकते है, उसी वक़्त पड़ोस के डब्बे से उतरकर गोपसा बाहर आते हैं और उसी जगह आकर खड़े हो जाते हैं जहां मोहनजी पीक थूकने वाले हैं। फिर, क्या ?]

मोहनजी – [पीक थूककर, कहते हैं] – **कहां जा रयी है, कढ़ी खायोड़ी माल गाड़ी ?**

[प्लेटफार्म पर खड़े गोपसा के गरदन के ऊपर ज़र्दे की पीक गिरती है, और वहां उन्हें कुछ ठंडक महशूस होती है। वे दरवाज़े पर खड़े मोहनजी की तरफ़, खारी-खारी नज़रों से देखते हैं। उनका इस तरह देखना, मोहनजी को क्यों अच्छा लगेगा ? वे उनको व्यंग भरे लफ़्ज़ों में, कह देते हैं..]

मोहनजी – [गोपसा से कहते हैं] – देख क्या रहे हो, गोपसा ? कोई मैंने हीरे-पन्नों की बरसात तो की नहीं, फिर क्यों ऐसी नज़रों से आप मुझे देखते जा रहे हैं ?

गोपसा – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – क्या करें, मोहनजी ? आख़िर, आपमें ब्याणसा का स्वभाव झलकता है।

[मोहनजी काहे गोपसा की बोली गयी लोकोक्ति का मफ़हूम, जानने की कोशिश करेंगे ? "चोरनी ब्याणसा" के खास्सा के बारे में जानने का तो कोई सवाल ही खड़ा नहीं होता। बात यह है, ब्याणसा घर लौटते वक़्त बेटी के ससुराल से गीला पोछा छिपाकर ले आयी, भले उसके कपड़े गंदे गीले पोछे से ख़राब हो गए हों। मगर, वह चुराने के गुण को किसी हालत में छोड़ नहीं सकती थी। सच्चाई यही है, उसके लिए अपने खास्से को छोड़ना उसके हाथ में नहीं था। चाहे, रास्ते में

उसे देख रहे सभी लोग पोछे से झरते गंदे पानी को देखकर यही कहते जा रहे थे कि, **“ब्याणसा का स्वाभाव झर रहा है।”** इसी तरह, बेचारे मोहनजी भी जर्दे की पीक उछालने के गुण को कैसे छोड़ पाते ? कहीं भी पीक थूक देना, उनका खास्सा बन चुका था। अब वे इस वक़्त उन धान की बोरियों को देख-देखकर ही खुश हो रहे हैं, और धान से लदी गाड़ी आने के समाचार साथियों को देने के लिये..अपने क़दम, केबीन की तरफ़ बढ़ा देते हैं। वे केबीन में पहुंचकर, अपनी सीट पर बैठ जाते हैं...और फिर, बोलने का भोंपू चालू कर देते हैं।]

मोहनजी – भाई ओमजी, रशीद भाई और रतनजी। अब सुनिये, आप। अब गेहूं की स्पेशल गाड़ी आ रही है, एक बार और..अब फिर आपके पाली स्टाफ़ के ऊपर हमारा **“माल उड़ाओ ज़रुर, मगर घर का नहीं”** का कार्य-क्रम तय हो जायेगा।

रशीद भाई – करम फूटे हुए होंगे हमारे, तो एक बार और सही। यह बात तो अच्छी है, जनाब। मगर, आप धान की बोरियों की जांच करने के लिये..गाड़ी से नीचे, मत उतरना। नहीं तो बापूड़ा, गाड़ियों के क्रोस से मारे जाओगे।

रतनजी – अभी तो जनाब, सुर्य नगरी एक्सप्रेस की भी क्रोसिंग होने बाकी है। साहब, आप नीचे उतरना मत..कुचल दिये जाओगे ?

मोहनजी – [सुर्ती को होंठों के नीचे दबाते हुए, कहते हैं] – मैं इतना पागल नहीं हूं, कढ़ी खायोड़ा। उधर देखो, प्लेटफार्म पर खड़े उस पगड़ी वाले देहाती को आवाज़ देकर उससे सारी जानकारी ले लेता हूं। न तो उस उस कढ़ी खायोड़े देहाती को भेज दूंगा, तहकीकात करने..!

ओमजी – [हंसते हुए कहते हैं] – ठीक है, जनाब। आप बच जायेंगे, और उस बेचारे देहाती को भेज देंगे सूर्य नगरी एक्सप्रेस से कटने..

[सभी बाहर देखने के लिये खिड़की की तरफ़ बढ़ते हैं, मगर मोहनजी तो जनाब वहीं बैठे-बैठे आवाज़ लगा देते हैं उस पगड़ी वाले को। उनके बोलने से ज़र्दे के साथ थूक भी उछलता है, जिसका बाहर जाना असंभव है..क्योंकि, खिड़की के कांच ढके हुए हैं। अत: इस प्रकार, ज़र्दे और थूक के छींटे जगह-जगह बिखर जाते हैं। क्या कहें ? खिड़की के नज़दीक आया साथियों का मुंह, अब इस ज़र्दे व थूक की बरसात से बच नहीं पाता। मुंह पर छींटें ऐसे लगते हैं, जैसे उस पर पाउडर छिड़का जा रहा है ?

मोहनजी – [मुंह से ज़र्दा उछालते हुए, कहते हैं] – ठोकिरा, **कहां जा रिया है रे, कढ़ी खायोड़ा पगड़ी वाले ?** जा, पता लगाकर आ, के ‘माल गाड़ी कहां से आ रही है, और कहां जा रही है ?’

रशीद भाई – [रुमाल से मुंह साफ़ करते हुए, कहते हैं] – जनाबे आली मोहनजी, आपने यह क्या कर डाला ज़र्दा उछालकर ?

मोहनजी – [लबों पर मुस्कान लाते हुए, बेशर्मी से कहते हैं] – रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा, जर्दे को मुंह में पड़ा रहने दूं, तो बोलूंगा कैसे ? अब पीक तो थूक दी है बाहर, देख लेता हूं..कहां गिरी है ? भगवान करे, किसी भले आदमी पर न गिरी हो..!

रशीद भाई – ज़रूर देख लीजिये, कहीं रास्ते चल रहे राहगीरों के ऊपर वह पीक गिरी तो नहीं ? [धीमे से कहते हैं] सर फूटते ही नसीहत ले लेना, आगे से...

[देखने के लिए जैसे ही वे खिडकी की ओर अपना सर बढ़ाते हैं, और भूल जाते हैं के 'खिड़की का कांच खुला नहीं है।' फिर, क्या ? जनाब उस खिड़की के कांच से, अपना सर टक्करा बैठते हैं। उनका सर टकरा जाने से, उनके साथी खिल-खिलाकर हंसते जाते हैं। इस वक़्त मोहनजी को धान की बोरियां आने की इतनी ख़ुशी है कि, उसके आगे उनका यह सर-दर्द होना कोई मायना नहीं रखता। वे क्यों सोचेंगे, उन पर ये साथी क्यों हंसते जा रहे हैं ? जनाब, कहां रुकने वाले ? झट खिड़की का कांच हटाकर, मुंह बाहर निकालकर झांक ही लेते हैं। बाहर किसी परिचित हम-उम्र के ग्रामीण को खड़े देखकर, उसे आवाज़ दे डालते हैं।]

मोहनजी – अरे ए सुगनिया। **कहां जा रिया है रे, कढ़ी खायोड़ा ?** बहुत दिन से यार, तू दिखायी दिया नहीं रे भाईड़ा..? [मुंह अन्दर डालकर, कहते हैं] हम दोनों, एक ही गुरुकुल में साथ-साथ पढ़ें हैं। अब मैं, उससे बात करके आ रहा हूं।

[मोहनजी झट गाड़ी से नीचे उतरकर, सुगना के निकट चले आते हैं। वहां जाकर उसके कंधे पर अपना हाथ रखकर, कहते हैं..]

मोहनजी – [उसके कंधे पर हाथ रखकर कहते हैं] – ए रे सुगनिया, अब तू आ गया है तो मेरा एक काम करता जा।

[माल गाड़ी की तरफ़ अपनी अंगुली से इशारा करते हुए, मोहनजी अपना काम बताते हैं..]

मोहनजी – उस माल गाड़ी के पास जाकर पता लगाकर आ ज़ा, के 'यह धान की बोरियों से लदी हुई गाड़ी कहां जा रही है, और कहां से यह आ रही है ?'

सुगना – [झुंझलाते हुए] – ए रे मोहनिया, तू कैसा आदमी है ? ना तो तू देखता है वक़्त, और न देखता है आदमी ? आते ही, बोलने का भोंपू चालू कर देता है ? यार देख, एक तो मेरा नाती गुम हो गया..

मोहनजी – [बात काटते हुए कहते हैं] - ग़लती तेरी है, क्यों इस छोटे बच्चे को साथ लेकर इधर आया ? ये बच्चे है, कुत्ते के पिल्ले जैसे..कहीं भाग जाए, तो नाती को पकड़कर लाना भी मुश्किल।

सुगना – क्या करूं रे, मोहनिया ? कई दिनों से इस छोरे को बुखार आ रहा था, सोचा जोधपुर जाकर इस छोरे को बच्चों के डाग़दार डॉक्टर छंगाणी साहब को दिखला दूं।

[अचानक सुगने को, झाड़ियों के पीछे से निकलता हुआ उसका नाती दिखायी देता है। इस वक़्त वह, अपनी चड्डी का तीजारबंद [नाड़ा] बंद कर रहा है।]

सुगना – [नाती को आवाज़ देते हुए, ज़ोर से कहते हैं] – अरे नालायक़, मूतने गया क्या ? कहकर जाता तो, क्या बिगड़ जाता रे तेरा..भंगार के खुरपे। अब जा, [डब्बे की तरफ़ अंगुली करके] जाकर, अपनी सीट पर बैठ जा।

[सुगना का नाती, डब्बे के अन्दर चला जाता है। उसके जाने के बाद, प्लेटफ़ोर्म पर लगी पत्थर की बेंच के ऊपर बैठ जाता हैं, सुगना। फिर वह, मोहनजी से कहता है..]

सुगना – ए रे मोहनिया, तू भी बैठ ज़ा यहां आकर।

[अब मोहनजी और सुगना दोनों बैठ जाते हैं, तख़्त [बेंच] पर। बैठने के बाद, मोहनजी सुगना की पहनी हुई खाक़ी वर्दी को गौर से देखते हैं। फिर वे, उससे सवाल करते हैं।

मोहनजी – सुगनिया तू तो यार, सेवानिवृत हो गया रे..फिर यह ख़ाकी वर्दी तेरे बदन पर कैसे ? कहीं तूने वापस, पुलिस में नौकरी कर ली क्या ?

सुगना – क्या करें, मेरे यार ? रिटायर होने के बाद ख़ाली बैठा नहीं गया, बस यार कर ली होम-गार्ड में ड्यूटी जोइन। अच्छे-खासे पैसे भी मिल जाते हैं, वक़्त भी आराम से कट जाता है।

मोहनजी – कभी चुनाव में भी कमा लेता है तू, टी.ए.डी.ए.। खूब कमा रहा है, यार। तूझे, क्या फ़िक्र ? फ़िक्र तो मुझे है, जब रिटायर हो जाऊंगा तब..

सुगना – बोल यार आगे, तू तो है अफ़सर..तूझे, क्या तकलीफ़ हो सकती है ? मेरे लायक कोई काम हो तो बोल, मेरे भाई।

मोहनजी – [भोला मुंह बनाकर, कहते हैं] – क्या कहूं, सुगना ? तू तो जनता ही है, मैंने तीन-तीन ब्याव रचाए थे..दो के तो कोई बच्चा हुआ नहीं आख़िर तीसरी शादी हुई अधेड़ावस्था में। इस कारण बच्चे भी डेरी से हुए।

सुगना – आगे बोल, तूझे तक़लीफ़ क्या है ?

मोहनजी – बताता हूँ, यार। वह तो अभी छोटा बच्चा है और इधर मैं रिटायर भी जल्दी हो जाऊंगा। फिर..रिटायर होने के बाद कैसे मैं, इन नन्हे-नन्हे बच्चों को पालूंगा ? अब तू ऐसा कर सुगना, के..

सुगना – बोल बोल, यार बोल..जो कुछ मुझसे होगा, ज़रूर करूंगा।

मोहनजी – [खुश होकर, कहते हैं] – मुझे मालुम है, के 'होम गार्ड दफ़्तर वालों से, तेरे बहुत अच्छे रसूखात है।' अब ऐसा कर कढ़ी खायोड़ा, रिटायर होने के बाद तू मुझे भी होम-गार्ड की नौकरी में लगा दे..मेरे नन्हें बच्चे, तूझे बहुत दुआ देंगे।

[मोहनजी की बात सुनकर, सुगना उन्हें खारी-खारी नज़रों से देखता है। उसे भरोसा नहीं हो रहा है, के **'इतना बड़ा अफ़सर होकर, ऐसी पागलों जैसी बात कैसे करता जा रहा है ?'** मगर मोहनजी, कहां रुकने वाले ? वे जनाब, बोलते ही जा रहे हैं..]

मोहनजी – मैं सब जानता हूं, तुम लोग कैसे काम करते हो ? मुझसे ये बातें, छिपी हुई नहीं है..आख़िर, तुम लोग करते क्या हो ?

[मोहनजी की बात सुनकर, सुगना का दिल खट्टा हो जाता है। वह सोचता है, के 'एक तरफ़ नौकरी मांग रहा है, और दूसरी तरफ़ हम होम गार्ड वालों की बखिया उधेड़ता जा रहा है ?' अब वह खिन्न होकर, कहता है..]

सुगना – [मूंछों पर ताव देता हुआ कहता है] – भाई मोहनिया, क्यों गाँव का नाम बदनाम कर रहा है ? मालुम नहीं, तू कितना पढ़ा-लिखा है..और तू अब, ऐसी गेलसफ़ी बातें करता जा रहा है ?

मोहनजी – ऐसी कौनसी ग़लत बातें कह दी मैंने, जो तू बके जा रहा है मुंह फाड़ के ? कह दिया मैंने, जो कहा वो सही कहा।

सुगना – तू अफ़सर होकर, अब रिटायर होने के बाद में होम-गार्ड जैसी नौकरी करेगा तो गाँव के लोग क्या कहेंगे तूझे ? अरे यार तू जानता नहीं, तूने अफसर बनकर गाँव का नाम ऊंचा किया है। हम लोग गर्व से तेरा नाम लेकर, अपनी मूंछों पर ताव देते है...

मोहनजी – गाँव वाले मुझे बुरा-भला कहेंगे, तो मैं क्या करूं कढ़ी खायोड़ा ? पैसों का काम तो, पैसे आने से ही पूरा होता है। मुझे अपने बच्चे पालने हैं, मुझे इन गांववालों की नाराज़गी से क्या लेना-देना ?

सुगना – मगर यह सोच, सेवा निवृति के बाद तूझे मिलेंगे तीस लाख रूपये। फिर, छोटी-बड़ी नौकरी करने की गेलसफ़ी बात क्यों करता है ?

मोहनजी – तो फिर, क्या करू रे कढ़ी खायोड़ा ?

सुगना – देख रे, मेरे मामी ससुरजी सौभागमलसा का धंधा है...जेवर रखवाकर, लोगों को ब्याज पर कर्ज देना। सिमोका गाँव, जो बेंगलूर के पास है..वहां उन्होंने, हवेलियां खड़ी कर दी रे मोहनिया। अब तू..

मोहनजी – तू यह कहना चाहता है, के मैं यह धंधा कर लूं ? अरे गेलसफ़े तू तो उल्टी सलाह देकर मेरे पैसे को डूबाने की बात करता है, ब्याज आना तो दूर..मूल से भी, हाथ धो बैठूंगा मैं।

सुगना – गहने तो तेरे पास रहेंगे, फिर गेलसफ़े पैसे कैसे डूबेंगे तेरे ?

मोहनजी – अगर गहने खोटे आ गये तो गेलसफ़ा, सर पर हाथ रखकर रोऊंगा मैं। अब बोल, तू मेरा दोस्त है या दुश्मन ?

सुगना – तब तू मुझे पटरियां पार करने, माल गाड़ी का पता लगाने क्यों भेज रहा है ? पटरियां पार करते वक़्त अगर मैं क्रोसिंग करने वाली गाड़ी के नीचे आ गया, तो गेलसफ़े फिर मैं इस नाती की शादी कैसे देख पाऊंगा ? अब बोल, तू मेरा दोस्त है या दुश्मन ?

[हर सवाल का जवाब मिल जाने से, मोहनजी का मूड उखड़ जाता है..मगर, कडाण जाने का सवाल नहीं। उठते वक़्त, वे कहते हैं..]

मोहनजी – सचेत रहने से, कुछ नहीं होता। अगर क़िस्मत में मौत लिखी है, तो मौत ज़रूर आती है। अरे यार, क्या कहूं तूझे ? रोटी खाते-खाते, प्राण निकल निकल जाते हैं..

सुगना – अरे यार, ऐसा कहकर तू मेरे प्राण मत निकाल। बोल, अब मैं तेरे लिए क्या करूं ?

मोहनजी – [गुसे से कहते हैं] - अब तू यहां बैठा-बैठा अपने नाती को खेला, और मैं..जाकर माल गाड़ी के बारे में खुद पता लगा लूंगा। अब मुझे, किसी की गर्ज़ नहीं।

[आख़िर मोहनजी पटरियां पार करके जाते है गाड़ी के पास, वहां पहुंचकर उन बोरियों को अच्छी तरह से देखते हैं। और देखते ही, उनके चेहरे की रंगत बदल जाती है। फिर उखड़े सुर में, बरबस बोल उठते हैं...]

मोहनजी – [उखड़े सुर में कहते हैं] – **ठोकिरा, मैंने तो खाक़ गौते खाये ? अरे कढ़ी खायोड़ा इस माल गाड़ी में तो ख़ाली, सीमेंट की बोरियां है। और मेरे जैसे सूर दास को दिखायी देती है..ये, धान की बोरियां ?**

[ज़र्दे की पीक थूककर, फिर नाक साफ़ करते हैं मोहनजी। फिर दरवाज़े के पास खड़े रशीद भाई को देखकर वे, उन्हें आवाज़ देते हुए कहते हैं..]

मोहनजी – [आवाज़ देते हुए, कहते हैं] - ओ रशीद भाई, कढ़ी खायोड़ा। अपनी गाड़ी खड़ी कैसे है, चली क्यों नहीं ? मुझे उम्मेद अस्पताल जाना है, मेडिकल बिल लाने। घडी में सवा पांच हो गए, अरे ठोकिरा देरी में और देरी।

रशीद भाई – [ज़ोर से आवाज़ देते हुए, कहते हैं] – अरे, ओ मोहनजी। आ जाओ, आकर गाड़ी में बैठ जाओ। अब रेलवे वालों को गालियां मत देना, उनकी मेहरबानी से आप इन पटरियों के आर-पार चल रहे हो।

मोहनजी – ज़ोर से कहिये, रशीद भाई। पटरियों पर, क्यों नहीं चलूं ?

रशीद भाई – [ज़ोर से चिल्लाते हुए, कहते हैं] – अरे मोहनजी, कहीं आपको पटरियों के आर-पार किसे टी टी ने घुमता देख लिया तो वह टी.टी. ज़रूर आकर आपसे जुर्माना भरवा लेगा ? अब जल्दी आ जाओ, जनाब।

मोहनजी – [ज़ोर से चिल्लाते हुए, कहते हैं] – तू क्या जानता है रे, कढ़ी खायोड़ा ? मैंने तो आज़ तक कभी किसी को चाय नहीं पिलायी, फिर जुर्माना भरने वाला कोई और होगा..मैं नहीं।

[इंजन सीटी देता है, मोहनजी दौड़कर डब्बे में चढ़ते हैं। चढ़ने की उतावली में मोहनजी ध्यान नहीं दे पाते, के 'दरवाज़े के पास हाथ में बैग थामे, गुलाबा किन्नर खड़ा है।' फिर, क्या ? वे उसको टक्कर देकर, अन्दर चले आते हैं। उनके टक्कर देने से, गुलाबा किन्नर का बैग नीचे गिर जाता है। गुलाबा उनको गालियां देता हुआ, चलती गाड़ी से नीचे उतर जाता है। बैग उठाकर वह वापस गाड़ी में चढ़ना चाहता है, तभी गुलाबा को तेज़ी से आती हुई सुर्य नगरी एक्सप्रेस दिखाई देती है। इस एक्सप्रेस को आते देखकर, यह गाड़ी रुक जाती है और साथ में रुक जाता है...गुलाबा। अब वह इस गाड़ी में, वापस चढ़ने का इरादा छोड़ देता है। वह जनता है, सुर्यनगरी एक्सप्रेस के यात्रियों से तगड़ी कमाई की जा सकती है। मंच पर, अंधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच वापस रौशन होता है। मोहनजी अपने साथियों के साथ, केबीन में बैठे दिखाई देते हैं। अब न जाने, रशीद भाई को क्या हो जाता है ? वे झट उठकर, खड़े हो जाते हैं। फिर, मोहनजी से कहते हैं..]

रशीद भाई – [मुहावरे का प्रयोग करते हुए, कहते हैं] – जान बची और लाखों पाये, मोहनजी। [धीरे-धीरे कहते हुए] लौटकर बुद्धु, घर को आये।

[यह धीरे से बोला गया जुमला भी मोहनजी को सुनायी दे जाता है, सुनते ही वे भड़क कर कहते हैं]

मोहनजी – आपने अभी क्या कहा, जनाब ? मुझे बुद्धु कैसे कह दिया, आपने ? मगर मैं तो हूं समझदार, जो बचकर आ गया..अगर वहां पटरियों पर खड़ा रहता तो कढ़ी खायोड़ा, ज़रूर कुचला जाता इस सुपर फास्ट सुर्य नगरी एक्सप्रेस से।

[अब सुपर फास्ट तेज़ी से गुज़रकर, आंखो के आगे से ओझल हो जाती है। इधर रशीद भाई दरवाज़े के पास ऐसी सीट पर बैठ जाते हैं, जिससे वे लोगों के आने-जाने में पूरे बाधक बन जाते हैं। अब वे मोहनजी को देखते हुए, उन्हें राई के पहाड़ पर चढ़ाते जैसे शब्दों में कहते हैं..]

रशीद भाई – [मोहनजी से] - **देखिये साहब, अब आपको फ़िक्र करने की कोई ज़रूरत नहीं। मैं तो ऐसा जम गया हूं दही के माफ़िक, अब आप गुलाबे को छोड़ो, उसकी उस्ताद कमला बाई भी नहीं आ सकती इधर।**

रतनजी – अब कहिये, मोहनजी..कैसी रही ?

रशीद भाई – बोलिए, जनाब। आपका काम, निकाला या नहीं ? कहिये..?

ओमजी – कैसी रही कहकर, काहे मुंह का स्वाद बिगाड़ रहे हैं ? भले आदमी का काम करने से मुंह मीठा होता है, मगर ये जनाब ठहरे ऐसे महापुरुष। जो भले आदमी नहीं है, बल्कि....

रतनजी – सच्च कहा, आपने। ये तो ठहरे, अघोरमलसा। ख़ाली थूक-थूक कर गाड़ी को ख़राब कर सकते हैं, इनसे कोई फ़ायदा होने वाला नहीं।

मोहनजी – [ओमजी को खुश करते हुए कहते हैं] – ओमजी आप महान हो, आपने कई बार मुझे मरने से बचाया है।

[अब रशीद भाई को भी खुश रखना बहुत ज़रूरी है, आख़िर रशीद भाई ठहरे सेवाभावी। अब मोहनजी, उनकी तरफ़ देखते हुए कहते हैं..]

मोहनजी – [रशीद भाई से] – अरे रशीद भाई, ज़रा सुनो आपके काम की बात। आपकी कसम खाकर कहता हूं, के 'कल से मैं जर्दा छोड़ रहा हूं।' अगर मैं जर्दा-सेवन करता हुआ पाया गया तो आप..

रतनजी – आगे कहिये, क्या रशीद भाई आपके लिए पानी लाना बंद कर दें..?

मोहनजी – अरे नहीं रे, कढ़ी खायोड़ा..तब आप लोग मुझे कह सकते हैं **'लो देखो काबरिया कुत्ता जा रहा है।'**

[इतना कहने के उपरांत, मोहनजी अपने लबों पर मुस्कान बिखेरते हैं। फिर सोचने बैठ जाते है, के 'अब जोधपुर आने में कितना वक़्त बाकी रहा ? फिर, यश लेने में पीछे क्यों रहे ?' यह सोचकर, वे सबसे कहते हैं..]

मोहनजी – डोफों, आप क्या जानते हैं मुझे ? मेरा जैसा कोई दिलदार नहीं, इस ख़िलक़त में।

[खरड़ाहट की आवाज़ करता हुआ, एक दस का नोट जेब से निकालते हैं। फिर ख़ुशी से चहकते हुए, कहते हैं..]

मोहनजी – ज़र्दा छोड़ने की ख़ुशी में, आप सब को मैं एम.एस.टी. कट चाय पिलाता हूं।

[पहलू में बैठे ओमजी को कोहनी से टिल्ला मारते हुए, उनसे कहते हैं..]

मोहनजी – [कोहनी से टिल्ला देते हुए, कहते हैं] – उठिए अब, चाय लेते आइये बेटी का बाप।

ओमजी – काका रहने दो, आप तो कंजूस ही अच्छे। चाय पाने का ओर्डर मारा, सालावास जैसे स्टेशन पर...जहां चाय की कैंटीन को छोड़, यहां कोई ढाबा भी नहीं है।

[इंजन सीटी देता है, गाड़ी रवाना होती है। ओमजी खिन्न होकर, कहते हैं..]

ओमजी – [खिन्नता से, कहते हैं] – लीजिये गाड़ी रवाना हो गयी है, अब नोट को पड़े रहने दीजिये..अपनी जेब में, गर्मी मिलती रहेगी आपको।

रतनजी – जेब से निकला हुआ नोट वापस जेब में जाना नहीं चाहिये, जोधपुर स्टेशन अब आने वाला ही है। वहां पी लेंगे, मसाले वाली चाय।

[मोहनजी को निहारते है, उन्हें बार-बार मेडिकल बिलों की फ़ेहरिस्त को पढ़ते देख..जनाब को संदेह हो जाता है के 'कहीं ये अलामों के काका मोहनजी टालने का मानस तो नहीं बना चुके ?']

रतनजी - क्यों बार-बार मेडिकल बिलों की फ़ेहरिस्त देखते जा रहे हैं, कहीं आपका टालने का मानस तो नहीं है ? ओटाल तो आप पहले से ही है, मुझे पूरा ध्यान है।

[गाड़ी पटरियों पर तेज़ी से दौड़ती जा रही है, अब कोई क्रोसिंग होने वाला नहीं। छोटे-बड़े स्टेशन सब पीछे छूट गये हैं। अब जोधपुर स्टेशन का सिंगनल दिखाई दे रहा है, गाड़ी आगे बढ़ती जा रही है। अब खतरनाक पुलिया भी दिखने लग गया है। संध्या काल हो चुका है। इस पुल के नीचे आये हुए 'अम्बे माता के मंदिर' में, भक्त गण लगातार टंकोर बजाते जा रहे हैं। और साथ में भक्त-जन मधुर सुर में, माता की आरती गा रहे हैं। आरती के बोल सुनकर, रतनजी खिड़की से मुंह बाहर निकालते हैं। फिर, मात अम्बे को नमन करते हैं। अब सिंगनल काफी पीछे छूट चुका है, और गाड़ी जोधपुर स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या एक पर आकर रुक जाती है। सभी बैग लिए, नीचे प्लेटफार्म पर उतरते हैं। नीचे उतरते ही वे सब, मोहनजी को घेरकर खड़े हो जाते हैं। ओमजी मुस्कराते हुए, मोहनजी से कहते हैं..]

ओमजी – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – जोधपुर आ गया है..अब चलिये मोहनजी, हम-सबको चाय-वाय पिला दीजिये जनाब। कैंटीन की ओर चलते हैं, आइये।

मोहनजी – [झट हाथ की घड़ी देखते हैं, फिर कहते हैं] – आप देख लीजिये जनाब, छः बज गए है। किसी तरह मैं सिटी-बस पकडूंगा, फिर जाऊंगा उम्मेद अस्पताल। वहां जाकर, मेडिकल बिलों पर....

[अपनी जेब पर हाथ रखकर, नोट की गर्मी का अहसास करते है। फिर, कहते हैं..]

मोहनजी – मेडिकल बिलों पर, डॉक्टर साहब के दस्तख़त ले लूंगा। अब आप लोगों को चाय पीनी हो तो एक भाई, मुझे अपने स्कूटर पर मुझे बैठाकर अस्पताल ले जा दे..यह शर्त आप लोगों को मंजूर हो तो, आप सभी चाय पी सकते हैं।

[मोहनजी की शर्त सुनकर सभी सोचते हैं, के **'इनको अस्पताल ले जाना अब आसान नहीं है। अस्पताल से निपटकर जनाब कह सकते है, अब मुझे घर पहुंचा दीजिये। इस तरह इनकी मांग बढ़ती जायेगी, उसको पूरा करना, अब किसी के वश में नहीं है।'** इस इल्लत से बचने के लिए, रशीद भाई पहले ही बोल देते हैं..]

रशीद भाई – ओमजी आज़ जनाब, आप ही कर लीजिये यह भलाई का काम। मैं तो रोज़ इनकी ख़िदमत करता ही हूं। मगर एक बात आपसे कह देता हूँ..

ओमजी – कहिये, आपको किसने रोका है ?

रशीद भाई - आप अस्पताल का काम निपटा देंगे, तब मोहनजी आपको कहेंगे जनाब थका हुआ हूं..अब तो कढ़ी खायोड़ा, आप मुझे घर छोड़ दें तो आपकी मेहरबानी होगी। फिर..

रतनजी – 'फिर-फिर' कहना बंद कीजिये, मगर यह सोचिये..के, 'आपके पास गाड़ी है, या नहीं ? अगर नहीं है, तब आप मोहनजी के काम कैसे आ सकते हैं ? सुनिये, सच्चाई यही है "अफसर की बात अफसर ही समझ सकता है। " आप और हममें, कहाँ है इतनी समझ ?

रशीद भाई – जानता हूं, रतनजी। ये अफ़सर पहले पकड़ते हैं, अंगुली। फिर पकड़ते हैं, पुणचा। बस, सच्चाई यही है कि, मोहनजी को जो साथी अपनी गाड़ी पर बैठाकर ले जाएगा.... उसे, इनके सभी बकाया काम करने होंगे।

ओमजी – मुझे कब इनको, अपनी पीठ पर बैठाकर ले जाना है ? मोटर साइकल पर बैठाकर ले जाना है, और यह मोटर साइकल चलती है प्योर पेट्रोल से। [मोहनजी से कहते हैं] मोहनजी, क्या आप गाड़ी में पेट्रोल भरवा देंगे ? फिर आप जहां कहेंगे, वहां पहुंचा दूंगा। कहिये, आप तैयार हैं ?

[मोहनजी ठहरे, कंजूस इंसान। ख़र्चा करने वाले नहीं, फिर वे इस सवाल का ज़वाब कैसे देते ? बस, फिर क्या ? उनके रास्ते के बीच में रोड़ा बनकर आ रहे यात्रियों को एक ओर धकेलते हुए, वे

तेज़ी से आगे बढ़ जाते हैं। मोहनजी को तेज़ी से चलते देखकर, टिकट कलेक्टर को इनके बेटिकट यात्री होने का संदेह हो जाता है। वह उनको पीछे से, आवाज़ देता हुआ उनके पीछे दौड़ता है।]

टिकट कलेक्टर – [आवाज़ देता हुआ] – अरे, रुक जा। टिकट दिखाता जा। **अरे यार, मत हो नौ दो ग्यारह।**

[इधर इनके साथियों को चाय न मिलने के कारण, वे सब उनको पीछे से आवाजें देते हैं]

सभी साथी – [ज़ोर-ज़ोर से, आवाजें देते हैं] – पैसे देते जाओ..पैसे देते जाओ। ओ मोहनजी, चाय के पैसे देते जाओ।

[इनकी आवाजें सुनकर, मोहनजी घबरा जाते हैं। उनको ऐसा अहसास होता है, के 'अब ये कुचमादी के ठीकरे, ज़रूर उनकी जेब से पैसे निकलवाकर ही रहेंगे।' यह विचार इनके दिमाग़ में आते ही, वे अपनी गति बढ़ाकर और तेज़ चलते हैं। बचने के चक्कर में वे ध्यान रख नहीं पाते, के 'वे किस आदमी से टकराते हुए, आगे बढ़ रहे हैं ?' उतावली में वे एक कुली से टकरा जाते हैं, इस टक्कर से कुली की आंखो पर लगा ऐनक ज़मीन पर गिर जाता है। मुसीबतें आती है, तो एक साथ आती है। आस-पास चल रहे यात्रियों के पांवों के नीचे, उस बदक़िस्मत कुली का ऐनक बेरहमी से कुचल दिया जाता है। वह बेचारा कुली, इस नुकसान को कैसे बर्दाश्त कर पाता ? वह चिल्लाता हुआ मोहनजी के पीछे दौड़ता है, मगर ऐनक के बिना उसे साफ़ दिखायी नहीं देता..खुदा की पनाह, वह मोहनजी के स्थान पर आगे चल रहे एक नाज़र को पकड़ लेता है। आगे क्या होता है, बेचारे की बनी बनायी इज्ज़त..?]

कुली – [दौड़ता हुआ, कहता हाता है] – ओ मूंछों वाले बाबू, ठहर जा, **अरे यार, मत हो नौ दो ग्यारह।** झट दे दे प्यारे, ऐनक के पैसे। [सामने चल रहे नाज़र को मोहनजी समझकर, वह कुली नाज़र के ब्लाउज़ को उनका कमीज़ समझकर ज़ोर से खींचता है। फिर फटकारता हुआ, उसे कहता है।]

कुली – [फटकारता हुआ कहता है] – अरे मूंछ्यों वाले मुए, पैसा देता जा..साला चार सौ बीस, नहीं देता है तो..

नाज़र – [ताली पीटता हुआकहता है] – अरे ठाकर, तू....? पैसे तो अभी तू देगा रे, नहीं तो खोल देती हूं तेरा पेंट। फिर, नचाती हूं तूझे....

[वह नाज़र एक झट झटका देकर, अपना ब्लाउज़ छुड़ा लेता है..फिर उस कुली की पेंट पकड़कर, चेन खोल देता है। इस मंज़र देख रहे यात्री-गण, तमाशबीन बनकर वहीँ खड़े हो जाते हैं। फिर, इस खिलके को देखते हुए तालियां पीटते जाते हैं। इस हुड़दंग से पीछा छुड़ाता हुआ, वह कुली उस नाज़र को धक्का देकर मेन गेट की ओर तेज़ गति से बढ़ता है। ख़ुदा जाने, इस बार वह कितने लोगों से टक्कर खाता हुआ आगे बढ़ रहा है ? बेचारा कुली ज़ोर-ज़ोर से मोहनजी को आवाज़ देता हुआ, उनका पीछा करता नज़र आता है।]

कुली – [दौड़ता हुआ, आवाज़ देता जा रहा है] – अरे, ओ मूंछ्यां वाले बाबू। पैसा देता जा, पैसा देता जा। **अरे यार, मत हो नौ दो ग्यारह।**

[मेनगेट के बाहर बैठे भिखारियों के झुण्ड को, ऐसा लगता है के 'कोई दान-पुण्य करने वाला धर्मात्मा आदमी इधर से गुज़र रहा है...? जिसके पीछे बराबर, टिकट कलेक्टर, कुली और मोहनजी के साथी पीछा करते जा रहे हैं ?' बस, फिर क्या..? जैसे ही मोहनजी गेट से बाहर निकलते हैं, वे सारे भिखारी उनके पीछे लग जाते हैं। और उनके पीछे-पीछे, टिकट कलेक्टर मोहनजी को ज़ोर से आवाज़ देता हुआ बाहर आता है।]

भिखारी – [एक साथ] – ओ बाबू पैसा देता जा, अल्लाह के नाम से।

टिकट कलेक्टर – [जोर से आवाज़ देता हुआ, कहता है] – ओ मूंछ्या वाला बाबू, ज़रा टिकट दिखाता जा। **अरे यार, मत हो नौ दो ग्यारह।**

[इन भिखारियों को मोहनजी के पीछे दौड़ते देखकर, रास्ते में खड़े कुत्ते भी उनके पीछे लग जाते हैं। इधर कुत्ते भौंकते हैं, तो उधर भिखारियों के पुकारने की आवाज़। और उनके पीछे, बेचारे टिकट कलेक्टर की आवाज़। बस, चारों ओर कोलाहल में एक ही आवाज़ गूंज़ती है **"अरे यार, मत हो नौ दो ग्यारह।** " थोड़ी देर बाद, मंच पर अंधेरा छा जाता है।]

खंड चार - "रास्ते का रोड़ा।"

लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

[मंच रोशन होता है, मोहनजी मकान की बरसाली में कुर्सी लगाए बैठे हैं। उनके पास ही लाडी बाई, आँगन पर बैठी-बैठी सब्जी काट रही है। अब मोहनजी हथेली पर ज़र्दा और चूना रखकर,

दूसरे हाथ के अंगूठे से उन्हें मिलाकर अच्छी तरह से मसलते हैं। इस तरह सुर्ती तैयार करके, उसे अपने होंठों के नीचे दबाकर रखते हैं। फिर वे, लाडी बाई से कहते हैं..]

मोहनजी – [होंठों के नीचे, ज़र्दा दबाते हुए] – ऐसा खाना-पीना अच्छा लगता है भागवान, जहां हींग लगे न फिटकरी..मगर, रंग अच्छा चाहिये।

लाडी बाई – [चाकू आंगन पर रखती हुई कहती है] – वzज़ा फरमाया, गीगले के बापू। खाना-पीना लोगों का, और नेत डाले दूसरे लोग..मगर, जीमेंगे मोहनजी। बेटी के बाप, इस तरह कैसे काम चलेगा ? बाद में आपकी लाडली छोरी झमकूड़ी के विवाह में, कौन डालेगा नेत ?

मोहनजी – गीगले की बाई, मुझे कुछ समझ में नहीं आया...आख़िर, आप कहना क्या चाहती हैं ?

लाडी बाई – मेरे कहने का मफ़हूम यह है, के 'आप शादी-विवाह में, मुफ़्त का खाना खाते ही रहेंगे या और कुछ ध्यान में रखेंगे ? सोचिये आप..आप ऐसा ही करते रहेंगे तब आपकी लाडली बेटी झमकूड़ी के विवाह में कौन डालेगा, नेत ?' अब आप यह लोकोक्ति 'हींग लगे न फिटकरी, मगर रंग अच्छा आये' कभी बोलना, मत।

मोहनजी – [दीवार के ऊपर पीक थूकते हुए, कहते हैं] – क्यों फ़िक्र करती जा रही है आप, गीगले की बाई आपको मालुम नहीं है क्या ? हम हैं, धान के अफ़सर। रसूखात रखते है जी, तभी तो खुद की मर्ज़ी से तबादला करवाकर बन गए राजा भोज। नहीं तो ये हेड ऑफिस वाले मुझे भेज देते, पंजाब या कश्मीर।

लाडी बाई – क्यों करते जा रहे हैं आप, ख़ुद की झूठी तारीफ़ ? मियां मिठू बनकर, आज़ तक आपने किया क्या ?

मोहनजी – मैं तो यह कहना चाहता था भागवान, के इतना पोवर है इस कढ़ी खायोड़ा में..एक बार सुन लीजिये, कान खोलकर। यहां तो गीगले की बाई, नेत लगाने वालों की लाइनें लगेगी। बाई का विवाह, आराम से हो जायेगा।

[लाडी बाई अब समझ गयी, के 'मोहनजी से बकवास करती रही, तो घर का काम निपटाना मुश्किल हो जायेगा।' फिर क्या ? लाडी बाई चाकू हाथ में लेकर, वापस सब्जी काटनी शुरू कर देती है। मगर लाडी बाई ठहरी, औरत-जात। बिना बोले लाडी बाई से रहा नहीं जाता, ख़ैर सब्जी काटते-काटते वह कहती है..]

लाडी बाई – [सब्जी काटते हुए, कहती है] – गाल बजाने से, किये हुए कर्मों पर पर्दा नहीं पड़ता। कल ही अजमेर से फ़ोन आया, मुझे ऐसा लगता है शायद कोई आपका डी.एम. बोल रहा था ?

मोहनजी – [चौंकते हुए, कहते हैं] – अरे, रामसा पीर। यह क्या कर डाला, गीगले की बाई ? आपको कितनी बार कहा, के 'बाहर के फोन न उठाया करो।' मगर आपने तो, मेरा कहना न मानने की कसम खा रखी है...

लाडी बाई – [बात काटती हुई, कहती है] - पहले मेरी बात सुनो, भागने की कोशिश करना मत। चुप-चाप यहां बैठ जाओ, और बैठकर तसल्ली से सुनो..के 'मैं आपकी जितनी पढ़ी-लिखी नहीं हूं, मगर..'

[मोहनजी, क्यों सुनना चाहेंगे ? झट उठने का प्रयास करते हैं, मगर लाडी बाई कहां उन्हें छोड़ने वाली ? वह झट उनका हाथ पकड़कर, उन्हें वहीँ वापस बैठा देती है। फिर, उन्हें कहती है..]

लाडी बाई – बैठिये, तसल्ली से। और, सुनो...मैं आप से ज़्यादा अक्ल रखती हूं, समझे या नहीं ? आख़िर मैं हूं, एक अफ़सर की बेटी। मेरे घर पर पिताजी के आस-पास, कई मुलाजिम अपना काम करवाने के लिये हाज़िर रहते थे। मुलाजिमों की पदोन्नति, पद-अवनति और तबादले कैसे होते हैं और कैसे रुकते हैं..? ये सारी बातें, मैं अच्छी तरह से जानती हूं।

मोहनजी – काम की बात करो, ना। देरी हो रही है, भागवान।

लाडी बाई – बीच में, न बोला करो। लीजिये सुनिये, मेरे पिताजी सारे दिन यही काम किया करते थे। दफ़्तर के चपरासी, बाबू और सभी कर्मचारी, पिताजी के गुणों की तारीफ़, हमेशा करते थे। वे कहते-कहते कभी थकते नहीं, के 'कितना भला अधिकारी है..इन्होंने सबका भला किया है, किसी का भी बुरा नहीं किया।'

मोहनजी – इससे, मुझे क्या ? मुझे क्यों सुना रही हैं, आप ?

लाडी बाई – बीच में बोला न करो, बात को पूरी सुनो। गीगले के बापू, अब आपके कर्म देखूं या मैं दिल के अंदर ही अन्दर धमीड़ा लेती रहूं ? आप ने मुझको, किसी को मुंह दिखलाने लायक नहीं छोड़ा। कल चूकली कहती थी, के 'आपने ख़ुद रूचि लेकर, बेचारे बुधिये वाच मेन की बदली पोकरण करवा दी ?'

मोहनजी – तो हो गया, क्या ?

लाडी बाई – सुनो पहले, आप एक बार और बीच में बोल गये ? अब वो बुधिया हथायों पर बैठकर लोगों से कहता है, के 'मोहनिये को एक थप्पड़ मारी दफ़्तर में, तब तबादला हुआ पोकरण। अब इस गधे को दफ़्तर के बाहर धोऊंगा, फिर देखता हूं..यह गधा, मेरा क्या बिगाड़ लेगा ?' कहिये, अब आप चुप कैसे हो गये ?

मोहनजी – अब, क्या बोलूं ?

लाडी बाई – [हाथ नचाते हुए, ज़ोर से कहती है] – दफ़्तर के अन्दर, गुंडागर्दी का नया धंधा खोल दिया क्या ? भले आदमी दस क़दम दूर रहते हैं, लड़ाई-झगड़े से। मगर आपने तो, आब-आब कर डाला मुझे।

मोहनजी – क्यों जलती आग में, घी डाल रही हैं आप ? कौनसा ग़लत कार्य कर डाला, मैंने ? रात को दफ़्तर जाकर जांच करता हूं, के 'वाच मेन सो रहा है, या जग रहा है ? क्या यह मेरी ड्यूटी नहीं है ?' अरे भली औरत अब तुम यह बताओ, के 'किस क़ानून के अंतर्गत, लिखा है के दारु पीकर रात की ड्यूटी की जाती है ?'

लाडी बाई – [कटी हुई सब्जी, टोकरी में डालती हुई कहती है] – तो फिर हाथ में लीजिये, लाल स्याही वाला पेन..और कीजिये, लोगों का नुकसान। फ़िर खाओ धब्बीड़ करता थप्पड़, अपने गालों पर।

मोहनजी – आप यह क्या कहती जा रही हैं, भागवान ?

लाडी बाई – यह कह रही हूं, के 'फिर, पड़े रहो टेंसन में। [उठते-उठते, एक बार और कहती है] फिर घूमते रहना, पीपल के पान जैसा मुंह लिए।' अब मैं तो जा रही हूं, खाना बनाने। इधर घड़ी में नौ बजेगी, और आपको मांगेगे रोटियों से भरा टिफ़िन...रोटियां गिटने के लिये।

[क्रोधित होकर लाडी बाई, रसोड़े में चली जाती है। अब मोहनजी वहां से उठकर, चले आते हैं साल [नीचे की मंजिल में कमरों के बाहर बना गलियारा] में। वहां अलमारी से, 'बाबा साहब अम्बेडकर की जीवनी' पर लिखी किताब को बाहर निकालते हैं। फिर कुर्सी पर बैठकर, उस किताब को जोर-जोर से पढ़ते हैं। तभी गेंद खेलता हुआ, उनका लाडका बेटा गीगला साल में दाख़िल होता है। गीगला उनकी कुर्सी के पीछे आकर खड़ा हो जाता है, और देखता है के 'उसके बापू क्या पढ़ रहे हैं ?' और कान देकर सुनने की भी कोशिश करता है, के 'उसके बापू, किस लाइन को ग़लत पढ़ रहे हैं ?']

मोहनजी – [किताब पढ़ते हुए] – '२६ जनवरी का दिन हमारे देश में बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस दिन, भारत में सम्प्रभुत्व लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना हुई। भारत रत्न भीम राव अम्बेडकर ने सविधान सभा के अध्यक्ष को सविधान सौंपते हुए कहा, छब्बीस जनवरी उन्नीस सौ पच्चास से भारत एक स्वतन्त्र राज्य होगा।'

[इतना सुनकर, गीगला ज़ोर से ठहाका लगाकर हंसता है। और बाद में ताली पीटता हुआ, कहता है..]

गीगला - अरे बापू, आपको तो पढ़ना भी नहीं आता। [तालियां पीटता हुआ, चिढ़ाता है] बापू अनपढ़, बापू अनपढ़..ठोठी ठीकरा, ठोठी ठीकरा..!

[अब गीगला मोहनजी को चिढ़ाता जा रहा है, मोहनजी उसको पकड़कर उसका कान उमेठते हैं। कान उमेठते ही गीगला चिल्लाता है, ज़ोर से।]

मोहनजी – [गीगले का कान उमेठते हुए, कहते हैं] – काबुल के गधे, तू पढ़ता है तीसरी क्लास में। और मैं हूं एम.ए.एल.एल.बी. पास, तू क्या बोला रे...मुझे ? मतीरे के बीज ?

गीगला – [चिल्लाता हुआ कहता है] – छोड़िये मेरा कान, नहीं तो मैं बाई को आवाज़ देता हूं।

[बाई [मां] का नाम सुनते ही, मोहनजी डरकर उसका कान छोड़ देते हैं। वे जानते हैं, के 'अभी उनकी यह बीबी फातमा यहां आ गयी..तो ज़रूर, कलह करेगी।' अब वे गीगले को समझाते हुए, उसे कहते हैं...]

मोहनजी – छोरा गीगला कढ़ी खायोड़ा, बाई को मत बुला बेटा।

गीगला – [कान मसलता हुआ, कहता है] – यहां आप मेरा कान उमेठते हैं, और उधर स्कूल में मास्टर साहब उमेठते हैं मेरा कान। कान उमेठ-उमेठकर इन कानों को बना दिए हैं, गधे के कान। कान उमेठकर मास्टर साहब, ऊपर से कहते हैं के 'यह किस गधे का, छोरा है ?' क्या कहूं ? आप लोगों को..? चारों-ओर से, मुझे परेशान कर रखा है आप लोगों ने।

मोहनजी – इन बातों को छोड़, अब तू यह बता के 'मैंने कहां ग़लत पढ़ा ?'

गीगला – तब आप यह बताइये, के 'देश आज़ाद हुआ है १५ अगस्त १९४७ को, मगर बापू आप पढ़ रहे हैं के **'छब्बीस जनवरी उन्नीस सौ पच्चास से, भारत एक स्वतन्त्र राज्य होगा...'**

मोहनजी – तो क्या हो गया, मतीरे के बीज ?

गीगला – फिर यह बताइये बापू, के 'छब्बीस जनवरी उन्नीस सौ पच्चास के पहले, क्या हमारा देश गुलाम था ?'

मोहनजी – [क्रोधित होकर कहते हैं] – भंगार के खुरपे। इधर आ, तू बड़ों की ग़लती निकाल रहा है ? कढ़ी खायोड़ा, तूझे शर्म नहीं आती ?

[मोहनजी गीगले को पकड़कर पीटना चाहते हैं, मगर इस कुचमादिये के ठीकरे गीगले का पकड़ा जाना...अब, मोहनजी के हाथ में नहीं। वो गीगला कभी इधर दौड़ता है, तो कभी उधर। इस शोर-गुल को सुनकर, लाडी बाई टिफ़िन लिए साल में आती है। टिफ़िन मेज़ पर रखकर, रिदके [पल्लू] से सर ढकती है। तभी वह गीगला दौड़कर, उनके पीछे छुप जाता है।]

लाडी बाई – [बीच में खड़ी होकर, गीगले का बचाव करती हुई] – भले आदमी। थोड़ा, समझदार बनिये। क्या बच्चों के बराबर हो रहे हैं, आप ? कल छोरी झमकूड़ी की शादी करनी है...ऐसे रहे, तो लोग आपकी इज़्ज़त धूल में मिला देंगे। अब बोलो, बात क्या है ?

[मोहनजी, क्या बोल पाते ? उससे पहले गीगला अपनी बाई को विगतवार समझाने बैठ जाता है, आख़िर हुआ क्या ? मोहनजी से किताब लेकर, उनके पढ़ने में जो ग़लती आयी..उसे अलग से बताता है। अब लाडी बाई पेंसिल से गीगले के बताये वाक्य के नीचे लाइन खींचती है। फिर किताब लेकर, गीग़ले के बताये वाक्यांश को पढ़कर सुनाती है।]

लाडी बाई – [वाक्यांश पढ़ती हुई, कहती है] – आप तो जनाब, गज़ब के महारथी हैं। जो रोटियां गिटते-गिटते अब, वाक्यांश के पूरे शब्द ही गिट जाने की आदत..अलग से, बना डाली आपने ? [पेंसिल से अंडर लाइन किये हुए सही शब्दों दिखलाती है] यह क्या लिखा है ? स्वतन्त्र है, या गणतंत्र ? अर्थ का अनर्थ कर डाला, आपने ? बेकार जिद्द रहे हैं बच्चे से, और इसे सामने बोलने का मौक़ा देते जा रहे हैं ?

मोहनजी – आप ही, इस नालायक का पक्ष लेती हैं। आपने ही बिगाड़ा है, इसे। इसके सामने बोलने का कारण, आप ख़ुद हो।

लाडी बाई – आपका ख़ुद का काम ही ऐसा है, जो अगले को सामने बोलने के लिए मज़बूर करता है। मेरे सामने तो नहीं बोलता..एक आँख दिखाऊं इसे, देखकर ही इसका मूत उतरता है।

[मोहनजी बिना जवाब दिए, अपना बैग और टिफ़िन उठाते हैं। फिर स्टेशन जाने हेतु घर से बाहर निकलते है, गीगला झट बाहर आकर अपने बापू को खुश करने के लिए, टा टा करता हुआ कहता है..]

गीगला – [हाथ हिलाकर, टा टा करता हुआ] – बापू, टा टा। आते वक़्त, दूध-जलेबी लेते आना।

[मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद, मंच वापस रोशन होता है। जोधपुर स्टेशन का मंज़र सामने आता है, मोहनजी उतरीय पुल की सीढ़ियां चढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। गेरू वस्त्र पहने साधुओं का टोला भी सीढ़ियां चढ़ता जा रहा है, उन सबकी जटाएं बहुत बढ़ी हुई है। गाड़ी रवाना होने का वक़्त नज़दीक आता जा रहा है। सीढ़ियां चढ़ने के दौरान, मोहनजी लोगों के लिए **रास्ते का रोड़ा** बनते जा रहे हैं। इन साधुओं का आगे बढ़ना मुश्किल होता जा रहा है, मगर अपनी ग़लती न मानकर मोहनजी उन साधुओं पर ही उबल पड़ते हैं।]

मोहनजी – [क्रोधित होकर, कहते हैं] – आँखे है, या आलू ? यह साढ़े पांच फुट का आदमी, सामने खड़ा दिखाई नहीं देता ?

एक साधु – बच्चा सब कुछ दिखाई देता है, इस बाबा को। तेरा भूत, भविष्य, वर्तमान सभी जानते हैं हम..!

मोहनजी – फगड़े हो, कुछ जानते नहीं और करते हो भूत, भविष्य की बातें ? अगर मेरा जैसा प्रधान मंत्री होता, तो तुम सबको भिजवा देता कैदखाने। खाते हो मुफ़्त की रोटियां, और सबको देते हो दुःख।

एक साधु – यह संसार कैदखाना ही है, बच्चा। मुफ़्त की रोटियां, क्या तू खिलाता है ? वह खिलाता है, जो सबको खिलाता है। तू भी भूखा है तो आ ज़ा, हमारे साथ...भर-पेट भोजन खिलायेंगे..शर्म मत कर, आ ज़ा हमारे साथ।

दूसरा साधु – अरे चल रे, क्यों शर्म करता है रे ? चल तूझे ले चलता हूं, देवलोकवासी बाबा किसना राम के भंडारे में। तूझे वहां भर-पेट भोजन खिलायेंगे, तू चल तो सही हमारे साथ।

[अब रास्ते में खड़े मोहनजी बन जाते हैं, लोगों के लिए अवरोध..यानी **रास्ते का रोड़ा**। वे बार-बार लोगों के बीच में आकर, उन्हें आगे नहीं जाने देते। क्या करते, बेचारे ? कुछ तो उनकी चाल ही, कुछ ऐसी..कभी वे इधर खिसकते, तो कभी उधर। तभी उतरीय पुल की सीढ़ियां चढ़ती आ रही, पी.एस.सी. की नर्स जुलिट दिखाई देती है। इस मोहनजी रुपी अवरोध के कारण, बेचारी जुलिट

सीढ़ियां चढ़कर आगे कैसे जाये ? वह परेशान हो जाती है, कारण यह है के "उस बेचारी की ड्यूटी प्लस पोलियो शिविर में, लगी हुई है, और अभी तक उसने आवश्यक दवाइयों को संभाला भी नहीं है। फ़ोन पर मेसेज भी भेजना है, के कौनसी दवाइयां वह लेकर नहीं आयी है।" इधर गाड़ी आने का वक़्त भी नज़दीक आता जा रहा है। आख़िर अपने लबों पर मुस्कान लाकर, वह मोहनजी से कहती है..]

जुलिट – [मुस्कराती हुई, कहती है] – प्लीज़, गिव मी वे..!

[जुलिट की ख़ूबसूरती, मोहनजी के दिल को जीत लेती है। उसे देखकर उन्हें, अपनी बेर [wife] लाडी बाई की याद सताती है। वे तो उस ख़ूबसूरत जुलिट के चेहरे में, अपनी बेर लाडी बाई की सूरत देखने की कोशिश करते हैं। उनको ऐसा लगता है, वह ख़ूबसूरत नारी जुलिट न होकर उनकी बेर लाडी बाई ही है। वे उसकी ख़ूबसूरती पर कायल होकर, उसे टका-टक देखते जा रहे हैं। तभी उनको, जुलिट की मीठी आवाज़ सुनायी देती है..]

जुलिट – [मधुर आवाज़ में कहती है] – ओय नोटी। प्लीज़, हटो ना।

[फिर क्या ? वह प्यार से मोहनजी को टिल्ला देकर, उनको अपने रास्ते से हटाती है। फिर मुस्कराती हुई सीढ़ियां चढ़ती हुई, उनकी आंखो के सामने ओझल हो जाती है। उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर मोहनजी हक्के-बक्के रह जाते है, उनको अब, जुलिट की मोहिनी सूरत के सिवाय कुछ दिखायी नहीं देता। उनको कोई अनुमान नहीं, के 'सीढ़ियां उतरकर किस प्लेटफोर्म पर, जुलिट चली गयी है ?' तभी प्लेटफोर्म संख्या चार पर आकर, हावड़ा एक्सप्रेस रुकती है। उसे आते देखकर, कुलियों का झुण्ड यकायक सीढ़ियां चढ़ता है। फिर, क्या ? वह झुण्ड प्लेटफोर्म संख्या चार पर जाने के लिये, तेज़ी से आगे बढ़ता है। मगर इन सीढ़ियों पर मोहनजी रुपी अवरोध, पहले से मौज़ूद। जो बार-बार उनके रास्ते के बीच में आकर, उन्हें जल्दी सीढ़ियां चढ़ने नहीं देते। खुदा जाने, वे क्यों बार-बार उनके रास्ते में आते जा रहे हैं ? मगर यहां शान्ति रखने वाला है, कौन ? इन कुलियों में एक जवान कुली है, वह है बड़ा जबरा। वह गुस्से में मोहनजी को सुना देता है, कटु वचन।]

जवान कुली – [गुस्से से बेकाबू होकर, कहता है] – ओ बाबू बीच में क्या खड़ा है, **रास्ते के रोड़े** की तरह ? अरे हट, धंधे का टाइम है। क्यों खोटी करता है, बाबू ?

[मगर, मोहनजी क्यों दूर हटना चाहेंगे ? आख़िर, वे अफ़सर ठहरे। यों इस नामाकूल कुली का हुक्म, कैसे मान लेते ? मगर उन्हें कहां मालुम, इस कुली का तेज़ स्वाभाव ? फिर, क्या ? कुली

धक्का देकर, मोहनजी को एक ओर धकेल देता है। फिर, वह प्लेटफोर्म नंबर चार पर जाने वाली सीढ़ियां उतर जाता है। इस धक्के से उनके हाथ में थामी हुई पानी की बोतल, नीचे गिर जाती है। और ढीला ढक्कन लगे रहने से, ढक्कन खुल जाता है और पानी बाहर निकलकर उनकी पतलून गीली कर देता है। तभी उन्हें आसकरणजी, सीढ़ियां उतरकर आते हुए दिखाई देते हैं। अब मोहनजी गीली पतलून को हथेलियों से ढकने की बहुत कोशिश करते हैं, मगर यह सारा प्रयास बेकार जाता है। आसकरणजी से छुपा नहीं रहता, वे इनके नज़दीक आकर कहते हैं।]

आसकरणजी – [नज़दीक आकर, कहते हैं] – गाड़ी पकड़ रहे हो, मोहनजी ? अफ़सरों क्या हाल है, आपके ?

मोहनजी – [गीली पतलून को छुपाते हुए, कहते हैं] – ठीक है जनाब, आपकी मेहरबानी से। सब, कुशल मंगल है।

[मोहनजी बहुत प्रयास करते हैं, गीली पतलून को छुपाने की। मगर उनकी नज़र उस पर न गिरे, ऐसा हो नहीं सकता। फिर, क्या ? बिना ताना कसे, आसकरणजी जनाब कैसे रह पाते ?]

आसकरणजी – [ठहाका लगाकर, कहते हैं] – अरे साहब, भद्दे लग रहे हैं ? ऐसे क्या, पतलून के अन्दर मूतते जा रहे हैं ? आख़िर अफ़सर हैं आप, एफ़.सी.आई. के..

[इतना कहकर, ठहाके लगाते हुए आसकरणजी उतरीय पुल की सीढ़िया उतरकर प्लेटफोर्म संख्या एक पर चले जाते हैं। आस-पास खड़े यात्री गण आसकरणजी का कोमेंट सुनकर मोहनजी की खिल्ली उड़ाने लगते हैं। मगर उनको इसकी कोई परवाह नहीं, वे तो जुलिट के दिखाई न देने से, चितबंगने जैसी स्थिति बना लेते हैं। मोहनजी उस सुन्दरी जुलिट की ख़ूबसूरती से इतने मुग्ध हो जाते हैं, के जिधर वे नज़र उठाते हैं..उधर ही इन्हें यह सुन्दरी जुलिट दिखाई देती है। यह आंखो की प्यास ही कुछ ऐसी है, जिसके कारण आदमी बहुत भ्रमित हो जाता है..इस तरह भ्रमित होकर मोहनजी, प्लेटफोर्म पांच के स्थान पर दो पर उतर जाते हैं। अब वे वहां हिप्नोटाइज्ड इंसान की तरह, उस जुलिट को प्लेटफोर्म पर ढूंढ़ते दिखायी दे रहे हैं। इस जुलिट की मोहिनी सूरत के अलावा उन्हें और कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। कभी वे दूर खड़ी उस खां साहबणी भिखारन को जुलिट समझ बैठते हैं, और दौड़कर उसके निकट चले जाते हैं। वो बेचारी उन्हें नज़दीक आते देखकर, खुश होती है के 'चलो, कोई दान दाता आ रहा है ?' मगर जैसे ही मोहनजी उसके पास आकर, उसे घूरते हैं और उसे देखते ही वे परे हट जाते हैं..और बेचारी की आशा, निराशा में बदल जाती है। कभी मोहनजी किसी देहाती औरत को दूर से देख लेते हैं, जिसने चांदी के गहनें पहन रखे हैं। उसे जुलिट समझ लेने की, ग़लती कर बैठते हैं..मगर जैसे ही वे उसके नज़दीक आकर

उसे घूरते हैं, वह बेचारी देहाती औरत उनकी राठौड़ी मूंछों का दीदार पाकर सहम जाती है। और डरती हुई ज़ोर से चिल्लाकर, अपने पति को पुकारती है।]

देहाती औरत – [डरकर चिल्लाती हुई कहती है] – मर गयी, मेरी जामण। ओ गीगले के बापू, भैरू रागस [राक्षस] आ गया..! आकर, मुझे बचाओ।

मोहनजी – [उसे पहचानते हुए ज़ोर से कहते हैं] - तू ठहरी भंगार की खुरपी, गीगले की बाई कैसे बन गयी..? मगर मैं गीगले का बापू हूं, मोहनजी कढ़ी खायोड़ा। अगर तू गीगले की बाई बन गयी, तो रामा पीर की कसम लाडी बाई मेरा सर फोड़ देगी ?

[थोडा दूर खड़ा है, उसका घरवाला चौधरी। उसके कानों में 'लाडी बाई' का नाम, क्या सुनायी दिया..? वह समझ लेता है, कहीं यह मूंछों वाला आदमी ख़बर लाया है, के 'उसकी सास आ रही है, उसका सर फोड़ने ?' आख़िर, उसकी सास का नाम भी ठहरा **लाडी बाई**। बेचारा, उसके आंतक से घबराया हुआ, ज़ोर से चीख़ उठता है..]

चौधरीजी – [ज़ोर से आवाज़ देता हुआ] - मार दिया रे, लूणी वाले भैरूजी। [अपनी पत्नी से] अरी भागवान, मत बुला अपनी जामण को..तू कहेगी, तो लाकर दे दूंगा तूझे चूड़ामणि। मगर, उस..उस..?

[तभी मोहनजी को, दूर से और कोई नज़र आ जाती है। फिर वे इस देहाती औरत को छोड़कर, और कहीं दस्तक दे देते हैं। इस तरह हर जगह ग़लत दस्तक देते-देते वे, वहां खड़े यात्रियों का परिहास का शिकार बनते जा रहे हैं। उनका यह हाल देखकर, उतरीय पुल पर खड़े दयाल साहब और राजू साहब अपनी हंसी को रोक नहीं पाते। वे दोनों, ज़ोरों से खिल-खिलाकर हंस पड़ते हैं। आख़िर राजू साहब अपनी हंसी दबाकर, किसी तरह दयाल साहब से कहते हैं।]

राजू साहब – [हंसी दबाकर कहते हैं] – उधर देखो, दयाल साहब। वह जा रहा है, मोहनिया..कैसा पागल है, यार ? पहले तो उसको उतरना चाहिए था, प्लेटफोर्म संख्या पांच पर..मगर यह पागल उतर गया, प्लेटफोर्म संख्या दो पर। अब पागलों की तरह लोगों से पूछ रहा है, गाड़ी के बारे में।

दयाल साहब – मरने दो, इस पागल को। अभी जाकर पूछेगा, वेंडर से..[मोहनजी की आवाज़, की नक़ल उतारते हुए बोलते हैं] कढ़ी खायोड़ा, पाली जाने वाली गाड़ी कब लगेगी ?

राजू साहब – [हंसते हुए, कहते हैं] – अरे यार, फिर वेंडर यही कहेगा..[वेंडर की आवाज़, की नक़ल उतारते हुए कहते हैं] **'ठोकिरा, मैंने तो कढ़ी खायी नहीं, मगर बेचता ज़रूर हूं। बोल, कढ़ी लेनी हो**

तो पैसे निकाल और कह कितने रुपये की डालूं कढ़ी की सब्जी ?' फिर पूछेगा जाकर, कुली से..यदि किसी ने, सही नहीं बताया तो ..?

दयाल साहब – छोड़िये, साहब। **भाड़ में जाये यह मोहनिया, और भाड़ में जाए इसकी कढ़ी। हमें क्या करना है, इसकी कढ़ी का ? साला हाम्पता-हाम्पता चढ़ेगा, इस पुल को बार-बार। फिर अक्ल हुई तो आ जायेगा प्लेटफोर्म नंबर पांच पर, फिर खायेगा बी.पी. की गोलियां।**

राजू साहब – सही कहा, आपने। [सामने से रशीद भाई और सावंतजी, आते हुए दिखायी देते हैं] **कहते है ना, मूर्ख को पीटना सरल है मगर उसे समझाना मुश्किल है।**

[रशीद भाई और सावंतजी, आते वक़्त वे राजू साहब का बोला गया कथन सुन लेते हैं। इस वक़्त रशीद भाई ने, कुलियों की कमीज़ जैसा ही लाल कमीज़ और काला पेंट पहन रखा है। आज़ इस सेवाभावी रशीद भाई का, क्या कहना..? कपड़ो से मेच करती हुई, इन भाईजान ने अपने सर पर लाल टोपी भी पहन रखी है। मगर सावंतजी ने इसके विपरीत, सफ़ेद बुशर्ट व पतलून पहन रखी है। अब ये दोनों आते ही, दोनों अधिकारियों को हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं। फिर रशीद भाई, परायी पंचायती में अपना पांव फंसाते हुए कहते हैं।]

रशीद भाई – सौ फ़ीसदी सच्च कहा, आपने। ये जनाब तो बार-बार सावंतजी के सामने, यह यक्ष प्रश्न खड़ा करने के आदी हो गए हैं...के "ये दोनों साहब एवोइड क्यों करते है, उन्हें ?"

दयाल साहब – क्या कहा, एवोइड ? अरे रशीद तू जानता नहीं, यह मोहनिया तो एवोइड करने की ही चीज़ है। पता नहीं, क्या बीमारी पाल रखी है इसने ? जब भी यह बेवकूफ़ मेरे कमरे में आता है, और जम जाता है मेरी कुर्सी पर। अरे रशीद, अब तूझे और क्या कहूं ? उस वक़्त चार-चार कुर्सियां पड़ी रहती है ख़ाली...

सावंतजी – अब क्या कहूं जनाब, आपको ? मैंने तो उनको कई बार ऐसा करने से मना किया, के 'आपके इस तरह बैठने से, हमारे साहब नाराज़ होते हैं...मगर जनाब ये जनाबे आली क्या कहते हैं, के **'इस कुर्सी के ऊपर मुझे बैठने का पूरा अधिकार है। मुझे इस कुर्सी पर बैठने से, सकून मिलता हैं....तू क्या जानता है, कढ़ी खायोड़ा ?..**

रशीद भाई – [उनका जुमला पूरा करते हुए कहते हैं] – **मैं और दयाल साहब, बराबर रेंक के अधिकारी हैं। क्या समझा, कढ़ी खायोड़ा ? कढ़ी खायोड़ा, अब बताकर जा। बराबर वाले की सीट पर बैठकर, मैंने कौनसा गुनाह किया ?'** अरे जनाब, मोहनजी अक़सर ऐसे बोला करते हैं।

सावंतजी – क्या करें, साहब ? अब इनको समझाना, हम लोगों के वश में नहीं। इनको कई मर्तबा समझा दिया हमने, के **‘एक तो आप मुंह में, ठूंस-ठूंस कर भर लेते हैं ज़र्दा। फिर मर्ज़ी आये जहां थूक देते हैं पीक, कहां थूकते हैं वह स्थान भी आपको याद रहता नहीं..नहीं याद है आपको, तो फिर आप थूकते ही क्यों हैं ? बस यही कारण है, आपको एवोइड करने का।**’

रशीद भाई – जनाब इतना भी नहीं, ये तो हमारी झूठी कसमें खाते हैं...! कहते हैं, **“आपकी कसम खाकर कहता हूं, कल से ज़र्दा छोड़ दूंगा। अगर आप मुझे ज़र्दा खाते हुए देख लें तो कह देना मुझे, के वह देखो काबरिया कुत्ता ज़र्दा खा रहा है।”**

सावंतजी – अब आप कहिये, ऐसे इंसान के साथ कैसे निभाया जाय ?

दयाल साहब – इस में आप दोनों को, क्या तकलीफ़ ? जब इन साहब ने, आप लोगों को कुत्ता कहने की छूट दे दी है...तो, एक बार क्या ? उसे आप, दस बार कुत्ता कह दीजिये।

राजू साहब – [ठहाके लगाते हुए, कहते हैं] – अरे वाह, दयाल साहब। क्या कह दिया, आपने ?

[दयाल साहब की बात सुनकर, सभी ज़ोर से हंसते हैं। अचानक दयाल साहब की निग़ाह सीढ़ियों पर बैठे मोहनजी पर गिरती है। इस वक़्त वे बेचारे सट खोलकर, आराम से बैठे-बैठे खाना खा रहे हैं। उनके पास के स्टेप पर, चार कुत्ते बैठे हुए पूंछ हिलाते जा रहे हैं और साथ में मोहनजी को को इस मंशा के साथ ताकते जा रहे हैं के ‘शायद मोहनजी उन पर रहम खाकर, एक रोटी का टुकड़ा डाल दे ?’ अब दयाल साहब मोहनजी की ओर, उंगली का इशारा करके सबको बताते हैं के ‘देखो, मोहनिया अपने भंडारी भाइयों के साथ बैठा है।’ तभी प्लेटफोर्म पर खड़ी हावड़ा एक्सप्रेस के पैसेंजरों का सामान उठाये, कुलियों का झुण्ड उतरीय पुल चढ़ने लगता है। अब इस गाड़ी के सभी पेसेंजर, पुलिया चढ़ चुके हैं। इस गाड़ी का एक भी पेसेंजर, वहां खड़ा दिखायी नहीं दे रहा है। इतने में सीटी देती हुई पैलेस ओन व्हील शाही गाड़ी, धड़-धड़ की आवाज़ निकालती हुई सामने के प्लेटफोर्म पर आकर रुक जाती है। दूसरी तरफ़ रशीद भाई ख़ाली बोतल लिए हुए, सीढ़ियां उतर रहे हैं। प्लेटफोर्म पर आकर वे, शीतल जल के नलों के पास जाने के लिए क़दम बढ़ाते हैं। तभी उन्हें शाही गाड़ी का एक डब्बा दिखायी देता है, जिसके दरवाज़े के पास एक फोरिनर [अंग्रेज] को, कुली का इंतज़ार करता हुए देखते हैं। रशीद भाई को देखते ही, वह इन्हें हाथ के इशारे से अपने निकट बुलाता है। रशीद भाई उसके निकट आते हैं, अब वो फोरिनर उन्हें इशारे से सामान उठाने का हुक्म देता है। और बाद में, वह उनके सामने अंग्रेजी झाड़ता है।]

अंग्रेज – [सामान उठाने का इशारा करता हुआ कहता है]- **Hey gentleman, just pick up my attache and put it in taxi! Then tell me, how much is your charges ?**

[रशीद भाई तो ठहरे, सेवाभावी। वे तो झट उसकी अटेची उठाकर, पुल चढ़ने के लिए अपने क़दम बढ़ा देते हैं। उनके पीछे-पीछे वो अंग्रेज, बड़-बड़ करता हुआ चलता है।]

अंग्रेज – [पुल की सीढ़ियां चढ़ता हुआ कहता है] – प्लीज़, टेक योर चार्जेज़।

[वह अंग्रेज एक डोलर का नोट जेब से निकालकर, रशीद भाई को थमाता है। रास्ते में चलता हुआ एक कुली, उन्हें नोट लेते हुए देख लेता है। फिर, क्या ? उस कुली के गुस्से का, कोई पार नहीं। अब वह गुस्सेल कुली बिगड़े सांड की तरह, उनका रास्ता रोककर बीच में खड़ा हो जाता है। फिर, रशीद भाई से अटेची छीन लेता है। अब उन्हें, कटु शब्द सुनाता हुआ वह कहता है।]

कुली – [क्रोधित होकर, कहता है] – ओ बाबू, आज़कल यह पार्ट टाइम का धंधा कब से चालू किया है ? क्यों हम ग़रीबों के पेट पर, लात मार रहा है ?

अब वह अंग्रेज उस कुली को अच्छी तरह से, सर से लेकर पांव तक देखता है। कुली के कमीज़ के ऊपर टोकन लगा हुआ पाकर, वह रशीद भाई के ऊपर नज़र डालता है। रशीद भाई के कमीज़ पर किसी प्रकार का टोकन नहीं पाता, तब उसे सारा माज़रा समझ में आ जाता है। के, वास्तव में कुली कौन है ? सारा माज़रा समझ में आने के बाद, उस कुली से माफ़ी मांगता हुआ..वह अंग्रेज से कहता है।]

अंग्रेज – [अफ़सोस ज़ारी करता हुआ] – सोरी, सोरी। **Regrettably, the man wearing this red shirt I understood as a porter. Whereas, the porter is you ..**

[फिर, क्या ? थोड़ी देर बाद, वह कुली दिखायी देता है। जो अपने सर पर सामान रखकर पुल उतर रहा है, और उसके पीछे-पीछे वह अंग्रेज चल रहा है। थोड़ी देर बाद, रशीद भाई अपने साथियों के पास चले आते हैं। बाद में वे अपनी आपबीती सुना डालते हैं, के 'किस तरह उस अंग्रेज ने, उन्हें एक डोलर थमाया था।' अब वे उस डोलर के नोट को, सभी साथियों को दिखलाते हैं। उधर सावंतजी को उनकी यह मूर्खता समझ में आ जाती है, के 'कहीं किसी पुलिस वाले ने इनको डोलर के साथ देख लिया, तो इन्हें ले जाकर हवालात में बंद करके आ जायेगा। क्योंकि, डोलर रखना गुनाह होता है।' यह बात सोचकर, वे अपना सर धुन लेते हैं। के, अच्छा है..इनका दोस्त ?]

रशीद भाई – यह क्या थमा दिया मुझे, इस गोरे बन्दर ने ? [पागलों की भांति, उस डोलर को देखते हैं।] खुदा रहम, मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है ?

सावंतजी – [अपना सर पकड़कर, कहते हैं] – बन्दर क्या जाने, अदरक का स्वाद ? मुंशीजी यह डोलर का नोट है, कोई खाने की चीज़ नहीं है। क्यों देख रहे हैं आप इसे, बार बार बन्दर की तरह ?

रशीद भाई – मैं तो ठहरा भोला इंसान, मैंने कब देखा डोलर ?

[इधर सावंतजी सीढ़ियां चढते गुलाबे हिंजड़े को देख लेते हैं, फिर वे उन्हें सावधान करते हुए उनसे कहते है।]

सावंतजी – रशीद भाई, अब इस डोलर को दिखलाओ मत किसी को..और चुप-चाप रख लो, अपनी जेब में। किसी पुलिस वाले ने आपको डोलर के साथ देख लिया, तो वह आपको हवालात के अन्दर बैठा देगा। आप जानते नहीं, डोलर रखना गुनाह है।

[मगर गुलाबा हिंज़ड़ा ठहरा, कुचमादिया का ठीकरा। उससे क्या छुपा रहे, यह डोलर का नोट ? वह उनके नज़दीक आकर, कहता है..]

गुलाबा – [ताली पीटता हुआ, कहता है] – हाय हाय, मुंशीजी। क्या हाल है, आपके ? अरे मेरे समधीसा, यह पार्ट टाइम का धंधा कब चालू किया आपने ? हाय हाय, मेरे सेठ मोहनजी के हितेषी यह क्या कर डाला आपने ?

[इतना कहकर, वह रशीद भाई के रुख़सारों [गालों] को सहलाता है।]

रशीद भाई – [गुलाबे का हाथ दूर लेते हुए कहते हैं] – धंधा, कौनसा धंधा ? धंधा तो आप लोग करते हैं, नाचने का।

[रशीद भाई जेब के अन्दर, डोलर का नोट रखते है।]

गुलाबा – दायन से पेट छुपा नहीं रहता है, मुंशीजी। क्या कहूं, आपको..? यह लाल कमीज़, आपके बदन पर क्या जच रहा है यार ? वाह समधीसा, आज़ तो आपने, कुलियों की जबरी कमाई की है ? अब नोट को छुपाओ मत, धीरज रखो मैं आपसे नोट लूंगी नहीं।

[फिर क्या ? गुलाबो, रशीद भाई की बलाइयां लेने लगा। फिर गीत गाता हुआ, उनके चारों ओर ताली बजाकर नाचता है।]

गुलाबा – [नाचता हुआ, गाता है] – **‘सर पर टोपी, लाल शर्ट जो पहने मेरा यार। हो जी, तेरा क्या कहना ? कुली हमारा यार, जो पहने लाल कमीज़..हो जी, तेरा क्या कहना ?’**

दयाल साहब – रशीद, तेरे भाई-बंधु को रोक। यहां खेल मत करवा, यार।

[यह सुनते ही गुलाबा झट रशीद भाई को छोड़कर, आ जाता है दयाल साहब के पास। और उनके गाल सहलाता हुआ, कहता है।]

गुलाबा – हाय हाय, मेरे सेठ। तू क्यों नाराज़ होता है ? मुंशीजी तो हमारे समधीजी है, और आप इनके मित्र हैं। मैं आप लोगों को, कैसे तंग करूंगी ? चलिए, जनाब आज तो खुश ख़बर है..समधीसा ने नया धंधा खोला है, कुलीगिरी का। उन पर गोळ कर दूं, कहीं इनको नज़र न लग जाय ?

[फिर क्या ? गुलाबा पर्स से, दस रुपये का नोट निकालता है। फिर, रशीद भाई के ऊपर वारकर गोळ करता है। फिर वो नोट, दयाल साहब को थमा देता है। इस खिलके को देखकर, राजू साहब ठहाके लगाकर हंस पड़ते हैं। उनको हंसते देखकर, दयाल साहब को बहुत बुरा लगता है। वे राजू साहब को, खारी-खारी नज़रों से देखते हैं।

गुलाबा – [हंसता हुआ, दयाल साहब से कहता है] – अरे सेठ, तू तो खुशअख्तर है। अब खारा-खारा क्यों देख रहा है, राजू साहब को ?

[हंसी के ठहाके लगाता हुआ, गुलाबा वहां से चला जाता है।]

रशीद भाई – [दयाल साहब से कहते हैं] – अब यह नोट डाल लीजिये, अपनी जेब में। शकुन बहुत अच्छे हुए है आपके, क्या आप नहीं जानते ? हिज़ड़े सबसे लेते हैं, देते नहीं। यदि किसी को दे दे, तो वह इंसान भाग्यशाली होता है। खुदा की बरक़त से, आपका कोई भला होने वाला है।

राजू साहब – आज़ तो सभी का भला हुआ है, रशीद ने कमा लिया..एक डोलर, और दयाल साहब आपने कमा लिये दस रुपये।

[मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच रोशन होता है। रशीद भाई प्लेटफोर्म नंबर पांच पर खड़े हैं। अचानक उन्हें दीनजी भा’सा उतरीय पुल चढ़ते दिखाई देते हैं। उनको आते देखकर, रशीद भाई उनसे मिलने वापस पुल की सीढ़ियां चढ़ते हैं। पुलिये के प्लेटफोर्म पर कई कुली और फ़कीर बैठे हैं। वहां रेलिंग को पकड़े हुए, कई एम.एस.टी. होल्डर्स और अन्य यात्री भी खड़े हैं।

प्लेटफोर्म दो पर उतरने वाली सीढ़ी के चौथे नंबर के स्टेप पर, मोहनजी विराज़मान है। उन्होंने, पहली पारी का भोजन अरोग लिया है। अब बोतल से ठंडा पानी पीते हैं, फिर अपना पेट सहलाते हुए कह रहे हैं..]

मोहनजी – [पेट सहलाते हुए] – जय बाबा री, सा। बाबा की मेहरबानी से पहली पारी का भोजन अरोग लिया है।

[भोजन के सट [टिफ़िन] को वापस बंद करते हैं। अब वे बैग से निकालते हैं, ब्लड-प्रेसर की गोली..फिर उसे पानी के साथ गिट जाते हैं। फिर वे जेब से निकालते हैं, मिराज़ ज़र्दे की पुड़ी। थोडा ज़र्दा निकालकर, हथेली पर रखते हैं...फिर दूसरे हाथ से उसे मसलकर, उस पर थप्पी लगाते हैं। फिर ले बाबा का नाम, और रख देते हैं ज़र्दे को होंठों के नीचे। उन्हें, कहां ध्यान ? उनके ज़र्दे से उड़ी खंक, पहले स्टेप पर बैठे दीनजी भा'सा व रशीद भाई के नासा-छिद्रों में चली जाती है। फिर जनाब, दोनों ज़ोरों से छींकते जाते है। इस तरह ज़र्दा सेवन न करने की नसीहत, मोहनजी को देने के लिए..वे दोनों दो स्टेप नीचे उतरकर, मोहनजी के नज़दीक आकर बैठ जाते हैं।

दीनजी भा'सा – [बैठते हुए कहते हैं] – **विश्राम क्या करें, रशीद भाई ? कहीं तो तक़लीफ़ देती है, यह नाइका। कहीं तकलीफ़देह है, यह ज़र्दे की खंक। छींकते-छींकते बुरा हाल हो गया, हमारा। अरे..अरे, जीना हराम कर दिया इस ज़र्दे ने।**

रशीद भाई – जनाब नाइका है तो जबरी, कहते हैं..**"नाइका निखेत राण्ड, नाश कीना नाक का। आदमी बिगाड़ दीना, नौ सौ लाख का।"**

दीनजी – इस नाइका को तो रशीद भाई, दीजिये लाप्पा। अब बात कीजिये ज़र्दे की, जिसने हमारे नौ सौ लाख के आदमी मोहनजी को ज़रूर बिगाड़ रखा है। क्या करें जनाब, अब तो इनके दोस्त भी इनको एवोइड करने लग गए हैं।

मोहनजी – [मुंह से ज़र्दे की बरसात करते हुए कहते हैं] – भा'सा, आप इनको मेरा साथी मत कहो। ये दोस्त नहीं है, दोष ज़रूर हैं।

दीनजी – क्यों पागलों जैसी बातें करते हो, मोहनजी ? एक ही विभाग के, और रोज़ आते हो साथ-साथ..फिर काहे का गुस्सा, इन बेचारे दोस्तों पर ?

मोहनजी – भा’सा, मेरे दर्द को जाने कौन ? जैसे ही मैं इनके पास आता हूं, ये भोड़े किन्नी काटकर दूर चले जाते हैं। कल या परसों की बात है, गाड़ी में बैठे दयाल साहब से इतना ही कहा, के...

दीनजी – क्या कहा, जनाब ?

मोहनजी – कमेटी की रिपोर्ट के ऊपर, अपने हस्ताक्षर कर लीजिये। मगर क्या बोले जनाब, आपको पता है ? उन्होंने कहा [दयाल साहब की आवाज़ में] ‘क्यों करता हैं, तंग मुझे ? मेरी ड्यूटी यहां नहीं बोलती, कह दिया एक बार नहीं करता हस्ताक्षर।’ और जनाब, बाद में...

दीनजी – आगे क्या हुआ, जनाब ?

मोहनजी – होना क्या ? उसी वक़्त उठा दिया राजू साहब को, और फिर दोनों रुख़्सत हो गए और फिर जाकर बैठ गए दूसरे केबीन में। अब करूं क्या, भा’सा ? मैं तो प्रेमवश जाता हूं इनके पास, और ये माता के दीने उठकर चले जाते हैं ?

दीनजी – मोहनजी, हाथ की सभी अंगुलियां एकसी नहीं होती। इसी तरह आपके मित्र भी, अलग-अलग स्वाभाव के हैं। देख लीजिये, रशीद भाई आपकी सेवा करते-करते थकते नहीं। सावंतजी का मन, आपके बिना नहीं लगता। वे तो कहते हैं, के ..

मोहनजी – क्या कहा ? यही कहा होगा, के मैं जानवर हूं ?

दीनजी – क्यों लोगों में दोष ढूंढ़ते हो, मोहनजी ? इन्होने तो यह कहा के ‘दयाल साहब और राजू साहब तो हमारे अधिकारी हैं, उनके हुक्म को वे कैसे टाल सकते हैं ? ये हम दोनों को अपने पास बैठाना चाहें, तो हमको बैठना पड़ता है। मगर हमारा दिल, मोहनजी में लगा रहता है।’

[मोहनजी के चेहरे पर ख़ुशी छा जाती है, अब वे बैठे-बैठे रेलिंग को थामकर उसी जगह नाक सिनककर को साफ़ कर लेते हैं। नाक साफ़ करके, हाथ रेलिंग से पोंछ लेते हैं।

मोहनजी – सावंतजी ही एक समझदार इंसान है, वे सलाह तो अच्छी ही देते हैं। किसी के मुंह पर उसकी इज़्ज़त की बखिया नहीं उधेड़ते। रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा सेवाभावी तो है, मगर...

दीनजी – कहीं आपके लिए, बोतल में गर्म या खारा पानी..तो लेकर, नहीं आ गए ?

मोहनजी – नहीं जनाब, ऐसी बात नहीं है। वे तो अधिकारियों के आते ही, झट पाला बदलकर उनकी तरफ़ मिल जाते हैं। अरे जनाब, आपको क्या बताऊं ? इतना जल्दी तो, गिरगिट भी अपना रंग नहीं बदलता है।

दीनजी – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – तब ही तो रशीद भाई झट वस्त्र बदलकर, अलग-अलग रूप बना लेते हैं। कभी कैसा, तो कभी कैसा ? आज़ ही देख लीजिये, इन्होने कैसा रूप बनाया है कुली का ?

[दीनजी भा'सा की बात सुनकर, मोहनजी ठहाके लगाकर हंसते हैं...हंसते-हंसते, उनके पेट के बल खुलते जाते हैं। इनको इस तरह हंसते देखकर, रशीद भाई जल-भुन जाते हैं। और दांत निपोरते हुए कहते हैं, के..]

रशीद भाई – [गुस्से में दांत निपोरते हुए कहते हैं] – रहने दीजिये भा'सा, ऐसे आप मुद्दे कैसे बदल सकते हैं ? बात तो थी जनाब, मोहनजी की..मुझ बेचारे ग़रीब को, कैसे ला रहे हैं बीच में ?

दीनजी – रशीद भाई अब बीच में मत आना, बस अब तो आप खुश हैं ? [मोहनजी की तरफ़, देखते हुए कहते हैं] मैं ऐसे कह रहा था मोहनजी, आप पढ़े-लिखे एम.ए., एल.एल.बी. पास समझदार आदमी हैं...आप जितना पढ़ा-लिखा इंसान, मिलता कहां है ? आपकी पढ़ाई में कभी 'मनोविज्ञान' विषय रहा है, या नहीं ?

मोहनजी – क्यों नहीं रहा, जनाब ? I have lived in full life, study. Say dear, any advice for me!

रशीद भाई – हुज़ूर, हिंदी में कहिये। जानता हूं, आप एम.एल.एल.बी. हैं..

मोहनजी – रशीद भाई मैंने कहा है के "मैंने तो पूरा जीवन, अध्ययन में गुज़ारा है। कहिये जनाब, मेरे लिए कोई सलाह ?" अब दीनजी भा'सा, कोई सलाह हो तो दीजिये...

दीनजी – मोहनजी, आप कोई चीज़ लेते हैं तो लेते हैं मुफ़्त में। इसलिए आप को यह सलाह, मुफ़्त में दे रहा हूं। एक बात याद रखना, आप सुनकर नाराज़ मत होना। अब सुनिए, कान खोलकर। ये लोग आपको एवोइड करते हैं, तो आप उनसे पहले इनको एवोइड कर दीजिये।

मोहनजी – और कोई हुक्म, मेरे योग्य ?

दीनजी – दूसरी बात मोहनजी, आप अपनी आदतें बदल लीजिए।

मोहनजी – यह क्या कह दिया, जनाब ? मैं तो बहुत अच्छा हूं, इसलिए मेरा नाम मेरे माता-पिता ने रखा है, "मोहन"..यानी मोहित करने वाला श्री कृष्ण जैसा सुन्दर। जब मैं इतना सुन्दर हूं, तब मेरी आदतें कैसे खराब हो सकती है ? बताइये, आप मुझे..क्या मैं छोरियां छेड़ता हूं, या दारु पीता हूं ? कौनसी आदत, खराब है ?

दीनजी – याद कीजिये, मैंने आपसे पहले ही वादा ले लिया था के 'आप मेरी बात सुनकर, नाराज़ नहीं होंगे...!' मगर आप तो, मुंह से अंगारे उगलते जा रहे हैं ? यही हाल रहा आपका तो, कौन आपके पास बैठकर आपकी भलाई की बात करेगा ?

मोहनजी – माफ़ कीजिये, आगे से मैं चुप-चाप बैठा रहूंगा। आगे कहिये, जनाब।

दीनजी – पहले आप, जर्दे की आदत छोड़ दीजिये। मै जानता हूं, जनाब। आपके पेट में कब्ज़ी होगी, बिना सुर्ती चखे दीर्घ-शंका का निवारण नहीं होता होगा ? जनाब, इस कब्ज़ी का इलाज़ हो सकता है। मगर मोहनजी यह कहते हुए हमको ख़ुद को शर्म आती है, के 'इतने ज़्यादा पढ़े-लिखे को कैसे कहें के "आप, होंठों के नीचे ठूंस-ठूंसकर तम्बाकू रखते हैं..और इसे आप, अपनी शान समझते हैं ?'

मोहनजी – सच्ची बात है, आपने तो रोगी की नाड़ पकड़ ली।

दीनजी – पहले पूरी बात सुना करो मोहनजी, फिर आप बोला करें। सुनिये, जनाब। इंसान के पास आला दर्ज़ा का दिमाग़ है, वह भी दूसरे जानवरों से ज़्यादा विकसित। दिमाग़ का सीधा सम्बन्ध है, मनोविज्ञान से।

मोहनजी – जी जनाब, आपने सौ फ़ीसदी बात सच्च कही है। अब आगे फ़रमाइए, क्या कहना चाहते हैं आप ?

दीनजी – अपने मन के विचार, लोगों के लिए अलग-अलग होते हैं। इन विचारों के दबाव में आकर हम वैसा ही बोलते हैं, वैसा ही उनके साथ व्यवहार रखते हैं। अब एक बात यह सुन लीजिये, समाज की व्यवस्था का अनुकरण करके चलने वाला व्यक्ति हमेशा मिलनसार कहलाता है।

रशीद भाई – [मोहनजी के थोड़ा और नज़दीक बैठकर, कहते हैं] – सच्च बात यह है, सोच-समझकर बोलना चाहिए। कहीं आप ऐसा न बोल दें, जिससे अगले आदमी का पानी उतर जाये या वह बुरा मान ले ? आदमी का पानी उतर जाने के बाद, आदमी की क्या हालत होती है..? उसकी कल्पना करना भी, मुश्किल है। ऐसा कोई काम आप मत करें, जिससे आपको उलाहना मिलता हो।

मोहनजी – रशीद भाई, आप ऐसा मत बोलिएगा..जैसे मैंने कोई, गुनाह कर डाला ?

रशीद भाई – मैं यह कहना चाहता हूं, साहब। ऐसे शब्द नहीं बोला करते हैं, जैसे 'आपने मुझको पानी पाया, मालिक अब आपको भी पानी देगा कोई।' **सभ्य-समाज में 'पानी देना' शब्द कहना, बुरा माना जाता है। इसका मतलब यह होता है, 'मरते वक़्त, कोई आकर उसको पानी देगा।' मरना शब्द मुख से निकालना, कितना बुरा है।**

दीनजी – देखिये, जनाब। जब राजा-महाराजाओं का राज था, तब युद्ध-क्षेत्र में कई योद्धा तड़फते दिखाई देते थे..ऐसी स्थिति में, वे रब से मौत मांगा करते..मगर मौत, उनके पास नहीं आती। ऐसे वक़्त उनकी तकलीफ़ को कम करने के लिए, राजा अपने सेवकों को हुक्म दे डालते, के 'जाओ रे, जाकर उन योद्धाओं को पानी दे आओ।'

रशीद भाई – फिर क्या ? वे सेवक युद्ध-क्षेत्र में जाकर उन तड़फते सैनिकों का सर तलवार से काट आते, इस तरह उनको मौत के लिए तड़फना नहीं पड़ता। मोहनजी, अब आप 'पानी देने' का अभिप्राय समझ गए, या नहीं ?

[बैग से बोतल निकालते हैं, फिर दो घूँट पानी पीकर रशीद भाई आगे कहते हैं।]

रशीद भाई – देखिये, जनाब। **ये दो घूँट पानी पीया है, मैंने..मगर पानी लिया नहीं। पानी लेते नहीं, बल्कि पीया जाता है या पिलाया जाता है। यह कभी नहीं कहना चाहिए, पानी दे दो या पानी लिया। मारवाड़ में इन शब्दों को ओछा शब्द माना गया है, ओछे आदमी या असभ्य आदमी को ही ऐसे शब्द काम लेने की आदत होती हैं।**

[दो घूँट और पानी पीकर रशीद भाई, बोतल को वापस अपने बैग में रख लेते हैं।]

रशीद भाई – [बोतल बैग में रखकर, कहते है] – **'बोलने की एक कला होती है, जिसे हम तहज़ीब कहते हैं। यह तहज़ीब हम लोगों को सिखाती है के, अपने हर छोटे-बड़े आदमी, औरत या बच्चों**

को पुकारने के लिए 'तू-तकारे' के अल्फाज़ काम में नहीं लेने चाहिए। जैसे 'ए मोहम्मदिया, ए रे रामूड़ा आदि' पुकारने के असभ्य तरीके हैं।'

मोहनजी – फिर कैसे पुकारे किसी को, आप ही बतला दीजिये ना।

रशीद भाई – आपको ऐसे ओछे शब्द बोलने नहीं चाहिए, जैसे 'ए रे चम्पला, कढ़ी खायोड़ा'। जनाब, आपको आदर देते शब्द काम में लेने चाहिए। जैसे चम्पा लालजी सा, कवंर साहब, बाईसा, खम्मा घणी, पधारोसा आदि आदर-सूचक शब्द काम में लेकर, अगले इंसान के दिल में अपने प्रति आदर या सम्मान के भाव पैदा करने चाहिये।

मोहनजी – सत्य कहा, आपने। रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा, अब आगे कहिये।

रशीद भाई – [त्योंरियां चढाते हुए कहते हैं] – फिर कह दिया आपने, **कढ़ी खायोड़ा** ? अभी-अभी आपको क्या बात समझायी, मैंने ? एक बार और कह दूं, आपको ? हर आदमी के नाम के पीछे, 'सा', 'जी', भाई, या भईसा जैसे आदर सूचक शब्द आपको प्रयोग में लाने चाहिए। आप लोगों को आदर देंगे, तब लोग आपको स्वत: आदर देंगे।

दीनजी – अब इस बात को छोड़िये, मोहनजी। अब तो आप, दूसरी बात समझ लीजिये के 'आप कुछ नहीं हैं, और न आपने कोई काम किया है...जो किया है, उस ऊपर वाले ईश्वर गोपाल ने किया है।' देखिये, गीता में क्या लिखा है इस बारे में ?

मोहनजी – मुझे क्या पता, मैने कब पढ़ी गीता ?

रशीद भाई – **नहीं पढ़ी तो जनाब, न्यायालय में गवाहों को गीता पर हाथ रखकर..कसम दिलाने का आपका काम, कैसे संपन्न होगा ? आपको वकील बनना ही है, तो जनाब कुरान-शरीफ़ भी पढ़ लीजिये..आख़िर, इसके ऊपर भी हाथ रखकर कसम दिलवायी जाती है..इन गवाहों को।**

दीनजी – अरे रशीद भाई, कहां बीच में आकर आपने अपनी पुंगी बजानी शरू कर दी यार, पहले मुझे तो पहले बोलने दीजिये। सुनिये मोहनजी, गीता में श्री कृष्ण ने कहा है, सभी कर्म मुझे अर्पण कर दीजिये। सभी कर्म आपने उनको अर्पण कर दिए हो तो, फिर आपको किस बात का अंहकार ? के...'

रशीद भाई – अरे जनाब, आपको तो कए गए सरे कर्मों को "गोपाल" को अर्पण करना है। फिर...

मोहनजी – उस ताश खेलने वाले उस गोपसा को अर्पण कर दूं, क्या...मेरे सरे कर्म ? आप तो जानते ही हैं...गोपाल यानी गोपसा..

रशीद भाई – मैंने कब नाम लिया गोपसा का ? मैं तो उस अविनाशी श्री कृष्ण की बात कर रहा हूँ, जिसका प्रसाद आप बड़े चाव से अरोगते हैं। यानी, बाल गोपाल का..अरे जनाब, आपने जब अपने किये सारे किये कर्म गोपाल को अर्पण कर दिए तो फिर काहे का पछतावा..

दीनजी - काहे सोच-सोचकर अपना बी.पी. बढ़ाना..? 'मैंने यह किया हैं, मैंने वह किया है।' अरे जनाब, जो भी किया..वह कर्म किया है, उस अविनाशी गोपाल ने।

रशीद भाई - बस मोहनजी, आप अपने मानस में इस बात को बैठा दें के 'आपने कुछ नहीं किया..!' फिर कोई कर्म किया ही नहीं, के 'यह काम अच्छा हुआ या बुरा ?' तब आपको किस बात का, तनाव रहेगा..आपके दिमाग़ में ?

दीनजी – जिस काम को करने के बाद, आपकी आत्मा दुखी होकर आपको परेशान करती है और आपका मानसिक तनाव बढ़ जाता है..हाई या लो ब्लडप्रेशर हो जाता है, आपको। फिर आप गिट जाते हैं, ब्लड-प्रेशर की गोलियां..ऐसा क्यों करते हैं, जनाब ?

रशीद भाई - सुनिए, सारे कर्म गोपाल को अर्पण करने के बाद, आप अच्छा-बुरा कर्म करने के जिम्मेवार कब से बन गए ? फिर, आपको काहे का तनाव ? फिर, गोलियां लेने की कहां ज़रूरत ? न रहेगा तनाव, न गिटेंगे आप गोलियां।

दीनजी – मोहनजी, दिमाग़ में ऐसी बातें क्यों संजोकर रखते हैं..जिसके सोचते रहने से आपका दिल दुखता है, शरीर खराब होता है...? फिर आपको नीन्द आती नहीं, इन बातों को भूलने के लिये आप नींद आने की गोलियां गिटते हैं..!

मोहनजी – वाह भा'सा, वाह आपके पास तो जनाब इतना इल्म है के 'आसानी से इंसान के सारे मानसिक तनाव दूर हो सकते हैं।' अब तो मैं सारी व्यक्तिगत समस्याएं, आपके सामने ही रखूंगा। अब मुझे, किसी मनो-चिकित्सक के पास जाने की कोई ज़रूरत नहीं।

दीनजी – **समस्या तो हम ख़ुद होते हैं, जो समस्या को जन्म देते हैं। आदतों के अधीन हो जाने से, इंसान ख़ुद समस्या को जन्म देता है। यह सोच लीजिये, जनाब। के, 'इंसान को आदतों के अधीन नहीं रहना है..आदतें, इंसान के अधीन रहनी चाहिये।'**

मोहनजी – वाह, भा’सा वाह। अब आगे कहिये, आपकी एक-एक बात मार्के की है।

दीनजी – यह सोचा करो आप, के **‘ये दोनों अधिकारी आपको एवोइड क्यों करते हैं ?’** अगर वे आपको एवोइड करते हैं, तब आप इन दोनों को पहले ही एवोइड लीजिये। देखिये जनाब, **चुम्बक लोहे को अपनी ओर खींच सकता है..मगर, लोहा चुम्बक को अपनी ओर नहीं खींच सकता।**

रशीद भाई – बस मोहनजी, आप तो बन जाइये चुम्बक की तरह। इसके लिये जनाब, अर्ज़ करता हूं **‘आपको कम करनी होगी ज़र्दे की मात्रा, और बढ़ाना होगा आपमें...गुणों का भण्डार।’** देखिये, मुझे भी कब्जी की शिकायत है..मगर मैं लेता हूं, यह ज़र्दा ख़ाली कण मात्र। आप तो मालिक, ठोकते हैं अपने शरीर के माफ़िक ?

मोहनजी – [रशीद भाई के सर पर हाथ रखकर, कहते हैं] – मैं कहता हूं, रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा। के, “ आज़ से ज़र्दा छोड़ दिया मैंने। आपकी कसम खाकर कहता हूं, यह बात..अगर आप मुझे जर्दा खाते हुए देख लें, तो मुझे आप कह देना..के, काबरिया कुत्ता ज़र्दा खा रहा है।’

रशीद भाई – तब बैग में रखी हुई ज़र्दे की पुड़िया, मुझे दे दीजिये..मेरे काम आ जायेगी। और क्या, अब आपको ज़र्दा काम में लेना नहीं ? आपको कण-मात्र चाहिए, तब आप मुझसे मांग लिया करें।

मोहनजी – आपको कैसे दे दूं, रशीद भाई ? आप ठहरे मेरे हितेषी, आपके शरीर का नुकसान कैसे होने दूंगा ? न जाने रामा पीर, आप कहीं ठोक जाएँ जर्दा..अपने शरीर के माफ़िक।

दीनजी – फिर फेंक दीजिये, जनाब। नहीं तो आप ज़र्दा ठोक कर, हमारे सेवाभावी को मार डालेंगे। आख़िर, आपने इनके सर की कसम खायी है।

रशीद भाई – मैं जनता हूं के ‘आप न तो फेंकेगे, और मुझे भी नहीं देंगे...यह ज़र्दा ? फिर किसको देकर, सवाब लेंगे आप ?’

मोहनजी – ना तो फेंकूंगा, और ना किसी को दूंगा..**आख़िर, यह ज़र्दा पैसे ख़र्च करके लाया हूं। यह कोई मुफ़्त की चीज़ नहीं है, जो फेंक दूं आपके कहे-कहे।** बस जनाब, यह मिराज़ ज़र्दे की पुड़िया एक तरफ़ पड़ी रहेगी बैग में।

दीनजी – मोहनजी..बस। मेरी इतनी बड़ी तक़रीर, बेकार गयी ? दिया गया इतना बड़ा भाषण, बस...**भैंस के सामने बीन बजाने के माफ़िक रहा।** कहीं दूसरी जगह तक़रीरों की बीन बजाता, तो किसी भले पुरुष को कोई फ़ायदा तो होता।

[इतने में, रशीद भाई को प्लेटफोर्म पर जुलिट दिखायी दे जाती है। जो सीढ़ियां चढ़कर उनकी तरफ़ ही आ रही है। उसको देखकर, रशीद भाई कहते हैं..]

रशीद भाई – [जुलिट को देखकर, कहते हैं] – अब आपको मना करने वाला है, कौन ? लीजिये जनाब, नर्स बहनजी पधार गए हैं। आप चाहें तो उनके पास बैठकर बीन बजाते रहिये, या उनको पास बैठाकर मधुर वाणी में गुफ़्तगू करते रहिये...जैसी, आपकी मर्ज़ी।

[जुलिट सीढ़ियां चढ़कर उनके पास आती है, उसको देखते ही रशीद भाई अपना मुंह दूसरी तरफ़ कर लेते हैं। वह नज़दीक आकर, दीनजी से कहती है..]

जुलिट – भा'सा, हाऊ आर यूं ? व्हाट इज़ दा मटर ओफ डिसकसन ?

दीनजी – आई एम क्वाईट वेल। लिव इट, मेडम। सब्जेक्ट वाज़, हाऊ टू हार्म फुल टूबेको [ज़र्दा] ?

[अचानक उसकी निग़ाह गिर पड़ती है, रशीद भाई के ऊपर। जो दूसरी तरफ़ मुंह किये हुए बैठे हैं। उनको इस तरह अजनबी की तरह बैठे देखकर, उससे रहा नहीं जाता..वह रशीद भाई को ज़ोर से आवाज़ देती हुई, उन्हें कहती है।]

जुलिट – [ज़ोर से आवाज़ देती हुई, कहती है] – हेलो चच्चाजान। मुंह छुपाये क्यों बैठे हैं, आप ? [रशीद भाई का ध्यान नहीं देने पर] आपसे ही कह रही हूं, रशीद चच्चा। क्या आपने ज़र्दा छोड़ा, या नहीं ? अस्पताल में लगे, बड़े-बड़े इश्तिहार देखे नहीं आपने ? **जर्दा-सेवन करने से, दांत ख़राब हो जाते हैं। मुंह और गले का कंसर इसी से होता है चच्चा, छोड़ दीजिये..ऐसी हानिकारक चीज़...जिससे आपके शरीर को हानि पहुंचती हो।** आप जान लीजिये कि, यह जर्दा ज़िंदगी के **रास्ते का रोड़ा** है।

रशीद भाई – [मुंह को जुलिट की तरफ़, घुमाते हुए कहते हैं] – बहुत कम कर दिया है, हुज़ूर। मगर..

जुलिट – अब आप अगर-मगर कहो मत। जानते हैं, आप ? मैक्स इंडिया फाउंडेशन की मोहिनी दलजीतसिंह कहती है कि "**आज़कल अस्पताल में प्रतिदिन, जर्दा सेवन करने वाले ऐसे रोगियों की**

बाढ़ सी आई हुई है...जिन्हें मुंह और गला कैंसर हो चुका है । दुःख की बात यह है कि, अभी जो मरीज़ आ रहे हैं.. उनमें, अधिकतर युवा है । जिनकी उम्र, मात्र 15 साल से 35 के बीच है ।

दीनजी – सच कहा, आपने। पहले जहां 50 से अधिक उम्र के लोगें में कैंसर होता था, आज वहां 15 साल की उम्र में ही हो रहा है..यह रोग । यंहा जितने लोगें में कैंसर की पहचान हो जाती है, उनमें से अधिकांश एक साल के अंदर ही दम तोड़ देते हैं । इस तरह की जो स्थिति हो रही वही चिंताजनक है।

जुलिट – सच्च बात यही है, भा’सा। सिगरेट और तम्बाकू उत्पाद निषेध अधिनियम, 2003 की धारा 4 बच्चों को तम्बाकू उत्पादों से दूर रखेगी और इससे कैंपस में भी साफ सुथरा वातावरण बनेगा । अगर हम बचपन से ही बच्चों को तम्बाकू सेवन के खतरों के प्रति आगाह करें तो वे छोटे में तम्बाकू सेवन की शुरुआत करने वालों बच्चों की संख्या बहुत कम हो जाएगी और इस तरह कैंसर को भी रोक पाएंगे।

दीनजी - हैल्थ फाउंडेशन के ट्रस्टी संजय सेठ ने स्वास्थ्य मंत्री के द्वारा लिए गए निर्णय को सकारात्मक बताते हुए कहा है, कि “खादय सुरक्षा विभाग को जो जिम्मेदारी दी गई है कि, चबाने वाले तंबाकू उत्पाद भी इसी विभाग के अंदर आते है। मारवाड़ के लोगों खासकर युवाओं को, इससे बचाया जा सकेगा । सरकार का यह महत्वपूर्ण निर्णय है कि, इससे लोगों की जिदंगी को भी, सुरक्षित वातावरण प्रदान किया जाएगा।“

रशीद भाई - जुलिट बहनजी सा, मेरी बात तो सुनिए। दीनजी भा’सा को भी आपने, अपनी बातों में लगा दिया....अपनी गुफ़्तगू में ? पहले सुनिए मेरी समस्या, मैं अभी तक गेस्ट्रिक प्रोबलम से परेशान हूं। यह बात ज़रूर है, ‘बालोतरा अस्पताल में आपके सामने, आपके सर-ए-अज़ीज़ की कसम खायी थी..आगे से, जर्दा सेवन नहीं करूंगा।’ खता हो गयी, आगे से ऐसी ग़लती नहीं होगी।

दीनजी – फिर केवल मोहनजी को, क्यों दोष दें ? रशीद भाई आप पर भी कोई तक़रीर असर करती नहीं, आप भी मोहनजी की तरह झूठी कसम खाने के आदी हैं ? फिर क्या ? **दोनों के पिछवाड़े ढालम-ढाल, जय गोविंदा जय गोपाळ।**

जुलिट – [मुस्कराती हुई कहती है] – जानती हूं, भा’सा। [रशीद भाई से कहती है] मुझे याद है, चच्चा। आप अपनी आदतों से लाचार हैं, जानती हूं आप मेरा कितना हुक्म मानते हैं ? आपकी दुल्हन बेगम पेट से है, पता है आपको ? इस वक़्त, बड़े-बूढ़ों का घर में रहना कितना ज़रूरी है।

रशीद भाई – [अचरच करते हुए, कहते हैं] – आपको इतनी बात किसने बता दी, हुज़ूर ?

जुलिट – आपकी खालाजान ने। दुल्हन को लेकर मेरे पास आयी थी, जांच करवाने के लिये। आपकी शिकायत कर रही थी, कहती थी के 'जनाब..रात के इग्यारह-बारह बजने के पहले घर लौटते नहीं।'

[इस वक़्त मोहनजी का मुंह ज़र्दे से इतना भरा हुआ है, के 'बेचारे मोहनजी को भय है "मुंह खोलकर अगर वे बोल भी दें, तो ज़रूर मुंह से ज़र्दा उछलकर आगे बैठे व्यक्ति के मुंह पर बरसात हो जायेगी ?" बस बैठे-बैठे, जुलिट का मुंह देखते जा रहें हैं। जैसे ही इस ख़ूबसूरत जुलिट की नज़रें मोहनजी से मिलती है, वह अपने लबों पर मुस्कान बिखेर देती है। फिर वे दोनों एक-दूसरे को, टका-टक देखते रहते हैं। मगर रशीद भाई बीच में, व्यवधान डालते हुए कह बैठते हैं..]

रशीद भाई – आप यह बताइये, यह मेरी पेट की कब्जी आख़िर कैसे ठीक होगी ?

जुलिट – [मुस्कराती हुई कहती है] – कभी नवचौकिया सिटी डिस्पेंसरी आ जाना, वहां डॉक्टर गौड़ से मिलकर मश्वरा ले लेंगे। अब, चलती हूं। ओ के बाय बाय, फिर मिलेंगे।

[इतना कहकर जुलिट रुख़्सत हो जाती है, मोहनजी के दिल में ख़लबली मच जाती है..के 'ऐसी ख़ूबसूरत जुलिट इस रशीद भाई को इतना भाव क्यों देती गयी ?' आख़िर, उनसे बिना पूछे रहा नहीं जाता, वे फटाक से रशीद भाई से सवाल कर बैठते हैं।]

मोहनजी - [पीक थूककर कहते हैं] - रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा। क्या क़िस्मत पायी है, आपने ? आपके आस-पास, जन्नत की परियां घुमती रहती है ? हमें भी कोई ऐसी तरकीब बता दीजिये जनाब, ताकि हमें भी इन परियों के दीदार होते रहें।

रशीद भाई – यों काहे कह रहे हैं, जनाब ? आप हुक्म दीजिये, आपके आस-पास भी ख़ूबसूरत लड़कियों की लाइन लगवा दूं ?

मोहनजी – क्यों नहीं...नेकी नेकी, पूछ पूछ। अब बताइये जनाब, इसके लिए मुझे क्या करना होगा ?

रशीद भाई – अरे जनाब, आपकी आदतों को देखते हुए मैं यह कहूंगा के आपके चारों तरफ़..

मोहनजी – [ख़ुश होकर, कहते हैं] – बताइये, बताइये रशीद भाई। यकीनन वे सुन्दर अप्सराएं , ..या फिर हूर की परियां ही होगी।

रशीद भाई – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – अरे मालिक, सुन्दर परियों और अप्सराओं के लिए आपको अपना हाथ ढीला रखना पड़ेगा, यानि पैसे ख़र्च करने पड़ेंगे। मगर सत्य बात तो यह है जनाब, अब आप जैसे महापुरुषों की जेब से पैसे निकलवाना, सहज नहीं रहा।

मोहनजी – बात तो सही है, कढ़ी खायोड़ा। पैसे कमाना, कोई सरल काम नहीं। ख़र्च कैसे करें, पैसे ? अभी तो मुझे, इन छोटे-छोटे बच्चों को पालना है। आप कोई दूसरा रास्ता बताओ कढ़ी खायोड़ा, जिसमें..

रशीद भाई – [बात काटते हुए, कहते हैं] – हींग लगे ना फिटकरी, मगर रंग अच्छा [चोखा] आना चाहिए। मै भी यही चाहता हूं, जनाब। बस आप आप ऐसे बोले, के "मानो आपकी जबान पर, मिश्री घुली हुई हो।" इसके लिए आप आते-जाते लोगों से रोळ [झगड़ा] मत किया करो, मिलनसार बने रहो। मगर, आप तो..

मोहनजी – मुझे क्या किसी पागल कुत्ते ने काटा है, जो आते-जाते लोगों की पिण्डी पकड़कर काटता रहूं ?

रशीद भाई – [मुस्कराकर, कहते हैं] – आपको कौन काट सकता है, मालिक ? आप तो ख़ुद अपने मुंह से कहला रहे हैं, हम आपको जबरा काबरिया कुत्ता कहें। अब कहिये आप, एक कुत्ता दूसरे कुत्ते को कैसे काटेगा ?

मोहनजी – रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा, ऐसे क्या कह रहे हैं आप ? आप तो जनाब, मेरी कही हुई बातों को पकड़ते जा रहे हैं ? मेरी इज्ज़त की बखिया उधेड़ने में, आपको क्या मज़ा आता है ?

रशीद भाई – हम आपकी बातें पकड़ते आ रहें हैं, मगर आप तो मालिक लोगों की सीटें पकड़ लिया करते हैं..और उन पर बैठकर, कब्ज़ा जमा देते हैं। खुदा रहम करे, आख़िर बैठने के लिए कितनी जगह चाहिये ? मगर आप कहते हैं, रोटी गिटने के लिए ज़्यादा ठौड़ चाहिये..और ठौड़ पाने के लिये, आप लोगों से झगड़ा करते आ रहे हैं ?

दीनजी – इस तरह मोहनजी आप बिना बात लोगों से करते रहते हैं झगड़ा, के 'मुझे बैठने के लिये, ज़्यादा ठौड़ चाहिये।' फिर कहिये जनाब, कौन आपसे दोस्ती करना चाहेगा ? कैसे आपके आस-पास, ख़ूबसूरत परियां घुमेगी ?

रशीद भाई – जाने दीजिये भा'सा, क्या करना इस परायी पंचायती का ? अब सुनिये, उदघोषक बोल गया है **'गाड़ी प्लेटफोर्म नंबर पांच पर आ रही है।'** अब चलो यार, क्या रखा है, परायी

पंचायती में ? देख लीजिये उधर, दयाल साहब और राजू साहब सीढ़ियां उतरकर प्लेटफोर्म नंबर पांच पर आ चुके हैं।

[सभी एम.एस.टी. होल्डर्स और पाली जाने वाले यात्री सीढ़ियां उतरकर प्लेटफोर्म संख्या पांच पर पहुंच चुके हैं। अब पाली जाने वाली गाड़ी सीटी देती हुई, प्लेटफोर्म संख्या पांच पर आकर रुक जाती है। यात्री खुले डब्बों में घुसने के लिए दौड़ पड़ते हैं। मगर अभी, शयनान डब्बों के दरवाज़े खुले नहीं है। सारे एम.एस.टी. होल्डर्स प्लेटफोर्म पर, दरवाज़े खुलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मगर रशीद भाई ठहरे, सेवाभावी। उनको फ़िक्र है, साथियों को बैठने के लिए जल्दी सीटें मिल जाये। उनके दिल में मची है उतावली, के 'कितनी जल्दी सीटों पर कब्ज़ा जमा लिया जाय ?' वे दो डब्बों के जोड़ को फांदकर चले आते हैं, दूसरी ओर। वहां पहुंचकर दरवाज़ा खोलते हैं, फिर शयनान डब्बे में चले आते हैं। फिर डब्बे की सारी बारियां खोल देते हैं, और इसके बाद दरवाजों के अन्दर की तरफ़ लगा हुआ लोक भी खोल देते हैं। फिर, अपने साथियों को आवाज़ लगाकर कहते हैं...]

रशीद भाई – आ जाइये..आ जाइये, जनाब। [मोहनजी को देखते ही, कहते हैं] अरे ओ मोहनजी, क्यों उतावली कर रहे हैं, जनाब ? पूरा डब्बा ख़ाली पड़ा है, आराम से बैठ जाइये आकर।

[उधर डब्बे के बाहर खड़े दयाल साहब मोहनजी का नाम सुन लेते हैं, रशीद भाई के मुंह से..और जनाब, आ जाते हैं टेंसन में। कहीं यह कमबख्त मोहनिया फिर बोर करने, उनके पास न आ जाय ? फिर, क्या ? वे तो झट, राजू साहब को सावधान करते हुए कह देते हैं..]

दयाल साहब – [राजू साहब को कहते हुए] – राजू साहब, थोड़ा ध्यान रखकर डब्बे में चढ़ना, पहले देख लेना 'कहीं यह मोहनिया, इस डब्बे के अन्दर चढ़ता हुआ हमारे सामने नहीं आ जाय ?'

राजू साहब – हां दयाल साहब, अब तो इस चिपकू से बचकर डब्बे में घुसना होगा। अजी जनाब, आपको कैसे कहूं ? अगर इस ईर्ष्यालु मोहनिये को मेरे परमोशन की ख़बर लग गयी, तो दिल जलाएगा अपना..और सारा रास्ता, काटना कर देगा मुश्किल।

दयाल साहब - सौ फ़ीसदी सच कहा है, आपने। यह ईर्ष्यालु ऐसा है राजू साहब, मेरी कुर्सी के तो पीछे ही लगा रहता है। फिर यह कमबख्त कैसे पचा पायेगा, आपके परमोशन की ख़बर ? कहेगा, 'वरिष्ठता में आप आते ही नहीं..फिर कैसे हो गया, आपका परमोशन ?' सर खपाना हो जाएगा, मुश्किल।

[थोड़ी देर में इंजन सीटी देता हुआ दिखायी देता है, प्लेटफोर्म पर खड़े सभी यात्री अपने-अपने डब्बों में घुस जाते हैं। अहमदाबाद-मेहसाना लोकल गाड़ी, रफ्ते रफ्ते प्लेटफोर्म छोड़ देती है। आज़

इस डब्बे में मोहनजी के साथियों के अलावा मास्टर मधुसूदनजी, पी.टी.आई. सुपारी लालसा, जुलिट, चौधरीजी और चच्चा कमालुद्दीन का पूरा परिवार भी यात्रा कर रहा है। मधुसूदनजी वक़्त गुज़ारने के लिए, पल्स पोलियो कार्य-क्रम के विषय पर नर्स जुलिट से वार्ता कर रहे हैं।]

मधुसूदनजी – सिस्टर आपका काम यही है, प्लस पोलियो के शिविर में जाना। मगर यह सरकार हम अध्यापकों को क्यों इस काम में लगाकर, कोल्हू के बैल की तरह हमसे काम लेती है ?

सुपारी लालसा – [लबों पर मुस्कान छोड़ते हुए, कहते हैं] – जुलिट बहनजीसा, मास्टर जात को यह सरकार समझती है, जानवर। इन बेचारे मास्टरों को सी.सी.ए.रूल्स का डर दिखलाकर, यह सरकार कभी इन्हें पशु-गणना में लगा देती है तो कभी लगा देती है जन-गणना या फिर चुनाव में।

मधु सूदनजी – हम लोगों की वास्तविक योग्यता की जांच, अध्यापन से होती है। मगर यह सरकार कभी भी हमारी गुणवत्ता, बच्चों के पढ़ाने के मामले में नहीं देख़ती। नर्स बहनजी हमारा काम है बच्चों को पढ़ाना, हमारी गुणवत्ता का आंकलन अध्यापन से होता है न की जणगणना व प्लस पोलियो जैसे काम में हमारी योग्यता देखी जाय ?

मोहनजी – [फ़र्स के ऊपर पीक थूककर, कहते हैं] – जुलिट बहनजीसा, मास्टर तो जानवर है, जानवरों को जानवरों की गिनती में लगाकर सरकार ने कौनसा ग़लत काम किया है ?

[मोहनजी इतना कहकर, हंसी का किल्लोर छोड़ते हैं। सुनकर, मास्टरों को बहुत बुरा लगता है। इधर मधुसूदनजी हो जाते है, मोहनजी से नाराज़। वे अपने हाथ नचाते हुए, गुस्से में कह देते हैं..]

मधुसूदनजी – [नाराज़गी से, कहते हैं] – पेट भर गया, क्या बदबूदार धान से ? अरे मोहनजी इतना पेट में मत डालिए, यह बदबूदार एफ़.सी.आई. का धान..अजीर्ण करेगा, यार। मास्टर तो बेचारे ठहरे, अल्लाह मियाँ की गाय। **इन बेचारों को न तो राजनीति में कोई सपोर्ट करता है, और न सहयोग मिलता है इस जनता से।**

मोहनजी – ओ मास्टर साहब, कढ़ी खायोड़ा। कुछ काम करके दिखाओ इस सरकार को, दिखला दोगे तो यह सरकार ज़रूर आप लोगों को भी सुविधाएं देगी।

मधुसूदनजी – काम करना, कौन नहीं चाहता ? मगर यह सरकार केवल अधिकारियों को ही चाहती है, और हमारे साथ भेद-भाव रखती है। मगर हम लोग ऐसे नहीं हैं, जैसी आपकी गंदी

विचार-धारा बोलती है। आप जानते क्या हैं, हमें ? यह पढ़े-लिखे लोगों की ऐसी कौम है, जो एक बार अपने मानस में निश्चय कर ले, तो सत्ता-परिवर्तन भी करवा सकती है।

सुपारी लालसा – अरे जनाब, अभी का यह ताज़ा उदाहरण सामने है। **पिछली सरकार के पाटिये साफ़ कर दिए है, हमने। यह है मास्टरों की हड़ताल फेल करने का नतीजा। यह है मास्टरों की ताकत, समझ में आया मोहनजी ?** और कुछ कहना, आपको ?

मोहनजी – क्या ग़लत किया है, पिछली सरकार ने ? आप लोग करते हैं, हरामखोरी। पढ़ाते नहीं इन बच्चों को, नौ तक के पावड़े आते नहीं बच्चों को..फिर कैसे सिखाओगे हासल की जोड़-बाकी ?

सुपारी लालसा – पहले बोलो आप, अपनी सरकार को..के, यह तुगलकी आदेश काहे निकाला ? आठवीं कक्षा तक के बच्चों को, क्रमोन्नत दिखाना ? यानि, उनको किसी हालत में फेल नहीं करना। अब आप ही बताएं, बिना ज्ञान हासिल किये, उन्हें अगली क्लास में कैसे बैठा सकते हैं मोहनजी ? कहिये, जनाबे आली।

मधुसूदंजी – 'अब पढों या न पढो...इसका कोई मायना नहीं, क्योंकि मास्टर को झख मारकर हम बच्चों को पास करना होगा,' जब यह बात इन बच्चों के मानस में घर कर गयी, तो अब कौन ऐसा मूर्ख होगा, जो मेहनत करके पढ़ेगा ? बिना मांगे और बिना मेहनत किये सब-कुछ मिलता है तब कौन मेहनत करके पढ़ेगा ?

[यह बात सुनते ही, केबीन में बैठा एक देहाती [चौधरी] यात्री हंस पड़ा। किसी तरह वह अपनी हंसी को काबू में करता हुआ, कहता है..]

ग्रामीण – तब तो ऐसे नाक़ाबिल बच्चे आगे जाकर, करेंगे क्या ? गोबर ही करेंगे, मोहनजी। इस कारण ही सेकेंडरी बोर्ड परीक्षा का परिणाम बिगड़ता है, इसमें इन अध्यापकों की क्या ग़लती ? जब नींव ही कमज़ोर है, तब उस पर इमारत कैसे खड़ी की जा सकती है ? इस नींव को, कमज़ोर करने वाले कौन ? ये बेतुजुर्बेदार सचिवालय के अधिकारी और ये शिक्षा के महत्त्व को न जानने वाले नेता। क्या जानते हैं वे, शिक्षा नीति बनाना ? ख़ाली, बच्चों की नींव खोखली करते जा रहे हैं।

सुपारी लालसा – सच्च कहा, चौधरीसा आपने। **इधर रिज़ल्ट बिगड़ा, और दूसरी तरफ़ यह सरकार उन अध्यापकों की कर देती है बदली। फिर क्या ? बेचारा मास्टर रुपयों की थैली लिये, इन भ्रष्ठ मिनिस्टरों और विधायकों के आगे-पीछे उनसे मिलने के लिये भटकता रहता है।**

ग्रामीण – **इन नेताओं के दोनों हाथ में लड्डू,** एक तरफ़ कमज़ोर अयोग्य बच्चों को आठवी पास करवाकर इन बच्चों और इनके अभिभावकों से अपना गुण-गान करवा लेना..तो दूसरी तरफ़ इनके दसवी में इनके अनुत्तीर्ण होने पर मास्टरों का अन्यत्र तबादला करके हज़ारों-लाखों रुपये कमा लेना। आख़िर, यह गोरख-धंधा है क्या ?

मधुसूदनजी - वेतन के अलावा यहां हम मास्टरों के पास कहां है, दूसरी कमाई का साधन ? बेचारे मज़बूर मास्टर किसी सूदखोर महाज़न से क़र्ज़ लेकर, मंत्री या विधायक या फिर किसी सांसद को रुपये थमाकर अपनी बदली वापस करवाते हैं।

सुपारी लालसा - राम राम, हम कितने रुपये देते रहें इन अधिकारी, विधायक और इन मंत्रियों को....कमबख़्तों का पेट भरता ही नहीं..! लुट लेते हैं, कमीशन के नाम पर इन ठेकेदारों को। मैं तो यही कहूंगा, **सरकारी विधायक, सांसद, मंत्री और अधिकारी ये सारे भ्रष्ठ लोग इस देश के ढर्रे को बिगाड़ चुके हैं।**

मधुसूदनजी – अरे चौधरीजी, यह सरकार किन लोगों से नियम बनवाती है ? इनके जैसे गैर-तुर्जुबेदार सेक्रेटरी लेवल के अधिकारियों से, जिनको प्राथमिक शिक्षा के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं।

सुपारी लालसा – चालीस एका तक का, क्या ? इनको तो तो दस तक के पावड़े याद नहीं..वे कैसे प्राथमिक शिक्षा क्षेत्र में, बच्चों की नींव मज़बूत कर पायेंगे ? देश आज़ाद होने के बाद, ऐसे अनुभवहीन अधिकारी आये हैं..

मधुसूदनजी - जिहोंने पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करते हुए, यहां पहले से चल रही महाज़नी गणित को हटाकर अंग्रेजी अंकों वाली दशमलव-प्रणाली चालू की।

ग्रामीण – अब सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों में कहां रही, वह पुरानी पढ़ाई ? जिस पढ़ाई से बच्चे मुख-ज़बानी जोड़-बाकियां कर लेते थे। आज़ छोटी-छोटी जोड़-बाकियों के लिए, बच्चें केलकुलेटर की मदद लेते हैं।

मधुसूदनजी – अब कुछ समझ में आया, मोहनजी ? कभी ऐसी पढ़ाई थी, जो इस कम्प्युटर को पीछे रखने वाली थी। अब वह पद्दति है, कहां ? **ये आपके जैसे अधिकारी, जिनके पास कोई पढ़ाने का अनुभव नहीं..वे आज़, शिक्षा नीति का निर्माण कर रहे हैं।**

ग्रामीण – फिर आज़ इन गावों और शहरों से ऐसे नेता चुने जा रहे हैं, जो या तो है ठोठी-ठीकरे, या मर-गुड़ कर उन्होंने फर्जीवाड़ा करके छठी या सातवीं कक्षा पास की है..या फिर, फ़र्जी डिग्रीधारी बन गये..बस ऐसे ही नेता हाथ खड़ा करके, ओर्डीनेस पारित करवा देते हैं।

सुपारी लालसा – **यह शिक्षा का क्षेत्र, इन कुदीठ नेता और अधिकारियों का व्यापार बन गया है। तब ही ये नियम-क़ायदे निजी स्कूलों पर लागू होते नहीं, क्योंकि इन स्कूलों के मालिक अक़सर बड़े अधिकारियों के रिश्तेदार होते हैं, या ये नेता ख़ुद होते हैं।**

मधुसूदनजी – क्या इस सरकार में इतनी ताकत है, जो इन प्राइवेट स्कूलों की बढ़ी हुई फीसों को कम करवा सके ?

मोहनजी – [मुस्कराकर कहते हैं] – इन बातों को छोड़िये, आप। यह बताइये जनाब, के 'पूरा साल मिलता है आपको पढ़ाने के लिए। फिर भईजी राम, आप बच्चों को क्यों नहीं सिखा पाते ?' आप मास्टर हैं, या भड़भूंजे ? यहां तो प्राइवेट स्कूल के अध्यापक आपसे कम तनख्वाह लेकर भी, रिज़ल्ट अच्छा रखते है। आप आख़िर, करते क्या हैं ? **ख़ाली बच्चों से गुटका मंगवावो, या दबवाते रहो अपने पांव।**

मधुसूदनजी – मोहनजी, ज़बान काबू में रखो। आपके सामने, राष्ट्र के कर्णधार बैठे हैं। कल आने वाली बुनियाद को, हम लोग ही खड़ी करते हैं। इन कलेक्टर और बड़े-बड़े अधिकारियों को, आप पढ़ाकर तैयार करते हैं क्या ?

मोहनजी – बुनियाद...? [हंसी के ठहाके लगाकर, फिर कहते हैं] कहां के, कर्णधार ? **छिपलाखोर हो आप सब, तीन दिन मैं आ जाऊंगा स्कूल और तीन दिन तू चले आना। इस तरह तो स्कूलें चलाते हो, गाँवों में।** पूछते हैं कभी, मास्टर साहब पधारे क्या ? जवाब मिलता है, 'आये थे, मगर जनाब सरपंच साहब से मिलने गए हैं।' इस तरह, बनाते रहो बहाने।

जुलिट – [बीच में बोलती हुई] – रहने दीजिये, मोहनजी। आप तो अपने विभाग का ध्यान रखिये, जनाब।

मोहनजी – रहने कैसे दें, नर्स बहनजीसा। आपको, क्या मालुम ? ये तो सभी, चोर-चोर मौसेरे भाई। सरपंच साहब को पूछा जाय तो जनाब फ़रमाते हैं, के 'पोषाहार के काम से आये थे, मास्टर साहब।' इस तरह, सफ़ा-सफ़ झूठ बोल जाते हैं। **मास्टर साहब घर पर छुट्टियां मनाते हैं, और सरपंच साहब नरेगा में करते रहते हैं लाल-पीले।**

[जुलिट इनकी बक-बक सुनकर, हो जाती है परेशान। आख़िर, वह अपना सर थामकर बैठ जाती है। **मगर, समझदार मोहनजी क्यों रुकते ? वे तो अपना भाषण बंद करे ही क्यों, लम्बे वक़्त बाद उन्हें बोलने का मौक़ा जो मिला है।**]

मोहनजी – नर्स बहनजीसा। यहां तो अंधेर नगरी और चौपट राजा का राज़ है, इनको आख़िर कहे कौन ? किसकी मां ने अजमा खाया है, जो इनको इनकी ग़लतियों का कांच दिखाये ? मगर मैं इतना ज़रूर कहूंगा के **'प्लस पोलियो राष्ट्रीय कार्यक्रम है, इससे जो कर्मचारी छिपला खाता है..वह, देश का दुश्मन है।'**

[अब सुपारी लालसा की सहन करने की शक्ति, समाप्त हो जाती है। और वे झट उठकर, मोहनजी का गिरेबान पकड़ लेते हैं। फिर, वे बोलने लगते हैं फाटा-फुवाड़ा।]

सुपारी लालसा – [गिरेबान पकड़कर, कहते हैं] – ठोकिरा, दुश्मन किसको कहता है रे ? दुश्मन तो तू है, धान का। कहीं तेरा आटा तो, वादी नहीं कर रहा है ? [भद्दी गाली बकते हैं] अरे मां के.. मास्टरों से उलझता है ? कहीं तेरे पिछवाड़े में, चूनियां तो नहीं काट रहे हैं ?

[जुलिट उठकर सुपारी लालसा का हाथ पकड़कर, मोहनजी को उनके चंगुल से छुड़ाती है। फिर कहती है, मोहनजी को]

जुलिट – मोहनजी, काहे ज़बान चलाते जा रहे हैं आप ? यह आज़ाद मुल्क है, जहां युनियनों का ज़ोर है। अगर इन्होंने कर दिया इशारा, तो गाड़ी में बैठे सारे मास्टर इकट्ठे हो जायेंगे। फिर देखना, क्या गत बनाते हैं आपकी ?

[मगर मोहनजी को कहां सुनना था, जुलिट का भाषण ? वे तो जुलिट की बात को अनसुनी करके कुछ और ही बात अपने दिल में सोचते जा रहे हैं, के **'जुलिट, तू मुझे क्या नूरिया-जमालिया समझ रही है क्या, जो मुझे छोड़कर इस शैतान सुपारिया का हाथ पकड़ बैठी ? भली औरत होती, तो यह मौक़ा तू मुझे देती..तब तेरा रामसा पीर, भला करते।'** मगर उधर सुपारी लालसा, कहां चुप-चाप बैठने वाले ? वे तो करते जा रहे हैं, बे-फिज़ूल की बकवास।]

सुपारी लालसा – मुझे लोग टाइगर कहते हैं, तू मोहनिये मुझे क्या समझता है ? जानता है, मेरा हेड मास्टर मुझसे खौफ़ खाता है..थर-थर कांपता है, कहीं मैं उसके रुख़सारों पर थप्पड़ नहीं रख दूं ? ले सुन, एक बार उसने एक बेवकूफी कर डाली...मुझे कहा 'मास्टर साहब, आप देरी से क्यों आते हैं स्कूल ?' फिर, दूसरे दिन....

मधुसूदनजी – फिर क्या हुआ, कहीं आपने उसकी इज़्ज़त की बखिया तो नहीं उधेड़ दी ?

सुपारी लालसा – अरे जनाब मैं तो ठहरा शरीफ़ अध्यापक, ऐसा काम मैं क्यों करूंगा ?

मधुसूदनजी – कहिये, फिर दूसरे दिन आख़िर हुआ क्या ?

सुपारी लालसा - छुट्टी के बाद, बाहर छोरों ने उनको चारों ओर से घेर लिया। फिर क्या ? उनके साथ कर डाली, छोर-छिंदी। किसी ने तो आकर उनके पायजामा का तीजारबंद [नाड़ा] खींच डाला, तो किसी ने उनका ऐनक छीनकर उनके ऊपर धूल डाल दी..मगर एक छोरा तो ठहरा, शैतानों का चाचा। वह तो उनकी टोपी उठाकर, चढ़ गया बरगद पर।

रशीद भाई – बाद में क्या हुआ, जनाब ?

सुपारी लालसा – बाद में, होना क्या ? हेडमास्टर साहब ने पांव-धोक लगाई सरपंच साहब के आगे, मगर बेचारे ठहरे करम-ठोक। सरपंच साहब ने ऐसा जवाब दिया, के 'यह तो वानर-सेना है, बदमाशी तो इनके स्वाभाव से ही झलकती है। आप मुंह क्यों लगते हैं, इनके ?'

[इतना सुनने के बाद, मोहनजी कैसे चुप-चाप बैठ सकते हैं..? आख़िर वे भी ख़ुद, अधिकारी ठहरे। अधिकारी होकर, वे एक दूसरे अधिकारी की मिट्टी पलीद होने की बात कैसे चुप-चाप सुन लेते ? बस, झट बीच में बोल उठते हैं..]

मोहनजी – अपनी तारीफ़ ख़ुद करके, मियाँ मिट्ठू मत बनिये। अधिकारी होते हैं, 'माटी के भूंडे'। इनसे दुश्मनी लेनी, महंगी पड़ती है। [रशीद भाई की ओर देखते हुए, कहते हैं] क्यों रशीद भाई बताओ इनको, बुद्धिया वाच मेन ने मुझसे जबान लड़ाई उसका नतीज़ा क्या हुआ ? आज़ पड़ा है, पोकरण..वहां कोई कुत्ता भी, उसकी खीर नहीं खाता। यह बात, इनको समझाओ।

रशीद भाई – [भोला मुंह बनाकर, कहते हैं] – मैं तो तो जनाब ठहरा, भोला आदमी..मैं क्या जानू ? सी.आर. के ऊपर आपकी चली लाल स्याही, और उस पर आपके बड़े साहब की चली हरी स्याही...अब मालिक, हाज़री देने के लिए अक़सर कौन जाता है अजमेर ? अब कहिये, जनाब ?

सुपारी लालसा – हाज़री की क्या बात करते हो, रशीद भाई ? मेरे हेडमास्टर साहब भी, इनकी तरह पागल है। जिला शिक्षा अधिकारी के पास जाकर, उन्होंने मेरे खिलाफ़ शिकायत दर्ज करवाई..के, मैं समय पर स्कूल आता नहीं और बच्चों को सिखाकर रोज़ कराता हूं खिलके।

रशीद भाई – अरे, सुपारी लालसा। खिलके तो मोहनजी रोज़ करते हैं, बेचारा गुलाबा तो इनका इंतज़ार करता दिखाई देता है...के 'कब मोहनजी दिख जाये उसे, और वह लोगों को हंसाने के लिये उनसे करवाता रहे खिलके।'

सुपारी लालसा – यार रशीद भाई, मेरी रामायण तो पूरी हुई नहीं...और बीच में आपने, अलग से भागवत बांचनी शुरू कर दी...**रास्ते के रोड़े** की तरह ?

मोहनजी – भागवत.. भागवत ? अरे, सुनेगा कौन, भागवत ? भैंस के आगे बांचोगे, भागवत..तब क्या होता है, रशीद भाई ? परिणाम तो आप, जानते ही हैं ?

सुपारी लालसा – [क्रोधित होकर कहते हैं] – देख मोहनिये, मुझे भैंस कहकर तू पागलपन दिखला मत। एक मर्तबा तुझको नर्स बहनजीसा ने बीच में आकर, तूझे बचा लिया। अब वापस तू अपनी लालकी [ज़बान] को, बाहर निकाल रहा है ? तब सुन ले, मेरी बात। अब आगे बोला तो मैं तेरी बत्तीसी बाहर निकालकर, तेरे हाथ में रख रख दूंगा। फिर भूल जायेगा तू, सी.आर. लाल-पीली करनी ?

मोहनजी – [मूंछों पर ताव देते हुए, कहते हैं] – मैं डरने वाला पूत नहीं हूं, गाँव धुंधाड़ा में पैदा हुआ हूं...धूजता है मुझसे, सारा गाँव। औरते मुझे देखकर, छुप जाती है..और मेरी बाँकड़ली मूंछों को देखकर, मुस्कराती हुई गाती है "बांकड़ली मूंछा वालो आयो रे, आंगन में.." क्या शान है, मेरी बांकड़ली मूंछों की ?

[इतना कहकर, उन्होंने अपनी मूंछों पर ताव देते जाते हैं। उन्हें इस तरह ताव देते देखकर, नामूंछ्यां सुपारी लालसा जल-भुन जाते हैं। अब दिल में जल रही क्रोधाग्नि से क्रोध की ज्वाला भभकने लगती है, और आँखे हो जाती है लाल। फिर, वे कमीज़ की दोनों बांह ऊपर चढ़ा लेते हैं। इसके बाद दोनों हाथों से, पहलवान की तरह मोहनजी को ऊपर उठा लेते हैं। अब मोहनजी सोचते हैं, के **'कहीं यह राक्षस उन्हें, धब्बीड़ करता नीचे नहीं पटक दे ? अगर नीचे पटक दिया, तो इस बुढ़ापे में..हड्डी जल्दी टूट जायेगी। तो उसका वापस जुड़ना, बहुत मुश्किल होगा।'** इस तरह अगली बातें सोचकर वे बचने के लिए, चीख-चीखकर अपने साथियों को पुकारते जाते हैं।]

मोहनजी – [चिल्लाते हुए] – छुड़ाओ रे, छुड़ाओ..ओ सावंतजी, कढ़ी खायोड़ा। अरे, ओ सेवाभावी रशीद भाई। ओ ओमजी कढ़ी खायोड़ा, कहां मर गए यार..? इधर आकर बचाओ मुझे, इस सुपारीलाल राक्षस से।

[पास वाले केबीन में बैठे दयाल साहब और राजू साहब को, उनके किलियाने की आवाज़ सुनायी देती है। आवाज़ सुनकर दयाल साहब, अपने पहलू में बैठे राजू साहब से सवाल करते हैं..]

दयाल साहब – अरे सांई, पास वाले केबीन में यह मोहनिया क्यों चिल्ला रहा है ?

राजू साहब – [लबों पर मुस्कान छोड़कर, कहते हैं] – चिल्ला नहीं रहा है, परमोशन ले रहा है। अब आपको भी लेना है, क्या ? लेना हो तो आप भी शौक से जाइये, उस केबीन में।

[इस बढ़ते कोलाहल के आगे, वक़्त बिताना आसान है..मगर समय का मालुम होना कठिन है। अचानक गाड़ी लूणी स्टेशन पर आकर रुक जाती है, अब पुड़ी वाले वेंडर शर्माजी की रोनी आवाज़ गूंज़ती है 'इं..इं पुड़ी..दस रुपये पुड़ी-सब्जी, ले लो भाई साहब ले लो पुड़ी खाइके।' तभी सामने वाले प्लेटफोर्म पर रुकी गाड़ी से, दो फौज़ी उतरकर इस डब्बे के मोहनजी वाले केबीन में आते हैं। यहां इस वक़्त मोहनजी को उठाये हुए सुपारी लालसा की निग़ाह, उन दोनों फौजियों पर गिरती है। इन फौज़ियों को देखते ही, सुपारी लालसा डरते हैं। उनका विचार है, के **'पुलिस वाले और ये देश भक्त फ़ौजी, दोनों होते है एकसे। दोनों है, क़ानून के रक्षक। पुलिस वाले तो कार्यवाही करने में वक़्त जाया करते हैं, मगर ये फ़ौजी उसी वक़्त उसे पीटकर सज़ा दे देंगे ?'** फिर, क्या ? सुपारी लालसा उठाये हुए मोहनजी को, धड़ाम से नीचे पटक देते हैं। जैसे उनके डिपो में, कोई मज़दूर धान की बोरी को नीचे गिरा देता है ? फिर, क्या ? मोहनजी आकर गिरते हैं, सामने से आ रहे फौजियों के ऊपर। अचानक उनके ऊपर भारी वज़नी मोहनजी गिरते क्या हैं..? बेचारे दोनों फ़ौजी, घबरा जाते हैं। अब तो फ़ौजी हो जाते हैं, सावधान। कहीं कोई गाड़ी में, आंतकवादी तो नहीं आ गया है ? और उन्होंने हमारे ऊपर, बम लाकर तो नहीं पटक दिया ? ऐसा विचार दिमाग़ में आते ही, उसी वक़्त बेचारे मोहनजी को बम समझकर वापस दूर फेंक देते हैं..बेचारे चच्चा कमालुदीन की गरदन के ऊपर। जिससे चच्चा की ताण खायी हुई गरदन हो जाती है, ठीक। इतना भारी वज़न गिर जाने से चच्चा के मुंह में चबाया जा रहा पान, मुंह से बाहर निकल जाता है। और मोहनजी की सफ़ारी सूट पर पर गिरकर, चित्रकारी कर बैठता है। मोहनजी चित्रकारी की हुई सफारी पर, अपनी निग़ाह डालते हैं। और उनको याद आता है, के 'वे रोज़ किस तरह, यात्रियों को तेल से सनी सीट पर बैठाकर उनके वस्त्र खराब कर दिया करते हैं ?' और अब उनके खुद के सफ़ारी कमीज़ पर, पान की चित्रकारी स्वत: हो गयी..बस, अब हिसाब बराबर का रहा। इस तरह चच्चा की गरदन ठीक हो जाने से, वे गले में डाले हुए पट्टे को फेंक देते हैं। फिर वे सीधे तनकर जवान मर्द की तरह, खड़े हो जाते हैं। खड़े होकर वे, मोहनजी को दुआ देते हुए दिखाई देते हैं।]

चच्चा कमालुदीन – [दुआ देते हुए, कहते हैं] – अल्लाह का शुक्र है, बेटा। तेरे पांव पड़े, मेरी गरदन पर..गरदन ठीक हो गयी, मेरे लाल। युग-युग जीयो, मेरे लाल। ऐसे नेक-बेटे सभी को मिले..! ख़ुदा रहम..ख़ुदा रहम।

[अब तो स्थिति बदल गयी, चच्चा कमालुदीन को यह बात समझ में आ गयी के 'अब उनके हितेषी मोहनजी को दुःख पहुंचाने वाले दुष्ट व्यक्ति को, सज़ा देनी बहुत ज़रूरी है। फिर, क्या ? चच्चा कमालुदीन उठाते हैं, अपना गेडिया [छड़ी/काठी]। फिर सुपारी लालसा के गरदन में फंसाकर ज़ोर से खींचते हैं, छूटने के चक्कर में सुपारी लालसा लगाते हैं ज़ोर। और छूटते ही जाकर पड़ते हैं, धड़ाम से..बेचारे अस्थमा के मरीज़, रशीद भाई के ऊपर। बेचारे रशीद भाई, अभी-अभी उनकी चीत्कार सुनकर इधर आकर खड़े ही हुए थे, और यह एक मन के सुपारी लालसा आकर उन पर आ गिरे। वे बेचारे क्या बोल पाते ? केवल इतना ही बोल पाते हैं, के...]

रशीद भाई – अर्र अर्र अरे चच्चा, क्या पटका ?

चच्चा कमालुदीन – [सुनने का अंदाज़ दिखलाते हुए] – क्या अटका, बेटा ? झटका है।

[चच्चा की गरदन ठीक होने के बाद, उस शैतान सुपारी लालसा को झटका भी दे डाला..मगर अभी-तक चच्चा का गुस्सा शांत नहीं होता है..तब वे लुंगी ऊंची करके, एक टांग पर खड़े होकर गुर्राते हैं। कहीं माहौल बिगड़ न जाय, इस अंदेशे से उठते हैं रशीद भाई। फिर, क्या ? चच्चा का बैग खोलकर इत्र की सीसी बाहर निकालते हैं। अब उसका ढक्कन खोलकर रशीद भाई, उसे ले जाते हैं चच्चा की लुंगी के नीचे। यह खिलका देखते ही, चाची हमीदा बी नाराज़ हो जाती है। फिर वह ज़ोरों से कूकती हुई, रशीद भाई को फटकारती है।]

हमीदा बी – [डांटती हुई] – क्या करता है रे, नामाकूल ? पाक इत्र को नापाक कर डाला, अब क्या चढ़ाऊंगी पीर बाबा दुल्लेशाह की मज़ार पर ?

रशीद भाई – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – खालाजान, अब इस इत्र की क्या ज़रुरत ? बाबा तो आपकी हाज़री से ही, खुश हो जायेगा। बाबा ने चच्चा की गरदन ठीक करके, चमत्कार कर डाला।

[अब इत्र की सुंगंध, पूरे डब्बे में फ़ैल जाती है। **यह तो ख़ुदा ही जानता है, के 'बाबा ने दूसरी बार, चच्चा के गुस्से को शांत करके कैसे पर्चा दे दिया ?'** अब चच्चा कमालुदीन लुंगी नीचे करके, वापस अपनी सीट पर बैठ जाते हैं। अब गाड़ी ने लूणी स्टेशन छोड़ दिया है, धीरे-धीरे वह अपनी रफ़्तार बना लेती है। कुछ देर बाद, रोहट स्टेशन भी आकर पीछे रह जाता है। आज़ है, जुम्मेरात।

जिन मुरीदों की मन्नत पूरी हो गयी है, वे फातिहा लगाने के लिए ज़रूर पीर दुल्ले शाह की मज़ार पर आते हैं। इस तरह ऐसे कई जायरीन है, जिनकी मन्नत पूरी हुई है..वे सभी इस गाड़ी में यात्रा कर रहे हैं। थोड़ी ही देर में पीर दुल्ले शाह हाल्ट आ जाता है, अब रशीद भाई अपने केबीन में चले जाते हैं। यात्रियों के उतरते रहने से डब्बे में, खलबली मच जाती है। वे अपने सामान की पोटलियां और बैग लेकर, नीचे प्लेटफोर्म के ऊपर उतरते जा रहे हैं। कई केबिनों में, सीटें ख़ाली हो गयी है। इस कारण मधुसूदनजी व सुपारी लालसा उठकर, दूसरे केबीन में चले जाते हैं। उनको जाते हुए देखकर, मोहनजी भी उठते हैं युरीनल जाने के लिए। युरीनल जाकर, वे वापस आकर क्या देखते हैं ? यह केबीन, जायरीनों के चले जाने से ख़ाली हो गया है। वे वहां पर, रुक जाते हैं। और अपने साथियों को आवाज़ देकर, उन्हें इस केबीन में बैठने के लिए आमंत्रित करते हैं।]

मोहनजी – [ज़ोर से आवाज़ देते हुए, कहते हैं] – ओ रशीद भाई, कढ़ी खायोड़ा। इधर आकर देखो, यह पूरा केबीन ख़ाली पड़ा है। आ जाइये, यहां। अपुन, आराम से बैठते हैं। क्या, तुम जानते हो ? अब तो यह सुअर माथा खाऊ **रास्ते का रोड़ा** सुपारीलाल भी, उठकर चला गया।

रशीद भाई – [पड़ोस वाले केबीन से बोलते हैं] – आप वहीँ बैठे रहिये, हम तो इसी केबीन में ठीक हैं। अब पाली आने में, कितनी देर ? क्यों बेकार की, उठ-बैठ करते रहें ?

[रशीद भाई के पहलू में बैठे सावंतजी, अलग से कहते हैं..]

सावंतजी – [रशीद भाई से कहते हैं] – रशीद भाई, बेकार का वक़्त खराब कीजिये मत। बाबा का हुक्म हो गया है, जाकर निपटकर वापस आ जाओ।

[सावंतजी की बात सुनकर, रशीद भाई बैग खोलते हैं। उसमें से छोटा ट्वाल [नेपकिन] व साबुन की टिकिया बाहर निकालकर अपने साथ लेते हैं। फिर क्या ? झट घुस जाते हैं, पाख़ाने के अन्दर। अब मोहनजी खिड़की के पास वाली खाली सीट पर, आराम से बैठ जाते हैं। फिर खिड़की से मुंह बाहर निकालकर, बिना देखें ज़र्दे की पीक थूकते हैं। इस वक़्त इस खिड़की के बिल्कुल नज़दीक खड़ी कमरू दुल्हन, प्लेटफोर्म पर उतारे गये सामान के नग गिन रही है। उस बेचारी को क्या पत्ता, मोहनजी की पीक थूकने की खोटी आदत ? बस, फिर क्या ? वह पीक आकर, सीधी उसके दुपट्टे पर आकर गिरती ही। और साथ में पीक के छींटे उछलते है, उसके रुख़सारों के ऊपर। रुख़सारों के ऊपर ठण्डकार का अहसास होते ही, वह घबरा जाती है, के 'कहीं कोई खिड़की से हाथ बाहर निकालकर, झूठे हाथ तो नहीं धो रहा है ?' मगर वहां मोहनजी को थू थू करते देखकर उसका पारा चढ़ जाता है, और वह वहीं खड़ी-खड़ी जोर से कूकारोल मचाती है।]

कमरू दुल्हन – [कूकारोल मचाती हुई, कहती है] – मेरा दुपट्टा नापाक कर दिया रे, दीसे कोनी तेरे को ?

[इतने में डब्बे के दरवाज़े के पास खड़ी उसकी सास हमीदा बी, बाहर मुंह निकालकर जोर से अपनी दुल्हन से कहती है..]

हमीदा बी – [बाहर मुंह निकालकर, कहती है] – क्या हुआ है, दुल्हन ? क्यूं फटे बांस की तरह बोबाड़े काड रही है ?

कमरू दुल्हन – [मोहनजी की ओर, उंगली का इशारा करती हुई कहती है] – इस नासपीटे ने थूककर मेरा दुपट्टा नापाक कर दिया है, अम्मी। [रोती हुई कहती है] इस मुए की ज़बान जले, इसके शरीर को कुत्ते नोच दे। अम्मी इसकी ऐसी ठुकायी करो, के..

[बहू-बेगम की शिकायत सुनकर हमीदा बी क्रोधित होती है, फिर शौहर-ए-नामदार को आवाज़ देती है।]

हमीदा बी – [ज़ोर से आवाज़ देती हुई, कहती है] – अरे ओ फ़क़ीरिये के अब्बा, कहां मर गया रे, मर्दूद ? दीखता नहीं, दुल्हन का गाबा नापाक कर दिया इसने। [मोहनजी की तरफ़ उंगली से इशारा करती हुई, कहती है] ठोक, इस साले को।

[मगर यहां है कहां, चच्चा कमालुदीन ? वे तो गाड़ी के रुकते ही झट जाकर खड़े हो गए, प्याऊ के पास। वहां अब खड़े-खड़े, गुटका चबा रहे हैं। फिर, क्या ? हमीदा बी तो ठहरी, एक नंबर की झगड़ालू बीबी फातमा की बेटी। वो झट जा पहुंची, मोहनजी के पास। और उनका कान खींचकर ले आयी, नीचे प्लेटफोर्म के ऊपर। उसके बाद दो-चार मुक्के लगाकर, उनसे कहती है..]

हमीदा बी – नासपीटे। तेरी ज़ुबां पे खीरे पड़े, हमारी दुल्हन के गाबों पर पीक थूककर..कर दिया, नापाक ? [बेटे नूरिया व कमरू दुल्हन से कहती है] अरे ओ फ़कीरिये, कहां मर गया रे ? अरी दुल्हन, वहां ऊबी तू का कर रही हो ? इधर आ, तू भी अपना हाथ साफ़ कर ले इस पर..साले की अक्ल, ठिकाने आ जायेगी।

[कमरू दुल्हन और उसका शौहर फ़कीरिया, दोनों आ जाते हैं वहां। इसके साथ अन्य तमाशबीन भी आ जाते हैं, मोहनजी के पास। अब सभी मिलकर, मोहनजी की पिटाई करते हैं। कोई मुक्का मारता जा रहा है, तो कोई उन पर लातों का प्रहार करता जा रहा है। बेचारे मोहनजी की बुरी

हालत कर डालते हैं, सब लोग मिलकर। फोड़ी पड़ते ही मोहनजी त्राही-त्राही मचाते हैं, और वे ज़ोर-ज़ोर से रशीद भाई को पुकारते हैं।]

मोहनजी – [ज़ोर से चिल्लाते हुए, रशीद भाई को आवाज़ देते हैं] – अरे रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा आ रे, अरे जल्दी आ रे। आकर, बचा मुझे।

[युरीनल के अन्दर निपट रहे रशीद भाई के कानों में, मोहनजी की दारुण पुकार जा पहुंचती है। सुनकर उनकी दशा एक चितबंगने इंसान की तरह हो जाती है, कभी वे पानी की बोतल पकड़ते हैं तो हाथ में थामी हुई साबुन की टिकिया नीचे गिर जाती है। साबुन की टिकिया को पकड़ने की कोशिश करते हैं, तो कंधे पर रखा ट्वाल नीचे खिसक जाता है..और, अंडरवियर के तीजारबंद की हालत तो और भी बुरी। किसी तरह वे पाख़ाने से निपटकर, बाहर आते हैं..तब-तक पड़ोस वाले डब्बे से निकलकर, गुलाबा जंग का मैदान संभाल लेता है। वह आकर नन्हें बबलू को फ़कीरे की गोद से उठाकर, उसके गालों पर चुम्मा लेता है। फिर उसे अपनी गोद में उठाकर, हमीदा बी के निकट आता है। अब बबलू की बलायां लेता हुआ, नाचता जाता है, और साथ में गीत भी गाता जाता है। कभी वह नाचता हुआ कमरू दुल्हन के पास आकर उसकी बलायां लेता है, तो कभी वह हमीदा बी के निकट चला आता है।]

गुलाबो – [गाता हुआ नाचता है] – बच्चे को उठाया, [बबलू को गले लगाता हुआ] गले से यूं लगाया। गुस्से को छोड़ो प्यारी बेगम, तुम्हें क्या करना ?

[मोहनजी को देखते ही वह हमीदा बी के पास आता है, बबलू को उनकी गोद में देकर वह ठुमका लगाता हुआ नाचता है। और साथ में, वह गीत भी गाता है]

गुलाबो – [गीत गाता हुआ, नाचता है] – दादी अम्मा दादी अम्मा मान जाओ, छोड़ो जी यह गुस्सा ज़रा हंसकर दिखाओ..

[हमीदा बी का हाथ छुड़ाकर, गुलाबो मोहनजी को आज़ाद करता है। आज़ाद होते ही, मोहनजी अपनी सीट पर आकर बैठ जाते हैं। इस तरह आज़ाद होने के बाद, मोहनजी गुलाबा को दुआ देते हैं। उधर बाहर, दुआएं देता हुआ गुलाबा हमीदा बी से कहता है]

गुलाबा – [दुआएं देता हुआ, कहता है] – **दादी जीओ हज़ारों साल, तमन्ना पूरी होती जाए...यही मेरी है आरज़ू।** दादी तुम पोते को खिलाती रहो बचे अरमान पूरे करो। बाबा से यही है, इल्तज़ा मेरी। [बलायां लेता हुआ, दुआ देता है] यही है मेरी आरज़ू, तुम पोते-पोतियों को खिलाओ..युग युग जीयो, मेरे यज़मान। हज़ारों साल तुम्हारा यश बना रहे, मेरे यज़मान।

[अब जोश में आकर ताली पीटता हुआ, गुलाबा तेज़ी से घूमर लेकर तेज़ी से नाचता है। उसका नाच देखकर, सास-बहू अपना गुस्सा थूक देती है। और दोनों सास-बहू ठहाका लगाकर हंसती है, फिर खड़े तमाशबीन बने जायरीन पीछे क्यों रहते ? वे भी ठहाके लगाकर, हंसने में उनका साथ देते हैं। अब तो गुलाबा की क़िस्मत खुल जाती है, सभी खड़े जायरीन और चच्चा कमालुदीन के परिवार वाले गुलाबे की झोली भर देते हैं नोटों से। फिर क्या ? गुलाबो और उसकी हिज़ड़ो की टीम, यहीं पीर दुल्ले शाह हाल्ट पर रुकने का निर्णय ले लेती है। उनका विचार है, **'ऐसे दिलदार यज़मान जहां, वहां नाचेंगे सारी रात। जमायेंगे महफ़िल, पीर दुल्ले शाह की मज़ार पर..बाबा की ख़िदमत करते गायेंगे, कव्वाली खुसरो अमीर की।"** अब पाख़ाने से बाहर आकर, रशीद भाई वाश-बेसिन के पास आते हैं और फटा-फट अपने हाथ धोते हैं। इधर गाड़ी का इंजन सीटी देता है, और गाड़ी स्टेशन छोड़ देती है। हाथ धोकर रशीद भाई मोहनजी के पास आते हैं, मगर उनसे पहले जुलिट आकर उनके पास बैठ चुकी है और उनको दिलासा देती जा रही है। रोते-रोते मोहनजी, उसे बदन पर आयी चोटों के निशान दिखला रहे है। फिर वे रोनी आवाज़ में, जुलिट से कहते हैं।]

मोहनजी – [रोनी आवाज़ में, कहते हैं] – ओ रहमदिल नर्स बहनजी, ज़रा जोड़ मसलने की मूव ट्यूब देना जी। [हाथ जोड़कर, ऊपर देखते हुए कहते हैं] ओ मेरे रामा पीर, ऐसी डायने पीछे लगी मेरे..हाय रामा पीर, मुझे पीट डाला रे। अरे राम, मेरी एक-एक हड्डी चरमरा गयी। इन डायनों को यमदूत पकड़े, मेरे रामा पीर।

रशीद बाई – [सामने वाली सीट पर, बैठते हुए कहते हैं] - क्यों बकते हो, गालियाँ ? पहले आपके कारनामें तो देखो, फिर बोलो..! इबादत करने के लिये जाती औरत के दुपट्टे पर पीक थूककर उसे नापाक किया, अब ऊपर से आप कहते जा रहे हैं "मैंने क्या किया ?" बाबजी आपको मैंने पहले ही कहा था, ज़र्दा छोड़ दीजिये। मगर, आप क्यों छोड़ेंगे भईसा..आपने तो ठौड़-ठौड़, पीक थूकने की जागीर ले रखी है।

मोहनजी – काला मुंह हो, आपका। पीड़ित आदमी को दिलासा देनी तो दूर, ऊपर से उलाहने देते जा रहे हैं आप ? आप जैसे मित्रों से तो अच्छे, दुश्मन है। काम पड़े आप तो छुप गए, पाख़ाने में जाकर। बेचारे गुलाबे हिज़ड़े ने आकर, मुझे छुड़ाया। उस बेचारे के गुण, कभी नहीं भूलूंगा।

रशीद भाई – मोहनजी, **"ग़लत आदतें मनुष्यों को नहीं पकड़ती..बल्कि मनुष्य ही आदतों को पकड़ता है। इसलिए आदतों को छोड़ना, उनसे मुक्त होना आप पर निर्भर करता है।"**

जुलिट – बुरा न मानना, मोहनजी। **अपनी संगत, अपनी ग़लतफहमियों, अपनी हताशा-निराशा, और ज़ोश के आवेग में मनुष्य आदतों के भंवर में उतर पड़ता है। समझदार तो किनारे लग जाते हैं, लेकिन अधिकांश मूर्ख इसमें डूब जाते हैं।**

रशीद भाई – तभी मैं कहता हूं, जनाब। **'जैसी करनी, वैसी भरनी..फिर किसको देना दोष।'** मार खाते हैं आप अपने कर्मों के कारण, अब क्यों लोगों को ताने देते जा रहे हैं..? आपके कूकारोल मचाने से, मैं अच्छी तरह से निपट नहीं सका। इधर मेरा पेट करता है, बड़-बड़। उधर आप बरलाते जा रहे थे, अलग ? के, मार दिया रे..मैं तो सुनकर, हो गया परेशान।

जुलिट – मगर हुआ क्या, चच्चा ? ज़रा, विस्तार से बताओ।

रशीद भाई – होना क्या ? मैं तो हो गया, चितबंगना। इधर बोतल पकड़ता हूं तो साबुन की टिकिया नीचे गिर जाती है, साबुन की टिकिया को थामता हूं तो वह कलमुंही पाख़ाने की बोतल नीचे गिर जाती है। ख़ुदा रहम, इधर यह कंधे पर रखा हुआ नेपकिन, खिसककर नीचे गिरे ? चड्डे के तीज़ारबंद, का तो पूछो भी मत।

[रशीद भाई दिखलाने के लिए उस नेपकिन को, मोहनजी के नज़दीक लाते हैं।]

मोहनजी – [जोर से, कहते हैं] - दूर हट, कढ़ी खायोड़ा। मेरे पास क्यों लाया, यह बदबूदार नेपकिन ? इसके अन्दर तो आ रही है, पाख़ाने की बदबू। [नाक के ऊपर रुमाल रखते हैं]

रशीद भाई – ले लीजिये, सौरम। आप कहो तो वापस जाकर, युरीनल का दरवाज़ा खोलकर आ जाऊं ?

[रशीद भाई की बात सुनकर, जुलिट हंसने लगती है। रशीद भाई अपने केबीन से अपना बैग उठाकर लाते हैं, उसमें नेपकिन और साबुन की टिकिया रखकर कहते हैं..]

रशीद बाई – लीजिये आपकी बातों में तो, यह केरला स्टेशन भी आकर चला जायेगा। अब जाकर डब्बे का दरवाज़ा बंद कर दूं, नहीं तो केरला स्टेशन पर ये मंगतियां बलीता [जलाने की सूखी लकडियाँ] लेकर चढ़ जायेगी डब्बे के अन्दर। फिर बलीता रखकर, पूरा रास्ता रोक लेगी।

[रशीद भाई जाते हैं, और जुलिट अपने बैग से मैग़जीन निकालकर पढ़ने बैठ जाती है।]

मोहनजी – नर्स बहनजीसा आप प्लस पोलियो शिविर की तैयारी करने के लिए जायेगी, खारची। और मैं भी जा रहा हूं, नौकरी करने खारची। शाम को अजमेर से आने वाली गाड़ी में बैठकर वापस आयेंगे, तब आपका साथ हो जायेगा।

जुलिट – हो सकता है, प्लस पोलियो शिविर की पूर्व तैयारी का काम वक़्त पर जल्दी निपट जाये..तो ? मगर, मोहनजी आप ऐसा क्यों नहीं करते...

मोहनजी – [हुक्म लेने के लिये, फटा-फट बोलते हैं] – कहिये..कहिये, आपके हुक्म की तामिल होगी।

जुलिट – मोहनजी आप कल अपने दफ़्तर में हस्ताक्षर करके आ जाइये, हमारे शिविर में। गाड़ी के कई साथी, आपको वहां मिल जायेंगे। साथ रहकर, काम में हाथ बटाना। लंच की फ़िक्र करना मत, दो-दो परामठे और आलू की सब्जी के पैकेट आ जायेंगे। फिर, शाम को साथ में चलेंगे।

मोहनजी – क्यों नहीं, बहनजीसा। **आख़िर यह प्लस पोलियो है, राष्ट्रीय-कार्यक्रम। इस कार्यक्रम में सहयोग देना, हर नागरिक का कर्तव्य है।**

[केरला स्टेशन आकर निकल जाता है, पाली की सड़क दिखाई देने लगती है। थोड़ी देर में, आवासन-मंडल की कोलोनी दिखाई देती है। धीरे-धीरे, पाली स्टेशन भी आ जाता है। गाड़ी प्लेटफोर्म पर आकर रुकती है, गाड़ी से कई एम.एस.टी. होल्डर्स और दूसरे यात्री उतरते दिखाई देते हैं। गाड़ी काफ़ी ख़ाली हो जाती है, अब मोहनजी ख़ाली सीटों को देखकर खुश होते हैं। खुश होकर, वे जुलिट से कहते हैं..]

मोहनजी – [खुश होकर, कहते हैं] – नर्स बहनजीसा, कितना अच्छा रहा। यह कष्ट देने वाला रशीद भाई, चला गया उतरकर। कमबख्त दिलासा तो देता नहीं, ताने ज़रूर देता गया ? अब आराम से टाँगे पसारकर बैठेंगे, और आपस में करेंगे सुख दुःख की बातें।

[मोहनजी को, क्या पता ? मास्टर सुपारी लालसा यह डब्बा छोड़कर गए नहीं थे, वे तो दूसरे केबीन में जाकर बैठ गए थे। अब वे उस केबीन से निकलकर, इस केबीन में चले आते हैं। और मोहनजी के नज़दीक बैठकर, हंसते हुए कहते हैं..]

सुपारी लालसा – [हंसते हुए, कहते हैं] – वह कष्टी तो चला गया, मगर मैं **“रास्ते का रोड़ा”** यानि **“खोड़ीला-खाम्पा”** यहीं बैठा हूं। मोहनजी, आप ध्यान रखना यह **“रास्ते का रोड़ा”** यों दूर नहीं होता यह तो बार-बार आता रहेगा आपके रास्ते में।

जुलिट – [हंसती हुई कहती है] – यानि मास्टर साहब आपके साथ-साथ खारची चलेंगे, आपको लेकर ही गाड़ी से नीचे उतरेंगे...! और, फिर मिलेंगे प्लस-पोलियो शिविर में। समझ गए, मोहनजी ? यह जनाब आख़िर ठहरे, **"रास्ते के रोड़े।"**

[मोहनजी सुपारी लालसा को खारी-खारी नज़रों से देखते हैं, आख़िर उनके मुंह से ये शब्द स्वत: बाहर निकल जाते हैं।]

मोहनजी – पीछा नहीं छोड़ता, यह **"रास्ते का रोड़ा।"**

[सुपारी लालसा तो हंसे, या नहीं हंसे ? मगर जुलिट अपनी हंसी रोक नहीं पाती, वह ठहाके लगाकर तब तक हंसती है जब तक उसके पेट के बल नहीं खुल नहीं जाते। अब मंच पर, अंधेरा छा जाता है।]

यह चांडाल-चौकड़ी, बड़ी अलाम है" का खंड ५

"मोहन प्यारे, रह गया भूखा।"

लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

[मंच रोशन होता है, इस वक़्त दिन के दो बजे हैं। खारची डिपो का दफ़्तर दिखायी देता है। हाम्पते-हाम्पते मोहनजी दफ़्तर में दाखिल होते दिखायी दे रहे है। अब वे अपनी सीट पर बैठते हैं, फिर मेज़ पर बैग और टिफ़िन रखकर वे विचारमग्न हो जाते हैं। इस वक़्त वे, होंठों में ही कहते जा रहे हैं।]

मोहनजी – [होंठों में ही] – कहते हैं, तो भागवान कहा हुआ काम करती नहीं। आज नहीं कहा, तो खीच बनाकर उसमें बहा दिये घी के रेले। ओ रामसा पीर, कैसी औरत से मेरी शादी हो गयी ? अब इस फूटी हुई हंडिया को, क्या कहूं ? कल कहा था मैंने, के 'गीगला की बाई, आज खीच बना दो...खाने की, बहुत इच्छा हो रही है।' तब, क्या कहा ? के 'मेरे घुटनों में दर्द है, अब मेरी ऐसी स्थिति में आपको खाने के लिए चाहिए खीच ? भोले मत बनो, गीगले के बापू। ज़्यादा हुक्म चलाया मुझ पर, तो चली जाऊंगी अपने पीहर। अभी पूरी उम्र पड़ी है, आपके सामने..! मैं तो हूं समझदार, जिसने अभी तक आपको बर्दाश्त किया..अगर मेरी जगह कोई दूसरी औरत होती, तो अभी तक कभी छोड़कर चली जाती आपको।' अब क्या देखूं, इनमें ? ऐसे कौनसे गुण है, इनमें ? आज़ सुबह बनाया खीच, और उसमें बहाये घी के रेले। खीच खाने की, बिल्कुल इच्छा नहीं थी। मगर, जबरदस्ती खाना पड़ा मुझे। अब इस खीच के कारण, लगती है, बार-बार प्यास।

[बैग से पानी की बोतल निकालते हैं, मगर बदक़िस्मत से वह भी ख़ाली निकली। अब मोहनजी, वाचमेन चम्पले को पुकारते हैं..]

मोहनजी – [आवाज़ देते हुए] – अरे ए रे, चम्पला कढ़ी खायोड़ा। कहाँ चला गया रे ? इधर आ तो सही, चम्पला..

[मगर चम्पले को कहाँ सुनायी देता है ? वह तो भय्या, धान की बोरियों पर आराम से बैठा है और बना रहा है प्लानिंग छुट्टी लेने की। वह होंठों में ही, कहता जा रहा है।]

चम्पला – [होंठों में ही] – इन औरतों की बुरी आदत है, बुई-बुई झकल करते "तेरी-मेरी" का निंदा पुराण बांचने बैठ जाना। इसके अलावा, है क्या ? दो औरतें इकट्ठी हो जाये, तब करने लगती है 'घूटर-गूं घूटर-गूं।' मगर मर्द वही होता है, जो ना तो इन औरतों के बीच में बैठता है और न करता है औरतों जैसी तेरी-मेरी। जो करता है, वह होता है एक नंबर का बाईरोंडिया। ओ मेरे रामा पीर, आराम से बैठा था पाली। मगर, करें क्या ? इस भागवान यह कह-कहकर मेरा सर-दर्द अलग से बढ़ा दिया, के 'खारची में पड़ी है ख़ाली पोस्ट, और आप क्यों करते जा रहे हो रोज़ का पाली आना-जाना ? आपके जैसा मूर्ख मुझे इस दुनिया में कहीं दिखायी नहीं देता, या फिर पाली में किसी औरत के साथ आपका ग़लत सम्बन्ध स्थापित हो गया होगा..तो मुझे क्या मालुम ?' मैं आख़िर, करता क्या ? इस औरत के कारण मुझे, खारची आने के लिए स्वैच्छिक तबादला कराने की अर्जी लिखनी पड़ी। अब पड़ा हूं, खारची..क्या सुख पाया मैंने ? यही अधिकारी जब पाली में मिलता था तब ज़बान से शहद जैसे मीठे शब्द बोलता था के, 'चम्पले मेरे दिल के टुकड़े, खारची आ जा बेटा। तूझे बहुत आराम से रखूंगा।' मगर अब..यह गिरगिट की तरह रंग बदलता हुआ, एक ही वाक्य सारे दिन सुनाता रहता है 'ओय चम्पला कढ़ी खायोड़ा, कहाँ मर गया हरामखोर ?'

[इधर मोहनजी बार-बार घंटी बजाते जा रहे हैं, मगर चम्पले को सुनायी कैसे देता ? वह तो अभी-तक विचारमग्न होकर बोरियों के ऊपर बैठा है। आख़िर हताश होकर मोहनजी उसे भद्दी गालियाँ सुनाते हुए, बोल उठते हैं।]

मोहनजी – [हताश होकर, अब गुस्से में कहते हैं] – हरामखोर हो गया, क्या ? दस मर्तबा बजायी यह घंटी, मगर मरता नहीं इधर ? दो बेटों का बाप हो गया है, मगर अक्ल नहीं तेरे खोपड़े में ? जवाब देते हुए, मां के दीने तेरे मुंह में दर्द होता है क्या ?

[मगर चम्पला आने वाला नहीं, वह वहीँ बैठा-बैठा जवाब दे देता है..]

चम्पला – [वहीँ से] – घंटी आपकी, मर्जी आये उतनी बजाओ..मुझे क्या ? साहब, आपका कोई काम हो तो वहीँ से कह दीजिये। मेरे पांवों में दर्द है, बार-बार मुझसे आया नहीं जाता। अब कौन सुने, आपकी बेफ़ुज़ूल की बकवास ?

मोहनजी – [खांसते हुए] – पानी ला रे, चम्पला। गले में अलूज़ आयी है, रे। अब जलन हो रही है, गले में। प्यासा मर रहा हूं, चम्पले। [गला पकड़ते है] मर रहा हूं रे, रामा पीर। मार दिया रे मुझे, इस चम्पले कढ़ी खायोड़े ने। अब कहाँ मर गया रे, मेरे बाप ?

चम्पला – अरे साहब, अपना गला मत पकड़िये। यहाँ बैठकर आप ख़ुदकुशी मत कीजिये, न तो मुझे पुलिस के सामने हाज़िर होना पड़ेगा। मैं तो जनाब बहुत डरता हूं, खारची की पुलिस से। बेतें मार-मारकर, पिछवाड़ा सूजा देती है। ख़ुदकुशी करनी ज़रूरी हो तो साहब, मैं बाहर चला जाता हूं। बाद में आप आराम से, करते रहना ख़ुदकुशी।

[अब क्या ? बेचारे मोहनजी इस बकवादी चम्पले से हो जाते हैं, परेशान। फिर उठकर, लोटा ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं। न तो उन्हें दिखायी देता है लोटा, और न दिखायी देता है ग्लास। आख़िर उठाते हैं मटकी का ढक्कन, मगर वहां कहाँ पानी ? अब तो जनाब, पानी तो रह गया आँखों में। आख़िर हारकर, वे चम्पले को वापस आवाज़ देते हैं। और उससे करते हैं, विनती।]

मोहनजी – [हाथ जोड़कर कहते हैं] – पधारो चम्पा लालसा, इधर आकर दर्शन दीजिये। मालिक बोतल में पानी भरकर लाइए, प्यासा मर रहा हूं मेरे बाप। प्यासे आदमी को पानी पिलाना पुण्य का काम होता है, चम्पा लालसा कढ़ी खायोड़ा।

[चम्पला आता है, मोहनजी के पास। फिर चितबंगे आदमी की तरह, बोलता है..]

चम्पला – [नज़दीक आकर कहता है] – क्या कहा, हुज़ूर ? हुज़ूर, सुनायी दिया नहीं। एक मर्तबा, आप वापस कहिये।

मोहनजी – [बोतल थमाते हुए, कहते हैं] – बहरा है, क्या ? यह ले बोतल, और जाकर पानी भरकर ला। गधा, कानों में रुई डाल रखी है...सुनता नहीं, मेरी बात ?

[मोहनजी से बोतल लेकर, चम्पला वाश-बेसीन के नल के नीचे बोतल रखकर पानी भरना चाहता है, मगर वह बोतल कुछ बड़ी है..नीचे आये कैसे ? इधर यह चम्पला तो लाने में देरी करता जा रहा है, उधर मोहनजी की आँखों में आ जाता है पानी। फिर, क्या ? खंखारते हुए मोहनजी, बड़ी मुश्किल से यह कह पाते हैं..के]

मोहनजी – [खांसते हुए, बहुत कठिनाई से बोल पाते हैं] – पागल की तरह, इधर-उधर देखता है ? भंग पीकर आ गया, क्या ? [होंठों में ही] ए रामसा पीर, ऐसा क्यों किया मैंने ? खीच खाया मैंने, देसी घी के बहते रेले को देखकर..मगर, क्यों खाया आखी बड़ियों का साग, जिसमें डाली हुई थी, पतकाली मिर्चें ? अब कंठ जलता है, खांसता जा रहा हूं। और इधर यह नालायक चम्पला, ला नहीं रहा है पानी ?

[आख़िर पानी लाने के लिए, मोहनजी उठने की कोशिश करते हैं। तभी चम्पला पानी लाता हुआ दिखाई देता है, अब वापस बैठ जाते हैं..अपनी सीट पर। उसे बोतल में पानी लाता देखकर, मोहनजी ख़ुश होकर कहते हैं..]

मोहनजी – [ख़ुश होकर] – जीता रह चम्पले, तूने मुझे पानी पिलाया। रामसा पीर करे, अब तूझे भी कोई पानी देवे।

[चम्पले से बोतल लेते हैं, फिर गटा-गट पानी पी जाते हैं। पानी गर्म और खारा होने की वजह से, वे नाराज़ हो जाते हैं। फिर नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए, कहते हैं..]

मोहनजी – चम्पले कढ़ी खायोड़ा, नालायक तूने यह क्या कर डाला ? कमबख्त, मुझे गर्म और खारा पानी पिला दिया तूने..करमठोक।

[चम्पला उनकी बात अनसुनी करके, जाकर बैठ जाता है स्टूल पर। और वापस, विचारों का मंथन करने लग जाता है।]

चम्पला – [होंठों में ही] – परेशान हो गया, इस दफ़्तर में आकर। आराम से बैठा था, पाली में। मर्जी होती तब जाता दफ़्तर, इच्छा होती तो ले लेता रेस्ट..वहां तो रेस्ट भी बहुत मिलती थी। वहां काम भी बहुत कम था, बस जाकर सो जाना और क्या ? यहाँ तो जब कभी ड्यूटी पूरी करके मैं घर पहुंचता हूं, और उधर मुझे देखकर घर वाली को लग जाती है मिर्चें..करें क्या ? जनाब ? पड़ोसन से बातें करती हो, और मैं आ जाता हूं वहां...उनकी चल रही गुफ़्तगू को डिस्टर्ब करने, अब मेरा वहां आना, भागवान को कहां पसंद ? बस गुस्से से काफ़ूर होकर, कहने लगती है के "दफ़्तर छोड़कर, आप घर कैसे चले आये ? भूख लगती तो कहला देते मुझे, टिफ़िन भेज देती आपके दफ़्तर। करते हो हरामखोरी, अफ़सर बेचारे गऊ सरीखे..कुछ कहते नहीं।' अरे, मेरे रामसा पीर। यह समझती क्यों नहीं, सरकारी नियम-क़ायदे ? के, वाचमेन की ड्यूटी रात को होती है, दिन को नहीं..अब इस भागवान की मूर्खता के कारण, रात दफ़्तर में गुज़ारूं और दिन भी गुज़ारूं दफ़्तर में ? ऊपर से ऐसे मोहनजी जैसे बदतमीज़ अफ़सर, जिनकी सुनते रहें बुई–बुई झकाल

[बकवास]। इतना भी नहीं समझते, यह बेचारा तीन दिन से बराबर ड्यूटी निकाल रहा है, मेरी तारीफ़ करनी गयी कुए में..इनको तो मुंह से, मीठे बोल निकालने में आ जाती है मौत। ऊपर से रात को, दफ़्तर फ़ोन करके पूछ लेते हैं, के 'चम्पला कढ़ी खायोड़ा, नींद तो नहीं ले रहा है दफ़्तर में ?'

[इस तरह चम्पले के जवाब नहीं देने से, मोहनजी से बिना बोले रहा नहीं जाता। वे तो झट बोलने के भोंपू को, फिर स्टार्ट कर देते हैं।]

मोहनजी – चम्पला, कढ़ी खायोड़ा। बोल क्यों नहीं रहा है, मुंह में ज़बान नहीं है क्या ?

[इतना सुनकर चम्पले के दिमाग़ की शान्ति भंग हो जाती है, वह गुस्से में भन्नाता हुआ मोहनजी से कह देता है..]

चम्पला – [गुस्से में कहता है] – आप अधिकारी ज़रूर हैं, मगर अधिकारी के गुण आपमें एक भी नहीं। पानी मंगवाते क्या हो, आप तो पानी लाने वाले का पानी उतार लेते हो ? इतनी उतावली करना, अपनी बेर के पास..

मोहनजी – क्या कहा..?

चम्पला – कह रहा हूं, आपको सरकारी मुलाजिमों से पानी मंगवाना लगता है अमृत जैसा। अगर ऐसा ही है, तो एक बड़ी मटकी लाकर रख दूं आपकी सीट के पास।

[अब मोहनजी देखने लग जाते हैं, प्रवचन देते हुए इस चम्पले का मुंह ? इस मंज़र को देखकर, उनका बोलने का भोंपू हो जाता है बंद। मगर, इस चम्पले को आख़िर हो गया, क्या ? वह नालायक तो, अपने बोलने का भोंपू बंद करता ही नहीं ?]

चम्पला – [ज़ोर से बोलता हुआ] – ऐसा सोचा था मैंने, के आप अच्छे इंसान हैं..मगर आप तो निकले, पूरे पागल। थोड़ा दिमाग़ के ऊपर ज़ोर दिया करो, के 'अगला आदमी, किस हालत में है ? मटकी के अन्दर पानी नहीं, वाश-बेसीन के नल के नीचे बोतल आती नहीं..आखिर पानी लाया, बाथ रूम के नल से।'

मोहनजी – [ज़ोर से झल्लाते हुए, कहते हैं] – दो बच्चों का बाप बन गया रे, मगर तेरी खोपड़ी में अक्ल नाम की कोई चीज़ नहीं। नालायक कढ़ी खायोड़ा मुझे पिला दिया रे, टोयलेट का गंदा पानी। अरे रामसा पीर। ये सभी खारची के आदमी, मुझे मारने में ख़ुश हैं।

चम्पला – [ज़ोर से चीखता हुआ कहता है] – मेरे पीछे खारची के लोगों को क्यों गालियाँ देते हो ? कहना है तो साहब, मुझे कहिये। टंकी का गर्म पानी पी लिया, तो हो गया क्या ? पेट के कीड़े मर जायेंगे, ऐसा कौनसा नुक्सान हो गया आपका ?

[चम्पले की चिल्लाने की आवाज़ सुनकर, दफ़्तर के सारे मुलाजिम अपने-अपने कमरों से बाहर निकलकर वहीँ इकट्ठे हो जाते हैं। फिर उस चम्पले से, उसकी तबीयत पूछने लगते हैं..!]

सभी – [एक साथ कहते हैं] – क्या हुआ रे, तूझे ? कहीं दौरा पड़ गया, क्या ?

चम्पला – दौरा पड़े, इन अफ़सरों को। हम गरीबों को, क्यों पड़े ?

मोहनजी – कुछ नहीं, भाइयों। आप अपने-अपने कमरे में चले जाइये, और जाकर दफ़्तर का काम निपटाइए। यहाँ कुछ नहीं हुआ है।

चम्पला – यों कैसे बोलकर, बात को टालते जा रहे हैं, आप ? बात तो झगड़े की ही है, जनाब। इन लोगों को देखकर, आप डरते हुए ऐसे क्यों कह रहे हैं ? मगर सच्च बोलने में, मुझे किसका डर लगता है ?

[एक मुलाजिम नज़दीक आता है, उसका नाम है माता राम। मगर मोहनजी की नज़रों में, उसका नाम माथा खाऊ होना चाहिए। कारण यह है, उसकी बेफुजूल डिसकसन करने की गंदी आदत है..जिसके कारण वह एक बार किसी के कमरे में घुस जाता है, तब वह कमरे में बैठने वालों से डिसकस करना शुरू कर देता है। और कमरे को छोड़कर जाता नहीं, भले उसके लिए चाय, नमकीन व मिठाई वगैरा कुछ भी मंगवा लो..मगर यह आदमी, किसी भी हालत में कमरा छोड़कर जायेगा नहीं। अंत में छुट्टी होने के बाद ही वह, चपरासी को आते देखकर कमरे को छोड़ता है। अब वह नज़दीक आकर, चम्पले से पूछने लगता है।]

माता राम – [नज़दीक आकर, कहता है] – भाई चम्पला, कुछ तो बात हुई होगी ? तब ही शोले भड़के हैं, और आग लगी है।

चम्पला – शोलों को भड़काकर, आग मत लगाओ। मुझे अभी-तक, नौकरी करनी बाकी है। इस आग से धान की बोरियां जल जाया करती है, तब भुगतना पड़ता है हम जैसे वाचमेनों को। आपके जैसे, एलकारों को नहीं।

माता राम – [क्रोधित होकर] – कौन लगा रहा है, आग ? इसे नीच कर्म कौन कर सकता है ? मैं तो यह जानना चाहता हूं, के 'झगड़े का कारण, आख़िर है क्या ?'

चम्पला – बात तो इतनी सी है, बस इन्होने कहा 'पानी लेकर आओ' मैं ठहरा, भोला जीव। क्या जानता पानी कहाँ से लाऊं, और किसलिए इनको पानी चाहिये ? फिर सोचा जनाब, 'ये गाँव के देसी आदमी हैं, पांव में खालड़े पहनने वाले। निपटने के लिए जा रहे होंगे, जंगल..और इनको बोतल में चाहिए, पानी। इसके अलावा, मैं क्या सोच सकता हूं, जनाब ?

माता राम – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए] - हाँ भाई चम्पला, इन्होने पहले दी तुम्हें खाली बोतल..पानी भरने के लिए। फिर तूने सोचा होगा, 'इनको जाना है दिशा-मैदान'। अब आगे बता, आगे क्या हुआ ?

चम्पला – मुझे पानी भरने के लिए दी ख़ाली बोतल, और मैं लेकर आ गया बाथ-रूम की टंकी से गर्म-गर्म पानी। इसमें, मेरा क्या दोष ? [रोवणकाळी आवाज़ में] ज्यादा दुःख दिए तो पेश हो जाऊंगा बड़े साहब के सामने, फिर आप मुझे कोई दोष देना मत..के, मुझे किसी का लिहाज़ नहीं।

माता राम – [हंसते हुए कहते हैं] – अरे, ए लिहाज़ी जीव। सच्च बता, यार। क्या तूने पाख़ाने में पानी भेजने वाली टंकी का पानी, साहब को पिला दिया..? [मोहनजी की तरफ़ देखते हुए] वाह रे, अफ़सरां। इस खारची में बड़े से बड़े तुर्रम खां अफ़सरों को, छूट जाती है दस्तें।

चम्पला – फिर बेचारे साहब, कैसे जायेंगे बार-बार जंगल ? अरे, रामसा पीर। प्रेसर बढ़ गया तो, राम राम इनकी पतलून खराब न हो जाये ?

माता राम – तू फ़िक्र मत कर, चम्पला। [भोला मुंह बनाकर] इनके लिए इस्टेंडिंग पोट लगवा देंगे, इनके कमरे में ही। करें, क्या ? बेचारे, भारी शरीर वाले हैं। खाते रहेंगे, और पाख़ाना जाते रहेंगे। देण मिटी रे, चम्पला...

[इनकी बात सुनकर, मोहनजी को छोड़कर सभी खिल-खिलाकर हंसने लगे। बेचारे हंसते ही जाते हैं, हंसते ही जाते है..तब तक हंसते है, जब तक उनके पेट के बल खुल नहीं जाते। बेचारे मोहनजी इनकी हंसी सुनकर, खून का घूँट पीकर रह जाते हैं। तब वे बैग व टिफ़िन उठाते हुए, कहते हैं..]

मोहनजी – [बैग और टिफ़िन उठाते हुए, कहते हैं] – यह क्या निरर्थक बकवास लेकर बैठ गए, आप ? मुझे जाना है, प्लस पोलियो शिविर में। वहां नर्स बाईसा जुलिट, मेरी प्रतीक्षा कर रही है। अब मैं चलूँ यहाँ से, अन्यथा यह झगड़ा बढ़ता ही जाएगा।

[उनको यों रूख्सत होते देखकर, बड़े बाबू रिखबसा को होने लगती है, फ़िक्र। के, अभी तक साहब ने दफ़्तर की डाक देखी नहीं है। फिर ये जनाब, बाबूओं पर दोष लगा देंगे, के 'आज़कल ये बाबू लोग बिना पूछे डाक खोल देते हैं, और डाक की भनक अफ़सरों को लगने नहीं देते।' फिर क्या ? झट डाक लाकर, उनकी मेज़ पर रख देते हैं। फिर, मोहनजी से कहते हैं..]

रिखबसा – [डाक मेज़ पर रखकर, कहते हैं] – साहब, कहाँ जा रहे हो ? अभी तो जनाब, डाक देखनी बाकी है। प्लीज़, डाक पर अपने लघु-हस्ताक्षर कीजिये। फिर आप, बेफिक्र होकर जाइये।

मोहनजी – [सीट से उठते हुए, कहते हैं] – एक बार उठ गए रिखबसा, तो समझ लीजिये उठ गए। रेडियो एक बार बोलता है, दूसरी बार नहीं। इसी तरह मोहनजी सीट से एक बार उठ गए, तो बस उठ गए। वापस बैठने वालों में, मोहनजी नहीं है।

रिखबसा – [उनको रोकते हुए] – अरे जनाब, रुकिये रुकिये। [होंठों में ही] कहते हैं, 'एक बार उठ गए, तो बस उठ गये..!' उठ गये क्या ? हमेशा के लिए उठ जाइये जनाब। [प्रकट में] कोई ज़रुरी डाक हो तो ? कहीं हेड ओफ़िस वाले बड़े साहब, नाराज़ न हो जाये ?

मोहनजी – भाड़ में जाए, हेड ओफ़िस और बड़े साहब..मैं क्यों रुकूं, मुझे उनको लापसी खिलानी है क्या ? अब आप ही डाक खोलिए, जवाब भी आप ही लिखेंगे..बस हम तो जायें अपने काम, सबको राम राम राम।

[इतना कहकर, मोहनजी हो जाते हैं रूख्सत। मंच पर, अँधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, वापस मंच रोशन हो जाता है। खारची रेलवे स्टेशन का मंज़र, सामने दिखायी देता है। स्टेशन के बाहर, एक तरफ़ सफ़ेद कनातों से घेरकर प्लस पोलियो कैम्प की शक्ल दी गयी है। जगह-जगह, प्लस पोलियो कैम्प में बच्चों को लाने के इश्तिहार लगे हुए हैं। कई स्थानों पर लगाए गए सफ़ेद पर्दों पर लिखे गए नारे, आते-जाते लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। कैम्प के अन्दर, एक टेबल के चारों ओर कुर्सियां रखी हुई है। इस टेबल पर प्लस पोलियो की दवाएं, रजिस्टर, पेन्सिल, रबड़, कलम वगैरा रखी है। पास ही, चार-पांच मेडिकल बैग रखे हैं। पास रखी बेंच पर, चार अध्यापक नोट-बुक और कलम लिए हुए बैठे हैं। इन अध्यापकों में सुपारी लालसा भी बैठे दिखायी दे रहे हैं। शिविर के बाहर, मर्द और औरतों की अलग-अलग कतारें लगी है। हर मर्द-औरत के बगल में उनका

छोटा बच्चा है, जिसे वे पोलियो की दवाई पिलाने यहाँ लाये हैं। अब शिविर के अन्दर जुलिट आती हुई दिखायी देती है। उसके हाथ में, पर्चियां और कलम है। वह आकर, अपनी सीट पर बैठ जाती है। बैठने के बाद, वह अध्यापकों से कहती है..]

जुलिट – देखिये गुरु, यह प्लस-पोलियो का शिविर है। यह एक भलाई का काम है, इस कैम्प द्वारा, हमें बच्चों को लूला-पांगला होने से बचाना है। ध्यान दीजिये, दो जनो को मोहल्ला-मोहल्ला जाना है। हमारी एक मेडिकल वाली बाई आपके साथ साथ रहेगी, वह मदद करेगी दवाई पिलाने में। फिर..

सुपारी लालसा – फिर क्या..?

जुलिट – फिर वापस आकर, आपको अभिलेख तैयार करना है। सारी सूचनाओं से आप वाकिफ़ हैं क्योंकि, बड़े साहब आपको बता चुके है सारी सूचनाएं।

[दो अध्यापक झट उठकर, मेडिकल वाली बाई के साथ जाते हैं। उनके जाने के बाद, बाहर कतार में धक्का-मुक्की होने की आवाजें सुनायी देती है। इस धक्का-मुक्की के साथ-साथ, झगड़ा कर रहे लोगों की आवाजें सुनायी देती है। ऐसा लगता है, कोई किसी को फटकार पिला रहा हो ? कभी ऐसा सुनायी देता है, कोई किसी को सलाह दे रहा हो ? और साथ में कभी, सलाह देते-देते कोई भाषण देने लग गया हो। इन आवाजों के साथ-साथ, कौलाहल बढ़ता जा रहा है।]

एक व्यक्ति – अरे भले मानुष, तू तो हमें पढ़ा-लिखा आदमी लग रहा है, फिर कतार में आने के क़ायदे को कैसे भूल गया ?

दूसरा व्यक्ति – क्यों घुस गया रे बावला, इस कतार में ? क्या हम सुबह से भाड़ झोंकने के लिए, कतार में खड़े हैं ? अब, दूर हट।

तीसरा व्यक्ति – [गुस्से में] – अरे देना रे धक्का, इस बावले को। निकालो इसको कतार से बाहर।

एक औरत – अरे ए रे, नालायक। कैसे घुस गया रे, औरतों की कतार में ?

दूसरी औरत – घर पर, तेरी मां-बहन नहीं है क्या ? [बच्चे की रोने की आवाज़ आती है] कमबख्त, मेरे गीगले को नीचे गिरा दिया ? आ इधर, तूझे चपत मारकर तेरी कमर को सीधी कर दूं।

[तभी मोहनजी, बीच कतार में फंसे हुए दिखाई देते हैं। वे अपने दोनों हाथों से कतार में खड़े लोगों को धक्का देते हुए, आगे बढ़ते जा रहे हैं। इस वक़्त वे धक्का मारते हुए, बीच में खड़े लोगों को कहते जा रहे हैं..]

मोहनजी – [दोनों हाथों से धक्का मारते हुए, कहते हैं] – आने दीजिये..आने दीजिये, आप नहीं जानते हो मुझे नर्स बहनजी से ज़रूरी मिलना है।

दूसरा व्यक्ति – सबको मिलना है, भईसा। जनाब, क्या आप लाड साहब हैं ? जनाब इस तरह से बोल रहे हैं, जैसे कोई अफ़सर हो ?

मोहनजी – सच्च कहा आपने, मैं अफ़सर ही हूं..एफ़.सी.आई. का।

तीसरा व्यक्ति – [हंसता हुआ कहता है] – बड़े आये, अफ़सर बनकर ? लोत्तर होते, तो यहां क्यों आते ? यहाँ तो ख़ाली मेडिकल वाले अफ़सर, चितबंगे की तरह भटकते हैं।

एक औरत – ये साहब, डॉक्टर साहब कैसे हो सकते हैं ? मुझे तो ये किसी भी दशा में, कम्पाउंडर साहब भी नहीं लगते। फिर ये है, कौन ? क्यों आये हैं, यहाँ ? मुझे तो लगता है, यह कोई अब्दुला दीवाना है। जो हर किसी की शादी में, नाच लेता है। [ज़ोर से] अब मारो, ज़ोर का धक्का..इस अब्दुले दीवाने को।

तीसरा व्यक्ति – [हंसता हुआ, कहता है] – इस दीवाने की कोई लैला आने वाली नहीं, जो गीत गाये 'कोई पत्थर से न मारो मेरे दीवाने को।' [ज़ोर से] देखते क्या हो ? मारो रे, धक्का ज़ोर का।

[अब ज़ोरों की धक्का-मुक्की होने लगती है, शोरगुल बढ़ जाता है। शोर सुनकर जुलिट झट बाहर आती है, और वहां उसे धक्के खाते हुए मोहनजी दिखायी देते हैं। उनको देखते ही उसे बहुत ताज्जुब होने लगता है, वह सोचती हुई अपने होंठों में कहती है..]

जुलिट – [होंठों में ही] – अरे, यह इंसान कैसा चैप है ? मैंने तो ख़ाली औपचारिकता निभाते हुए इसको कहा था, के 'आप आ जाइये प्लस पोलियो कैम्प में, लंच की फ़िक्र करना मत।' .मगर यह तो ठहरा, मुफ़्तखोर। दो पुड़ी आलू की सब्जी के साथ, खाने आ गया यहाँ ?

[अब बेचारे मोहनजी की दुर्दशा हो जाती है, कतार में खड़े लोगों ने मोहनजी की हालत गेंद के सामान बना डाली। कोई उनको इधर धक्का मारे, तो कोई उधर। आख़िर, उन लोगों के सामने बेचारी जुलिट लिहाज़ के मारे मोहनजी को कहने लगी...]

जुलिट – अरे मोहनजी, आप ? अरे आइये, आइये। [धक्के दे रहे लोगों को, ज़ोर से कहती है] अरे साहेबान, इनको आने दीजिये।

मोहनजी – ये आये, मोहनजी। [कूदकर जुलिट के पास आने का प्रयास करते हैं, मगर उसी वक़्त भीड़ लगा देती है ज़ोर का धक्का। और बेचारे मोहनजी, सीधे आकर गिरते हैं जुलिट के चरणों में। शर्माती हुई जुलिट, झट दूर हट जाती है। फिर, कहती है..]

जुलिट – [दूर हटती हुई] – अरे क्या करते हो, मो..मो..मोहनजी ? आप तो बड़े आदमी हैं, इस नाचीज़ के चरणों में..नहीं नहीं..!

[अब मोहनजी का हाथ थामकर, उन्हें उठाती है जुलिट। उठने के बाद, वे जुलिट को देखते हुए मुस्कराते हैं। फिर, कहते हैं..]

मोहनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – जुलिट बाई आपके आगे, मैं बड़ा आदमी नहीं हूं। बस आपके जैसा भोला-भाला आदमी हूं, कढ़ी खायोड़ा। दिल-ए-मोहब्बत का प्यासा, आपका दास मोहनजी हूं। बस मुझे चाहिए, आपके दिल में बैठने का स्थान। इसके अलावा, मुझे कुछ नहीं चाहिए।

भीड़ में एक व्यक्ति कहता है – मगर, आप बैठोगे कहाँ..?

दूसरा व्यक्ति – [जवाब देता हुआ] – सुना नहीं क्या, तूने ? दिल में बैठेंगे, और कहां ? मारवाड़ी में बोलकर सुनाऊं, क्या ? "**जनाबेआली मोहनजी, बिराजेला हिवड़ा मायं।"** समझ गया, भला आदमी ?

[उन लोगों के कोमेंट्स सुनकर, **मोहनजी** अपने मन में ख़ुश होते हैं। फिर अपने लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, उस व्यक्ति की तरफ़ देखते हुए अवाम को भाषण देते हुए कहते हैं..]

मोहनजी - [भाषण देते हुए, बोलते ही जाते हैं] – आप लोग, ऐसी सेवाभावी नर्स बाईसा की क्या सेवा कर सकते हो ? मैं तो सेवाभावी नर्स बाईसा को, अपनी पलकें बिछाकर बैठाता हूं।

[**मोहनजी** की बात सुनकर, शर्म के मारे जुलिट के गाल लाल हो जाते हैं। फिर वह शर्माती हुई कहती हैं]

जुलिट – [शर्माती हुई, कहती है] – मुझे गिरना नहीं है, जी।

तीसरा व्यक्ति – नर्स बहनजीसा, आप इनकी पलकों पर ज़रूर बैठ जाना..फ़र्क क्या पड़ता है ? **मोहनजी** हो जायेंगे काने या फिर.. दोनों आँखें खोकर, बन जायेंगे 'सूरदास'। और, फिर क्या ? आगे से **मोहनजी**, किसी भी सुन्दर नारी को अपनी पलकें बिछाकर बैठाएंगे नहीं।

दूसरा व्यक्ति – सूरदास हो जायेंगे तो बहुत अच्छा, फिर हर गली-गली में भ्रमण करते हुए गाते चलेंगे..के, 'राधा प्यारी, नयनों में आकर बस जा प्यारी।'

तीसरा व्यक्ति – अरे, गेलसफे। ऐसे नहीं, ऐसे गायेंगे [गीत गाने का अभिनय करते हुए] 'मेरी जुलिट प्यारी, प्यारी दुलारी। बस जा नयनों में, आकर। जुलिट प्यारी, प्यारी दुलारी..

दूसरा व्यक्ति – [काफ़िया जोड़ता हुआ, बेसुर में गाता है] – तेरे विरह में यह मोहन लाल, पागल बन गया आज़। जुलिट प्यारी, प्यारी दुलारी..बस जा प्यारी, आँखों में आकर। ओ मोहन लाल तेरा दुःखड़ा जाने कौन, घायल की गति जाने घायल जाने..जुलिट प्यारी प्यारी दुलारी, बस जा आँखों में आकर।

[दूसरे व्यक्ति के गाने की बेसुरी आवाज़ सुनकर, कतारों में खड़े सभी लोग ज़ोरों से हंसने लगते हैं। अब जुलिट, अपनी सीट पर आकर बैठ जाती है। इतने में हरक लाल नाम का चपरासी, बड़े साहब का सन्देश लेकर जुलिट के पास आता है। और जुलिट से कहता है..]

हरक लाल – [बड़े साहब का आदेश सुनाता हुआ] – बड़े साहब नाराज़ हो रहे हैं, वे कह रहे हैं के 'यह हुड़दंग कौन मचा रहा है ? अब आपको, बड़े साहब ने इसी वक़्त बुलाया है।'

जुलिट – कहना, अभी आ रही हूं।

[हरक लाल जाता है। अब बड़े साहब के पास जाने के लिए, जुलिट अपनी सीट छोड़कर उठती है। उठकर, वह अपनी सीट पर मोहनजी को बैठा देती है। और उन्हें रजिस्टर थमाकर कहती है..]

जुलिट – [रजिस्टर थमाती हुई, कहती है] – देखो मोहनजी, इस रजिस्टर में आंकड़े भरे हुए हैं। इन आंकड़ो से साफ़ प्रतीत होता है, के कितने बच्चों को दवाई पिला दी गयी है। बस आपको जोड़े करनी है, और साथ में उन जोड़ो का क्रोस भी मिलना चाहिए। अब दवाई पिलाने का झंझट छोड़िये, मेडिकल वाली बाई पिला देगी दवाई।

[सफ़ेद साड़ी पहनी हुई एक औरत आती है, उसके हाथ प्लस पोलियो की दवाओं का बैग है। बैग टेबल पर रखकर, वह बैग से निकलती है पोलियो ड्रोप की शीशी। कतारों में खड़े मर्द व औरतें,

एक-एक कर अन्दर दाख़िल होते हैं। अब वह उन नन्हें बच्चों के मुंह में, पोलियो दवाई की खुराक डालती हुई दिखाई देती है। इन बच्चों को पोलियो की खुराक दी जाने के बाद, बच्चों के अभिभावक उन्हें गोद में लिए हुए..कैम्प से बाहर जाते हुए दिखाई देते हैं। अब जुलिट रूख्सत होते वक़्त, मोहनजी से कहती है..]

जुलिट – [जाते-जाते] – ठीक है ना, मोहनजी ? अब, आप बूथ सम्भाल लेना। बड़े साहब से मिलकर जस्ट आ रही हूं, मोहनजी।

[जुलिट के जाने के बाद, मोहनजी, रजिस्टर में जोड़े करते दिखाई देते हैं। लम्बवत जोड़े करने के बाद, वे अनुप्रस्थ जोड़ों के क्रोस मिलाने की कोशिश करते हैं। अब घड़ी में करीब, अपरान्ह तीन बजे हैं। अब जोड़ों का क्रोस मिलाते-मिलाते बेचारे मोहनजी परेशान हो जाते हैं, कभी बेचारे लम्बवत जोड़ों की जांच करते हैं..तो कभी अनुप्रस्थ जोड़ों का मिलान करने का निरर्थक प्रयास करते हैं। मगर जोड़ों का क्रोस, मिलता दिखाई नहीं देता ? आख़िर, उन्हें परेशान पाकर सुपारी लालसा उनसे कहते हैं..]

सुपारी लालसा – मोहनजी मालिक, क्या बात है ? परेशान, काहे हो रहे हो ?

मोहनजी – [परेशान होकर कहते हैं] – धान की बोरियां गिनने का काम बहुत आसान है, मगर बापूड़ा बच्चों को गिनना बहुत कठिन है।

[उनकी बात सुनकर, सुपारी लालसा को हंसी आ जाती है। वे हंसते हुए कहते हैं..]

सुपारी लालसा – [हंसते हुए, कहते हैं] – बच्चें गिनने बहुत कठिन है, मोहनजी। मगर आपके लिए तो, बच्चें पैदा करना भी बहुत कठिन है। तभी मालिक मोहनजी, ढलती उम्र में आपने बच्चें पैदा किये हैं आपने। कहिये जनाब, यह बात सच्च है या नहीं ?

मोहनजी – क्या करूँ रे, कढ़ी खायोड़ा ? काम निपटते जा रहे हैं, बच्चें पैदा भी हो गए, और दवाई पीकर भी चले गए। मगर अब जोड़ों का क्रोस मिल नहीं रहा है, मास्टर साहब ? अब यह जुलिट क्या समझेगी, के इतना पढ़ा हुआ आदमी जोड़े बिल्कुल ग़लत करता जा रहा है ? मेरे रामा पीर, अब तू ही आकर मेरी गाड़ी को चला।

सुपारी लालसा – [मोबाइल कान के पास लेजाते हुए, कहते हैं] – हल्लो जनाब, आप कौन बोल रहे हैं..?

मोबाइल से आवाज़ आती है – रतन सिंह बोल रहा हूं, मोहनजी वहां है क्या ?

सुपारी लालसा – [मोबाइल में बात करते हुए] – कौन रतनसा ? मोहनजी यहीं बैठे हैं। कहिये जनाब, क्या ख़िदमत करूँ आपकी ?

रतनजी – [मोबाइल से आवाज़ आती है] – ज़रा मोहनजी से बात करवाइये, ना।

सुपारी लालसा – [फ़ोन पर] – हुज़ूर, मेरे पहलू में बैठे हैं जनाब। लीजिये, बात कीजिये..हुज़ूर।

[सुपारी लालसा झट, मोबाइल मोहनजी को थमा देते हैं। फिर, वे उनसे कहते है]

सुपारी लालसा – [मोहनजी को मोबाइल थमाकर कहते हैं] – रतनजी का फ़ोन आया है, अब आप उनसे बात कीजिये। आप आराम से, गुफ़्तगू करते रहिये। अब छोड़ दीजिये, इस रजिस्टर को। आप अफ़सर हो, यह जोड़ें लगाने का काम आपका नहीं..हम मास्टरों को ही, शोभा देता है। अब उठ जाइये, मैं अपने-आप यह काम संभाल लूँगा।

[मोहनजी मोबाइल लेकर, सीट से उठ जाते हैं। उनके हटते ही, सुपारी लालसा झट उनकी सीट पर बैठ जाते हैं। फिर केलकुलेटर से, रजिस्टर में की हुई जोड़ों की जांच करने में व्यस्त हो जाते हैं।]

मोहनजी – [मोबाइल से, रतनजी से बातें करते हुए] – हल्लो, कौन..?

मोबाइल से आवाज़ आती है – अरे मोहनजी, मैं हूं रतन सिंह।

मोहनजी – [मोबाइल से] - अरे आप रतनसा मालिक, कढ़ी खायोड़ा..? यह क्या कर डाला आपने ? अकेले-अकेले ही, खाना खाकर आ गए ?

रतनजी – [मोबाइल से] – के.एल.काकू ने, आपको कुछ कहा नहीं ?

मोहनजी – [मोबाइल से] - हां, जी हां जनाब। मुझे पूरा ध्यान है, कल ही के.एल.काकू कह रहे थे के 'बांगड़ कॉलेज के अन्दर, व्यापारियों का सम्मलेन रखा गया है। भोज भी रखा गया है, और साथ में यात्रा-भत्ता भी मिल जाएगा..इस सरकारी टूर का।' मगर मैं आपको एक यह बात कह रहा हूं, के..

रतनजी – [मोबाइल से] – कहिये हुज़ूर, कहीं कोई गुस्ताख़ी तो न हो गयी हमसे ?

मोहनजी – [मोबाइल से] अरे यार रतनजी, क्या कहूं आपसे ? आपने ओमजी का नाम लिखवाया ही क्यों ? आख़िर उनको यात्रा-भत्ता मिलने वाला नहीं, मेरा नाम लिखवा देते तो यार, मैं उठा लेता यात्रा-भत्ता।

रतनजी – अरे मोहनजी मालिक, आप ठहरे अधिकारी। आपको मना करने वाला वहां है कौन ? आख़िर आपके दोस्त के.एल.काकू के हाथ में ही है, इस पूरे सम्मलेन की व्यवस्था।

मोहनजी – जी हाँ, अभी आ रहा हूं बेंगलूर एक्सप्रेस में बैठकर। वहां आकर ढूंढ़ लूँगा, काकू को। काकू मुझको खाना भी खिला देगा, और साथ में उपस्थिति प्रमाण-पत्र भी मुझे दिला देगा। फ़ोन रखता हूं जी, बस आ रहा हूं जी।

[मोबाइल बंद करके, सुपारी लालसा को थमा देते हैं मोबाइल। फिर बैग और टिफ़िन उठाकर, स्टेशन के प्लेटफोर्म की तरफ़ क़दम बढ़ा देते हैं। थोड़ी देर में ही, वे प्लेटफोर्म पर पहुँच जाते हैं। मंच पर अँधेरा छा जाता है। मंच रोशन होता है, जैसे ही मोहनजी प्लेटफोर्म पर क़दम रखते हैं..वहां खड़ी बेंगलूर एक्सप्रेस प्लेटफोर्म छोड़ देती है, उनके आँखों के सामने ही वह गाड़ी सामने से गुज़रती हुई दिखाई देती है। बेचारे मोहनजी के दिल की हालत उस गाड़ी को जाते देखकर, कैसी रही होगी ? वह तो, उनका रामा पीर ही जाने। बेचारे मुंह लटकाये, आकर बैठ जाते हैं..प्लेटफोर्म पर रखी बेंच पर। उनके बेंच पर बैठने के बाद एक ग्रामीण वहां चला आता है, और उनके पास आकर उनके पहलू में बैठ जाता है। इस वक़्त इस ग्रामीण के सर पर सफ़ेद पगड़ी रखी है, और उसके बदन पर पहने हुए सफ़ेद उज़ले धोती-कमीज़ बुगले के पर के माफ़िक लग रहे हैं। बैठने के बाद, वह उनको "जय रामजीसा" कहकर उनका अभिवादन करता है।]

पगड़ी वाला ग्रामीण – [मोहनजी से कहता है] – जय रामजी सा। पावणा, पहचाना मुझे ?

[मोहनजी की एक आँख की मांसपेशियां कुछ कमज़ोर है, जिसके कारण वे एक आँख को तेज़ प्रकाश में पूरी खोल नहीं पाते। उस ग्रामीण की देखते वक़्त, वे सामने से आ रही धूप का सामना कर नहीं पाते..और इस कारण वे, एक आंख की पलक को खोल नहीं पाते। उनकी यह हालत देखकर वह ग्रामीण उनको ताने देता हुआ कहता है]

पगड़ी वाला ग्रामीण – [ताना देता हुआ, कहता है] – पावणा, आँख मत मारो, मैं औरत नहीं हूं..मर्द हूं। समझे गए, आप ? अब घर जाकर, लाडी बाई को आँख मारना...!

[इतना कहकर, वह ग्रामीण खिल खिलाकर हंस पड़ता है। उधर मोहनजी अपने दिमाग़ पर ज़ोर देकर सोचते हैं, के 'आख़िर, यह आदमी इनको कैसे जानता है ?']

मोहनजी – [सोचते हुए, होंठों में ही कहते हैं] – अरे रामा पीर, ये महानुभव आख़िर कौन हो सकते हैं ? इन्होंने आख़िर मुझे पावणा कहकर क्यों बतलाया है ? कहीं ये मेरे ससुराल से...[याद आते ही, प्रगट में कहते हैं] अरे कढ़ी खायोड़ा, आप तो सौभाग मलसा हो, मेरे ससुराल के गाँव वाले। आपको कैसे भूल सकते हैं, और न भूल सकता हूं आपके किये काम को।

सौभाग मलसा – भूल कैसे सकते हो, पावणा ? मैंने अहसान किया था, आप पर। शादी के वक़्त आपकी सालियों ने दाल में मिंगणियां डाल रखी थी, मैं यह भेद आपके सामने नहीं खोलता तो आप मिंगणियों को कोकम समझकर खा जाते ?

[इस घटना को याद करते, दोनों ज़ोर से ठहाके लगाकर हंस पड़ते हैं। अब मोहनजी टिफ़िन खोलकर, सौभाग मलसा की मनुआर करते हुए कहते हैं।]

मोहनजी – [मनुआर करते हुए कहते हैं] – खाना खाए हुए काफ़ी वक़्त बीत गया होगा अब आइये जनाब, लंच कर लीजिये। देखिये जनाब आपकी बहन के हाथों के बनाए हुए देसी घी से तर फुलके, और गोविंद-गट्टों की सब्जी..अरोग लीजिये, जनाब। फिर हम दोनों पियेंगे, गर्म-गर्म मसाले वाली चाय। क्या सालाजी जनाब, ठीक है ना ?

सौभाग मलसा – रहने दीजिये, पावणा। आप, भूखे रह जाओगे।

मोहनजी – अरोगिये, जनाब। पुरसी हुई थाली का, निरादर नहीं करना चाहिए। रामसा पीर इस तरह जीमने का मौक़ा, कभी-कभी ही देते हैं। ऐसा मौक़ा जो चूकता है, वो करमठोक कहलाता है।

सौभाग मलसा – रहने दीजिये, पावणा। मुझे जब भी वक़्त मिलेगा, मैं आपकी हवेली आकर खाना खा लूँगा।

मोहनजी – [होंठों में ही कहते हैं] – खाना खा ले, साले। फिर घर जाकर लाडी बाई के ऊपर मारूंगा, रौब। कहूँगा, के 'अरी, ओ भागवान। आपके पीहर वाले सौभाग मलसा को खाना खिलाया, फिर उनको पायी चाय। अब कभी आप मुझे कहना मत, के मैं कंजूस हूं ?' यहाँ, मेरा क्या जाने वाला ? मैं तो बांगड़ कॉलेज जाकर, मुफ़्त में खाना खा लूँगा।

सौभाग मलसा – ज़्यादा सोचा मत करो, पावणा। मेरी फ़िक्र करने की आपको कोई ज़रूरत नहीं, मैं तो कभी भी आपकी हवेली आकर भोजन कर लूंगा। वहां बहन के हाथों से बनाया दाल का हलुआ, देसी घी में तली हुई पुड़ियां, गोविन्द-गट्टों और केर-दाखों की बनी सब्जी। वाह पावणा, वहां खाने का क्या लुत्फ़ होगा ?

मोहनजी – साले साहब, दिन में सपने देखा मत करो। यह सामने रखी भोजन सामग्री, सपने से बेहतर है। अब आपको मेरी कसम, शुरू कीजिये..ज़्यादा मनुआर करवाना, देवी अन्नपूर्णा को नाराज़ करने के बराबर है।

[अब मोहनजी टिफिन खोलकर, सौभाग मलसा का हाथ पकड़कर टिफ़िन के पास लाते हैं। बस, फिर क्या ? सौभाग मलसा तो जनाब, ऐसी मनुआर का ही इंतज़ार कर रहे थे। झट रोटी का निवाला तोड़कर, सब्जी में डूबा-डूबाकर मुंह में डालने लगे। भोजन करते-करते, सौभाग मलसा कहने लगे..]

सौभाग मलसा – [मुंह में निवाला डालते हुए] – पावणा, इतना ज़ोर देकर आप कह रहे हो..तो फिर मुझे क्या ? मैं तो जनाब, मनुआर का कच्चा ही हूं। लीजिये, यह शुरू किया, आपका राजभोग। [अगला निवाला मुंह में डालते हुए] आपके रावले का क्या ? कभी भी आकर, राजभोग अरोग लेंगे।

[अब सौभाग मलसा भोजन पर इसे टूट पड़ते हैं, मानो किसी तीन दिन के भूखे आदमी को बड़ी मुश्किल से भोजन दिखाई दिया हो ? मोहनजी की बुलंद निगाहें अब भोजन पर गिरती है, जिसे देखकर वे अब पछताते हैं..के 'अब तक उन्होंने क्यों नहीं टिफ़िन खोलकर देखा ?' आज तो लाडी बाई ने उनकी मन-पसंद गोभी, मटर, और लाल टमाटर की सब्जी और साथ में देसी घी में तरा-तर डूबे हुए फुलके, टिफ़िन में डाले है। सुबह खिला दिया, इतना खीच..के पेट में रत्ती-भर ठौड़ रही नहीं, उस वक़्त उनको तो सांस लेना कठिन हो गया ? और अब, उन्हें लाडी बाई के ऊपर क्रोध आने लगा..के, क्यों नहीं कहा लाडी बाई ने, उन्होंने क्या-क्या टिफ़िन में डाला है ? इस तरह सोचते-सोचते मोहनजी, होंठों में ही बड़बड़ाने लगे..]

मोहनजी – [होंठों में ही] – अरे भले आदमी, इतना मत खा। दो रोटी और कुछ सब्जी तो मेरे लिए भी छोड़ दे..पेट भरने का तो सवाल नहीं, मगर कढ़ी खायोड़ा सब्जी तो चख लूंगा। अरे..अरे तू तो साफ़ कर गया..**मोहन प्यारे, रह गया भूखा।** [हाथ में लगी घड़ी को देखते हुए, कहते हैं] अब तो यार, कब मिलेगी गाड़ी ? रामा पीर, अब मैं कब देखूँगा पाली ?

[सौभाग मलसा तो जनाब ऐसे भुख्खड़ निकले, जिन्होंने थोड़ी देर में ही रोटियां और गोभी, मटर, आलू व लाल टमाटर की सब्जी को गटागट खाकर टिफ़िन को साफ़ कर डाला। फिर टिफ़िन को बंद करके, मोहनजी से पानी की बोतल लेते हैं। पानी पीकर, अपने जूठे हाथ धो डालते हैं। अब डकार लेकर, वे मोहनजी से कहते हैं..]

सौभाग मलसा – पावणा, आप इतना सोचा मत करो। ज़्यादा सोचने से बी.पी. की बीमारी हो जाती है। लीजिये, अब अपुन मसाले वाली चाय पी लेते हैं। जेब से निकालिए छः रुपये..[चाय की थडी वाले को आवाज़ देकर अपने पास बुलाते हैं] ओ चाय वाले भाई साहब, ज़रा इधर दो कप चाय लेकर इधर आना।

[पास खड़े चाय की थड़ी वाले को आवाज़ देकर, पास बुलाते हैं। उसके पास आने पर, वे मोहनजी से छः रुपये लेकर थड़ी वाले को दे देते हैं। थड़ी वाला झट चाय से भरे कप, उन दोनों को थमा देता है। अब चाय पीकर मोहनजी घड़ी देखते हैं, फिर फिक्रमंद होकर वे कहते हैं।]

मोहनजी – [फिक्रमंद होकर वे कहते हैं] - अरे रामा पीर, इस खाने-पीने में करीब आधा क्लाक बीत गया। अब करूँ क्या, अब कैसे मिलेगी पाली जाने वाली बस ? सौभाग मलसा – चले जाओ पावणा बस-स्टेण्ड। अब तो जीप के अलावा, पाली झट पहुँचने का कोई दूसरा साधन नहीं। अब तो जनाब, जीप में बैठकर ही जाना होगा आपको। ज़्यादा देर की तो, यह जीप साधन भी नहीं मिलेगा। फिर यहाँ बैठकर, मक्खियां मारोगे पावणा।

मोहनजी – ऐसी कड़वी जबान मत बोलिए सालाजी। मेरा पाली जाना बहुत ज़रूरी है।

सौभाग मलसा – सुनो, पावणा। आज तो खारची में किसी राजनैतिक दल ने, किसानों की रैली आयोजित करने के लिए कई जीपें-ट्रकें रोक रखी है। मैं खुद भी इस रैली में, यहाँ आया हुआ हूं। अब पोने चार बजने वाले हैं..

[यह सुनते ही, मोहनजी के दिल में मचने लगी उतावली। बैग और टिफ़िन उठाकर, फटके से रवाना होते हैं...बस स्टेण्ड, जाने के लिए। फिर क्या ? बेचारे मोहनजी दौड़ते-भागते जा पहुंचते हैं, बस स्टेण्ड। बड़ी मुश्किल से उन्हें एक जीप खड़ी मिलती है, हाम्पते हुए वे जीप वाले के नज़दीक आते हैं। इनके चेहरे पर उतावली के भाव पढ़कर, वह जीप वाला इनसे कहता है..]

जीप वाला – ओ मूंछों वाले भाई साहब, पाली जाना हो तो बैठ जाइये जीप के अन्दर। आप से पच्चास रुपये भाड़ा लूँगा, व भी इस शर्त के साथ..के आप पांच-सात सवारी लाकर, इस जीप में बैठाओगे। ज़्यादा सवारियां लाये तो, आपके लिए भाड़ा बीस रुपया कर दूंगा।

[इस जीप में पांच-छः सवारियां पहले से बैठी हुई है, दो या चार सवारियां और आ जाये..तो, यह जीप पूरी ठसा-ठस भर जायेगी। मगर इस जीप वाले के दिल में समाया हुआ है, लालच..वह इस जीप को, रवाना होने नहीं देगा ? अब बेचारे मोहनजी, आख़िर हो जाते हैं परेशान। के, 'यह जीप

आख़िर कब रवाना होगी ?' आगे देर हो चुकी है, फिर क्या ? देरी में, और देरी। आख़िर वे जीप वाले से कहते हैं..]

मोहनजी – [परेशान होकर कहते हैं] – ओ जीप वाले भाई, ज़रा सुनिए मेरी बात। अब आप रवाना कीजिये, इस जीप को। मेरे बाप, कढ़ी खायोड़ा जीप ठसा-ठस भरी जा चुकी है। मुझे पाली जल्द पहुँचना है, ज़रूरी काम है।

जीप वाला – सबके ज़रूरी काम है, भाईसाहब। अगर आपको जीप चालू करवानी हो तो, जनाब लाइए हर सवारी पच्चास रुपये। अब आप पूछ लीजिये, दूसरी सवारियों से..वे सहमत है या नहीं ?

मोहनजी – [सवारियों से कहते हैं] – आप सब जिद्द मत कीजिये, दे दीजिये पच्चास रुपये हर सवारी..इस जीप वाले को। आप नहीं जानते, पाली में मेरा बहुत ज़रूरी काम है ?

[इन सवारियों में बैठा है, एक खडूसिया आदमी। उसकी गंदी आदत है, हर बात-बात में टोचराई करनी और लोगों का बनता काम बिगाड़ना। वह मोहनजी की बात सुनते ही, झट उतर जाता है जीप से। और हाथ नचाकर, कहता है अलग से..]

खाडूसिया आदमी – [हाथ नचाता हुआ कहता है] – आपको इतना जल्दी पाली पहुंचना हो तो, हम सब उतर जाते हैं जीप से। आप दे देना पांच सौ रुपये इस जीप वाले को। आपको अभी पहुंचा देगा, पाली..[दूसरी सवारियों से] भाइयों, नीचे उतर आइये। सेठ साहब को अकेले जाने दो, उनको जल्दी पाली पहुँचना है।

मोहनजी – [चिढ़ते हुए, सवारियों से कहते हैं] – आप लोग़ क्यों उतरते हो ? चलिए, मैं नीचे उतर जाता हूं। फिर आवाज़े देकर सवारियों को बुला लाता हूं, आख़िर गर्ज़ तो मुझे है..जल्दी जाने की।

[मोहनजी नीचे उतरकर, आते-जाते लोगों को आवाजें देते हुए ज़ोर-ज़ोर से कहते हैं।]

मोहनजी – [लोगों को आवाज़ देते हुए] – बीस-बीस रुपये पाली, बीस-बीस रुपये पाली। आ जाओ भाईजान, आ जाओ बहनजी, आ जाओ सेठ साहब। जल्दी आ जाइए, जनाब। ऐसा मौक़ा मत चूकिए, साहेबान। बीस-बीस रुपये, बीस-बीस रुपये पाली। आ जाओ, आ जाओ ।

[जीप के नज़दीक, एक ठेला रखा है..जिसमें केले भरे हैं। पास खड़े केले वाले को मोहनजी का इस तरह लोगों को आवाज़ देकर बुलाना अख़रता है, क्योंकि उनके द्वारा इस तरह पुकारे जाने से उसके ग्राहक टूटने लगे। वे केले ख़रीदने की जगह मोहनजी को घेरकर खड़े हो जाते हैं, उनका

ख्याल यही रहा होगा शायद मोहनजी जादूगर है और इस वक़्त वे कोई जादू का खेल दिखला रहे हो ? इस कारण धंधा नहीं ज़मने से वह, मोहनजी पर नाराज़ होकर उन्हें कटु शब्द सुना बैठता है।]

केला वाला – [गुस्से में] – ए फूटी झालर, क्या कर रहा है, खोड़ीला-खाम्पा ? मेरा धंधा क्यों बिगाड़ रहा है..? अब यहाँ से फूट, नहीं तो..

[इधर दारु के ठेके पर बैठकर, सौभाग मलसा एक पूरी बोतल गुलाब-छाप देसी दारु पी चुके हैं..अब वे दारु के नशे में झूमते हुए मोहनजी के नज़दीक जा पहुंचते हैं। उन्हें इस तरह आवाजें लगाते देखकर, उनकी हंसी उड़ाते हुए कहते हैं..]

सौभाग मलसा – [हंसी के ठहाके लगाते हुए] – वाह, भाई पावणा। नया धंधा चालू कर दिया, क्या ?

[इतना कहकर, सौभाग मलसा उनके और नज़दीक आते है। अब उनके मुंह से देसी दारु की खट्टी बदबू निकलती है, अब इस गंध से बचने के लिए मोहनजी झट नाक के ऊपर रुमाल रखकर कहते हैं..]

मोहनजी – [नाक पर रुमाल रखकर] – क्या करूँ, साले साहब ? आज़ तो मैं बुरा फंसा, जनाब। यह कमबख्त जीप वाला कहता है, पूरी सवारियां भरे बिना जीप को चालू करूंगा नहीं। इधर देरी में, और देरी हो रही है।

सौभाग मलसा – [हंसते हुए] – पावणा, क्या बात है ? अभी से लाडी बाई की याद आने लग गयी, क्या ? [गंभीर होकर] इस तरह गैलसफ़ी बात, क्यों करते जा रहे हो पावणा ?

मोहनजी – आप मज़ाक मत उड़ाओ, मेरी..मैं सच्च कह रहा हूं, मुझे बांगड़ कॉलेज पहुँचना है साले साहब। वहां चल रहा है, व्यापारियों का सम्मलेन, वहां जाकर मैं दूंगा एक चकाचक भाषण। फिर साले साहब, मैं पकडूंगा जोधपुर जाने वाली जम्मूतवी एक्सप्रेस।

सौभाग मलसा – [दारु के नशे में] – आख़िर पावणा जाना तो घर ही है, फिर उतावली क्यों करते जा रहे हो ? घर कहीं उड़कर, जायेगा तो नहीं ? यहीं पड़ा रहेगा, यार पावणा। [जम्हाई लेते हुए] अब मुंह को तक़लीफ़ क्यों देते हो, अब समझ लो..भाषण-वाषण गया, तेल लेने ?

मोहनजी – फिर, क्या करूँ साले साहब ? आप कोई रास्ता दिखाओ, जनाब।

सौभाग मलसा – फिर चलो यार, मुन्नी बाई के कोठे पर। महफ़िल के मज़े लेंगे यार..मर्दों का क्या..? कहीं भी गुज़ारो रात, बोल यार तूझे पूछने वाला है कौन ?

[दारू की बोतल थैली से निकालकर, फिर पीते हैं एक घूँट। एक घूँट दारु का पीकर, जनाब मोहनजी से कहते हैं..]

सौभाग मलसा – चुप क्यों हो गए, मिस्टर नटवर लाल ?

मोहनजी – साला साहब मैं मिस्टर नटवर लाल नहीं हू, मैं तो..

सौभाग मलसा – [हंसकर कहते हैं] – जानता हूं रे पावणा, तुम हो कढ़ी खायोड़ा मोहनजी। लुगाई से डरते हो, क्या ? अरे यार पावणा, अब डर मत। रैली ख़त्म हो गयी है..मैं भी अब [ट्रक की तरफ़ उंगली करते हैं] इसी ट्रक से वापस जा रहा हूं। साथ चलिए, पावणा..पहुंचा दूंगा आपको, आपकी बांगड़ कॉलेज ।

[सौभाग मलसा ट्रक की तरफ अपने क़दम बढ़ाते हैं, और उनके पीछे-पीछे मोहनजी चलते हैं..बैग और ख़ाली टिफ़िन, लिए हुए। ट्रक का दरवाज़ा खोलकर सौभाग मलसा, मोहनजी को बैठा देते हैं ड्राइवर के पास में। फिर खुद, उनके पहलू में बैठ जाते हैं। इस तरह बेचारे मोहनजी, दो दारुखोरे सौभाग मलसा और ड्राइवर के बीच में..ऐसे फंस जाते हैं, जैसे दो चक्की के पाट के बीच में गेहूं पीस जाता है। बैठ जाने के बाद, सौभाग मलसा ड्राइवर से कहते हैं..]

सौभाग मलसा – ड्राइवर साहब अब चलिए, गाड़ी किसानों से भर चुकी है। अब देरी किस बात की ? [भोलावण देते हुए, ड्राइवर से कहते हैं] ड्राइवर साहब इधर देखिये, ये हमारे पावणा मोहनजी है..[नशे में, उनके मुंह से देसी दारु की गंध निकलती है] इनको किसी बात की तक़लीफ़ नहीं होनी चाहिए, ड्राइवर साहब।

ड्राइवर – इनको तो कोई तक़लीफ़ होने वाली नहीं, मगर आप यह सोचिये..ड्राइवर बिना नशे-पत्ते कैसे गाड़ी चलाएगा ? मालिक आपने तो खूब नशा कर लिया है, मगर मैंने कहाँ किया ?

सौभाग मलसा – बस, इतनी सी बात ? [थैली से दारू की बोतल निकालकर, उसे देते हुए कहते हैं] यह ले, तू भी चढ़ा ले दो घूँट दारु के।

[बोतल से चार घूँट चढ़ाकर, ड्राइवर बोतल को मोहनजी के लबों के पास ले जाता है। फिर, उनसे कहता है..]

ड्राइवर – [बोतल को मोहनजी के होंठों तक लेजाते हुए, कहता है] – अरे पावणा, पी लो झट। पीकर, हो जाओ मस्त।

[अब दारु की बोतल को देखकर, मोहनजी ऐसे डरते हैं..जैसे उन्होंने किसी सांप को, देखे बिना उसको छू लिया हो ? मगर यहाँ वह ड्राइवर ठहरा बोरटी का काँटा, बोतल हटाने की जगह..वो तो जबरदस्ती, उनको दारु पिलाने की कोशिश करता है..! इस तरह खींच-तान करने से कुछ दारु छलक कर, उनकी सफारी-सूट पर गिर जाती है। अब ड्राइवर, कौनसा अल्लाह मियाँ की गाय ठहरा ? वह कमबख्त, सौभाग मलसा को ताने देता हुआ कहता है..]

ड्राइवर – [ताने देता हुआ, कहता है] – सौभाग मलसा मालिक, आपके पावणा तो मुझे हिज़ड़े लगते हैं। वाह मालिक, वाह। रामसा पीर तेरी जय हो, अब यह बोतल मेरी ही क़िस्मत में लिखी है।

[इतना कहकर वह ख़ोजबलिया, गटक जाता है पूरी दारु की बोतल। फिर बिना देखे, वह खिड़की के बाहर बोतल को उछालकर फेंक देता है, जो सीधी जाकर उस केले वाले के सर पर चांदमारी कर बैठती है। सर पर बोतल गिरते ही, बेचारे केले वाले को धवल दिन में दिख जाते हैं आसमान के तारे। जैसे ही चीखता हुआ केला वाला ट्रक की तरफ़ देखता है, उसी वक़्त वह कुदीठ ड्राइवर नीचे झुक जाता है। और बेचारे नादान मोहनजी, उसकी निग़ाह में आ जाते हैं। उनको देखते ही, वह केला वाला भड़क जाता है। अब वह चिल्ला-चिल्लाकर, मोहनजी को न जाने क्या-क्या अपशब्द कहता जाता है..]

केले वाला – [चिल्लाता हुआ कहता है] – अरे इस नालायक मूंछों वाले ने, मुझे मार डाला रे..! [सर दबाता हुआ, कहता है] कमबख्त, लोगों का धंधा ख़राब करके तेरा दिल ख़ुश नहीं हुआ, जो अब साले दारु पीकर मचा रहा है धमा-चौकढ़ी ? ठहर जा, अभी बुलाकर लाता हूं दरोगे को। तेरी अक्ल ठिकाने नहीं लगा दी, तो मेरा फूसा राम नहीं।

[दरोगा का नाम सुनते ही, मोहनजी ज़ोर से डरते हैं। उनका यह लल्लू-पंजू दिल, करने लगा धक-धक। वे डरकर, झट ड्राइवर से कहते हैं..]

मोहनजी – [डरते हुए कहते हैं] – गाड़ी को झट चलाइये, ड्राइवर साहब। अब देरी की तो पुलिस आकर, हम सबकी पिछली दुकान को डंडे मारकर सूजा देगी। अरे बापूड़ा, अब जल्दी कीजिये। चलो..चलो..!

[पुलिस का नाम सुनते ही, ड्राइवर का नशा हवा बनाकर गायब होने लगा। फटाक से उसने चाबी घुमायी, गाड़ी को गेयर में डालकर उसकी रफ़्तार बढा देता है। अब वह गाड़ी हवा से बातें करने

लगती है, रफ़्तार बढने से खिड़की से ठंडी हवा के झोंकें आने लगे। ठंडी हवा का आभास पाकर, इन दोनों का नशा वापस चढ़ने लगता है। अब वे दोनों नशे में, गीत गाते हैं।]

सौभाग मलसा – [गीत गाते हुए] – पीव दारु नै चढ्यो भाखर, ओ मोरियो सरदार।

ड्राइवर – [गीत साथ-साथ गाते हुए] – झट पट तू आ जा मोरनी डूंगर-डूंगर घूमां, मोरनी डूंगर डूंगर घूमां, मोरनी डूंगर डूंगर घूमां।

सौभाग मलसा – [ऊँची तान लेकर, गाते हैं] – तू आ जा मोरनी ए, तू आ जा मोरनी ए [रुक कर, मोहनजी से कहते हैं] अरे पावणा, आप भी गाओ यार। गाने में हमारा साथ दीजिये, ना ?

ड्राइवर – [हंसी के ठहाके लगाता हुआ, कहता है] – ये आपके पावणा सरदार, मर्द रहे कब ? ये जनाब, अब गायेंगे कैसे ? लाओ अफीम की पुड़ी, डालिए इनके मुंह में..अरे, नहीं नहीं नहीं। इनके लिए तो, अफीम के एक-दो टुकड़े ही बहुत है।

[सौभाग मलसा झट जेब से निकालते हैं, अफीम की पुड़िया। उसमें से दो-तीन टुकड़े निकालकर, मोहनजी के मुंह में डालकर उनका मुंह बंद कर देते हैं। उनका मुंह बंद करके, अब सौभाग मलसा उनसे कहते हैं..]

सौभाग मलसा – [लबों से हाथ हटाते हुए, कहते हैं] – पावणा अब आपके पेट में चली गयी है, अफीम। अब आपके बदन में, गीत गाने की ताकत आ गयी है। लीजिये, अब आप ऐसे गाइए [गीत का अगला मुखड़ा गाते हैं] झमक झमक नाचै मोरियो, रिमझिम पांणी बरसे। उठ रिया, दारु रा भभका..! [हिचकी आती है] हीच..हीच [वापस गाते हैं] पीव दारु नै चढ़े मोरियो, ऊँचौ भाकर चढ्यो..तू आ जा मोरनी ए, तू आ जा मोरनी ए....!

[सौभाग मलसा और ड्राइवर, अब ऊंची तान लेकर गीत गाने लगे। सौभाग मलसा को तो ऐसी तरंग चढ़ी, वे झूम-झूमकर गीत गाने लगे। उधर ठंडी हवा के झोंकों का आभास पाकर, मोहनजी नींद लेने लगे। वक़्त बीतता जा रहा है, मालुम ही नहीं पड़ता है..के, कब पाली आ जाता है ? अचानक ड्राइवर गाड़ी को रोकता है, फिर मोहनजी को उठाकर वह कहता है..]

ड्राइवर – [मोहनजी को जगाते हुए] – उठिए मोहनजी। लो आ गयी, आपकी बांगड़ कॉलेज। उतर जाइये, आप। बस सीधे आप, इस कॉलेज के मुख्य द्वार में घुस जाइये। जय रामजी री सा।

[मोहनजी उतरकर, सीधे गेट की तरफ़ अपने क़दम बढ़ाते हैं। अब ड्राइवर गाड़ी को चालू करता है, थोड़ी देर में ही वह गाड़ी नज़रों से ओझल हो जाती है। गेट से चालीस क़दम दूर चलने के बाद, उन्हें एक पांडाल दिखाई देता है। जहां जगह-जगह व्यापारियों को नयी वेट की नीति को समझाने बाबत, कई पोस्टर लगे हैं। कई स्थानों पर सरकार की वेट नीति के पक्ष में, कई व्यापारी-संघों के कोटेशन इश्तिहारों के रूप में लगे हैं। पांडाल के मंच के पर, कई बिक्री कर एवं व्यापारी संघों के अधिकारी, बिछाये गए गद्दों पर बैठे नज़र आ रहे हैं। पांडाल के अन्दर बिक्री कर महकमें के मुलाजिम एवं विभिन्न क्षेत्र के व्यापारी कुर्सियों पर बैठे हैं। वे लोग बारी-बारी से आ रहे, वक्ताओं के भाषण सुन रहे हैं। इस पांडाल के पास में भोजन करने की व्यवस्था के लिए दो पांडाल लगे हैं, एक में नाना प्रकार के व्यंजन तैयार हो रहे हैं, और दूसरे में व्यापारियों और मेहमानों को खाना खिलाने के लिए कतार-बद्ध टेबल-कुर्सी के सेट रखे गए हैं। इस भोजन-व्यस्था के प्रभारी के.एल.काकू हैं, जो मोहनजी के साथियों के साथ रोज़ का आना-जाना रेल गाड़ी से करते हैं। इस वक़्त वे जगह-जगह जाकर, भोजन-व्यस्था को देख रहे हैं। तभी उनके मोबाइल के ऊपर घंटी आती है, वे झट जेब से मोबाइल निकालकर उसे ओन करके अपने कान के पास ले जाते हैं। मगर पांडाल में माइक की तेज़ आवाज़ के कारण, वे कुछ सुन नहीं पाते। तब वे पांडाल से बाहर निकलकर, सुनने का प्रयास करते हैं।]

के.एल.काकू – [मोबाइल से बात करते हुए] – हेल्लो, कौन बोल रहे हैं जनाब ?

मोबाइल से आवाज़ आती है – मैं कलेक्टर साहब का पी.ए. माथुर बोल रहा हूं, काकू। बात यह है, के..

के.एल.काकू – [मोबाइल से, माथुर साहब को कहते हुए] – अच्छा जी, आप माथुर साहब फरमा रहे हैं..अच्छा फरमाइए, मेरे लिए क्या हुक्म है जनाब ?

माथुर साहब – [मोबाइल से] – आपको कलेक्टर साहब ने याद किया है, जनाब। आप यहाँ अभी आ जाइयेगा, वे आपसे चीफ़ गेस्ट मंत्रीजी के बारे में गुफ़्तगू करना चाहते हैं।

के.एल.काकू – [मोबाइल से माथुर साहब को जवाब देते हैं] – अभी आया, हुज़ूर.. खोटे सिक्के की तरह।

[मोबाइल बंद करके, वे उसे अपनी जेब में रखते हैं। फिर इस सेवा-कार्य में लगे कार्यकर्ताओं को आवाज़ देकर अपने पास बुलाते हैं। दो कार्यकर्ता उनके पास आते हैं, अब वे उन्हें कहते हैं..]

के.एल.काकू – [कार्यकर्ताओं से कहते हैं] – सुनिए, मेरे बहादुर वीरों। कलेक्टर साहब और उनके साथ दो या तीन मिनिस्टर, यहाँ आ रहे हैं। अब आपको मेन-गेट से आने-जाने वाले मार्ग की, हिफ़ाज़त करनी है। इसके लिए कठोर प्रबन्ध करना है, आपको।

पहला कार्यकर्ता – और, हुकूम..

के.एल.काकू - कोई ऐरा-ग़ैरा आदमी अन्दर घुसना नहीं चाहिए, इस लिए आप पुलिस की भी मदद ले सकते हो। ठीक है, अब मैं जा रहा हूं कलेक्टर साहब से मिलने। बाकी का काम, आप संभाल लेना।

[काकू झट स्कूटर पर सवार होकर, कॉलेज के पिछले गेट से बाहर निकल जाते हैं। मंच के ऊपर, अन्धेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच वापस रोशन होता है। मेन गेट के नज़दीक, आने जाने वाले मार्ग पर कार्यकर्ता व पुलिस के कांस्टेबल जगह-जगह खड़े हैं। इन कार्यकर्ताओं ने अपनी कमीज़ की जेब के ऊपर, लाल-पीले रिबन लगा रखे हैं। अब इस वक़्त कांस्टेबल, मार्ग में चहल-कदमी कर रहे ऐरे-गैरे आदमियों को बाहर निकाल रहे हैं। अब काकू से मिलकर आ रहे दोनों कार्यकर्ता, सामने से आते हुए दिखाई देते हैं। इनमें से एक कार्यकर्ता को, सामने गेट से आ रहे काली सफारी पहने मोहनजी दिखायी दे जाते हैं। उनकी हालत देखकर, वह दूसरे कार्यकर्ता से कहता है..जो इस वक़्त प्याऊ के पास खड़ी, ख़ूबसूरत लड़की को देखते जा रहे हैं।]

एक कार्यकर्ता – [मोहनजी को देखता हुआ] – आंखें लाल-लाल, ऐसी लग रही है मानो इनमें दारु के जाम छलक रहे हो ? वाह, क्या इसकी चाल है ? [दूसरे कार्यकर्ता का जवाब नहीं मिलने पर] अच्छी तरह से देखो शर्माजी, इसकी चाल का क्या कहना ? मानो..

[शर्माजी क्या देखते जा रहे हैं, उस कार्यकर्ता को क्या मालुम ? प्याऊ के पास खड़ी सुन्दर हसीन लड़की को, शर्माजी टका-टक देखते जा रहे हैं। वे उस छोरी को देखते हुए, झट कहते हैं..]

शर्माजी – [सुन्दर हसीन लड़की को देखते हुए] – मानो कोई गजगामिनी, मद-मस्त होकर चल रही हो। [उस कार्यकर्ता को कहते हुए] यह बात ही कहना चाहते थे, वर्माजी ?

वर्माजी – [चिढ़ते हुए कहते हैं] – यह बात कैसे हो सकती है, शर्माजी ? आप तो मालिक, मर्द को औरत की उपमा देते जा रहे हैं ?

[अब शर्माजी वर्माजी की गरदन, उस सुन्दर हसीन लड़की की तरफ़ घुमाकर आगे कहते हैं..]

शर्माजी – [सुन्दर लड़की को दिखलाते हुए, कहते हैं] – लीजिये देखिये वर्माजी, इस सुन्दर अप्सरा जैसी लड़की को..जिसे देखकर नयनों की प्यास बढ़ जाती है, ख़त्म होती नहीं। ऐसी छवि को देखने की आतुर ये आँखें, हटने का नाम ही नहीं लेती। मैंने सच्च कहा था, वर्माजी। अब कहिये, मैंने कब आपसे मिथ्या वचन कहे ?

वर्माजी – [गेट की तरफ़ उंगली का इशारा करते हुए, कहते हैं] – अब आप एक मर्तबा गेट की तरफ़ देखिये, शर्माजी। मैं उस आदमी के बारे में, कह रहा हूं..

शर्माजी – कौनसा आदमी ? मुझे कुछ दिखाई दे नहीं रहा है, वर्माजी ?

वर्माजी – देखो, उधर। वह काली सफारी पहना हुआ आदमी..जो लड़खडाता हुआ, दारुखोरे की तरह चल रहा है। कहीं यह शरारती तत्व, इस मिटिंग में व्यवधान पहुंचाने तो नहीं आ रहा है ? अरे शर्माजी, इसे निकालिए बाहर।

शर्माजी – हाँ वर्माजी, इस बदमाश को बाहर तो निकालना ही होगा। ये कामचोर पुलिस वाले, आख़िर ध्यान क्या रखते हैं ?

[वहीँ से, बीड़ी पी रहे हवलदार को आवाज़ लगाकर कहते हैं..]

शर्माजी – [हवलदार को आवाज़ देते हुए, ज़ोर से कहते हैं] – अरे ओ हवलदार साहब। बीड़ी बाद में पीना, अभी कलेक्टर साहब आ रहे हैं। माता के दीने, आपको यह ध्यान है या नहीं ?

पुलिस वाला – [नज़दीक आकर कहता है] – हुज़ूर, मुझे पूरा ध्यान है..! [मोहनजी की तरफ़ उंगली का इशारा करके] – इधर देखिये हुज़ूर, काली सफारी पहने हुए कलेक्टर साहब इधर ही आ रहे हैं। मुझे लगता है, इन्होने मिनिस्टर लोगों की पार्टी में खूब जमकर दारु पी है। चलिए जनाब, आगे चलकर उनकी आवभगत करते हैं।

शर्माजी – [क्रोधित होकर कहते हैं] – हवलदार साहब आपकी आँखें है, या आलू ? या आप हैं, सरकस के जोकर ? आपको यह दारुखोरा, कलेक्टर लगता है ? बाहर निकालो, इसे। फूटो यहाँ से, यहाँ तो हमें सारे कामचोर आदमियों से ही पाला पड़ता है।

[हवलदार आगे जाकर, मोहनजी को आगे आने से रोकता है। डंडा बजाकर, उनसे कहता है..]

हवलदार – [मोहनजी को आगे आने से रोकता हुआ, डंडा बजाकर कहता है] – कहाँ जा रिया है, ठोकिरा ? यह कोई सिनेमा होल है, जो घुमता हुआ यहां चला आया ?

मोहनजी – सिनेमा होल नहीं है साहब, मगर सेमीनार ज़रूर है।

हवलदार – तूझे क्या यहाँ आकर, कुश्ती लड़नी है क्या ?

मोहनजी – [हंसते हुए, कहते हैं] – कैसे कुश्ती लड़े, जनाब ? मुझको सेमानार के मंच पर जाकर, बक-बक करनी है..! यानि, भाषण देना है। अब समझ गए, इन्सपेक्टर साहब ?

[ज़र्दे को चखे काफी वक़्त हो गया, अब मोहनजी को ज़र्दे की तलब होने लगी। फिर, क्या ? जेब से पेसी निकालते हैं, हथेली पर चूना और ज़र्दा लेकर उन्हें अंगूठे से मसलते हैं। सुर्ती तैयार हो जाने के बाद, दूसरे हाथ से हथेली पर थप्पी लगाते हैं। फिर, उस सुर्ती की गोली बनाकर..फिल्म शोले के विलेन गब्बर सिंग की तरह गोली को मुंह में फंककर, अपने होंठों के नीचे दबाते है। इस वक़्त मोहनजी ने हवलदार को "इन्स्पेक्टर" क्या कह दिया, जिससे हवलदार फूलकर कुप्पा हो गया। अब वह ख़ुश होकर, अपनी मूंछों पर ताव देने लगे। इतने में हवा चलने लगी, और हवा का झोंका मोहनजी के कपड़ो को छूकर....उन कपड़ो की गंध, हवलदार के नासा-छिद्रों तक पहुंचा देता है। फिर क्या ? कपड़ो में बसी दारु और ज़र्दे की असहनीय बदबू, से बेचारे हवलदार के लिए वह नाक़ाबिले बर्दाश्त होकर उसे बेहाल कर देती है। इस बदबू को बर्दाश्त न कर पाने से, वह अपने नाक के ऊपर रुमाल रखकर कहता है..]

हवलदार – [नाक पर रुमाल रखता हुआ, कहता है] – **ठीक है, ठीक है। सुन ली, अब तेरी बकवास। अब मुंह से ज़र्दे के बरसात करनी बंद कर, पागल कहीं के। इतना सारा जर्दा होंठ के नीचे दबाते हैं, क्या ? आज़ रोटे गिटे नहीं, क्या ?**

मोहनजी – सच्च कहा, इन्स्पेक्टर साहब आपने। रोटे गिटने, अभी बाकी है..अब इस सेमीनार में पहले जाकर खाना खा लेंगे, उसके बाद कर लेंगे फ़िज़ूल की बकवास..वेट के ऊपर।

हवलदार – [तुनक कर कहता है] – तू खाना खाने वाला है, कौन ? व्यापारी है, दुकानदार है या किसी दफ़्तर का मुलाजिम या अधिकारी ? बोल, आख़िर तू है कौन ?

मोहनजी – न तो मैं व्यापारी हूं, न मैं दुकानदार, और न मैं हूं छोटा कर्मचारी..मगर, मैं हूं अफ़सर कढ़ी खायोड़ा। यानि आप यों कह सकते हो, मैनेजर धान के कोठे का।

हवलदार – किस फेक्टरी के मैनेजर ? अरे यार। मेरे दिमाग़ में कुछ समझ में नहीं आ रहा है, तू क्या कह रहा है भाई ? [शर्माजी को आवाज़ देते हुए कहता है] अरे ओ शर्माजीसा, आप आकर इस माथा-खाऊ आदमी से बात कीजिये। इससे पूछताछ करनी, मेरे वश की बात नहीं।

शर्माजी – [वहीँ से ज़ोर से कहते हैं] – ऐसी क्या बात है, हवलदार साहब ?

हवलदार साहब – [ज़ोर से, बोलते हुए] – क्या करूँ, जनाब ? यहाँ तो तरह-तरह के व्यापारी आते हैं, देखिये जनाब यह आदमी किस कोठे के मैनेजर है ? समझ में नहीं आता, मुझे। आप यहीं आकर, बात कीजिये जनाब।

[शर्माजी और वर्माजी झट वहां आ जाते हैं, फिर शर्माजी बैग से आमंत्रित व्यापारियों की फ़ेहरिस्त निकालकर देखते हैं और मोहनजी से पूछताछ करते हैं।]

शर्माजी – [फ़ेहरिस्त देखते हुए, कहते हैं] – भाईसाहब, आपका नाम क्या है, आप कहाँ से पधारे हैं ?

मोहनजी – मेरा नाम है, मोहन लाल कढ़ी खायोड़ा। अरे नहीं, जनाब..मैं तो हूँ मोहन लाल... मैं हूं, खारची डिपो का मैनेजर।

शर्माजी – [पूरी फ़ेहरिस्त का अवलोकन करके कहते हैं] – यह नाम, इस लिस्ट में कहीं दिया नहीं गया है। मेरी जानकारी के अनुसार खारची में ऐसी कोई फेक्टरी नहीं है, जिसके मैनेजर को मैं नहीं पहचानता..? क्योंकि जनाब, मैं ठहरा सेक्रेटरी व्यापारी मंडल का।

वर्माजी – भाई तू व्यापारी नहीं, दुकानदार नहीं और न तू मुझे व्यापारी लगता है..अरे भाई तू तो राज्य कर्मचारी भी नहीं हो सकता, अगर होता तो अपने साथ दफ़्तर का कोई काग़ज़-पत्र तो लेकर आता ?

मोहनजी – [रोनी आवाज़ में] – जनाब मैं बिल्कुल सच्च कह रहा हूं, वास्तव में.. मैं खारची डिपो का मैनेजर हूं। यदि आपको भरोसा नहीं हो तो, आप काकू को बुलाकर पूछ लीजिये।

[अब इस तरह अपनी इज़्ज़त के पलीते होते देखकर, मोहनजी को अपने ऊपर क्रोध आता है। वे सोचते हैं, क्यों नहीं..कल उन्होंने के.एल.काकू से, कोई आदेश लिया ? अगर ले लेते, तो आज इस तरह इन लोगों के सामने उनकी इज़्ज़त की बखिया नहीं उधेड़ी जाती ? इधर जनाब मोहनजी के पेट में पड़ी अफीम की किरचियां अपना रंग जमाने लगी, और उन्हें ज़ोरों की भूख लगाने लगी..और साथ में यहाँ रसोड़े में बन रहे पकवानों की सुगंध से, उनकी भूख बहुत बढ़ जाती है। अब उन्हें ऐसा लगता है, अगर अब इन्होने कुछ पेट में नहीं डाला तो भूख से तड़फती उनकी आंते कहीं बाहर न आ जाय ? अब बेचारे मोहनजी अपने पेट को दबाते हुए कहने लगे..]

मोहनजी – [पेट को दबाते हुए, कहते हैं] – आप मेरे ऊपर भरोसा कीजिये, मुझे आपके अधिकारी काकू ने भाषण देने के लिए बुलाया है। अगर आप खाना नहीं खिला सकते, तो कोई बात नहीं..मगर, आप उपस्थिति-पत्र तो दे दीजिये मुझे।

[बेचारे मोहनजी की बात सुनकर, वर्माजी और शर्माजी ज़ोरों से हंसने लगे। इस तरह अपनी मज़ाक उड़ती देखकर, बेचारे मोहनजी हाथ जोड़कर कहने लगे..]

मोहनजी – [हाथ जोड़कर कहते हैं] – आपको भरोसा न हो तो, काकू को बुलाकर पूछ लीजिये। अभी हो जाता है, दूध का दूध और पानी का पानी।

वर्माजी – देखिये शर्माजी, कही यह आदमी दूध वाला तो नहीं है ? अरे जनाब, आज़कल इन दूध वालों के पास बहुत रुपये-पैसे आ गए हैं। कीमती महंगे कपड़े तो पहन लेते हैं, जनाब। मगर रहन-सहन के कायदे कहाँ से सीखेंगे ? अरे जनाब, इसके वस्त्रों से सस्ती दारु की तेज़ बदबू आ रही है। साला सारे दिन दारु भी पीता है, वह भी सस्ती।

वर्माजी – बात तो आपकी सही है, तभी तो दारु के नशे में यह आदमी कभी हाथ जोड़ता है, तो कभी दबाता है अपना पेट। फिर कहिये जनाब, ऐसा आदमी और कौन हो सकते हैं ?

हवलदार – मुझे ऐसा लगता है जनाब, शायद इस आदमी को दिशा-मैदान जाना होगा ? अब आप कहिये, कोई समझदार आदमी इस तरह अपना पेट पकड़ता है क्या ? मुझे तो लगता है, इस आदमी के सर पर चढ़ गया है दारु का नशा। अब आप दोनों पधारो, आपका कभी ऐसे दारुखोरों से पाला नहीं पड़ा होगा ? मैं संभाल लूंगा, इसे।

[शर्माजी और वर्माजी, वहां से जाते हुए दिखायी देते हैं। रास्ते में शर्माजी को के.एल. साहब की कोई बात याद आ जाती है, अब वे वर्माजी से कहते हैं..]

शर्माजी – देखिये वर्माजी, हमारे इन्स्पेक्टर के.एल. साहब को उनके कई दोस्त काकू भी कहते हैं। हो सकता है, शायद यह आदमी सच्च ही बोल रहा हो ?

वर्माजी – [हंसते-हंसते जवाब देते हैं] – देखिये शर्माजी, अपुन लोगों को वही काम करने है..जो हमें सुपर्द किये गए हैं, शेष पचड़ो में फंसने की कहां ज़रूरत ? इन्स्पेक्टर साहब जाने, या इनके सरकारी कर्मचारी।

शर्माजी – सच्च कहा, आपने। अपुन तो ठहरे, व्यापारियों के नेता। जनाब, हम दोनों को ख़ाली अपना फ़ायदा देखना है। बस यहाँ इन व्यापारियों के बीच काम करके हमें अपनी अपनी नेतागिरी चमकानी है, और कभी काम पड़े तो चुनाव में इन सबके वोट एक मुश्त में अपुन पटका सकें।

[वर्माजी और शर्माजी बाते करते हुए, पांडाल की तरफ़ चले जाते हैं। उधर वह हवलदार मोहनजी का हाथ पकड़ लेता है। फिर उन्हें घसीटता हुआ मेन-गेट तक ले जाता है, फिर वहां उनका हाथ छोड़ देता है। फिर, हाथ जोड़कर कहता है..]

हवलदार – [हाथ जोड़कर कहता है] – मालिक, अब आप पधारिये। आपको दिशा-मैदान जाना है..[उंगली से लोड़ीया तालाब की पाळ की तरफ़, हाथ का इशारा करते हुए कहता है] वह है लोड़ीया तालाब की पाळ, वहां झाड़ियों के पीछे बैठकर आप निपट लो। इतने में, आपका नशा भी उतर जाएगा।

[थोड़ी देर बाद हाथ में बैग और ख़ाली टिफ़िन लिए हुए मोहनजी, लोड़ीया तालाब की पाळ [किनारे] पर चलते हुए दिखायी देते हैं। उनके जाने के बाद, हवलदार अपनी पुरानी बैठने की जगह पर चला आता है। अब वह वहां, वापस बीड़ी पीने बैठ जाता है। मंच की रौशनी, लुप्त होती है। थोड़ी देर बाद, मंच पुन: रोशन होता है। अब मोहनजी खुरिया रगड़ते हुए, लोड़ीया तालाब के किनारे चलते दिखायी दे रहे हैं। उनके पावों में असहनीय दर्द हो रहा है, इस कारण वे पांव रगड़ते हुए चलते जा रहे हैं। उनके पांवों की बहुत दुर्दशा हो चुकी है, यहीं कारण है इस वक़्त उनके पांव हरी-कीर्तन करते जा रहे हैं। उनको आते देखकर, वहां पाळ [किनारे] की झाड़ियों के पीछे बैठा एक फ़क़ीर झट लुंगी नीची करके उठ जाता है। फिर ख़ाली डब्बा लिए, वह मोहनजी के साथ चलने लगता है। इस वक़्त बेचारे मोहनजी, बांगड़ कॉलेज में हुए अपमान को भूल नहीं पा रहे हैं। दुःख के कारण वे, अपने ऊपर नियंत्रण खो चुके हैं। यही कारण है, वे इस वक़्त बड़बड़ाते हुए चल रहे हैं।]

मोहनजी – [बड़बड़ाते हुए] – मरो, सेल टेक्स वालों। भोज का निमंत्रण दिया, और खाना खिलाया नहीं तुम लोगों ने। ये सब सेल टेक्स वाले, नर्क में डालने योग्य है। बदमाश कढ़ी खायोड़ा सेल टेक्स वालों, तुम लोगों के पिछवाड़े में कीड़े पड़े। रे राम..**मोहन प्यारे, रह गया भूखा।**

फ़क़ीर बाबा - [मोहनजी के और नज़दीक आकर कहता है] – साहब तुम बिल्कुल सच्च बोलता है, एक मर्तबा मैं भी जीमण [भोज] की पंगत में बैठा था..तभी वहां एक सांड आ गया..

मोहनजी – क्या हो गया, बाबा ? सांड ने, सींग मार दिए क्या ?

फ़क़ीर बाबा – बच्चा बात यह नहीं हुई, हम उस सांड से बचने के लिए उठ गए..तभी बरतन मांजने वाली आयी, और हमारी थाली उठाकर मांजने के लिए ले गयी।

मोहनजी – फिर क्या हुआ, बाबा ?

फ़क़ीर बाबा – फिर, होना क्या ? लोगों ने वापस, मुझको पंगत में बैठने नहीं दिया। अरे बच्चे, इस तरह भूखा रह गया मैं।

मोहनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – हैं..हैं हैं। [ठहाका लगते हैं] ऐसे कोई भूखा रहा जाता है, क्या ? फिर आप तो हो, फ़क़ीर बाबा। आपको कहाँ शर्म आती है, वापस पंगत में बैठने में ? झूठ मत बोलो, बाबा। आप भूखे रह नहीं सकते, वापस बैठ गए होंगे।

फ़क़ीर बाबा – [गुस्से में बकता है] – बच्चे, तू मेरी बात पूरी सुना कर। फिर, बोला कर। हुआ यों, जैसे ही मैं उठा और आ गयी कमबख्त बरतन उठाने वाली औरत। उस कमबख्त ने मेरी थाली उठा ली। फिर, ले गयी मांजने। हाय मालिक, हम तो सांड से बचने के लिए उठे थे..बस फिर, लोगों ने मुझको वापस बैठने ही नहीं दिया।

मोहनजी - मुझसे बेहतर, आपने क़िस्मत पायी है। कम से कम, आपने थाली के दर्शन तो किये हैं..मगर, मुझे तो कमबख्तों ने पंगत में भी बैठने नहीं दिया। गेट पर ही रोक लिया, अब भूखा मर रहा हूं..क्या करूँ अब..कढ़ी खायोड़ा ?

फ़क़ीर बाबा – वह मालिक है ना, सांतवे आसमान के ऊपर रहने वाला। वह सबको भूखा उठाता है, मगर भूखा सुलाता नहीं। मेरे साथ चल, तू भूखा नहीं रहेगा। मगर, तेरी टांगड़े लड़खड़ा क्यों रही है ? तेरी कमीज़ से दारु की बदबू क्यों आ रही है, बच्चे ? पहले यह बता, तू नशेड़ी है क्या ?

मोहनजी – क्या पागलों जैसी बातें करते हो, बाबा ? मेरे जैसा शरीफ़ आदमी, कैसे नशेड़ी हो सकता है बाबा ? पहले आप खाना खिलाने की बातें करो, मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं। इधर टांगों में, भयंकर दर्द है। अरे रामसा पीर, इससे तो अच्छा है तू मुझे इस दुनिया से उठा लेता ? ए

राम...**मोहन प्यारे, तू तो रह गया भूखा।**

[बांगड़ कॉलेज में किस तरह, मोहनजी का अपमान हुआ..? वो पूरा वाकया, मोहनजी के मानस में चल-चित्र की तरह घुमने लगा। उसे किस्से को याद करते-करते, वे अपनी बदक़िस्मत पर रोने लगे। अब फ़क़ीर बाबा उनके सर पर हाथ रखकर, उन्हें दिलासा देते हुआ कहता है।]

फ़क़ीर बाबा – [मोहनजी का सर सहलाता हुआ] – बच्चा, फ़िक्र मत कर। मामा-भाणजू की दरगाह के सामने मेरी झोपड़ी है, तेरी चाची ने राम रसोड़े से खाना ले लिया होगा..? तू चल वहीँ, तूझे पकवान खिलाता हूं..आज सेठ मुकंदचन्द बालिया की बरसी है, राम रसोड़े में बहुत पकवान बने हैं।

मोहनजी – [आँखों से निकले अश्रु-बिन्दुओं को, रुमाल से साफ़ करते हुए कहते हैं] – चलता हूं, बाबा। चलता हूं।

[धर कूंचो धर मंजलो, चलते-चलते वे दोनों पहुंच जाते हैं बजरंग-बाग़ के पास। इस बगीचे में लगे पेड़ो को स्पर्श करते हुए हवा के झोंकें, इन दोनों के बदन को छूने लगे। यह दिल को लुभाने वाली ठंडी-ठंडी मादक लहरें, मोहनजी को छूकर आगे निकल जाती है। इन मादक लहरों के स्पर्श से, अफ़ीम अपना असर दिखाने लगती है। इस नशे में, मोहनजी की आँखे धीरे-धीरे भारी होती हुई महशूस होने लगती है..वे उनींदे होकर, आँखें झपकाते हुए चल रहे हैं। राह में आये पत्थर, कंकर वगैरा से ठोकरे खाते हुए, फ़क़ीर बाबा के कंधे पर हाथ रखकर चलते जा रहे हैं। उनके लड़खड़ाते पांवों की बहुत बुरी दशा बन चुकी है, मगर फ़क़ीर बाबा उनको राह के अवरोधों से बचाता जा रहा है..कहीं मोहनजी, ठोकर खाकर नीचे न गिर पड़े ? आज बांगड़ कॉलेज में बीती घटना को, वे भूल नहीं पा रहे हैं..बार-बार वह घटना इनके दिल में शूल की तरह चुभने का दर्द, महशूस करवा रही है। अब यह दिल का दर्द आंसूओं का रूप लेकर, आँखों से झरता जा रहा है। फिर, क्या ? इस दिल-ए-दर्द को याद करते हुए ग़मगीन मोहनजी, रोनी आवाज़ में दुःख से भरा गीत गाते चल रहे हैं।]

मोहनजी – [गीत गाते हुए] – मैं रोता चलूँ बादलों की तरह, न जाने क्यों फिर जलती ये दुनिया मुझे..पेट की आग में तन बदन जल गया। जल गया, जल गया..जल गया। ठंडी आहें भरूं जाने किसके लिए, पेट की आग में तन बदन जल गया। जल गया, जल गया..जल गया।

[इस दिल-ए-दर्द को रहम-दिल फ़क़ीर बाबा से, देखा कैसे जाता ? इस गम को भूलाने के लिए, फ़क़ीर बाबा झट..जेब से, देसी दारु का पव्वा निकालता हैं। फिर, वह दिलासा देता हुआ मोहनजीसे कहता है..]

फ़क़ीर बाबा – बच्चे, तूने इतनी तकलीफें देखी ? मालिक सब ठीक करेगा, अब तू फ़िक्र मत कर। मुझे पत्ता है, तू पीता ज़रूर है। अब यह ले बोतल, दो घूँट तू भी चढ़ा..अभी तेरे टांगड़े ठिकाने आते हैं। और निकल जाएगा, सारा दिल का दर्द।

[फ़क़ीर बाबा बोतल को, मोहनजी के लबों तक ले जाता है। मगर इधर मोहनजी को लगता है, के 'जम्मू तवी एक्सप्रेस शीघ्र आने वाने वाली है।' बस, वे झट अपना हाथ ऊंचा करते हैं। इस वक़्त हाथ में लगी घड़ी से उन्होंने, ऐसा समय क्यों देखा ? जिसके देखने के प्रयास से ही, फ़क़ीर बाबा के हाथ को ऐसा धक्का लगता है..बस, उनके हाथ में पकढ़ी हुई दारू की बोतल छिटक जाती है। मगर उसी वक़्त, दूसरे हाथ से फ़क़ीर बाबा बोतल को पकड़ लेता है। मगर दारु का नुक्सान होना था, वह तो होता ही है। उनकी सफारी कमीज़ के ऊपर, थोड़ा दारु छलक कर गिर जाता है। इस तरह हुए दारु के नुक्सान को, फ़क़ीर बाबा सहन नहीं कर पाता। और वह गुस्से में मोहनजी को, फटकारता हुआ कहता है..]

फ़क़ीर बाबा – [गुस्से में डांट पिलाता हुआ] – बरबाद कर दिए, दारु के चार घूँट ? तू जानता नहीं, दिन भर लोगों से भीख माँगी..फिर, उन पैसों से ख़रीदकर लाया यह दारु। तेरे को नहीं पीना था, तो पहले बोल देता।

[अब फ़क़ीर बाबा बोतल का ढक्कन बंद करता है, फिर उसे वापस जेब के हवाले करता है]

मोहनजी – आप जैसे फकीरों को सारे दिन दिखाई देती है, यह कमबख्त दारु। यहाँ इस घड़ी में बज गए हैं, पोने सात। अब तो बाबा, जम्मूतवी एक्सप्रेस के आगमन का वक़्त हो गया। अब यहाँ रुक गया, तो बाबा आपके साथ मुझे रात गुज़ारनी होगी। ना बाबा ना, मुझे नहीं रुकना। अब मैं जा रहा हूं, स्टेशन।

फ़क़ीर बाबा – तो क्या हो गया, बच्चा ? मालिक के नाम की जमेगी महफ़िल, तू गायेगा और मैं सुनूंगा। तू भूखा क्यों जाता है, बच्चा ? देख उधर, आ गया राम-रसोड़ा।

[राम-रसोड़ा आ जाता है, उसके बाहर पंगत में कई फ़क़ीर बैठे हैं। तरह-तरह के पकवानों की सुगंध फ़ैल रही है, मगर इन सब पकवानों की सुगंध का मोहनजी के लिए कोई महत्त्व नहीं। कारण यह है, इस वक़्त उनके दिल में मची हुई है, उतावली। के, 'कितनी जल्दी वे पहुँच जाए स्टेशन।' क्योंकि अब इस गाड़ी के चूक जाने के बाद, जोधपुर जाने के लिए फिर कोई गाड़ी नहीं मिलेगी। तभी उन्हें कोई दस क़दम आगे, २०-२२ साल की ख़ूबसूरत फैशनेबल लड़की चलती हुई दिखायी देती है। उस लड़की की ख़ूबसूरती पर कायल होकर, मोहनजी उसे टका-टक देखते जाते

जाते हैं। इनकी यह हालत देखकर, फ़क़ीर बाबा हो जाता है नाराज़। वह उन्हें चेतावनी देता है। और उन्हें, डांट पिलाता हुआ कहता है..]

फ़क़ीर बाबा – [डांट पिलाता हुआ, कहता है] – उस कमलकी सांसण को, क्या देख रिया है ? निचोड़ लेगी, तूझे..! उसके चक्कर में पड़ गया, तो बच्चा ऊपर से खायेगा पुलिस के डंडे।

[मगर यहाँ सुने, कौन फ़क़ीर बाबा की सलाह ? मोहनजी जनाब तो उस लड़की से रेस लगाने के लिए, आमदा हो हो जाते हैं..के, कौन पहले स्टेशन पहुंचेगा ? बस वे तो झट फ़क़ीर बाबा को शुक्रिया अदा करते हुए, कहने लगे..]

मोहनजी – बाबा शुक्रिया, मैं तो जा रहा हूं रेलवे स्टेशन। अगर मैं नहीं गया, तो कढ़ी खायोड़ा..यह गाड़ी चूक जाऊंगा। फिर तो बाबा, मुझे पूरी रात आपके साथ काटनी होगी।

फ़क़ीर बाबा – बड़ी ख़ुशी की बात होगी, बच्चे। तगड़ी महफ़िल जमेगी, तू गायेगा और मैं सुनूंगा।

[यहाँ फ़क़ीर बाबा की राय, मोहनजी को कहाँ पसंद ? देरी होते देखकर, वे फ़क़ीर बाबा को टिल्ला मारकर आगे बढ़ जाते हैं। अब वे कमलकी से रेस लगाते जैसे आगे बढ़ने लगे, कभी वह कमलकी उनसे आगे रहती तो कभी मोहनजी उससे चार क़दम आगे आ जाते। और उधर टिल्ला खाकर फ़क़ीर बाबा नीचे गिरा था, वह उठता है। और मोहनजी को, अनाप-शनाप गालियां बकता हुआ थोड़ी दूर तक उनके पीछे दौड़ता है। मगर, वह उन्हें पकड़ नहीं पाता। तभी मंच के ऊपर, अन्धेरा छा जाता है। थोड़े वक़्त बाद, मंच पर रौशनी छा जाती है। पाली स्टेशन के प्लेटफोर्म संख्या एक का मंज़र, सामने दिखायी देता है। जम्मूतवी एक्सप्रेस प्लेटफोर्म पर ख़ड़ी है, इधर मोहनजी के आते ही वह गाड़ी प्लेटफोर्म छोड़ देती है। प्लेटफोर्म पर खड़े यात्री शोर मचाते हुए, दौड़कर जम्मूतवी एक्सप्रेस को पकड़ते हैं। यही हाल मोहनजी का रहा, वे भी दौड़कर चलती गाड़ी का हेंडल पकड़कर उसमें चढ़ते हैं। आज़ गाड़ी में कोई विशेष भीड़ नहीं है, मोहनजी को इस शयनान डब्बे में कई सीटें ख़ाली नज़र आ रही है। मोहनजी खिड़की के पास बैठने की फ़िराक में है, वे एक केबीन से दूसरे केबीन की तरफ़ जाते दिखायी देते हैं। तभी उन्हें एक ख़ाली केबीन दिखाई दे जाता है, जिसमें खाली एक ही यात्री है..जिसे वे पहचान जाते हैं, वह है जुलिट। उसके पास उसका नीले रंग का बैग रखा है, जिसमें कैम्प की आवश्यक दवाइयां रखी गयी है। मोहनजी उसके पास आकर बैठ जाते हैं, फिर वे उससे गुफ़्तगू करते हुए अपना वक़्त व्यतीत करते दिखायी देते हैं।]

मोहनजी – [जुलिट के पास बैठते हुए] – वाह, नर्स बहनजी सा। हमको तो बैठा दिया, बूथ पर। खुद न जाने, कहाँ चली गयी ? वापस भी नहीं आयी, आप ?

जुलिट – [लबों पर मुस्कान बिखेरती हुई कहती है] – हम क्या करें, मोहनजी ? बड़े साहब के आगे, हमारा कोई वश नहीं चलता। साहब ने कहा 'गाड़ी खड़ी है बाहर, जाकर सिटी-डिस्पेंसरी से दवाइयां लेती आओ।' क्या करें, मोहनजी ? शाम तक उलझा दिया, इस काम में।

[अब वह अपने पर्स से लिपस्टिक और कांच निकालकर अपना मेक-अप ठीक करती है। मोहनजी, उससे सवाल कर बैठते हैं।]

मोहनजी – फिर क्या हुआ, नर्स बहनजी ? आख़िर, यह गाड़ी मिली कैसे आपको ?

जुलिट – [लिपस्टिक और कांच को, वापस पर्स में रखती है] – जनाब, बहुत मुश्किल से यह गाड़ी पकड़ी है। बस, केवल दो मिनट पहले ही आयी थी प्लेटफोर्म पर।

[ललाट पर छाये पसीने के एक-एक कतरे को रुमाल से साफ़ करते हुए, वे आगे कहते हैं]

मोहनजी – ऐसा लगता है, आप तो आराम से रही है। मगर, मैं कैसे रहा ? या तो मेरा जीव जाने, या जाने मेरे रामा पीर।

[अब मोहनजी तसल्ली से बैठकर, जुलिट के सामने अपनी व्यथा सुनाते हैं। किस तरह उन्होंने कई कष्ट उठाये, और अब उनके पांवों में असहनीय दर्द उठ रहा है।]

मोहनजी – [नयनों से आंसू गिरते हैं, और वे आगे कहते हैं] – इस तरह इन बदमाशों ने मुझे गेट के अन्दर भी आने नहीं दिया, कैसे भाषण देता वेट के मुद्दे पर ? इसके विपरीत इन नालायकों ने मुझे भूखा रखकर, मेरा वेट गिरा दिया। भूख-प्यास से व्याकुल होकर, अब मैंने यह गाड़ी मैंने पकड़ी है। ए राम...**अब तो मोहन प्यारे रह गया भूखा।**

जुलिट – लगता है, आपकी तबीयत नासाज़ है ?

मोहनजी – आपने सच्च कहा, नर्स बहनजी सा। मगर, अब करूँ क्या ? इन घुटनों में असहनीय दर्द हो रहा है, [ऊपर देखते हुए] मेरे रामा पीर। इससे तो यह अच्छा यह है, तू मुझे मौत की नींद में सुला देता। इस भूख से तो अच्छी है मौत...क्या करूँ..? **मोहन प्यारे रह गया भूखा।**

[कॉलेज में हुए अपमान को याद करते हुए, मोहनजी रोते जा रहे हैं। और साथ में अपनी पूरी दास्तान, जुलिट को सुनाते-सुनाते वे अपनी पतलून की मोहरी ऊपर चढ़ाते जाते हैं। मोहरी ऊपर चढ़ाकर, अब वे अपने घुटने दबाने बैठ जाते हैं। अब डब्बे का दरवाज़ा दिखायी देता है, वहां फर्श के ऊपर एक फ़क़ीर सोता हुआ दिखायी दे रहा है। तभी पास के यूरीनल का दरवाज़ा खुलता है, और सौभाग मलसा बाहर आते हैं। सौभाग मलसा इधर-उधर निगाहें डालकर निश्चिन्त हो जाते हैं, के 'इस वक़्त उनको कोई देख नहीं रहा है।' निश्चिन्त होने के बाद, वे उस फ़क़ीर के निकट आते हैं। फिर उसे लात मारकर, जगा देते हैं। हड़बड़ाता हुआ, वह फ़क़ीर उठता है। अपने सामने, यमराज सरीखे सौभाग मलसा को खड़े पाकर, वह उन्हें हाथ जोड़ता है। फिर उनका हुक्म लेने के लिए, उनकी तरफ़ देखता है। सौभाग मलसा क्रोधित होकर, उससे कहते हैं..]

सौभाग मलसा – [क्रोधित होकर कहते हैं] – धंधे के वक़्त, गोमिया तू यहाँ आकर कैसे लेट गया ? धंधा करना नहीं है, क्या ?

[अब इस वक़्त सौभाग मलसा को, इस गोमिया से काम तो करवाना ही है। इस तरह क्रोधित होने से काम बनता नहीं, मगर बिगड़ता ज़रूर है। यह बात सौभाग मलसा को समझ में आ जाती है, वे अपनी जेब से बीस हज़ार रुपये का कीमती मोबाइल निकालकर उसे देते हैं। फिर, शांत होकर उसे कहते हैं.]

गोमियो – [मोबाइल लेता हुआ कहता है] - हुक्म कीजिये, जनाब। मुझे, क्या करना है ?

सौभाग मलसा – [शांत होकर कहते हैं] – देख गोमिया, यह बीस हज़ार रुपये का महँगा मोबाइल है। अब तू यों कर गोमिया, पड़ोस वाले केबीन में चला जा। वहां मोहनजी, जुलिट नर्स के पास बैठे हैं। वहां बड़े प्रेम से...

गोमिया – हुज़ूर मुझे भी प्रेम-भरी बातें करके, उस नर्स उस के साथ रोमांस करना है क्या ? ऐसी बात हो तो, मैं कपड़े बदलकर आ जाऊं ?

सौभाग मलसा – मूर्ख, कहाँ से आ गया तू मेरी गैंग में ? साला, कुछ समझता नहीं..? अब, सुन। वे जुलिट नर्स से बातें कर रहे हैं। तू ध्यान से देखना, वह जुलिट नर्स उनके घुटने मसल रही होगी ? बस अब तूझे, सावधान रहकर एक काम करना है।

गोमिया – फरमाइए, हुज़ूर।

सौभाग मलसा – बस तूझे वहां जाकर, ऊपर वाली पछीत पर कम्बल ओढ़कर लेट जाना है। फिर चुपके-चुपके उन दोनों की विडिओ फिल्म तैयार करनी है। उस फिल्म में यह मंज़र साफ़-साफ़ आ जाना चाहिए, के वे दोनों किस तरह प्रेम भरी बातें करते जा रहे हैं ? अब समझ गया, भंगार के खुरपे ?

गोमिया – मगर मोहनजी तो, आपके गाँव के दामाद है ना ? फिर ऐसी बदसलूकी उनके साथ क्यों ?

सौभाग मलसा – तुम वही काम किया करो, जो तुम्हें सुपर्द किया गया है। बाकी मेरे ऊपर छोड़ दो। एक हिदायत दे दूं, तूझे। अपुन का जो गांजे का धंधा चलता है ना इस इलाके में, उसमें कोई किसी की रिश्तेदारी चलती नहीं है।

गोमिया – जनाब, फिर मैं क्या करूँ ?

सौभाग मलसा – उतावली क्यों करता जा रहा है ? सुन, थोड़ा वक़्त गुज़र जाने के बाद एक फैसन-परी आयेगी नीला बैग लेकर।

गोमिया – यह फैसन परी है, कौन ? कहाँ की है ?

सौभाग मलसा – दूर हट, ऐसा बेवकूफ शामिल हो गया मेरी गैंग में। भूल गया, उस कमलकी सांसण को ? जो लिपस्टिक से लाल-पीला करती है, अपना मुंह। वह आयेगी, तेरे पास। तब तूझे..

गोमिया – फिर जनाब, आगे क्या ? उससे प्रेम-भरी बातें करके, मुझे भी रोमांस करना है ? जैसे बोलीवुड फिल्मों में दिखाया जाता है, जनाब।

सौभाग मलसा – पागल, तू मेरे कहाँ हाथ लग गया ? अब सुन, वह ख़ूबसूरत लड़की अपने साथ लाएगी नीला बैग। बैग को तेरे पास रखकर, वह चली जायेगी। वह बैग, तू मुझे स्टेशन के बाहर लाकर दे देगा। समझ गया, अब ?

[सौभाग मलसा को जय 'रामजीसा' कहकर, वह गोमिया मोहनजी के केबीन में चला आता है। वहां आकर वह जुलिट की सीट के ऊपर वाली पछीत पर कम्बल ओढ़कर लेट जाता है, फिर चुप-चाप, उन दोनों की विडिओ फिल्म बनाता जाता है। उन दोनों को, क्या पत्ता ? के, गोमिया उनकी वीडियो-फिल्म बनाता रहा है। जिस फिल्म में जुलिट मोहनजी के घुटनों पर मूव ट्यूब लगाकर मालिश कर रही है, और मोहनजी उससे प्रेम भरी बातें करते जा रहे हैं। इस तरह उन दोनों की

फोटूओ के साथ-साथ, उनकी आवाज़ भी टेप हो जाती है। अब गाड़ी लूणी से आगे बढ़ गयी है, बिश्नोइयों के गाँव भी पीछे रह गए हैं। बाहर गहन अन्धकार छाया हुआ है, आमवस्या की रात है। गाँव के बाहर खड़ा सियारों का झुण्ड, मुंह ऊंचा किया हुआ 'ऊ..ऊ..ऊ..' की कूक लगाता जा रहा है। उस झुण्ड के कूकने की आवाज़, मोहनजी को बहुत अच्छी लगती है। इधर खिड़की से, ठंडी हवा का झोंका आता है। उसका अहसास पाकर, मोहनजी को कुछ गाने की इच्छा पैदा हो जाती है। अब वे हाथ ऊंचा करते हुए, उच्च सुर में गीत गाने लगते हैं..]

मोहनजी – [गीत गाते हुए] – लगा प्रीत का हाथ, हटाऊं कैसे। मेरा दरदवा ऐसा दिल का, छिपाऊं कैसे। ओ दरदवा दिल का ऐसा, इसे बताऊँ कैसे। लगा प्रीत का हाथ हटाऊं कैसे।

जुलिट – [वह उनका साथ देती हुई गाती है] – समझाऊं कैसे, लगा प्रीत का हाथ हटाऊं कैसे। यह नादान दिल का भोला, प्यार का मारा..इसे समझाऊं कैसे। लगा प्रीत का हाथ, हटाऊं कैसे।

[इंजन सीटी देता है, उसकी आवाज़ के आगे इन दोनों का गाया जा रहा गीत सुनायी नहीं दे रहा है। ये दोनों तो गीत गाने में इतने मसगूल थे, इनको पत्ता भी नहीं लगा..कब वह कमलकी, नीला बैग पछीत पर रखकर वापस चली गयी है ? तभी "भगत की कोठी" का स्टेशन आ जाता है, वंहा गाड़ी को सिंगनल नहीं मिलने से, वह वहां रुक जाती है। अब गोमिया लघु-शंका के कारण, परेशान हो जाता है। सौभाग मलसा पाख़ाने में थे, तब बेचारा गोमिया पेशाब करने जा नहीं पाया। फिर उसे सुपर्द कर दिया गया, विडिओ-फिल्म बनाने का काम। ज़्यादा वक़्त गुज़र जाने के बाद, अब वह लघु-शंका को रोक नहीं पाता। नाक़ाबिले-बर्दाश्त होने पर, वह उठता है, और अपने क़दम पाख़ाने की तरफ़ बढ़ा देता है। उसके उठते वक़्त, वह नीला बैग नीचे गिर जाता है। मोहनजी अपने जूते ढूंढ़ते वक़्त, उस बैग को बेंच के नीचे खिसका देते हैं।]

मोहनजी - [जूते अपने पांवों में डालते हुए] – नर्स बहनजी सा। मेरे घुटने बिल्कुल ठीक हो गए, अब तो मैं काठियावाड़ के घोड़ो की तरह दौड़ सकता हूं। लाइए, मूव ट्यूब। उसको हिफ़ाज़त से, आपके बैग में रख देता हूं।

[अब मोहनजी जुलिट से ट्यूब लेकर, उसे जुलिट के नीले बैग में रख देते हैं। उसके बाद उस बैग को रख देते है, पछीत के ऊपर।]

मोहनजी - नर्स बहनजी सा। अब आप आराम से, पांव सीधे करके बैठ जाइये। जोधपुर स्टेशन, आने वाला ही है। [उबासी खाते हुए, कहते हैं] अब तो घर जाकर ही खाना खाना है..**मोहन प्यारे, रह गया भूखा।**

[इतना कहकर मोहनजी बैठ जाते हैं, खिड़की के पास वाली सीट पर। वहां बैठे-बैठे, वे खिड़की से बाहर झांकते हैं। अब गाड़ी को सिंगनल मिल जाता है, वह आगे बढ़ती है। थोड़ी देर में ही, जोधपुर स्टेशन आ जाता है। गाड़ी प्लेटफोर्म नंबर एक पर रुकती है। जुलिट को अपना बैग दिखायी नहीं देता, वह मोहनजी को बैग खोजने का निवेदन करती है।]

जुलिट – [बैग खोजती हुई कहती है] – अरे कहाँ गया, मेरा बैग ? ओ मोहनजी ज़रा मेरा बैग देखिये ना, कहाँ रख दिया आपने ?

[मोहनजी तो ठहरे भुल्लकड़, बेचारे भूल गए..उन्होंने ट्यूब रखने के बाद, उस बैग को कहाँ रख दिया..? इधर-उधर खोजते-खोजते बेंच के नीचे देखते हैं, वहां उन्हें सौभाग मलसा का नीला बैग दिखाई दे जाता है। बस उसी को उठाकर, जुलिट को दे देते हैं। अब जुलिट उस बैग को लिए, गाड़ी से नीचे उतर जाती है। फिर वह बैग हाथ में लिए, अपने क़दम गेट की तरफ़ बढ़ा देती है। उसके पीछे-पीछे मोहनजी, भी अपना बैग और टिफ़िन लिए चलते दिखायी देते हैं। उनके जाने के बाद, पाख़ाने से गोमिया बाहर आता है। पछीत पर रखा जुलिट का नीला बैग लेकर, वह भी प्लेटफोर्म पर चला आता है। अब गोमिये के दिल में मचती है उतावली, के 'कितना जल्दी इस बैग को ले जाकर, सौभाग मलसा को दे दूं।' वह तेज़ी से गेट की तरफ़ बढ़ता है, मगर टिकट-कलेक्टर की नज़रों से वह बच नहीं पाता। उसे संदेह हो जाता है, कहीं यह गोमिया बिना टिकट यात्रा तो नहीं कर रहा था ? बस, फिर क्या ? वह भी तेज़ी से उसकी तरफ़, आवाज़ देता हुआ पीछा करता है। और दूसरी तरफ़ सवाई सिंहजी के पास तस्करी के माल इधर-उधर करने की ख़बर आ जाती है, उनकी नज़रों में यह दौड़ता हुआ गोमिया आ जाता है। फिर, क्या ? वे भी अपने कांस्टेबलों को लिए, उसका पीछा करते हैं। पीछा करते हुए पुलिस वाले, उसे ज़ोर से आवाज़ देते जाते हैं।]

पुलिस वाले – [ज़ोर से चिल्लाते हुए] – अरे रुक रे, कहाँ भागता जा रहा है ?

[गेट के पास हुड़दंग मच जाता है, उस शोर के आगे....इन पुलिस वालों की आवाज़, सुनायी नहीं देती है। मंच के ऊपर, अंधेरा छा जाता है।]

खंड ६ (एक बार और, फोड़ी खायेगा ?)

लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

[मंच रोशन होता है, जोधपुर स्टेशन का मेन-गेट दिखायी देता है। अब मोहनजी गेट के अन्दर, दाख़िल होते हुए दिखाई देते हैं। दो क़दम चलने के बाद उन्हें ज़र्दा याद आता है, वे शीघ्र अपनी जेब में हाथ डालकर मालुम करने की कोशिश करते हैं के 'उन्होंने घर से निकलते वक़्त ज़र्दा लिया या नहीं ?' मगर बदक़िस्मत ठहरी उनकी, आज़ वे ज़र्दा लाना भूल गए..अब तो रामा पीर, उन्हें स्टेशन के बाहर जाकर जर्दे की मिराज पुड़िया ख़रीदनी ही होगी। फिर, क्या ? जनाबे आली मोहनजी बड़बड़ाते हुए पीछे मुड़कर गेट की तरफ़ लौटते हैं, मगर बाहर निकलते वक़्त टिकट चैक कर रहे बेचारे टिकट कलेक्टर से टक्कर खा बैठते हैं। वो बेचारा उनका टिल्ला खाकर, पड़ता है ज़मीन पर। किसी तरह वह उठकर, मोहनजी के पीछे दौड़कर पकड़कर उनसे टिकट के बारे में पूछता है। मगर वे तो ज़वाब देने की जगह, अपने-आप से बड़बड़ाते जा रहे हैं।]
मोहनजी – [बड़बड़ाते हुए] – कहां जा रहा है, कढ़ी खायोड़ा...बिना ज़र्दा लिए ?
[मगर, वो टिकट कलेक्टर उन्हें छोड़ने वाला कहाँ ? वह झट उनका रास्ता रोककर, पूछ बैठता है।]

टिकट कलेक्टर – [उनका मार्ग रोककर, कहता है] – टिकट दिखाओ, जनाब।
[मगर मोहनजी ने होंठ के नीचे ठूस रखा था, काफ़ी जर्दा..बेचारे बिना थूक उछाले बोल नहीं सकते, तब वे मुंह से ज़र्दा और थूक की बरसात करते हुए बोल उठाते हैं।]

मोहनजी - [मुंह से थूक और ज़र्दा उछालते हुए, बोलते हैं] – एम.एस.टी...!
टिकट कलेक्टर – [जेब से रुमाल निकालकर, मुंह साफ़ करते हुए] – अरे बेटी के बाप, आप तो जनाबे आली मोहनजी निकले ? आपके सिवाय, कौन मुंह से ज़र्दा और थूक की बरसात कर सकता है ? कहिये, अब वापस कहाँ जा रहे हैं, जनाब ?
मोहनजी – ज़र्दा लाने, और कहाँ जायें बरखुदार ?
टिकट कलेक्टर – [लबों पर, मुस्कान बिखेरते हुए] – फिर एक नहीं जनाब, दो मिराज ज़र्दे की पुड़िया ख़रीदकर लाना। एक आपके लिए, और दूसरी...इस तरह, थूक-ज़र्दा उछालने के जुर्माने की। समझ गए, जनाब ?

[मगर मोहनजी इस तरह ख़र्च करने की बातें सुना नहीं करते, वे तो झट एक मिनट ख़राब किये बिना स्टेशन से बाहर निकल आते हैं। बाहर आते ही उनके कानों में उदघोषक की आवाज़ सुनायी देती है।]

उदघोषक – [लाउड स्पीकर से घोषणा करता हुआ, कहता है] – अहमदाबाद की तरफ़ जाने वाले सभी यात्री ध्यान देवें, प्लेटफोर्म नंबर दो के ऊपर अहमदाबाद-मेहसाना जाने वाली लोकल गाड़ी ख़ड़ी है। वह नौ बजकर पन्द्रह मिनट पर रवाना होगी।

[इतना सुनते ही, मोहनजी अपने पांवों को गति देते हैं और जल्द ही अमरजी पान वाले की दुकान के निकट आकर खड़े हो जाते हैं। आज तो अमरजी पान वाले के हाथ लग गयी, सस्ते भाव में मीठे पान की टोकरी। इस खुशी में वे फ़िल्मी गीत गाते हुए पान की गिलोरिया तैयार करते जा रहे हैं, मगर उतावली में वे भूल गये आँखों पर ऐनक चढ़ाना। जनाब अब बेफ़िक्र होकर, फ़िल्मी गीत 'खायके पान बड़ा मस्ताना, खुल जाये बंद अक्ल का ताला..' गाते जा रहे हैं। और साथ में पान तैयार करते-करते, वे अपने ग्राहकों को कहाँ देखते हैं...कौन जनाब, दुकान पर तशरीफ़ लाये हैं ? बस वे तो मस्त होकर, गाते ही जा रहे हैं...! मोहनजी बेचारे इंतज़ार करने लगे, के कब उनसे अमरजी पूछे 'क्या चाहिए, भाई ?' मगर, यहाँ जनाब को कहाँ फुरसत, जो उनकी तरफ़ देखें ? वक़्त जाया नहीं करके, आख़िर मोहनजी ज़ोर से उन्हें पुकारकर कहते हैं..]

मोहनजी – [तेज़ आवाज़ में] – अमरजी सेठ, आपका नहीं मेरी बंद अक्ल का ताला खुल गया है। जनाब मुझे गेट में दाख़िल होते ही मालुम हो गया, के आज़ तो बिना ज़र्दे लिए गाड़ी में बैठ रहा था मैं। अब दीजिये जनाब, एक मिराज़ ज़र्दे की पुड़िया।

[अमरजी मोहनजी की ओर टक-टकी लगाकर लगातार देखते जा रहे हैं, मोहनजी के पहना हुआ नया काले रंग का सफ़ारी-सूट से उनकी निग़ाहें हट नहीं रही है..बस, वे तो लगातार देखते ही जा रहे हैं ? इधर बेचारे मोहनजी को ताज्जुब होता है, अमरजी उनको लगातार क्यों देख रहे हैं ? फिर, क्या ? देर ज़रूर हो रही है, मगर मोहनजी शरारत छोड़ने वाले नहीं। झट उँगलियों से, दोनों पलकें ऊंची करके आंखें चौड़ी करते हैं। फिर, उन्हें घूरते हैं। अब मोहनजी को इस तरह घूरते देखकर, अमरजी उनसे कहते हैं..]

अमरजी – [चेहरे पर मुस्कान बिखेरते हुए कहते हैं] – अरे बेटी का बाप, केवल एक मिराज़ की पुड़िया क्यों लेते हैं, आप ? लीजिये ना, दस-बीस मिराज़ की पुड़िया..और क्या ?

मोहनजी - [आश्चर्य करते हुए] – मुझे कहाँ खाटा रोंदना है, जनाब ? जो भी आये, उसको खाटा [कढ़ी] खिलाता रहूँ ? अरे जनाब यह ज़र्दा है, खाटा नहीं। ज़्यादा लेने से, आदमी अस्पताल पहुँच जाता है। दस-बीस ज़र्दे की पुड़िया देकर, क्यों मुझे मारने में तुले हो ?

अमरजी – नाराज़ क्यों होते हैं, जनाब ? मैंने कहाँ ग़लत कहा, आपको ? बस मुझे अच्छा नहीं लगता, आप जैसे टी.टी. बाबू ज़र्दे की पुड़िया ख़त्म होने के बाद आते-जाते यात्रियों से ज़र्दा माँगते रहो ? अब ले लीजिये आठ-दस ज़र्दे की पुड़िया, सफ़र लम्बा है..वक़्त काटने में, काम आ

जायेगी।

[मोहनजी को कुछ समझ में नहीं आता, जनाब अमरजी क्यों अनाप-शनाप बके जा रहे हैं ? कहीं उन्होंने भंग तो नहीं चढ़ा ली, या फिर गांजे की चिलम ? फिर, क्या ? कुबदी मोहनजी मालिक को याद करते हुए दोनों हाथ ऊपर ले जाते हुए, ज़ोर से कहते हैं..]

मोहनजी - [दोनों हाथ ऊपर लेजाते हुए] – है भगवान। मोहन प्यारा, क्या करे अब ? इस अमरजी को थोड़ी अक्ल देना, मेरे रामा पीर। ये जनाब इतना सारा ज़र्दा मुझे खिलाकर मार देंगे। मुझे आकर बचा, मेरे भगवान।

[दुकान के पास ही एक थम्बा है, जिसके नीचे बैठा एक आदमी चैन-स्मोकर लगता है। वह बैठा-बैठा बीड़ी फूंकता हुआ धुए के छल्ले बनाकर उन्हें हवा में उड़ाता जा रहा है, जैसे ही उसके कानों में मोहनजी यह कथन सुना, उसी वक़्त वह उठकर मोहनजी के के निकट चला आता है। फिर मुंह से, धुए के गुब्बार व बीड़ी की खट्टी गंध छोड़ता हुआ कहता है..]

बीड़ीबाज़ आदमी – [कमर लचकाता हुआ, कहता है] – इस ग़रीब को, किसने याद किया है ? [मोहनजी के नज़दीक आकर] मुझे लगता है, जनाब...आप जैसे रहमदिल इंसान ने, मुझे याद किया होगा ?

[जैसे ही उसने अपना मुंह खोला, और मुंह से धुए के गुब्बार निकले और साथ में आयी बीड़ी की खट्टी बदबू। मोहनजी उस गंध को सहन नहीं कर पाए, झट उसका मुंह पकड़कर दूर करते हैं..फिर जेब से रुमाल निकालकर, अपने नाक पर रख देते हैं। और बिफरते हुए, उससे कहते हैं..]

मोहनजी - [उसका मुंह दूर हटाते हुए] – कौन है रे, गन्दला ? दूर हट। साला, इस बदबू से मोहन प्यारे को मारेगा क्या ? [नाक के ऊपर रुमाल रखते हुए] आ गया कढ़ी खायोड़ा, भग़ यहाँ से।

बीड़ीबाज़ – अरे, जनाब। मैं गन्दला नहीं हूँ, मेरा नाम है भगवान। [गाता है] मेरा नाम है भगवान, मैं हूँ राही स्टेशन का..चला आया हूँ मैं, सेवा करने बड़ी दूर से। [बीड़ी की एक फूक मारकर, कहता है] मालिक आपने मुझे इधर याद किया, और मैं दौड़ा-दौड़ा आपकी ख़िदमत में चला आया। मगर एक बात आपको कह दूं जनाब, मैंने कढ़ी नहीं खायी है।

मोहनजी – फिर गेलासफ़ा, तूने किया क्या ?

बीड़ीबाज़ - बीड़ी का नशा ज़रूर किया है मैंने, हुक्म कीजिये जनाब..आपकी ख़िदमत मे बीड़ी पेश कर दूं ? मैं बस ख़ाली यही सेवा कर सकता हूँ, आपकी।

मोहनजी – [दोनों हाथ ऊपर लेजाते हुए, कहते हैं] – अरे मेरे ऊपर वाले भगवान, मैंने आपको याद किया..मगर यह गन्दला कहाँ से आ गया मेरे पास ?

भगवान – [आश्चर्य करते हुए] – अरे मेरे मेहरबान, आप उस ऊपर वाले भगवान को याद कर रहे थे ?

[सामने वाली इमारत के ऊपर वाले माले की ओर, उंगली से इशारा करता हुआ वह आगे कहता है।]

भगवान – इमारत की तरफ़, उंगली से इशारा करता हुआ] - उस ऊपर वाले भगवान को भी मैं जानता हूँ, वह मेरा ख़ास दोस्त है, जनाब। उसकी ड्यूटी, टी.टी. लोगों के रसद-बंदोबस्त में लगी हुई है।
मोहनजी – तेरा दोस्त है, मैं क्या करूं ? मुझे, उससे क्या काम ?
भगवान – अरे मालिक, आप नए टी.टी. बाबू हैं। आपका उससे परिचय करवाना मेरा धर्म है। बस मालिक, आप मेरा नाम उसके पास जाकर ले लेना। ऐसा कहना, के थम्बे वाले भगवान ने आपको भेजा है। फिर जनाब, ऐसा कहते ही, पूरा स्टाफ आपकी सेवा में हाज़िर।
मोहनजी - [हाथ जोड़कर कहते हैं] – मेरे बड़े भाई, तू अब आगे चल। और जाकर, अपना काम निपटा। गाड़ी रवाना होने का वक़्त हो गया है, भाई..मुझे अपने हाल में छोड़ दे।
[मोहनजी की बात सुनकर, भगवान हंसने लगता है। फिर फुदकता हुआ, वापस आकर थम्बे के नीचे बैठ जाता है..और फिर बण्डल से, नयी बीड़ी निकालता दिखाई देता है। इधर मोहनजी को मालुम नहीं, कब वे इस भगवान से बातें करते हुए मार्ग के बीच में आकर खड़े हो गए ? गाड़ी रवाना होने का वक्त होने वाला है, यात्रियों की भीड़ बढ़ती जा रही है। मार्ग अवरुद्ध हो जाता है, तभी एक कार वहां चली आती है। मोहनजी के वहां खड़े रहने से, आगे जाने का रास्ता अवरुद्ध हो गया। तब कार का ड्राइवर खिड़की से मुंह बाहर निकालकर, मोहनजी से झल्लाता हुआ कहता है..]
ड्राइवर – अरे टी.टी. बाबूजी, क्या आपको अपनी ज़िंदगी इतनी बुरी लगने लगी ? या फिर कहीं ऊपर वाले का बुलावा आ गया, आपको लेने के लिये ?
मोहनजी – मुझे ऊपर नहीं जाना, बेटा। तू चला जा ऊपर, और ऊपर वाले भगवान से ले लेना रसद-पानी। [होंठों में ही] अरे रामा पीर, इस स्टेशन के सारे लोगों को क्या हो गया है ? माता के दीने, सभी पागल हो गए हैं। मुझे ये भंगार के खुरपे बार-बार कहते जा रहे है, टी.टी. टी.टी.। मानो ये इंसान नहीं, कमेड़ी हो ?
[मोहनजी के दूर न होने से, गाड़ियों का जमाव होने लगा। अब चारो-ओर से गाड़ियों के हॉर्न की आवाज़ें गूंज़ने लगी, आख़िर इन हॉर्न की आवाज़ों से मोहनजी परेशान हो गये, वहां से दूर हटकर वे अमरजी की दुकान का पहला स्टेप चढ़ जाते हैं। फिर पान के केबीन पर रखा ऐनक उठाकर, अमरजी पान वाले को थमा देते हैं। अब वे, अमरजी के चेहरे को घूरते हुए कहते हैं..]
मोहनजी – [अमरजी को घूरते हुए कहते हैं] – संभाल लीजिये अपना ऐनक, अब आप इसे आँखों पर चढ़ाकर देखिये सावन की घटा। अच्छी तरह से देख लीजिये, इस मोहन प्यारे को।
अमरजी – [बिना ऐनक लगाये, कह देते हैं] - मैं क्या देखूं, आपको ? आप हो, टी.टी. बाबूजी। और, क्या ?
मोहनजी - मैं टी.टी. बाबू नहीं हूं, मैं तो बेचारा हूं..'कढ़ी खायोड़ा मोहनजी।' समझ गए, आप ? टी.टी. टी.टी. कमेड़ी की तरह बोलकर, आपने मेरा सर-दर्द बढ़ा दिया अलग से। अब लाइए, एक

मिराज़ की पुड़िया।
अमरजी – [ऐनक चढ़ाकर, कहते हैं] – अरे..जनाब आप तो निकले, मोहनजी। कमाल हो गया, जनाब। कैसे कपड़े पहने हैं, आपने ? इस काली सफारी में आप, असली टी.टी. बाबू ही लगते हैं।
मोहनजी – क्या सच कह रहे हो, जनाब ? वाकयी मैं टी.टी. बाबू लगता हूँ ?
अमरजी – जी हाँ। आपको इस सूट में देखकर, कोई आपको टी.टी. बाबू कह दे..यह उसकी ग़लती नहीं होगी, मोहनजी। यह तो नज़र का दोष होगा, जनाब।
[इतना कहकर, अमरजी एक मिराज़ की पुड़िया मोहनजी को थमा देते हैं। फिर, वे मोहनजी को देखते हुए मुस्कराते हैं। उनके मुख से 'टी.टी.ई.' जैसा दिखाई देने की बात सुनकर, मोहनजी की बांछे ख़िल जाती है। यह ख़ुशी उनके चेहरे के ऊपर ऐसी छाती है, बस जनाब झट अकड़ते हुए गीत गाते हुए क़दम आगे बढाते हैं।]
मोहनजी – [अमिताभ बच्चन स्टाइल से, वे अपना एक हाथ आगे करके गीत गाते हैं] – साला मैं तो साहब बन गया, साहब बनकर ऐसे तन गया। सूट मेरा देखो, बूट मेरा देखो..मैं हूं टी.टी. लन्दन का।
अमरजी – [पीछे से, मोहनजी को आवाज़ देते हुए] - पैसे देते जाओ, मोहनजी।
मोहनजी – [पीछे मुड़कर, कहते हैं] – कल देंगे, जनाब। आज़ मेरे पास, पैसे खुले नहीं है।

[फिर, वापस गीत गाते हुए आगे बढ़ जाते हैं। अब मोहनजी उतरीय पुल की ओर, अपने क़दम बढ़ा देते हैं। पुल के ऊपर, रेलिंग पकड़े हुए दयाल साहब, राजू साहब और के.एल.काकू खड़े-खड़े गुफ़्तगू करते जा रहे हैं। उनसे दस क़दम दूर ही, रतनजी, रशीद भाई, ओमजी व दीनजी भा'सा भी खड़े हैं। नीचे प्लेटफोर्म संख्या एक से मोहनजी अपने क़दम उतरीय पुल की तरफ़ बढ़ाते हुए आते दिखायी दे रहे हैं। अपार ख़ुशी से वे फुदकते-फुदकते चलते आ रहे हैं, साथ में गीत भी गाते जा रहे हैं। उनको आते देखकर, रतनजी ज़ोर से बोलते हुए कहते हैं..]
रतनजी – [ज़ोर से कहते हैं] – सावधान। कढ़ी खाने वाले प्यारे, मोहनजी पधार गए हैं। वाह क्या गा रहे हैं, जनाब ? [वही गीत खुद गाकर, सुनाते हैं] 'साला मैं तो साहब बन गया, साहब बनकर कैसे तन गया..'
ओमजी – [हंसते हुए, कहते हैं] – अजी रतनजी सेठ, साहब लोगों की ड्रेस में केवल मोहनजी ही अच्छे दिखायी देते हैं..दूसरे आदमी को ना तो यह अफ़सरों वाली ड्रेस, और ना उनका गाया जा रहा गीत सूट करता है।
रतनजी – यह ड्रेस, मुझे क्यों नहीं सूट होती ? क्या, मेरा गला कोयल जैसा नहीं..जो यह गीत गा सकूं ? ओमजी यार, क्या मैं इंसान नहीं हूँ..आपकी नज़रों में ?
ओमजी – सच कहता हूँ, जनाब। आप जैसे दुबले-पतले इंसान उनकी नक़ल उतारकर भी, उनके जैसे बन नहीं सकते। अब आप इस गीत को गाना बंद कीजिये, क्योंकि..

रतनजी – क्यों..? मेरी आवाज़ ख़राब है ?
ओमजी – सुनो, मेरी बात। आप में ऐसा व्यक्तित्व नहीं है..अफ़सरों जैसा। उधर देखिये, मोहनजी को। वे आ नहीं रहे हैं, बल्कि उड़कर आ रहे हैं। इस मंज़र को, अच्छी तरह से देख लीजिये।
[अब मोहनजी और नज़दीक आ जाते हैं, मगर अब इन्होने दूसरा गीत गाना शुरू किया है।]
मोहनजी - [गाते हुए] – 'तेरे बिन दिल लगता नहीं, क्या करे अब मोहन प्यारे..आना तो पडेगा प्यारे, तेरे बिन दिल लगता नहीं।' [तीसरा गीत गाते हैं] हो हो हो, खोया खोया चांद..खोया आसमान। आँखों में सारी रात जागेगी, हो हो..हो '
रशीद भाई – [तेज़ आवाज़ में, कहते हैं] – असलाम वालेकम। [जवाब नहीं मिलने से, वे वापस कहते हैं] शुभान अल्लाह। साहब क्या कहना है, आपका ? वाह, जनाब क्या गा रहे हैं आप ? आपके मुक़ाबले में...
ओमजी – [बात काटते हुए, बीच में कहते हैं] – ऐसा गीत तो, गुलाबा किन्नर भी नहीं गा सकता।
मोहनजी – [आंखें तरेरकर, कहते हैं] – अरे प्यारे ओमजी, यह क्या कह डाला आपने ? मुक़ाबला करवाना है, तो करवाओ किसी आदमी से। अरे यार, इस हिज़ड़े से काहे करवाते हो मेरा मुक़ाबला ?
रतनजी – मुक़ाबला गुलाबा किन्नर से करवा दिया जाय, तो फर्क क्या पड़ता है जनाब ? आख़िर, वह भी एक इंसान है।
मोहनजी - इंसान तो है, मगर मर्द नहीं है। मगर, मैं तो मर्द हूं ?
ओमजी – किन्नर से मुक़ाबला करवाकर, कौनसा ग़लत काम किया मैंने ? अरे, जनाब..क्या आप जानते हैं ? आपसे ज़्यादा, इन किन्नरों की इज़्ज़त होती है। जानते नहीं, शबनम मौसी को ? मध्य-प्रदेश में, शबनम मौसी फिर क्या है ? क्या, वह मर्द है..?
रशीद भाई – [मोहनजी से, कहते हैं] – अरे साहब, आप जानते नहीं..वह मध्य-प्रदेश विधान-सभा की सदस्या है, उसकी वहां बहुत इज़्ज़त है। बस जनाब, आप भी मुझे इसी तरह के एम.एल.ए. दिखाई देते हैं।
मोहनजी – [हंसते-हंसते कहते हैं] – रशीद भाई, कढ़ी खायोड़ा। आप सच्च कहते हैं, देखो..मेरे गाँव के सारे आदमी रह गए, ढोर-डांगर [अनपढ़]। बस, मैं अकेला ही पढ़ा-लिखा हूँ...उस गाँव में।
रशीद भाई – आगे कहिये, जनाब।
मोहनजी - अरे रशीद भाई, क्या कहूं आपको ? अगर मैं नौकरी में नहीं आता, तो सच्च कहूं आपको..मैं एम.एल.ए. तो ज़रूर, बन ही जाता। और आपको, मेरा मुंशीजी बनाकर ज़रूर रखता।
रशीद भाई – मुंशी कहो, या कहो पी.ए.। बात तो एक ही है, जनाब। मुझे कुछ भी कहो, क्या फर्क पड़ता है ? मैं तो किन्नरों के पास भी बैठ जाया करता हूं, उनको पानी भी पिला देता हूँ..
[इस आशा से दीनजी की तरफ़ देखते हैं, के वे उनके कहते ही झट "हाँ" कहकर अपनी गरदन झुका देंगे। इसी आशा को लिये, अब वे आगे कहते हैं]

रशीद भाई - अरे दीनजी हां कहिये ना, आपने तो देखा ही है मुझे..इन किन्नरों की, ख़िदमत करते।

दीनजी – जी हाँ, आप शत प्रतिशत सच्च कह रहे हैं। कल से हम, जनाबे आली मोहनजी को आपके पास बैठायेंगे। और मैं और रतनजी बैठेंगे, किसी दूसरे डब्बे में जाकर। जिससे आपका सम्बन्धी गुलाबा, आपसे आसानी से मिल पायेगा।

ओमजी – [हंसते-हंसते कहते हैं] – अरे, रशीद भाई। आप क़िस्मत वाले हो, भाई। तभी आपको साहब के पास बैठने का मौक़ा मिल रहा है, इनके पास बैठना कोई हंसी-खेल नहीं है।

दीनजी - वही आदमी इनके पास बैठ सकता है, जो बार-बार सीटें बदलने में माहिर हो या बदल सकता है डब्बा। जिस तरह यह गुलाबा, पूरी गाड़ी में घुमता रहता है। उसकी तरह, ये भी..

[ओमजी की बात सुनते ही, दीनजी और रतनजी ठहाका लगाकर हंसने लगे। हंसी के ठहाके सुनकर, राजू साहब, के.एल.काकू और दयाल साहब इन लोगों के नज़दीक चले आते हैं। अब दयाल साहब नज़दीक आकर, कहते हैं...]

दयाल साहब – किस बात का झौड़ है, सांई ?

के.एल.काकू – मुझे लगता है, ये लोग मोहनजी की बात सुनना नहीं चाहते हैं।

दयाल साहब – [रतनजी से कहते हुए] – आज तुम्हें भी एवोइड करने की बीमारी लग गयी है, रतन सिंह...? एक मैं ही भला था, इस मोहन लाल को एवोइड करने वाला। आज तुम भी हो जाओ हमारे ग्रुप में शामिल।

मोहनजी – [झुंझलाते हुए कहते हैं] – बात यह नहीं है, जनाब। असल बात यह है, ये लोग मुझे अच्छी तरह से देख नहीं रहे हैं। इन लोगों से तो अच्छी है, मेरी पड़ोसन। जो बेचारी, आंखें फाड़कर मुझे देखती है।

दीनजी – जनाब आप कैसे कह सकते हैं, वह आपको ही देख रही थी ?

मोहनजी – कल की बात है, वह अपने घर के बाहर ख़ड़ी-ख़ड़ी बक रही थी गालियां। सुनते ही मैं झट आया बाहर, बिना पेंट पहने ही..

दीनजी – [आश्चर्य से] – पूरे नंगे, आ गए बाहर ? अरे भगवान, यह क्या कर डाला मोहनजी..आपने ? बिना पेंट पहने ही..

मोहनजी – दीनजी, भगवान का नाम मत लीजिये।

रतनजी – [चिढ़ते हुए] – क्या आपने अपनी तरह सबको नास्तिक समझ रखा है, क्या ?

मोहनजी – नहीं, नहीं रे कढ़ी खायोड़ा। बात यह है जनाब, अभी वह माथा-खाऊ थम्बे वाला भगवान आ जायेगा। मगर आपने यह कैसे समझ लिया, के मैं पूरा नंगा होकर बाहर आ गया ? पेंट नहीं पहना, तो क्या ? जनाब, लुंगी तो पहन रखी थी मैंने।

रतनजी – लुंगी मत पहना करो, साहब। लुंगी में आप, नूरिया-जमालिया की तरह लगते हैं जनाब। आप तो, इस काली सफारी सूट में ही अच्छे लगते हैं।
मोहनजी – [ख़ुश होकर] – अरे जनाब, मैं यही बात आपके मुंह से सुनना चाहता था। अब आप मेरे बदन पर पहने हुए सफारी सूट को अच्छी तरह से देखिये, जनाब कैसा लग रहा हूं मैं ?
रतनजी – क्या देखें, जनाब ? आपके बदन का रंग काला, और इस बदन पर पहना सफारी-सूट भी काला..? इसमें क्या देखना, जनाब ? मुझे तो जनाब, यहाँ काला-काला रंग ही दिखाई देता है।
ओमजी – अरे रतनजी, ऐसे क्या कह रहे हैं जनाब ? काले रंग का बहुत महत्त्व होता है, काला रंग था श्रीकृष्ण का जिन्होंने बृज की सारी गोपियों को मोहित कर रखा था।
रतनजी – अरे, जनाब। मोहित कर लिया, क्या ? उस महान श्रीकृष्ण ने, उन गोपियों के साथ रास भी खेल लिया। मगर..
दीनजी – यहाँ क्या देखें, जनाब ? खुद मोहनजी काले और उनकी यह पौशाक भी काली, इसके अलावा आपकी और कोई राय हो तो आप पेश कीजिएगा..इस मुद्दे पर, यहाँ खड़े आदरणीय कोई सज्जन अपनी राय पेश कर सकते हैं। इसके सम्बन्ध में, किसी बंधु की कोई अलग राय हो तो पेश कीजिये।
मोहनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए] – अब मैं कहता हूं, आप सुनिए। मैं काला हूँ, तब ही कई औरतें मेरे ऊपर मोहित हो जाती है। मैं पाली से नहीं आता, तब-तक..
रतनजी – झाड़ू लिए खड़ी रहती होगी, आपके स्वागत में ?
मोहनजी – अरे नहीं रे, कढ़ी खायोड़ा। मोहल्ले की कई औरतें मेरी घर वाली से पूछती रहती है, के 'गीगला के बापू कब आ रहे हैं..?
दयाल साहब – क्या कहना है, मोहन लाल का ? क्या शान है, इसकी मोहल्ले में ? आख़िर यह भी काला, और क्या कहते हैं उसे ? जो भम-भम की आवाज़ करता हुआ, उड़ता रहता है।
के.एल.काकू – [ताली बजाते हुए, कहते हैं] – अरे जनाब, वह तो भंवरा ही हो सकता है। भूल गये, जनाब ? जो भम-भम की आवाज़ करता हुआ बगीचे में मंडराता रहता है, और पुष्प की हर कली का रस चूसता जाता है।
रतनजी – अरे साहब, काले रंग का जूंझला भी होता है। वह भी भम-भम की आवाज़ करता हुआ उड़ता है, और दीवारों के ऊपर अपना घोंसला बना देता है। वह भी, किससे ?
के.एल.काकू – आप कह दीजिये, जनाब। मुझे घोंसला नहीं बनाना, जिसे बनाना होगा..वह सीख लेगा, आपसे आकर।
रतनजी - जहां टट्टी-गू पड़ा हो, वहां की गंदी मिट्टी से..? इस गंदी मिट्टी को वह जगह-जगह से इकट्ठी करके, दीवारों पर चिपकाकर घोंसला बना डालता है। कोई चिपका देता है, गन्दगी तो कोई हर ठौड़ थूक-थूककर...जैसे, अपने साहब है ना.....
के.एल.काकू – [बीच में बात काटते हुए कहते हैं] – ऐसे कौन है, जनाब ?

रतनजी – कौन क्या ? जनाब, आप जानते नहीं क्या ? हमारे परम-मित्र गाड़ी में साथ चलने वाले.. जनाबे आली, मोहनजी। जिनकी आदत है, जगह-जगह ज़र्दे की पीक थूकने की।
के.एल.काकू – क्या सच्च है ? कोई इनको, कुछ कहता नहीं ?
रतनजी - किसकी मां ने अजमा खाया होगा, जो इनको थूकने से रोके ? अरे काकू, अगर ये आपके पास अभी खड़े हैं तो..वे आप पर भी, पीक थूक सकते हैं।
[मोहनजी के पास खड़े, के.एल.काकू डरकर झट दूर हट जाते हैं। फिर, अपने वस्त्र झाड़ने लगते है। इस तरह उनको वस्त्र झाड़ते देखकर, सभी ठहाके लगाकर हंसते जाते हैं।]
मोहनजी – [क्रोधित होकर कहते हैं] – होश में रहकर बोला करो, रतनजी। मुझे जूंझला कैसे कह दिया, आपने ? क्या मैं जूंझले की तरह, गंदे स्थानों पर जाकर मुंह डालता हूं ?
[अब उनका गुस्सा के.एल.काकू पर उमड़ पड़ता है, उनको ज़हरीली निग़ाहों से देखते हुए मोहनजी आगे कहते हैं।]
मोहनजी - अरे ओ काकूजी, इस तरह कपड़े क्यों झाड़ते जा रहे हैं आप ? या तो आप हैं सूरदासजी, या फिर आप हैं छूआछूत बरतने वाले अपराधी। आपके ऊपर दफ़ा नंबर..
रतनजी – [बीच में बात काटते हुए] – क्रोधित क्यों होते हो, मोहनजी ? आप दोनों की आदतों का, जिक्र किया है मैंने। एक तो वह झूंझला, जो जगह-जगह की मिट्टी में मुंह डालता है और दूसरे आप..
दयाल साहब – नालियों में मुंह डालकर, आ जाता होगा..साला ? तब ही, बार-बार थूकता रहता है हर ठौड़।
रतनजी – [मोहनजी को देखते हुए] – आप स्थान-स्थान पर, पीक थूकते ज़रूर हैं..मगर अपना दिल छोटा न कीजिये, इस झूंझले की लायी मिट्टी से फटी बिवइयां ठीक हो जाती है..और आपके जगह-जगह थूकने से हम लोगों को....
के.एल.काकू – [मुस्कराते हुए कहते हैं] – बैठने के लिए सीट मिल जाती है, मोहनजी के बैठते ही दूसरे एम.एस.टी. वाले सीट छोड़कर चले जाते हैं..
दीनजी - जैसे हमारे दयाल साहब और राजू साहब, डब्बा छोड़कर रामा पीर जाने ये दोनों कहाँ चले जाते हैं ?
रशीद भाई – जनाबे आली मोहनजी, अब आप अपने साथियों को क़ानून की दफ़ा बताना छोड़ दीजिये। हम सब जानते हैं, आप विधि-स्नातक हैं और सेवानिवृति के बाद आप वकालत ही करेंगे।
रतनजी – [मोहनजी की तरफ़ देखते हुए] - वाह रे भगवान, तूने कैसे-कैसे मनुष्य बनाकर भेजे हैं इस ख़िलक़त में ?
[इधर रतनजी का बोलना हुआ और उधर, आगमन हो जाता है उस थम्बे वाले भगवान का। अचानक रतनजी के कहे शब्द, उसके कानों को सुनायी दे जाते हैं। वह चमक कर रतनजी के

पास चला आता है, और कह उठता है।]
भगवान – मुझे किसने बुलाया, जनाब ? [रतनजी के और निकट आकर] मैंने कुछ नहीं बनाया, जनाब। आप हुक्म दीजिये जनाबे आली, मैं आपके लिए रोटियाँ बनाकर ले आऊँ ?
रतनजी – आगे बक, और कुछ कहना है तूझे।
भगवान - मगर, पैसे आपको पहले देने होंगे। पैसे देते ही मैं आपके लिए, गर्म-गर्म फुलके और कढ़ी की सब्जी बनाकर लेता आऊँगा ?
दयाल साहब – [हंसते हुए कहते हैं] – ले रतन सिंह। रामा पीर ने सुन ली, तेरी अर्ज़। अब कल से तू टिफ़िन लेकर आना मत, यह भगवान नाम का बन्दा तेरा खाने का टिफ़िन यहीं तैयार कर देगा। झूलेलाल तेरी जय हो, क्या भाग्य है इस रतन सिंह के ?
पंकजजी – वाह रतनजी। कैसे अच्छे भाग्य पाए हैं, आपने ? अब आनन्द करो, रतनजी..!
[सभी इस तरह, रतनजी पर व्यंग-बाण चलाने लगे। इससे रतनजी नाराज़ हो गए, अब वे नाराज़गी से थम्बे वाले भगवान की तरफ़ देखते हुए गुस्से में कहने लगे..]
रतनजी – [नाराज़ होकर कहते हैं] – अरे ए प्लेटफोर्म पर चलने वाले काले इंजन, बांका मुंह किये आ गया यहाँ..मुंह से धुए के गुब्बार निकालता जा रहा है, बेवकूफ। अरे भंगार के खुरपे, मैंने किया ऊपर वाले भगवान को याद। और तू बीड़ीबाज़, कहाँ से चला आया ?
भगवान – कुछ नहीं, जनाब। अब आप उस ऊपर वाले भगवान से रोटियाँ पकवा लेना, मगर एक बात आपको कहता जा रहा हूं..
मोहनजी – अब बोलता जा, निकाल दे तेरे दिल की बाफ़। अलसुबह यहाँ आ गया, कढ़ी खायोड़ा..?
भगवान – हुज़ूर, पहले भी मैंने आपसे यही कहा था के मैंने कढ़ी की सब्जी खायी नहीं है..मैं तो जनाब, दो-चार फूंक मार लेता हूं बीड़ी की। क्या, आप बीड़ी सेवन करना चाहते हैं..?
पंकजजी – बीड़ी ले लीजिये जनाब, असली तीर छाप बीडियों का बण्डल है इसके पास। अब ज़र्दे की जगह, इसका भी लुत्फ़ उठा लीजिये। शर्म मत कीजिये, जो करता है शर्म उसके फूटे करम।
मोहनजी – [भगवान की तरफ़ देखते हुए, कहते हैं] - अरे भंगार के खुरपे, दूसरी बातों को यहीं दफ़न कर दे और बता..तू क्या कहना चाहता था ?
भगवान – [मोहनजी को गौर से देखता हुआ] – टी.टी. बाबूजी, मैं यह कह रहा था के वह ऊपर वाला भगवान केवल टी.टी. लोगों के रसद की व्यवस्था करता है। और ये दुबले-पतले आपके दोस्त है ना...
मोहनजी – आगे बक, कढ़ी खायोड़ा।
भगवान – हुज़ूर, मैंने पहले आपसे कह दिया था..के, मैं कढ़ी खाकर नहीं आया हूँ। अब, सुनो आगे। ये जनाब, टी.टी.बाबू नहीं हैं। इसलिए, वह इनका खाना बनायेगा नहीं। फिर आप, इस ग़रीब को याद करना मत।
[इतना कहकर, वह बीड़ीबाज़ भगवान वहां से चला गया। उसके जाने के बाद, मोहनजी अपनी

आपबीती दोस्तों को बताने लगे।]
मोहनजी – अपुन का वक़्त ख़राब आ गया है, कढ़ी खायोड़ा। अब क्या देना, इन कर्मों को दोष ? पान वाले की दुकान पर खड़ा मैं कर रहा था, ऊपर वाले मालिक को याद। और यह बीड़ीबाज़ भगवान, करमठोक चला आया मेरे पास ?
रतनजी – जनाब, इंसान करमठोक बनता है अपनी आदतों के कारण...
ओमजी – [बात पूरी करते हुए] – जैसे अपुन के साहब जगह-जगह पीक थूकते रहते हैं, इनको इतना भी याद नहीं रहता के इन्होने पीक कहाँ-कहाँ थूकी है ? भगवान न करे, वह पीक जाकर गिर जाये, पीर दुल्लेशाह की मज़ार पर जाने वाली चाची की दुल्हन के ऊपर....ना तो कयामत...!
के.एल.काकू – क़यामत-वयामत छोडिये, साहब को, क्या फ़र्क पड़ता है ? आप जानते ही हैं, उनको रोकने वाला है कौन ? किसकी मां ने अजमा खाया..जो इनको रोककर, दिखाए ?
ओमजी – [काकू को देखते हुए] – अगर सावधानी नहीं रखोगे काकू, तो एक दफ़े सोच लीजिये यह आफ़त आपके ऊपर भी आ सकती है। साहब आपके पहने हुए ये उज़ले कपड़ो के ऊपर भी, पीक थूक सकते हैं। एक बार, और वापस देख लीजिएगा।
रतनजी – हो सकता है, कहीं आपके उज़ले कपड़ो के ऊपर, पीक थूककर इन्होने कोई चित्रकारी न कर दी हो ? या फिर आपके इन कपड़ो पर, ज़र्दे का स्प्रे करके अब आपके सामने चुपचाप खड़े हो ?
[यह सुनते ही, के.एल.काकू झट कूदकर मोहनजी से दूर हट जाते हैं। उनकी ऐसी हरक़त देखकर, राशीद भाई अपने लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए अलग से कह उठते हैं..]
रतनजी – [मुस्कराते हुए कहते हैं] – अरे काकू, ऐसे बन्दर की तरह क्यों उछल रहे हैं, आप ? ये आपके कपड़े हैं, कोई केनवास नहीं..जो मोहनजी आपके इन कपड़ो के ऊपर, ज़र्दे की पीक से चित्रकारी न कर बैठे ?
पंकजजी - अरे जनाब, कोई ज़माना था, तब लखनऊ के नवाब पीक थूककर ऐसी चित्रकारी करते थे..उस चित्रकारी की तारीफ़ करते हुए नामी शायर शेर लिख दिया करते। मगर, अब कैसा ज़माना आ गया है ?
रतनजी – मगर अब कोई शायर आने वाला नहीं, जो इनके पीक थूकने पर तारीफ़-ए-क़ाबिल शेर लिखता हो ? मगर जनाब, करम-फूटोड़ा गोपसा और उस्ताद दोनों जायेंगे आ जायेंगे यहाँ...
पंकजजी – [बात पूरी करते हुए] - और माई दासजी की तरह, श्लील गीत इनकी तारीफ़ में इस तरह सुनाकर चले जायेंगे [गाते हुए] 'मोहनजी वाली ए, दूध हल्दी का कर दे तैयार..जाजो आवे रे।'
रतनजी – [हंसते हुए] – अरे, जनाब। हल्दी के दूध की ज़रुरत, कैसे आन पड़ी ? कहीं जनाबे आली मोहन प्यारे, फोड़ी खाकर तो नहीं आये ?
रशीद भाई – नवाबों के ज़माने की बातें छोडिये, जनाब। चाची की बात कीजिये ना, क्यों मुद्दा

बदलते जा रहे हैं आप ? इस कलमुंहे गिरगिट की तरह..? ऐसा कहिये, अब मोहन प्यारे पीक थूकते हैं तब...
रतनजी - चाची के हाथ का, धब्बीड़ करता चपत खाते हैं अपने गालों पर। मैं तो साफ़-साफ़ यही कहूँगा जनाब, इसमें चाची का क्या दोष ?
रशीद भाई - पाक मज़ार के दीदार करने जा रही उसकी दुल्हन की ओढ़नी पर पीक थूककर, कोई नापाक कर दे.. तब ज़रूरी हो जाता है, वह उसको सज़ा दे। नहीं तो, क़यामत के दिन वह खुदा को क्या ज़वाब देगी ?

रतनजी - अरे रशीद भाई, नाराज़ मत होना..जो फोड़ी खाते हैं, वे और किसी को फोड़ी भी खिलवा सकते हैं। आखिर, तुज़ुर्बेदार ठहरे, जनाब। कोई यह नहीं कह सकता कि, आली जनाब ने अकेले फोड़ी खाई हो।

ओमजी – समझ गए, रशीद भाई ? फोड़ी किसी को भी पड़ सकती है, चाहे आप हो या कोई और..बस, आपके लिए चुप रहकर मेला देखना अच्छा है।
[सुनकर, बेचारे रशीद भाई तो हो गए चुप..मगर मोहनजी कुछ बोलना चाहते है। तभी 'इंजन की सीटी' की ध्वनि-तीव्र होती गयी, जिसके आगे आली जनाब मोहनजी की आवाज़ सुनायी नहीं देती। सीटी सुनने के बाद, अब किसको फ़ुर्सत पड़ी जो बेकार की बकवास करे ? अब धम्म धम्म करती हुई अहमदाबाद-मेहसाना जाने वाली लोकल गाड़ी, प्लेटफोर्म नंबर दो पर आकर रुक जाती है। उतरीय पुल से यात्री उतरते हुए दिखाई देते हैं, उनके पीछे-पीछे 'एम.एस.टी.होल्डर्स' सीढ़ियां उतरते दिखायी देते हैं। अब सभी एम.एस.टी.होल्डर्स' शयनान डब्बों के दरवाज़े खोलकर, अन्दर दाख़िल होते हैं। मोहनजी खिड़की के पास वाली सीट रोककर वहां बैठ जाते हैं, फिर खिड़की खोलकर खाने का टिफ़िन खोलते हैं। अब इन्हें खाना खाते देखकर, दयाल साहब, राजू साहब और के.एल.काकू दूसरे केबीन में चले जाते हैं। मगर इनके ख़ास साथी रतनजी, रशीद भाई, ओमजी और दीनजी भा'सा इनके आस-पास वाली ख़ाली सीटों पर आराम से बैठ जाते हैं। पहली पारी का खाना अरोग लेने के बाद, मोहनजी अपनी तोंद को हाथ से सहलाते हैं। फिर, बोतल से भर-पेट पानी पीते हैं। अब ख़ाली बोतल लिए मोहनजी, रशीद भाई को पानी लाने का काम सुपर्द करना चाहते हैं...मगर निगाहें उठाने पर रशीद भाई के दीदार कहीं नहीं होते। तब वे खिड़की से बाहर झांक कर, उन्हें आवाज़ देते हैं। सच्चाई तो यह है कि, रशीद भाई कहीं होते तो वे उन्हें वापस जवाब देते ? थोड़ी देर बाद प्लेटफोर्म नंबर तीन पर खड़ी देहली एक्सप्रेस से उतर रहे फोज़ियों को सलाम करते, रशीद भाई दिखायी देते हैं।]
रशीद भाई – [सलाम करते हुए] – असलाम वालेकम, कहाँ से तशरीफ़ लाए जनाब ?
एक फ़ौजी – वालेकम सलाम। देहली से आये हैं, और अहमदाबाद जाना है भाईजान। जनाब

आपको थोड़ी तकलीफ़ दे रहा हूं, बस आप हमें यह बता दीजिये ज़रा..
रशीद भाई – [तपाक से कहते हैं] – क्यों फ़िक्र करते हैं, बड़े मियां ? चलिए, मेरे साथ पीछे-पीछे..आप सभी फौजियों को बैठाता हूं, अहमदाबाद जाने वाली गाड़ी में।
[थोड़ी देर में, सभी फ़ौजी अपना सामान उठाये रशीद भाई के पीछे-पीछे चलते दिखाई देते हैं। उन लोगों के क़दम उसी तरफ़ बढ़ रहे हैं, जहां पाली जाने वाली 'अहमदाबाद-मेहसाना' जाने वाली लोकल गाड़ी खड़ी है। इसी गाड़ी के शयनान डब्बे में, इनके साथी बैठे हैं। अब रशीद भाई शयनान डब्बे में दाख़िल होकर केबीन के सभी पंखो का स्वीच ओन करते हैं। तभी एक फ़ौजी रुमाल से, ललाट पर छाये पसीने के एक-एक कतरे को साफ़ करता हुआ कहता है..]
एक फ़ौजी – [पसीना साफ़ करता हुआ] – गर्मी इतनी बढ़ गयी है, प्यास के मारे गला सूखता जा रहा है। [अपने एक साथी से कहते हुए] ओय गोपाल सिंह। ज़रा अपना बैग संभाल, कहीं ठंडे पानी की विसलरी बोतल रखी हो तो...?
गोपाल सिंह – राम सिंह। तू तो, बड़ा भुल्लकड़ ठहरा। पानी की चार बोतले ख़ाली करके, अब पूछ रहा है पानी ? अरे कुतिया के ताऊ, पिला दूं क्या बीयर ? पीकर, सो जाना।
राम सिंह – अरे रहने दे यार, बीयर तो अपुन लोग रात को पीयेंगे। पड़ी रहने दे, उसे आइस-बॉक्स में। अभी पानी मिल जाता तो अच्छा था, अब तो यार देखना होगा बाहर..कहीं प्याऊ दिख जाये तो..[खिड़की के बाहर झांकने की कोशिश करता है]
रशीद भाई – बाहर क्यों झांक रहे हो, जनाब ? ख़ुदा का बन्दा हाज़िर है, आपकी ख़िदमत में। फिर फ़िक्र काहे की..? ख़ुदा के लिए, लाइए ख़ाली बैग। अभी लाता हूं, ठन्डे पानी की बोतलें।
राम सिंह – [मज़ाक करता हुआ] – जनाब हम ठहरे, फ़ौजी। पानी पर, एक पैसा ख़र्च करने वाले नहीं। [ख़ाली बैग देते हुए] यह लीजिये, ख़ाली बैग..ख़िदमत कीजिये, अल्लाह पाक आप पर मेहर बरसायेगा।
रशीद भाई – [बैग लेते हुए] – अरे साहब, आम से मतलब रखें गुठली का क्या करना ? अब, रुख्सत दीजिये..
[रशीद भाई ख़ाली बैग लिए, प्लेटफोरम पर उतरते हैं। सामने खड़ी देहली एक्सप्रेस गाड़ी के शयनान डब्बे में, दाख़िल होते हैं। वहां उन्हें एक दस साल का हेदरिया नाम का लड़का, पानी की ख़ाली बोतलें इकट्ठी करता हुआ दिखाई देता है। वे उसे फटकार पिलाकर, उसे रुख्सत देते हैं। केबीन की बेंचो के ऊपर व पछीत पर जो ख़ाली विसलरी बोतलें पड़ी है, वहां रशीद भाई "खोड़ीला-खाम्पा" की तरह हाज़र। जिसके भय से बेचारा हेदरिया एक भी बोतल के हाथ लगा नहीं पा रहा है, आख़िर बेचारा पाख़ाने में जाकर ख़ाली बोतलें इकट्ठी करने लगता है। इन पाख़ानों में ख़ाली बोतलें का रहना, रेलवे की अव्यवस्था है। कारण यह है कि वहां रेलवे ने कोई डब्बा नहीं रखा, इसलिए यात्री गण अक़सर ख़ाली विसलरी बोतलें पाख़ाने में ले जाते हैं। अब रशीद भाई ढेर सारी बोतलें इकट्ठी करके बैग में डालते हैं, फिर ठंडा पानी भरने के लिए..वे प्लेटफोर्म पर लगे

शीतल-जल के नल के पास, चले आते हैं। वहां बैठकर, वे सारी ख़ाली बोतलों को धोते हैं। फिर वे इन बोतलों में, ठंडा पानी भरते हुए दिखाई देते हैं। मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर में ही मंच वापस रोशन होता है। गाड़ी के शयनान डब्बे का, मंज़र दिखायी देता है। बोतलों से भरा बैग लिये रशीद भाई, केबीन में दाख़िल होते दिखायी देते हैं। अब वे बैग राम सिंह को देते हुए, सभी फौज़ियों से कहते हैं...]

रशीद भाई – [बैग, राम सिंह को देते हुए] – फ़ौजी भाइयों, अब आप अबे-हयात नोश फरमाएं। फिर कीजिये आप, इस वतन की ख़िदमत।

[फ़ौजी बोतलें लेकर, पीने लगते हैं। पानी पीते-पीते वे, रशीद भाई को दुआ देते जाते हैं। अब रशीद भाई ख़ाली की गयी बोतले वापस इकट्ठी करके, बैग में डालते हैं। फिर, वे फौज़ियों से कहते हैं]

रशीद भाई – [बैग उठाते हुए, कहते हैं] - वापस पानी भरकर लाता हूँ, सफ़र लम्बा है..रास्ते में काम आ जायेगी। इधर गर्मी कम होने का, कोई सवाल नहीं।

[रशीद भाई ख़ाली बोतलों से भरा बैग लेकर, शीतल जल के नलों के पास चले आते हैं। इधर पड़ोस के केबीन में बैठे ओटालों के उस्ताद मोहनजी को मालुम होता है, के 'रशीद भाई फौज़ियों के लिए मिनरल वाटर की बोतलें लाये हैं।' फिर, क्या ? उनका जी मचलता है, और वे दिल में प्लानिंग कर बैठते हैं..के 'अरे यार मोहन लाल, तू कम से कम दो या चार विसलरी वाटर की बोतलें पार करके लेता आ। मज़ा आ जाएगा,

यार। **आख़िर तू ठहरा ओटालों का उस्ताद**, **यों मुफ़्त में आ रहा माल कैसे छोड़कर जा रहा है ?'** इतना सोचकर, वे सीट छोड़कर उठते हैं। फिर, रतनजी से कहते हैं..]

मोहनजी – [सीट को छोड़कर, उठते हुए कहते हैं] – रतनजी यार आपको मालुम है, रशीद भाई लाये हैं विसलरी ठंडे पानी की बोतलें। सभी बोतलें उन फौज़ियों को दे चुके हैं...

रतनजी – फिर, आप ख़ुद चाहते क्या हैं ?

मोहनजी – अच्छा यही है रतनजी, अब इन फौज़ियों से एक या दो बोतल मांगकर ले आता हूं। ठीक बात है ना, रतनजी कढ़ी खायोड़ा ?

रतनजी – [झुंझलाते हुए, कहते हैं] – कैसे बेशर्म हो, यार मोहनजी ? ये देशभक्त फ़ौजी, देश के लिए अपना लहू बहाते हैं। उनसे पानी की बोतलें लाकर, आप हमें क्यों शर्मिन्दा कर रहे हैं ?

मोहनजी – मैं ऐसा कौनसा काम मैं करने जा रहा हूं, जिससे आपको शर्मिन्दगी महसूस होती हो ? रतनजी – आपसे तो अच्छे हैं, रशीद भाई। उन्होंने देश भक्त फौज़ियों को पानी पिलाकर, सेवा का आनन्द लूटा है। आप इन फौज़ियों की सेवा नहीं कर सकते, तो फिर उनसे पानी लाकर अपना पाप मत बढ़ाइए।

मोहनजी – [चिढ़ते हुए] – वाह भाई, वाह। आपकी राय में, सेवा करने का पट्टा लेकर रशीद भाई ही घुम सकते हैं ? मैं खुद, इन फौज़ियों की सेवा कर सकता हूँ। आप जानते क्या है, इस कढ़ी

खायोड़ा मोहन लाल को ? अभी तक..
रतनजी – अभी तक, क्या ? साफ़-साफ़ ही कहो ना, क्या आप रशीद भाई की तरह सेवाभावी बन सकते हैं ?
मोहनजी – अभी तक, आपने मुझे देखा कहाँ है ? [एक हाथ आगे करके बोलते हैं, अमिताभ की स्टाइल से] अभी पिलाता हूं, फौज़ियों को अमृत जैसा पानी। क्योंकि, लोग मुझे कहते हैं...मोहनजी कढ़ी खायोड़ा।
[अब मोहनजी खिड़की के बाहर झांकते हैं, उन्हें बाहर देहली एक्सप्रेस गाड़ी से हेदरिया पोलीथिन बैग लिए हुए बाहर आता हुआ दिखायी देता है। पाख़ाने से इकट्ठी की हुई बोतलें, वह इस बैग में भर चुका है। अब मोहनजी गाड़ी से नीचे उतरकर, सीधे उसके पास चले आते हैं। उसके पास आकर, वे उसे सौ नंबर की फटकार पिलाते हैं।]
मोहनजी – [हेदरिया को डांटते हुए, रौबीले सुर में कहते हैं] – नालायक। इस गाड़ी में घुसकर तूने रेलवे का सामान चुराया है, ला इधर सारी बोतलें..अन्यथा तूझे ले जाकर पकड़ा देता हूं, जी.आर.पी. वालों को।
[अभी इस वक़्त मोहनजी के बदन पर पहना हुआ है, काला सफारी सूट। जिसमें वे, टी.टी.ई. क्या ? वे तो इस वक़्त असली चैकिंग पार्टी के मजिस्ट्रेट ही लगते हैं। इस तरह वह बेचारा हेदरिया उन्हें समझ लेता है, चैकिंग पार्टी का मजिस्ट्रेट। ऐसी धमकी सुनते ही, वह बेचारा सर से लेकर पाँव तक कांप जाता है। फिर क्या ? बोतलों से भरा बैग वहीं फेंककर, सर पर पाँव रखे भाग जाता है। अब वे उस पोलीथिन बैग को उठाकर, सीधे चले आते हैं उस नल के पास..जहां एक भिखारन अपने जूठे बरतन उस नल के नीचे रखकर, नल के गर्म पानी से बर्तनों को धोती जा रही है। उन्हें क्या पत्ता ? कि, इस नल से, इंजन और डब्बों के यूरीनल [पाख़ाना] की टंकियों के लिए पानी भरा जाता है। उस नल के निकट आकर वे पहला काम करते हैं, उस भिखारन को भगाने का। फिर वे उन बोतलों को बिना धोये ही, उनमे नल का गर्म और खारा पानी भरना शुरू करते हैं। पास ही प्लेटफोर्म पर लगे शीतल-जल के नल के पास खड़े रशीद भाई, मोहनजी को गर्म पानी भरते देख लेते हैं। फिर क्या ? वे मोहनजी को आवाज़ देकर, उन्हें रोकने की कोशिश करते हैं। मगर, इस वक़्त मोहनजी रशीद भाई की आवाज़ सुनना क्यों पसंद करेंगे ? उन्हें तो इस वक़्त लगा हुआ है, सेवा करने का भूत। उनके दिल में तो अलग से मची हुई है, उतावली। कहीं यह खोड़ीला-खाम्पा रशीद भाई उनसे पहले, बोतलों में पानी भरकर डब्बे में दाख़िल न हो जाए ? और इन फौज़ियों को, पानी नहीं पिला दे ? बस, फिर क्या ? फटा-फट गर्म और खारा पानी बोतलों में भरकर, ले आते हैं डब्बे में..जहां फ़ौजी बैठे हैं।]
मोहनजी – [गाना गाते हुए फौज़ियों को बोतले थमाते जाते हैं] – 'साला मैं तो साहब बन गया, साहब बनकर ऐसे तन गया। बूट मेरा देखो, सूट मेरा देखो..मैं हूं मजिस्ट्रेट चैकिंग का। फौज़ी मेरे भाई, सेवा करता जाता, यह मोहन प्यारा। ओ प्यारे फौज़ी, पीलो पीलो पीलो पीलो, अमृत जैसा

पानी। ओ प्यारे फौज़ी....पानी पाता, सालों..! अब तो मैं, सेवाभावी बन गया रे मेरे यारों।
[सभी बोतलें फौज़ियों को देने के बाद, उन्होंने एक पानी की बोतल बचा रखी थी। उस बोतल को देखकर, राम सिंह कहने लगा।]
राम सिंह – एक बोतल, क्यों थाम रखी है आपने ?
मोहनजी – यह बोतल नहीं दूंगा, जनाब। आख़िर, मुझे भी पानी पीना है।
[अब मोहनजी पानी के दो घूँट पीते हैं, तब उन्हें लगता है..वे बोतलों में, गर्म और खारा पानी ले आये थे ? फिर झट उन्होंने उस बोतल का ढक्कन लगाकर, उस बोतल को थमा देते हैं राम सिंह को। उसके बाद, वे उससे कहते हैं..]
मोहनजी – [राम सिंह से कहते हैं] – यह पानी आप पी लीजिये, जनाब। मेरा क्या ? मैं तो जनाब, प्लेटफोर्म पर जाकर ठंडा पानी पी लूँगा। आप पिजिये, अमृत जैसा पानी।
[फिर क्या ? राम सिंह बोतल खोलकर, दो घूँट पानी जैसे ही मुंह में डालता हैं..और उसे वह पानी, खारा और गर्म लगता है। फिर, क्या ? उसके गुस्से का पहाड़, मोहनजी पर टूट पड़ता है। मुंह में डाले गये दो घूँट पानी को कुल्ले के रूप में थूक देता है, मोहनजी के ऊपर। मगर कुल्ले का पानी मोहनजी के ऊपर गिरने का कोई सवाल नहीं, क्योंकि बीच में आ जाता है गोपाल सिंह..बेचारे का मुख-मंडल धुल जाता है, उस गंदे कुल्ले के पानी से। गोपाल सिंह मालुम करने की कोशिश करता है, के 'किसने कुल्ले का पानी, उसके मुख पर डाला है ?' उसके कुछ करने से पहले वह गुस्से से भरा राम सिंह, बिना ढक्कन लगी बोतल को मोहनजी के ऊपर फेंक देता हैं। फिर, क्या ? सामने कोई और मंज़र, आ जाता है..जिसे देखकर, वह ज़ोर से ठहाके लगाकर हंस पड़ता है..और भूल जाता है, अपना दुःख।]
राम सिंह – [बिना ढक्कन लगाये उस बोतल को, मोहनजी के ऊपर फेंकता हैं] – इडियट, ऐसा पानी पीलाकर मुझे मारेगा क्या ? तू मर इधर, तेरी मां की..[गाली की पर्ची निकालता है]
[राम सिंह बोतल फेंकने के बाद, वह मोहंज को बकता है...गंदी-गन्दी गालियां। भले राम सिंह ने बोतल फेंक दी हो, मगर चतुर मोहनजी का क्या बिगड़ता ? वैसे भी उनके भींगे जाने का कोई सवाल नहीं, वे तो रहे पूरे रहे सावचेत..फटाक से बैठ गये, नीचे। उनके पीछे खड़े आसकरणजी यात्रियों के टिकट चैक कर रहे थे, उन पर वह बोतल आकर इस तरह गिरी..के उनकी पतलून, बिना बरसात आये गीली हो गयी। उठते वक़्त, मोहनजी को आसकरणजी की गीली पतलून दिखायी दे गयी। ख़ुदा रहम, मोहनजी अब बिना हँसे रह नहीं पाते हैं। वे ख़िल-खिलाकर ज़ोर से हंसने लगे, हंसते-हंसते बेचारे मोहनजी बेहाल हो गये..किसी तरह अपनी हंसी दबाकर, आसकरणजी से कहने लगे..]
मोहनजी – [अपनी हंसी दबाकर, आसकरणजी से कहते हैं] – वाह, भाई वाह आसकरणजी भा'सा। [उनकी गीली पतलून देखते हुए] यों इस तरह पतलून के अन्दर कैसे मूतते जा रहे हैं, भा'सा ?
आसकरणजी – [दोनों हाथों से गीली पतलून को ढकते हुए कहते हैं] – ऐसे क्यों कह रहे हो,

मोहनजी ?
मोहनजी – अन्दर आप मूत रहे हैं, और मैं कुछ भी नहीं कहूं ? राम राम, मेरा तो कुछ नहीं। अब लोग देखेंगे, तो क्या कहेंगे आपको ? के 'ऐसे समझदार दानिशमंद आदमी, बच्चों की तरह अन्दर कैसे मूतते जा रहे हैं ?
[मोहनजी का इतना कहना क्या हुआ ? और इधर इस कथन को सुनकर, डब्बे में बैठे सभी यात्री ठहाके लगाकर ज़ोर से हंसने लगे। बेचारे आसकरणजी आब-आब होने लगे, और शर्म के मारे गीले पेंट को अपने दोनों हाथों से ढकते हुए वे दूसरे केबीन में चले जाते हैं। तभी घबराये हुए रशीद भाई डब्बे में दाख़िल होते हैं, और मोहनजी के नज़दीक आकर कहते हैं..]
रशीद भाई – [घबराये हुए कहते हैं] – रुकिए मोहनजी, कहीं आप ने इन फौज़ियों को पानी पिला नहीं दिया हो ? ख़ुदा रहम, ऐसी ग़लती करना मत।
मोहनजी – पिला दिया तो...हो गया, क्या ? मैंने भी, उस पानी के दो घूँट पिये हैं। फिर क्यों आपकी जान, इस पानी में अटकी पड़ी है ?
रशीद भाई – आपने पी लिए दो घूंट पानी के, तब कुछ नहीं..आप तो ठहरे, एक नंबर के अघोरी। इस पानी को पचा लोगे, मगर इन फौज़ियों को...
['फौज़ियों को..फौज़ियों को' ये अल्फ़ाज़ बोलते हुए रशीद भाई, हांप जाते हैं। बेचारे रशीद भाई आगे क्या कहते ? उनकी साँसे धौंकनी की तरह चल रही है, ऊपर वे ठहरे अस्थमा के मरीज़। इनकी ऐसी दशा देखकर, बेचारे फ़ौजी एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे और एक दूसरे की तबीयत भी पूछने लगे। उनको भ्रम हो गया, उस पानी में कहीं किसी आंतकवादी ने जहर न मिल दिया हो ?इधर रतनजी भी इनकी आवाज़ सुनकर, इस केबीन में तशरीफ़ ले आये। वे 'मैं लाडे की भुवा' की तरह बीच में, बोल पड़े।]
रतनजी – [रशीद भाई के नज़दीक आकर कहते हैं] – क्यों भाई, और सेवा करना चाहते हो ? बेचारे मोहनजी को बड़ी मुश्किल से सेवा करने का मौक़ा मिला, वह भी आपको अच्छा नहीं लगा ? क्या ख़ुदा ने आपको ही, सेवा करने का तुकमा दे रखा है ?
[अब रशीद भाई की साँसे सामान्य हो जाती है, तब बेचारे तसल्ली से कहते हैं..]
रशीद भाई – यह बात नहीं है, जनाब। बात कुछ अलग है, आप सुनेंगे तो आपके कान की खिड़कियाँ खुली की खुली रह जायेगी।
["कानों की खिड़कियां" शब्द आधा-अधूरा सुनकर, मोहनजी चमके..और केबीन की खुली खिड़कियों की ओर उंगली का इशारा करते हुए, कहते हैं..]
मोहनजी – [केबीन की खुली खिड़कियों की तरफ़, उंगली का इशारा करते हुए कहते हैं] – इधर देखिये, जनाब। ये खिड़कियां पहले से खुली है..
[रशीद भाई नज़दीक आकर, मोहनजी का कान पकड़कर कहते हैं..]
रशीद भाई – [मोहनजी का कान पकड़ते हुए] – क्या पागलों की तरह बोल रहे हैं, मोहनजी ? मैं

आपके इन कानों की बात कर रहा हूं, आप इन खिड़कियों को खोलिए। कानों में रुई ठूसकर, न बैठा करें। अब सुनिये, मैं खड़ा था उस नल के पास..जहां सभी यात्री ठंडा पानी भरते हैं।

[कहते-कहते रशीद भाई की सांस की गति बढ़ जाती है, अब वे हाम्पते-हाम्पते आगे कहते हैं!]
रशीद भाई – [हाम्पतेहुए कहते हैं] – त..त..तब म..म..मैं तब मैं आपको आवाज़ [सांस लेते हैं] दे देकर, थक गया। मैं आपको कह रहा था, आप इन बोतलों में पानी नहीं भरें।
मोहनजी – मगर, क्यों ? क्या आपको मेरा सेवाभावी होना अखरता है ? मुझे भी सेवा करने का हक़ है, जनाब।

रशीद भाई – [हाम्पते-हाम्पते कहते हैं] – ज..जना..जनाब जनाब, आप काहे सुनेंगे मेरी बात ? उस वक़्त लगा हुआ था, आपको..समाज-सेवा का भूत। फिर जनाब..
मोहनजी – फिर हो गया क्या, क्यों अपनी बत्तीसी बाहर निकालकर गेलसफ़े आदमी की तरह बोलते जा रहे थे..उस वक़्त ?
रशीद भाई – [सामान्य होकर] – क्या कह रहे हैं, जनाब ? मैं...और, गेलसफ़ा...?
मोहनजी – हाँ, हां...सच्च कह रहा हूँ, आप गंवारों की तरह प्लेटफोर्म पर खड़े ऐसे चिल्ला रहे थे..मानो आप इस साढ़ी पांच फुट के मोहन लाल को नहीं, किसी मंगते-फ़क़ीर को आवाज़ लगा रहे हो ? के, 'आ रे, फकीरिया। रोटी ले जा।' अरे यार, इतना तो सोचना चाहिए आपको..यह साढ़े-पांच फुट का आदमी एफ़.सी.आई. का अफ़सर है।
रशीद भाई – [होंठों में ही] –
अच्छा होता, आप फ़क़ीर बने होते, वैसे भी सवाब का काम आपसे होता नहीं..दिल-ए-तमन्ना बनी रहती है, मुफ़्त का माल अरोगने की। [प्रकट में] मैं यह कहना चाहता था, जनाब। आप जिन बोतलों में पानी भर रहे थे, वे सारी बोतलें टॉयलेट में पड़ी थी। उन बोतलों को हेदरिया, टॉयलेट से लेकर आया था..
रतनजी – अरे राम राम। भगवान जाने कितने छींटे लगे होंगे टट्टी-पेशाब के, उन बोतलों के ऊपर ?
रशीद भाई – [मोहनजी से कहते है] - और आप उस बेचारे छोरे से बोतलें छीन ली, फिर उसी में व भी बिना धोये..पानी भरकर इन फौज़ियों को पिला दिया। आपके जैसा सेवाभावी, मुझे इस दुनिया में कहीं दिखाई नहीं देता।
रतनजी – [नाक पर रुमाल रखते हुए, कहते हैं] – अरे राम राम। टट्टी-पेशाब के छींटे लगी हुई बोतलों में, खारा और गर्म पानी डालकर फौज़ियों को पिला दिया रे। राम राम। [मोहनजी से] यह क्या कर डाला साहब, आपने ?
[**ऐसी गंदी बोतलें जिन पर टट्टी-पेशाब के छींटे पड़े हो, उन बोतलों में पानी पी लिया..इन फौज़ियों ने ?** मालुम होने पर, अब राम सिंह गुस्से से लाल-पीला होने लगा। फिर क्या ? राम सिंह हाथ में

अपना फ़ौजी बूट लेकर, मोहनजी को पीटने के लिए अपने क़दम बढ़ा देता है। मगर चतुर मोहनजी, उसके हाथ आने वाले कहां ? उन्होंने लगायी ऐसी मेराथन दौड़, और जाकर सीधे घुस गए यूरीनल में। पीछे से, तेज़ी से आता हुआ राम सिंह देख नहीं पाता है..अपने आगे और पीछे। **वह तो भड़के हुए सांड की तरह, रास्ते में खड़े फ़क़ीर बाबा से टक्कर खा जाता है। टक्कर खाकर, बेचारा सीधा आकर गिरता है....नीचे फर्श पर बैठी 'डोकरी पानी बाई' की गोद में। वह उठे, क्या ? उसके पहले गालियां बकती हुई पानी बाई, राम सिंह की कमर पर चार धोल जमा देती है। बेचारे राम सिंह की कमर पर, मार क्या पड़ी ? बेचारे की ताण खायी हुई कमर, बुढ़िया के धोल से सीधी हो जाती है।**]

पानी बाई – [पीटती हुई] – करमठोक। **यह उमर है तेरी, मां की गोद में बैठने की ? आ गया यहाँ, जा बन्दूकढ़ी लेकर देश की सीमा पर..**

[आगे वह बुढ़िया, क्या बके ? आगे उसका गाली-पुराण सुनने की ताकत, अब कहाँ रहती है...रशीद भाई और रतनजी में ? उसका यह ताड़का रूप देखकर, बेचारे रशीद भाई और रतनजी को काठ मार जाता है..! बेचारे ऐसे डर गए हैं, अब कहीं यहीं बैठे रह गए तो...जनाबेआली मोहनजी के कारनामों के कारण, उन दोनों की इज़्ज़त सलामत नहीं रह पाएगी ? आख़िर, गेहूं के साथ धुन पिसा जाता है..क्योंकि मोहनजी ठहरे इन दोनों के साथी। उधर दूसरी तरफ़ राम सिंह के फ़ौजी दोस्त उसकी यह हालत देखकर, हंसी के ठहाके लगाने लगे। बस यही मौक़ा रहा, सलामती से निकल जाने का। बस, फिर क्या ? दोनों झट अपना बैग उठाकर चल देते हैं उस केबीन की तरफ़, जहां दयाल साहब, राजू साहब और के.एल.काकू पहले से वहां बैठे हैं। अब इन और लोगों के आ जाने से, गपों का पिटारा खुलता जाता है।]

दयाल साहब – रतन सिंह, सांई। अब कैसे आ गया, इधर...इस मोहन लाल को छोड़कर ?

रतनजी – साहब, हम लोग उनसे परेशान होकर यहाँ आये हैं।

दयाल साहब – परेशानी किस बात की, तुम्हारे साथ यह सेवाभावी रशीद है ना ?

रतनजी – इनकी सेवाभावी आदतों से त्रस्त होकर, जनाब मुझे इधर आना पड़ा। क्या करें, जनाब ? रशीद भाई राह चलते लोगों को पानी पिला देते हैं, इनकी नक़ल करते मोहनजी ने फौज़ियों को पिला दिया..गर्म और खारा पानी, व भी टॉयलेट में रखी गयी बोतलों में डालकर।

रशीद भाई – मेरी कोई बराबरी करता हुआ, नक़ल उतारता है। और फौज़ियों को गर्म और खारा पानी पिला देता है, इसमें मेरी कहाँ ग़लती ?

रतनजी – जनाब, ग़लती तो मेरी है..जिसके आप जैसे सेवाभावी दोस्त हैं।

रशीद भाई – [दयाल साहब से कहते हैं] - मैं तो ठंडा शीतल जल पिलाता हूँ, लोगों को। अगर ऐसा है तो, जनाब मैं आज ही मेंबर बन जाता हूँ सेवा-मुक्ति केंद्र का। फिर दयाल साहब मुझे, आप कोई काम मत कहना।

रतनजी – मालिक, आपकी सौ साल की उम्र हो। मुझको बारह महिने रासायनिक पाउडरों से, होली खेलनी अच्छी लगती है। इस होली से अब इतना प्रेम हो गया है..
दयाल साहब – कह दे, सांई। क्यों पेट में डाले रखता है, बात। अपच, हो जायेगी।
रतनजी – [दयाल साहब से] – साहब,
आप बचने के साधन यानी आधुनिक मास्क आदि उपलब्ध नहीं करवाते..तो भी मैं गोदाम में काम करता-करता, इन रासायनिक पाउडरों से होली खेलता रहता हूँ।
रशीद भाई – [हाम्पते-हाम्पते, कहते हैं] – रतनजी आप करते हो बोरियों के ऊपर छिड़काव, तब मैं ख़ाली नहीं बैठता हूं जनाब। मैं भी पम्प पकड़कर, आपका साथ देता
हूं। **इसी करण मुझे हो गयी बीमारी दम..दमे की।**
ओमजी – जैसा काम, वैसा ही यह दम। किसका दम कम उठता है, तो किसी का ज़्यादा। मगर उठता है, सभी का। अरे जनाब, **यह तो अपने महकमें की प्रसादी है।**
[इनकी बातें सुनकर, दयाल साहब झुंझला जाते है। झुंझलाते हुए, वे कहते हैं...]
दयाल साहब – [झुंझलाते हुए कहते हैं] – ज़्यादा सर मत खाओ, मास्क वगैरा मेरे घर पर निपजती है ? जो तुमको लाकर दूं..सरकार आपको ज़ोखिम-भत्ता देती है, क्यों लेते हो ? उसकी जगह मांग लो, मास्क वगैरा। तुमसे तो...
राजू साहब – कह दीजिये, आगे। अच्छा है, मानमल। जो बेचारा है, दुबला-पतला। मगर है, सेवाभावी।
दयाल साहब - नगीना है, जी। जनाब यह मानमल हरेक की जिम्मेवारी, अपने सर ओढ़ लेता है। वह भी, बिना बोले।
[रतनजी, रशीद भाई और ओमजी हो जाते हैं,
चुप। **तोड़ बिन मोल नहीं, अब बेचारे कहते क्या ? केवल एक-दूसरे का चेहरा देखने लग गए।** मगर अब राजू साहब, चुप रहने वाले जीव नहीं। वे आग में घास का पूला डालते जैसे, कहने लगे..]
राजू साहब – दयाल साहब, ज़रा देखिये। उस मानमल की महानता। अजीत सिंह लेखाकार आकर कहेगा, उसे "मानमलसा, मैं जा रहा हूं, पीछे से संभाल लेना मेरा काम। फिर कहेगा माणकमल, "मानमलसा, मैं जा रहा हूँ। आप मेरा सेक्सन, संभाल लेना। इस तरह, दयाल साहब...
दयाल साहब – इस तरह, क्या जनाब ? कहना क्या चाहते हैं, आप ?
राजू साहब – इस तरह वह सबको एक ही जवाब देता है, 'आप पधारिये आराम से, मैं संभाल लूँगा आपका
काम।' **फिर, क्या ? सब लोग इस मानमल को दफ़्तर संभलाकर चल देते हैं, अपने घर। इस तरह हो जा ता है, पूरा दफ़्तर ख़ाली।**
दयाल साहब – फिर क्या ?
राजू साहब – इस तरह शाम के चार बजते ही, दफ़्तर ख़ाली। पीछे से आता है, अजमेर से डी.एम

का फ़ोन। फिर..
दयाल साहब – [झुंझलाते हुए कहते हैं] – आख़िर कहना क्या चाहते हो, हुज़ूर ? क्या, मैंने दफ़्तर छोड़ दिया ? यही कहना चाहते थे, आप ?
राजू साहब – दयाल साहब, काहे नाराज़ हो रहे हैं आप ? पहले सुनिए, अजमेर से डी.एम. का फ़ोन आता है। बोलता है, चावल की गुणवत्ता-रिपोर्ट जल्द फेक्स से भेजिये। अब देखिये, साहब..
दयाल साहब – [खीजे हुए, कहते हैं] – क्या देखूं, राजू साहब ? पांच दिन पहले रिपोर्ट बनाकर, इस माणक मल को संभाला दी। अब आप और क्या कहना चाहते हैं, जनाब ? उस रिपोर्ट में मैंने लिख डाला, के 'चावल की पोलिस, मापदण्ड अनुसार नहीं है।'
[**कहाँ तो बेचारे राजू साहब उस कर्मठ कर्मचारी की तारीफ़ करना चाहते थे, मगर अब बात हो गयी दूसरी। दयाल साहब के दिमाग़ में बैठ गयी ग़लत बात, के 'वह दयाल साहब की आलोचना करते जा रहे हैं ?' इनके कथन से दयाल साहब को, ख़ुद के दोष दिखायी देने लगे। ख़ुद के दोषों का उज़ागर, किसे पसंद ?** अब दयाल साहब, कहाँ चुप रहने वाले ? बस, वे इस सन्दर्भ में बोलते ही जा रहे हैं..!]
दयाल साहब – अब उसको लिखने हैं, आंकड़े हर माह के। फिर जोड़ लगाकर, भेजनी है रिपोर्ट। अब मैं क्या करूं, इसमें मेरी कहाँ ग़लती ? --
राजू साहब – नाराज़ हो गए, जनाब ? मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा, जिसके करण आप नाराज़ हो रहे हैं। जनाब मुझको अब यह कहना है, अब बेचारा मानमल क्या करता है ?
दयाल साहब [बेमन से] - फिर, क्या ? कहिये, आगे...मेरे बाप का क्या जाता है ?
राजू साहब - पहले अलमारी से निकालता है फाइलें। फिर आंकड़े उतारकर, तैयार करता है लेटर। फिर बेचारा मुझे खोजता हुआ वह सेवाभावी, बस-स्टॉप पर आ जाता है।
दयाल साहब – बस-स्टॉप क्यों कहते हैं, जनाब। कह दीजिये रेलवे स्टेशन, अब यहाँ कोई कहने वाला नहीं आपको..के, आपने इतना जल्दी दफ़्तर कैसे छोड़ दिया ? हम सभी साथ-साथ सफ़र करते हैं, फिर डरने की कहाँ ज़रूरत ?
राजू साहब – पहले मेरी बात सुन लीजिये, दयाल साहब। बेचारा मानमल मेरे दस्तख़त करवाता है, फिर लौटता है फेक्स की दुकान पर। बाद में वह फेक्स करता है, अजमेर डी.एम. को।
दयाल साहब – फिर, इसके बाद ..?
राजू साहब – फिर सब काम निपटाकर जाता है, अपने घर। देखता है, अपनी बीमार जोरू को। **जहां तीमारदारी पति को करनी चाहिए, मगर वहां तीमारदारी करते हैं पड़ोसी।** बस, यही ज़िंदगी है मानमल की। ऐसा समर्पित कर्मचारी, आपको कहाँ मिलेगा ?
दयाल साहब – मगर, दूसरे कर्मचारी कैसे हैं ? पत्नी की बीमारी का झूठा बहाना बनाकर, दफ़्तर से हो जाते हैं गायब। खोजने पर मिलते है, चाय की दुकान पर या फिर पनवाड़ी की दुकान पर पान खाते हुए।

[अभी जो बात कही गयी है, वह बात है जसकरणजी की। बस अब इसी मुद्दे पर गुफ़्तगू चलती रही तो, न जाने कितने कर्मचारियों की पोल खुलती जायेगी ? कहीं यहाँ बैठे रतनजी, रशीद भाई और ओमजी की छुपी बातें खुल न जाये ? बस अब इस आशंका को लिए रतनजी, चाहते हैं किसी तरह इस गुफ़्तगू का मुद्दा बदल दिया जाये। मुद्दा बदल दिया गया, तो सबका भला होगा। यह सोचकर, वे कहते हैं..]

रतनजी – साहब, अब आप मेरी बात सुनिये। इधर आकाश में छा रहे हैं, काले-काले बदल। उधर अपने महकमें में आ गया है, मौसम बदलियों का। कहीं ऐसा न हो जाय, इस मौसम में मान मलसा का स्थान्तरण...

रशीद भाई – [बात काटते हुए, कहते हैं] – थूकिये, अपने मुंह से..! ऐसी कड़वी और काळी ज़बान होती है, मोहनजी की। आप क्यों बनते हो, ऐसे कळजीबिया ?

[रतनजी कुछ और बात कहना चाहते हैं, मगर यहाँ सुनने वाला है कौन ? आख़िर सभी सज्जन ठहरे, मानमलस के हितेषी। वे क्यों ऐसी बात, सुनना पसंद करेंगे ? अब गाड़ी रवाना हो जाती है, सीटी बजाती हुई वह पटरियों के ऊपर द्रुत गति दौड़ती हुई दिखाई देने लगी। उसकी तेज़ आवाज़ के आगे, रतनजी क्या कह रहे हैं ? उनकी आवाज़ किसी को, सुनायी नहीं देती। मंच के ऊपर अन्धेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच के ऊपर रौशनी होती है। अब गाड़ी के डब्बे का मंज़र सामने दिखाई देता है, मोहनजी दौड़कर पहुँच जाते हैं यूरीनल के पास। वे इस यूरीनल के अन्दर दाख़िल होना चाहतें हैं, मगर वहां खड़ा है गोमिया..जो उनको, अन्दर जाने नहीं देता। वह उनका रास्ता रोकता हुआ, कहता है..]

गोमिया – [मोहनजी से कहता है] – जय बाबा री, सा। मोहनजी क्या कर रहे हो, बेटी के बाप ? जनाब, आपको सौभाग मलसा याद कर रहे हैं। वे पिछले डब्बे में बैठे हैं, अगले स्टेशन पर आप उतरकर उनसे मिल लेना।

मोहनजी – नहीं मिलने गया, तो गोमिया तू मेरा कान पकड़कर ले जाएगा उनके पास ? हट यहाँ से, गोमिया कढ़ी खायोड़ा। लघु-शंका तेज़ हो रही है, अब आने दे ठोकिरा।

गोमिया – अगर आप नहीं मिले, तो पावणा सच्च कहता हूँ आपसे..कहीं ऊंच-नीच हो गयी तो फिर, मुझे मत कहना। उनकी हुक्मअदूली करना, आदमी के लिए बहुत महंगी पड़ती है।

मोहनजी – [गुस्से में बड़-बड़ाते हुए] –

पूत हुवै परवार, कूतड़ी ब्यावै पोल में। लाडी बाई की इतनी झाड़ खाने के बाद, अब मिलूंगा तेरे सौभाग मलसा से ? अब मेरी जूत्ती नहीं मिले, उस रुलियार से। इस नालायक को चाय क्या पिला दी, मैंने ? इस लाडी बाई ने,

‘रुलियार’ का खिताब दे डाला मुझे। ऊपर से कहने लगी ‘रुलियार का साथ करने वाला, रुलियार ही होता है।’

गोमिया – पावणा। आप होंठों में क्या कहते जा रहे हैं ?

मोहनजी – बात यह है, गोमिया...के, जब मैंने ख़ुश होकर भागवान से कहा था, 'देखो भागवान। आपके पीहर वाले सौभाग मलसा को मैंने खाना खिलाया, फिर उनको चाय पिलायी।' सुनकर, भागवान क्या बोली ?

के **'वह रुलियार है, और आप उसका साथ करते हो..इसलिए आप भी हो, रुलियार। दोनों, एक जैसे।'**

गोमिया – और क्या कह दिया, काकीसा ने...?

मोहनजी – "ऐसे रुलियारों का साथ करते हो, आप।" अब बोल भाई गोमिया, क्या मैं तूझे रुलियार दिखायी दे रहा हूं ?

[बेचारा गोमिया उनकी परिस्थिति के बारे में सोचता हुआ विचारमग्न हो जाता है, और उसका ध्यान यूरीनल के दरवाज़े की ओर से हट जाता है। बस, फिर क्या ? मोहनजी बड़बड़ाते हुए, झट यूरीनल का दरवाज़ा खोलकर अन्दर दाख़िल हो जाते हैं, मगर बेचारे मोहनजी ठहरे करमठोक। अन्दर दिखायी देता है एक छक्का।]

मोहनजी – [बड़बड़ाते हुए, दरवाज़ा खोलते हैं] – बोल भाई गोमिया, क्या तूझे मैं रुलियार दिखायी देता हूं ? क्या मैं, रुलियार हूं ?

[यह छक्का तो गुलाबो ही निकला, इस वक़्त वह गधा अपने सर पर रखी विग उतारकर धो रहा है अपना मुंह। मुंह धोने के बाद, उसने अपने रुख़सारों पर लाली-पाउडर लगाकर अपने होठों पर लिपस्टिक लगा डाली। ऊपर मुंह उठाने पर उसे दिखायी देते हैं, बड़बड़ाते जा रहे मोहनजी। फिर, क्या ? झट अपने सर पर विग लगाकर, मेक-अप का सामान अपने बैग में रख देता है। अब वह मोहनजी के नज़दीक आकर, उनके रुख़सारों को सहलाता हुआ कहता है..]

गुलाबा – [मोहनजी के रुख़सारों को सहलाता हुआ कहता है] – रुलियार..रुलियार ? अरे मेरे सेठ मोहनजी, आप रुलियार ही हो। परसों आप उस नर्स से, बड़े प्रेम से क्या कह रहे थे ?

[गुलाबा लबों पर मुस्कान बिखेरता है, फिर ताली बजाकर कहता है]

गुलाबा - हाय..हाय..! सेठ साहब, बदन में गर्मी चढ़ गयी है, जनाब ? आप कहो तो, आ जाऊं आपके पास..? रति-रोग, उतर जायेगा आपका।

[इतना कहकर गुलाबा ज़ोर से हंसने लगा, इधर मोहनजी की स्थिति बुरी हो जाती है। उनको फ़िक्र हो जाती है, कहीं इधर-उधर खड़े किसी एम.एस.टी. वाले ने इस नालायक गुलाबा की कही बात सुन न ली हो ? पहले पाख़ाना के बाहर मिल गया गोमिया, और अब आ गया यह तीतर का बाल की तरह 'गुलाबो'..बेचारे मोहनजी की लघु-शंका की स्थिति बन जाती है, नाक़ाबिले-बरदाश्त। फिर, क्या ? जनाबेआली मोहनजी गुस्से में, उस गुलाबो को देते हैं ज़ोर का धक्का। फिर, क्या ? बेचारा गुलाबा, बाहर आकर गिरता है..उस गोमिया के ऊपर। अचानक आयी इस आफ़त को गोमिया अपने आप को संभाल नहीं सका, बस वह पछाड़ खाकर गिरता है..बोड़सा के ऊपर, जो यूरीनल में जाने के लिए, अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आगे रामसा पीर ही जाने, डायबिटीज़ रोगी बोड़सा की क्या हालत हुई होगी ? उधर गुलाबा के बाहर आते ही, मोहनजी ज़ोर

से जड़ देते हैं यूरीनल का दरवाज़ा। अब कहीं जाकर, मोहनजी को मिलता है आराम। पाख़ाने के कंपाउंड पर मूतते हुए मोहनजी को, सामने की दीवार पर लिखे गये उत्तेजक कथन दिखायी दे जाते हैं। उस कथन के नीचे लिखने वाले के, मोबाइल नंबर भी वहां मौज़ूद। लघु-शंका का निवारण कर रहे मोहनजी, उस कथन को बड़े इंटरेस्ट से पढ़ते हैं..]

मोहनजी – [उत्तेजना से भरे कथन को, पढ़ते हुए] – "मुलाक़ात कीजिये, ले लीजिये मज़े ज़िंदगी के।"

[वे कभी दीवार पर लिखे मादक कथन को पढ़ते हैं, कभी नीचे लिखे मोबाइल नंबर को याद करने की कोशश करते हैं। "मुलाक़ात कीजिये, ले लीजिये मज़े ज़िंदगी के।" कथन को पढ़ते ही उनकी आँखों में आ जाती है, चमक। इस बुढापे में बासती जवानी का उबाल आ जाता है, और दिल की धड़कन हो जाती है तेज़। इधर, दिमाग़ सोचने को मज़बूर होता है.."ऐसा है, कौन ? जिसने ऐसे कथन लिखे हैं, दीवार पर ? क्या यह किसी रूलेट हसीना का लिखा इश्तिहार है, या फिर यह मर्दों को अपने ज़ाल में फंसाकर, ब्लेकमेलिंग का धंधा बढाने का हथकंडा है ? इन सवालों का जवाब किसी बड़े जासूस के पास हो सकता है, ऐसा ही कुछ मोहनजी सोचते जा रहे हैं। **अब इनको याद आ गए वे सारे तरीके, जिनको मेजर बलवंत ने जासूसी करने के दौरान अपनाए थे। जिनका पूरा वृतांत, कर्नल रणजीत के उपन्यासों में दिया गया है।" सोचते-सोचते मोहनजी भूल गए, के जल्द ही अगला स्टेशन आने वाला है।** इंजन सीटी देता है, धीरे-धीरे गाड़ी की रफ़्तार कम हो जाती है। और अचानक प्लेटफोर्म पर आकर, गाड़ी रुकती है..और गाड़ी का इधर रुकना क्या होता है ? और उधर न्यूटन के क्रिया और प्रतिक्रया सम्बन्धी नियम का अनुगमन करती हुई इस गाड़ी को लगता है, ज़ोर का धक्का। मोहनजी इस धक्के को संभाल नहीं पाते, और मूतते हुए वे कंपाउंड पर आकर गिरते हैं। इधर किसी के, दरवाज़े पर दस्तक देने की आवाज़ सुनायी देती है। अब मोहनजी संभलकर, अपनी पतलून सही करते हैं। फिर आगे बढ़कर, वे यूरीनल का दरवाज़ा खोलते हैं। सामने अंगारे के माफ़िक लाल-सुर्ख आंखें दिखाता हुआ, गोमिया दिखायी देता है। न जाने क्यों, अब वह गुस्से में बकता जा रहा है...?]

गोमिया – [गुस्से में, बकता है] - कितनी बार कहा आपको, के सौभाग मलसा आपको बुला रहे है। मगर आप मेरी कही बात इस कान से सुनते हैं, और दूसरे कान से निकाल लेते हैं। पावणा अब एक बार फिर सोच लीजिये...

मोहनजी – क्या सोचूँ रे, कढ़ी खायोड़ा ? सोचने का काम मेरा ही है ? फिर, तू क्या करेगा रे..?

गोमिया – सुन लीजिये, मेरी बात। आप सौभाग मलसा से अगर नहीं मिले..फिर नाराज़ होकर आप पर कहर बरफा दिया उन्होंने, तब फिर मुझे आप यह मत कहना के आपको मैंने आगाह नहीं किया ?

मोहनजी – [मुस्कराते हुए कहते हैं] –

आ रहा हूँ रे, गोमिया। तेरे साहब को कहना, के अंधे को निमंत्रण देने पर निवाला हाथ से देना पड़ता है।

[अचानक मोहनजी को, सामने की पटरी के पर खड़ी माल गाड़ी दिखायी देती है। उन्हें ऐसा लगता है, उस माल गाड़ी पर धान की बोरियां लदी हुई है। इस मंज़र को देखकर, वे गोमिया से कहते हैं..]

मोहनजी – देख रे गोमिया, कढ़ी खायोड़ा। अब तू पहले यों कर, [माल गाड़ी की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहते हैं] वह माल गाड़ी कहाँ से आयी है, और कहाँ जा रही है ? यह पत्ता लगाकर आ जा, बापूड़ा। फिर चलता हूँ, तेरे साथ में।

गोमिया – अभी चुटकी बजाकर, यह किया आपका काम। मगर, यह याद रखना..आपको छोड़ूंगा नहीं, आपको ले जाकर रहूँगा सौभाग मलसा के पास।

[गोमिया उतरता है गाड़ी से, फिर अपने क़दम माल गाड़ी की तरफ़ बढ़ा देता है। उसके जाने के बाद, मोहनजी डब्बे का दरवाज़ा बंद करके लोक कर देते हैं। फिर, कहते हैं..]

मोहनजी – [दरवाज़ा लोक करके कहते हैं] – ले करमठोक, अब आना वापस। डब्बे का दरवाज़ा नहीं खोलूँगा, माता के दीने बड़ा आया मुझे ले जाने वाला ? जानता नहीं, यमराज खुद डरते हैं मुझसे।

[फर्श पर लेटा फ़क़ीर उनकी कही बात को सुन लेता है, अब उससे चुप रहा जाता नहीं। आख़िर मामला, मौत का ठहरा। उस बेचारे ने, यही सुन रखा था, 'मौत कभी किसी को कहकर नहीं आती।']

फ़क़ीर – आप महान है, जनाब। आपको, मौत पूछकर आती है..?

मोहनजी – सही कहा, मैंने। वे दस बार पूछेंगे मुझसे, भाई मोहनजी चलने का मूड है या नहीं ? [होठों में ही] गोमिया तूझे गाड़ी में चढने दूंगा, तब तू ले जायेगा मुझे कढ़ी खायोड़ा..सौभाग मलसा के पास ?

[थोड़ी देर बाद इंजन सीटी देता है, गाड़ी रवाना हो जाती है। तभी दौड़ता हुआ गोमिया आता है, डब्बे के दरवाज़े के पास यह कहते हुए वह साथ-साथ दौड़ता जाता है..]

गोमिया – [दौड़ता हुआ, कहता है] – पावणा, दरवाज़ा खोलो। दरवाज़ा खोलो।

मोहनजी – [खिड़की से बाहर झांकते हुए] – बैल-गाड़ी नहीं है रे, गोमिया कढ़ी खायोड़ा। के, तेरे कहने से यह गाड़ी रुक जायेगी।

[मोहनजी अब वापस आ जाते हैं, अपने साथियों के पास..जहां उनके ख़ास दोस्त रशीद भाई, ओमजी और रतनजी बैठे हैं। अभी तक इन लोगों के मध्य गपों का पिटारा खुलता ही जा रहा है, वे आकर ख़ाली सीट पर बैठ जाते हैं। बैठे-बैठे मोहनजी की पलकें भारी होने लगती है, थोड़ी देर उनका सर नीचे झुक जाता है और वे नींद लेने लगते हैं। अब रास्ते में बैठी पानी बाई उन आते-जाते यात्रियों से परेशान हो जाती है, जो बार-बार उससे टकराकर आगे निकल जाते हैं। आख़िर उस बुढ़िया की सहन करने की शक्ति ख़त्म हो जाती है, वह झट अपनी गाँठ उठाकर चल देती है वहां..जहां जनाबे आली मोहनजी बैठे-बैठे, झपकी ले रहे हैं और सुनहरे सपनों में

विचरण कर रहे हैं। ख़ाली सीट न मिलने पर वह बुढ़िया, मोहनजी के पांवों के पास फर्श पर बैठ जाती है। अब यहाँ बैठे-बैठे वक़्त गुजारना हो जाता है कठिन। फिर, क्या ? वह गाँठ से नशवार की डिबिया निकालकर, तम्बाकू सूंघने लगती है। इधर दयाल साहब कह रहे हैं..]

दयाल साहब – देख, रतन सिंह। मैं यह नहीं कहता हूं, तू सेवाभावी मत बन। मगर यह ज़रूर कहूंगा, के तू मोहन किशन व्यास की तरह सेवाभावी मत बन।

रशीद भाई – साहब, व्यासजी जैसे भले आदमी कहां मिलते हैं इस ख़िलक़त में ? और जनाब वे है, आपके दोस्त। मैं तो यही कहूँगा वे आपके लंगोटिया यार जैसे ही है। मगर आप अब, उनके बारे में ऐसी ग़लत बात क्यों कर रहे हैं ?

दयाल साहब – यार रशीद, तू कुछ नहीं जानता। अब बीच में, तू मत बोला कर। तूझे क्या पत्ता, वह कैसा सेवाभावी है ? क्या कहूं, सांई ? उस वक़्त, उसकी सेवा कभी-कभी नुक्सान पहुंचा दिया करती थी।

रतनजी – ऐसी क्या बात थी, जनाब ? अब आप ही बता दीजिये, ऐसा क्या किया उन्होंने..?

दयाल साहब – तब सुनो, मेरी बात। फिक्सेशन हुआ, मेरे बढ़े आठ सौ रुपये और मोहन किशन के बढ़े बारह सौ रुपये। हम दोनों की पे-स्केल व वेतन सभी एक समान हैं, मगर रुपये अलग-अलग क्यों बढ़े ?

रतनजी – साहब आपने शायद, दोनों प्रकरण अच्छी तरह से नहीं देखे होंगे ?

दयाल साहब – मैंने अपना केस देखा, आठ सौ रुपये बढ़े..आठ सौ ही बढ़ने चाहिए, जो बढ़ गए। मोहन किशन के भी बढ़ने चाहिए थे आठ सौ, मगर बढ़े बारह सौ रुपये। मगर, वह चुप रहने वाला प्राणी नहीं। बार-बार मुझे कहता रहा..

रशीद भाई – क्या कहा, हुज़ूर ?

दयाल साहब – कहने लगा, देख दयाल तूझे कम मिले हैं यार। तेरे साथ ज्यासती हुई रे, डोफा। यार शिकायत लगा, हेड ऑफिस में। मेरी तरह तेरे भी पैसे बढ़ जायेंगे, यार। तब मैंने कह दिया के, मैं शिकायत नहीं करूंगा, मगर वह चुप रहने वाला प्राणी नहीं..

रतनजी – मगर उनके दिल में, शान्ति कैसे हो सकती है ? वे चाहते होंगे, के आपका भी भला हो। मगर, आप शिकायत..

दयाल साहब – अरे रतन सिंह तुम तो चुप ही रहा करो, तुम लोग सुनो..खाना खाने बैठो तो भी वही बात, पानी पीने जाऊं तब भी वही बात ? अरे रशीद सांई, आख़िर मैं करता क्या ?

रशीद भाई – [उत्सुकता से] जनाब, फिर ?

दयाल साहब - मेरे दिल की शान्ति छीन ली, उसने। पेट में दर्द होना चाहिए, मेरे..मगर दर्द हो रहा है, उसके पेट में ? इसके क्यों नहीं बढ़े, मेरी तरह इसके भी रुपये बढ़ने चाहिए..

रतनजी – फिर, आगे क्या हुआ ?

दयाल साहब – सुन-सुनकर मेरे कान पक गए यार, उसे कैसे समझाऊँ...? यदि मैं शिकायत कर

चुका होता, तब कब के तेरे बढ़े रुपये भी जाते रहते।
रतनजी – फिर, क्या हुआ जनाब ?
दयाल साहब – फिर क्या..? [रतनजी को देखते हुए] रतन सिंह। मैं यह कहना चाहता हूं, के **‘ऐसे भी सेवाभावी होते हैं, जो दूसरों के दुःख में दुखी रहते हैं। और अपना नुक्सान भी, करवा बैठते हैं।’**
राजू साहब – दयाल साहब। कई लोग कैसे हो सकते हैं, जिनका किसी मामले में कोई लेना-देना नहीं। मगर वे दूसरों के पचड़े में, फंसा देते हैं अपना पाँव। देख लीजिये, आप। माणक मल को मिला, कंटीजेंसी भत्ता। मगर रिखब चंद का, इससे कोई सारोकार नहीं।
रशीद भाई – क्यों नहीं, जनाब ? उनको भी स्टाफ के हक़ में, बोलने का अधिकार है।
राजू साहब – चुप रह, रशीद। पहले मेरी बात ख़त्म होने दे, फिर कर लेना बक-बक। ले सुन, उसको कंटीजेंसी देय नहीं है। मगर उसके दिल में आया विचार, के ‘इस माणक मल को कंटीजेंसी मिली ही क्यों ?’ अब वह उसके बराबरी वाले कर्मचारियों को, भड़काने लगा।
रतनजी – साहब, यह बात सच्च है क्या ?
राजू साहब - सच्च ही कहूँगा, मैं झूठ क्यों बोलूँगा ? वह कहने लगा यार, ‘माणक मल को कंटीजेंसी मिल गयी, मगर आप लोगों को क्यों नहीं मिली ? आप लोग हेड ऑफ़िस में शिकायत कीजिये, तब आपको भी मिल जायेगी कंटीजेंसी।
रतनजी – फिर उन सब कर्मचारियों को मिल गयी होगी, कंटीजेंसी..?
राजू साहब – कहाँ से मिले, कंटीजेंसी ? इतना कहाँ है बज़ट, इस महकमें में..जो सबको मिल जाये, कंटीजेंसी..? मगर हेड ऑफिस से लेटर ज़रूर आ गया, जिसमें लिखा था...
रतनजी – क्या लिखा था, हुज़ूर ?
राजू साहब - “त्रुटी-वश माणक मल को कंटीजेंसी जारी हो गयी, उक्त आदेश रद्द किये जाते हैं एवं सम्बंधित आहरण अधिकारी को निर्देशित किया जाता है, वे शीघ्र उस कर्मचारी के वेतन से उक्त उठायी गयी राशि वसूल करके अधोहस्ताक्षर कर्ता को अविलम्ब सूचित करें।”
रशीद भाई – फिर, क्या ? रिकवरी हो गयी, और रिखबसा का पेट-दर्द दूर हो गया..?
[बातों की खुमारी ऐसी चली, के ‘बासनी, सालावास वगैरा सभी स्टेशन निकल गए, और किसी को पत्ता नहीं लगा..कितने स्टेशन निकल गए हैं ?’ मोहनजी अभी भी, ज़ोरों के खर्राटे लेते जा रहे हैं। उसकी गूंज गाड़ी की खरड़-खरड़ आवाज़ के साथ बराबर ताल-मेल बनाती जा रही है। तभी स्टेशन हणवंत आ जाता है, और गाड़ी रुकती है। रुकने से, ज़ोरों का लगता है धक्का। धक्का लगने से मोहनजी संभल नहीं पाते, और उनके पाँव की लात लग जाती है पानी बाई कमर पर..जो बेचारी चुप-चाप बैठी, नशवार सूंघती जा रही है। लात लगते ही बेचारी बुढ़िया की नशवार की डिबिया गिर पड़ती है और सूंघी जा रही तम्बाकू चढ़ जाती है उसके दिमाग की नसों में। फिर क्या ? तड़ा-तड़ छींकों की झड़ी लगा देती है, पानी बाई। इधर अभी कमर पर पड़ी लात का दर्द दूर नहीं हुआ, और ऊपर से लग गयी छींकों की झड़ी..नशवार की डिबिया खुलकर, फर्श पर

गिरने का नुक्सान हुआ जो अलग ? अब बर्दाश्त करने की ताकत, उस बुढ़िया में रही नहीं। फिर, क्या ? वह क्रोधित होकर, निकालती है अपने पाँव की पगरखी। फिर, क्या ? चार-पांच करारी मार, मोहनजी की तोंद पर आकर पड़ती है। चार-पांच करारी मार खाने के बाद, मोहनजी की नींद खुलती है। नींद खुलने से उनका सुनहरा सपना टूट जाता है, जिस सपने में उनके पास ख़ूबसूरत जुलिट आयी थी। और नींद खुलने से वह गायब हो जाती है, जुलिट को अब अपने सामने नहीं पाकर, बरबस उनके मुख से दर्द-भरा जुमला निकल उठता है।]

मोहनजी – [आंखें मसलते हैं, फिर उनींदा होकर बोलते हैं] – गले का हार नहीं बनी ए चिताबांगी, वापस आ जा कढ़ी खायोड़ी और बन जा मेरे गले का हार।

पानी बाई – [जैसे अंगारे उगल रही हो, वैसे बोलती है] – तेरे गले में जूते का हार पहना दूं, रुलियार कहीं का। मेरी उम्र दिखती नहीं तूझे ? अस्सी साल की बुढ़िया को मारता है, कमर पर लात। खोजबलिया अब मुझे बनाएगा, गले का हार ? ले खा अब, मेरी जूती की प्रसादी।

[इतना कहने के बाद, उस बुढ़िया ने उनकी तोंद पर..एक बार और मारती है करारी मार, अपनी पगरखी से। तोंद पर प्रसादी देने के बाद, वह खड़ी होकर मोहनजी के खोपड़े के ऊपर प्रसादी देनी चाहती है ..मगर चतुर मोहनजी दौड़ लगा देते हैं, यूरीनल की तरफ़। इधर उसी वक़्त गाड़ी रवाना हो जाती है, अचानक गाड़ी के चलने से धक्का लगता है। उस धक्के के करण, पछीत पर रखा मतीरा धड़ाम से आकर गिरता है..उस बुढ़िया पानी बाई के सर पर। इतना बड़ा वज़नी मतीरा बुढ़िया के सर आकर गिरना, ऐसा लगता है उसे, मानो आसमान उसके सर के ऊपर आकर गिर गया हो ? सर झन्ना उठता है, उस बुढ़िया का। इस घटना को देखकर, उसे पूरा भरोसा हो जाता है के **इस केबीन में आकर भूतों ने बसेरा कर लिया है..यह मोहनजी जहां कहीं मोजूद रहते हैं, वहां ये भूत आकर शैतानी हरक़ते करने लगते हैं।** सुबह मोहनजी मौज़ूद थे कमालुद्दीन के परिवार के निकट, तब चच्चा कमालुद्दीन के शरीर में घुस गया भूत और उनसे करवाने लगा शैतानी हरक़तें। तब वे अपनी एक टांग पर खड़े हो गए, फिर भूतों की तरह गुर्राते हुए उस सुपारीलाल को डराने लगे। और अब यह मोहनजी यहाँ मौज़ूद, और इस भूत ने मतीरा मेरे सर के ऊपर पटककर मेरे सर को फुटबाल माफ़िक बना डाला। अब ये सारी बातें याद आते ही, पानी बाई ज़ोर से डरकर चीखने लगी और गांठड़ी लेकर बन्नाट करती हुई दौड़ती है। ऐसा लगता है, जैसे किसी बंदरी को काट गया हो काला बिच्छु। फिर वह बुढ़िया दौड़ती हुई, डब्बे के दरवाज़े के पास आकर खड़ी हो जाती है। फिर लम्बी-लम्बी साँसे लेने लगती है, सामान्य होने के बाद वह अपना सर पकड़कर काम्पती आवाज़ में कहती है..]

पानी बाई – [सर पकड़े हुए कहती है] – अब बचा रे, मेरे रामा पीर। जहां हो भूत-वूत, यह बुढ़िया वहां बैठेगी नहीं मेरे बाबजी। ओ मेरे खेतलाजी, झट लूणी स्टेशन आ जाये। लूणी स्टेशन के आते ही...

[वहीँ फर्श पर बैठी है खां साहबणी भिखारण, पानी बाई की पुकार सुनकर घबरा जाती है, क्योंकि

वह भी पीर बाबा दुल्लेशाह का चत्मकार देख चुकी थी..घबराती हुई उस बुढ़िया से कहती है..]
खां साहबपाणी – [घबराती हुई कहती है] – आसेब आ गया मांजी, अब आप झट पढ़ लो वजीफ़ा।
पानी बाई – वजीफ़ा पढ़ूंगी, जाप करूंगी...मैं तो बाबजी चली आऊँगी, आपके थान पर। बाबजीसा आपके थान पर आकर, मैं ज़रूर करूंगी सवामणी मेरे बाबजी।
[डरी हुई बुढ़िया चली जाती है, किसी दूसरे केबीन में। अब मोहनजी यूरीनल का दरवाज़ा थोड़ा सा खोलकर, देख लेते हैं बाहर..के 'यह शैतान की खाला बुढ़िया खड़ी है, या वह चली गयी ?' अब उस बुढ़िया के चले जाने के बाद, मोहनजी को किसका डर ? अब वे यूरीनल का दरवाज़ा पूरा खोलकर आ जाते हैं, बाहर। मगर सामने देखते ही, उनकी आंखें खुली की खुली रह जाती है। सामने वाले यूरीनल से सौभाग मलसा बाहर आते हैं, उनको देखते ही मोहनजी का बदन भय से कांपने लगता है। सौभाग मलसा के कच्छे का नाड़ा बाहर दिखायी दे रहा है, अब वे उस दिखायी दे रहे नाड़े को अन्दर डालते हुए सामने खड़े मोहनजी की तरफ़ वे ज़हरीली नज़र से देखते है। उनसे नज़रें मिलते ही, मोहनजी ज़ोर से डरते है, बेचारे को फ़िक्र होने लगती
है **'पहले खायी बुढ़िया पानी बाई के हाथ की करारी मार, अब सामने आ जाता है ज़िंदा भूत.... सौभाग मलसा के रूप में।** अब आगे आने वाला मंज़र, क्या होगा ? इसकी कल्पना करते हुए, मोहनजी हाथ जोड़कर सौभाग मलसा से कहते हैं..]
मोहनजी – [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – जय रामजी सा, सालाजी सा। कैसे हैं, आप ?
सौभाग मलसा – [ज़हरीली नज़र डालते हुए आगे कहते हैं] – पावणा, जय रामजी की। मुझे मालुम है पावणा, तेरी तबीयत कुछ ख़राब हो गयी है। अब ठोकिरे, मुझे अब तेरी तबीयत ठीक करनी पड़ेगी। तब तेरे दिमाग के ढीले स्क्रू, अपने-आप कस जायेंगे।
[मोहनजी को यह सामने खड़ा इंसान, सौभाग मलसा न होकर रावण जैसी मूंछ्याँ वाला राक्षस ही दिखायी देने लगा। अब मोहनजी ने अब अपने डर को काबू में करके, अपने शैतानी दिमाग़ की चाबी भर डाली। फिर वे ज़बान पर मिश्री घोलते हुए, यों कहने लगे।]
मोहनजी – [नम्रता से] – आप हमारे हो, ससुराल वाले। फिर क्यों आंखें फाड़कर देख रहे हैं, आप मुझे ? कह दूंगा, आपकी बहन को, आपने मेरे साथ..
सौभाग मलसा – [बात काटते हुए, कहते हैं] – बहन के कारण ही अब तक आपको छोड़ा है, पावणा। अगर कोई दूसरा होता, तो अब तक उसको गंगा नदी में डाल आता।

मोहनजी – या, फिर..?
सौभाग मलसा - शिकार हो जाता, मेरे तमंचे का। अब भी लाकर दे दे मुझे, वह नीला बैग। गाड़ी से उतरते वक़्त तूने, जिस नीले बैग को बेचारी जुलिट नर्स को दे डाला..वो बैग मेरा था, लाकर दे दे मुझे नहीं तो...!
मोहनजी – नहीं लाया तब, क्या करेंगे आप ?
सौभाग मलसा – नहीं तो पावणा तेरे खोपड़े पर इतने खालड़े मारूंगा, के तेरी आने वाली सात पुश्ते मोडी पैदा होगी।
मोहनजी – [होंठों में, कहते हैं] – **आज़ तो रामा पीर, शकुन अच्छे नहीं हुए। अब क्या करूं रे, कढ़ी खायोड़ा ? पहले मिल गया माथा-**
खाऊ भगवान, फिर मिल गया गोमिया, और उसके बाद मिल गयी पानी बाई नाम की बुढ़िया..अरे रामा पीर, अब मिल गया यह डाकूओ का सरदार सौभाग
मलसा। यह सारा दोष इस अपशकुनी काळी सफारी का है। अब तो इस गोमिया और इसके सरदार सौभाग मलसा को आपस में भिड़ा दें, तो रामा पीर बहुत अच्छा रहेगा।
[मोहनजी के दिल-ए-तमन्ना रहती है, वे अपने दफ़्तर न जाकर सरकारी टूर निकालते रहे। पहले भी इन्होने ली हुई छुट्टियां रद्द करवाकर, अनाज की बोरियां जांच करने का टूर अपने हाथ में लिया था। बार-बार धान की बोरियों से भरी मालगाड़ी पाली आती रहे, और मोहनजी पाली रूककर अपना सरकारी टूर बनाते रहें। बस इसी शौक के करण वे किसी भी स्टेशन पर खड़ी माल गाड़ियों को देखकर, वे जांच करके आ जाते के उसमें धान की बोरियां है या नहीं ? बस इसी चक्कर में कभी-कभी, वे लूणी स्टेशन पर खड़ी भंगार की गाड़ियां भी चैक कर लिया करते हैं। इन भंगार की गाड़ियों की स्थिति को वे भली-भांति जानते हैं, के किस डब्बे में क्या है ? यही कारण है, इस वक़्त वे वाकिफ हैं के 'आपातकालीन सेवायें दे चुकी भंगार की गाड़ी कहाँ खड़ी है ? और उसके रसोड़े वाले हरे डब्बे में, एक बड़ा मधुमक्खियों का छत्ता मौज़ूद है। जो वहां डब्बे की छत्त पर, फानूस की तरह लटका हुआ है। बस अब मोहनजी के शैतानी दिमाग में, सौभाग मलसा को उस मधुमक्खियों के छत्ते के पास भेजने का प्लान जन्म लेने लगा। फिर वे नम्रता से सौभाग मलसा से कहने लगे..]
मोहनजी – देखो, सौभाग मलसा। भले आप मुझ पर भरोसा करते नहीं हैं, मगर आप मेरे सालाजी हैं..बस इसी कारण, मैं आपका नुक्सान होता देख नहीं सकता। आपको मालुम है...
सौभाग मलसा – क्या कहने चाहते हो, पावणा ? कही पावणा, तू मुझसे बचने का बहाना तो नहीं बना रहा है ?
मोहनजी – आपसे बचकर जाऊँगा, कहाँ ? आख़िर आप ही तो हैं, मेरे सालाजी...इलिए कहता हूं, के 'आज़कल यह गोमिया माल कहाँ छुपाकर आता है ?' आपको अपने नौकरों के बारे में, कुछ भी मालुम नहीं..!

सौभाग मलसा – देख पावणा, यहाँ मेरे सामने तेरी चालाकियां नहीं चलेगी। तू मुझसे बचकर कहीं भाग नहीं सकता, ले बोल तू क्या कहना चाहता है ? [वापस संभलकर, कहते हैं] तूझे क्या मालुम, कौनसा माल ?
मोहनजी – [थोड़ी दूर खड़ी भंगार की गाड़ी की तरफ़, उंगली का इशारा करते हुए] – देखिये, सौभाग मलसा। कल की बात है..यह गोमिया न मालुम क्यों, उस भंगार की गाड़ी के रसोड़े वाले हरे डब्बे में माल छुपा रहा था ?
सौभाग मलसा – क्या तू सच बोल रहा है, पावणा ?
मोहनजी – सच कह रहा हूं, जनाब। माल कैसा था, अच्छा या खराब ? उसके बारे में आप जानते होंगे, मैं कैसे जान सकता ?
[उसके बाद सौभाग मलसा की हाथ पकड़कर कहने लगे, मोहनजी।]
मोहनजी – [हाथ पकड़कर, कहते हैं] - अजी सालाजी साहब, मैं किसी से नहीं कहूँगा..बस आप यह बता दीजिये, के इस गोमिया के पास ऐसी कौनसी ज़ोखिम की चीज़ रहती है ? बोल दीजिये, आपको मेरी कसम।
सौभाग मलसा – तू अपने काम से मतलब रखा कर, एक बात सुन ले..पावणा, मेरे धंधे और मेरे आदमियों का मामले में तूझे बोलने की कोई ज़रूरत नहीं। मैं ख़ुद संभाल लूंगा...
मोहनजी - आपको पत्ता नहीं, कल मैं लाया था आपका नीला बैग। मगर, आपको देता कैसे..? आप कहीं दिखायी नहीं दिए, जनाब।
सौभाग मलसा – [उतावली से] – बैग की बात को जाने दीजिये, फिर कभी देख लेंगे। अभी इस वक़्त मुझे जाने दीजिये, पावणा।
[इतना कहकर सौभाग मलसा, झट डब्बे से नीचे उतरकर ऐसे उस भंगार की गाड़ी की तरफ़ भागते हैं..मानो उनको ऐसी चीज़ हासिल करनी है, जिसमें उनकी जान फंसी हो ? इस उतावली के कारण उनको यह मालुम नहीं रहा, वे किस-किस को घुद्दा मारते हुए आगे बढ़ते जा रहे हैं ? डब्बे से उतरने के बाद वे पहला टिल्ला मारते हैं, पुड़िया तल रहे वेंडर शर्माजी को। उस वक़्त जनाब शर्माजी "लगा ज़ोर का झटका" पंजाबी गीत गा रहे थे..! घुद्दा लगते ही, शर्माजी के हाथ से छूट जाता है पुड़िया तलने का झरा। झरे में रखकर तली जा रही चार-पांच पुड़िया, नीचे ज़मीन पर आकर गिरती है। इधर इन पुड़ियों का ज़मीन पर गिरना होता है, और उधर पुड़ियों की ताक में बैठा काबरिया कुत्ता उन पुड़ियों को अपने मुंह में दबाकर भाग जाता है। पुड़िया तलने का झरा, नीचे ज़मीन पर आकर क्या गिरा..? बेचारे शर्माजी की शामत आ जाती है, उबलते तेल के छींटे उछलकर आकर गिरते हैं उनके मुख पर। अब मुख से गीत के स्थान पर, शर्माजी के चिल्लाने की आवाज़ गूंजने लगती है। अब वे मुंह जलने का दर्द, बर्दाश्त कर नहीं पा रहे हैं। जलने का दर्द और पुड़िया नीचे गिर जाने का नुक्सान, शर्माजी के लिए नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाता है। बस, फिर क्या ? जनाब शर्माजी निकट खड़े लूणी स्टेशन के जी.आर.पी. प्रभारी सोहन

लालसा से शिकायत कर देते हैं।]
शर्माजी – [रोनी आवाज़ में कहते हैं] – ए मेरे रामसा पीर। मार डाला रे, पुड़ी खायके। [सोहन लालसा को आवाज़ देते हुए] ओ सोहन लालसा आपके राज में इतनी अंधेर कैसे ?
सोहन लालसा – किसने खायी रे शर्माजी तेरी पुड़ी, साला बासी सब्जी के साथ बेचता है पुड़िया ? फिर किसी ग्राहक ने नाराज़ होकर ठोक दिया होगा, अब क्यों चिल्लाता है ? पहले क्यों करता है, खोटे काम ?

शर्माजी – अरे मालिक, यह बात नहीं है। कल एक दिन ही बेची मैंने, बासी सब्जी..रोज़ नहीं बेचता हुज़ूर। हुज़ूर, सच्च कहता हूँ, मैं सब्जी ऐसी लज़ीज़ बनाता हूँ..शाम-तक पूरी ख़त्म हो जाती है। सब्जी बचती नहीं, फिर कैसे बेचूंगा बासी सब्जी ? अब सुनिये, जनाब। अब बात यह है जनाब, आज़कल आपका गंगाराम..
सोहन लालसा – [डंडा बजाते हुए] – बोल शर्माजी, किसे ज़रूरत आन पड़ी मेरे गंगाराम की ? कहीं तेरा सर, मांगता है मेरे गंगाराम का प्रसाद ?
शर्माजी – देखिये सोहन लालसा, मेरा नाम कहीं बाहर आना नहीं चाहिये। आपको ताज़ी सूचना दे रहा हूँ, आपके काम आयेगी। अभी-अभी यह सौभागिया तस्कर गया है..
[अब शर्माजी भंगार वाली गाड़ी की तरफ़, उंगली से इशारा करते हैं।]
शर्माजी – [इशारा करते हुए, कहते हैं] - उस भंगार की गाड़ी में। जनाब, वह ज़रूर उस रसोड़े वाले हरे डब्बे में घुसा होगा। या तो वह खोटा करम करने गया है, या फिर रेलवे के सामान की चोरी करने।
सोहन लालसा – अभी पकड़ता हूँ, उस शैतान के पिल्ले को। मेरे होते कोई आदमी कैसे चुरा सकता है, रेलवे का सामान ? किसकी मां ने खाया है अजमा, जो मेरे होते चोरी कर सके ?
[प्लेटफोर्म पर इधर-उधर खड़े कांस्टेबलों को आवाज़ देते हैं, फिर उनको अपने पास बुलाकर उनसे कहते हैं]

सोहन लालसा – [सिपाईयों को आवाज़ देते हुए, कहते हैं] - अरे ओ तनसुखा, अरे ओ मनसुखा..! इधर आओ रे...
[अपनी टीम को लेकर, सोहन लालसा जाते हैं उस भंगार की गाड़ी के निकट। उधर रसोड़े वाले डब्बे में, कुछ अँधेरा सा है, यहाँ कोई चीज़ बिल्कुल साफ़ दिखायी नहीं दे रही है। अब खड़े सौभाग मलसा को झीनी रौशनी में, छत से लटकती हुई कोई गांठ जैसी कोई चीज़ दिखाई देती है। जिसे वे लटकती हुई कपड़े की गांठ समझ लेते हैं। बस उनका अनुमान हो जाता है, के इस गांठ में यह गोमिया माल छुपाकर रखता ओगा ? फिर, क्या ? भगवान जाने वह कब तस्करी का माल [गांजा] लोगों को बेचकर, वह पैसे कमा लेता होगा ? फटाक से सौभाग मलसा, गाँठ की

तरफ़ बढ़ते हैं। जैसे ही वे लपककर उस गाँठ को पकड़ते हैं, और उनके पूरे शरीर पर सूंई चुभने का असहनीय दर्द होने लगता है। असल बात यह है, वह कपड़े की गाँठ नहीं होकर..वह मधुमक्खियों का छत्ता, निकल जाता है। बस अब उनके छते के हाथ लगते ही, सारी मधुक्खियाँ उनके बदन पर चिपककर काटती है। मधुमाक्खियों के डंक लगने से, पूरे बदन पर सोजन फ़ैल जाती है। अब एलर्जी के कारण, पूरे बदन में असहनीय दर्द उठता है। दर्द नाकाबिले-बर्दाश्त होने पर, वे चिल्लाते हुए डब्बे से बाहर आ जाते हैं..दौड़कर। मगर बाहर आते ही, वे सोहन लालसा, मनसुखा और तनसुखा के हत्थे चढ़ जाते हैं। बस, फिर क्या ? उनके बदन पर, गंगाराम की बरसात होने लगती है। अब बेचारे सौभाग मलसा का त्राहि-त्राहि मचाना वाज़िब है, आख़िर बेचारे सौभाग मलसा करते क्या ? गंगाराम की पिटाई का दर्द, और उधर मधुमक्खियों के डंक का जहर अलग से असर करने लगा। छूटने के चक्कर में, उनकी कातर पुकार दूर-दूर तक गूंज़ने लगी। मगर, इन पुलिस वालों को कहाँ रहम ? वे सभी सौभाग मलसा को पीटते हुए प्लेटफोर्म पर लाते हैं।]
सोहन लालसा – [सौभाग मलसा की पिछली दुकान पर डंडे से पिटाई करते हुए] – साला आया कमीना, रेलवे का सामान चुराने वाला ? तेरी इतनी हिम्मत ? जहां सोहन लालसा है मौज़ूद, वहां तू करता है चोरी ?
सौभाग मलसा – [चीखते-चिल्लाते हुए] – अरे जनाब, मुझे मत ठोको। अपने गंगाराम को दूर ही रखें। क्या कहूं जनाब, जहां आप पिटाई करते जा रहे हैं, उसको तो मधुमक्खियों ने पहले से सूजा दी...मेरे बाप। इन मधुमक्खियों ने स्थान भी नहीं देखा, कहाँ नहीं काटना है।
[मोहनजी अब अपनी सीट पर आकर बैठ गये हैं, खिड़की से बाहर झांकते हुए वे देख रहे हैं..किस तरह सौभाग मलसा इन पुलिस वालों की मार खा रहे हैं ? उनको मार खाते देखकर, उनके लबों पर मुकान फ़ैल जाती है। अब वे मार खा रहे सौभाग मलसा को, टुकुर-टुकुर देखते जा रहे हैं। तभी गाड़ी प्लेटफोर्म छोड़ देती है, गाड़ी धीरे-धीरे आगे खिसकती जा रही है। खिड़की से बाहर मुंह निकाले मोहनजी, बरबस व्यंग-भरा जुमला बोल देते है।]
मोहनजी – [सौभाग मलसा को देखते हुए, ज़ोर से कहते हैं] – **एक बार और, फोड़ी खायेगा ?** करूं, क्या सेवा ?
[मंच के ऊपर, अन्धेरा जा जाता है।]

खंड ७, दिल-ए-ख़्वाहिश लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

[मंच रौशन होता है, अहमदाबाद-मेहसाना जाने वाली लोकल गाड़ी पटरियों के ऊपर तेज़ी से दौड़ती हुई दिखाई देती है। अब अलामों के चच्चा मोहनजी शैतानी कारनामा दिखाकर, वापस अपने केबीन में आ चुके हैं। अभी भी इनके साथी, गपे हांकते जा रहे हैं। मोहनजी उनके नज़दीक आकर कहते हैं, के..]

मोहनजी - अब मैं कहां बैठूं....जनाब ?

दयाल साहब – तेरे जहां बैठने की ख़्वाहिश हो, वहीँ जाकर बैठ जा...मोहन लाल। अगर तूझे कहीं बैठने की जगह न मिले तो जाकर बैठ जा, पाख़ाना के कंपाउंड पर। वहां बैठा रहेगा तो तूझे न तो कोई उठाएगा, और न करेगा डिस्टर्ब। समझ गया ? अब जा, मेरा सर मत खा।

[सभी जानते हैं कि, मोहनजी की एक ही ख़राब आदत है..मर्जी आये वहां पीक थूक देना। इस कारण मज़ाक के लहजे में दयाल साहब ने कह दिया, उनको "अगर तूझे कहीं बैठने की जगह न मिले तो जाकर बैठ जा, पाख़ाना के कंपाउंड पर।" फिर क्या ? उनके बोले गए कथन पर, सभी ज़ोर से ठहाका लगाकर हंस पड़ते हैं। मगर, मोहनजी पर काहे का असर ? वे तो उनके इस व्यवहार को 'आया-गया' समझकर झट जाकर बैठ जाते हैं दयाल साहब के पहलू में। बैठने के बाद, वे दीनजी भा'सा से कहते हैं।]

मोहनजी – मैंने खो दिया, जनाब।

दीनजी – क्या खो दिया, आपका बैग या जर्दे की पुड़िया ?

रतनजी – भा'सा। बैग तो इनके पास रखा है, और जर्दे की पुड़िया रखी है इनके जेब में। अगर इनका दिल खो गया है, तो रामा पीर जाने।

मोहनजी – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – इस दिल को कैसे खो दूं ? इस दिल से जुड़ी मेरी कई ख़्वाहिशें है..हुज़ूर, इसे मैं खो नहीं सकता। बस, मेरी तो एक ही ख़्वाहिश है कि, मैं आपकी स्कूल आकर बच्चों को संबोधित करता हुआ उपभोक्ता सरंक्षण पर एक चकाचक भाषण दूं।

दीनजी – मुझे तो लगता है, ज़रूर आपने निमंत्रण-पत्र खो दिया है...चलिए, निमंत्रण-पत्र खो दिया है तो कुछ नहीं..मगर, आप हमारे आदरणीय मेहमान सलामत तो हैं ? बस, आप हमारी स्कूल में तशरीफ़ रखें, और भाषण देकर अपनी ख़्वाहिश पूरी कीजियेगा।

मोहनजी – भा’सा। यह काम इतना आसान नहीं, इसके लिए एक दिन मुझे पुस्तकालय जाना पड़ेगा। वहां जाकर इस मुद्दे को समझने के लिए, कई पुस्तकें पढ़नी होगी..इसके बाद, मैं भाषण देने की दिल-ए-ख़्वाहिश पूरी कर पाऊंगा।

दीनजी – अरे मोहनजी। इतने पढ़े-लिखे दानिशमंद इंसान होकर आप ऐसी पागलों जैसी बात कर रहे हैं ? आप सीधा जाइएगा, कलेक्टर साहब के दफ़्तर। वहां ऊपर वाली मंजिल पर है, उपभोक्ता सरंक्षण न्यायालय! वहां आपको चक्रांकित की हुई सामग्री मिल जायेगी, उसे लाकर आप बैठक में पढ़ लेना..इसके सिवाय, आपको करना क्या है ?

के.एल.काकू – भा’सा इतनी इनके अन्दर अक्ल होती तो, शायद ये...--

दयाल साहब – [इनकी बात काटते हुए] - फ्लाइंग में मेरी नहीं, इनकी ड्यूटी लगती...।

मोहनजी - अरे जनाब, मेरी ड्यूटी नहीं लगी..इसमें ऊपर वाले अधिकारियों से, कहीं चूक हो गयी होगी ? अरे जनाब, मैं तो तैयार ही बैठा था। क्या कहूं, आपको ? रोकड़ा पूरे दस रुपये ख़र्च करके फ्लाइंग अफसरों वाली रबड़ मोहर बनवाकर तैयार रखी थी।

रतनजी – अरे साहब, पैसे क्यों ख़र्च किये ? जनाब, यह काम ठहरा ऑफिस का..बस, आप दफ़्तर के एलकारों से हीं, मांग लेते तो कितना अच्छा था।

मोहनजी – अरे कढ़ी खायोड़ा, रतनजी। बात तो ठोकिरा काम की कही है आपने। इस बार तो मैंने मोहर बनवा ली, अगली बार..

रशीद भाई – इस बार क्यों नहीं गए, आप ? क्या आपके अफ़सर आपसे..

मोहनजी – अरे रशीद भाई, कढ़ी खायोड़ा..ऊपर वाले बेचारे अफ़सर भी इंसान हैं..भूल गए होंगे। अब भी क्या बिगड़ा है..? मुझे निरीक्षण बाबत टूर पर जाना है, यह दिल-ए-ख़्वाहिश..अगले साल ज़रूर पूरी कर लूंगा..उस वक़्त याद रखकर, उनसे मांग भी लूंगा मोहर।

दयाल साहब – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए] – अच्छी तरह सोच ले, मोहन लाल। अब तेरा बुलावा, नहीं आयेगा। नहीं होगी पूरी, तेरी दिल-ए-ख़्वाहिश।

मोहनजी - क्यों जनाब, क्या मैं इंसान नहीं हूं? मैं भी एफ़.सी.आई का अधिकारी हूं.. आख़िर।

रतनजी – देखिये जनाब, मैं कहता हूं आप दयाल साहब की बात मान जाइये। इसके पीछे, कोई ठोस वज़ह है! याद कीजिये पिछली बार आपको बुलाया था निरीक्षण बाबत, मगर... ..

मोहनजी - मुझे याद है, रतनजी। आप आगे कहिये, जनाब।

रतनजी – आप काम करना, क्यों चाहेंगे? अरे जनाब, आपको मालुम है के काम करने से घुटने घिस जाते हैं..पसीने का एक-एक कतरा, बदन से बाहर निकलता है। फिर, क्या? आपने लिखकर भेज दिया 'मुझसे उच्च वरिष्ठ अधिकारी को, आप निरीक्षण का कार्य सौंप दीजिये!

रशीद भाई – फिर, क्या ? आपके ऊपर वाले अधिकारी आपसे ज़्यादा चतुर निकले। आपसे उच्च वरिष्ठ नहीं..तो क्या...? आपके समकक्ष अधिकारी यानी अपने दयाल साहब से यह निरीक्षण कार्य पूरा करवा लिया!

रतनजी –
आप रोज यही बात कहते हैं, के 'मैं दयाल साहब से ज़्यादा समझदार हूं।' अब आप ज़्यादा समझदार होते , तो आपको बुलाते..इनको क्यों बुलाया फिर ?

दयाल साहब –
बकवास बंद कर, रतन सिंह। जो हो गया, सो हो गया! मुझे कहीं जाकर अपनी क़ाबिलियत का प्रमाण-पत्र नहीं दिखलाना है? किसके पास पडी है अपने काम से फुर्सत ? जो जाकर, दूसरों के काम निपटाये।

रतनजी –
जी हां, जनाब आपके पास बहुत काम है! यही कारण है, आप अपना काम छोडकर टूर पर जाया नहीं कर ते.!..

दयाल साहब – सच्च कहता है, तू! मैं तो आया टूर, दे दिया करता हूं दूसरों को। मुझे कोई शौक नहीं है, भय्या! वह तो..ख़ुद डी.एम. साहब ने दबाव डाला था। इसलिए, चला गया था टूर पर! नहीं तो जनाब, वहां जाने वाला कौन?

रतनजी – मगर यहां तो मोहनजी ली हुई छुट्टियों को कैंसल करवाकर, टूर पर ज़रूर जाते हैं। इस तरह, इनकी टूर पर जाने की दिल-ए-ख़्वाहिश हमेशा बनी रहती है।

दयाल साहब – यह मामला इनका है, रतन सिंह। तूझे याद होगा, गत माह डी.एम..साहब का फ़ोन आया..उन्होंने कहा के 'खारची डिपो का रेकर्ड जल्द चैक होना चाहिए। खारची जाने की मेरी तो इच्छा नहीं थी, अब मैं क्या करूँ ?

रतनजी – फिर क्या, जनाब आप चले गए टूर पर ?

दयाल साहब – पहले सुन, तभी मुझे याद आया के 'मोना राम छुट्टी लेकर खारची गया है।' बस, फिर क्या? मैंने झट उसको फ़ोन किया और कह दिया "भय्या, अब छुट्टी मत ले! बस समझ ले, तेरी छुट्टी कैंसल! और अब तू जा खारची डिपो में, जाकर रेकर्ड चैक करके अपना टूर बना लेना।"

[अब आस करणजी तशरीफ़ लाते हैं, केबीन में! अब इनके कपड़े पूरे सूख चुके हैं, अब वे आकर दयाल साहब के सामने वाली सीट पर बैठ जाते हैं। इस वक़्त मोहनजी, दयाल साहब से कह रहे हैं]

मोहनजी – जब आपके पास इतने ज़्यादा टूर आते हैं, तब ये टूर मुझे भी दे दिया करें...मुझे लोगों का काम करना अच्छा लगता है। बस, मेरी दिल-ए-ख़्वाहिश यही रहती है कि, मैं लोगों के काम आता रहूँ और [धीरे-धीरे बोलते हैं] टीए.डीए. का फ़ायदा भी लेता रहूँ।

आस करणजी – [सीट पर लेटते हुए, कहते हैं] – भाई मोहनजी, मैं अभी बहुत थक गया हूँ। आज़ तो जनाब, कमर की बज गयी बारह।

रतनजी – आस करणजी भा'सा, थोडा आराम कर लीजियेगा, अभी चंगे हो जायेंगे आप।

आस करणजी – आराम तो करना ही है, रतनजी। बात यह है, अभी मैंने इन कानों से सुना है कि, मोहनजी को दूसरों का काम करना अच्छा लगता है, उनकी दिल-ए-ख़्वाहिश यही बनी रहती है के वे लोगों का काम करके उनकी भलाई करते रहें। वास्तव में इनकी दिल-ए-ख़्वाहिश तारीफ़े-क़ाबिल है।

रशीद भाई – सच्च कहते हैं, जनाब। मोहनजी बड़े परोपकारी सेवाभावी इंसान हैं। इनकी और क्या तारीफ़ करूँ, जनाब..? एक बार इन्होने प्यास से व्याकुल फौज़ियों को, पानी लाकर पिलाया।

[अब ऐसी बातें, मोहनजी को कैसे अच्छी लगती ? उनके दिल में तो भय समाया था कि, कहीं रशीद भाई उनकी पोल खोलते हुए यह न कह दे के इन्होने फौज़ियों को गरम और खारा पानी

लाकर पिला दिया। इस तरह तो लोगों के सामने मोहनजी की जो अच्छी छवि बन रही है, वह धूमिल हो जायेगी। फिर क्या ? झट मोहनजी ने किया खंखारा, ताकि उनका ध्यान भंग हो जाय और इस मुद्दे से दूर हटकर वे किसी अन्य मुद्दे पर वार्ता शुरू कर दे। उधर आस करणजी भी इस मुद्दे से दूर रहना चाहते थे, उन्हें भय था कहीं इनकी पतलून गीली क्यों हुई..इसका रशीद भाई रहस्योदघाटन न कर दे। बस, फिर क्या ? वे भी मुद्दा बदलने का मानस बना डालते हैं। बात बदलने के लक्ष्य से, आस करणजी बोल उठते हैं।]

आस करणजी – [मोहनजी की पहनी हुई काली सफारी की तरफ़ उंगली से इशारा करते हुए, कहते हैं] – वाह, मोहनजी वाह। आज़ तो मालिक ने, शानदार काली सफारी सूट पहना है। ऐसे लगते हैं, के मानो ये होलीवुड फिल्मों में रेलवे के....

मोहनजी - [चमककर कहते हैं] – क्यों याद दिला रहे हो, जनाब ? यह सफारी-सूट तो मनहूस है, इसको पहनने के बाद मैंने तक़लीफ़ें ही झेली है। अब, आपसे क्या कहूं ? अभी यह मेरा हितेषी रशीद यह बोलेगा, के...

रशीद भाई – क्यों बदनाम करते हैं, जनाब ? मैं बेचारा, क्या कहूंगा..? मैं ठहरा भोला जीव, बैठा हूँ चुपचाप...

मोहनजी – [तल्ख़ आवाज़ में] – मगर मुझे मालूम है, आप ज़रुर कहोगे के 'यह सफारी-सूट मनहूस है, इसको पहनने के कारण इन्होने पानी बाई नाम की बुढ़िया के हाथ फोड़ी खाई..अरे भा'सा, एक बात कह दूं, आपको के इस मनहूस सफारी-सूट की तारीफ़ करके आप मुझे बीती घटानाएं याद न दिलाएं..तो अच्छा।

रतनजी – साहब, फिर आप इस सफारी-सूट का करेंगे क्या ?

मोहनजी – वक़्त मिला तो, मैं इसे किसी फ़क़ीर को दान में दे दूंगा।

आस करणजी – क्यों पागलों जैसी बातें करते हैं, आप ? जानते नहीं, इस पर आपने पैसे ख़र्च किये हैं..यह मुफ़्त का माल नहीं है..जो किसी फ़क़ीर को दान में दे दिया जाय ? अरे यार, मोहनजी। आप तो इस सफारी-सूट में जचते हैं यार, अगर मैं आपको हाथ में मेरा बैग दे दूं तो आप....

मोहनजी – [खुश होकर, कहते हैं] – क्या मैं, टी.टी. बाबू की तरह लगूंगा..? क्या, आप सच्च कह रहे हैं ?

आस करणजी – [चहकते हुए] – जी हाँ, आप टी.टी.ई. क्या..सचमुच आप तो चेकिंग पार्टी के मजिस्ट्रेट की तरह नज़र आयेंगे। अब आप ऐसा कीजिएगा, मोहनजी...के, अभी आप अपने साथियों को साथ ले जाकर मेरा काम निपटा दीजिएगा। क्या करूं, जनाब ? घुटनों में बहुत दर्द है, ऐसा लगता है...शायद यह चिकुनगुनिया का बुख़ार वापस आ गया है ? बस, आप इस डब्बे के अगले सारे डब्बे....

मोहनजी – [चहकते हुए] – अगले सभी डब्बों में जाकर, करें क्या ? भांगड़ा डांस करें या घूमर ?

आस करणजी – डांस करने की इतनी उतावली है, आपमें ? धैर्य रखिये, जनाब। चलिए बाद में कर लेना, जब गुलाबो आकर आपको ये डांस भी करवा देगा। अब आप मेरी बात सुनिए, इसे मज़ाक में टालना मत। क्या करना है, शान्ति से सुन लीजियेगा।

मोहनजी – कहिये, हुज़ूर। आपका हुक्म हमारे सर पर।

आस करणजी – अगले सभी डब्बों में बैठे यात्रियों के टिकट, आपको चेक करने है। और साथ में यात्रियों से निवेदन करके, उनसे उत्तरी रेलवे की टी.टी.ई. यूनियन के वार्षिक जलसे के आयोजन का भी चन्दा इकठ्ठा करके लाना है। बस मोहनजी, चंदा तगड़ा आ जाय तो मज़ा आ जाए।

दयाल साहब – [मोहनजी का ज़ोश बढ़ाते हुए] – मोहन लाल यार, तू तो बड़ा रुस्तम निकला। बस, तू तो प्यारे मोहन लाल ले ले आस करणजी का बैग..जचेगा यार, कोई डोफा भी होगा तो तूझे चेकिंग पार्टी का मजिस्ट्रेट समझ लेगा। फिर क्या ? तेरी दिल-ए-ख़्वाहिश दो मिनट में पूरी हो जाएगी।

[अब आस करणजी झट दींनजी भा'सा का बैग मांग लेते हैं।]

आस करणजी – [दीनजी भा'सा से कहते हैं] – दीनजी, आपका बैग बिल्कुल मेरे बैग जैसा ही है, इसे ख़ाली करके आप इसे मुझे दीजिये। मैं इसमें टिकट चेक करने बाबत छेद करने की मशीन और इसके साथ चंदे की रसीद-बुक, चालान-बुक और जलसे में बुलाने के निमंत्रण पत्रों का बण्डल डाल देता हूँ। फिर यह बैग, इन्हें थमा देता हूँ...ताकि, मोहनजी मेरा काम निपटाकर वापस आ जाय।

दीनजी – [बैग ख़ाली करते हुए, कहते हैं] – क्यों नहीं, क्यों नहीं भा'सा। इसमें है कितना सामन ? केवल नेपकिन और पढ़ने की नोवल..इन चीजों को कहीं भी रख दूंगा। ख़ाली बैग देते हुए] लीजिये, आस करणजी। अब आप जाने, और आपका काम।

[बैग लेकर आस करणजी उसमें उसमें सभी आवश्यक सामान डाल देते हैं। फिर, बैग थमा देते हैं मोहनजी को और उनसे कहते हैं]

आस करणजी – [बैग थमाते हुए, कहते हैं] – जनाब, अच्छी तरह से संभाल लेना बैग को। क्या करूँ, मोहनजी ? मेरे बैग में आवश्यक काग़ज़ात रखे हैं, न तो मैं यही बैग आपको थमा देता। आप बुरा न मानना।

[ओमजी की एक ख़ासियत, उनको पुलिस की वर्दी बहुत पसंद। फिर क्या ? जनाबे आली रोज़ ख़ाकी वर्दी पहनकर आ जाया करते हैं..गाड़ी में बैठने के लिए। मगर, आज़ तो इनकी यह वर्दी बड़ी काम आयी...इस तरह इस ड्रेस को पहने जनाब बन गए, रेलवे पुलिस के जवान। मगर फिर कमी रह गयी डंडे की, जो उन्होंने राह में बैठे एक बुढे ग्रामीण की लाठी छीनकर इस कमी को पूरी कर डाली। अब रहे, रतनजी। उन्होंने झट अपने कमीज़ को खसोलकर पतलून में डाल दिया, फिर दीनजी भा'सा से मांग लिया चौड़ा बेल्ट। फिर क्या ? पतलून की कमर पर बेल्ट लगाकर रतनजी बन गए अड़ीजंट एलकार। बेल्ट रतनजी को देने के बाद जनाब दीनजी भा'सा की हालत कैसी खस्ता हो जाती है, वह भगवान ही जाने ? बेचारे भा'सा की ढीली पतलून बार-बार नीचे गिरती जा रही है, इधर जब दीनजी भा'सा को युरीनल जाने के लिए उठना पडेगा तब बेचारे कैसे चल पायेंगे ? बेल्ट के अभाव में, वे अपनी पतलून को बार-बार नीचे गिरने से कैसे संभाल पायेंगे ? दोनों हाथों से पतलून संभाले, हाथी जैसी मतवाली चलते हुए वे जैसे ही वे यात्रियों के पास से गुज़रेंगे..तब इनकी चाल को देखने वाले यात्री-गण हंसते हुए कैसे-कैसे कॉमेंट्स कसेंगे ? इससे, रतनजी को क्या मतलब ? उनको तो बेल्ट मिल गया, काम बन गया फिर क्या ? "काम बना, और गुज़री नटी" इस मुहावरे को चरितार्थ करते आली जनाब रतनजी तो पार्टी के साथ चलने के लिए तैयार हो गए। आख़िर, इनको धुन लग गयी के 'किसी तरह यात्रियों के टिकट चैक करके आस करणजी का काम निपटाना है।' इस तरह मोहनजी की दिल-ए-ख़्वाहिश पूरी करने के लिए, यह चेकिंग पार्टी की टीम अब यात्रियों के टिकट चेक करने के लिए निकल पड़ी है। इन लोगों के जाने के बाद, दयाल साहब आराम की सांस लेते हैं। फिर, वे राजू साहब से कहते हैं...!

दयाल साहब – अब राजू साहब, इस तरह मोहन लाल की दिल-ए-ख़्वाहिश पूरी हो जायेगी।

राजू साहब – अरे यार, दयाल साहब...! ज़रा उन्हें काम करके आने दीजिये, गगवान जाने बटेर मार लाये..या फिर, आस करणजी के लिए कोई सरकारी तोहफ़ा।

के.एल.काकू – आस करणजी भा'सा, फ़िक्र न करना। आप तो जानते ही हैं, एम.एस.टी. वाले सेवाभावी होते हैं।

आस करणजी – यह तो मेरा दिल जनता है, काकू। कई तो होते हैं सेवाभावी, मगर कई उल्लू के पट्ठे ऐसे होते हैं..खडूसिये और खोड़ीले-खाम्पे, जो मेरे कंधे पर बैठकर सवारी करने वाले होते हैं। क्या कहूं, काकू ? इस दुनिया में, तरह-तरह के लोग भरे हैं।

के.एल.काकू – यह आपका दिल कह रहा है, कहीं आपको ऐसा खडूसिया आदमी मिल गया होगा इस गाड़ी में....?

आस करणजी – क्या करें, काकू ? यह पूरी ज़िन्दगी बीत गयी है, इन शयनान डब्बों में घुमते हुए। इन डब्बों में ही ऐसे एम.एस.टी. वालों से मुलाक़ात हो जाया करती है, कई तो ऐसे भले हैं..जो इतने मिलनसार होते हैं, जिन्हें मैं हमेशा याद रखता हूँ। मगर, कई ऐसे ऐसे होते हैं..जो रेलवे के सारे नियमों को ताक में रखकर इस गाड़ी के मुसाफ़िरों को तक़लीफ़ देते आयें हैं।

के.एल.काकू – आगे कहिये, जनाब...फिर क्या हुआ ?

आस करणजी – हम टी.टी. लोग भी कहाँ है, दूध से धुले हुए? एक या दो आदमी हम में भी ऐसे भाई मिल जायेंगे, जो डब्बे में ऐसा आंतक फैलाते है..जिसके आगे..

के.एल.काकू – [बात पूरी करते हुए] - जिनके आगे मलखान सिंह जैसे डाकू भी, पानी भरते हैं। आबू-रोड से आने वाले ऐसे ही टी.टी. होते हैं, उनको हम सब जानते हैं। बस, ऐसे टी.टी.यों के डब्बों के नज़दीक हम लोग फटका नहीं करते।

राजू साहब – ऐसे टी.टी. बैठते हैं, चेन्नई से आने वाली गाड़ी में। तब तो बस..क्या कहूं, आपको ? यदा-कदा ये टी.टी.ई. आबू-रोड के निकलते ही, चले जाते हैं वातानुकूलित कोच में..तब हम-लोगों को मिलाता है चैन। क्योंकि, फिर वे बाहर आने का नाम ही नहीं लेते हैं...जनाब। जब तक, जोधपुर स्टेशन आ नहीं जाता।

दयाल साहब – [थोड़ा विश्राम लेने के बाद, कहते हैं] - मैं यों कह रहा था, इनके वातुनाकूलित में जाने के बाद, न जाने कहाँ से इन शयनान डब्बों में मंगते-फ़क़ीर चले आते हैं..

राजू साहब – अरे जनाब, इन्हें छोड़िये, आप। ये सपेरे और मदारी भी चले आते हैं, अपने सांपों औए बंदरो को लेकर। फिर आकर, इन डब्बों की गद्देदार सीटों पर आराम से बैठ जाते हैं। मैं पूछता हूँ, इनको कोई कहने वाला नहीं।

आस करणजी – जनाब, और कुछ कहना है आपको ?

दयाल साहब – हुज़ूर, हम तो रोज़ के ग्राहक ठहरे इस रेलवे के। फिर, यह पक्षपात हमारे साथ ही क्यों?

आस करणजी –
 क्या करें, जनाब? यह जनता है, जनाब! इनके लिए अपने रेलवे मिनिस्टर लालू भाई का दिल दरियाव है!
 अरे जनाब, आप जानते नहीं, यह इनका वोट-बैंक है। एक मुश्त वोट मिलते हैं,
इनके! एक बात कह दूं आपको, सभी एम.एस.टी. वाले.....

दयाल साहब – [बीच में बोलकर, बात काटते हैं] - क्या कहना चाहते हैं, हुज़ूर ?

के.एल.काकू – जनाब, पहले मुझे बोलने दीजिये। मेरी बात कहने से रह गयी, के 'जगह-जगह पाख़ाने के आस-पास गू-मूत करके, ये मंगते-फ़कीर गन्दगी फैला देते हैं! इसी तरह आप इन एम.एस.टी..वालों और इन मंगते-फकीरों को एक मानकर, सभी को एक ही डंडे से हांकते हैं..वह अच्छा नहीं है, जनाब।

राजू साहब – [नाराज़गी से, कहते हैं] - अजीब आदमी हैं,,आप ? यार काकू, हमें क्या आपने जानवर समझ रखा है? कैसे बात कह दी, आपने ? एक ही डंडे से, हांकने की बात ?

के.एल.काकू – अरे जनाब, अभी आप बीच में बोलकर बात का मुद्दा बदलने की कोशिश न करें। जानवर होने की बात को लेकर, आप बाद में झौड़ करते रहना! खूब बोलना, बाद में। अभी बात उन बेटिकट इन मंगते-फकीरों की चल रही है, जिन्होंने डब्बे में भारी अव्यवस्था फैला रखी है।

राजू साहब – अब हम कैसे बोल सकते हैं, काकू ? आपने, हमको बोलने लायक नहीं छोड़ा ? बना दिया है, हमें जानवर! अब जानवर बेचारे, क्या बोल सकते हैं ?

के.एल.काकू – जनाब मैं जानता हू, आप जरुर अपने सींगों से वार करते रहेंगे|..मगर,
अभी सींग इस्तेमाल करना मत, इस नेक काम के लिए आपको बाद में मौक़ा मिल जाएगा|

[आस करणजी की तरफ़ देखते हुए, कहते हैं]

के.एल.काकू - इन मंगते-फकीरों को कहाँ है बैठने की तहज़ीब? अंट-शंट खाकर, पूरे डब्बे में बदबू फैला देते हैं।]

आस करणजी – आगे कहिये, काकू|

के.एल.काकू – [आस करणजी की तरफ़ देखते हुए] – फिर,
आप कहेंगे, “भय्या इनको हम रोक नहीं सकते। तब हम लोग, एक ही बात कहेंगे के ‘इनको रोक नहीं सक ते आप, तब एम.एस.टी वालों को शयनान डब्बे में बैठने से क्यों रोकते हैं? ये मंगते-फ़क़ीर ठहरे, एक नंबर के फोकटिये,! मगर हम लोग, महीने भर के टिकट के पैसे जमा करके यात्रा करते हैं!

राजू साहब – [आस करणजी की तरफ़ देखते हुए, कहते हैं] - जनाब छोड़िये, इस बात को। अभी आप यह बतायें, के यह खडूसिया कौन है, आपकी नज़रों में ? कारण यह है कि, हम के.एल.काकू की तरह मारवाड़ी जानते नहीं। बाकी बातों से, हमें क्या लेना-देना ?

दयाल साहब - मुझे भी कुछ समझ में नहीं आया, आप किस आदमी को खडूसिया कहते जा रहे हैं ?

आस करणजी – राजू साहब, हमारी मारवाड़ी भाषा में उस आदमी को खडूसिया कहते हैं...जिसके होता है तीतर का बाल, यानी वह चुप-चाप बैठ नहीं सकता। लीजिए, आप लोगों को पूरी बात ही बता देता हूं। सुनिए, एक बार मैंने क्या देखा.? के..

के.एल.काकू – क्या देखा, जनाब ?

आस करणजी – यह देखा, जनाब! शयनान डब्बे के अन्दर, एक यात्री खड़ा था..और पांच-छः एम.एस.टी..वाले बेंचों पर बैठकर आराम से ताश खेल रहे थे। तभी मैं लोकल डब्बे से निकलकर, इस शयनान डब्बे में चला आया। उस आदमी से, मैंने पूछा ‘टिकट ’? उस भले आदमी ने दिखाया टिकट, रिजर्वेशन का।

के.एल.काकू – फिर, आपने कुछ कहा होगा उसे ?

आस करणजी – तब मैंने उससे कहा ‘भाई तू खड़ा रहकर, इन खिलाड़ियों का ‘ताश का खेल’ क्यों देख रहा है..? भाई, आराम से बैठ जा! ‘ तब, वह बोला ‘मैं ताश का खेल नहीं देख रहा हूं..इन लोगों ने मुझे मेरी सीट से उठाकर, अब ख़ुद बैठ गए ताश खेलने। अब आप ही कहिये, मैं कहाँ बैठूं ?’ फिर क्या ? मुझे इन साहब बहादुरों को, समझाना पड़ा....

राजू साहब – क्या समझाया, जनाब ?

आस करणजी – मैंने कहा ‘ओ एम.एस.टी. वालों, आपको बैठने की सीट मिल गयी..फिर ताश खेलने के लिए और जगह रोककर, आप लोगों के ऊपर क्यों चढ़ते जा रहे हैं ?’

दयाल साहब – फिर, क्या हुआ ? आगे कहिये, जनाब।

आस करणजी – तब उनमें से एक आदमी जो खडूसिया था, वह बोल उठा “फिर, हम कहाँ बैठकर खेलें ताश ?” तब उसकी बात सुनकर, मुझे गुस्सा आ गया। मैं बोल उठा “बैठो, मेरे कंधे पर। अभी तुम्हें ससुराल ले जाकर वहां बैठाकर आता हूँ। वहां आराम से बैठकर, खेलते रहना ताश के पत्ते।”

दयाल साहब – आगे क्या हुआ, जनाब? शायद कहीं आप उस खडूसिये को हवालात में बैठाकर, आ गए होंगे.?

आस करणजी – ऐसा नहीं हुआ, दयाल साहब! मुझे उस पर दया आ गयी, मगर आपसे क्या कहूं दयाल साहब ? वह खडूसिया बड़ा शैतान निकला! मेरी मज़ाक उड़ाता हुआ, वह कहने लगा..

के.एल.काकू – आपकी मज़ाक...? इतने सीधे, सुशील व ज्ञानवान टी.टी. बाबूजी के साथ मज़ाक...?

आस करणजी – आज़कल कहाँ रही मर्यादा, अब कहाँ रहे छोटे-बड़े के मान-सम्मान के क़ायदे ? देश आज़ाद क्या हो गया, लोग आज़ाद हो गए समाज के बंधनों से। भूल गए, संस्कार। क्या कहूं ? वह नालायक यों बोला, के ‘जब पाहुना जाता है, तब उसके साथ उसका साथी भी साथ चलता है! आपसे अच्छा दूसरा साथी, मुझे मिलेगा कहाँ ? इसलिए जनाब, आपको साथ चलना होगा। आप मेरे साथ ससुराल चलने के लिए तैयार हैं तो, मैं आराम से चलूँगा, जनाब।

दीनजी – बाद में क्या हुआ, जनाब ? शायद केबीन में बैठे सारे यात्रियों ने उस खडूसिये की बात सुनकर, हंसी के ठहाके लगायें होंगे ? जनाब, अब आप बताइये, के ‘मैंने सही कहा, या ग़लत ?’

आस करणजी – जी हां, आख़िर यही हुआ! यात्रियों की हंसी सुनकर, प्लेटफोर्म पर उतरे उसके साथी गर्म-गर्म मिर्ची बड़े लिए डब्बे के अन्दर दाख़िल हुए! अन्दर आकर, उससे कहने लगे ‘भाई तू अकेला कहाँ जा रहा है, हम सब तेरे साथ चलेंगे।’

दयाल साहब – फिर क्या बोला, खडूसिया ?

आस करणजी – यह खडूसिया भले क्या कहता ? मगर, मैं बीच में बोला ‘इस भाई को ससुराल ले जा रहा हूं, क्या आप लोगों को चलना है ? कहिये, आपको साथ ले चलूँ ?’ तब सभी हंसने लगे, और कहने लगे ‘भा’सा आपके हुक्म की तामिल ज़रूर होगी, मगर पहले...

राजू साहब – मगर, मगर..यह क्या ? जनाब, आप बातों की गाड़ी को रोकिये मत।

आस करणजी – उन्होंने कहा 'ऐसे ख़ाली पेट कैसे चला भा'सा ? कुछ पेट में डालकर चलते हैं, हुज़ूर। चलिए, आप अपना हाथ आगे बढ़ाइए..और अरोगिये ये गरमा-गरम मिर्ची बड़े।'

आस करणजी – उन्होंने कहा 'ये खाने-पीने के काम साथ में चलते रहेंगे, हुज़ूर। पहले आप बैठिएगा, हमारे पहलू में। फिर पत्ते उठाकर कीजिये फीस, वैसे भी एक खिलाडी कम पड़ता है हमारी टीम में।'

[अब आस करणजी अंगड़ाई लेकर, आगे कहते हैं]

आस करणजी – फिर उन्होंने पास खड़े उस यात्री को लौटा थमाकर, कह डाला 'अरे चौधरीजी, खड़े-खड़े उबासी कहे ले रहे हैं ? लीजिये यह लोटा, और नीचे प्लेटफार्म पर उतरकर साहब के लिए शीतल जल भरकर झट ले आइये।'

के.एल.काकू – मुझे तो ये चतुर खिलाडी लगते हैं, मेरा शत-प्रतिशत अनुमान है यह ज़रूर गोपसा की टीम ही हो सकती है। अब आगे कहिये, भा'सा। बताइये, आगे क्या हुआ ?

आस करणजी – ऐसे कई इंसानों से रोज़ मुलाक़ात हो जाती है, काकू। तब, क्या कहें इनको ? फिर क्या ? मैंने आव न देखा ताव..बस, फटाक से उठाया एक मिर्ची बड़ा। और, कहा उनसे 'आप लोग आराम से पत्ते खेलिए, वैसे मैं यहाँ रुक जाता, क्योंकि अभी मुझे बहुत काम करना है। अगर आपको कोई बे-टिकट यात्री कहीं दिखाई दे जाय तो आप मुझे बुला लेना...

राजू साहब – खैर, भा'सा। आपने छोड़ दिया, ऐसे लोगों को..?

आस करणजी – पहले मेरी बात तो सुनिए, राजू साहब। मैं उनसे बोला 'फिर क्या ? मैं उस बे-टिकट यात्री को आपकी एवज में ससुराल ले जा दूंगा। अब आप बेफ़िक्र होकर खेलें। फिर 'जय श्याम री सा' उनसे कहकर, मैं वहां से चला गया।

[लम्बी सांस लेकर, आस करणजी अब आगे कहते हैं]
आस करणजी – [लम्बी सांस लेकर, आगे कहते हैं] - समझ गए, राजू साहब ? इतनी बकवास करनी पड़ती है, फिर रात को भागवान के सामने क्या बोलूँ ? बोलने की सारी ताकत, ऐसे लोगों से बकवास करते-करते ख़त्म हो जाती है।
दीनजी – जी हाँ, सारी खायी हुई बिदामें एक ही झटके से निकल जाती है। फिर बदन में जनाब, रहती कहाँ है ताकत ?

[इंजन सीटी देता है, गाड़ी की रफ़्तार कम हो जाती है। फिर रोहट स्टेशन पर आकर, गाड़ी रुक जाती है। मंच के ऊपर, अँधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच पर वापस रौशनी फ़ैल जाती है। अब गुलाबो अपनी हिज़ड़ो की टीम के साथ, डब्बे में दाख़िल होता है। कई केबिनों में घुमते-घुमते आख़िर, गुलाबो और चम्पाकली को चार-पांच केबीन लगातार ख़ाली दिखायी देते हैं। फिर दोनों हिज़ड़े, एक केबीन में जाकर बैठ जाते हैं। वहां बेंच पर बैठकर अपनी थकावट दूर करते हैं, थकावट दूर होने के बाद वे दोनों अपने-अपने बैग खोलते हैं। बैग से ५-५, १०-१०, ५०-५० और १००-१०० रुपयों की थाप्पियाँ लगाकर, नोट गिनने का काम शुरू करते हैं। गिनते वक़्त उन्हें कहीं ५०० या १००० के नोट दिख जायें, तो वे उन्हें उंगलियों में पहनी किसी भी रिंग के नीचे दबाकर रख देते हैं। अब इन ख़ाली केबिनों में, मोहनजी की चैकिंग पार्टी दाख़िल होती दिखायी देती है। चैकिंग पार्टी के सभी सदस्य अपनी पोजीशन लेते हैं, फिर रतनजी दो क़दम आगे बढ़ाकर रौबीली कड़कदार आवाज़ में ज़ोर की गरज़ना करते हैं.."टिकट" और दूसरी तरफ़ ओमजी, डंडे को ज़मीन पर बजाते जाते हैं। और साथ-साथ में, वे कड़कदार आवाज़ में बोलते जाते हैं "टिकट।"]

रतनजी – [ज़ोर से कहते हैं] – "टिकट।"

ओमजी – [डंडा ज़मीन पर बजाते हुए] - टिकट। कोई बेटिकट यात्री, भागने की कोशिश नहीं करेगा। बिना टिकट, रेलगाड़ी में यात्रा करना अपराध है। बेटिकट यात्रियों के पकड़े जाने पर, उन्हें छः महिने सश्रम कैद की सज़ा हो सकती है।

[अब रतनजी के नथुनों में टेलकम पाउडर और खुशबूदार क्रीम की गंध आती है, उनको भ्रम हो जाता है, के 'केबीन में औरतें बैठी होगी ?' अब वे पछताते हैं, उन्होंने क्यों औरतों के सामने रौब मारा ? अब वे आगे बढ़कर, मोहनजी से शिफ़ाअत [सिफ़ारिश] लगा बैठते हैं..]

रतनजी – साहब, आगे मत जाइये। औरतें बैठी है, इनको क्या चैक करना ?

मोहनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए] – अरे रतनजी, कढ़ी खायोड़ा। औरतें लक्ष्मी का रूप होती है, अब आप यह सोचिये 'किस्मत के पट खुल गए हैं।' इसलिए, अब आगे के सारे केबीन देखने ज़रूरी हो गये हैं। [इधर-उधर निगाहें फेंकते हुए कहते हैं] अरे भाई रतनजी, यह रशीद भाई कहाँ चला गया है कढ़ी खायोड़ा ?

[अब मोहनजी को, रशीद भाई कैसे नज़र आते ? जनाबेआली रशीद भाई ठहरे, सेवाभावी। रास्ते में उनको दिखाई दे गयी, ख़ाली विसलरी बोतलें। बस उन्होंने उन बोतलों को, इकट्ठी करनी चालू कर दी है। और जनाब भूल गये हैं, इस वक़्त वे चैकिंग पार्टी के सदस्य का रोल अदा कर रहे हैं। जैसे ही मोहनजी की खोज़ी निगाहें रशीद भाई पर गिरती है, वे कड़कती आवाज़ में उनसे कहते हैं..]

मोहनजी – [कड़कती आवाज़ में, ज़ोर से कहते हैं] – मिस्टर रशीद, यह क्या ? इस वक़्त तुम चैकिंग पार्टी के मेंबर हो। भूल जाइये, दूसरे काम।

[मोहनजी की यह कड़कती आवाज़, जैसे ही रशीद भाई के कानों में पहुँचती है..और वे संभल जाते

हैं, झट बोतलें फेंक देते हैं। फिर टोपी सीधी करके दो मिनट में बन जाते हैं, वापस जवान। और जाकर झट खड़े हो जाते है, गुलाबा के करीब। फिर उन दोनों किन्नरों को फटकार पिलाते हुए, कहते हैं ज़ोर से..]

रशीद भाई – [फटकारते हुए, कहते हैं] – ये क्या..? ओबास। गाड़ी में जुआं..? वो भी, औरतें होकर ?

[गुलाबा बैग में रुपये डालने का प्रयत्न करता है, मगर समीप खड़े रशीद भाई उसको ऐसा करने से रोकते हैं। झट उसका हाथ पकड़कर, वे मोहनजी को ज़ोर से आवाज़ देते हैं।]

रशीद भाई – [गुलाबा का हाथ पकड़कर, कहते हैं] – इन पैसों के, हाथ नहीं लगाना। [मोहनजी को, आवाज़ देते हैं] अरे हुज़ूर, देखिये। गाड़ी में एक और जुर्म, जुंआ जुआं खेलने का हो रहा है।

[गुलाबे को देखते ही मोहनजी उसे पहचान जाते हैं, मगर बेचारा गुलाबा उन्हें काली सफ़ारी सूट में पाकर उन्हें पहचान नहीं पाता..वह तो उन्हें चैकिंग पार्टी का मजिस्ट्रेट समझ लेता है। मगर मोहनजी जान जाते हैं, के यह व्यक्ति-विशेष वही है जिसने आस करणजी के सामने उनकी बखिया उधेड़ डाली थी। अब उनको बीती हुई पूरी घटना का एक-एक पल याद आ जाता है, किस तरह उसने आस करणजी और सवाई सिंहजी के सामने उनको किस तरह बेइज्ज़त किया था ? अब उन्होंने सोच लिया, के 'समझदार व्यक्ति वह होता है, जो मौक़े का फ़ायदा उठाता है।' फिर, क्या ? जनाबे आली मोहनजी झट तैयार हो जाते हैं, गुलाबा से बदला लेने के लिए।]

मोहनजी - [रौबदार आवाज़ में, कहते हैं] – टिकट..?

[गुलाबा और चम्पाकली ने, कब गाड़ी में सफ़र करते वक़्त टिकट लिया ? ये यात्रियों से पैसे माँगने का काम करने वाले दोनों हिज़ड़े, तो बेटिकट यात्री निकले। ये दोनों जानते थे 'किस टी.टी.ई. की अम्मा ने अजमा खाया है, जो इनसे टिकट मांगने की हिम्मत करें ?' मगर ये जनाबे आली मोहनजी इस वक़्त, रोळ अदा कर रहें हैं..टी.टी. यों के बाप का, यानी चैकिंग मजिस्ट्रेट का। ये दोनों हिज़ड़े आँखें फाड़े देख चुके थे, के 'अभी इनके पहनी हुई है, काली सफारी और हाथ में इनके काला बैग। और इधर रतनजी के हाथ में है, उत्तर रेलवे की चालान बुक।' फिर, क्या ? अब तो चैकिंग-पार्टी होने में, शक करने की कोई गुंजाइश भी नहीं रही है। यहाँ तो वास्तव में मोहनजी को इस काली सफारी में देखकर, कोई अनजान व्यक्ति भी यही कहेगा.. 'जनाबे आली, चैकिंग मजिस्ट्रेट हैं।' अब यही असर, गुलाबो और चम्पाकली पर हो जाता है। इन्होने जब से रतनजी के हाथ में उत्तर रेलवे की चालान बुकें देख ली, तब से इन दोनों के होश उड़ गए हैं। अब इन लोगों के लिए, केवल एक ही चारा रहता है..वह है, भाई-वीरा कहकर इनके चंगुल से बाहर निकलने का...और, अपना काम निकालना।]

गुलाबो – [हाथ जोड़कर, कहता है] – आज़ माफ़ कर दीजिये, हमें। आगे से हम, टिकट लेकर ही गाड़ी में बैठेंगी। [मोहनजी के पांवों को छूता हुआ कहता है] कभी ऐसी ग़लती नहीं होगी, साहब।

मोहनजी – [गुलाबा को दूर हटाते हुए, कहते हैं] – टिकट नहीं है, तो भर लीजिये जुर्माना। जुर्माना

नहीं दोगी तो, चलना होगा हवालात में की हवा खाने। [रतनजी से कहते हुए] इन दोनों के ऊपर चार्ज लगाना बाबू साहब, एक तो बेटिकट रेलगाड़ी में यात्रा करने का, और दूसरा सार्वजिक स्थान पर बैठकर जुंआ जुआं खेलने का।

[गुलाबा सहम जाता है, झट मोहनजी के पांव पकड़ लेता है। इधर चम्पाकली ठहरा नया हिज़ड़ा, जो अभी हाल में ही इस हिज़ड़ो की टीम में सम्मिलित हुआ है। अभी कुछ दिन पहले ही, उसकी ट्रेनिंग ख़त्म हुई है। वह सोचता है, यदि उसने सिखायी गयी हिज़ड़ो की अदा दिखलानी शुरू की तो..इस रौबदार अफ़सर के छक्के छूट सकते हैं। फिर क्या..? चम्पाकली उठकर आता है, ओमजी के निकट। फिर, उनके रुखसारों को सहलाता हुआ कहने लगा..]

चम्पाकली – [ओमजी के गालों को सहलाता हुआ कहता है] – साहब को समझा रे, छेला। हम से पैसे लेकर, क्या करेगा..? हम तो वो हैं, यानी [ताली बजाता है] छक्के। समझ गया, रे ? आ जा..[अपना घाघरा ऊपर लेता हुआ कहता है] आ जा, आ जा, तूझे घाघरे के नीचे बैठा दूं ? तूझे दो मिनट में गर्म कर दूंगी रे, हाय...हायऽऽ..आ जा, आ जा रे छेला..

[चम्पाकली हिज़ड़ा, आगे क्या बोल पाता..? धब्बीड़ करता ओमजी का एक झन्नाटेदार थप्पड़, चम्पाकली के रुखसारों पर लगता है। इस दिन में उसे दिखने लग जाते हैं, आसमान के तारे। चम्पाकली थप्पड़ खाकर, धड़ाम से आकर नीचे गिरता है। ओमजी का जैसा नाम है, वैसे ही उनमें ठोकने के गुण भरे पड़े हैं। इस कारण ख़ुदा के फ़ज़लो करम से, वे अगले की ऐसी पिटाई करते है कि उसे ऐसा लगता है अब वह राम, राम सत्य यानी ॐ शरणम् होने वाला है। इनके इसी गुण के कारण, लोग-बाग़ इनसे चार क़दम दूर ही रहते हैं। थप्पड़ लगाने के बाद, उन्होंने फर्श पर बजा डाला अपना गंगाराम। फिर डाकू सरदार मलखान सिंग की तरह, गरज़कर कहने लगे..]

ओमजी – अब और खायेगा, मार ? पीटूंगा, साले को। समझ क्या रखा है, चवन्नी क्लास ? साला आया, वर्दी पर हाथ लगाने वाला ? फटाक से जुर्माना दे दो, हिज़ड़ो। नहीं तो तुम-दोनों को बैठाकर आता हूं, जेल में।

[चम्पाकली का इस तरह रुखसारों पर हाथ लगाना, अब ओमजी के लिए फ़िक्र करने का कारण बन गया है। अब उनको चिंता सताती जा रही है, "इस हिज़ड़े में कहाँ से इतनी हिम्मत आ गयी..जो उनके गालों पर हाथ लगा गया..? कहीं उनके व्यक्तित्व में, कोई कमी तो नहीं आ गयी ? जहां इनकी ख़ुद की घर वाली उनका मूड देखकर इनके पास आती है, और इनके बच्चे सर झुकाए उनके सामने खड़े रहते हैं..बस, मात्र इनकी आंख के इशारे से ही समझ जाते हैं के "उनके अब्बाजान, उनसे क्या चाहते हैं ?" इनके इशारे को समझकर, बिना बोले ही उस काम को अंजाम तक पहुंचा देते हैं। वहां आज़ यह हिज़ड़ा, कैसे इनके रुखसारों को कैसे छू गया ?" उधर गुलाबा ओमजी का यह रूप देखकर, सहम गया। अब वह भयग्रस्त होकर, माफ़ी मांगता हुआ ओमजी से कहता है।]

गुलाबो – [हाथ जोड़कर, कहता है] – छोटे साहब, माफ़ कीजिये। अभी हाल में ही, यह चम्पाकली

हिज़डा बना है। अभी-तक, यह साहब लोगों के पल्ले पड़ा नहीं। और यह नहीं जानता, सरकारी क़ायदे। [दोनों हाथों की अंगुठियों में दबाये नोटों को, इन्हें देने के लिए निकालता है] लीजिये जनाब, आपका टेक्स।

[पांच सौ व हज़ार के कई नोटों को देखकर, रशीद भाई हो गए खुश। और सोचने लगे "चलो अच्छा हुआ, चंदे का टारगेट जल्द पूरा होने जा रहा है।" फिर क्या ? झट आगे बढ़कर, गुलाबा से सारे नोट ले लेते हैं। इसके बाद, लम्बी-लम्बी सांसे लेते हैं। सामान्य होने के बाद, वे चम्पाकली से कहते हैं..]

रशीद भाई – तू कहाँ जा रही है, चम्पाकली ? तूझे भी भरने है, टेक्स के पैसे।

[चम्पाकली डरता हुआ, झट गिने जा रहे सारे रुपये उठाकर रशीद भाई को थमा देता है। फिर क्या ? गुलाबा और चम्पाकली से लिए गए सारे रुपये, रतनजी को थमा देते हैं। तभी उन्हें, चम्पाकली की अंगुठियों के नीचे दबे हुए नोट दिखायी दे जाते हैं। बस, फिर क्या ? झट इन नोटों को झाम्पने के उद्देश्य से, उसे कह देते हैं]

रशीद भाई – अरी चम्पाकली, इन नोटों का क्या तू अचार डालेगी क्या ? अंगुठियों से, निकाल इन बड़े नोटों को।

[बेचारा भयग्रस्त चम्पाकली झट अंगुठियों के नीचे दबे नोटों को निकालकर, रशीद भाई को थमा देता है। अब रशीद भाई, झट उन सारे रुपयों को रतनजी को थमा देते हैं। फिर वे, आराम की सांस लेते हैं। रुपये गिनने के बाद, रतनजी उन रुपयों को रोकड़ वाले बैग में डाल देते हैं। सांसे सामान्य होने के बाद, रशीद भाई उन दोनों हिज़ड़ो को देते हैं धन्यवाद।]

रशीद भाई – किन्नर भाईयों, दुखी न होना। रोज़ आप लोग करते है, यात्रियों से कलेक्शन। और आज़ हमने कर लिया, आपसे कलेक्शन। आप लोग रोज़ कमाते हो भाई, अब आप ऐसा सोच लीजिये एक दिन आपने नहीं कमाया हमने कमा लिया। ठीक है, किन्नर भाईयों ? शुक्रिया।

मोहनजी – [किन्नरों से कहते हैं] – किन्नर भाईयों, हम ठहरे ईमानदार। दिल दुखाना मत, यह समझ लेना..के, आपने किसी चेरिटी में दान दिया है। [रशीद भाई से कहते हैं] रशीद भाईजान ज़रा सुनना, बाबू साहब से कटी रशीदें और कूं-कूं पत्री लेकर, इन दोनों किन्नर भाईयों को दे दीजिये।

[मोहनजी अब खुश हैं, आज़ उन्होंने इस गुलाबे से आख़िर बदला ले ही लिया। अब वे होठों में मुस्कराते हुए, उन दोनों किन्नरों को हाथ जोड़कर कहते हैं..]

मोहनजी - [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – किन्नर भाई, आपका बहुत सहयोग मिला। आपका दिया गया चन्दा, टी.टी.ई. युनियन वालों के सम्मलेन में ख़र्च होगा। अब आप इस सम्मलेन में भाग लेकर, इस सम्मलेन को सफल बनाये।

रतनजी - कहीं हमसे कोई भूल-चूक हो गयी हो तो, आप हमें माफ़ कीजियेगा। अच्छा, अब आप हमें अब रुख़्सत दीजिएगा।

[रतनजी कूं-कूं पत्री के साथ बची हुई रेज़गी और चंदे की रसीद, गुलाबा को थमा देते हैं। फिर, उन लोगों से कहते हैं..]

रतनजी – [कूं-कूं पत्री, चंदे की रसीद और बची हुई रेज़गी देते हुए] – लीजिये किन्नर भाइयों, कूं-कूं पत्री, चंदे की रसीद और बची हुई रेज़गी। यह खुले पैसे, आपके काम आयेंगे। सम्मलेन में आप, ज़रूर पधारना। जय बाबा की।

[कई हफ़्तों की कमाई लूट ली गयी, इन किन्नरों की आँखों से आंसू गिरते जा रहे हैं..उन नम आँखों से वे, मोहनजी की चैकिंग पार्टी को जाते हुए देखते रहे। फिर वे एक-दूसरे को, दिलासा देते हुए कहने लगे..]

गुलाबो – शेर को सवा-शेर, आख़िर मिल ही गया। अरे ए चम्पाकली इन माता के दीनों ने, अपनी कई हफ़्तों की कमाई लूट डाली। [गीत गाता है] हमें तो लूट लिया, इस काले-काले टी.टी. ने...

चम्पाकली – [रोता हुआ गाता है] – गोरे-गोरे गालों ने...

गुलाबा – बाबू की बातों ने...

[दुःख से व्यथित दोनों हिज़ड़े अपना माइंड डाइवर्ट करने के लिए, वे दोनों दूसरा गीत गाते हुए नाचने लगे..]

गुलाबो – [गीत गाता हुआ, नाचता जाता है] – अलका-मलका छोड़ कीड़ी तू नाचे क्यों नहीं ए, कीड़ी तू नाचे क्यों नहीं ए, तू नाचे क्यों नहीं ए..

चम्पाकली – [नाचता-नाचता, गाता जा रहा है] – तीतर चुग जाय तेरे धान को, तू क्या करेगी ए, तू क्या करेगी ए...

गुलाबो – [गाता हुआ, नाचता जाता है] – एकठ करता टूटी कमर, पण खायो एक नहीं दाणों। अब तू नाचे क्यों नहीं ए, तू नाचे क्यों नहीं ए..

चम्पाकली – [घूमर लेकर, गाते हुए] – आया तीतर ले गया, बचा एक नहीं दाणा, तू नाचे क्यों नहीं ए, तू नाचे क्यों नहीं ए..

गुलाबो – [चम्पाकली का हाथ पकड़ता है, फिर दोनों नाचते हैं] – अलका-मलका छोड़ कीड़ी तू नाचे क्यों नहीं ए, तू नाचे क्यों नहीं ए, तू नाचे क्यों नहीं ए..

[पटरियों के ऊपर दौड़ रही गाड़ी का इंजन अब ज़ोर से सीटी देता जा रहा है, उसकी आवाज़ के आगे अब यह गीत सुनाई नहीं दे रहा है। मंच के ऊपर अन्धकार छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच के ऊपर रौशनी फैलती है। अब केबीन के अन्दर बैठे दयाल साहब, राजू साहब और के.एल.काकू तो गपें हांकते जा रहे हैं। मगर दीनजी भा’सा, चुप-चाप बैठे उपन्यास पढ़ रहे हैं। मगर, आस करणजी सीट पर आराम से लेटे हुए हैं।]

दयाल साहब – राजू साहब, आप बहुत भोले हैं। न जाने आप, किन लोगों की कही बात पर भरोसा कर लेते हैं ? जनाब, यह अच्छा नहीं है।

राजू साहब – दयाल साहब यह मान लेते हैं, आप मेरी जगह पर होते तो आप क्या करते ? जनाब आपको भी करना पड़ता, उन पर भरोसा। वैसे मैंने, ऐसा किया भी क्या..? मोना राम के पास आया सन्देश, के 'अजमेर से डी.एम. साहब आ रहे हैं पाली।' बस, मैंने आपको यह इतला दे दी। और किया क्या, मैंने ?

दयाल साहब – मगर आये तो नहीं, आपके कारण मुझे सुबह चार बजे उठना पड़ा। अरे राजू साहब, आप क्या जानते हो ? तड़के उठने में, कितनी तक़लीफ़ होती है ? फिर..

राजू साहब – फिर, क्या ? ओम प्रकाश, रतन सिंह और रशीद इन तीनों को इतला करनी, भूल गए क्या ?

दयाल साहब – इतला की, कैसे नहीं ? सबको फ़ोन किया, मगर मेरे अलावा आया कौन ? आपको देखना यही होगा, यह रतन सिंह तो चला गया छुट्टी पर..और यह रशीद और ओम प्रकाश, हमेशा की तरह आये लेट। अब बोलिये, आप क्या कहेंगे ?

आस करणजी – [लेटे हुए कहते हैं] – दयाल साहब, छोडो यार। ये विश्वास और अविश्वास की बातें। लोगों के अन्दर उनकी ख़ुद की सोच होनी चाहिए, ना तो इस मास्टर मधुसूदन की तरह खाओगे धोखा। यह डेड होशियार, बहुत होशियारी दिखाता था। गाड़ी में बैठने के पहले, दस बार लोगों से पूछकर कर लेता था..तसल्ली।

राजू साहब – किस बात की तसल्ली, जनाब ?

आस करणजी – इस बात की तसल्ली करता था, जनाब..के, गाड़ी कहाँ जा रही है ? उदघोषक के दस बार उदघोषणा करने के बाद, जनाबे आली बैठा करते थे गाड़ी में। फिर भी पूरा भरोसा उनको होता नहीं, दरवाज़े के पास हेंडल पकड़कर खड़े रहते जनाब। यह सोचकर, अगर गाड़ी नहीं चली तो वे झट उतर जायेंगे।

दीनजी – [किताब को रखते हुए, कहते हैं] – ऐसे मत कहिये, जनाब। मास्टर साहब बहुत होशियार है, मुझे नहीं लगता उन्होंने कभी धोखा खाया हो ? ऐसी कोई बात हुई होती, तो मुझे अवश्य मालुम रहती। मास्टर साहब की एक-एक समझदारी की बात, मिसाल के तौर पर पाली उपखंड के अध्यापक दिया करते हैं।

आस करणजी – लीजिये, पूरा किस्सा विस्तार से सुना देता हूं आपको। सुनने के बाद, आप ख़ुद निर्णय ले लेना के मास्टर साहब कितने होशियार हैं, और कितने समझदार ? बात उन दिनों की है, जब काज़री में काम करने वाला मुरली धर इनके साथ गाड़ी में रोज़ का आना-जाना करता था।

दीनजी – [हूंकारा भरते हुए] – जी हुज़ूर, आगे क्या हुआ जनाब ?

आस करणजी – यह आदमी अपने पास रखता था, एक चांदी की डिबिया। उसमें होती थी, मीठे पान की मसाले वाली गिलोरियां, जिस पर लगा होता चांदी का बर्क।

दयाल साहब – वाह जनाब, मजा आ गया मास्टर साहब को। उनको ज़रूर मिली होगी, पान की

गिलोरी।
आस करणजी – आप सुनिए, जनाब। एक पान की गिलोरी वह ख़ुद खाता, और दूसरी गिलोरी देता मास्टर साहब को। इस तरह मास्टर साहब, रोज़ मुफ़्त का पान खाकर खुश..! अरे भाई, कौन छोड़ता है मुफ़्त के पान ? फिर वह कहता..
राजू साहब – मुफ़्त के पान मिलते हैं जहां, वहां बैठकर मास्टर साहब को बकवास सुननी पड़ती होगी। आख़िर, यह मुरली धर उनको पान जो खिला रहा है ?
आस करणजी – जनाब, सही कहा आपने। अब सुनिए, उस दौरान मुरली धर इनसे कहता था "ग़लत आदत हो गयी है, पान खाने की। यह अच्छा हुआ, के 'घंटा-घर के पास, मेरे मामाजी की पान की दुकान है।'
दीनजी – अरे भा'सा, इस मुरली धर ने सही कहा है जनाब। इसके मामा की दुकान, घंटा-घर बाज़ार में ही है। मैं भी देख चुका हूं, इस दुकान को। अब आगे कहिये, जनाब।
[अब आस करणजी किस्सा बखान करने के मूड में आ जाते हैं। उठकर, अब वे आराम से बैठ जाते हैं। फिर आगे का किस्सा, बयान करते हैं।]
आस करणजी – [बैठते हुए, कहते हैं] – जहां मामाजी खिला रहे हो, मुफ़्त का पान। फिर भाणजा, खाने में पीछे क्यों रहे ? बस, मामाजी भेज देते हैं पान की गिलोरियां चांदी की डिबिया भरकर। और लगता नहीं, एक पैसा। इस तरह रोज़ मुफ़्त के पान खाकर मास्टर साहब को लग गया, ग़लत नशा रोज़ पान खाने का।
दयाल साहब – अरे भा'सा, ऐसा भी होता होगा..कभी मुरली धर नहीं आया हो..? फिर..--
आस करणजी – जब कभी यह मुरली धर नहीं आता तब उस दिन पाली स्टेशन के बाहर पनवाड़ी की दुकान पर, मास्टर साहब को मज़बूरन जाना पड़ता..पान खाने के लिये। अगर मास्टर साहब पान नहीं खाये, तब यह जीभ उनके काबू में रहती नहीं। और, मचाने लगती...आंतक। के, ला पान..ला, पान।
दीनजी – सच्च कहा, आपने। कई दिनों तक नशेड़ी, लोगों को मुफ़्त में नशा करवाता है। बाद में उन लोगों को नशा करने की आदत बन जाया करती है, तब वह नशेड़ी उनका दामन छोड़ देता है। फिर इन लोगों को जेब से पैसे ख़र्च करके ही, नशा करना होता है।
दयाल साहब – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए] – आस करणजी, कहीं आप खाकर तो नहीं आ गए मुफ़्त के पान ?
आस करणजी – [झेंप मिटाते हुए, कहते हैं] – यह मुरली धर, मुझे क्या पान खिलायेगा ? मैं खाता हूं, मीठा पत्ता चेतना तम्बाकू लगा हुआ। इतना महंगा पान खिलाने की, उसमें कहाँ हिम्मत ? अरे दयाल साहब, क्या यार बीच में बोलकर लय तोड़ देते हो ?
राजू साहब – अब भी क्या बिगड़ा है, भा'सा ? हो जाइये, वापस चालू। वापस बना लो लय, और क्या ?

आस करणजी - अब आगे क्या होता है, जनाब ? इस तरह मुरली धर रोज़ पाली सर्राफा बाज़ार से कई मिठाइयों से भरे डब्बे लाया करता, और मिठाई का एक-एक टुकड़ा मास्टर साहब को ज़रूर चखाया करता। मास्टर साहब ठहरे, चांदपोल के पंडितजी महाराज।
दीनजी – क्या कहें, भा'सा आपको। चांदपोल और ब्रहमपुरी भरी पडी है, इन श्रीमाली जाति के पंडितों से। फिर मास्टर साहब की दिल-ए-ख़्वाहिश बनी रहती है, उनका मुंह मीठा होता रहे मुफ़्त की मिठाइयों से। अब आगे कहिये, भा'सा।
आस करणजी – एक दिन, मास्टर साहब मुरली धर से कहने लगे 'यों कैसे रोज़, मिठाइयों के ऊपर पैसे ख़र्च करते जा रहे हैं ?' सुनकर, मुरली धर ज़ोर से हंसने लगा। फिर हंसी थमने पर, वह कहने लगा 'मास्टर साहब मैं इस तरह रोज़ मिठाइयों के ऊपर पैसे ख़र्च करूँगा, तब अपने बाल-बच्चे कैसे पालूंगा ?'
राजू साहब – मुझे तो भा'सा, दाल में कुछ काला लगता है। बात कुछ और होनी चाहिए, जनाब।
आस करणजी – बीच में मत बोलिए, राजू साहब। अब सुनो, आगे। उसने कहा 'पाली के सर्राफा बाज़ार में प्याऊ से सटी हुई, मेरे ससुरजी की मिठाई की दुकान है। मैं जब भी उनसे मिलने, उनकी दुकान पर जाता हूं..
राजू साहब – खूब सारी मिठाई ठोककर, आ जाते होंगे ?
आस करणजी – नहीं, जनाब। उन्होंने यही कहा के 'तब वे कई मिठाइयों के डब्बे मुझे थमा देते हैं, और अगर मैं उनकी दुकान पर नहीं जा पाता...तब वे स्टेशन पर मिठाइयों के डब्बे मेरे पास पहुंचा देते हैं।' फिर, उसने आगे कहा...
[इतना कहकर, आस करणजी अंगड़ाई लेकर थोडा विश्राम करने लगे। मगर किस्से को बीच में छोड़ देना, दयाल साहब को अच्छा नहीं लगा..क्योंकि, उनके दिल में मची हुई है उतावली। फिर, क्या ? जनाब कहते हैं..]
दयाल साहब – क्या हुआ, भा'सा ? गाड़ी कैसे रोक दी, जनाब ?
आस करणजी – मेरा काम नहीं है, चलती गाड़ी रोकने का। यह काम है, अपने गार्ड साहब गोपाल दासजी सा का। मैं तो ख़ाली एक ही गाड़ी रोक सकता हूं, वह है बातों की गाड़ी..ख़ाली उसे ही रोक सकता हूं, केवल आप जैसे सज्जनों की मेहरबानी से। अब आगे सुनिए, जनाब। मास्टर साहब का भोलापन देखकर, वह बोला...
राजू साहब – क्या बोला, जनाब ?
आस करणजी – वह बोला 'आपको जब-कभी मिठाइयां ख़रीदनी हो, बस आप उस दुकान पर चले जाना और मेरे ससुरजी से कहना..के, आप मेरे मित्र हैं।
दीनजी – छूट पर किलो कितनी, जनाब ? ज़रा, छूट के बारे में बताइये।
आस करणजी – उसने कहा 'मेरे ससुरजी, पर किलो १०-१५ रुपये कम लगा देंगे।' इस तरह मास्टर साहब रोज़ मुफ़्त के पान और मिठाइयां खाते-खाते बन गए "खावण-खंडे।" लोग कहते हैं,

'जोधपुर के खंडे प्रसिद्ध है, या फिर प्रसिद्ध है खावण-खंडे।' फिर एक दिन ऐसा आया, के...
राजू साहब – आगे क्या हुआ, कहीं उसकी दी हुई मिठाई आपने ठोक ली क्या ? क्या आप भी बन गये, खावण-खंडे।
आस करणजी – [हाथ से अपनी तोंद सहलाते हुए कहते हैं] – वाह, राजू साहब। आप भी अच्छे भोले रहे, इस बावन इंच के घेरे में एक-दो मिठाई के टुकड़े कहाँ टिकेंगे जनाब ? इस तोंद को भरने की, इस मुरली धर की कहाँ है औकात ? आप क्या जानते हैं, हम ब्राहमणों के रीति-रिवाज़ ?
दयाल साहब – हुज़ूर, बोल दीजिये आपके रीति-रिवाज़। आख़िर है, क्या ?
आस करणजी – यहाँ तो भागवान एक दिन छोड़ हर दूसरे दिन बनाती है, देशी घी में तैयार की गयी मिठाइयां। क्या कहना है, उनका ? कभी बनाती है काजू की कतालियाँ, तो कभी बना देती है दाल का हलुआ..अरे जनाब, तरह-तरह की मिठाइयां, छप्पन-भोग तैयार करके गोपाल की सेवा में चढ़ाती रहती है।
दीनजी – सच्च कहा है, भा'सा ने। इतने भोग चढ़ाने के बाद, होते हैं राज-भोग के दर्शन।
राजू साहब – हमें राज-भोग के दर्शन कहाँ करने है, जनाब। हमारा नाम राजू ज़रूर है, मगर आप उसे काजू मत बना देना। बस आप इतनी मेहरबानी रखावें..
आस करणजी – [हंसते हुए कहते हैं] – वाह राजू साहब, आप मज़ाक खूब कर लेते हैं। जनाब इस बार बीच में बोलकर, आपने फिर तोड़ डाली मेरी लय ? मैं क्या कह रहा था, राजू साहब ?
राजू साहब – हुज़ूर आप कह रहे थे, के मुरली धर का आगे क्या हुआ ? बस, आप वापस चालू हो जाइये। इस बार माफ़ कीजिये, हुज़ूर, अब आगे से मैं चुप ही रहूँगा।
आस करणजी – अब मुरली धर की बदली हो जाती है, जोधपुर। उसके जाने के बाद, मास्टर साहब हो गए परेशान। अब न तो है मिठाई, और ना है पान ? अब क्या करते, बेचारे ? इधर लग गया, श्राद्ध-पक्ष। मास्टर साहब को इस श्राद्ध-पक्ष में दिवंगत दादाजी का पहला श्राद्ध का तर्पण करना है, और एक ब्राहमण को खाना भी खिलाना है...!
दीनजी – अब अपने दिल में, सोचने लगे होंगे..? शायद कुछ तो सोचा होगा, जनाब ?
आस करणजी – उन्होंने सोचा, इस मुरली धर के ससुरजी पैसे कम लगा देंगे। बस उनकी दुकान से ले आते हैं, पंच-मेवा की मिठाई। ब्राहमण को भी खाना खिला देंगे, और अपुन भी मिठाई खाकर अपनी इच्छा पूरी कर लेंगे। फिर, क्या ? वे झट जा पहुंचे, वहां। और जाकर तुलवा दी, पांच किलो पंच-मेवा की मिठाई।
दयाल साहब – रुपये कम करने का सवाल ही नहीं होता, आख़िर दुकानदार रुपये कमाने बैठा है..गमाने के लिये नहीं।
आस करणजी – जी हां, सही कहा आपने। अब मिठाई तुलवाने के बाद, मास्टर साहब बोले 'खम्मा घणी, सेठ साहब। मैं आपके जमाता का मित्र हूं, समधीसा। उन्होंने मुझे कहा, आप १०-१५

रुपये पर किलो पर छूट दे देंगे।' मास्टर साहब की बत सुनकर, सेठ साहब हंसने लगे।
दीनजी – आगे कहिये, भा'सा।
आस करणजी – फिर, सेठजी ऊंची आवाज़ में बोले 'मास्टर साहब, कहीं आप भंग पीकर आ गये क्या ?' फिर उन्होंने अपने पहलू में बैठी दो साल की लड़की के सर पर, हाथ रखकर कहा..
राजू साहब – आगे क्या कहा, जनाब ?
आस करणजी - 'यह दो साल की लड़की मेरी इकलौती छोरी है, इसका विवाह तब होगा जब यह बीस साल की होगी। अब समझ गए, मास्टर साहब ? अब अगर मिठाई लेनी है तो, निकालिए जेब से पूरे एक हज़ार रुपये। नहीं तो, यह पड़ा रास्ता..'
दीनजी – फिर, क्या हुआ जनाब ? अगर उनके जेब में, एक हज़ार रुपये न हुए तो...?
आस करणजी – मास्टर साहब ऐसे फंस गये जनाब, बस ऐसा लगा उनकी छाती के ऊपर आसमान आकर गिर गया हो ? यह तो जनाब, उनकी किस्मत ठीक थी। उनकी जेब में बच्चों की परीक्षा शुल्क राशि रखी थी, कुल रोकड़ा एक हज़ार रुपये।
दीनजी – मिठाई के रुपये चुकाकर, मास्टर साहब ने इस मुसीबत से छुटकारा पाया होगा ? बस फिर उस दिन से उन्होंने कसम ले ली होगी, भविष्य में मिठाई नहीं खाने की। उस दिन से बेचारे मास्टर साहब, मिठाई के नाम से डरने लगे होंगे ? यहाँ तक कि, उन्होंने विवाह-शादी में जाकर लज़ीज़ भोजन करना भी छोड़ दिया होगा ?
आस करणजी – जी हां, बिल्कुल सही फ़रमाया आपने। वे लोगों से प्राय: कहने लगे, 'मुझे है, मधुमेह रोग..अब मैं, मिठाई कैसे खा सकता हूं ? जनाब मैं तो केवल इन मिठाइयों को देखकर ही, अपने दिल की प्यास बुझा लेता हूं।'
दीनजी – भा'सा, मैं आपसे केवल यही कहूँगा। जनाब, आप लोगों को मिठाइयां खिलाते रहो। इन मिठाइयों को देख-देखकर ही, आप ऊब जायेंगे..खाने की इच्छा स्वत: ख़त्म हो जायेगी।
[मंच पर अन्धेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच पर रौशनी फ़ैल जाती है। अब लूणी स्टेशन का मंज़र सामने आता है, लूणी प्लेटफोर्म पर सौभाग मलसा पुलिस वालों से मार खाने के बाद, ज़मीन पर गिरते हैं। यही सही वक़्त होता है, जब इन देशी डोनों की अक्ल काम करने लगती है। इन देशी डोनों के पास इस तरह विपत्ति पड़ने पर, पुलिस से बचने के कई अजमाए तरीके उनके जेब में रहते हैं। बस, फिर क्या ? सौभाग मलसा झट जेब में हाथ डालकर निकालते हैं, पिसी हुई लाल मिर्ची पाउडर का पैकेट। उस पैकेट खोलकर, पाउडर को फेंकते हैं उन पुलिस वालों की आँखों में। बेचारे पुलिस वाले अपनी आँखें मसलने लगते हैं, तब-तक सौभाग मलसा उनके चंगुल से निकलकर भाग खड़े होते हैं। फिर, क्या ? धर-कूंचो धर-मचलो, भागते हुए रेलवे क्रोसिंग फाटक तक पहुँच जाते हैं। माल गाड़ी आने वाली है, इस करण फाटक बंद है। फाटक बंद होने से, सड़क पर कई गाड़ियां खड़ी है। तभी दूर से, माल गाड़ी आती दिखायी देती है। इस माल गाड़ी को आते देखकर, ट्रक ड्राइवर सरदार निहाल सिंह गीत "उड़ी उड़ी रे पतंग मेरी उड़ी रे.." गाते हुए झट

ट्रक का फाटक खोलते हैं। फिर झट पायदान पर पांव जमाकर वे, ट्रक पर चढ़ जाते हैं, मगर जैसे ही वे अपने ड्राइविंग सीट पर बैठते हैं..तभी उनकी कमर पर दबाव महशूस होता है, फिर सौभाग मलसा की कड़कदार आवाज़ सुनायी देती है।]

सौभाग मलसा – तेरी पतंग बाद में उड़ेगी, पहले चलेगी तेरी ट्रक। अभी जो सवारी गाड़ी निकली है, उसका पीछा कर। और फटा-फट, उस गाड़ी को पकड़ा दे मुझे। न तो फिर मेरे इस तमंचे से, तेरे प्राण यह गये..वह गये। समझ गया, या नहीं ?

[सौभाग मलसा के तमंचे की नाल का दबाव, सरदारजी की कमर पर बढ़ने लगा। निहाल सिंह डरते हुए, ट्रक को चालू करते है। फिर गेयर बदलकर उसकी रफ़्तार बढ़ा देते है, अब वह ट्रक हवा से बातें करने लगती है। थोड़ी देर में ही रोहट रेलवे स्टेशन आ जाता है, स्टेशन के बाहर ट्रक को रोककर सरदारजी कहते हैं..]

निहाल सिंह – [गाड़ी को रोककर, कहते हैं] – सत श्री अकाल, सेठ आ गया तेरा रोहट रेलवे स्टेशन। [फाटक खोलकर, कहते हैं] फटा-फट, पकड़ ले तेरी गाड़ी। अब जाकर देख ले प्लेटफोर्म पर, तेरी गाड़ी आ रही होगी। वाहे गुरु, फ़तेह।

सौभाग मलसा - [सरदारजी की कमर से, तमंचे की नाल हटाते हुए] – युग-युग जीयो, सरदारजी। तूने मेरा काम निकाला है, तुम पर जब भी विपत्ति पड़े तब मुझे याद करना। [जेब से देसी दारू की बोतल और अपना विजिटिंग कार्ड, निकालकर उसे थमाते हैं] अब यह सम्भाल मेरा विजिटिंग कार्ड, और यह ले दारु की बोतल..पीकर मस्त हो जाना। अब मैं चलता हूं, जय बाबा की।

[अब सौभाग मलसा ट्रक से उतरकर, प्लेटफोर्म की तरफ़ जाने के लिए अपने क़दम बढ़ाते हैं। इधर दारु की बोतल देखकर, सरदार निहाल सिंह ख़ुशी से झूम उठते हैं। कारण यह रहा, रास्ते में हर आने वाली चौकी पर पुलिस वालों को पैसे खिलाते-खिलाते उनकी जेब ख़ाली हो गयी थी। फिर बिना पैसे, वे कहां से दारु की बोतल ख़रीदकर लाते ? और कैसे, अपना नशा पूरा करते ? मगर अब सरदारजी का भाग्य बदला, और दारु की बोतल के दीदार हो गए हैं सरदारजी को। बस, फिर क्या ? वे ख़ुशी से, झूम उठते हैं। अब बोतल थामे, करते हैं भांगड़ा डांस। उधर दूसरी तरफ़ चलते-चलते सौभाग मलसा सोचते जा रहे हैं, के 'पहला काम उस मोहन लाल को पकड़कर इतना पीटूंगा, के उसको उसकी नानी याद आ जाय। इसके बाद, उसको दिखाऊंगा मोबाइल पर तैयार की गयी विडियो फिल्म। जिसमें वह जुलिट से, अपने पांवों पर मूव ट्यूब मसलाता जा रहा है। और साथ में उससे, प्रीत-भरी बातें भी करता जा रहा है। फिर उसे धमकी देता हुआ यह कहूँगा, के 'देख नालायक, तू इस विडियो फिल्म में कैसे परायी नारी के साथ इश्क लड़ाता जा रहा है ? अब मैं इस विडिओ फिल्म की कई कोपियां तैयार करूंगा, एक कोपी भेजूंगा तेरी बेर लाडी बाई के पास, दूसरी कोपी भेजूंगा तेरे हेड ऑफ़िस। फिर लाडी बाई और तेरे बड़े अफ़सर, क्या गत बनाएंगे तेरी इस फिल्म को देखकर ? अब या तो तू मेरा नीला बैग लाकर दे दे, नहीं तो ये तेरी सारी रोमांस भरी बातें सबके सामने चौड़ी कर दूंगा..तब कहीं जाकर, मेरी दिल-ए-ख़्वाहिश पूरी

होगी।' इस तरह बड़बड़ाते हुए चितबंगे की तरह चलते जा रहे हैं, और भूल जाते है वे किससे टकरा रहे हैं या वे किसको कुचल रहे हैं ? तभी उन्हें कुत्ते के किलियाने की आवाज़ उनके कानों को सुनायी देती है, और विचारों की कड़ी टूट जाती हैं। वे देखते हैं, उनके पांव के नीचे एक काबरिया कुत्ता आ चुका है। वह किलियाता हुआ उनकी पिंडली पकड़ लेता है, और ज़ोर से काट जाता है। फिर क्या ? वो तो झट काटकर सीधा बन्नाट करता हुआ भागता है, और आगे चल रहे कुली नंबर एक की दोनों टांगों के बीच से निकल जाता है। अचानक इस तरह इस कुत्ते की हरक़त से वह कुली नंबर एक घबरा जाता है, और वह अपना संतुलन खो देता है। सर पर रखा बोक्स गिर पड़ता है, जो सीधा आकर गिरता है पीछे से आ रहे सौभाग मलसा के ऊपर। सर पर इतना भारी बोझा पड़ते ही बेचारे सौभाग मलसा गिरते हैं, भौम पर। दर्द के मारे, चिल्लाते हुए कहते हैं...]

सौभाग मलसा – [ज़ोर से कराहते हुए, कहते हैं] – मार दिया रे, मेरे बाप। अरे मेरी कमर टूट गयी रे, मुझे कोई उठावो रे...!

कुली नंबर एक – [पीछे मुड़कर, गोविंदा स्टाइल से कहता है] – अरे ओय मानव, तू तो धरती का बोझ है रे। हम जैसे कुली तुम जैसों का बोझ लादे चलते हैं। बोल, उठा दूं तूझे इस ख़िलक़त से ? धरती का बोझ, हल्का हो जायेगा।

[इसका व्यंग-भरा कथन सुनते ही, उसके पहलू में चल रहा यात्री हंसता हुआ कह देता है..]

यात्री – [हंसते हुए कहता है] - उठा दे यार, उठा दे इस धरती के बोझ को। इस ख़िलक़त से ही उठा दे, इसे। इसके साथ तू भी चला जा, ऊपर वाले भगवान के पास। वहां जाकर, तू अपनी मज़दूरी ले लेना।

[उसका कथन सुनकर, आस-पास खड़े यात्री ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे। उनकी हंसी सुनकर, कुली नंबर एक आब-आब होकर, सौभाग मलसा को उठाता है। सौभाग मलसा उठकर, चल देते हैं प्लेटफोर्म की ओर। जहां उनकी दिल-ए-ख़्वाहिश, पूरी होने वाली है। ना तो वे उस कुली नंबर एक को धन्यवाद कहते हैं, और ना उन हंसने वाले यात्रियों पर वे गुस्सा करते हैं। उधर वह कुली नंबर एक, नीचे पड़े बोक्स को उठाता है..फिर बोक्स उठाये चल देता है, प्लेटफोर्म की तरफ़। मंच पर अँधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच पर वापस रौशनी फ़ैल जाती है। अब, गाड़ी का मंज़र दिखायी देता है। काम पूरा होने के बाद, अब मोहनजी की गैंग वापस अपने केबीन की तरफ़ लौटती दिखायी देती है। उन्हें आते देखकर, आस करणजी अच्छी तरह से बैठ जाते हैं। उनके आते ही, उन्हें ख़ाली सीटों पर बैठाते हैं। मोहनजी की गैंग बैठ जाती है, ख़ाली सीटों पर। अब रतनजी, रोकड़ का बैग आस करणजी ओ सम्भला देते हैं। फिर समझा देते हैं, उन्हें पूरा हिसाब।

मोहनजी – [हाथ ऊंचा करके, आलस मरोड़कर कहते हैं] – आस करणजीसा, अब आप आराम कर चुके हैं ना ? इन टी.टी.यों के जलसे का चन्दा इकठ्ठा करता-करता मेरे बाबा रामा पीर, मेरे दोनों पांव अकड़ चुके हैं। असहनीय दर्द, हो रहा है। लीजिये आप दूर हटिये, अब मैं आराम से लेट

जाता हूं।

[आस करणजी कलेक्शन से प्राप्त रुपये और दूसरे सामान संभालकर, रख देते हैं अपने बैग में। अब उस ख़ाली बैग को वे दीनजी को थमा देते हैं। फिर अपनी सीट से उठ जाते हैं, उनके उठते ही मोहनजी झट लेट जाते हैं वहां। अब आस करणजी ख़ाली सीट पर बैठते हुए, कहते हैं..]

आस करणजी – [सीट पर बैठते हुए कहते हैं] – जीते रहो, मोहनजी। युग-युग जीयो, मोहनजी आप और आपकी गैंग। कितना अच्छा कलेक्शन लाये हो, यार..दिल खुश कर दिया आपने।

राजू साहब – अब जनाब, आपका काम बन गया ना..आसकरण जी ?

आस करणजी – जी हाँ। [मोहनजी की तरफ़ देखते हुए, कहते हैं] जलसे का ख़ास काम आपने पूरा करके, बहुत सहयोग दिया है आपने। अब मैं आपकी क्या ख़िदमत करूँ, जनाब ? मिठाई-विठाई मंगवाकर आप लोगों को खिला दूं, तो मेरी दिल-ए-ख़्वाहिश पूरी हो जायेगी।

मोहनजी – क्यों मंगवाते हो, यार ? अभी हमारे साथियों में से कोई कहेगा के..[दीनजी की तरफ़ देखते हैं] मुझे है, मधुमेह की बीमारी..कैसे खाऊं ? [रतनजी की तरफ़ देखते हैं] फिर कोई बोलेगा, मेरे मुंह में दांत ही नहीं..कैसे खाऊं ? [रशीद भाई को देखते हुए] फिर हमारे सेवाभावी बोलेंगे, बाबा का हुक्म हो गया..मैं जा रहा हूं, पाख़ाने...

रतनजी – फिर मंगवा दीजिये, मोहनजी की मनपसंद "एम.एस.टी. कट चाय।

दयाल साहब – वो भी पियेंगे, जनाब। पाली स्टेशन पर, भाऊ की दुकान पर।

रशीद भाई – चाय पाइए बासी या ठंडी, पहले इनसे पूछ लेना [मोहनजी की तरफ़ देखते हुए, कहते हैं] के, पीने के बाद जनाब क्या कहेंगे ? पहले आपको कह दूं, आपको अपनी दिल-ए-ख़्वाहिश पूरी करने के लिए आपको इस तरह के ताने [ओलमे] सुनने ही होंगे, जनाबे आली मोहनजी से। के...

रतनजी – [कथन पूरा करते हुए कहते हैं] – के, ऐसी क्या बासी चाय पायी रे कढ़ी खायोड़ा ? ऐसी चाय पानी थी तो पिला देते, लूणी स्टेशन पर..तो, रामा पीर आपका भला करता।

आस करणजी – [हंसते हुए, कहते हैं] – चाय..चाय, क्यों बोलते जा रहे हैं ? मोहनजी कहे तो इनको चाय से स्नान करवा देता हूं, ये कहे जिस स्टेशन पर।

[गाड़ी तेज़ गति से चलती हुई दिखायी दे रही है, अचानक रशीद भाई को याद आ जाता है, रोहट स्टेशन निकल गया है..अत: अब उन्हें हो गया है, बाबा का हुक्म। अब उठना तो है ही, अब आने वाला है पीर दुल्हे शाह हाल्ट। बस जनाब के क़दम बढ़ जाते हैं, पाख़ाने की तरफ़। उनको जाते देखकर, दीनजी उन्हें रोकते हुए कहते हैं..]

दीनजी – जनाब, कहाँ तशरीफ़ ले जा रहे हैं ? कहीं बाबा का हुक्म तो नहीं हो गया, जनाब ?

रशीद भाई – [रूककर, बैग से साबुन की बट्टी बाहर निकालते हुए कहते हैं] – जनाब ने सही फ़रमाया, अब चलते हैं पाख़ाना। हजूरे आलिया का हुक्म हो तो, हुज़ूर आपको भी ले जाकर बैठा दूं पाख़ाने में...बैठे-बैठे, पाख़ाने की सुगंध लेते रहना।

ओमजी – हम तो ठहरे, बाबा के मुरीद। बाबा जो हुक्म करता है, हमें तो तामिल करना है जनाब।

समझ गए, रशीद भाई ? बाबा चाहेगा, तब दीनजी भा'सा भी आपके साथ पाख़ाने की सुगंध लेने चल पड़ेंगे।

[अब दीनजी भा'सा, क्या जवाब देते..? उनको तो शर्म आ रही है, जवाब देने में। और साथ में डर भी था, कहीं रशीद भाई अपनी हाज़िर-ज़वाबी से और कोई डायलोग बोलकर उनके लबों पर ताला न जड़ दे ? तभी मोहनजी को याद आता है, वे अभी-तक लघु-शंका से निपटे नहीं है। याद आते ही, लघु-शंका नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाती है। वे झट उठ जाते हैं, फिर दोनों पाख़ाने की ओर अपने क़दम बढ़ा देते हैं। अब रशीद भाई इस पाख़ाने में घुसते हैं, तब मोहनजी झट दाख़िल होना चाहते हैं दूसरे पाख़ाने के अन्दर। मगर, करते क्या, बेचारे मोहनजी ? उनका रास्ता रोककर, सौभाग मलसा सामने खड़े हो जाते हैं। अब वे उन्हें धमकाते हुए, कहते हैं..]

सौभाग मलसा – मुझे बहुत मिठाई खिला दी रे तूने, इस लूणी स्टेशन के ऊपर। अब मेरी इच्छा है, के पावणा तूझे भी थोडा प्रसाद दे दूं ?

[इतना कहकर सौभाग मलसा ने मोहनजी का गिरेबान पकड़कर, उन्हें पीटना चाहा मगर.. मोहनजी थे पूरे सावचेत, क्योंकि वे ठहरे गोपालिये के भाई। ऐसी कुश्तियों के दाव-पेच, तो वे बचपन में खेलते-कूदते अपने दोस्तों पर अजमा चुके थे। बस, फिर क्या ? भईजी ने मारी एक लात, सौभाग मलसा की रानों पर। दर्द के मारे सौभाग मलसा कराहते हुए आकर सीधे गिरते हैं, धरती पर। उनके नीचे गिरते ही, मोहनजी ने मारी दूसरी लात उनकी पिछली दुकान पर। फिर क्या ? उनके उठते वक़्त मोहनजी ने एक बार और लात मारी, बेचारे सौभाग मलसा लात खाकर गिरते हैं चम्पाकली के ऊपर। बेचारा चम्पाकली सामने से आ रहा था, गुलाबे का हाथ पकड़े हुए। इन दोनों हिज़ड़ो को, क्या पता ? अभी सवा मन का बोझा आकर गिर जायेगा, उनके कोमल बदन के ऊपर। यह बोझ तो इतना भारी है, जिसको संभालने की ताकत इन दोनों हिज़ड़ो में कहाँ..? बेचारे धड़ाम से आकर गिरते हैं, पीछे से आ रही बुढ़िया पानी बाई के ऊपर। इन दोनों हिज़ड़ो के नीचे दबी पानी बाई चमकी ज़ोर से, तभी उसे दिख जाते हैं भूतों के बाप मोहनजी। उनको देखते ही बुढ़िया का सर भन्नाने लगा, अब उसको पूरी तरह से भरोसा हो जाता है, इस इंसान के बदन पर भूतों ने अपना कब्ज़ा जमा रखा है। इस कारण ये भूत-प्रेत इस आदमी को बाध्य करते हैं, के वह गाड़ी में शैतानी हरक़त करता रहे। फिर, क्या ? इन हिज़ड़ो को एक तरफ़ धकेलकर वह उठती है, और डरकर गाँठ लेकर भाग जाती है दूसरे केबीन में। रास्ते में ज़ोर-ज़ोर से, लोगों को सुनाती जाती है..]

पानी बाई – [ज़ोर से चिल्लाती हुई, जाती है] – अरे मेरे बाबजी, जहां मोहनजी मौजूद रहते हैं..वहां नाचे, भूत-प्रेत। ओ मेरे खेतालाजी, अब यह बुढ़िया कभी यहाँ नहीं बैठेगी।

[इस बुढ़िया को इस तरह भागते देखकर, डब्बे में बैठे यात्रियों के मध्य हलबली मच जाती है। अब वे हर दूसरे यात्री को भूत होने का समाचार कहते हुए, अफ़वाह फैलाते जा रहे हैं। कोई कहता है, डब्बे में भूत है..तो कोई कहता है, आसेब आ गया है वापस। उधर आसेब के आने के

समाचार सुनते ही, चाचा कमालुदीन अपनी बीबी को आवाज़ लगाकर ज़ोर से कहते हैं..]
चाचा कमालुदीन – अरी ओ मेरी नूरमहल। कित्ती पांण समझाया तूझे, के इमामजामीन पहन ले इमाम जामीन पहन ले। मगर तू तो मेरी बात को काना कोनी ढालती ? अब मर अपने लक्खण से, डब्बे में घुस गया है आसेब।
हमीदा बी – [मोहनजी की तरफ़, उंगली का इशारा करती हुई कहती है] – देख नी रिया है, कै आँखें फूटोड़ी है तुम्हारी ? यह तो वो ही आदमी है, जिसने कमरू दुल्हन की ओढ़नी नापाक की थी। मरता नहीं, नासपीटा। मैं सच्च कहती हूं, इस नासपीटे को लग गया, आसेब।
[हमीदा बी अपने दोनों हाथ ऊपर ले जाती हुई, बाबा पीर दुल्लेशाह से प्रार्थना करती है..]
हमीदा बी – [हाथ ऊपर ले जाती हुई कहती है] – बाबा पीर दुल्लेशाह। बचा दे इस बार, अगले जुम्मेरात आकर आपकी मज़ार पर शिरनी ज़रूर चढाऊंगी। इस बार मेरी ख़ता को माफ़ कर दे, बाबा। [मोहनजी की तरफ़ उंगली का इशारा करती हुई] बाबा अभी इस आसेबज़द को बांधकर भेजती हूं, आपके दरबार में।
चाचा कमालुदीन – अरी ओ बेग़म, पीर दुल्लेशाह हाल्ट आने वाला है। अब कैसे ले जाओगी, इसे बांधकर ? कौन बांधेगा, इसे ?
हमीदा बी – नूरिये के अब्बा, स्टेशन पर उतरकर सीधे पीर बाबा की मज़ार पर चलेंगे। बाबा का परचा है..वहां ले चलेंगे, इस मरदूद को। अब नूरिया कमबख्त, कहाँ चला गया ? अब इस मरदूद को बांधेगा, कौन ?
[अब हमीदा बी इधर-उधर अपनी निग़ाहे डालती है, शायद कहीं वो नूरिया दिखायी दे जाय ? वो दिखायी देता, कैसे ? वो तो बेंच पर बैठा-बैठा झपकी ले रहा है, और उसके निकट खड़ा है, किन्नर चम्पाकली। जो गाड़ी में सफ़र करने वालों से, पैसे मांग रहा है। हमीदा बी को इस तरह इधर-उधर आँखें फाड़ते देखकर, चाचा कमालुदीन कहते हैं..]
चाचा कमालुदीन – अरी ओ बेग़म, काहे आँखे फाड़-फाड़कर इधर-उधर देख रही हो ? [उंगली से इशारा करते हुए] तुम्हारा नूरिया तो उस बेंच पर, बैठा-बैठा झेरा खा रिया है। दीखता नहीं क्या, तुमको ?
हमीदा बी – [नूरिये को ज़ोर से आवाज़ देते हुए] – अरे ओ नूरिया, क्या पड़िया-पड़िया ऊंघ ले रिया है ? ज़रा ऊठ, पकड़ इस नासपीटे को..[मोहनजी की तरफ़ उंगली से इशारा करती हुई, आगे कहती है] बांधकर लेजा दे, बाबा की मज़ार पे। कमबख्त का, आसेब उतर जायेगा। पीपे पे बाँध के जो रस्सी लाया था तू, उसी से बांध दे इसे।
[नूरिया अपनी अम्माजान की लताड़ पाकर, आँखें मसलता हुआ उठता है। उसकी आँखों से नींद जाने का, कोई सवाल नहीं। बेचारा, बार-बार झपकी खाता जा रहा है। अम्मी का हुक्म पाकर चितबंगे की तरह रस्सी ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर हाथ मारता है, मगर पलकें भारी होने के कारण, वो देख नहीं पाता..के, उसका हाथ कहाँ जा रहा है ? उसके पास खड़ा है, चम्पाकली..जो इस वक़्त

गाड़ी में बैठे यात्रियों से, पैसे मांग रहा है। उसके घाघरे का नाड़ा बाहर निकला हुआ है, इससे बेख़बर होकर वह पैसे मांगता जा रहा है। नूरिये का हाथ पीपे पर पड़ना चाहिये था, मगर ख़ुदा की पनाह नूरिया का हाथ उस लटकते घाघरे के नाड़े को छू जाता है, बस उसे वह रस्सी समझकर वह उसे खींचकर लेने की कोशिश करता है। घाघरा खुलने को हुआ, बस बेचारे चम्पाकली की शामत आ जाती है। झट हाथ में रखे रुपये-पैसे फेंककर, चम्पाकली दोनों हाथों से अपना घाघरा थाम लेता है। इस तरह बेचारा हिज़ड़ा नंगे होने से बच जाता है, अब वह नाड़े को अच्छी तरह से बांधकर घाघरे को नीचे गिरने से बचा लेता है। फिर गुस्से में उस नूरिये की पिछली दुकान पर, जमा देता है एक ज़ोर की लात। लात खाते ही नूरिये की नींद खुल जाती है, और वह दर्द से कराह उठता है। देर रात तक, कल नूरिये ने टी.वी. में देखी थी भूतों की फिल्म। अब अचानक पड़ी लात को समझ बैठा, के कालिये भूत ने मारी होगी लात। बस अब वह डरकर, ज़ोर से "आसेब, आसेब आ गया" चिल्लाने लगता है। उसे भयभीत देखकर, ख़ुद हमीदा बी भी सहम जाती है। उसका बदन कांपने लगता है, अब वह अलग से चिल्लाती हुई ज़ोर से कहती है..]

हमीदा बी – [डर से चिल्लाती हुई, कहती है] – आसेब...आसेब, डब्बे में आसेब आ गया। अब इस इस मूंछों वाले आदमी से आसेब निकलकर, घुस गया है हिज़ड़े में। ख़ुदा रहम, ख़ुदा रहम अब बचा रे पीर बाबा दुल्लेशाह।

[पास बैठे चौधरीजी को आती नहीं यह उर्दू भाषा, फिर बेचारे क्या समझे..किसे कहते हैं "आसेब" ? आख़िर बोले बिना, उनसे रहा नहीं जाता। झट चाची हमिदा बी से सवाल कर बैठते हैं।]

पास बैठे चौधरीजी – क्या घुस गया, चाची ?

[उधर उनकी घरवाली चौधरण लोक-लाज बताती हुई, घूंगट ऊंचा करके कहने लगती है..]

चौधरण – अरे, ओ गीगले के बापू। चुप-चाप बैठे रहिये, आपको क्या ? जिसके अन्दर घुसा, उसे होगी तक़लीफ़। आपको, क्या लेना-देना ? अब बोलो मत, कहीं वह आपके अन्दर न घुस जाये..फिर उसे निकालना मुश्किल हो जायेगा।

[डब्बे के सभी केबिनों में मच जाती है, धमा-चौकड़ी। कोई कहता भूत, तो कोई कहता प्रेत..कहीं से किसी यात्री की आवाज़ आती है, यह तो है, आसेब। कोई यात्री कहता जा रहा है, के 'यह तो खबीस है।' इधर चाचा कमालुदीन के परिवार की, हालत पतली होती जा रही है...उनका परिवार, पीर दुल्लेशाह का वज़ीफ़ा पढ़ने लगता है। इस तरह इस खिलके के कारण मोहनजी को काफी वक़्त मिल जाता है, बचने के लिए। वे झट दौड़कर, सीधे घुस जाते हैं पाख़ाने के अन्दर। रास्ते के बीच पड़े सौभाग मलसा लम्बी सांस लेते हैं, अब उनके बदन का दर्द कुछ कम हो गया है। चेतन होने के बाद, वे आँखें खोलकर सामने देखते हैं..उनको दिखायी देता है, एक फ़क़ीर। जो भगवा कपड़े पहना बैठा है, वो भी उनके घुटने से अपना घुटना अड़ाकर। यह इंसान, कोई सीधा लग नहीं रहा है। क्योंकि इसने सौभाग मलसा से बिना इज़ाज़त लिए, उनकी थैली से दारू की बोतल बाहर निकालकर पीनी चालू कर दी है। अब वे उस फ़क़ीर को आंखे फाड़कर देखते हैं, और

सोचते जा रहे हैं के “मैं इस इलाके बड़ा डोन हूं, जो गांजे तस्करी करने वाले तस्करों का सरदार है। अब यहाँ इस कालाबेलिये की इतनी कैसे हिम्मत हो गयी, जो बिना इज़ाज़त लिए मेरी थैली से दारु की बोतल निकालकर पीता जा रहा है ? ग्रामीण इलाके की सारी औरतें मेरा नाम लेकर अपने बच्चों को डराकर कहती है ‘मेरे लाडके बेटे सो जा, नहीं तो आ जायेगा सरदार सौभाग मल।’ अब यह मेरा बाप करमठोक, आया कहाँ से ?” इतना सोचकर, सौभाग मलसा उस फ़क़ीर से कहते हैं..]

सौभाग मलसा – [आँखें तरेरकर, कहते हैं] – तू कौन है, मेरे बाप ?

फ़क़ीर – [आँखें टमकाता हुआ, कहता है] – आँखें मत फाड़ रे, झाहू चूहे। कल धुंदाड़ा गाँव में, तू चुराता था गाय-भैंस। अब तू मुझे दिखा रहा है, अपनी आँखें ? कमबख़्त तेरी ये आँखें निकालकर गोटी खेल सकता हूं, तू जानता नहीं मुझे..मैं कौन हूं ?

सौभाग मलसा – कहो मेरे बाप, आप है कौन ?

फ़क़ीर बाबा – मैं हूं, चपकू गैंग का सरदार ‘फ़क़ीर बाबा।’ सो रही ठकुराइनों की चोटियां काट लाता हूं, उनकी आँखों का काज़ल चुराने वाला मैं ही हूं..मैं हूं अलामों का बाप, ‘फ़क़ीर बाबा।’ अरे रे, काले चूहे। तू मुझे बिल्ली समझकर, नाच चूहे की तरह। जानता नहीं, तेरे जैसे कई डॉन मेरी जूतियाँ उठाते हैं।

[चपकू गैंग का नाम सुनकर, सौभाग मलसा घबरा जाते हैं। इस गैंग के ख़तरनाक कारनामें, देसी डॉन-जगत में कुख्यात है। जैसे दाऊद इब्राहीम की डी कंपनी मोहम्मद अली मार्ग वाले इलाक़े में अपना असर रखती है। उस क्षेत्र के जवान लोंडे इस कंपनी में भर्ती होने की दिल-ए-ख़्वाहिश रखते हैं, वैसे ही इस ग्रामीण इलाक़े के जवान लौंडे इस चपकू गैंग में काम करने की दिल-ए-ख़्वाहिश रखते हैं। इस गैंग में काम करने के चांस किसी तरह मिल जाये, इसके लिए वे तरसते हैं। ख़ास तौर से यह चपकू गैंग, रेलवे प्लेटफोर्म और रेल गाड़ियों में यात्रियों के माल पार करने का काम किया करती है। इनकी गैंग के मेम्बरों को कई तरह की भाषा आती है, और वे कई इल्म की जानकारी रखते हैं। कई तरह के नशों व जहर की तो, ये लोग विशेष जानकारी रखते हैं। यात्रियों को सम्मोहित करने में, इनको महारत हासिल है। इस गैंग ने, पूरे रेलवे महकमें का सुख और चैन छीन लिया है। गैंग की पूरी जानकारी दिमाग़ में आते ही, सौभाग मलसा झट उठकर फ़क़ीर बाबा के चरण छूते हैं और उनसे निवेदन करते हैं..]

सौभाग मलसा – [चरण छूकर, कहते हैं] – हुकम अन्नदाता। मुझे माफ़ कीजिये, ग़लती हो गयी मुझसे। मैं आपको पहचान नहीं पाया, आप मेरे ऊपर मेहरबानी रखें। बाबजी मैं आपका सेवक, पहले से दुखी हूं। हुक्म दीजिये, मैं आपकी ख़िदमत कर सकूं ?

फ़क़ीर बाबा – सुन ले, अच्छी तरह से। मैं जैसा कहता हूं, वैसा ही तू कर। नहीं तो, तेरी मौत यह आयी। मैं जानता हू, तू क्यों परेशान है ? सावधानी नहीं रखी तूने, अब इसी कारण तू अभी फुठरिये जैसे तुच्छ प्राणी से तला जा रहा है। तेरा नीला बैग, वह ला नहीं रहा है तेरे पास। और

तू, उसका बाल बांका नहीं कर पा रहा है।
सौभाग मलसा – हुकूम, सत्य वचन।
फ़क़ीर बाबा – बैग में रखे हैं, तेरे तस्करी धंधे के हिसाबी-काग़ज़ात। अब तूझे यह डर है, कहीं ये काग़ज़ात पुलिस के हाथ न लग जाये। अगर लग गये, तो तूझे यह पुलिस गंगाजी में डाल देगी।
सौभागमालसा – सत्य वचन, अन्नदाता। अब आप ही मझे बचा सकते हैं, मेरे आका, मैं आपकी पनाह में हूं। मेरी इज़्ज़त बचाना, अब आपके हाथ में है। मुझे किसी तरह आप बचा लीजिये, बाबजी।
फ़क़ीर बाबा – मगर सौभाग्या, तू जानता नहीं ? इस दुनिया में, बिना लिये-दिये कोई काम बनता नहीं। इस हाथ ले, और इस हाथ दे। मगर, तू अभी फ़िक्र कर मत।
सौभाग मलसा – जी हाँ।
फ़क़ीर बाबा – यह देख, तेरी जीव की देण है यह मोहन लाल। उस कुचमादी ठीकरे से मैं ख़ुद निपट लूँगा, उसके बाद मैं जो काम तूझे सुपर्द करूंगा उस काम को तूझे..
सौभाग मलसा – [अपने दोनों कान पकड़कर, कहते हैं] – बराबर सावधानी रखता हुआ, आपके काम को अंजाम दूंगा। आगे से कोई ग़लती नहीं होगी, बस बाबजी आप अपना हाथ मेरे सर पर रख दीजिये। आप इस आदमी से, मेरा पीछा छुड़ा दीजिये।
फ़क़ीर बाबा – देख रे, चूहे। यह मोहन लाल बार-बार युरीनल में जाता है, और वहां अन्दर जाकर दीवार पर लिखे मादक डायलोग पढ़कर आनंद लेता है। ऐसा लगता है, यह इंसान बड़ा रसिक है। अब तू ऐसे कर, के..[हाथ की उंगलियां हिला-हिलाकर गूंगे-बहरों की सांकेतिक भाषा में समझाने की कोशिश करते हैं]
सौभाग मलसा – बाबजी सा, इस तरह उंगलियां हिलाने से, मेरे भोगने में कुछ पल्ले नहीं पड़ता। अब क्या करूँ, मालिक ? आप अच्छी तरह से समझा दीजिये, मुझे।
फ़क़ीर बाबा – देख तेरे गैंग की कमलकी सांसण के मोबाइल नंबर, इसके हाथ लग गये हैं। अब तू इस फुठरिये के पास जा मत, बस अब तू यों कर।
सौभाग मलसा – जो हुकूम।
फ़क़ीर बाबा - तू ध्यान रख, अभी यह फुठरिया किसी का मोबाइल मांगकर लेगा। फिर करेगा यह, उस कमलकी को फ़ोन। अब तू उस कमलकी को फ़ोन करके कह दे, के 'उसका फोन आने पर वह उससे मीठी-मीठी बातें करें और उसको नाणा-बेडा के मेले में बुला ले।'
सौभाग मलसा – मेले में क्यों, बाबजी ? वहां बैठाकर उससे, हरी-कीर्तन करवाना है क्या ?
फ़क़ीर बाबा – बीच में मत बोला कर, चूहे। पहले, मेरी बात सुना कर। अब सुन, वहां गौतम मुनि का मंदिर है, वहां हमेशा की तरह मेला भरा जाने वाला है। उसको उस मेले में बुला ले, फिर मैं उसको वहां देख लूँगा।
सौभाग मलसा – जी हुज़ूर, आगे कहिये।

फ़क़ीर बाबा - तू देखते रहना, मैं उसकी क्या गत बनाता हूं ? उसकी सात पुश्तें याद रखेगी, मुझे। [दारू की बोतल थमाते हुए] अब तू बची हुई मेरी प्रसादी ले ले, और इसे पीकर मस्त हो जा।

[इतना कहकर, फ़क़ीर बाबा सौभाग मलसा के सर पर हाथ रखते हुए कहता है]

फ़क़ीर बाबा – [सौभाग मलसा के सर पर, हाथ रखता हुआ कहता है] – आज़ से मेरी कृपा, तेरे ऊपर बराबर रहेगी। [ज़ोर से गुंजारा करता हुआ] अलख निरंजन, अलख निरंजन।

[चिमटा हिलाता हुआ आगे चला जाता है, पीछे से "अलख निरंजन, अलख निरंजन" की गूंज़ सुनायी देती है। फ़क़ीर बाबा के जाने के बाद, अब सौभाग मलसा बेफिक्र होकर फ़क़ीर बाबा की लौटाई गयी दारु की बोतल से दारु पीनी शुरू करते हैं। अब बड़े डॉन का आशीर्वाद मिल जाने से, वे बहुत खुश है। अब बैठे-बैठे, वे सोचते जा रहे हैं...]

सौभाग मलसा – [होंठों में ही] – बस, अब इस कमलकी को फ़ोन करके, इस फुठरिये को बुला लेता हूं भूतिया नाडी। इस भूतिया नाडी से दो फलांग आगे है बाबजी का झूपा। बस वहीँ बैठा हूं मैं, वहां यह कमलकी उस फुठरिये को लेकर आ जायेगी मेरे पास।

[इन डोनों को, क्या पत्ता ? इन दोनों का वार्तालाप, गुलाबा चुप-चाप सुन चुका है। और साथ में वह, मोबाइल से इनकी गतिविधियों का विडिओ-क्लेप भी तैयार कर चुका है। फ़क़ीर बाबा के रुख़्सत होने के बाद, गुलाबा छुपे स्थान से निकलकर बाहर आता है। बाहर आकर वह सौभाग मलसा के पास आता है। फिर वह झुककर, सौभाग मलसा से मुजरा [झुककर सलाम] करता है। फिर ताली बजाता हुआ, कहता है..]

गुलाबा – [झुककर, सलाम करता है] – मुजरोसा, खम्मा घणी अन्नदाता। आज़ तो सेठ साहब, बहुत मुस्करा रहे हैं। [ताली बजाकर, आगे कहता है] अब कुछ ख़र्चा-पानी हो जाना चाहिए, मालिक। मालकां का भण्डार, भरा रहे।

[आज़ सौभाग मलसा का दिल खुश है, क्योंकि आज़ इनकी मुलाक़ात हो गयी है, बड़े डॉन से। इस कारण आज़ इनकी कली-कली खिल गयी है। फिर क्या ? अब सौभाग मलसा खुश होकर, जेब से कई सौ के कड़का-कड़क नोट निकालते हैं। और उन नोटों को अपने ऊपर वारकर, थमा देते हैं गुलाबा को। और साथ में, उससे कहते हैं..]

सौभाग मलसा – [नोट देते हुए, कहते हैं] – आज़ तबीयत खुश कर दे, गुलाबा। लगा ठुमका, और फिर सुना मुझे ठुमरी।

[गुलाबा ब्लाउज में नोट खसोलकर, गीत गाता हुआ घूमर लेकर नाचता जाता है।]

गुलाबा – [गीत गाता हुआ, नाचता जाता है] – थारे कन्नै अेक आलौ गाबौ, नै म्हारै कन्नै है अेक नागी देह। दे सकोला कांई थे दो बेंत गाबौ ? थारै कन्नै अेक रुळी ज़िंदगी। दे सकोला कांई थे, रैवण नै म्हने दो गज़ ज़मीन ?

[गाड़ी का इंजन सीटी देता है, अब गाड़ी ने अपनी रफ़्तार बना ली है..वह तेज़ गति से, पटरियों

पर दौड़ रही है। इस गाड़ी की खरड़-खरड़ आवाज़ के आगे, गीत सुनायी देना बंद हो गया है। इधर सौभाग मलसा के मोबाइल पर घंटी आती है, मोबाइल को कानों के पास ले जाकर वे बात करते हैं..]

सौभाग मलसा – [फ़ोन पर] – कौन है ?

मोबाइल से आवाज़ आती है – जनाब, मैं कमलकी हूं। हुज़ूर, कैसे याद किया आपने ?

सौभाग मलसा – [मोबाइल पर] – तू धीरज रख़, आ रहा हूं मैं..! वहीँ बैठी रहना तू, कहीं चली मत जाना।

[मोबाइल बंद कर, सौभाग मलसा उसे जेब में रखते हैं। फिर वे रुख़्सत होते दिखायी देते हैं। उनको रुख़्सत होते देखकर, गुलाबो पीछे से कहता है।]

गुलाबो – वाह रे, सेठ। तेरी दिल-ए-ख़्वाहिश पूरी हुई, अब मेरी दिल-ए-ख़्वाहिश पूरी होगी।

[गाड़ी की गति धीमी हो जाती है, पीर दुल्लेशाह हाल्ट आ गया है। गाड़ी प्लेटफोर्म पर आकर रुकती है। थोड़ी देर में मंच पर अन्धेरा छा जाता है।]

खंड ८, "दिल-ए-ग़म"

लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

[मंच पर रौशनी फैलती है, पटरियों पर अहमदाबाद-मेहसाना जाने वाली लोकल गाड़ी सीटी देती हुई तेज़ रफ़्तार से दौड़ती दिखाई देती है। अब स्टेशन पीर दुल्लेशाह हाल्ट, पीछे रह गया है। मोहनजी व रशीद भाई, आमने-सामने वाले युरीनल से अचानक बाहर आते हैं। उतावली में वे एक-दूसरे को देख नहीं पाते, और दोनों के सर आपस से टकरा जाते हैं। टकराने से, उनके दिमाग़ की नसे झन-झना जाती है। दर्द तो हुआ है, मगर मोहनजी इस दर्द की परवाह करने वाले कहां ? वे मुस्कराते हुए, हास्य-विनोद की मीठी चिकोटी काटते हुए रशीद भाई से कह देते हैं..]

मोहनजी – [सर दबाते हुए कहते हैं] – मर्दों से टक्कर खाते हो, यार ? ऐसी टक्कर आप किसी छमक-छल्लो से खाते, तो यार रशीद भाई आपको बहुत मज़ा आता।

रशीद भाई – [दोनों कानों में, अंगुली डालते हुए कहते हैं] – अलाहोल विल कूवत, ऐसी गंदी बातें करने वाले इंसान को दोज़ख नसीब होता है जनाब। अभी जस्ट निकला है, पाक पीर दुल्हे शाह हाल्ट..

मोहनजी – [आर दबाते हुए, कहते हैं] – जस्ट निकला है..तो मैं क्या करूँ कढ़ी खायोड़ा ?

रशीद भाई - आपको लोगों से ख़िदमत करने की बात करनी चाहिए, और सोचिये किस तरह आप लोगों के **दिल-ए-ग़म** को दूर कर सकते हैं ? समझिये 'किस तरह ख़िदमत करने से, सवाब मिलता

है ?’ मगर छी..छी, आपके ऐसे गंदे ख़याल ? सुनते ही आब-आब हो जाता है, इंसान।
मोहनजी – ख़िदमत की बात ? **अरे जनाब, हम लोगों से अपनी ख़िदमत करवाते हैं। हम करते, नहीं। दिल-ए-ग़म को भूल जाते हैं, जर्दा फाककर। फिर क्या ? इधर पीक थूकी, और उधर दूर हुआ ग़म बेचारा।** आप ठहरे, हमारे ख़िदमतगार। फिर आप मेरी जगह जाकर, लोगों की ख़िदमत कर लीजियेगा।
रशीद भाई – अरे जनाब, मुझे कहाँ ख़िदमत करने का कह रहे हैं आप ? मैं ठहरा दुबला-पतला आदमी, वह भी अस्थमा का मरीज़। आपके लिए अच्छे ख़िदमतगार गुलाबो और चम्पाकली बन सकते हैं, तुज़ुर्बेदार मालिशकर्ता ठहरे जनाब।
मोहनजी – उनको बुलाना मत, कढ़ी खायोड़ा..!
रशीद भाई – क्यों नहीं, जनाब ? दो मिनट में आपकी मालिश करके, आपकी एक-एक हड्डी चटखा देंगे...फिर जनाब, आपकी ख़िदमत में ऐसे मालिश-कर्ताओं को बुला देना ही अच्छा है।
मोहनजी – [आंखें तरेरकर, कहते हैं] - आटा वादी कर रहा है, तेरा ? मेरा क्या काम, इस हिज़ड़ो की फ़ौज से ? इन लोगों को बार-बार पानी पीलाकर, मुंह लगाया है आपने। आपके कारण ही, ये...
रशीद भाई – मालिश होने दीजिये, फिर एक बार क्या ? बीस बार बुलाओगे, उन्हें। आप कहो तो, आपकी शिफ़ाअत लगवा दूं ? वे मेरा बहुत कहना मानते हैं, जनाब।
मोहनजी - दूर रखो, तुम्हारी शिफ़ाअत। इन हिज़ड़ो से, मेरा क्या काम ? आप इन लोगों के निकट रहते हैं, अब आप बन जाओ इनके जैसे..यानी, [ताली बजाते हैं] छक्के। समझ गए, आप ?
रशीद भाई – [गुस्से में कहते हैं] - अब बेफिजूल की बकवास कीजिये मत, जाकर बैठ जाइये अपनी सीट पर। अगर आपको नहीं बैठना है तो, मैं यह गया अपनी सीट पर बैठने।
[आख़िर कब-तक रशीद भाई बर्दाश्त करते, मोहनजी का फूहड़ व्यवहार ? रशीद भाई चले जाते हैं, और आकर अपनी सीट पर बैठ जाते हैं। डब्बे का दरवाज़ा खुला हुआ है, जहां ताज़ी हवा लेने के लिए चौधरण आकर खड़ी हो गयी है। गाड़ी की रफ़्तार के कारण, दरवाज़े से तेज़ वायु के झोंका आता है..जो चौधरण के ओढ़ने को फर-फर उड़ाता जा रहा है, वह अपने रिदके को संभाल नहीं पा रही है। ठंडी हवा उस चौधरण के ज़ब्हा पर छाये पसीने के एक-एक कतरे को, सूखाती जा रही है। उसके दिल में मची हुई है, उतावली..के, कब पाली स्टेशन आयेगा ? इस उतावले मन को शांत करने के लिए, वह गाड़ी के बाहर गुज़र रहे बस्ती के मंज़र को देखती जा रही है। और प्रतीक्षा कर रही है, के ‘पाली स्टेशन कब आ रहा है ?’ उधर मोहनजी सोच रहे हैं, के ‘अभी तक पाली स्टेशन आया नहीं है, आये तब तक वे अपने हाथ-मुंह धोकर तरो-ताज़ा हो सकते हैं।’ ऐसा सोचकर, वे अपना बैग केबीन से ले आते हैं। ताकि वे अपने धुले हाथ-मुंह, बैग में रखे तौलिये से पौंछ सके। अब गले में बैग लटकाये, वे वाश-बेसिन के पास आते हैं। वे अपने हाथ-मुंह, धो डालते हैं। हाथ-मुंह धोने के बाद, वे बैग से तौलिया निकालने के लिए हाथ बढ़ाते हैं। मगर तौलिया तो उनके हाथ में आता नहीं, मगर उस चौधरण का उड़ता रिदका [ओढ़ने का पल्लू] उनके हाथ लग

जाता है। उस रिदके [ओढ़ने के पल्ले को] को हवा उड़ाती हुई, मोहनजी के पास ले आयी है। फिर क्या ? मोहनजी बिना देखे, झट उस रिदके से अपने हाथ-मुंह पौंछ डालते हैं। जब वह रिदका हवा से उड़कर वापस चौधरण के मुंह को ढक देता है। चौधरण अपने मुंह से रिदके [ओढ़ने के पल्लू] को दूर हटाती है, मगर उस गीले रिदके का गीलापन, चौधरण को ठंडक का अहसास दिलाता है। जिसे पाकर, चौधरण भ्रम में पड़ जाती है..के 'गीगला तो है चौधरीजी के पास, वो यहाँ है नहीं.. फिर इस रिदके पर, मूतने वाला है कौन ? आख़िर, इसे गीला किसने किया ?' उस बेचारी चौधरण को, हकीक़त का क्या पता ? के, मोहनजी उसके साथ कुबदी कारनामा कर चुके हैं...रिदके से, अपने गीले हाथ-मुंह पौंछकर। अब चौधरण को डब्बे में भूत के होने की बात याद आ जाती है, और चाची हमीदा बी की बात भी याद आ जाती है, जहां मोहनजी मौज़ूद होते हैं वहां भूत-प्रेत [आसेब] की शैतानी हरक़तें शुरू हो जाती है। बस अब जैसे ही वाश-बेसिन के पास खड़े मोहनजी को, वह देखती है...देखते ही, उस चौधरण के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वह चिल्लाती हुई, अपने केबीन में दाख़िल हो जाती है।

चौधरण – [चिल्लाती हुई, ज़ोर से बोलती है] – ओ गीगले के बापू, भूत आ गया भूत। वह मेरे ओढ़ने पर, मूतकर चला गया।

[बेचारे चौधरीजी समझ नहीं पाते हैं, के "चौधरण **दिल-ए-ग़म** से परेशान है, या उसे परेशान कर रहा है आसेब का भय ?" बस, वे तो बेचारे चिल्लाकर कह बैठते हैं..]

चौधरीजी – [केबीन में चिल्लाते हुए, ज़ोर से कहते हैं] – चुप-चाप बैठ जा, गीगले की बाई। अभी करता हूँ, रामसा पीर का जाप। तू धीरज रख, घर पहुंचते ही पहला काम करूँगा..खेतलाजी के मंदिर, जाने का। वहां जाकर, सवामणी करूंगा।
[उधर दूसरी तरफ़, उस चौधरण के चले जाने के बाद..मोहनजी हंसते हुए, अपने केबीन में चले आते हैं। वहां अपनी सीट पर आकर, बैठ जाते हैं। फिर मींई-मींई निम्बली की तरह, अपने लबों पर हाथ रखकर हंसते जाते हैं। उनको देखते ही रशीद भाई की छठी इन्द्री चेतन हो जाती है, वे अनुमान लगा लेते हैं साहब कहीं जाकर अपना कुबदी कारनामा दिखलाकर आये हैं। उधर आस करणजी की उन पर निग़ाह गिरते ही, वे उन्हें कहते हैं।]

आस करणजी – [मोहनजी को देखकर, कहते हैं] – मोहनजी, अब आप आराम से लेट जाइये, आप काफ़ी थके हुए हैं।
मोहनजी – [दीनजी भा'सा का बैग लेकर अपने सिरहाने रखकर, लेट जाते हैं] – यह लेट गए

मोहनजी, भा’सा और हुक्म दीजिये।
[मोहनजी लेटने के लिए, ऐसे धमककर तख़्त पर..अपने भारी बदन को, डाल देते हैं। उनके लेटते ही तख़्त का पाटिया, हिलता है जोर से। क्योंकि पाटिया के पेच, ढीले कसे हुए हैं। और वो पाटिया पीछे वाले केबीन के तख़्त के पाटिये से जुड़ा हुआ है, इस कारण पाटिया ज़ोर से हिलता है। उस पर बैठे गोपसा और उनके दूसरे साथी, फुदकते हैं। जो इस वक़्त वहां बैठे, ताश के पत्ते खेल रहे हैं। उनको फुदकते देखकर, सामने के तख़्त पर बैठे अनिल बाबू बोल उठते हैं]
अनिल बाबू – [हंसते हुए कहते हैं] – क्यों कूद रहे हो, गोपसा ? क्या एक बार और, फीस आपके हाथ आ गयी क्या ? फीस आने से, आप डर गये क्या ? चलिये जल्दी फीस डालिए, ताश के पत्तों को।
गोपसा – मेरा काम फीस करने का ही है, मैं आपको देता हूँ लेता नहीं हूँ।
[इतना कहकर, गोपसा ज़ोर का ठहाका लगाते हैं। इस ताश खेलने वालों की टीम में जो अनिल बाबू नाम के शख़्स है, उनकी शख्सियत के बारे में जितना कहो उतना ही कम है। जनाब गोर वर्ण के बांके जवान है, मगर इनकी दो आदत लोगों को अच्छी नहीं लगती..एक है, अपने साथियों के पत्तों को बार-बार झांककर देख लेना और दूसरी है छूटे द्वि-अर्थी संवाद बोल देने की। ये जनाब, न्याय महकमें के मुलाज़िम ठहरे। इनके द्वि-अर्थी संवाद सुनकर, कोई सीधा इंसान शर्मसार हो जाता है। मगर इन संवादों का माकूल जवाब देने में, इनकी टीम का हर मेंबर इनसे चार क़दम आगे है। जिनमें गोपसा तो जनाब, ऐसे जवाब देने में विशेषज्ञ माने जाते हैं। इनके आगे, ये अनिल बाबू अक़सर निरुत्तर हो जाया करते हैं। इस वक़्त वे अपनी आदत से बाज़ आते नहीं, और जनाब बोल देते हैं द्वि-अर्थी कथन।
अनिल बाबू – ले लीजिये, जनाब। मैं तो देने के लिए तैयार बैठा हूँ, मेरा तो उठ गया है।
गोपसा – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – कितनी बार दे सकते हो, यार ? फिर कमज़ोर पड़ना मत, जनाब।
[ये द्वि-अर्थी संवाद, पीछे लेटे हुए मोहनजी को सुनायी दे जाते है, वे झट उठकर आ जाते हैं गोपसा वाले केबीन में। वहां आकर, वे तख़्त पर बैठते हैं। फिर, जनाबे आली मोहनजी खिड़की से आ रही धूप को इंगित करके कहते हैं]
मोहनजी – [तख़्त पर बैठते हुए कहते हैं] – ठोकिरा, यहाँ तो अच्छी धूप है। [खिड़की से आ रही धूप से उनकी एक आँख स्वत: बंद हो जाती है] ज़्यादा विचार मत कीजिये, देने में मैं भी कम नहीं पड़ता हूं। साहब बहादुरों, तैयार बैठा हूँ मैं देने के लिए। कहिये, किसको लेना है..कितनी बार ले सकते हैं, आप ?

[मोहनजी और इन दोनों महानुभवों के द्वि-अर्थी कथन सुनकर, फर्श पर बैठा एक ग्रामीण

शर्मसार हो जाता है। इस वक़्त वह अपने सर पर लाल पगड़ी पहने इतरा रहा है, जिसका कारण है उसकी नयी पगड़ी..जिसे उसने कल ही बाज़ार से ख़रीदी थी, मगर यहाँ सभी बैठे यात्री शहरी हैं...इसलिए न तो वे उसकी पगड़ी देख रहे हैं, और न वे उस पर कोई तारीफ़ के दो बोल सुना रहे हैं। ऊपर से ऐसे द्वि-अर्थी संवाद सुनकर, उसे आ जाता है..क्रोध। उसका कारण यह है कि, उसके पास बैठी है, उसको घरवाली। भारतीय सभ्यता है भी ऐसी, जो ऐसे संवाद औरतों के सामने बोलने की इजाज़त नहीं देती। इस कारण, झट वह अपनी घरवाली को, ज़बरदस्ती दूसरे केबीन में भेज देता है। फिर, क्रोधित होकर वह सब को कटु लफ्ज़ सुना बैठता है]

पगड़ी वाला ग्रामीण – [क्रोधित होकर, कटु लफ्ज़ सुनाता है] – आप लोग पढ़े-लिखे दिखाई देते हैं, मगर आप लोगों में बोलने की कोई तमीज़ नहीं। तुम लोगों के बोल सुनकर, डब्बे में बैठी औरतें शर्मसार हो रही है। [मोहनजी को सुनाते हुए] ये भले इंसान, जिनकी उम्र हो गयी है पचपन की। अरे राम राम, औरत को देखकर आँख मारते हैं ?

अनिल बाबू – [पगड़ी वाले का गिरेबान पकड़कर, कहते हैं] – क्या कह रहा है, ठोकिरे ? हम लोगों को बोलने की, कोई तमीज़ नहीं ? अभी उतारता हूं तेरी तमीज़ को। तू क्या समझ रहा है, डोफा ? हम लोग, रुलियार हैं ? सुन, तेरे दिमाग़ में भरा हुआ है, कीचड़। मेरा उठ गया, जनाब। यानी मेरा डी.ए. एरियर का भुगतान उठ गया, समझा कुछ...ओ, माता के दीने ?

[इतना कहकर उसे धक्का देते हुए, उसका गिरेबान छोड़ देते हैं। गिरेबान छूटते ही वह ग्रामीण जाकर गिरता है, गोपसा की गोदी में। उस ग्रामीण को दूर हटाकर गोपसा, उसे ताना देते हुए कहते हैं]

गोपसा – [ग्रामीण को दूर हटाते हुए, कहते हैं] – सुन भाया मेरी बात, मेरे ऊपर चढ़ गये पोइंट फीस कूटते-कूटते। अब सोच, कोई तो मुझे इन चढ़े पॉइंट्स के रुपये उधार देगा ? मैंने कुछ कह दया, तो कौनसा गुनाह कर डाला मैंने ? अब बोल भाया, यह तेरी यह उम्र है मेरी गोदी में बैठनी की ?

[गोपसा का ताना सुनते ही, वो ग्रामीण आब-आब होने लगा। फिर क्या ? झट उठकर, खड़ा हो जाता है। अब गोपसा उस पर खारी नज़र डालते हुए, उससे कहते हैं]

गोपसा – [खारी नज़र डालते हुए, कहते हैं] – ओ पगड़ी वाले भईजी, अब क्यों मुंह झुकाए खड़े हैं ? सुनो, मैंने उनको जवाब देते हुए यह कहा ‘आप कितने रुपये उधार दे सकते हैं ?

अनिल बाबू – कह दीजिये इनको, फिर आपने क्या कहा ?

गोपसा – मैंने यही कहा के, ‘मैं तो, लेने को तैयार बैठा हूं।’ यह बात कही थी, मैंने। बोलो भईजी, मैंने क्या कहा ? पहले अच्छी तरह सुना करो, फिर बोला करें, आप। भईजी हो तो आप, एक सौ आठ नंबर के।

अनिल बाबू – [कटीली मुस्कान लबों पर छोड़ते हुए] – महा…महा…
[इतना बढ़िया प्रवचन सुनकर, अब वह पगड़ी वाला क्या कहता ? अब इस पगड़ी वाले की इज़्ज़त की बखिया उधेड़ते हुए, मोहनजी कहते हैं]
मोहनजी – ठोकिरा कढ़ी खायोड़ा, पागल जैसे बोलता जा रहा है..मेरी आँख बंद हो गयी, इस तेज़ धूप के कारण। अब और आगे सुन, मैंने इन लोगों से कहा के 'मैं फीस देने के लिए तैयार हूं..कहिये, किसका साथी बनू ? मैं कोई हारने वाला पूत नहीं हूं, ताश के खेल में।'
अनिल बाबू – [आंखें तरेरते हुए, कहते हैं] – अब बोल रे, पगड़ी वाले चौधरी। बता तू, ये मूंछों वाले मोहनजी सज्जन आदमी है या नहीं ? बता तू, कब इन्होंने फाटे-फुवाड़े शब्द बोले ? बोलता है कमबख़्त गतागेले की तरह, 'ये भले आदमी उम्र हुई पचपन की, और आंखें मारते हैं औरतों को देखकर ?
[इसके आगे उस पगड़ी वाले में, सुनने की ताकत कहाँ रहती है ? वह तो वहां से नौ दो ग्यारह हो जाता है, और दूसरे केबीन में जाकर लम्बी-लम्बी सांसें लेता है। उसके अन्दर भय व्याप्त हो गया है, कहीं ये बदमाश आकर उसकी धोती नहीं खोल दे ? इस ताश खेलने वाली टीम को कहाँ फ़िक्र, उस बेचारे ग्रामीण के **दिल-ए-ग़म** को जानने की ? उस पगड़ी वाले के चले जाने के बाद, सभी खिल-खिलाकर ज़ोर से हंस पड़ते हैं। अब, मोहनजी कहते हैं]
मोहनजी – धन्य हो, साहबजादों। कैसी भाषा है, आप लोगों की ? आप लोगों को इनाम मिलना चाहिए, होली की ग़ैर में। आप लोगों के आगे तो, होली की ग़ैर में श्लील गीत गाने वाले माई दासजी फीके पड़ जायेंगे। वाह मेरे भाई, आप बोलते हो द्वि-अर्थी-डायलोग और वे गाते हैं द्वि-अर्थी श्लील गीत। बेचारे ऐसे गाते हैं, नाथू रामसा वाली ए…
अनिल बाबू – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – पहले सुनो, मोहनजी। हम सब हैं, गोपालिये के दोस्त। इसीलिए लोग, हम लोगों से दूर ही रहते हैं। अब कहिये, आपको हमसे गुरु-मंत्र लेना है ? गोपालिया का भाई बनना है तो, कह दीजिये हमें।

मोहनजी – गोपालिया का भाई ज़रूर बनूंगा जनाब, बात तो तगड़ी है। मगर पहले आप यह बताइये, के 'आख़िर, यह गोपालिया है कौन ? उस बेचारे की कथा क्या है ?'
गोपसा – देख लीजिये, मोहनजी। सोच समझकर सहमति देना, हम सब तो है ओटाळ। आप हैं, सीधे-सादे आदमी। आप जैसे सीधे आदमी को, हम जैसे ओटाळो से बहुत दूर ही रहना चाहिए।
मोहनजी – ओटाळपने का कोई बिल्ला होता है, क्या ? स्वाभाव से मैं ख़ुद ओटाळ ही हूं, ओटाळ क्या ? मैं तो ठहरा, ओटाळो का सरदार। तब ही लोग हम चारों दोस्तों को कहते हैं **"यह चांडाल-चौकड़ी, बड़ी अलाम हैं।"** बस, आप तो गोपालिये की कथा सुनाइये।
[गाड़ी का इंजन, सीटी देता है। सीटी सुनते ही अनिल बाबू झट खिड़की से बाहर झांककर, बाहर

का नज़ारा लेते हुए गीत गाते हैं।]
अनिल बाबू – [गीत गाते हैं] – इंजन की सीटी में मेरा मन डोले, मेरा तन डोले [मुंह अन्दर लेकर, आगे गाते हैं] चलो चलो रे भाया, होले होऽऽले। सीटी बजे ज़ोर की, और बढ़े दिल की धड़कन। मोहनजी के चक्कर में, छूट न जाए पाली। पाली आयो रे भाया, होले होऽऽले। अब चलो रे भाया, होले होऽऽले।

गोपसा - [अपना बैग संभालते हुए, कहते हैं] - गुमटी दिखने लग गयी है। हम सभी पाली स्टेशन पर उतरकर, अपने-अपने दफ़्तर जा रहे हैं। मोहनजी मालिक। आपके कहे अनुसार, कथा बांचते रहेंगे तो...
अनिल बाबू – [बात पूरी करते हुए, कहते हैं] – आपके साथ हमें भी, खारची चलना पड़ेगा। [ताश की जोड़ी देते हुए कहते हैं] लीजिये मोहनजी, ताश की जोड़ी। आपके सेवाभावी रशीद भाई को, संभला देना। अब हम सब जा रहे हैं, जय श्याम री सा..फिर मिलेंगे।

मोहनजी – अरे मालिक, वह तो फटा-फट उतर जाएगा..

गोपसा – शाम को दे देना जी, गाड़ी में। [फिर, मारवाड़ी में कहते हैं] अैड़ो कांई खाटो-मोळो हुवे, म्हारा बाप ?
अनिल बाबू – मोहनजी, अपना जीव दुखाना मत। शाम को गाड़ी में मिलेंगे, तब गोपालिये की कथा ज़रूर बांच लेंगे। [मारवाड़ी में कहते हैं] मालक, अबै चालां सा। जय बाबा री सा, बाबो भली करे।
मोहनजी – आपकी चाल ही खोटी है, मगर आप हो आदमी लाख रुपये के।
[फिर क्या ? यह ताश खेलने वालों का दल अपने बैग उठाकर, डब्बे के दरवाज़े की तरफ़ क़दम बढ़ा देता हैं। इन लोगों के जाने के बाद, अब बदमाश चम्पाकली केबीन में आता है..और मोहनजी को घूरकर, देखता जाता है। फिर अचानक उनको देखता हुआ, ताली बजाता है। मगर मोहनजी उसको भाव देते नज़र नहीं आते, वे उठकर अपने केबीन में चले जाते हैं। जहां उनके साथी बैठे हैं, केबीन में आकर वे रशीद भाई को ताश की जोड़ी संभाला देते हैं। फिर आकर, आस करणजी के अड़ो-अड़ उनके पास बैठ जाते हैं। आस करणजी अब चालान-डायरी, चंदे की रसीद-बुक, ज़रूरी काग़ज़ात, छेद करने की मशीन, वगैरा संभालकर, अपने बैग में रख चुके हैं। फिर, वे मोहनजी से कहते हैं]
आस करणजी – [मोहनजी से कहते हैं] – मोहनजी, मेरे पास इतने शब्द नहीं है के 'मैं आपकी तारीफ़ के पुल बाँध सकूं। आप कितना बढ़िया कलेक्शन करके, लाये, इसके लिये मैं आपकी जितनी भी तारीफ़ करूं...वह कम है।'

[खिड़की के पास खड़े चम्पाकली को, आस करणजी के एक-एक शब्द सुनायी देते हैं। सुनकर उसका दिल जलने लगता है, और मोहनजी की असलियत जानकर उसे दुःख होता है, के 'मोहनजी की **यह चांडाल-चौकड़ी बड़ी अलाम है, कमबख़्त फर्ज़ी चैकिंग पार्टी बनकर गुलाबा और उससे लुट ली हफ़्ते-भर की कमाई।** वे दोनों बेवकूफ बने हुए, उनकी असलियत नहीं जान सके ? अब वह अपना दिल जलाता हुआ, होंठों में ही कहता है]
चम्पाकली – [होठों में ही, कहता है] – अरे रे रे, तू तो मोहन लाल निकला कमबख़्त। अरे राम राम, तू चैकिंग मजिस्ट्रेट नहीं था ? अच्छा गेलसफ़ा बनाया, मुझे। कुछ नहीं रे, अब मैं मेरी कलाकारी दिखलाती हूं तूझे। अब मैं तेरी ऐसी गत बनाऊंगी, के तू पूरी ज़िंदगी-भर याद रखेगा के 'कभी कोई चम्पाकली नाम की किन्नर, तूझे मिली थी।'
[चम्पाकली जहां खड़ा है, वहां पास एक खिड़की है। अब मोहनजी पीक थूकने के लिये, उस खिड़की के निकट आकर मुंह बाहर निकालकर पीक थूकते हैं। फिर नाक सिनकते हैं, हाथ पौछने के लिए वे अपनी ज़ेब से रुमाल निकालने के लिए हाथ बढ़ाते हैं। मगर, यह क्या ? ज़ेब के पास तो उनका हाथ गया नहीं, और बीच में फार-फर उड़ता चम्पाकली का ओढ़ना, उनके हाथ में आ जाता है। मोहनजी उसे रुमाल समझकर, अपने हाथ साफ़ कर लेते हैं। हाथ साफ़ करने के बाद ताज़ी हवा खाने के लिए, डब्बे के दरवाज़े के पास आकर खड़े हो जाते हैं। बेचारा चम्पाकली जान न सका, मोहनजी ने क्या कुबद कर डाली ? वह तो खड़ा-खड़ा प्लानिंग बनाने में व्यस्त दिखायी दे रहा है, वह सोच रहा है "मोहनजी से, किस तरह बदला निकाला जाय ? ऐसी तगड़ी प्लानिंग बनानी है, जिससे उनको फंसाया जा सके ?" आख़िर, सोच समझकर वह योजना बना डालता है। फिर क्या ? दरवाज़े के पास अकेले खड़े मोहनजी के पास आता है, और उनके कान में फुसफुसाकर अपनी योजना को अंजाम देने का प्रयास करता है।]
चम्पाकली – [फुसफुसाता हुआ, कहता है] – देखो मोहनजी, नाणा-बेड़ा में गौतम मुनि का मेला चलेगा पूरे पांच दिन। बस आप आज़ ही चले जाओ, मेले में। वहां जाकर, मज़ा लुटना ज़िंदगी के। [मोबाइल नंबर लिखा हुआ काग़ज़ उन्हें थमा देता है]
मोहनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – मुझे क्यों थमा रहा है, यह काग़ज़ ?
चम्पाकली – जिस सुन्दरी के मोबाइल नंबर युरीनल की दीवार पर लिखे हुए हैं, वही नंबर इस काग़ज़ में लिख दिए गए हैं। बस अब आप इस सुन्दरी को नाणा-बेडा के मेले में बुला देना, उसके वहां आने पर आप उसे भूतिया नाडी जैसे एकांत-स्थल पर ले जाकर मज़े लुट लेना ज़िंदगी के। माल बहुत ख़ूबसूरत है, मेरे सेठ।
[चम्पाकली की बात सुनकर, मोहनजी उतावले हो जाते हैं..उस ख़ूबसूरत बला से, मुलाक़ात करने। अब वे सोचते जा रहे हैं, के **'हम भी इस जासूस मेजर बलवंत से, कौन से कम हैं ? हम भी जाकर इस रहस्य से पर्दा उठा सकते हैं, आख़िर हम ठहरे अलाम चांडाल-चौकड़ी के सरदार**

?’ फिर, क्या ? झट-पट जा पहुंचते हैं, आस करणजी के पास। और जाकर उनसे कहते हैं..]
मोहनजी – भा’सा आप सभी उतरकर चले जाओ, भाऊ की केन्टीन पर चाय पीने। बस, फिर मैं आ ही रहा हूँ...आपके, पीछे-पीछे।
आस करणजी – पीछे-पीछे, क्यों जनाब ? साथ-साथ ही, चलते हैं। क्यों नखरेबाज बनते जा रहे हैं, आप ? हम कोई ग़ैर नहीं है, जनाब।

मोहनजी – जनाब आप बात को समझा करें, मुझे दफ़्तर का कोई काम याद आ गया। इसीलिए आप अपना मोबाइल देते जाइएगा, मैं फ़ोन पर बात करके शीघ्र ही आपके पास आ रहा हूँ।
आस करणजी – [मोबाइल देते हुए कहते हैं] – झट-पट आ जाना, मोहनजी। ऐसा नहीं, गाड़ी रवाना हो जाय और आप बिना चाय पीये रह जायें ?
[थोड़ी देर में, पाली स्टेशन आ जाता है। आस करणजी के साथ, सभी बैग लिए हुए..नीचे उतर जाते हैं, प्लेटफोर्म पर। अब मोहनजी को छोड़कर सभी, भाऊ की केन्टीन की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा देते हैं। उनके जाने के बाद, मोहनजी इधर-उधर देखकर तहकीकात कर लेते हैं ‘कोई आदमी उन्हें फ़ोन करता हुआ, देख न ले ?’ मगर साहब की क़िस्मत ख़राब, दो-चार यात्री आकर बैठ जाते हैं केबीन की ख़ाली सीटों पर। और उसके बाद गुलाबा अलग आ जाता है, बैग हिलाता हुआ।]
मोहनजी – [मन में धमीड़ा लेते हुए, कहते हैं] – बहुत मुश्किल से मौक़ा मिला, कढ़ी खायोड़ा। अब कहाँ से आ गए, ये करमजले ? अब कैसे करूं रे बात, इस मोबाइल से ? कुछ नहीं, युरीनल में जाकर कर लेते हैं बात।

[मोबाइल लेकर मोहनजी जाते हैं, युरीनल में। झट युरीनल में दाख़िल होकर, मोहनजी युरीनल का दरवाज़ा बंद कर लेते हैं। दरवाज़ा बंद करते ही, सामने के युरीनल से चम्पाकली बाहर आता है। और अब वह वाशबेसिन के पास खड़े गुलाबा को, फ़ोन लगाने का इशारा करता है। फिर क्या ? चम्पाकली झट मोहनजी की आवाज़ सुनने के लिए, युरीनल के दरवाज़े पर कान देकर सुनने का प्रयास करता है। जैसे-जैसे मद भरे जुमले, मोहनजी के मुंह से सुनता है..चम्पाकली लुत्फ़ लेता हुआ दिखायी देता है। उधर गुलाबा इशारा पाकर, कई लोगों को फ़ोन करता दिखायी देता है। आख़िर फ़ोन बंद करके, अब वह नतीजे का इंतज़ार करने लगता है। यहाँ तो नतीजा कुछ और ही दिखायी देता है, अचानक मोहनजी दरवाज़ा खोलते है और कान दिया हुआ चम्पाकली संभल नहीं पाता..फिर क्या ? दो पल में ही वह नीचे आकर गिरता है, नीचे आँगन पर बैठी खां साहबणी मंगती के ऊपर। वह मांगती खा रही थी, बाबा पीर दुल्हे शाह का प्रसाद। चम्पाकली क्या गिरा, उस पर ? उस बेचारी का, रोम-रोम कांप जाता है। वह उस मंज़र को देख चुकी थी,

जब इसी चम्पाकली नाम के हिज़ड़े में आसेब घुस गया था। और आसेबज़द: चम्पाकली ने चाचा कमालुदीन के छोरे फकीरे को, लात मारकर कैसे उत्पात मचाया था ? इस वाकया को याद करती हुई, उस मंगती के बदन में भय की सिहरन दौड़ने लगती है। तभी उसे यह भी याद आता है, बाबा का प्रसाद दरगाह के बाहर लाया नहीं जाता..और वह उस प्रसाद को, यहाँ लेकर आ गयी। इसीलिए बाबा ने पर्चा दिया है, इस आसेबज़द: हिज़ड़े को इसके बदन के ऊपर गिराकर। अब वह पछता रही है, क्यों पीर बाबा का प्रसाद वह यहाँ लेकर आयी ? प्रसाद बाहर नहीं ले जाने का क़ायदा इसने तोड़कर, बाबा को क्रोधित किया है। अब तो पीर बाबा दुल्हे शाह, ज़रूर उस पर कहर बरफायेंगे। यह विचार दिमाग़ में आते ही, वह घबरा जाती है। और वहां से उठकर, वह तेज़ी से दौड़ती है। मगर रास्ते में खड़े सौभाग मलसा से टक्कर खा बैठती है, और नीचे गिरने से बचने के लिए वह उनके गले का हार बन जाती है। इस तरह सौभाग मलसा की बाहों में पड़ी उस खां साहबणी मंगती को देखकर, मोहनजी ज़ोर का ठहाका लगाकर हंसते हैं। फिर, सौभाग मलसा पर ताना कसते हुए, मोहनजी कहते हैं]

मोहनजी – [हंसते हुए कहते हैं] - साला साहब, क्या अब आपके ऐसे दिन आ गए..जो आपको मार्ग जाती मंगतियों के साथ, मस्ती करनी पड़ती है ?

[इतना कहकर मोहनजी, फटाक से गाड़ी से उतर जाते हैं। और प्लेटफोर्म पर चलते, वे भाऊ की केंटीन की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा देते हैं। सौभाग मलसा को बतलाकर जनाब मोहनजी ने ग़लती कर डाली है, उनके बतलाते ही सौभाग मलसा रिड़कते सांड के तरह लपकते हैं, मोहनजी की तरफ़। इस तस्करों के सरदार से डरकर मोहनजी, तेज़ गति से भाऊ की केन्टीन की तरफ़ बढ़ते हैं। सौभाग मलसा रूपी कालंधर नाग को पीछे आते देख, मोहनजी ओलंपिक दौड़ के एथलीट की तरह आगे बढ़ते जा रहे हैं। पीछे-पीछे सौभाग मलसा मोहनजी को आवाज़ देते हुए, उनका पीछा करते जा रहे हैं। तभी सौभाग मलसा को, भाऊ की केन्टीन पर खड़े आस करणजी दिखायी दे जाते हैं, उन्हें देखते ही सौभाग मलसा को सांप सूंघ जाता है। फिर क्या ? वे उलटे पाँव भागते हैं, डब्बे की तरफ़। मोहनजी भाऊ की केन्टीन पर आकर, क्या देखते हैं ? आस करणजी, दयाल साहब, राजू साहब, के.एल.काकू, रतनजी, रशीद भाई, ओमजी, पंकजजी और दीनजी भा'सा खड़े-खड़े चाय पी रहे हैं। अब मोहनजी आते ही, आस करणजी को मोबाइल सौंप देते हैं। उनको देखते ही, आस करणजी भाऊ को आदेश देते हैं, के 'वह जल्दी मोहनजी को, चाय से भरा प्याला थमा देवें।' भाऊ चाय का प्याला, मोहनजी को कैसे थमाता ? उसकी केंटीन पर यात्रियों की भीड़ बहुत अधिक बढ़ चुकी है, इसीलिए वह आस करणजी की तरफ़ ध्यान नहीं देता है। आदेश की पालना न होने पर, आस करणजी नाखुश हो जाते हैं। वे चिढ़ते हुए, भाऊ को ज़ोर से कहते हैं]

आस करणजी – [ज़ोर से कहते हैं] – भाऊ रे, अरे ए रे भाऊ। अरे सिन्धी माणू सुनता नहीं है ? मोहनजी को, चाय का प्याला थमाता है या नहीं ?

[अब भाऊ सामने देखता है, आस करणजी किस भले आदमी के लिये चाय मंगवा रहे हैं। जैसे ही

उसकी नज़र, मोहनजी पर गिरती है..बस उनको देखते ही, उसे याद आ जाता है के "यह तो वही आदमी है, जो रोज़ चाय तो पी जाता है। और चलती गाड़ी में दरवाज़े के पास खड़ा होकर, मुझे कहता है "चाय के पैसे, कल दूंगा।" अब भाऊ ने पक्का इरादा बना लिया, आज़ तो मैं चाय का बकाया हिसाब पूरा करके ही दम लूँगा।" यह आख़िर तज़वीज़ बनाने के बाद, भाऊ ज़ोर से कहता है]

भाऊ – [ज़ोर से कहता है] – इनको चाय पाऊंगा तो इनके बकाया दस रुपये, आपके खाते में जोड़ दूंगा। मंजूर हो तो कहिये, जनाब।
[अब मोहनजी सोचते जा रहे हैं, 'यदि इस झकाल में पड़े रहे तो गाड़ी रवाना हो जायेगी, और बापूड़ा मैं तो बिना चाय पीये रह जाऊंगा ?' बस, फिर क्या ? काउंटर पर रखा चाय से भरा कप, मोहनजी झट उठा लेते हैं। भाऊ ने अभी-अभी चाय से भरा कप, काउंटर पर रखा था। किसी दूसरे यात्री लिए भरा गया चाय का कप, चालाक मोहनजी उठाकर पी जाते हैं। फिर फटाक से ख़ाली कप, उस काउंटर पर रख देते हैं। अब क्या काम बाकी रहा, आस करणजी से ? 'चाय पी ली और अब काम निपटा, और गुज़री नटी।' इसी कहावत को चरितार्थ करते हुए, मोहनजी रुख़्सत होते हैं। अपने डब्बे में दाख़िल होने के लिए, वे क़दमों की गति बढ़ाते जा रहे हैं। और पीछे की झकाल, छोड़ देते हैं आस करणजी के ऊपर..अब आस करणजी जाने, या भाऊ जाने अपना बकाया हिसाब ? हम तो चले, अपने गाँव। इधर इनके सारे साथी चाय पीकर वहां से खिसकते जा रहे हैं। इधर इंजन सीटी देता है, गाड़ी चल चुकी है। चलती गाड़ी का हेंडल पकड़कर, वे डब्बे में चढ़ते हैं। इस वक़्त वे यह देखना भी नहीं चाहते हैं, के 'आस करणजी किस डब्बे में चढ़ रहे हैं ?' प्लेटफोर्म छोड़ने के बाद, अब गाड़ी की रफ़्तार तेज़ होती जा रही है। इधर रास्ते में खड़े यात्रियों के कारण, रास्ता जाम हो जाता है। अब मोहनजी, आगे कैसे बढ़े ? परेशान होकर, वे ज़ोर-ज़ोर से उन लोगों को कहते जा रहे हैं]
मोहनजी – दूर हटो रे, कढ़ी खायोड़ो। मुझे जाने दो, मेरी सीट के पास।
[अचानक इस भीड़ में कोई जबरा आदमी, मोहनजी की कलाई ज़ोर से पकड़ लेता है। कलाई नहीं छुड़ा पाने पर, वे ज़ोर से चिल्लाते हुए कहते हैं]
मोहनजी – [ज़ोर से चिल्लाते हुए, कहते हैं] – हरामखोर कहीं के, किसने पकड़ी मेरी कलाई ? किसकी मां ने अजमा खाया, जिसने खाया वो आ जा मेरे सामने..! अभी देखता हूं साले कढ़ी खायोड़े, तूझे ऐसा ठोकूंगा के तूझे तेरी नानी याद आ जायेगी।
सौभाग मलसा – [सामने आकर कहते हैं] - मेरी मां ने खाया है, अजमा। पावणा, अब तू तेरी कलाई छुड़ाकर दिखा..देखता हूँ, तूझमें कितनी ताकत है ?
[यह कलाई किसी देसी डॉन ने पकड़ी है, उसे छुड़ाना मोहनजी के हाथ में नहीं। अब सौभागमलस

उन्हें खींचकर ले जाते हैं, एक ख़ाली केबीन में। फिर उनको सीट पर बैठाकर, ख़ुद उसके सामने वाली सीट पर बैठ जाते हैं। फिर, वे कहते हैं]
सौभाग मलसा – डर मत पावणा, मैंने अब सोचा है..अब तुझसे राज़ीपा कर लूं, तो अच्छा। मगर तू तो ठहरा, ओटाळ नंबर एक। इसके साथ कमबख़्त तू निकला, बड़ा अलाम।

[सामने बैठा देसी डॉन, जिसके साथ दुश्मनी रखनी ख़ुद की जान ज़ोखिम में डालने के बराबर। बेचारे मोहनजी लाचारगी से, खिड़की के बाहर देखते हैं। बाहर एक बहेलिये को ज़ाल फेंकते हुए देखते हैं, उस ज़ाल में पक्षी फंसते जा रहे हैं। अब उनको पक्षियों और ख़ुद की दशा, एकसी लगती है। बिल्ली के हाथ में यदि कबूतर आ जाता है, तब कबूतर आंखें बंद करके शांत बैठ जाता है। उसी तरह, मोहनजी इस देसी डोन को देखकर चुपचाप शान्ति से बैठ जाते हैं। अब इनका भोला चेहरा देखकर ऐसा लगता है, इनके समान कोई सीधा और भोला आदमी इस ख़िलक़त में नहीं है..?]
सौभाग मलसा – मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, तू नीला बैग लाता है या नहीं ? नहीं लाएगा, तो मुझे थोड़ा-बहुत नुक्सान हो जायेगा..जिसे मैं बर्दाश्त कर लूंगा। मगर जुलिट के साथ बातें करती हुई डी.वी.डी. ज़रूर बहन के पास भेज दूंगा, फिर देखना बहन ऐसे धोयेगी तूझे जैसे धोबी कपड़े को धो डालता है। फिर देखना..
मोहनजी – और क्या देखूं, जनाब ?
सौभाग मलसा – फिर देखना, एक डी.वी.डी. की कोपी भेजूंगा तेरे दफ़्तर। और दूसरी कोपी भेजूंगा, तेरे डी.एम. के पास। समझ गया, करम फूटोड़ा ?
मोहनजी – [भोला मुंह बनाकर, कहते हैं] – साला साहब, कौनसी डी.वी.डी. ? कैसी बात कर रहे हैं, आप ? मुझे आपकी बात, बिल्कुल समझ में नहीं आ रही है। कहीं आप भंग पीकर तो नहीं आ गए, जनाब ? भंगेरी की तरह, करड़े-करड़े बोलते जा रहे हैं, आप ?
सौभाग मलसा – भंग मैंने नहीं, तूने पी होगी ? [मोबाइल चालू करके, एम.एम.एस. दिखाते हैं] देख इधर, कैसे तू बैठा-बैठा जुलिट से मालिश करवा रहा है अपने घुटने की ? और साथ-साथ तू किस तरह, प्रेम की बातें उससे करता जा रहा है ? कुछ सुनने में आयी, मेरी बात ? अब बोल, इसे देखकर तेरी भंग उतरी या नहीं ?
[पूरा एम.एम.एस. देखकर, मोहनजी को अपने हाथ के तोते उड़ते दिखायी देने लगे। अपनी रुळीयार [चवन्नी-क्लास] आदतों के कारण, आज़ उन्हें यह दिन देखना पड़ा है। खिड़की से बाहर उन्हें खेत जोत रहे किसान की दुर्दशा का, भान होता है। बरसात का पानी खेत में भर चुका है, अब वह खेत छोटे पोखर के समान दिखायी दे रहा है..उसमें किसान की भैंस पानी में तैरती जा रही है, और वह दूध निकालने नहीं दे रही है। लाचार होकर किसान दूध निकालने का काम छोड़ देता है, और बैलों को लेकर चला जाता है। इस मंज़र को देख रहे मोहनजी, हताश होकर बड़बड़ाते

जा रहे हैं]
मोहनजी – [दुखी होकर, बड़बड़ाते हैं] – साले साहब, अब मेरी भैंस पानी में बैठ गयी है। अब आपको ही, रास्ता दिखलाना होगा। मेरे **दिल-ए-ग़म** को दूर अब आप ही करेंगे, साले साहब।
सौभाग मलसा – [खुश होकर कहते हैं] – अब भी लाकर दे दे, मेरा नीला बैग। नहीं लाया तो पावणा, तेरी ऐसी की तैशी कर दूंगा। कमबख़्त तू ज़िंदा में ज़िंदा नहीं, और मरे हुए में मरा हुआ नहीं..ऐसी हालत कर दूंगा। तेरे खोपड़े पर इतने खालड़े मारूंगा, के तेरी आने वाली सात पुश्ते मोडी पैदा होगी। समझ गया, पावणा ?
मोहनजी – [रोनी सूरत बनाकर, कहते है] – देखिये सौभाग मलसा, बैग तो है नहीं अभी मेरे पास। जानता हूँ, आपका बैग जुलिट के बैग से बदला गया। इसमें, मेरा क्या कसूर ? अब आप कहते हैं, तो पहले आप उसका असली बैग लाकर दे दो मुझे..तब मैं आपका नीला बैग, लाने की कोशिश करूँगा।
सौभाग मलसा – [सुर बदलकर, कहते हैं] – क्या कहा, पावणा ? तू कोशिश करेगा ?
मोहनजी – [भोलेपन से कहते हैं] – जुलिट के पास आपका बैग होगा तो उससे मांगकर ला दूंगा, अगर उसने किसी और को दे दिया होगा तो उससे मांगकर ला दूंगा। लाने में कौनसे पैसे लगते हैं, मेरे ? मगर भले आदमी, इस जुलिट को उसका असली बैग तो सौंपना होगा...या नहीं ?
सौभाग मलसा – [होंठों में ही] – पावणा जो बात कह रहा है, वह है तो सत्य। और है भी, क़ायदे की बात। जब मैं इसको जुलिट का बैग लाकर दूंगा, तब यह भला आदमी उससे बैग लेकर आयेगा। न तो वह पागल है, हाथ आया हुआ बैग मुफ़्त में दे देगी ? [प्रगट में] ठीक है, पावणा। कल मैं जुलिट का बैग लेकर आ जाऊंगा, या फिर तुम्हारे घर ज़रूर पहुंचा दूंगा।
मोहनजी – अब, मैं जाऊं ?
सौभाग मलसा – [मुस्कराकर, कहते हैं] – यहाँ बैठने पर, क्या तूझे चुनिया काटते है ?
मोहनजी – राज़ीपे की सारी बात हो गयी, अब सौभाग मलसा मुझे क्यों रोक रहे हैं आप ? आपके चक्कर में बैठा रहा तो, मेरे जन्नती स्वप्न टूट जायेंगे।
सौभाग मलसा – [होठों पर मुस्कान बिखेरते हुए कहते हैं] – देख पावणा। मैं तो हूँ रसिक..लफंगा नंबर एक, मगर मैं जानता हूँ तू कौनसा दूध से धुला हुआ है ? तू मुझसे चार गुना ज़्यादा है, रसिक। अब देख, ख़िलक़त की यह रीत है के 'रसिक लोग अपनी रोमांस की बातें एक दूसरे से शेयर करते हैं, छिपाया नहीं करते।'
[वैसे भी मोहनजी अपने दिल में रोमांस की बातें छिपाया नहीं करते, बिना कहे उनका खाना पचता नहीं। अब शेयर करने की बात आने पर, वे बहुत खुश होते हैं। फिर, क्या ? मुस्कराते हुए, अब वे सारी बातें कहनी शुरू करते हैं।]
मोहनजी – [मुस्कराते हुए कहते हैं, और साथ में मुंह से थूक और ज़र्दा भी उछालते रहते हैं] – यह जग की रीत है, जनाब। गर्भवती का पेट दायन से छुपा नहीं रहता है, अब सुनो मेरी बात।

आधा घंटे के पहले, मेरे पास एक ख़ूबसूरत लड़की का फ़ोन आया था। वह अपना नाम बता रही थी..शायद कोई, कमलकी विमलकी होगा ?

[कमलकी का नाम सुनते ही सौभाग मलसा के चेहरे पर मुस्कान छा जाती है, अब वे दिल में यही सोचते जा रहे हैं]

सौभाग मलसा – [सोचते हुए] – रामसा पीर तेरी कृपा बनी रहे, आज़ तो गाड़ी बराबर लाइन पर चल रही है। जैसे फ़क़ीर बाबा ने कहा था, वैसे ही गाड़ी चल रही है। अब तो जैसे बाबा ने कहा, उसी प्लान के मुताबिक़ मुझे काम करना है।

[बड़े प्रेम से सौभाग मलसा, मोहनजी को उनकी बांह थामकर उठाते हैं। और ख़ुशी से, उनको गले लगाते हैं। फिर, मुस्कराकर उन्हें कहते हैं]

सौभाग मलसा – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – पावणा, क्या कहूं आपको ? आप तो शत प्रतिशत भाग्यशाली रहे। यह कमलकी बहुत ख़ूबसूरत है, और यह छमकछल्लो अपने बदन पर किसी को हाथ रखने देती नहीं।

मोहनजी – वाह सालाजी, वाह। क्या ख़बर दी है, आपने।

सौभाग मलसा – बस अब तो आप पावणा कमर कस ही लो, उस छोरी को रिंझाने के लिए। भले आगे से आप मेरा भी [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए कहते हैं] ध्यान रखना, जब आपका काम पट जाए तब ..

मोहनजी – [बात काटते हुए कहते हैं] – यार सौभाग मलसा, आपका काम तो निकालना ही होगा, अब आप पराये आदमी तो रहे नहीं। इसीलिए अब मैं आपको अपना आदमी समझकर, अपनी समस्या आपको बता रहा हूँ। सुनिए, मेरी दोनों जेबें बिल्कुल ख़ाली है। आप तो जानते ही हैं, ऐसे कामों में जेबें भरी हुई होनी चाहिए। मगर..

सौभाग मलसा – [बात काटते हुए, कहते हैं] – क्यों फ़िक्र करते हो, पावणा ? **सौभामलसा होते जहां, वहां पैसों की क्या कमी ? ये रुपये-पैसे तो हाथ का मैल है, ये पैसे तो आते रहते हैं और जाते रहते हैं। मगर मौज-मस्ती के दिन, वापस आने वाले नहीं।**

मोहनजी – जी हाँ, ये बीते हुए रोमांस के लम्हे वापस आने वाले नहीं। बस, हाथ आया मौक़ा कभी चूकना नहीं चाहिए।

सौभाग मलसा – [ज़ेब में हाथ डालकर, पांच हज़ार रुपये बाहर निकालते हैं] – ये लो पांच हज़ार रुपये। और चाहिए, तो आप शर्म मत कीजिएगा। मांग लेना, पावणा। आप तो जानते ही हैं, जहां सौभाग मलसा हो वहां बहती है पैसो की नदी। कमाना और उड़ाना, यही मेरी ज़िंदगी है।

[इतना कहकर, वे पांच हज़ार रुपये मोहनजी को दे देते हैं। फिर वे, दूसरी ज़ेब में हाथ डालते हैं। उस ज़ेब से तीन हज़ार रुपये, और गुलाब के इत्र की शीशी बाहर निकालकर मोहनजी को देते हैं। यह इत्र किसी ज़माने में, बेगम नूरजहाँ वापरती थी। रुपये और इत्र मोहनजी को देकर, सौभाग मलसा कहते हैं]

सौभाग मलसा – [इत्र और तीन हज़ार रुपये देकर, वे कहते हैं] – ये लीजिये पावणा, पहले पानी में गुलाब जल डालकर स्नान करना..फिर अपने कपड़ो पर यह इरानी गुलाब का इत्र छिड़कना। फिर देखना, कमलकी क्या ? हूर की परियां आपके पीछे पड़ जायेगी, जैसे टी.वी. में एक्स स्प्रे के एड में दिखाया जाता है।
[मोहनजी इत्र को सूंघते हैं, फिर रुपये और इत्र को अपनी ज़ेब में रख देते हैं।]
सौभाग मलसा – इत्मीनान से आपको समझा दिया है, भूल-चूक करना मत। ऐसे मौक़े बार-बार मिलते नहीं। अब आप देखो, खारची से नाणा-बेड़ा जाने का वक़्त लगता है..बराबर दो घंटे।
मोहनजी – मुझे मालुम है, जनाब।
सौभाग मलसा – अब भूल जाओ अपने **दिल-ए-ग़म** को। अब ऐसा कीजिएगा, आप दफ़्तर जाकर वक़्त ख़राब न करें, सीधे रवाना हो जाना। मेरी चिंता मत करना, मैं आपको मेले में ढूँढ़ लूंगा।
मोहनजी – देखो साला साहब, मैं नन्हा बच्चा नहीं हूं। सब जानता हूँ, इस मेले में जाने के लिए स्पेशल बसे लगी हुई है। मैं शाम को बराबर सही वक़्त पर, मेले में पहुँच जाऊँगा। मैं पहले जाऊंगा भूतिया नाडी, वहां काम पट जाने के बाद मेले में अपने-आप आ जाऊंगा। अब आप कहिये, आप मेले में कहाँ मिलेंगे ?
सौभाग मलसा – मैंने पहले भी आपको कह दिया था, के 'मैं आपको ख़ुद ढूढ़ लूँगा, मेले के अन्दर।' बस आप किसी तरह, पहुँच जाना मेले में।
मोहनजी - बस आप फ़िक्र करना मत, मैं सब समझ गया जनाब। सौभाग मलसा, अब आप मुझे रुख़्सत होने की इज़ाज़त दीजिये। मैं ज़रूर आपसे, मेले में मिल लूंगा।
[मोहनजी बार-बार ज़ेब में हाथ डालकर नोटों की गरमी लेते जा रहे हैं, और मुस्कराते हुए देखते हैं...बदन पर, वही पहना हुआ काला सफारी-सूट। जिसे वे पहले कभी बदशिगुनी समझकर, आस करणजी से कह दिया था के 'इस सफारी सूट को, किसी फ़क़ीर को देकर सवाब ले लूंगा।' आज़ उसी सूट को, अब वे लकी नंबर एक मान रहे हैं। अब वे बेसुरी आवाज़ में, फ़िल्मी गीत की तर्ज़ पर गीत गाते हुए वहां से रुख़्सत होते हैं।]
मोहनजी – [गीत गाते हुए] – साला मैं तो साहब बन गया, साहब बन कर कैसे तन गया। सूट मेरा देखो, बूट मेरा देखो..मैं हूँ रुळीयार, एक नंबर का। देखो मैंने पटाया, कैसे पटाया ? देखो मेरी, अक्कल को। साला मैं तो साहब बन गया।
[गाते-गाते मोहनजी वहां से रुख़्सत होकर, अपने केबीन की तरफ़ क़दम बढ़ाते हैं। मंच पर, अंधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद मंच रौशन होता है। पाली रेलवे स्टेशन का मंज़र सामने आता है, वहां प्लेटफोर्म पर लगी घड़ी शाम के पांच बजे का वक़्त बता रही है। अब प्लेटफोर्म नंबर एक से दो पर जाने का, उतरीय पुल दिखायी देता है। इसकी सीढ़ियों पर कई एम.एस.टी. होल्डर्स, और कई यात्री बैठे दिखायी देते हैं। इन एम.एस.टी.होल्डर्स में रशीद भाई, रतनजी, दीनजी भा'सा, ओमजी, गोपसा व चंदूसा बैठे गपें ठोक रहे हैं। पुलिए की रेलिंग पकड़े वल्लभजी भा'सा, खड़े-खड़े

गुटका अरोग रहे हैं। ये वल्लभजी भा'सा ठहरे, मुलाज़िम बिक्री कर महकमें के। अचानक चंदूसा की निग़ाह सरकारी डेयरी के लेखाकार जोशीजी पर गिरती है, जो स्टेशन मास्टर साहब के दफ़्तर से बाहर आ रहे हैं हैं। यह दफ़्तर, इस पुलिए से कुछ क़दम ही दूर है। फिर भी स्टेशन मास्टर साहब के दफ़्तर के बाहर खड़े जोशीजी, चंदूसा के मोबाइल पर एस.एम.एस. भेजकर गाड़ी के आगमन की सूचना देते हैं। एस.एम.एस. भेजे जाने से, चंदूसा के मोबाइल पर घंटी आती है। चंदूसा मोबाइल ओन करके, मेसेज पढ़ते हैं। वे मेसेज पढ़कर, पास बैठे रतनजी से कहते हैं]

चंदूसा – [रतनजी से कहते हैं] – देखिये, रतनजी। कैसे-कैसे लोग, इस ख़िलक़त में भरे पड़े हैं। है भगवान, इनको क्या मुफ़्त की स्कीम हाथ में आ गयी..? भईजी राम पूरे दिन मचकाते रहते हैं, मोबाइल। इधर देखिये, रतनजी। कितना नज़दीक है, यह स्टेशन मास्टर साहब का दफ़्तर। फिर भी, जनाब भेजते हैं एस.एम.एस.। क्या उनके पाँव, टूटे हुए हैं ?

रतनजी – आपको क्या करना है, चंदूसा ? आपको तो, अपने काम से मतलब रखना चाहिए।

चंदूसा – मेरी बात समझा करो, रतनजी। भईजी रामजी मचका रहे हैं मोबाइल, क्या उनके पाँव काम नहीं करते ? दस क़दम चलकर, यहाँ आकर भी वे गाड़ी के आगमन की सूचना दे सकते हैं ना ?

रतनजी – इसमें, बड़ी बात क्या है ? मोबाइल उनका है, वे मर्ज़ी आये जैसा उसे उपयोग में लाये। चाहे तो फोटो खींचे, या मचकाए एस.एम.एस. भेजने के लिए। अपने बाप का क्या गया, जनाब ?

चंदूसा – [खीजे हुए, गुस्से में कहते हैं] – यार रतनजी धान की बोरियों के आस-पास रहते हुए आप, दूसरे आदमियों का ख़्याल करना भी भूल गए क्या ? आप तो 'धूल उड़ाओ' पोस्ट पर ही ठीक थे, पीकर बनकर क्या किया आपने ?

रतनजी – [ज़ब्हा पर छाये पसीने के एक-एक कतरे को रुमाल से साफ़ करके, कहते हैं] – चंदूसा, यहाँ हम-लोग ज़िंदगी और मौत के बीच लड़ रहे हैं जंग। इधर आपको, हम पर परिहास करना अच्छा लगता है ? जानिए हमारे दर्द को..समझना होगा आपको...क्या है, हमारा **दिल-ए-ग़म** ? ये मीडिया वाले तो आपके बाप हैं, थोड़ा सा अनाज क्या ख़राब हो जाता है..? झट ये कमबख़्त, नमक-मिर्च लगाकर, ख़बर छाप देते हैं अखबारों में।

रशीद भाई – अख़बारों में छापते है, के 'एक तरफ़ ये ग़रीब लोग अनाज नहीं मिलने से, भूखे मर रहे हैं..और दूसरी तरफ़ ये माता के दीने, ढेर सारा अनाज बरबाद करते जा रहे हैं। अब मैं आपको, क्या कहूं ? इन लोगों ने कब देखी हमारी स्थिति, हम कैसे जी रहे हैं ? इनको ख़ाली चाहिए, सनसनी-खेज़ ख़बर।'

चंदूसा – [उछलते हुए, कहते हैं] – क्या ग़लत छापा, इन्होंने ? पढ़िए, आज़ का अख़बार, क्या कह रही है यह डी.बी. स्टार की टीम..जो एफ़.सी.आई. की साइड पर गयी थी ? वहां जाकर क्या देखा, उन्होंने ? अब कहिये, कैसे चुप हो गए जनाब ?

वल्लभजी – क्या बोलेंगे, भा'सा ? पच्चास-पच्चास किलोग्राम के बावन हज़ार तीन सौ चालीस

कट्टों में, ज़्यादातर ख़राब सड़ा हुआ गेहूं और कीड़ा लगा हुआ..? और क्या बताऊँ, आपको ? बोरियों के बारदान दिखने में, काले-कीट दिखायी देते थे। यही गेहूं, पूरे जिले की रासन की दुकानों पर सप्लाई होने वाला था।

चंदूसा – अब और क्या बताये, इनको ? सभी रासन की दुकान वाले वहां इकट्ठे हो गए, ये सत्यनारायणजी, रमजान अलीजी, और करतो बा..और किन-किन का नाम गिनाऊं आपको ? ये सभी मौज़िज़ आदमी वहां इकट्ठे हो गए, और जांच करवाने का निवेदन करते रहे।

रतनजी – क्या बक रहे हो, चंदूसा ?

चंदूसा – कौन बकता है ? गेलसफे नहीं हैं हम, सबूत के साथ कह रहे हैं। मगर, आपके अफ़सरों को कोई फर्क नहीं पड़ता। वे तो इस कान से सुनते हैं, और दूसरे कान से बात बाहर निकाल देते हैं। और ऊपर से आपके अफ़सर यह भी कहते जा रहे हैं, के 'गुणवत्ता ज़्यादा ख़राब नहीं है।'

रतनजी – अरे चंदूसा, इसकी तो जांच विचाराधीन है। आप, फ़िक्र क्यों करते हैं ? जांच पूरी हो जाने के बाद दूध का दूध और पानी का पानी, अपने-आप सामने आ जाएगा। मगर, एक बार मेरी बात सुन लीजिये जनाब।

चंदूसा – और क्या कहना, बाकी रह गया आपको ?

रतनजी – मैं यह कहना चाहता हूँ, चंदूसा। के, 'लोगों को, दूर के ढोल सुहाने लगते हैं। जो आदमी भुगतता है, वह ही जानता है..कैसे जीना है ? देखो चंदूसा, एफ़.सी.आई. के पास पिछले माह में अनाज क़रीब था एक लाख अठाईस हज़ार चार सौ तिहोत्तर मैट्रिक टन।

रशीद भाई – चंदूसा, जिले में कुल १४ डिपो है। मेरे डिपो में पांच हज़ार आठ सौ इठयासी मैट्रिक टन अनाज आया। अब आप ही सोचिये, पिछले कई सालों से अनाज का उठाव कम होता जा रहा है। इससे..

चंदूसा – कहीं आपने अनाज बांटना, कम कर दिया होगा ?

रतनजी – समझा करो, यार। अनाज खूब आता जा रहा है, मगर यहाँ तो पिछला अनाज भी खूब पड़ा है। ऊपर से, और आ जाता है..तब उसे, हिफाज़त से रखने की समस्या बढ़ जाती है। गोदाम सारे भर चुके हैं, इसीलिए खुले में तिरपाल ढककर अनाज को रखना पड़ता है। इधर आ जाती है, बरसात। बस, बन जाता है बरबादी का जोग।

रशीद भाई – क्या कहें, आपको ? फिर यह मीडिया, पूरा दोष विभाग के ऊपर डाल देता है। क्या कभी इस मीडिया ने, मालुम करने की कोशिश की, के 'अनाज रखने के कितने गोदाम है, दवाइयां छिड़काव करने के क्या-क्या साधन है ? इन दवाइयों की, क्या दशा है ? न ये लोग जानना चाहते हैं, क्या है हमारा **दिल-ए-ग़म** ?'

चंदूसा – तो फिर ?

रतनजी – पुराने ढर्रे से चलते आ रहे हैं, बस। विदेशों में नवीनतम साधन और दवाइयां, अपना ली गयी है। मगर हमारे यहाँ पुराने तौर-तरीके ही, अभी-तक चल रहे हैं।

रशीद भाई – **इधर इस सरकार ने, नये कर्मचारियों की भर्ती बंद कर रखी है। अगले कर्मचारी या तो मर जाए या सेवानिवृत हो जाए, मगर उनके स्थान पर नये कर्मचारी लगेंगे नहीं..और इन रिक्त पदों को, सरकार द्वारा समाप्त कर दिए जाते हैं। इस तरह, नया कर्मचारी लगने का कोई सवाल नहीं।**

ओमजी – अरे जनाब, आपको क्या बताऊँ ? यह अनाज ढकने का तिरपाल इतना बड़ा होता है, हम दो आदमी इसे ऊँचाकर अनाज के ऊपर ढक नहीं सकते। क्या कहूं, आपको ? दस आदमी जितनी अकूती ताकत चाहिए, इस काम को अंजाम देने के लिये।

रतनजी – मगर इतने आदमी हमारे पास है, कहाँ ? नये आदमियों की भर्ती, सरकार करती नहीं। हम लोग रसायन का छिड़काव करते है, तब हमारे पास कहाँ है नयी तकनीक की मास्क और ऐसे ज़हरीले रसायनों से बचने के साधन ? हम लोग कैसे बचें, चंदूसा..इन ज़हरीले रसायनों से ? कहिये, जनाब।

रशीद भाई – बस भाई, चंदूसा। हमारी ज़िंदगी तो इस अनाज के कीड़े के माफ़िक बन चुकी है, कितने ही रसायन डाल दो..मगर, ये कीड़े जल्दी मरते नहीं। और हम इन रसायनों से जूंझते हुए अस्थमा, ह्रदय-रोग, केंसर वगैरा जैसी कई जानलेवा बीमारियाँ पाल चुके हैं। ये रसायन स्लो-पोइजन की तरह, बदन पर असर करते जा रहे हैं।

रतनजी – क्या करें, चंदूसा ? छिड़काव में काम आने वाला पाउडर इतना ज़हरीला है, इसे सूंघकर इंसान हमेशा के लिए मीठी नींद में सो जाता है।

ओमजी – लोगों को पराये थाल में, घी ज़्यादा पड़ा हुआ दिखायी देता है। और ये लोग, दूसरे लोगों को कहते हैं, 'हम सभी, कितने आराम से बैठे हैं।' मगर हम ही जानते हैं, पैंतीस सालों से हम कीड़े मारते-मारते ख़ुद तेल में तले जा रहे बड़े की तरह तले जा रहे हैं। किसको गर्ज़, हमारे **दिल-ए-ग़म** को जानने की ?

रतनजी - यह तेज़ गरमी और यह लू, अनाज में कीड़ो की आबादी को बढ़ा देती है। ये कीड़े, जल्दी मरते नहीं। और ऊपर से लेकर नीचे तक, हमारा पसीना बाहर निकाल देते हैं।

रशीद भाई – अरे जनाब, इन कीड़ो में तो हो गया है म्युटेशन। ऐसी नयी नस्ल बना दी है इन्होंने, के 'इन पर, किसी दवाई का असर नहीं होता।' देख लीजिये, जनाब। हमारे वक़्त के आधे से ज़्यादा आदमी मर गए हैं, यह काम करते-करते। मगर, करें क्या ? अभी-तक इन कीड़ो की नस्लें, ख़त्म होने का नाम नहीं लेती ?

रतनजी – ये कीड़े है भी बहुत ख़तरनाक, अनाज को तो बरबाद करते ही हैं..मगर, हम जैसे इंसानों को भी नहीं छोड़ते। इनके कारण हमें अस्थमा, ह्रदय-रोग आदि बीमारियां लग चुकी है, और धीरे-धीरे हम लोग मौत के दरवाज़े की तरफ़ क़दम बढ़ाते जा रहे हैं। थोडा महसूस करो, चंदूसा..क्या है, हमारा **दिल-ए-ग़म।**

चंदूसा – मगर आप लोग यह तो सोचिये, के 'सरकारी अनाज की मांग दिनों-दिन कम क्यों होती

जा रही है ?' इस बिंदु पर विचार कीजिये, और बताइये मैंने क्या ग़लत कहा आप लोगों को ?
रतनजी – इस बात को सोचने के पहले आप, किसानों की दशा के बारे में ज़रा ध्यान दीजिये। **यह सरकार, किसानों को फायदा नहीं पहुंचा रही है। क्या कहें, आपको ? सरकारी नीतियां ग़लत तरीके से लागू हुई है, जिससे अब औसत किसान के पास एक हेक्टर से ज़्यादा ज़मीन नहीं है।** यह सरकार जानना भी नहीं चाहती, किसानों के **दिल-ए-ग़म** को।
ओमजी – अरे भाई, चंदूसा। पैंतालीस साल बीत गए हैं, हरित क्रान्ति को। मगर आज़ भी किसान कर्जे में दबा है, **कई स्थानों पर कर्जे में दबा किसान ख़ुदकुशी करता जा रहा है। मगर फिर भी इस सरकार की आंखें, नहीं खुल रही है। किसे ज़रूरत, इन किसानों के दिल-ए-ग़म जानने की ?**
रशीद भाई – अरे जनाब, क्या कहें ? यह तो सोची-समझी हुई अंतर्राष्ट्रीय योजना के तहत, किसानों की हालत को और कमज़ोर किया जा रहा है। एफ़.सी.आई. की पुनर्सरचना गठित शांता कुमार कमेटी के विचार के अनुसार "किसानों को ख़ाली ०८ फीसदी न्यूनतम समर्थन मूल्य [एम.एस.पी.] मिल रहा है। इस तरह ९२ प्रतिशत किसान, तो इससे बाहर ही है।
रतनजी – क्या कहें, आपको ? ये ९२ प्रतिशत किसान, तो इस बारे में कुछ नहीं जानते। अब तो ये लोग न्यूनतम समर्थन मूल्य [एम.एस.पी.] को हटाने की, वकालत करने लग गए हैं। तीन सालों से यह सरकार ख़ाली "एम.एस.पी. प्रति क्विंटल पच्चास रुपया" ही बढ़ाए हैं, यह बात केवल कुछ किसानों को ही मालुम है।
रशीद भाई – मगर, ख़रीदना किसने बंद किया है ? राजनीति स्थान-स्थान पर, फ़ैली हुई है। इधर अनाज ख़रीदकर, किसानों को खुश कर देती है। और उधर हम लोगों को, यह सरकार नयी तकनीक के साधन जुटाकर नहीं देती। अब क्या करें, चंदूसा ? समझे आप, हमारा **दिल-ए-ग़म।**
रतनजी – किसानों को, कहाँ खुश किया जाता है ? अरे जनाब, जाकर देखिये इन व्यापारियों को। जो कहीं से या किसी तरह सस्ती दर से अनाज ख़रीदकर कर, कई गुना उसका मूल्य बढ़ाकर बाज़ार में बेच देते हैं। अब आप बताइये, 'जहां किसान को उपलब्ध कराये गए न्यूनतम समर्थित मूल्य से, कई गुना अधिक दर से..
रशीद भाई – [रतनजी का कथन पूरा करते हुए कहते हैं] - ये व्यापारी सस्ती दर में ख़रीदा गया अनाज, बाज़ार में बेच देते हैं। अरे जनाब, क्या कहूं आपको ? व्यापारियों द्वारा बेचे गए अनाज का विक्रय मूल्य, और किसानों को मिले न्यूनतम समर्थित मूल्य के मध्य ज़मीन आसमान का फर्क है। किसको पड़ी है, जो अहसास करे इन किसानों का **दिल-ए-ग़म।**
चंदूसा – ओमजी, अब आप अपनी बात रखिये।
ओमजी – अब आप, मेरी बात सुनिए। और ऊपर से यह सरकार, लगा नहीं रही है नये कर्मचारी। इस तरह यह सरकार, अनाज को बरबाद करने में तुली हुई है। क्या कहूं, चंदूसा ? **यहाँ तो दस आदमियों का काम, दो आदमी करते हैं।** फिर बताइये आप, यह देश किधर जा रहा है ?
रतनजी – [खिसककर, चंदूसा के घुटने से घुटना मिलाकर बैठते हुए कहते हैं] – अब कहिये

चंदूसा, आपको कुछ आया समझ में..हमारा **दिल-ए-ग़म** ? कितने सारे खतरों में काम करते, हम जी रहे हैं ? अब आप यह बताइये, आप अपने चिकित्सा-विभाग में क्या कर रहें हैं ? बोलिये जनाब, आपका क्या जवाब है ?
[अब वल्लभजी भा'सा के दिल में, चंदूसा से मज़ाक करने का कीड़ा कुलबुलाता है। फिर क्या ? रेलिंग को थाम कर, सीढ़ियां चढ़ते हुए कहते जाते हैं]
वल्लभजी भा'सा – इनको, करना क्या ? या तो बांटनी माला डी की गोलियां, या फिर बांटने निरोध के पैकेट। अरे जनाब, किसी को नहीं चाहिए..तो ये महाशय, चुचाप उनकी ज़ेब में निरोध के पैकेट डाल दिया करते हैं।

रतनजी – फिर, आगे क्या होता है, भा'सा ?

वल्लभजी भा'सा - आगे उस बेचारे की शामत आ जाती है, जब उसकी धर्म-पत्नी उसकी जेबें टटोलती है। अरे जनाब..वह बेचारा किसी के सामने अपने **दिल-ए-ग़म** को ज़ाहिर न कर पाता कि उसके साथ किसने और क्यों यह हरक़त की है।
रतनजी – आगे कहिये, भा'सा। बातों की गाड़ी को, रोका न करें।
वल्लभजी – [हंसते हुए, आगे कहते हैं] – क्या कहूं, जनाब ? इन महाशय को केवल, सरकारी कोटा किसी तरह पूरा करना है। अगले आदमी पर, क्या बीते ? उस होने वाली घटना से, इनको कोई लेना-देना नहीं..बस, इनका तो एक ही मक़सद है..किसी तरह, सरकारी कोटा पूरा करना ज़रूरी है।
ओमजी – चंदूसा अकेले नहीं है, जनाब। इनके विभाग के लोगों का तो, कोई जवाब ही नहीं। क्या कहें, जनाब ? इस तरह कोटे पूरे करते वक़्त, कई कर्मचारी ८० साल के वृद्धों की नसबंदी ओपरेशन करवा देते हैं।
[इनकी बात सुनकर, उस्ताद सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते कहते जा रहे हैं]
उस्ताद – चंदूसा का, क्या गया ? जो भुगतेगा, वह जाने। चाहे वह गाड़ी में बैठकर, ताश खेलने वाला हो..और उसकी ज़ेब में, पहुँच जाते हैं निरोध के पैकेट। घर जाने के बाद, क्या होता है..? उससे, इनको कोई मतलब नहीं। वह बेचारा मासूम आदमी, इनको बददुआ देता यही कहेगा **"क्यों डाले रे, पैकेट..निरोध के।"**
[यह बात सुनते ही, चंदूसा अपनी हंसी दबा नहीं पाते हैं। वे मुंह पर हाथ रखकर, ख़िल-ख़िलाकर ऐसे हंसते हैं..जिनकी हंसी, बेचारे गोपसा के हृदय में शूल की तरह चुभती जा रही है। जो बेचारे इतनी देर तक, चुपचाप शालीनता से इनकी बातें सुनते आ रहे हैं। उस्ताद की बात सुनते ही, उनके दिल का दर्द बाहर आ जाता है। और इधर चंदूसा को इस तरह ख़िल-ख़िल हंसते देख, उनका कलेज़ा जलता जा रहा है। अब गोपसा बिना बोले, रह नहीं पाते। यह घटना किसी और के साथ नहीं घटी, बल्कि गोपसा के साथ ही घटी है। इसीलिए अब वे आब-आब होते हुए, कहते हैं..]

गोपसा – [आब-आब होते हुए, रतनजी से कहते हैं] – रतनजी, कान की खिड़कियां खोलकर सुनिये 'ये चंदूसा, कैसे इंसान हैं ? इनकी उम्र है, मेरे छोरे के बराबर। मगर क्या कहूं, आपको ? इन्होंने तो मज़ाक में मेरी ज़ेब में डाल दिये निरोध के पैकेट, फिर मेरी परेशानी घटने के बजाय बढ़ गयी। आगे, क्या..'

[इतना कहकर, गोपसा ग़मगीन हो जाते हैं। कौन उनके **दिल-ए-ग़म** को, समझ पाता ? उनको इस तरह ग़मगीन पाकर, रतनजी उन्हें दिलासा देते हुए कहते हैं]

रतनजी – कह दीजिये, **दिल-ए-ग़म** को बाहर निकालना ही अच्छा है। कह दीजिये, जनाब।

गोपसा – क्या कहूं, रतनजी। कपड़े धोते वक़्त, भागवान ने मेरी पेंट की जेबें संभाली। जैसे ही ये निरोध बाहर आये, और भागवान का माथा फिर गया ? वह गुस्से में कहने लगी के.....

[इतनी क्या बात सुनी, सभी ने ? रतनजी अपनी हंसी दबा नहीं सके, वे ख़िल खिलाकर हंसने लगे। उधर वल्लभजी भा'सा भूल गए 'एक दांत के अलावा उनके सारे दांत टूट गए हैं, इसीलिए उन्होंने अपने मुंह में नक़ली बत्तीसी जड़वा दी है।' अब जैसे ही वे हंसते हुए रतनजी का पोपला मुंह देखते हैं, और उनके मुंह से हंसी के फव्वारें छूटते हैं। फिर क्या ? जैसे ही वे हंसते हैं, और उनके मुंह में रखी नक़ली बत्तीसी बाहर निकलकर चंदूसा के सर पर चांदमारी कर बैठती है। चंदूसा दर्द के मारे, क्या चिल्लाते ? उसके पहले गोपसा अपना श्रीमुख खोलकर, वल्लभजी को उलाहना दे बैठते हैं]

गोपसा – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – अरे तू जड़ा दे, नये दांत। हंसता जा रहा है, गुलाबा की तरह ? यहाँ तो मेरी बढ़ गयी परेशानी, मैं जला जा रहा हूँ इस **दिल-ए-ग़म** से...और तू गेलसफ़ा, हंसता जा रहा है ? अब सुन, गेलसफ़ा। जैसे ही भागवान ने देखे निरोध के पैकेट, और उन्होंने मचाया कूकारोल।

रशीद भाई – **घरवाली का कूकारोल मचाना वाज़िब है, बुढ़ापे में बिगड़ रहे पति की ग़लत आदतें बेचारी कैसे सहन करती ?**

गोपसा – लीजिये सुनिये, आगे। बाद में भागवान कटु-शब्द सुनाने लगी [औरत की आवाज़ में कहते हैं] आपकी उम्र हो गयी है, बेटे-बेटी की शादी कराने की। मगर आपने अभी-तक, रुलियार-पना छोड़ा नहीं। अब मुझे मालुम पडा, आप पैंतीस साल से जोधपुर-पाली के बीच क्यों रोज़ का आना-जाना करते आ रहे हैं ?

रतनजी – कुछ और भी कहा होगा, भाभीसा ने ?

गोपसा – उन्होंने आगे कहा, 'मुझे तो ऐसा लगता है, आपके पाँव बाहर पड़ गए हैं..तभी आप कई बार, पाली रुक जाया करते हैं। अब मेरे समझ में यह भी आ गया, आख़िर आपने पाली में कमरा क्यों ले रखा है ? [लम्बी सांस लेकर, बाद में कहते हैं] कहीं आपका किसी औरत के साथ, अनुचित सम्बन्ध तो नहीं है ? अब यह राज, राज नहीं रहा है।'

वल्लभजी – [बत्तीसी वापस मुंह में डालकर, फिर कहते हैं] – आपकी रामायण छोड़िये, गोपसा।

आपने क्यों कहा मुझे, दांतों के बारे में ? मगर मैं आपको एक बात ज़रूर कहूंगा, के 'मेरा एक दांत असली है..वही अच्छा है।'

रतनजी – [हंसते-हंसते कहते हैं] – अरे वल्लभजी भा'सा आप तो हो, भाग्यशाली। आप तो गजाननजी महराज की तरह ठहरे, एकदंता। मत बढ़ाओ, अपने इस **दिल-ए-ग़म** को।

वल्लभजी – [खुश होकर कहते हैं] – इसीलिए कहता हूँ, लोग मुझे कहते है एकदंता [गोपसा की तरफ़ देखते हुए, कहते हैं] मगर गोपसा, मैं आपको गर्व से कहता हूँ, **'मैं एकदंता ज़रूर हूँ, मगर आपकी तरह गोली लेकर काम नहीं चलाता। शान से करता हूँ..काम। अभी-तक, मेरे घुटने सलामत है।'**

रशीद भाई – [मुस्कान लबों पर बिखेरते हुए, कहते हैं] – एक बात कहता हूँ, गोपसा। नाराज़ मत होना, मालिक। आदमी बुढा हो जाता है, तो क्या फर्क पड़ता है ? उसकी इच्छाएं बुढ़ी नहीं होती..वे जवान ही रहती है। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, त्यों त्यों ये इच्छाएँ ज़्यादा बढ़ती जाती है।

रतनजी – [हंसी का ठहाका लगाते हुए, कहते हैं] – सत्य वचन, रशीद भाई। तभी काकी ने सही आरोप लगाया है, आपके ऊपर। उन्होंने कोई ग़लती नहीं की, यह कहकर के "बन्दर बुढ़ा हो गया है, मगर अभी-तक छलांग लगाना नहीं भूला।"

गोपसा – रशीद भाई, क्या कहूं आपसे ? आपकी जैसी तकदीर नहीं है, मेरी। यहाँ तो मेरी खातूने खान, मेरे नज़दीक ही नहीं आती..और ऊपर से कटु वचन अलग से सुना देती है, के 'ऐसी बातें करते, आपको शर्म नहीं आती ?'

रतनजी – जनाब। इतना ही नहीं, उन्होंने और भी कुछ कहा होगा। कह दीजिये गोपसा, ना बताया तो आपका पेट कुल-बुल करता रहेगा। और आप, पाख़ाना बार-बार जाते रहेंगे।

गोपसा – उन्होंने कहा 'आपको पता नहीं, बच्चे बड़े हो गए हैं। अब आप बच्चों की शादी की बात कीजिये, अब हम दोनों बुढ़े हो गए हैं..सर पर आये सफ़ेद बालों की, शर्म करो।'

रतनजी – चल रहा है, वैसे ही चलने दीजिये गोपसा। ज़्यादा देण की तो, मंशा राम की तरह तक़लीफ़ पाओगे।

गोपसा – [आश्चर्य करते हुए, कहते हैं] – यह मंशा राम है कौन, कुतिया का ताऊ ? मुझे तो इस नाम का कोई एम.एस.टी.वाला, इस गाड़ी में दिखायी दिया नहीं।

रशीद भाई – काणे को सभी काणे ही दिखायी देते हैं, कुछ और सोचो गोपसा। इस नाम का, और दूसरा आदमी भी हो सकता है।

रतनजी – क्यों तंग करते हो, गोपसा को ? जो बात आप कहना चाहते हैं, उसे विस्तार से कह दीजियेगा।

रशीद भाई – अब आप सुनिये, गोपसा। हमारे दफ़्तर में एक ठेकेदार रोज़ आता है माल उठाने। उसका नाम है, मंशा राम। उसका चेहरा कुम्हलाया हुआ, ऐसा लगता है..मानो किसी ने इसके चेहरे का, सारा तेज़ छीन लिया हो ?

गोपसा – आगे कहिये, जनाब। आप उसको लेकर गए होंगे, भाना रामसा के पास...ऐसा मैंने भी, किसी एफ.सी.आई. के कर्मचारी से सुना है।
रशीद भाई – अरे हुज़ूर ले जाना पड़ा, उनको भाना रामसा के पास। आख़िर मुझे लोग क्यों कहते हैं, सेवाभावी ? हुज़ूर सुनिये, मैंने जाकर उनसे कहा 'यहाँ इस तिरकाल धूप में क्यों बैठे है, जनाब ? चलिए छप्परे के नीचे, वहां हमारे बड़े वैद्य भाना रामसा आपका इंतज़ार कर रहे हैं। वहां चलकर चाय-वाय पीयेंगे, जनाब।'
गोपसा – फिर, क्या हुआ ?
रशीद भाई – फिर क्या ? आख़िर मंशा रामसा को लेकर आया, छप्परे के नीचे। वहां उनको बहुत मनुआर के साथ, भाना रामसा के पहलू में बैठाया। अब भाना रामसा ने अपनी ज़ेब से, अफ़ीम की कोथली बाहर निकाली। और मैंने मंगवायी, कड़का-कड़क चाय।
रतनजी – चाय पीने के बाद, मनारामसा ने अफ़ीम की तगड़ी मनुआर की। और हम लोगों को भी ज़बरदस्ती खिला दी, अफ़ीम की किरचियां।
गोपसा – फिर क्या हुआ, जनाब ?
रतनजी – अफ़ीम की किरचियां मुंह में जाते ही, मंशा रामसा की कली-कली ख़िल गयी। उनके मुखारविंद से फूल खिरन्ने लगे, और मंशा रामसा अपने लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए कहने लगे "वाह, भाना रामसा। क्या चीज़ दी आपने, मेरे रोम-रोम में ज़ोश भर गया जनाब।
रशीद भाई – तब भाना रामसा मुस्कराते हुए, कहने लगे "ठेकेदार साहब जो गोली अब मैं आपको दूंगा, उसके मुक़ाबले में यह चीज़ कुछ भी नहीं है।" इतना कहकर भाना रामसा ने ज़ेब से एक गोली बाहर निकालकर उनको दी, और बाद में..
गोपसा – फिर, क्या हुआ ?
रशीद भाई – उन्होंने कहा "यह गोली आप, सोते वक़्त दूध के साथ ले लेना। बाद में आप देखना चमत्कार, गोली लेने के बाद आप काठियावाड़ी घोड़े की तरह कूदोगे।"
[इतना कहकर, रशीद भाई तो हो गए चुप। और खाने लगे, लम्बी-लम्बी साँसें। अब गोपसा के दिल में मची हुई है उतावली, परिणाम जानने के लिए। अब वे, चुपचाप कैसे बैठ सकते हैं ? फटाक से, वे कहते हैं..]
गोपसा – [उतावली करते हुए, कहते हैं] – चुप क्यों हो गए, जनाब ? कहिये ना, आगे क्या हुआ ? यह तो ग़लत आदत है, आपकी। किस्से को बीच में ही, छोड़ देते हो..?
रशीद भाई – ऐसी काहे की उतावली, आपको ? क्या आपको गोली लेनी है ? कहो तो, भाना रामसा से लेता आऊँ..?
[यह बात सुनते ही, गोपसा शर्म के मारे अपना सर झुकाकर चुपचाप बैठ जाते हैं। और होंठों में ही, कहते हैं "क्यों देता है, गोली ? अरे कमबख़्त इस तरह की गोलियों के कारण ही मुझे **दिल-ए-ग़म** का शिकार होना पड़ा।" इनके नहीं बोलने पर, रशीद भाई बैग खोलकर, पानी की बोतल

निकालते हैं। फिर, ढक्कन खोलकर पानी पीते हैं। फिर आगे का किस्सा, बयान करते हैं।]
रशीद भाई – दूसरे दिन, मंशा रामसा दिखायी दिये..हम लोगों ने देखा, उनके मुंह का नक्शा बिगड़ चुका था, ठौड़-ठौड़ रुख़सारों पर काटने के निशान..जिनसे रक्त का स्त्राव हो रहा था। वे हमारे पास आकर, पूछने लगे "भाना रामसा कहाँ है ?
रतनजी – तब मैं बोला "बबूल के झाड़ के नीचे, लेटे हैं।" वे बेचारे, पहले क्या बोलते ? उससे पहले, बबूल के नीचे लेटे भाना रामसा उनकी स्थिति देखकर ख़िल-खिलाकर हंसते हुए बोल उठे "क्या है रे, ठेकेदार..किसी कुत्तड़ी ने, तेरे गालों को काट खाया...क्या, यह सच्च है ?" मंशा रामसा भन्नाकर बोले "यह ऐसी गोली क्यों दी, जनाब। मेरी तो...

[अस्थमा के रोगी रशीद भाई, अब लम्बी-लम्बी साँसें लेते हैं। फिर, सामान्य होने के बाद, वे आगे कहते हैं...]
रतनजी – [बात पूरी करते हुए, आगे कहते हैं] – मंशा रानासा आगे बोले कि, "यह दशा बना डाली, भागवान ने। रात को उन्होंने उस गोली को, ब्लडप्रेशर की गोली समझकर ले ली।"

गोपसा – आगे कहिये, जनाब।

रशीद भाई - इतना कहकर, मंशा रामसा अपना मुंह रुमाल से छिपाने लगे। तब भाना रामसा ज़ोर से कहने लगे "अब ग़लती करना मत, अब आप दोनों को अलग-अलग गोली दूंगा.."
रशीद भाई – मगर, यह क्या ? सुनते ही मंशा रामसा सर पर पाँव रखकर ऐसे दौड़े, मानो किसी कुत्ते के पिछवाड़े में ग्रीस चढ़ा दिया हो..और उस बेचारे का कूकना हो जाता है, बंद। बस, फिर क्या ? वह, सरपट दौड़ता ही जाता है। पीछे मुड़कर भी नहीं देखता, बेचारा। सुना गोपसा ? ऐसी ही हालत हो गयी थी बेचारे ठेकेदार साहब की।
गोपसा – फिर क्या ?
रशीद भाई – फिर फिर, है क्या ? एक बार और कह देता हूँ, क्या आपको गोली चाहिये ? चाहिए तो, भाना रामसा के पास से लेकर आ जाऊं ? हमारे भाना रामसा, ऐसी दवाइयों की जानकारी रखते हैं। जनाब ने, मोटी डिग्री ले रखी है। लेकर आ जाऊं, फिर कहना मत "क्यों देता है, गोली ? अब मत बढ़ा, मेरा **दिल-ए-ग़म।**"
[ऊपर की सीढ़ियों पर बैठे दीनजी को, क्या मालुम ? के नीचे किस सन्दर्भ में गुफ़्तगू चल रही है ? वे बेचारे, नोवल पढ़ने में मग्न हैं। मगर उनके मित्र रतनजी ठहरे, निक्कमे नंबर एक। ऐसे निक्कमों को अक़सर कुबद सूझा करती है, बस अब उनका कुबदी दिमाग़ झट योजना बना डालता है। वे झट, दीनजी को आवाज़ देकर कहते हैं]
रतनजी – भा'सा, क्या नोवल पढ़ने में मस्त हो गए जनाब ? ज़रा, नीचे आइये।
[दीनजी तीन-चार स्टेप उतरकर, नीचे आते हैं, फिर वे रतनजी के नज़दीक बैठ जाते हैं। बाद में,

वे कहते हैं]
दीनजी – [बैठते हुए, कहते हैं] – फ़रमाइये, जनाब।
रतनजी – [पर्ची थमाकर, गंभीरता से कहते हैं] – देखो दीनजी भा'सा आपको दवाई की पर्ची दे रहा हूँ। कल आओ तब, भंडारी ब्रदर्स से ये गोलियां ज़रूर लेते आना। हमारे स्टाफ वालों ने मंगवायी है, क्या करूं ? मेरा शहर की तरफ़ आना नहीं होता, इसीलिए आपके साथ ये गोलियां मंगवा रहा हूं।
[गोपसा ठहरे, ठौड़-ठौड़ का पानी पीने वाले। उन्होंने झट उस पर्ची में लिखी दवाई का नाम पढ़ डाला, पढ़ते ही वे अपने लबों पर मुस्कान बिखेर देते हैं। फिर होंठों में कहते हैं के "अच्छा फंसा, यह भोला पंछी। अब जाना दवाई की दुकान पर, अगर आस-पास खड़े लोगों ने इस पर्ची को पढ़ लिया..तो फिर रामा पीर जाने, तेरे बारे में लोग क्या-क्या सोचेंगे ? ख़ुदा न ख्वास्ता अगर इसे रतनजी की शरारत मालुम हो गयी, तो यह बेचारा **दिल-ए-ग़म** का शिकार बन जाएगा।" उनके मुंह खोलने के पहले ही, जोशीजी वहां आ जाते हैं। रतनजी से पर्ची और पैसे लेकर, दीनजी उस पर्ची और पैसों को अपनी ज़ेब में रखते हैं। फिर, वापस नोवल पढ़ने में दतचित हो जाते हैं। मगर पर्ची ज़ेब में रखने के पहले, रशीद भाई उस पर्ची में लिखी दवाई का नाम पढ़ लेते हैं। पढ़ने के बाद, वे मन ही मन हंसते जाते हैं। तभी जोशीजी रेलिंग को पकड़े हुए, चंदूसा से कहते हैं]
जोशीजी – [रेलिंग को पकड़े हुए, चंदूसा से कहते हैं] – चंदूसा। मेरा भेजा हुआ एस.एम.एस. आपको मिल गया क्या ? अब आप तैयार हो जाओ, शीघ्र ही गाड़ी आ रही है।
चंदूसा – [नाराज़गी से, उछलते हुए कहते हैं] – यार जोशीजी दस क़दम दूर खड़े

रहकर, काहे एस.एम.एस. देते हो ?
[जोशीजी, क्यों जवाब देंगे ? वे मुस्कराते हुए पुलिए के समीप गुज़र रही नीली साड़ी पहने रेलवे की चपरासन को देखते जा रहे हैं, जो हाथ में डायरी लेकर सर्वोदय नगर वाली रेलवे फाटक के 'गेट मेन' के पास जा रही है। अब वे सीढ़ियां उतरकर, उसके पीछे चले जाते हैं। उनका रुख़ देखकर, चंदूसा रतनजी से कहते हैं]
चंदूसा – [रतनजी से कहते हैं] – रतनजी उधर देखिये, उस महिला चपरासी को। वह डायरी लिए जा रही है, उस गेट-में के पास। इसका मतलब है, के 'गाड़ी आने वाली है, यह जोशीजी की भेजी हुई ख़बर शत प्रतिशत सही है।'
रतनजी – [सिंगनल की तरफ़ देखते हुए, कहते हैं] – सत्य वचन, चंदूसा। सिंगनल डाउन हो गया है। वह बाई जा रही है फाटक वाले के पास। और शायद, फाटक भी बंद हो गयी होगी ? उठिए, अब तो यहाँ से चलना ही होगा।
[गाड़ी के आने की घोषणा होती है]
उदघोषक – [घोषणा करता हुआ कहता है] – जोधपुर से होते हुए बीकानेर जाने वाली कर्नाटक

एक्सप्रेस, प्लेटफोर्म नंबर एक पर आ रही है। यात्री गण, प्लेटफोर्म नंबर एक पर प्रतीक्षा करें। सभी यात्रियों को हिदायत दी जाती है, वे किसी अपरिचित व्यक्ति से कोई खाने-पीने की कोई चीज़ नहीं लें। हो सकता है, उसमें ज़हर मिला हुआ हो।

[एक मंगता हाथ में धूपदान लिए, सीढ़ियों के पास आता है। यहां आकर, धूपदान रतनजी के नज़दीक लाने की कोशिश करता है..और साथ में, बोलता जा रहा है]

मंगता – [धूपदान का धुंआ निकट लाता हुआ, कहता है] – दे दे बाबा के नाम से, एक-एक, दो-दो रुपये।

[इस मंगते की अरदास, अब सुने कौन ? यहाँ तो रतनजी को असर कर गयी, उदाघोषक की घोषणा। वे तो उस बेचारे मंगते को, धुतकारते हुए भगा देते हैं।]

रतनजी – [धुतकारते हुए कहते हैं] – धुर..धुर..! भाग, यहाँ से। [रशीद भाई से कहते हैं] ऐसे कमबख़्त आ जाते हैं, जनता को लुटने। नामाकूल ज़हरीला धुंआ करके लोगों को बेहोश करते है, फिर लोगों को लुट लेते हैं। जो आदमी ऐसे लोगों को खैरात देता है, वह आदमी ख़ुद अपना नुक्सान करवा लेता हैं।

[उस मंगते के जाने के बाद, एक दारुड़ा मंगता आता है रतनजी के पास। उसके गले में, सोने की कंठी पहनी हुई है। वह नज़दीक आकर, हाथ आगे करके भीख मांगता है। रतनजी झट दयाद्र होकर, उसकी हथेली पर दो रुपये का सिक्का रख देते हैं। वह सिक्का लेकर, चला जाता है। रतनजी का दोनों भिखारियों के साथ किया गया अलग-अलग व्यवहार, दीनजी भा'सा को आश्चर्य चकित कर देता है। वे रतनजी के दोहरे व्यवहार को, समझ नहीं पा रहे हैं ? वे आश्चर्य चकित होकर, उनसे सवाल कर बैठते हैं]

दीनजी – [आश्चर्य चकित होकर, सवाल करते हैं] – रतनजी, यह आपका कैसा दोहरा व्यवहार इन दोनों भिखारियों के साथ...? एक को भगा देते हो, और दूसरे को पास बुलाकर देते हो दो रुपये का सिक्का ?

रशीद भाई – अरे रतनजी, मैं आपको कैसे समझाऊं ? यह दरुखोरा कहाँ है, ज़रूरतमंद ? यह लेबर कोलोनी का निवासी है, जो दस मकानों का मालिक है। तीन शादियाँ कर चुका है, यह कमबख़्त ? इसकी तीसरी औरत सर से पाँव तक, सोने के जेवर से लदी हुई..पूरी कोलोनी में घुमती है।

दीनजी – मगर, यह भिखारी आदत से लाचार है। जो इतना धनी होते हुए भी, बिना भीख मांगे रहता नहीं। क्योंकि, बिना भीख मांगे इसके पेट का खाना नहीं पचता।

ओमजी – यह ऐसा बेवकूफ नहीं, जो घर के पैसे ख़र्च करके दारु पीयेगा ? यह है इतना होशियार, केवल भीख से आये पैसों से ही दारु सेवन करता है।

दीनजी – रतनजी, फिर आप ऐसे आदमियों को क्यों रुपये देते हैं ? आदमी को अकर्मण्य तो बनाते ही है, साथ में आप नशे को बढ़ावा भी देते हैं।

रतनजी – [शांत सुर में कहते हैं] – भा'सा, क्या आपने कभी दारु पी ? नहीं पी है तो भा'सा आप

कुछ नहीं समझ सकते, के "कभी किसी पियक्कड़ को दारु न मिले, तो उसकी क्या गत बनती है ?" यह बात, आपके कुछ भी पल्ले पड़ने वाली नहीं।

रशीद भाई - वाह सा, वाह रतनजी। क्या महान विचार है, आपके ? धन्य हो, रतनजी। आपके जैसा दानवीर इस ख़िलक़त में नहीं है। ऐसा लगता है, आपको देखकर ही अमिताभ बच्चन अभिनीत फिल्म 'शराबी' बनी है। फिल्म में अमिताभ दारुखोरों को मुफ़्त में दारु पिलाता है, और आप..

दीनजी – पियक्कड़ो को दारु के पैसे देकर, सवाब ले रहे हैं। वाह सा, वाह। रतनजी, तारीफ़े क़ाबिल है आपका नज़रिया।

[रतनजी का नज़रिया का दर्शन स्पष्ट होने पर, सभी उनका चेहरा देखते रह जाते हैं। सबके दिमाग़ में एक ही बात घर कर गयी है, "वाह भाई, वाह। कैसा है, यह दानवीर ? जो पियक्कड़ो को दारु के पैसे देकर, सवाब ले रहा है ?" तभी इंजन की सीटी सुनायी देती है, धड़-धड़ की आवाज़ करती हुई रेल गाड़ी आकर प्लेटफोर्म नंबर एक पर रुक जाती है। सभी शयनान डब्बे में घुस जाते हैं, बड़े आश्चर्य की बात है..आज़ इनको कहीं भी, मोहनजी नज़र नहीं आते हैं। थोड़ी देर में ही इंजन सीटी देता है, और गाड़ी प्लेटफोर्म छोड़कर रवाना होती है। मोहनजी के बिना, रतनजी का दिल लगता नहीं। इस कारण वे शयनान के सभी डब्बे संभालकर, वापस आ जाते हैं। अब रशीद भाई को मज़ाक करने की, कुबद पैदा होती है। वे मज़ाक उड़ाते हुए, रतनजी से कहते हैं]

रशीद भाई – अरे रतनसा , गाड़ी का एक-एक शयनान डब्बा देखकर अब आये हैं आप ? क्या कहूं जनाब, आपको ? यह घुमने का काम, मंगते-फकीरों का होता है। अब आपको घुमने का इतना ही शौक हो गया है, तो आप..

रतनजी – तब क्या करूं, जनाब ?

रशीद भाई – आप घुमते-घुमते, यह डायलोग बोलते जाओ [हथेली आगे करते हुए, कहते हैं] "दे दे अल्लाह के नाम पर, इंटरनेशनल फ़क़ीर आया है।"

[रशीद भाई की आगे फैलाई हुई हथेली पर, रतनजी एक रुपये का सिक्का रख देते है..फिर, वे रशीद भाई से कहते हैं]

रतनजी – [हथेली पर, एक रुपया रखते हुए कहते हैं] – ले भाई, ले ले खैरात। अब आगे जा..कहीं और जाकर, भीख मांग। फकिरिये, मुझको तेरे जैसे फकीरों का बहुत ध्यान रखना पड़ता है। [इतना कहकर, वे ठहाका लगाकर ज़ोर से हंस पड़ते हैं। फिर, वे कहते हैं]

रतनजी – बहुत अच्छे लगते हो, फ़क़ीर की वेशभूषा में। यही डायलोग बोलते रहना, आपको कोई पहचान नहीं पायेगा। [अपने होंठों के ऊपर हाथ रखकर, हंसी को दबाते है] बात असल यह है, मैं तो गया था मोहनजी को ढूँढ़ने।

रशीद भाई – याद आ रही है, उनकी ?

ओमजी – याद तो आयेगी, उनके बिना इनका दिल लगता नहीं।

रतनजी – [गुस्से में कहते हैं] – चुप हो जाओ, एक बार कह दिया आपको के..
ओमजी – चुप क्यों रहे, रतनजी ? बेचारे मोहनजी यदि आपके पास आकर बैठ जाए, तो आप अपना मुंह बिगाड़ते हैं। और आज़ उनके नहीं आने पर, आप शयनान का एक-एक डब्बा संभालकर आ गए ? मगर आपको मालुम नहीं, मोहनजी आख़िर हैं कैसे इंसान ?
रशीद भाई – मोहनजी सूंघ-सूंघकर पहुँच जाते हैं, अपने पास। उनको ढूँढ़ने की कहाँ ज़रूरत ? आज़ कहीं होते, तो अपने-आप यहाँ आ जाते।
[थोड़ी देर शान्ति छायी रहती है, फिर ओमजी कहते हैं]
ओमजी – मेरा नाम है, ओम प्रकाश। मुझे जो भी बात कहनी है, वो ॐ, ॐ कहता हुआ बात ठोककर करता हूँ। और कहता हूँ, सत्य बात। अब आप कल की न्यूज़ पर दीजिये, ज़ोर। इस वक़्त, हमारे डी.एम. साहब हेड क्वाटर पर नहीं है।
रशीद भाई – मुझे लगता है, वे शत प्रतिशत दौरे पर होंगे। तब ही मैं कहता हूँ, वे ज़रूर गए होंगे खारची।
रतनजी – और मोहनजी की ज़रूर, देण हो गयी होगी ? देण होगी भी क्यों नहीं ? मोहनजी पहुंचते हैं दफ़्तर, तब घड़ी में दोपहर के बजते हैं..करीब डेड या पोने दो। फिर श्रीमानजी एक सौ चार, शाम को तीन या चार बजे वापस पकड़ते हैं जोधपुर जाने वाली गाड़ी।
ओमजी - यार रतनजी, क्या कहूं आपको ? मैंने इन कानों से सुना है, जब भी डी.एम.साहब इनके दफ़्तर फ़ोन करते हैं, तब ये श्रीमानजी वहां कभी नहीं मिलते। कोई दूसरा कार्मिक ही, फ़ोन उठाता है।
[वक़्त बीतता जा रहा है, इनकी परायी पंचायती ख़त्म होने का नाम नहीं..ख़त्म हो तब मोहनजी को छोड़कर, किसी दूसरे आदमी की चर्चा शुरू हो। इस तरह गपों के पिटारे पर जाम लगता दिखायी देता नहीं। अब धूप चली गयी है, इंजन सीटी बजाता हुआ पटरियों पर तेज़ी से दौड़ रहा है। बिश्नोइयों के गाँव, आकर चले गए। क्योंकि खिड़की के बाहर अब ना तो एक भी मयूर दिखायी दे रहा है, और ना कहीं हिरण। इतने में एक चाय वाला, स्टील की टंकी ऊंचाये केबीन में आता है। और चाय से भरी स्टील की टंकी को, तख़्त पर रखता है। फिर वह, ज़ोर से आवाज़ लगाता है]
चाय वाला – [चाय की टंकी रखता हुआ, आवाज़ लगाता है] – चायेSSS चाये SSS मसाले वाली चाय। पी लीजिये, साहेबान।
रशीद भाई – यार, आज मोहनजी तो है नहीं, जो बोलते 'पिला दो, एम.एस.टी. कट चाय..लूणी स्टेशन की।'
रतनजी – रहने दीजिये, रशीद भाई। ऐसे आदमी को क्या याद करना ? चाय मंगवाकर, वे तो अकेले पी जाते हैं। राम राम ऐसे कंजूस आदमी, पहलू में बैठे आदमी को चाय के लिए पूछते नहीं। अगर पूछेंगे तो इस तरह पूछेंगे "भाया तुम चाय पियोगे, या नहीं ?" तब बेचारा कोई

इज़्ज़तदार आदमी होगा, वह शर्म से यही कहेगा "नहीं जनाब, आप ही पी लीजिये चाय।"
ओमजी – मगर मेरे जैसा कोई निशर्मा होगा, वह यही कहेगा "लाइए हुज़ूर, अभी पीते हैं चाय।" तभी ये कंजूस आदमी घबराये हुए कह देंगे "मेरी ज़ेब एलाऊ नहीं करती, आप तो मुझे मोडा करने में ही तुले हुए हो।

[चाय वाला इन लोगों की लम्बी-लम्बी बातें सुनता हुआ, परेशान हो जाता है। वह सोचता जा रहा है, **कैसे महानुभाव मिले 'जो चाय का आदेश, तो देते नहीं..ऊपर से मुझे यहाँ खड़ा करके, मेरा धंधा ख़राब करते जा रहे हैं ?**' आख़िर उससे रहा नहीं जाता, वह फटे बांस की तरह बोल पड़ता है]

चाय वाला – ओ जोधपुर के महापुरुषों। आप लोगों को, चाय पीनी है या नहीं ? मुझे यहाँ खड़ा करके, क्यों मेरा धंधा ख़राब कर रहे हो ?

रशीद भाई – तू क्यों खोटी हो रहा है, हम लोगों को चाय पीनी होगी तो हम लूणी स्टेशन पर चाय पी लेंगे।

चाय वाला – [हंसता हुआ, कहता है] – अब लूणी स्टेशन, कहाँ आने वाला ? अब तो भगत की कोठी का स्टेशन भी चला गया है। अब आपको लूणी जाकर चाय पीनी है तो वापस जाकर बैठ जाओ, बीकानेर-बांद्रा टर्मिनल में। अभी-तक प्लेटफोर्म पर खड़ी है, जाइए बैठ जाइए।

[कहता-कहता चाय वाला खिड़की से बाहर झाँक लेता है, बाहर उसे जोधपुर स्टेशन आता दिखायी देता है। देखते ही, वह चिल्लाकर कहता है]

चाय वाला – [खिड़की से बाहर झांकता हुआ, कहता है] – लीजिये, जोधपुर स्टेशन आ गया। [मुंह अन्दर लेता है] ठोकिरा, आप लोगों ने मुझे यों ही यहाँ रोककर, मेरा धंधा ख़राब किया।

[फिर क्या ? बेचारा चाय वाला झट चाय की टंकी कंधे पर उठाकर, आवाज़ लगाता हुआ आगे बढ़ जाता है।]

चाय वाला – चायेSSS चायेSSS गरम गरम चाय, मसालेदार चाय।

[चाय वाला चला जाता है, अब इंजन सीटी देता है। गाड़ी की रफ़्तार कम हो जाती है, थोड़ी देर में वह प्लेटफोर्म नंबर एक पर आकर वह गाड़ी रुक जाती है। सभी प्लेटफोर्म पर उतरते हैं, फिर गेट की तरफ़ अपने क़दम बढ़ाते हैं। गेट के बाहर दरवाज़े के पास ही एक झोला टाइप नीम हकीम ज़मीन पर चादर बिछाकर बैठा है। चादर पर, उसने कई तरह की जड़ी-बूंटिया जमाकर रखी है। जड़ी-बुटियों से तैयार की गयी गोलियां, कई छोटी-बड़ी बोतलों में रखी गयी है। इस वक़्त वह हकीम, गेट से बाहर आ रहे हैं, लोगों को आवाज़ देकर अपने पास बुलाता है। फिर, उन्हें जड़ी-बुटी से तैयार की गयी दवाई की गोलियाँ बेचता है। गोपसा के बाहर आते ही, उन पर हकीम की नज़र गिरती है। बस, फिर क्या ? उनको देखते ही वह नीम हकीम, उनको ज़ोर से आवाज़ देता है]

नीम हकीम – [गोपसा को देखते ही, उन्हें ज़ोर से आवाज़ देता है] – ओ बाबू साहब, सफ़ेद पतलून

वाले। इधर आना जी, ले लो बाबूजी गोली मरदाना SSS। गोली लेकर दौडोगे सरपट, अरबी घोड़े की तरह। भूल जाओगे **दिल-ए-ग़म।**

[गोपसा एक नज़र डालते हैं, उस नीम हकीम पर। मगर ज्यों ही उसके मुख से वे 'गोली मर्दाना' का नाम सुनते हैं, उसी वक़्त सभी साथियों का साथ छोड़कर तेज़ रफ़्तार से आगे बढ़ते हैं..और, पीछे मुड़कर भी नहीं देखते। बस वे तो बतूलिये की तरह आगे बढ़ते ही जा रहे हैं, रामा पीर जाने..उनके दिल से, यह एक ही आवाज़ क्यों निकलती जा रही है "क्यों देता है, गोली ? तू तो फिर बढ़ा देगा, **दिल-ए-ग़म**" वे तो बिना गोली लिए, रेसकोर्स के घोड़े की तरह तेज़ी से आगे बढ़ते ही जा रहे हैं। उनको आगे तेज़ी से चलते देखकर, चंदूसा आवाज़ लगा बैठते हैं।]

चंदूसा – चलने की रफ़्तार मत बढ़ाइए, गोपसा। इस हकीम के पास 'गोली मर्दाना' नहीं है, नक़ली गोलियां बेचता है। आपका **दिल-ए-ग़म** बढ़ेगा नहीं, आप फ़िक्र न करें।

[मगर गोपसा अपने **दिल-ए-ग़म** को भूलने तेज़ी से आगे बढ़ते ही जा रहे हैं, वे पीछे मुड़कर भी नहीं देख रहे हैं। थोड़ी देर बाद, मंच पर अँधेरा छा जाता है।]

खंड ९, पुरानी मशीन के कल-पूर्जे

लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

****

[मंच रोशन होता है, जोधपुर स्टेशन का मंजर सामने दिखाई देता है। प्लेटफोर्म पर लगी घडी आठ बजकर पैंतीस मिनट का वक़्त बता रही है। भले सुबह का वक़्त है, मगर गर्मी कम होने का नाम नहीं। रशीद भाई बैग थामे प्लेटफोर्म नंबर एक पर आते हैं, वहां से पुलिया पर नजर डालते हैं। पुल पर रतनजी, अनिल बाबू, ओमजी, दयाल साहब वगैरा एम.एस.टी. होल्डर्स खडे हैं। वे वहां खडे-खडे पाली जाने वाली गाडी का इंतजार कर रहे हैं। रशीद भाई इन लोगों को देखते ही, झट सीढियां चढकर पुलिये पर आ जाते हैं। उन लोगों के पास आकर, वे रतनजी के पास खडे हो जाते हैं। अब गर्मी नाक़ाबिले बर्दाश्त होती जा रही है, अब रतनजी कमीज के बटन खोलते हैं। फिर, वे कहते हैं]

रतनजी – [कमीज के बटन खोलते हुए, कहते हैं] – रसायनिक पाउडर से होली खेलते-खेलते, भिष्ठ मिल गए यार। ना तो घर के रहे, और ना घाट के रहे। अब तो मेरे भाई, **पुरानी मशीन के कल-पूर्जे** बनकर रह गए। क्या करें, यार ? अब तो भय्या, किसी काम के ना रहे।

[रशीद भाई सर से टोपी हटाकर, जब्हा पर छाये पसीने के एक-एक कतरे को रुमाल से साफ़ करते हैं। फिर, वे कहते हैं]

रशीद भाई – [ज़ब्हा पर छाये पसीने को साफ़ करके, कहते हैं] – मर्ज़ बढ़ता जा रहा है, जनाब। अब क्या कहूं, आपको ? अब थोड़ी-थोड़ी देर में, उठ जाता है।

[पहलू में खड़े अनिल बाबू की एक आदत खोटी, हर वक़्त कुछ न कुछ दूअर्थी संवाद बोलने की। अब वे रशीद भाई की बात सुनते ही, झट बोल उठते हैं]

अनिल बाबू – रशीद भाई, इस उम्र में मत उठाओ यार। चाची को तक़लीफ़ होगी।

रशीद भाई – और किसको तक़लीफ़ होगी, मेरे भाई ? मेरा उठ गया, तब मुझे ही देखना होगा। या फिर तक़लीफ़ होगी, मेरे जीवन साथी को।

[रशीद भाई रहे, बीरबल की तरह हाज़िर-जवाबी। उनको अनिल बाबू क्या जवाब दे पाते ? तब बेचारे बात का मुद्दा बदलने के लिए, घड़ी देखते हुए कहते हैं]

अनिल बाबू – गाड़ी जाने का वक़्त हो रहा है, मगर मोहनजी नज़र क्यों नहीं आ रहे हैं ?

[मोहनजी को नहीं देखे, दो दिन बीत गए हैं। बुजुर्गों का कहना है, **"एक काणे का दिल दूसरे काणे के बिना, नहीं लगता..चाहे पास में बैठने पर दोनों झगड़ा ही करते हों।"** इसी कारण अब दयाल साहब का दिल, मोहनजी को देखे बिना नहीं लगता। इस कारण वे प्रवेश-द्वार पर, नज़रें गढ़ाये खड़े हैं।]

दयाल साहब – [अचानक प्रवेश-द्वार को देखते हुए, ज़ोर से कहते हैं] – वह आ रहा है, तुम्हारा मोहन लाल।

[सभी की निग़ाहें, प्रवेश द्वार पर गिरती है। वहां वे देखते हैं, "जी.आर.पी. का दस्ता कई आदमियों को हिरासत में लेकर आ रहा है, उन आदमियों में गोमिया दिखाई देता है। जिसके हाथों पर हथकड़ी लगी हुई है। वह चार क़दम आगे चलते मोहनजी को देखकर, उन्हें आवाज़ लगा बैठता है।]

गोमिया – [ज़ोर से चिल्लाता हुआ, मोहनजी को आवाज़ देता है] – ओ मोहनजी। मुझे आकर, बचाओ। [पुलिस के हवलदार की ओर देखते हुए कहता है] हुज़ूर। मैं गुनाहगार नहीं हूं। आपको भरोसा नहीं है तो, आप आगे चल रहे काली सफ़ारी पहने इन साहब से पूछ लीजिये। [मोहनजी की तरफ़ उंगली का इशारा करता है] हुज़ूर, वे मुझे जानते हैं।

[इतना कहकर, वह मोहनजी को एक बार और आवाज़ देता है। उसके बोलने से हवलदार का ध्यान भंग हो जाता है, जिस बीड़ी को वह फूंक रहा है..वह नीचे गिर जाती है। यह बीड़ी बण्डल की अंतिम बीड़ी थी, जिसका पूरा कश वह बेचारा ले नहीं पाया..और वह गिर गयी उसके चौंकने से। अब क्या करता बदनसीब हवलदार…? उसका नशा पूरा हुआ नहीं, और आख़िरी बीड़ी का हो गया सत्यानाश । अब बेचारे हवलदार को, बीड़ी का नया बण्डल ख़रीदना होगा। इस कारण वह ख़फा होकर, इस गोमिये के रुख़सारों पर जमा देता है...एक ज़ोर का झापड़। झापड़ जमाकर, वह कहता है]

हवलदार – [झापड़ जमाकर, कहता है] – चुप साला, तू है एक नंबर का तस्कर। मुझे बरगलाता है, इस शेर सिंह को ?

[गोमिया ज़ोर से किलियाता हुआ, एक बार और मोहनजी को आवाज़ देता है]

गोमिया – [किलियाता हुआ आवाज़ देता है] – ओ मोहनजी। आकर मुझे बचाओ, मेरे माई-बाप। अरे जनाब, इधर तशरीफ़ रखिये।

[मोहनजी एक नज़र डालते हैं, उस गोमिये पर..फिर वे जानकर भी अजनबी बन जाते हैं। फिर उसे नज़रअंदाज़ करते हुए वे पुलिए की सीढ़ियां चढ़ते हैं, मगर ऊपर के स्टेप उतर रहे आस करणजी इस मंज़र को देख लेते हैं। वे सीढ़ियां चढ़ रहे मोहनजी को रोककर, उन्हें कहते हैं]

आस करणजी – [मोहनजी से कहते हैं] – जवाब दीजिये, मोहनजी। आपका परिचित आदमी बरला रहा है, जाकर उसकी मदद कीजिये।

मोहनजी – किसका परिचित ? अरे जनाब, राह चलता कोई आदमी मुझे आवाज़ दे दे..तो क्या मैं उसका हितेषी बनकर पहुँच जाऊ उसके पास ? होशियार बने रहो, भा’सा। कल आप भी उसके कहने से उसके पास चले गए, तो पुलिस आपको भी हिरासत में ले सकती है।

[अक्समात किन्नरों का दल, पायल खनकाता हुआ पुलिए की सीढ़ियां चढ़ता दिखायी देता है। ये सारे किन्नर फ़टाफ़ट सीढ़ियां चढ़कर पहुँच जाते हैं, मोहनजी के पास। फिर उन्हें घेरकर, वे सभी तालियाँ पीटने लगते हैं। उनमें से चम्पाकली किन्नर मोहनजी के और नज़दीक आकर उनके गालों को सहलाता हुआ कहता है]

चम्पाकली – [उनके गालों को सहलाता हुआ कहता है] – अरे, सेठ मोहनजी। आपके जैसा सुन्दर आदमी इस ख़िलक़त में नहीं, मेरे सेठ। अब पहचान लीजिये, मुझे। निहार लो मुझे, अच्छी तरह

से। मेरी जैसी ख़ूबसूरत मेहरारू आपको कहीं नहीं मिलेगी, मेरे सेठ। हाय रामा पीर, क्या कोमल गाल दिए हैं, मेरे सेठ को ?

मोहनजी – [हाथ से उसे दूर हटाकर, कहते हैं] – दूर हट रे, किन्नर। क्यों परेशान करता है, यार ? आख़िर, हम ठहरे **पुरानी मशीन के कल-पूर्जे**...अब क्या काम आ सकते हैं, तेरे ?

चम्पाकली – [लबों पर मुस्कान बिखेरता हुआ, कहता है] – फिर भी...

मोहनजी – [घबराकर, कहते हैं] – क्या जानता है रे, कढ़ी खायोड़ा..मेरे बारे में ?

चम्पाकली – अरे हुज़ूर, मैं जानता हूँ..आपकी रग-रग। के, कभी-कभी आप जैसी पुरानी मशीन के कल-पूर्जे भी फटा-फट ऐसे चलते हैं...बेचारे जवान छोरे भी आपके आगे..

मोहनजी – [अपना हाथ उसके लबों पर रखते हुए] – अरे यार चम्पाकली, अब भी चुप हो जा। देखता नहीं, ऊपर से आस करणजी नीचे चले आ रहे हैं..!. कहीं, उन्होंने तेरी बात सुन ली तो...

चम्पाकली – [उनका हाथ हटाकर, कहता है] – मैं किसी के बाप से नहीं डरती, समझे ? अभी आस करणजी टी.टी. बाबूजी को कह दूं, आपकी रोमांस की बात ? हाय मेरे सेठ, भूतिया नाडी की पाळ पर नंगे होकर कैसे नाच रहे थे, आप ? हाय, ऐसी **पुरानी मशीन के कल-पूर्जे** पर वारी जाऊं..!

मोहनजी – क्या बकता है, भंगार के खुरपे ?

चम्पाकली – वाह, वाह। कितना ख़ूबसूरत, और गठीला आपका बदन ? हाय मर मिटूं, आप पर..मेरे सेठ। [धीमे से कहता है] आ जाऊं रात को, आपके पास ?

[इसके बाद वह अलग से मोहनजी के कान में फुसफुसाता हुआ नज़र आता है]

चम्पाकली – [फुसफुसाते हुआ कहता है] – भूतिया नाडी की पाळ पर नंग-धड़ंग होकर प्यारी के बिछोह में, कालिया भूत बनकर कैसे नाचे थे आप ? कह दूं आस करणजी को, सारी भेद की बातें ? बोलो मेरे सेठ।

[मोहनजी झट-पट चम्पाकली के होंठों पर हाथ रखकर, उसका बोलना बंद कर देते हैं। फिर वे उसे, धीमे-धीमे कहते हैं]

मोहनजी – [धीमे-धीमे कहते हैं] – यार चम्पाकली तू तो यार, समझदार होकर ऐसी अध-गेली बातें करता जा रहा है ? यों क्या चौड़ी करता है, लोगों के बीच में ?

चम्पाकली – [उनका हाथ हटाते हुए कहता है] – चौड़ी तो अब करूंगी, मैं। मुझे किस बात की आती है, लाज़ ? मगर सेठ, तगड़ा नेग देते हो तो आपका काम बने।

[मोहनजी झट जेब से कड़का-कड़क दस का नोट निकालकर, चम्पाकली को थमाते हैं। रुपये पाकर भी, ये किन्नर वहां से हटते नहीं..तब आस करणजी स्टेप उतरकर नीचे आते हैं, और उन लोगों को वहां खड़े देखकर आस करणजी कहते हैं]

आस करणजी – आप लोगों को मिल गया नेग, अब आप सभी पधारो।

गुलाबो – [आस करणजी का रास्ता रोककर, उनके आगे खड़ा हो जाता है] – हाय हाय टीटी बाबूजी [ताली बजाता है] इस तरह, आपको जाने कौन देगा ? [एक बार और ताली बजाता है] जनाब आपका भला करे, एक दिन के लिए आप हमें भी बना दीजिये ना टीटी बाबू। रामसा पीर, आपकी तरक्की करेगा।

[मोहनजी की गैंग एक दिन चैकिंग पार्टी बनी थी, अब वह बात इस गुलाबे से गुप्त रही नहीं। अब बिचारे मोहनजी, अच्छे फंसे, इस हीज़ड़े के ज़ाल में। हीज़ड़ों के चंगुल से बचने के लिए आस करणजी को, एक हाथी छाप सौ का नोट उस निखेत गुलाबा को थमाना पड़ता है।

आस करणजी – [नोट थमाते हुए, कहते हैं] – गुलाबा तू जाने या मैं जानू, या जाने मोहनजी। बस यहाँ तक ही बात रहनी चाहिए, गुलाबा। मगर करूँ, क्या ? तेरी बड़ी खोटी आदत है, झट बात को चौड़ी करने की।

[इतना कहकर, मोहनजी झट-पट स्टेप्स उतर जाते हैं, और साथ में वे अपने कानों में उंगली भी डाल देते हैं..कारण यह है, उन्हें वहम हो जाता है...कहीं इन हीज़ड़ों का हंसी का किल्लोर सुनकर, सीढ़ियों पर उतरते-चढ़ते यात्री यहाँ खड़े होकर खिलका नहीं कर दे ? आस करणजी के चले जाने के बाद, प्लेटफोर्म पर देहली एक्सप्रेस आकर ख़ड़ी हो जाती है। मोहनजी अब पहुँच जाते हैं, अपने साथियों के पास। वहां अभी भी रासायनिक पाउडर से होली खेलने के मुद्दे पर, गुफ़्तगू चल रही है। अचानक रतनजी की निग़ाहें, मोहनजी पर गिरती है। वे झट अपने बोलने के भोंपू की दिशा बदलकर, मोहनजी की ओर कर देते हैं।

रतनजी – लीजिये जनाब, मोहनजी पधार गए हैं। अब आप इनसे पूछ लीजिये, मैं सच्च कह रहा हूं या झूठ ? ये मोहनजी ख़ुद भुगत-भोगी है। एक दिन इन्होंने उस पाउडर के हाथ लगाकर, अपनी जान जोख़िम में डाल दी। फिर इनका क्या हुआ, वह इनका दिल ही जानता है ? [मोहनजी से] साहब, मैं सच्च कह रहा हूं या झूठ ?

[मोहनजी कुछ नहीं कहते, तब रतनजी उनके और नज़दीक आकर कहते हैं]

रतनजी – बोलिए ना, साहब। उस दिन को याद कीजिये आप, जब पाली उतरकर आपने यह कहा 'आज़ मुझे कलेक्टर साहब के दफ़्तर में, बैठक में भाग लेना है..इसलिए, आज़ मैं खारची नहीं जाऊंगा। क्योंकि, मेरी ड्यूटी कलेक्टर साहब के दफ़्तर में बोल रही है।

मोहनजी – फिर, क्या ?

रतनजी – फिर गाड़ी के चले जाने के बाद आपको याद आया, कि 'आज़ तो मंगलवार है नहीं और बैठक रखी गयी है, मंगलवार के दिन। अब क्या करें, बेटी के बाप ? गाड़ी चली गयी, अब खारची वापस जा नहीं सकता।'

मोहनजी – फिर मैंने क्या कहा, रतनजी ?

रतनजी – आपने कहा 'कुछ नहीं, आज़ तो पाली डिपो चलकर, गोदाम का अनाज चैक करके सरकारी काम निकाल लेंगे। काम करने के बाद, राजू साहब दे देंगे, उपस्थिति प्रमाण-पत्र।

[इस घटना को अब रतनजी विस्तार-पूर्वक बयान करते हैं, और उधर मोहनजी की आँखों के आगे इस घटना के तथ्य चित्र बनकर छाते जा रहे हैं। अब मोहनजी तंद्रा में लीन हो जाते हैं। मंच पर, अन्धेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच पर रौशनी फ़ैल जाती है। अब एफ़.सी.आई. दफ़्तर का मंज़र, सामने दिखाई देता है। मोहनजी, दयाल साहब के कमरे में दाख़िल होते दिखायी देते हैं। वहां दयाल साहब की कुर्सी ख़ाली है, इसे देखकर वे ख़ुश हो जाते हैं। फिर फटाक से उस कुर्सी पर बैठकर, टेबल पर रखी घंटी को बजाते हैं। घंटी सुनते ही चम्पला वाच मेन, उनके सामने हाज़िर होता है। चम्पले वाच मेन को सामने हाज़िर पाकर, वे आदेश दे डालते हैं।]

मोहनजी – देख रे, चम्पला कढ़ी खायोड़ा। आज़ मेरी ड्यूटी, इसी दफ़्तर में लगी हुई है। अब तू मुझे यह बता, के 'कितनी तो है गेहूं की बोरिया, और कितना है मुर्गी दाना ?'

चम्पला – जनाब, पूरी रिपोर्ट दे दूंगा आपको। मगर पहले आप, इस कुर्सी से हट जाइये..यह कुर्सी हमारे साहब, दयाल साहब की है।

मोहनजी – इस कुर्सी पर कहीं नहीं लिखा हुआ है, के 'यह कुर्सी दयाल साहब की है ?' जानता नहीं, दयाल साहब और मैं एक ही रेंक के अधिकारी हैं। इसीलिए, मुझे इस कुर्सी पर बैठने का पूरा-पूरा हक़ है।

चम्पला – मेरी बात मान जाइये, जनाब। कहीं ऐसा न हो जाए, आपको परेशानी झेलनी पड़ जाय ? फिर आप पीपल के पान जैसा मुंह लिये, ठौड़-ठौड़ घुमते बुरे लगेंगे।

[मगर चम्पले की बात का कोई असर, मोहनजी पर होता दिखायी नहीं देता। इतने में, डस्ट ओपेरटर भाना रामसा कमरे में दाख़िल होते हैं। वे दोनों हाथों की उंगलियों से आँखें चौड़ी करके, आँखें फाड़ते हुए मोहनजी को देखते हुए आगे बढ़ते हैं। और साथ में, मोहनजी से यह भी कहते जा रहे हैं।]

भाना रामसा – [आँखें फाड़ते हुए, मोहनजी से कहते हैं] – आप कौन हैं, मालिक ? मुझे लगता है, आप कहीं मोहनजी तो नहीं हैं ?

मोहनजी – [गुस्से में कहते हैं] – तू कौन है रे, कढ़ी खायोड़ा ? क्यों आँखें फाड़कर, तू मुझे डरा रहा है ?

भाना रामसा – अब तो मुझे सौ फ़ीसदी भरोसा हो गया है, आप खारची वाले कढ़ी खायोड़ा मोहनजी ही हैं। [नज़दीक आकर कहते हैं] अब मालिक, आपकी क्या मनुआर करूँ ? [जेब से पोलीथीन की थैली बाहर निकालते हैं, उसमें से अफ़ीम की किरचियां बाहर निकालकर अपनी हथेली पर रखते हैं। फिर, हथेली मोहनजी के आगे करते हुए उनकी मनुआर करते हैं] लीजिये मालिक, भोले बाबा की प्रसादी।

मोहनजी - यह क्या है रे, काला-काला ? कहीं यह चीज़, बंदरों के खाने की तो नहीं है ?

भाना रामसा – बन्दर क्या जानता, अदरक का स्वाद ? जनाब इस चीज़ को, पारख़ी लोग ही परख़ सकते हैं। दूसरे आदमी में, कहां है इतनी योग्यता ? इस चीज़ के बाज़ार में भाव हैं, हज़ार रुपये प्रति तोला। आपको क्या कहूं, जनाब ? आपके लिए, इस भाव का क्या करना ? क्योंकि आप ख़ुद, कई हज़ारों रुपये ऊपर की चीज़ हैं।

मोहनजी – [ख़ुश होकर किरची उठाते हैं, फिर उसे अपने मुंह में रखते हैं] – मुझे तो यह चीज़, कोई शिलाजीत जैसी लगती है। सच्च कहा रे, तूने। वास्तव में इस चीज़ की पहचान पारख़ी लोग ही कर सकते हैं।

भाना रामसा – आप से ज़्यादा कौन इस चीज़ का पारख़ी हो सकता है, जनाब ? इसमें सारे विटामिन मिले हुए हैं, इसको लेने से घर वाली ख़ुश रहती है..घर में छायी अशांति मिट जाती है, और जो गोली आप मानसिक तनाव कम करने के लिए लेते हैं...फिर उस गोली को लेने की, कोई ज़रूरत नहीं।

मोहनजी – [हथेली से दो-तीन किरची उठाकर, अपने मुंह में डाल देते हैं] – और कोई गुण हो तो बता, पूरा विवरण दे दे एक बार।

भाना रामसा – इसके लेने के बाद, आप अरबी घोड़े की तरह दौड़ेंगे। जीते रहो, मालिक..आपने मेरी मनुआर अंगीकार करके मेरा मान बढ़ाया। आपके घुटने सलामत रहे, सौ साल ऊपर आपकी उम्र हो..हज़ारों साल, आपका यश इस ख़िलक़त में बना रहे। मगर..

मोहनजी – अगर-मगर कहना छोड़, साफ़-साफ़ कह "अब क्या कहना बाकी रह गया ?'

भाना रामसा – अरे जनाब, आपकी मनुआर करता-करता मैं यह कहना भूल गया, के 'आपको बड़े साहब 'राजू साहब' ने याद किया है। आप जल्दी जाकर उनसे मिल लें, एक बार।'

मोहनजी – अरे कढ़ी खायोड़ा, यह बात मुझे तू आते ही बता देता। जाता हूं, अब तू जा गोदाम में..अभी वहां आकर, माल चैक करता हूं। तू जाकर तैयारी कर कढ़ी खायोड़ा, अब यहाँ बैठा मत रह।

[मोहनजी जाते हैं, उनके जाते ही दयाल साहब कमरे में दाख़िल होते हैं। इस वक़्त उनकी सांस धौकनी की तरह चल रही है। वे हाम्पते हुए, आकर अपनी कुर्सी पर बैठते हैं। भाना रामसा इनके नज़दीक आकर, कहते हैं]

भाना रामसा – [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – बस मालिक, काम हो गया आपका। अब आप आराम से बिराज जाइये। आगे आपसे अर्ज़ है 'कभी भी इस कुर्सी को ख़ाली छोड़कर कहीं जाइएगा मत। जनाब, यह माया कुर्सी की ही है।

[सांस अब सामान्य होने के बाद, दयाल साहब जेब से रुमाल निकालते हैं..फिर अपने ज़ब्हा पर छाये पसीने के, एक-एक कतरे को साफ़ करते हुए कहते हैं]

दयाल साहब – [ज़ब्हा पर छाये पसीने को साफ़ करते हुए कहते हैं] – क्या कहूं, भाना राम ? इस दफ़्तर में इतनी सारी पड़ी है कुर्सियां, मगर यह मोहन लाल आकर बैठेगा मेरी ही कुर्सी के ऊपर। सारा दिमाग़ ख़राब कर दिया, इस मोहन लाल ने। इधर यह डी.एम. मांगता है...

भाना रामसा – क्या मांगता है, जनाब ?

दयाल साहब – चावल की क्वालिटी-रिपोर्ट। अब तू बता, कैसे करूँ इस रिपोर्ट तैयार ? उधर जाता हूं, माल चैक करने..वहां यह मोहन लाल तैयार बैठा मिलता है। इधर इस कमबख़्त रतन सिंह को कहा, के 'पोलिस का पाउडर डाल दे उसमें, मगर यह रतन सिंह सुनता ही नहीं ?' आख़िर, अब मैं क्या करूँ ? कोई सुनता ही नहीं।

[रशीद भाई कमरे में आते हैं, इस वक़्त इनके मुंह पर नकाब लगी हुई है। इनको देखते ही भाना रामसा और चम्पला वहां से खिसक जाते हैं। इन दोनों को भय है, कहीं यह रशीद भाई बोरियों के ऊपर छिड़काव करने का काम इन्हें नहीं सौंप दे ? अब रशीद भाई दयाल साहब के काफ़ी नज़दीक आकर, उनके कान में फुसफुसाते हुए कुछ कहते हैं]

दयाल साहब – करने दे, इसे चैक। तेरे बाप का क्या गया ? मगर देख रशीद, मोहन लाल दिन भर क्या करता है ? उसकी सही-सही रिपोर्ट तू राजू साहब को ज़रुर दे देना। तूझे पता है, शाम को जाते वक़्त यह मोहन लाल राजू साहब से मांगेगा उपस्थिति प्रमाण-पत्र। अब जा रे, रशीद..काम कर अपना।

[रशीद भाई जाते हैं, और चम्पला चुगे हुए चावलों से भरी प्लेट लेकर आता है। चावलों को देखते ही काम बढ़ा हुआ जानकर, दयाल साहब उसे खारी-खारी नज़रों से देखते हैं। मंच पर, अँधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच के ऊपर रौशनी फ़ैल जाती है। अनाज के गोदाम का मंज़र सामने आता है। गोदाम से सटा हुआ, स्टोर का कमरा है। जिसके बाहर, छोटी टेबल और दो कुर्सियां रखी है। टेबल पर चार्ज लिस्टें रखी हुई है, जिसके पास स्टोक-रजिस्टर और पेन भी रखा हुआ है। स्टोर रूम के बाहर दो कट्टे रखे हैं, जिनमें सफ़ेद डेल्टा पाउडर भरा हुआ है। इस पाउडर को पानी मिलाकर, घोल तैयार किया जाता है। फिर इस घोल का छिड़काव पम्प की मदद से अनाज की बोरियों के ऊपर किया जाता है। छिड़काव के वक़्त इस पाउडर के घोल की ठंडी-ठंडी लहरे पैदा होती है, जिसकी ज़्यादा गंध लेना स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। क्योंकि, इससे स्वास्थ्य

पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बोरियों पर छिड़काव कर रहे रतनजी को मालुम होता है, अब घोल समाप्त हो गया है। वे इसकी सूचना पम्प मार रहे रशीद भाई को देते हैं। अब रशीद भाई झट पास रखे पानी से भरे दो घड़े, ख़ाली टंकी में उंडेल देते हैं। फिर डेल्टा का कट्टा खोलकर, दोनों हथेली [धोबा भरकर] से पाउडर लेकर टंकी में डालते हैं। फिर लकड़ी से घोल को हिलाकर, घोल तैयार करते हैं। घोल में पम्प रखकर, रशीद भाई पम्प मारना शुरू कर देते हैं। अब रतनजी फव्वारे से बोरियों पर छिड़काव करते हुए, रशीद भाई से कहते हैं।]

रतनजी – [छिड़काव करते हुए, कहते हैं] – ए रे, रशीद भाई। इस ज़हर से होली खेलना हमारे नसीब में लिखा है, मगर तू ध्यान रखना कोई इधर आ न जाए।

रशीद भाई – [पम्प मारते हुए, कहते हैं] – भाईजान आप फ़िक्र मत कीजिये, मैं एक को भी इधर आने नहीं दूंगा। मगर..

[इस गोदाम के सामने, कुछ ही क़दम आगे एक छायादार बबूल का वृक्ष है, जिसके तले भाना रामसा अफ़ीम की पिनक में लेटे हैं। इस बबूल के पास ही एक अस्थायी युरीनल है। जो छः फुट की शिलाओं को, चारों ओर घेरकर बनाया गया है। अब मोहनजी राजू साहब से मुलाक़ात करके, इधर गोदाम की तरफ़ आते दिखायी दे रहे हैं। रतनजी और रशीद भाई छिड़काव के काम में व्यस्त हैं, इसलिए उनको इनके आगमन का कुछ पता नहीं। काम करते हुए, वे दोनों गुफ़्तगू करते जा रहे हैं।]

रतनजी – अगर-मगर मत बोल, काम की बात कर। बोल आगे, क्या कह रहा था ?

रशीद भाई – कह रहा था, अगर मोहनजी इधर आ गए..ख़ुदा की कसम मैं उन्हें रोक नहीं पाऊँगा।

[मोहनजी दबे पांव चले आते हैं, यहाँ। और रशीद भाई की कही बात भी सुन लेते हैं। वे यहाँ आते ही कुर्सी पर धम की आवाज़ करते, बैठ जाते हैं। बेचारी कुर्सी, इनके भारी वज़न से चरमरा जाती है। फिर जनाबे आली मोहनजी, कहते हैं]

मोहनजी – [बैठते हुए, कहते हैं] – 'मोहनजी आ न जाए' मत कहिये, मोहनजी तो आ गये..और धम करते बैठ गए, कढ़ी खायोड़ो। अब कहो हरामखोरों दिन-भर तुम लोगों ने किया किया ? [बबूल की ओर उंगली का इशारा करते हुए कहते हैं] उस अफ़ीमची के पास बैठकर अफ़ीम ठोकना आसान है, मगर काम करते हुए पसीना निकालना बहुत कठिन है।

[तभी उन्हें स्टोर के दरवाज़े के पास, रखे कट्टे दिखायी दे जाते हैं। अब वे कट्टे को खोलकर क्या देखते हैं, उसमें ? उसमें सफ़ेद उज़ला पाउडर भरा है, उसको देखते ही उनकी बांछे खिल जाती है। वे खुश होकर, कहते हैं]

मोहनजी – रशीद भाई, इस कट्टे में मुझे टेलकम पाउडर नज़र आ रहा है। इसको मैं अपने गालों पर मल दूंगा, तो मैं ज़्यादा ख़ूबसूरत हो जाऊंगा। वैसे तो मैं ख़ूबसूरत हूं ही, इसी कारण मुझे मेरे मां-बाप ने मेरा नाम रखा है मोहन। यानी लोगों को मोहित करने वाला..फुठरा यानी ख़ूबसूरत।

[इनकी बात सुनकर, बबूल की छांव में लेटे भाना रामसा उठकर बैठ जाते हैं। और, हंसते हुए अफ़ीम की पिनक में कहते हैं]

भाना रामसा – [हंसते हुए, कहते हैं] – लगा दे, लगा दे रे पाउडर, तेरे गालों पर। मुझे क्या करना, भाई ? तू नाचेगा, साला कुतिया का ताऊ बनकर। राती-लाल हो जायेगी, तेरी पिछली दुकान। फिर तू नाचता रहना, लक्खू बंदरी की तरह।

[मगर रशीद भाई ने "होडा-होड गोडा-फोड़" प्रवृति को दूर करके, मोहनजी को चेतावनी देते हुए कहते हैं]

रशीद भाई – साहब, इस पाउडर से दूर ही रहो। अगर हाथ लगा दिया, तो मालिक आप तक़लीफ़ पाओगे।

मोहनजी – तू मुझे मना करने वाला है, कौन ? अफ़सर का कर्तव्य है, पहले माल को चैक करना। अब अगर तू बाधा उत्पन्न करने आया, मेरे कार्य के बीच में..? सच्च कहता हूं, तूझे निलंबित ज़रूर करवा दूंगा।

[इनके मना करने के बाद भी, मोहनजी मानते नहीं। **झट इसे मुफ़्त का माल समझकर, दोनों हाथो से पाउडर लेकर अपने गालों को मलना शुरू करते हैं। फिर क्या ? उनके गालों पर खुज़ली चलने लगती है। पाउडर से भरे हाथ अब जहां-जहां लगते हैं, वहां खाज़ शुरू हो जाती है।** खुज़ाने के बाद उस ठौड़ पर, जलन अलग से होती है। यह जलन भी ऐसी है, बस वे हाय-तौबा मचाते हुए, बन्दर की तरह कूदते जा रहे हैं। इनकी यह हालत देखकर, भाना रामसा अपनी हंसी दबा नहीं पाते। फिर, वे ज़ोर के ठहाके लगाते हुए कहते हैं]

भाना रामसा – पहले ही कह दिया था, अफ़सरों। पहले आपका मुंह होगा लाल, और बाद में होगी पिछली दुकान राती लाल। बाद में कूदोगे आप, लक्खू बंदरी की तरह।

[मोहनजी के कूकारोल मचाने से, भाना रामसा का सारा नशा उड़न छू हो जाता है। अब वे नशे को, वापस लाना चाहते हैं। और, सोचते जा रहे हैं]

भाना रामसा – [सोचते जा रहे हैं] – रशीद भाई की जेब में आज़ सुबह आते ही अफ़ीम की पुड़िया रखवायी थी, अब इस पुड़िया की ज़रूरत आन पड़ी है..अब जाकर उनसे ले आता हूं। रामसा पीर आपकी जय हो, एक बार और बाबा भोले शंभू को प्रसाद चढ़ा देंगे। जय शिव शंकर।

[इतना सोचकर वे जा पहुंचे वहां, जहां खुज़ली व जलन के कारण मोहनजी कूद-फांद करते हुए कूकारोल मचाते जा रहे हैं। भाना रामसा पहुँचना चाहते हैं, रशीद भाई के पास। मगर बीच में अवरोध की तरह कूद-फांद मचा रहे मोहनजी, उनको रशीद भाई के निकट जाने नहीं देते। इसके अलावा वे, भाना रामसा को हाथ से धकेलकर परे हटा रहे हैं। भाना रामसा भी, कौनसे कमतर खिलाड़ी हैं ? निकट जाने के लिए, वे उनका हाथ पकड़कर, उन्हें दूर लेते हैं। इस तरह इनकी हथेलियों पर, आ जाता है डेल्टा पाउडर। अफ़ीम हाथ न आने पर वे त्रस्त होकर, बोख़ला जाते हैं। वे बोख़लाये हुए, कहते हैं]

भाना रामसा – [बोख़लाये हुए, कहते हैं] – अरे ला रे, रशीद भाई। अफ़ीम की पुड़िया दे दे यार।

रशीद भाई – [खीज़े हुए कहते हैं] – पुड़िया गयी तेल लेने, आप पड़े रहो उस बबूल की छायां में। नहीं पड़े रहो, तो यहाँ आकर छिड़काव कीजिये अनाज की बोरियों पर। या फिर इलाज़ कीजिये, कूदते-फांदते मोहनजी का। इसके बाद मैं दूंगा आपको, अफ़ीम की पुड़िया।

भाना रामसा – ऐसा है भी क्या ? क्यों उतावली करते जा रहे हैं, आप ? यार, छिड़काव कर देंगे आराम से.... आप कहो तो, एक दिन आपको भी छिड़क दूं ?

रतनजी – मज़ाक बहुत हो गयी, भाना रामसा। अब काम की बात कीजिये, जैसा रशीद भाई ने कहा है...वैसा ही, कीजिये। या तो आप कीजिये बोरियों पर छिड़काव, या फिर कीजिये मोहनजी का इलाज़। हम दोनों तो इस पाउडर से होली खेले हुए हैं, जो अब इनके लिए कुछ नहीं कर सकते। आप ही, कुछ कीजिये।

भाना रामसा – [आग्रह करते हुए] – पुड़िया दे दे, यार रशीद। मेरा नशा उड़ गया रे, अब तू नकटाई कर मत। मुझे वापस नशा लाना ज़रूरी है, देख मेरे घुटनों का दर्द वापस शुरू हो गया है। अब जल्दी कर, मेरे बाप।

मोहनजी – [किलियाते हुए, ज़ोर से कहते हैं] – जले रे, जले रे..! [कूदकर कहते हैं] खोजबलिया तूने मुझे जला डाला, पाउडर दिखाकर। अरे ओ कढ़ी खायोड़ो। कुछ तो करो रे, मेरा इलाज़। अरे रामा पीर इन कमबख़्तों को कुम्भीपाक नरक में डाल दो, मुझे जला डाला, इन दोज़ख के कीड़ो ने ?

[मोहनजी की ऐसी दशा देखकर, भाना रामसा अपनी हंसी दबा नहीं पाते हैं..अब, वे ज़ोर का ठहाका लगाकर हंसते हैं। फिर लबों पर मुस्कान लाकर, मोहनजी से कहते हैं]

भाना रामसा – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – चुपचाप बैठ जाओ, मोहनजी। मुझे हो रही है, लघु शंका। [छोटी उंगली दिखाते हुए कहते हैं] पहले मैं मूत कर आ जाऊं, फिर वापस आकर आपको खाज़ मिटने की गोली दूंगा।

[इतना कहकर भाना रामसा उस अस्थायी युरीनल में दाख़िल होते हैं। एक मिनट ही नहीं बीता होगा, बहाना रामसा को अन्दर दाख़िल हुए.... झट भाना रामसा पतलून की खुली चैन पकड़े युरीनल से वापस बाहर निकल पड़ते हैं..! भगवान जाने, भाना रामसा ने पाउडर लगे इन हाथों को कहां-कहां लगा डाले ? बेचारे क्या जानते, कि रशीद भाई से अफ़ीम लाने क्या गए ? मोहनजी के हाथों पर लगा पाउडर, अपने हाथों पर लगा आये । बस अब पंडितजी महाराज कूकारोल मचाते हुए, गोदाम की तरफ़ बढ़ने लगे। अब वे भी कूदते-कूदते इन लोगों के नज़दीक चले आते हैं। इधर कूद रहे हैं मोहनजी, और उधर कूद रहे हैं भाना रामसा। दोनों का भांगड़ा डांस, बड़ा गज़ब का..? डांस करते मोहनजी का हाथ कभी गालों पर चला जाता है, तो कभी कमर पर। उधर भाना रामसा पतलून के अन्दर हाथ डाले हुए ऐसे नाच रहे हैं। मानो वे नागा आदिवासियों की तरह, भांगड़ा की प्रस्तुति अलग ढंग से करने जा रहे हो ? इनका नाच देखकर, रशीद भाई और रतनजी, डग-डग हंसते जा रहे हैं। वे दोनों अपनी हंसी, दबा नहीं पा रहे हैं। आख़िर, बेचारे अपने मुंह पर हाथ रखे, मींई मींई नीबली की तरह धीमें-धीमें हंसते जा रहे हैं।]

भाना रामसा – [कूकारोल मचाते हुए, चिल्लाते हैं] – जल गया, जल गया रे। अफ़ीम दबाकर, अब कटिया तू मज़ा ले रहा है...नालायक।

मोहनजी – [भाना रामसा से, कहते हैं] – अब तू क्यों नाच रहा है, लक्खू बांदरी की तरह ? अब करें क्या, ठोकिरा ? अब तो दोनों की पिछली दुकान हो गयी, राती लाल खुज़ाते-खुज़ाते।

[इस तरह शरीर इनके वश में रहा नहीं, और इधर भौम पर चल रही लाल चींटियां अलग से चढ़ जाती है मोहनजी के बदन पर। बात यह रही, आज़ सुबह-सुबह गाड़ी में मोहनजी के सालाजी मिल गये। उन्होंने लूणी स्टेशन पर उनको खिला दिए, लूणी के रसगुल्ले। **मुफ़्त के रसगुल्ले खाए**

जो कुछ बात नहीं, मगर आदत के मुताबिक़ उन्होंने अपने सफ़ारी कमीज़ पर क्यों गिराया रसगुल्ले का रस ? अब मोहनजी को, लाल चींटियों के काटने का आनंद लेना भी..उनकी एक, मज़बूरी बन गयी है। इनकी पिछली दुकान पर, इनका काटा जाना भी वाज़िब है। क्योंकि ये लाल चींटियां काली सफारी कमीज़ पर गिरे रस की सुगंध पाकर, बदन पर चढ़ती जा रही है। बदक़िस्मत से, उनकी कमर पर उनके लगा है बेल्ट..इस कारण यह चींटी-दल कमर से आगे जा नहीं पाता। फिर क्या ? वो चींटी-दल अपनी जान की परवाह किये बिना, उनकी पिछली दुकान की चमड़ी काटना शुरू कर देता है। रुख़सारों पर पाउडर मलने से उत्पन्न खुज़ली तो मिटी नहीं, और अब यह पिछली दुकान पर खुज़ली अलग से पैदा जाती है। इधर पसीने के कारण उनकी कमर पर भी खुज़ली होती है, उसे खुज़ाते-खुज़ाते उनकी पिछली दुकान पर खुज़ली तेज़ हो जाती है..तभी रुख़सारों [गालों] पर हो रही जलन, जान-लेवा हो जाती है। अब जनाब के जहां भी हाथ लगते हैं, वहां खुज़ली व जलन शुरू हो जाती है। इधर भाना रामसा की तो, और बुरी हालत हो गयी है। उनके बदन का कोई ऐसा हिस्सा न रहा..जहां खुज़ली शुरू नहीं हुई हो ? आख़िर बेचारे खुज़ाते-खुज़ाते, पतलून और कमीज़ खोलकर एक ओर फेंक देते हैं। और अब वे, चड्डे में अवतरित हो जाते हैं। भाना रामसा को, फ़र्क क्या पड़ता है ? वे तो वैसे ही बाबा ठहरे, उन्हें कहाँ मोह इन कपड़ो का ? आख़िर वे ठहरे, भोले बाबा शिव शंभू के भक्त। इधर मोहनजी को खुज़ाते खुज़ाते यह ध्यान नहीं रहता है, के "उनकी पतलून की चैन खुली पड़ी है।" अचानक उस खुली चैन पर, रतनजी की नज़र गिरती है। अब उनकी हंसी, ऐसी छूटती है..के, 'बेचारे हँसना रोक नहीं पाते, और उनके पेट में दर्द अलग से पैदा हो जाता है।'

रतनजी – [मोहनजी की पतलून की खुली चेन देखते हुए, वे ज़ोर से कहते हैं] - डब्बा खुला है रे, रशीद भाई। डाल दे, डाल दे...!

[अब "डाल दे, डाल दे.." शब्द ज़ोर से गूंजते जा रहे हैं, जिससे इस आवाज़ से मोहनजी चौंक जाते है। मंच पर अन्धेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच वापस रोशन होता है। जोधपुर रेलवे-स्टेशन का मंज़र वापस आता है, अभी-तक ये सभी एम.एस.टी. वाले उतरीय पुल पर ही खड़े हैं। मोहनजी कर्ण-भेदी आवाज़ सुनकर चौंक जाते हैं, और उनकी विचारों की श्रंखला टूट जाती है। और उनकी आँखों के आगे आ रहे वाकये के चितराम, आने बंद हो जाते हैं..जिससे मोहनजी चेतन होकर, सामने देखते हैं। सामने रतनजी ज़ोर से यह कहते हुए, दिखाई दे देते हैं]

रतनजी – [ज़ोर से कहते हैं] – डाल दे, डाल दे..! डाल दे मिर्ची बड़े, मेरे बैग में। मोहनजी मिर्ची बड़े, खाना नहीं चाहते।

मोहनजी – [चेतन होने के बाद, आखें मसलते हुए कहते हैं] – खाऊं क्यों नहीं ? मैं तो पूरा ही गिट जाऊंगा, कालिया भूत की तरह। आने दे, आने दे..मिर्ची बड़े आने दे।

रशीद भाई – [हंसी के ठहाके लगाते हुए, ज़ोर से कहते हैं] – मिर्ची बड़े है, कहाँ ? रतनजी ऊपर से दिखायी देते है सीधे, मगर है एक नंबर के ओटाळ। आप खड़े-खड़े झेरे खा रहे थे, आपकी ऊंघ मिटाने के लिए रतनजी ने "डाल दे, डाल दे..! मिर्ची बड़े, मेरे बैग में डाल दे..." का कथन, ज़ोर से बोला था।

रतनजी – आपको कहीं मिर्ची बड़े दिखायी दिए, क्या ?

[यह बात सुनते ही मोहनजी हो जाते हैं, सीरियस। फिर सीरियस होकर, कहते हैं]

मोहनजी – आप कुछ भी बोलो, मगर आप शब्द "डाल दे, डाल दे.." न बोले..तो अच्छा है।

रतनजी – क्यों जनाब, ऐसी क्या बात है ?

[सीटी की तेज़ आवाज़ सुनायी देती है, अहमदाबाद-मेहसाना जाने वाली लोकल गाड़ी प्लेटफोर्म नंबर दो पर आकर रुकती है। उसके आने से यात्रियों के बीच मची हाका-दड़बड़ की आवाज़ के आगे, किसी को कुछ सुनायी नहीं देता..जनाबे आली मोहनजी, क्या कह रहे है ? सभी पुलिया उतरकर, गाड़ी के पास चले जाते हैं। कई एम.एस.टी. होल्डर्स शयनान डब्बों में चले जाते हैं, मगर कई प्लेटफोर्म पर चहलक़दमी करते जा रहे हैं। इन लोगों का विचार है, गाड़ी के ठीक रवाना होते समय वे झट डब्बों में दाख़िल हो जायेंगे। इधर दीनजी डब्बे में दाख़िल होते हैं, दाख़िल होते ही उन्हें रतनजी की दी गयी हिदायत याद आ जाती है के "रेल गाड़ी में वहां बैठना चाहिए, जहां इमरजेंसी खिड़की लगी हो। ताकि आपदा के वक़्त झट बाहर निकलकर, हम अपनी जान बचा सकें।" इस हिदायत को याद रखते हुए, उन्होंने उस केबीन की सीटें रोक देते हैं, जहां इमरजेंसी खिड़की लगी है। सीटें रोकने के लिए उन्होंने कहीं बैग रख दिया, तो कहीं रजिस्टर तो कहीं अख़बार..इस तरह सीटें रोककर वे खिड़की वाली सीट पर खुद बैठ जाते हैं। रशीद भाई को मालुम है, अभी-तक गाड़ी में पंखें स्टार्ट नहीं हुए हैं। अत: वे प्लेटफोर्म पर रखे लोहे के बड़े काले रंग के बोक्स पर, बैठ जाते हैं। ताकि खुले में, वे ताज़ी हवा सेवन कर सके। बैठने के बाद, वे रतनजी और ओमजी को आवाज़ देकर अपने पास बुलाते कहते हैं।]

रशीद भाई – इधर आ जाइये। यह उठा हुआ दम ने, मुझे दुखी: कर डाला। ख़ुदा रहम, ऐसे स्लो-पोइजन से आने वाली मौत से तो अच्छा है..एक ही झटके में, ये प्राण बाहर निकल जाए। मगर, क्या करें रतनजी ? अपने हाथ में, कुछ नहीं है। **ख़ाली हाथ आयें हैं, और ख़ाली हाथ जायेंगे।**

रतनजी – मौत तो भगवान के हाथ में है, बस हम तो इंतज़ार कर रहे हैं कब भगवान के घर से बुलावा आ जाय ? किसको मालुम, यह मौत कब आ जाए ? मगर एक बात कह दूं, आपको। इस ज़िंदगी को स्टार्ट हुए, हो गए पूरे सतावन साल। अब आपको, एक अजीबोगरीब वाकया सुनाता हूं।

रशीद भाई – सुनाइये।

रतनजी – मेरे पड़ोसी की मां अपने पांवो से चलने में असमर्थ थी, सारे काम वह खटिया पर पड़ी पड़ी करती थी। कल उसकी सहेली आयी उससे मिलने, सारी रात न जाने उन्होंने आपस में क्या बातें की होगी ? और आज़ दोनों सहेलियां तड़के चार बजे, भगवान के घर चली गयी।

रशीद भाई – वाह भाई, वाह। यह तो, अल्लाह की क़रामत है। ऐसा लगता है, आपके पड़ोसी की मां अपनी सहेली का इंतिज़ार ही कर रही थी, वह आयी और भगवान के घर का बुलावा साथ ले आयी।

ओमजी – बस, यही बात है, के 'बेमाता ने जो मौत के योग बनाए हैं..वे योग जब मिलेंगे तब ही हमारी मौत आयेगी।' अभी-तक इस ज़िंदगी की गाड़ी को, भंगार में जाने का हुक्म नहीं मिले हैं। आख़िर, इस गाड़ी को कौन देगा सिंगनल ? यह तो जनाब, बेमाता जाने।

रतनजी – सिंगनल देगा कौन, ओमजी ? अब हमारी ज़रूरत क्या, हमारे घर वालों को ? आख़िर, हम तो हैं, **पुरानी मशीन के कल-पूर्जे।** इन घिसे हुए पूर्जों की, मार्किट में क्या क़ीमत ? वैसे तो जानते हैं हम, बाज़ार में पुराने कल-पूर्जों की बहुत क़द्र है। आज़कल के मेकेनिक अभियंता इन पुराने कल-पूर्जों की नक़ल तैयार कर, नयी मशीन बना लेते हैं। इस कारण पुराने कल-पूर्जों की मांग बढ़ती जा रही है, वैसे यह सरकार भी..

रशीद भाई – [बात काटते हुए, कहते हैं] – अरे जनाब, तब ही मैं कहता हूं यह सरकार पागल नहीं हैं..यह बहुत समझदार है, यारों। इस कारण, यह नए छोरों को नौकरी देती नहीं। **बस, वह तो कर्मचारियों की सेवा-अवधि बढ़ाकर अपने जैसे पुराने कल-पूर्जों से काम चला रही है।**

दीनजी – [खिड़की से मुंह बाहर झांककर, कहते हैं] – क्यों नहीं चलायेगी, जनाब ? आप जैसे कल-पूर्जे मुखासमत [विरोध] कर नहीं सकते, क्योंकि सेवा-निवृति के नज़दीक आने के बाद कोई कर्मचारी अपनी सर्विस बुक ख़राब करवाना नहीं चाहेगा।

ओमजी – सच कहा, दीनजी। **जहां तक इस बदन में ताकत है, ये पुरानी मशीन के कल-पूर्जे चलते रहेंगे। अब क्या करें, जनाब ? चले, जितनी यह ज़िंदगी है।** भगवान के घर से, जब कभी बुलावा

आएगा..तब, हम एक मिनट भी नहीं रुकेंगे। **बीते जितने पल अपने है, बस जनाब उसे सुखद बनाओ दीनजी।**

दीनजी – करें भी, क्या ? मज़बूरी है, जनाब। इन पुरानी मशीनों के घिसे हुए कल-पूर्जों की घर में भी कहाँ है, क़द्र ? घर बैठ गए, तब दुल्हनें यही कहेगी 'बा'सा खोड़ीला-खाम्पा है..बाहर ही नहीं जाते। पूरे दिन घर घर बैठे, खटिया तोड़ते है।

ओमजी – सच्च कहा, आपने। वास्तव में, यह है ज़िंदगी का सत्य। जब-तक ये हाथ-पांव चलते हैं, तब-तक चुप-चाप नौकरी करते रहेंगे। उसी में, हमारा भला है।

रतनजी – सेवानिवृत भी हो गए, तो क्या ? प्राइवेट जोब कर लेंगे कहीं, बस यही ज़िंदगी है। आख़िर, कौन फैलाएगा इन बच्चों के आगे हाथ ? साथियों, जो भी बुलाएगा पहले...हमारे जैसे पुरानी मशीन के घिसे हुए पूर्जे..बस, हम फटा-फट चले जायेंगे वहां नौकरी करने।

[प्लेटफोर्म पर लगी घड़ी में नौ बजकर, हो गए पंद्रह मिनट। अब दयाल साहब घड़ी देखकर आते हैं, फिर अपने साथियों के पास आकर कहते हैं]

दयाल साहब – गाड़ी के इंजन ने सीटी दे दी है, भाई लोगों। **अब बैठ जाइये गाड़ी में, ना तो ये पुरानी मशीन के घिसे हुए पूर्जे जोधपुर में ही रह जायेगी। फिर कहना मत, कि 'हमारी सी.एल. पर चाकू चला दिया।'**

दीनजी — अब बाहर क्यों खड़े हैं, भाइयों। अब बैठ जाइये गाड़ी में, लाइट आ गयी है..पंखें चालू हो गए हैं। अब आप लोगों का दम उठेगा नहीं, [खिड़की के अन्दर मुंह डालते हुए कहते हैं] आ जाइये..बिराज जाइये, अपनी सीटों पर।

[अब सभी अपनी-अपनी सीटों पर बैठ जाते हैं, धीरे-धीरे गाड़ी प्लेटफोर्म छोड़ देती है। ऐसा लगता है, आज़ मोहनजी का मूड ठीक नहीं है। वे पड़ोस वाले केबीन में अकेले बैठे हैं। इतने में उनके पास चले आते हैं, शर्माजी..वी.आई.पी. बैग को थामे। और सीधे आकर मोहनजी से सवाल दाग देते हैं]

शर्माजी – मोहनजी यार, यहाँ क्यों अकेले बैठे हो..पीपली जैसा मुंह लिए ? चलिए यार, आपके साथियों के पास चलकर बैठते हैं।

मोहनजी – बैठना तो मैं चाहता हूं, मगर करूँ क्या ? मेरे बैठते ही, या तो वे उठकर चले जाते हैं, नहीं तो वे मेरे जैसे सीधे आदमी को उड़ाने के लिये मुझसे मज़ाक करते रहते हैं।

शर्माजी – [हंसते-हंसते कहते हैं] – क्या आप पीपली के पान हो, या हो बोरटी के पान ? इनके उड़ाने से, आप उड़ जाओगे ? उठिए, और चलिए मेरे साथ। मैं चलकर देखता हूं, आपको कौन उड़ा सकता है।

[शर्माजी मोहनजी का हाथ पकड़कर, ले जाते हैं उनके साथियों के केबीन में। और इधर, आ जाता है भगत की कोठी का स्टेशन। इस पहले वाले केबीन में, भगत की कोठी से चढ़े यात्री आकर बैठ जाते हैं। अब इस तरह इस केबीन में, एक भी ख़ाली सीट नहीं रहती है। उधर अपने साथियों के केबीन में आकर, मोहनजी क्या देखते हैं ? कि, 'ओमजी अपना बैग सिरायते रखकर, तख़्त पर लेटे हैं। रतनजी और दीनजी, आमने-सामने खिड़की वाली सीटों पर बैठे हैं। दीनजी जिस तख़्त [bench] पर बिराज़े हुए हैं, उसी तख़्त पर के.एल. काकू भी बैठे हैं। इनके सामने दयाल साहब बैठे हैं। अभी वे दतचित होकर अपनी डायरी देख रहे हैं..कि 'आज़ दफ़्तर जाकर, उनको कौनसा काम निपटाना है ?' बची हुई सीट पर, छंगाणी साहब सर के नीचे हाथ रखकर लेटे हैं।' छंगाणी साहब लम्बे व दुबले आदमी है। वे बिजली घर के सेवानिवृत सहायक अभियंता है, जो अभी इसी बिजली-घर दफ़्तर में डेली वेजेज़ पर काम कर रहे हैं। इस कारण इनको, रोज़ पाली आना-जाना करना पड़ता है। कारण यह है, जिस दिन ये पाली जा नहीं पाते उस दिन का इनका वेतन काट लिया जाता है। इनके सर के पूरे बाल सफ़ेद हो चुके हैं, और ये जनाब इन बालों से मेल खाती उज़ली सफ़ेद ड्रेस पहना करते हैं। इनकी ड्रेस को देखकर ऐसा लगता है, मानो ड्रेस को धुलने के बाद, टीनापोल लगा दिया हो। सरकार इनको रिटायर कर चुकी है, मगर ये जनाब दिल और शरीर से सेवानिवृत कर्मचारी नहीं लगते। स्वास्थ्य के मामले में ये अभी भी, आज़ के जवानों को पीछे रखते हैं। जब रेल गाड़ी जोधपुर प्लेटफोर्म पर आती है, उस वक़्त ये चलती गाड़ी से नीचे उतरकर उतरीय पुल चढ़ जाते हैं। इनको अपनी घर वाली से बहुत प्रेम है, गाड़ी में बैठे-बैठे उनको याद करते रहते हैं। जब-कभी अपने साथियों से गुफ़्तगू करते हैं, उस वक़्त वे भागवान (पत्नि) का टोपिक बीच में ज़रूर डाल दिया करते हैं। भले उनका वहां जिक्र करने की, कोई ज़रूरत नहीं रही हो ? इनकी बातों में, होता भी क्या ? आज़ मेम साहब ने तुलसी ग्यारस का उपवास किया है, कल वे गंगश्यामजी के मंदिर गए थे तब पूर्णिमा के एकासना करने की कथा सुनी..अगली पूर्णिमा को वे ज़रूर, उजावणा की प्रसादी करने का विचार रखती है। इस तरह के टोपिक चलाकर वे भागवान की कथा बांचते रहते है, और अगले सुनने वालों से हूंकारा ज़रूर भरवाया करते हैं।]

[इस तरह, अब केबीन में मोहनजी और शर्माजी दाख़िल होते हैं। दाख़िल होकर साथियों से कहते हैं।]

शर्माजी – वाह, भी वाह। आप लोग मोहनजी को अकेला छोड़कर, इधर आकर कैसे बैठ गए ? लो देखो, मैं मोहनजी को राज़ी करके इधर लाया हूं..आपके पास बैठाने के लिए। [दीनजी से कहते हैं] खिसको दीनजी एक तरफ़।

दीनजी – [थोड़ी जगह बनाकर कहते हैं] – लीजिये बिराजिये, मोहनजी मालिक।

[मोहनजी बैठ जाते हैं दीनजी के पहलू में, धम करते। ना तो वे वे अपने दायीं तरफ़, न देखते हैं बायीं तरफ़। बस मन-भरा बोझ डाल देते हैं सीट पर। उनके इस तरह बैठने से काकू संभल नहीं पाते..बस, झट उनका सर टकरा जाता है मोहनजी के सर से। अब काकू आराम से बैठने के लिए, खिसकना चाहते हैं... दूसरी तरफ़। मगर वहां तो आकर बैठ गए हैं, शर्माजी...खोडीला नंबर एक। शर्माजी तो ऐसे बिराजे हैं, खोड़ीले खाम्पे की तरह..आराम से पालथी मारकर। फिर ऊपर से अपना वी.आई.पी. बैग खोलकर, अपने दफ़्तर की फाइलें बाहर निकलते हैं। फिर, आराम से दफ़्तर का काम करने बैठ जाते हैं। अब उनके लिए मोहनजी गए, भट्टी की भाड़ में...वे तो बैठे-बैठे आराम से, दफ़्तर का काम निपटाते जा रहे हैं। इनको बेचारे काकू की दुर्दशा का भी, कोई भान नहीं ? बेचारे काकू की स्थिति तो, चक्की के दो पाट के बीच में पिसे जा रहे अनाज की तरह हो गयी है। उन्हें एक तरफ़ दबा रहे हैं मोहनजी, और दूसरी तरफ़ दबाते जा रहे हैं शर्माजी ? इस कारण अब वे होंठों में ही, शर्माजी को गालियों के गुलदस्ते भेंट करते जा रहे हैं।]

के.एल.काकू – [होंठों में ही कहते हैं] – कैसा है, यह नालायक शर्माजी ? कमबख़्त, लेकर आ गया मोहनजी को। ख़ुद तो बैठ गया, फाइलें लेकर। और मुझको फंसा डाला बीच में..इधर माता के दीने मोहनजी दबाते जा रहे हैं मुझे, और दूसरी तरफ़ दबा रहा है मुझे यह ख़ुद। फिर, साला कमीना, बैठ गया यहाँ फाइलें लेकर ? नालायक, फिर तू दफ़्तर में करता क्या होगा ? साला करता होगा, परायी पंचायती ? भले इसके अलावा, करता क्या होगा ?

[इतने में मोहनजी देते हैं, एक धक्का..काकू को। और उधर गाड़ी रुक जाने से लगता है, एक और धक्का काकू को। अब ये दोहरे धक्के, काकू कैसे सहन कर पाते..? धक्का देकर, मोहनजी कहते हैं..]

मोहनजी – [काकू को धक्का देते हुए कहते हैं] – खिसको काकू, थोड़ा और आगे। अब मैं दोपहरी करूंगा।

[खाने की बात सुनते ही दयाल साहब झट उठ जाते हैं, और होंठों में ही कहते हैं]

दयाल साहब – [होंठों में ही कहते हैं] – अरे, सांई झूले लाल। इस जोधपुर शहर में या तो खंडे प्रसिद्ध है, या फिर प्रसिद्ध है मोहनजी जैसे खावण खंडे। अब यहाँ बैठे रहे तो मोहनजी ज़रूर कपड़े ख़राब तो करेंगे ही, और साथ में हमें भी ज़बरदस्ती देखना होगा इनका फूहड़ ढंग खाना खाने का।

[फिर क्या ? झट दयाल साहब उठकर, वहां से रुख़्सत हो जाते हैं..दूसरे केबीन में जाकर, ख़ाली सीट देखने। अब उनके जाने के बाद, तख़्त पर काफ़ी जगह हो गयी है। अत: छंगाणी साहब आराम से लेट जाते हैं। क्योंकि, अब इस तख़्त पर इनके अलावा ख़ाली रतनजी ही बैठे हैं। अब मोहनजी, दीनजी से कहते हैं]

मोहनजी – [दीनजी से कहते हैं] – यार भा’सा। क्या करें जनाब, खाना खाने की पूरी ठौड़ ही नहीं मिली..अब क्या करें, रामा पीर ?

दीनजी – जनाब, ऐसी बात है, तो आप खाना मत खाइए। जब पूरी सीट मिल जाए, आपको। तब, आप भोजन कर लेना।

[मगर मोहनजी क्यों मानेंगे, उनकी सलाह ? झट थोडा टेडा बैठकर, थोड़ी सी जगह पैदा कर लेते हैं। और वहां रख देते हैं, खाने का तीन खण वाला सट। अब उसको खोलकर, रोटियाँ और सब्जी वाले खण बाहर निकालते हैं..तभी दीनजी इनकी गंदी आदत को जानते हुए, झट उनसे कहते हैं]

दीनजी – रुक जाइये, मोहनजी। बैग से अख़बार निकालकर दे रहा हूं, आपको। अख़बार के पन्नों को टिफ़िन के खण के नीचे बिछा दीजिये, ताकि सीटें ख़राब नहीं होगी।

मोहनजी – आप धीरज रखिये, भा’सा। मैं सीटें ख़राब नहीं करूंगा, आप मुझ पर भरोसा रखिये।

[अब मोहनजी का अख़बार लेने का कोई सवाल नहीं, उन्होंने तो झट तीनों खण सीट पर रखकर भोजन करना शुरू कर दिया है। सब्जी की सौरम, फैलती है। पछीत पर सो रहे रशीद भाई की नींद खुल जाती है, यह सब्जियों की महक पाकर। फिर सब्जियों को देखकर, रशीद भाई चहक उठते हैं..]

रशीद भाई – वाह मोहनजी, वाह। क्या सब्जियां बनायी है, भाभीसा ने ? आलू, गोभी, मटर और टमाटर की मिक्स्ड सब्जी, देशी घी में तैयार की गयी रतालू की सब्जी..अरे भाई, क्या देसी घी से तर लज़ीज़ फुलके ? मोहनजी । खाने का आनंद आ जाएगा..आपको ।

[मोहनजी को कोई फ़र्क पड़ने वाला नहीं, रशीद भाई स्वादिष्ट भोजन की चाहे जितनी तारीफ़ कर डाले ? मगर वे इनको खाने का निमंत्रण, देने वाले नहीं। वे सब्जी में रोटी का निवाला डूबा-डूबाकर, निवालों को मुंह में डालते ही जा रहे हैं। उन्हें यह भी पता नहीं, कि 'सब्जी के छींटे, उनके सफ़ारी सूट पर गिरते जा रहे हैं। सब्जी में डाला हुआ घी-तेल सीट पर गिरकर, सीट को गंदी करता जा रहा है। अब इधर गाड़ी की खरड़-ख़रड आवाज़ और छंगाणी साहब के खर्राटे, और फिर उधर मोहनजी के खाने की हलबलाहट की आवाज़...? अब ख़ुदा को ही मालुम, ये सभी आवाजें आपस में कैसे ताल-मेल बैठाती जा रही है ? थोड़ी देर में मोहनजी के भोजन का पहला दौर, किसी तरह पूरा हो जाता है। अब वे सट को बंद करके, बैग में रख देते हैं। फिर वे बैग से ठंडे पानी की बोतल निकालते हैं, और रतनजी से कहते हैं]

मोहनजी – रतनजी कढ़ी खायोड़ा, थोड़ा खिड़की से दूर हटो, मैं खिड़की से हाथ बाहर निकालकर अपने हाथ धो रहा हूं।

रतनजी – अरे साहब, मैंने कढ़ी की सब्जी खायी नहीं है, मगर अभी-अभी आपके मफ़लर और आपके कमीज़ ने रतालू की सब्जी ज़रूर खायी है। बात ऐसी है, अब मुझे आपका हुक्म ज़रूर मानना होगा...न मानूंगा तो जनाब, आप मेरे ऊपर जूठा पानी गिरा देंगे ? लीजिये, अभी दूर हटता हूं।

[खिड़की से बाहर हाथ निकालकर, मोहनजी हाथ धोते हैं। पानी के छींटो से बचने के लिये रतनजी और दीनजी भा'सा अपना मुंह झट दूर लेते हैं, दीनजी भा'सा के कुछ नहीं होता, मगर बेचारे रतनजी के अक्समात दूर हटने पर..उनकी कमीज़ की जेब से, डिबिया बाहर निकलकर नीचे गिर पड़ती है। ख़ुदा का मेहर ही समझो, बेचारे रतनजी पर। नीचे गिरने पर वह डिबिया खुली नहीं..न तो डिबिया के अन्दर रखा नक़ली दांत चिपकाने का मसाला बाहर निकलकर बिखर जाता। इस तरह बैठे-बैठे, बेचारे रतनजी का भारी नुक्सान हो जाता। यह बात ही कुछ ऐसी है, जब-तक डिबिया संभालकर उन्होंने अपने हाथ में न ले ली, तब-तक उनकी हालत ऐसी लगती है..जैसे उनकी जान हलक़ में आकर, फंस गयी हो ? फिर क्या ? फिर क्या ? वे झट उस डिबिया को सावधानी से रखते हैं, अपनी जेब में। अब डिबिया को जेब में डालते ही उनको ऐसा लगता है, मानो उनके बेज़ान बदन में जान आ गयी हो ? अब तो उनकी नाराज़गी का पहाड़, मोहनजी के ऊपर गिर पड़ता है। वे नाराज़गी से, मोहनजी से कहते हैं]

रतनजी – [गुस्से में कहते हैं] – यह क्या कर डाला, मोहनजी ? अभी नुक्सान हो जाता, जनाब। जानते नहीं, आप ? मुंह में डाली हुई बत्तीसी को चिपकाने के इस मसाले को मैं, करीब दो हज़ार रुपये ख़र्च करके लाया हूं।

दीनजी – [बात काटते हुए, कहते हैं] – मोहनजी। रतनजी के ऊपर मेहरबानी रखें, जनाब। आपके कारण ही, इनको बत्तीसी के पैसे ख़र्च करने पड़े। इनके दांत नहीं होने पर आप, ठोक जाते थे बाल गोपाल का प्रसाद।

मोहनजी - मैं तो अब भी ठोक जाऊंगा, आप सभी देखते रहना।

दीनजी – अब कैसे ठोकोगे, मोहनजी ? यह बत्तीसी इनके मुंह में, बराबर फिट हो गयी है। अब मुमकिन नहीं, आप इनका हिस्सा अरोग जाओ।

रतनजी – अब भले आप कुछ भी कहो, यार ? बस, अब बातें रह गयी। पहले आप लोग कहते थे, 'ये क्या खायेंगे ? ये है, एक दंता।' बस मालिक, अब आप कोई बुरी नज़र मत लगाना।

रशीद भाई – रतनजी, मैं आपके लिए मौलवी साहब से एक इमाम जामीन मांगकर ले आ आऊंगा। उसको पहनने के बाद किसी की बुरी नज़र आपको लगेगी नहीं। मगर जनाब, मोहनजी को छोड़कर।

दीनजी – जी हां, रशीद भाई आप सौ फीसदी सत्य कह रहे हैं। अपने बुजुर्ग भी कहते हैं, अघोरी की नज़र से रहना दूर। वहां तो जनाब, यह इमाम जामीन भी असर नहीं करता।

ओमजी – मोहनजी सब कुछ खा सकते हैं, अघोरी की तरह। कुछ भी खिला दो, इनको.. मगर खिलाना होगा आपको...केवल मुफ़्त में। इसलिए कहते हैं, इनको...अघोर मलसा।

मोहनजी – [टोपिक बदलने का प्रयास करते हैं] – मुझे लगी है प्यास, और आप लोग मज़ाक करते जा रहे हैं मुझसे ? क्यों प्यासा मार रहे हो, मुझे...बेटी के बाप ? जल्दी थमा दीजिये, पानी की बोतल।

[कोई अपनी बोतल उनको देता नज़र आता नहीं, तब दुखी होकर वे रामा पीर को पुकारते हैं]

मोहनजी – [दुःख के मारे, बोल पड़ते हैं] - ए, मेरे रामा पीर। इन लोगों ने मुझे यहाँ बुला तो लिया, अब मुझे प्यासा रखकर मेरी जान निकाल रहे हैं।

[आख़िर, पानी बचने के चक्कर में वे वे अपनी पानी की बोतल बैग में रखते हैं। फिर, कहते हैं।]

मोहनजी – [कातर सुर में कहते हैं] – क्या करूँ, यहाँ तो कोई ऐसा दीनदार मौजूद नहीं...जो अपनी बोतल से मुझे पानी पिला दे। वक़्त ख़राब है, पानी की बचत तो अब करनी होगी मुझे...थोड़ा सा पानी बचा है, मेरी बोतल में..इस बोतल को बैग में रख देता हूँ...यह पानी, बाद में काम आयेगा।

रतनजी – फिर, अभी किससे काम चलाओगे, मोहनजी ?

मोहनजी – मज़बूरी है, अभी तो भाई लोगों की बोतलें, ख़ाली करता रहूँगा।

[अचानक के.एल.काकू को लगती है प्यास, वे सेवाभावी रशीद भाई से पानी की बोतल माँगते हैं। मगर, यह क्या ? रशीद भाई तो निकले, एक नंबर के चतुर। झट वे ओमजी के बैग से बोतल निकालकर, उसे काकू को थमा देते हैं। काकू ठहरे, क़ायदे वाले आदमी..इसलिए वे ऊपर से पानी पीकर, मोहनजी को बोतल थमा देते हैं। मगर, यह क्या ? इस समय ओमजी को कहाँ आ रही है, नींद ? क्योंकि, यहाँ सोने के लिए पर्याप्त जगह तो है नहीं..फिर, बेचारे करते क्या ? लोगों को दिखाने के लिए, नींद लेने का नाटक ही करेंगे...और, क्या ? उनकी बोतल मोहनजी के पास चली जाय, यह ओमजी को गवारा नहीं। वे झट मोहनजी से बोतल छीनकर, वापस अपने बैग में डाल लेते हैं। इसके बाद, वे टोचराई करते हुए कहते हैं]

ओमजी – मोहनजी। ख़ुद की बोतल, बैग में पड़ी दूध दे रही है ? पानी पीना हो तो तो ख़ुद की बोतल निकालते क्यों नहीं, बैग से ? लोगों का पानी पीना लगता है, अमृत..और साथ में, उनकी बोतलों को [धीरे से, बोलते हैं] मुंह लगाकर, जूठी अलग से कर देते हो ?

[अपने साथियों की ऐसी ओछी बातें सुनकर, मोहनजी का दिल दर्द से भर जाता है। **इधर गाड़ी की खरड़ खरड़ आवाज़, और उधर छंगाणी साहब के खर्राटों की आवाज़..अब, कैसे आती है नींद..? यहाँ ना तो सोने की ठौड़, और ना लोगों का मोह ? मोहनजी जनाब झिल गए हैं, बेचारे ?** अब मोहनजी जायें, तो कहाँ जायें ? पहले वाले केबीन की सारी सीटें भर गयी है। अब वे अपने दिल में, शर्माजी को भर-पेट गालियां देते हैं। जिसने आराम से बैठे जनाबे आली मोहनजी को, इस केबीन में लाकर बैठा दिया..ख़ाली, उनको परेशान करने के लिये। अब यह शर्माजी नाम का खड़ूसिया, लेकर बैठ गया है अपने दफ़्तर की फाइलें। और देख नहीं रहा है, मोहनजी को। बेचारे क्या-क्या तक़लीफ़, उठाते जा रहे हैं ? ऐसा लगता है, अब इसने नहीं बोलने की कसम खा रखी है ? मोहनजी के दिल में शर्माजी के प्रति नफ़रत भर जाती है, उनके दिल से

यह एक ही आवाज़ निकल रही है, के **“यह साला शर्मा नहीं, निशरमा है..माता का दीना।”** आख़िर दुखी होकर वे बैग उठाते है, इनके उठते ही सभी साथियों की नज़र इनके पिछवाड़े पर गिरती है। अब सभी साथियों को मालुम हो जाता है, **रोज़ लोगों को तेल की चिकनाई वाली सीटों पर बैठाकर उनकी पतलून ख़राब करने वाले मोहनजी आज़ पूरे झिल गए हैं। उनका वापस उसी जगह पर बैठ जाना, जहां बैठकर उन्होंने अभी खाना खाया है..! बदक़िस्मत से वे, उस तेल की चिकनाई वाली सीट को साफ़ करना भूल गए थे। और बिना ध्यान दिए, वे वापस वहीँ बैठ गए हैं। अब सभी उनका पिछवाड़ा देखकर, हंसते हैं।** रतनजी से बिना डाइलोग बोले रहा नहीं जाता, वे हंसते हुए डाइलोग बोल देते हैं]

रतनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – आख़िर, आज़ पहाड़ के नीचे ऊंट आ गया है।

[ऊंचे क़द के छंगाणी साहब की नींद उड़ गयी है, इन लोगों के हंसने से। रतनजी का बोला गया डायलोग, अब वे अपने ऊपर ले लेते हैं। जैसे ही उनके कानों में रतनजी के शब्द गिरते हैं..वे चौंकते हुए कहते हैं]

छंगाणी साहब – भाई मैं लंबा ज़रूर हूं, मगर आप मुझे ऊंट मत समझो। जानते हो ? ऊंट की गाबड़ [गरदन] बहुत लम्बी होती है, मगर बाढ़ने [काटने] के लिए नहीं होती। आप लोगों में, किसी भाई को मेरे पास बैठना है तो..आकर बिराज जाइये। मगर, आप इस तरह मोसा [ताना] मत बोला करें। आप लोगों से हाथ जोड़कर अर्ज़ है, आप सीधे आकर बिराज जाइये, यहाँ।

[इतना कहने के बाद छंगाणी साहब को मेम साहब याद आ जाते हैं, फिर क्या ? झट उठकर बैठ जाते हैं, और उनका क़िस्सा बयान करते हैं]

छंगाणी साहब – लीजिये जनाब, एक क़िस्सा बयान करता हूं। एक दिन मेरे मेम साहब बोले, कि...

रशीद भाई – [पछीत [ऊपर वाली बर्थ से] से उतरकर, कहते हैं] – बस, बस..! आपकी मेम साहब का पुराण बाद में सुनेंगे, अब लूणी स्टेशन आ गया है। अब आप चाय-वाय पाते हो तो, बात कीजिये।

[इन्जन सीटी देता है, गाड़ी की रफ़्तार कम हो जाती है। गाड़ी प्लेटफोर्म पर आकर, रुकती है। अब वेंडरों की आवाजें प्लेटफोर्म पर गूंज़ती जा रही है, इधर पुड़ी-सब्जी बेचने वाले वेंडर डब्बों की खिड़कियों के पास से गुज़रते जा रहे हैं। अब कभी चाय की थड़ी वाले की आवाज़ गूंज़ती है “चायेऽऽ ऊनी ऊनी चाय, मसाले वाली चाय।” तब कभी पुड़ी वाले शर्माजी की आवाज़ गूंज़ती है

"अंईऽऽऽ पुड़ी-सब्जी दस रुपये पाव, साथ में ले लो दाणा मेथी का अचार..ओय पुड़ी खायके।" इनकी आवाजें सुनकर, मोहनजी उठकर डब्बे के दरवाज़े के पास चले आते हैं। अब वे बाहर प्लेटफोर्म पर निग़ाह डालते हैं, वहां उन्हें चाय लाने वाला छोरा हुकम सिंह दिखायी दे जाता है। अब वे उसे आवाज़ देकर, अपने पास बुलाते हैं। आवाज़ सुनकर, हुक्म सिंह हुक्म बजाने हेतु आता है निकट।]

हुकम सिंह – [चाय से भरा सिकोरा थमाते हुए, कहता है] – लीजिये जनाब, आपकी मनपसंद एम.एस.टी.कट चाय। हुज़ूर दो दिन के, चाय के पैसे बकाया है। अब दे दीजिये, जनाब। नहीं तो, कल सेठ चाय देगा नहीं।

मोहनजी – पैसे कहाँ भागकर जाते हैं, भले आदमी ? आदमी की ज़बान का भरोसा, नहीं है रे कढ़ी खायोड़ा ?

हुकम सिंह – जनाब आदमी का भरोसा कर सकता हूं, मगर आपका नहीं। जनाब, आप तो..

[बाहर प्लेटफोर्म पर चाय पी रहे दयाल साहब, राजू साहब और शर्माजी के कानों में हुकम सिंह की आवाज़ सुनायी देती है। यह बात सुनकर, वे इनको टका-टक देखते जाते हैं। मगर कुबदी शर्माजी, बिना डाइलोग बोले कैसे रह पाते ?]

शर्माजी – [हुकम सिंह से कहते हैं] – बन्ना हुकम सिंहसा। मोहनजी आदमी नहीं है, और पुरुष भी नहीं है। मगर, महापुरुष ज़रूर है। तूने शत प्रतिशत सही बात कही है।

[शर्माजी के कोमेंट्स सुनते ही, राजू साहब और दयाल साहब ज़ोर से ठहाका लगाकर हंसते हैं। के.एल.काकू मुंह पर रुमाल दबाकर, मींई मींई नीम्बली की तरह हंसते जा रहे हैं। अब मोहनजी सोचने को बाध्य हो जाते हैं, के 'अगर मैं यहाँ खड़ा रहा तो, ये लोग ज़रूर मेरी इज़्ज़त की बखिया उधेड़ देंगे, फिर, क्या ? हुकम सिंह जैसे पराये आदमियों के सामने मेरी क्या इज़्ज़त बनी रहेगी ?' फिर, क्या ? मोहनजी झट जेब से कड़का-कड़क दस का नोट बाहर निकालकर, हुकम सिंह को थमा देते हैं। फिर, वे उससे कहते हैं]

मोहनजी – [नोट थमाते हुए कहते हैं] – ले भाई दस का नोट, हिसाब कल करेंगे। अब तू धीरज रखना, कढ़ी खायोड़ा।

हुकम सिंह – [नोट लेकर, अपनी जेब में रखता है] – हजूरे आलिया, मैं कढ़ी की सब्जी खाकर नहीं आया हूं। मगर देसी घी में बनी ऐसी लापसी, ठोककर आया हूँ...जिसके आगे यह आपकी कढ़ी भी कुछ नहीं है, जनाब। अब रुख़्सत दीजिये, चलता हूं। [जाता है]

[इंजन सीटी देता हैं, यात्री डब्बों में आकर अपनी सीटों पर बैठ जाते हैं। अब गाड़ी लूणी स्टेशन छोड़ चुकी है। और उसने, अपनी तेज़ रफ़्तार बना ली है। अब बूट पोलिश करने वाले छोरों का दल, डब्बे में दाख़िल होता दिखाई देता है। इन छोरों में अजिया, अनवर, बबलू, तनवीर और शहजाद, बातें करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।]

शहजाद – [होंठों में ही, बड़बड़ाता हुआ चलता है] – सारी कमाई तुम लोग कर लोगे, नासपीटों.. अरे, मेरा भी ध्यान रखा करो। सालों, मैं यहीं हूं। [केबीन में घुसता हुआ गीत गाता है] 'धीरे से जाना ओ खटमल। धीरे से जाना केबीन में।'

अजिया – [बीच में अपनी टांग फंसाकर शहजाद को रोकता है, फिर कहता है] – हम तो हैं, खटमल। आ इधर, पहले चूस लेता हूं तेरा खून।

बबलू – [अजिया की टांग दूर लेता हुआ, कहता है] – चूस लेना यार पहले इस मानव को कुछ कमाने तो दे। आज़ इसकी कमाई से पाली में देखेंगे, फिल्म 'बूट-पोलिश।'

अनवर – [सीटों पर बैठे एम.एस.टी. वालों को देखकर, कहता है] – अब इनसे क्या करें, कमाई ? यार, यहां तो एम.एस.टी. वाले भरे पड़े हैं। और पीछे जाते हैं तो बैठे हैं, टी.टी.ई। ये टी.टी. लोग तो, मुफ़्त में करायेंगे बूट पोलिश। मगर ये भले इंसान तीन की जगह दो-दो रुपये, बूट पोलिश करवाकर देते हैं।

छंगाणी साहब – [बूट पोलिश करने वाले छोरों को देखकर, कहते हैं] – मरो मत रे, दो-दो रुपये के लिए। आ जाओ इधर, मुझे मेरे बूटों की मरम्मत भी करवानी है...और, पोलिश भी।

अजिया - [बबलू के कान में कहता है] – यार, मुर्गा फंस गया। अब बता, इसे हलाल करेगा कौन ? तू या मैं ?

[छंगाणी साहब अपने बूट खोलते हैं। ये बूट तो ऐसे लगते हैं, मानो 'ये बाबा आदम के ज़माने के हों ? बीसों पैबंद लगे हुए, बस इस तरह छंगाणी साहब इन बूटों पर मेहरबानी करके..पैबंद लगवा-लगवाकर, इन बूटों की उम्र बढ़ाते जा रहे हैं।]

रशीद भाई – साहब, मुझे तो ये जूते लगते हैं....

छंगाणी साहब – [बात काटते हुए कहते हैं] – ज़्यादा पुराने नहीं है रे, रशीद भाई। पिछले दस साल पहले शादी की सालगिरह मनाई थी, तब ससुराल से ये बूट मुझे भेंट में मिले थे। ससुराल का माल है, भाई। अब यों कैसे फेंक दे, इनको ? मेम साहब को नाराज़ करना है, क्या ?

[छोरे नज़दीक आकर बैठ जाते हैं, आँगन पर। फिर एक-एक छोरा बूट को हाथ में लेकर, जांच करता हैं। उनको जांच करते देख, छंगाणी साहब अपने पुराने ओहदे का रौब ग़ालिब करते हुए कहते हैं]

छंगाणी साहब – [रौब ग़ालिब करते हुए, कहते हैं] – देखो रे, छोरों। पूरी उम्र मैंने इंजीनियरिंग की नोकरी सरकारी महकमों में की है। वहां दफ़्तरों में यह क़ायदा था, पहले एस्टीमेट तैयार कराने का। फिर क्या ? ठोकिरों, तुम सभी बैठकर बनाओ एस्टीमेट..! तुम सभी छोरे अपनी अलग-अलग रेट बताओ, बूटों की मरम्मत और पोलिश करने के क्या लोगे ?

अजिया – आप यह क्या कह रहे हैं, हुज़ूर ? सात-आठ रुपयों के लिए, आप हमसे एस्टीमेट लेंगे ?

छंगाणी साहब – भाई, आख़िर क़ायदे की बात है। जो छोरा कम पैसा बताएगा, उसको बूट तैयार करने का आर्डर मिल जाएगा और क्या ? बात तो भाई, है क़ायदे की।

रतनजी – [कुबदी दिमाग़ चलाते हुए, कहते हैं] - साहब, एस्टीमेट लेने के पहले अपने कमीशन के रुपये अलग रखवा लेना..फिर ये छोरे, कमीशन के रुपये देने वाले नहीं। आपके गृह मंत्री मेम साहब को मरम्मत के रुपये ज़्यादा बताकर, कमीशन की राशि का पान ठोक जाना।

ओमजी – [हंसते हुए कहते हैं] – शत प्रतिशत सही बोला है, रतनजी ने। सरकारी महकमों में, कमीशन लेने-देने का रसूख़ होता है। यार रतनजी। आप तो टेंडर खोलने का पूरा काम, इनसे करवा लीजिये। आप छंगाणी साहब जैसे भले आदमी की मदद करेंगे..तो रामा पीर, आपका भला करेगा।

[इनकी बातें सुनकर, छोरे हंसने लगे। यह मामला ठहरा, ख़ाली आठ या दस रुपये का..और इंजिनियर साहब खोलने बैठ गए, टेंडर ? छोरे उठकर रुख़्सत हो जाते हैं, और साथ में जाते हुए कह देते हैं]

अनवर – [रुख़्सत होते हुए कहते हैं] – ये साहब काम करवाने वाले नहीं, क्योंकि यहां तो तिलों में तेल नहीं।

बबलू – [रुख़्सत होता हुआ, कहता है] – सच्च कहा रे, तूने। ये साहब है, या मक्खीचूस ? अब यहाँ से चलना ही, अच्छा है।

[मगर बेचारा अजिया जा नहीं पाता, वह यहीं खड़ा रह जाता है। क्योंकि आज़, उसकी बोवनी हुई नहीं है। बस इसी आशा में यहीं बैठा रह जाता है, शायद छंगाणी साहब थोड़ा ऊपर नीचे रेट बताते हुए ओर्डर दे दे ? अब वह आशामुखी बना हुआ, साहब से कहता है]

अजिया – साहब, पोलिश कर दूं क्या ?

[मगर, यहां तो पैसा कमाना अजिये के हाथ में नहीं..."मैं लाडे की भुवा" बने रशीद भाई, मूसल चंद की तरह बीच में लपक पड़ते हैं]

रशीद भाई – पोलिश कर देगा क्या, वह भी हमारे अन्जिनियर साहब की ?

रतनजी – [हंसते हुए, कहते हैं] – कर दे, यार। साहब को मत छोड़। ये है भी, काले। तेरा तो फ़ायदा ही फ़ायदा, तेरी पोलिश ज़्यादा ख़र्च होगी नहीं..काफी बचत हो जायेगी, तेरी। रोकड़े पैसे मिल जायेंगे, और साहब का क्या ? इनके काले रंग पर, थोड़ी चमक और आ जायेगी। सौदा अच्छा है, 'सोना में सुहागा।'

[कल देर रात को ओमजी ने देखी थी, बाबा रामसा पीर की फिल्म। अब उनकी पलकें नींद के कारण भारी हो रही है, धीरे-धीरे बैठे-बैठे झपकी लेते दिखायी देते हैं। इधर अजिया सोच रहा है, **"मज़ाकों से पेट भरा नहीं जाता, यहाँ तो सब नज़र आ रहे "पुरानी मशीन के कल-पूर्जे"..जो पैसे खर्च करने वाले नहीं। यहाँ रुका रहा तो, इनकी बकवास सुनते-सुनते मैं धंधा करना भी भूल जाऊंगा।"** यह सोचकर अजिये ने एक हाथ में बूट पोलिश की थैली, और दूसरे हाथ में ब्रूस थाम लिया है। अब बेचारा अजिया उठता है, और करता है जाने की तैयारी। **उसको ब्रुस हाथ में लिए देख, बेचारे छंगाणी साहब घबरा जाते हैं।** और उन्हें आशंका हो जाती है, **'कहीं यह छोरा, उनका मुंह काला करने तो नहीं आ रहा है ?'**

छंगाणी साहब – [दूर हटते हुए, चिल्लाकर कहते हैं] – क्या कर रहा है, ठोकिरा ? मुंह काला करेगा, क्या ?

अजिया – [हंसता हुआ, कहता है] – साहब, आज़कल पोलिश बहुत महंगी आती है। मुझे यह क़ीमती पोलिश, ख़राब नहीं करनी है जी।

[ब्रूस थैली में डालकर, अजिया ने तो रवाना होने की तैयारी कर ली है। मगर छंगाणी साहब के बूटों की मरम्मत करवाने का जो सिलसिला चला है, उसकी हाका-दड़बड़ ने ओमजी को नींद से उठा दिया है। बड़ी मुश्किल से यह नींद आयी, और इस करम-ठोक अजिये के कारण यह नींद चली गयी ? अब वे क्रोधित होकर, अजिये को फटकारते हैं।]

ओमजी – [अजिये को, गुस्से में कहते हैं] – दूर हट, कमबख्त। मेरी नींद उड़ा दी। सुनहरे स्वप्न आ रहे थे, और तूने फंसा दी फाडी।

[अब वे अजिये को ठोकने के लिए, पांव से चप्पल बाहर निकालकर उसे हाथ में लेते हैं। मगर जैसे ही वे उसे ठोकने के लिए उठते हैं, और उधर अजिया उनका यह रूप देखकर झटपट हो जाता है नौ दो ग्यारह। अब रतनजी को सूझती है, कुबद। वे चुप-चाप बैठ कैसे सकते थे ? आख़िर, वे ठहरे चांडाल-चौकड़ी के सम्मानित सदस्य। फाटक से रशीद भाई को गूंगे-बहरो की भाषा में इशारा करते हैं, और उसके बाद वे छंगाणी साहब से कहते हैं]

रतनजी – देखो छंगाणी साहब। मुझे और रशीद भाई को, केवल बाटा के ही बूट पसंद है। [रशीद भाई से हुँकारा भरवाते हुए, कहते हैं] ए रे, रशीद भाई। तीन-चार साल तक काम लेने के बाद, इन बूटों को ख़राब होते तूने देखा क्या ?

[रतनजी आँख मारकर, रशीद भाई को इशारा करते हैं]

रशीद भाई – जी हां, बाटा के ही बूट खरीदने चाहिए। हम लोगों को जब भी बूट खरीदने होते हैं, तब हम बाटा के ही बूट ख़रीदते हैं।

रतनजी - मगर, एक बात सीक्रेट है..

छंगाणी साहब – हमसे क्या छुपाना ? हम तो ठहरे, आपके गाड़ी के साथी।

रशीद भाई – बात यह है, बूट तो हम लोग एक बार ही ख़रीदते हैं...मगर, हर साल दफ़्तर में बूट ख़रीदने का बिल ज़रूर प्रस्तुत कर देते हैं। इस तरह हर साल बिल पारित करवाकर, पैसे उठा लेते हैं।

[यह क्या ? दीनजी उनके प्लान में बन जाते हैं, कबाब में हड्डी। बस, फिर क्या ? बीच में बोल पड़ते हैं..]

दीनजी – वाह भाई, वाह। ऐसे कैसे हो सकता है, रशीद भाई ? आप बूट लाते ही नहीं, और रुपये कैसे उठा लेते हैं ? आपके दफ़्तर में कहीं, अंधेर नगरी, और चौपट राजा का राज है ?

रतनजी – देखो भा'सा। हमारे दफ़्तर में हर कर्मचारी को, ६०० रुपये का बज़ट जूते ख़रीदने के लिए मिलता है। इस कारण हम, जूते का बिल लाकर दफ़्तर में जमा करवा देते हैं..और जूते के पैसे उठा लेते हैं।

रशीद भाई – [छंगाणी साहब की तरफ़ देखते हुए कहते हैं] – छंगाणी साहब, आप यों क्यों नहीं करते ? बाटा के बूट ख़रीदकर, आप उसका बिल हमें दे दें। फिर बिल उठने पर, हम और आप पैसे आपस में बांट लेंगे। इस तरह, अपुन दोनों को फ़ायदा।

रतनजी – देखिये जनाब, यह बूटों की जोड़ी आती है छः सौ रुपये में। हम लोग इसका भुगतान उठाकर, आपको दे देंगे सौ रुपये और शेष ५०० रुपये हम रख लेंगे। इस तरह आपको फ़ायदा ही होगा, आपको जूते पड़ेंगे..

छंगाणी साहब – अरे मेरे बाप, यह क्या कह रहे हो रतनजी ? मेरे खोपड़े पर मारना नहीं, मेरे भाई । मैंने कौनसी ग़लती की है ?

रतनजी – [हंसी का ठहाका लगाकर, कहते हैं] – अरे जनाब, आपकी जूतों से पिटाई नहीं होगी..बल्कि, आपके लिए जूतों की कीमत होगी ५०० रुपये। क्योंकि, सौ रुपये आपको मिल गए हैं।

छंगाणी साहब – [हंसते हुए, कहते हैं] – ठोकिरा। बिना पैसे दिए, कैसे कह रहे हो...के, मुझे रुपये मिल गए ? अच्छा हुआ, यहाँ मेम साहब है नहीं..होती तो मेरे जेब-ख़र्च में सौ रुपये की कटौती हो जाती।

रतनजी – मज़ाक मत करो, छंगाणी साहब। हमने, उदाहरण के तौर पर कहा है।

छंगाणी साहब – तब ठीक है जनाब, वैसे भी मेम साहब ने भी कह दिया है, नए बूट ला दीजिये। अब मेरे पीहर वाले के भरोसे रहना नहीं, क्योंकि अब मेरे भतीजे की इतनी औकात नहीं..आपको चांदी के जूते मारने की। अरे नहीं जनाब, जूते दिलाने की।

रतनजी – काकीसा कहती है, सत्य बात। अब आप, जूते खाय ही लो। अरे सा, राम राम। मेरी तो ज़बान चूक गयी....मैं कहता था, जूते ख़रीद ही लो।

छंगाणी साहब – जूते खा लूँगा..अरे नहीं, जनाब। ज़रा, ज़बान फिसल गयी। कह रहा था, के जूते ख़रीदकर ला दूंगा जनाब। मगर, आप लोगों का सहयोग रहा तो..! मेम साहब को भले, बाटा के ही जूते पसंद है। बस आपने जैसे कहा अभी, वैसे ही बस..

रतनजी – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – बस बस, क्या कहते हो जनाब ? क्या बस में बैठाकर, आप हमें तीर्थ करवाने के लिए ले जा रहे हैं...?

छंगाणी साहब – बस में ले जाने का धंधा मेरा नहीं है, हुज़ूर। मेम साहब के भतीजे है ना ? उनकी मासी सासजी के जेठजी के सालाजी हैं, ना..वे बस ले जाने का धंधा करते हैं। आप कह दें तो, मैं उनके पास से टिकट ला देता हूं ? एक टिकट का लेंगे, लगे-टगे दस हज़ार रुपये। चार धाम की यात्रा करवा देंगे, बड़े आराम से।

रतनजी – छंगाणी साहब ना तो हमें जाना है, तीर्थ यात्रा पर। और ना आपकी बांची हुई पड़ में, किसी का रिश्ता करवाना है। अब आप अपने काम की बात पर, आ जाइये। बात ऐसी है है छंगाणी साहब, ऐसे तो आपको बाटा के बूट ख़रीदने ही है..बस, फिर क्या ? बूट ख़रीदकर उस दुकान से ला दीजिये छः सौ रुपये का बिल...फिर, लाकर दे दीजिये..हमें। और, करना क्या है..आपको ?

छंगाणी साहब – [राज़ी होकर कहते हैं] – फिर..?

रतनजी – मैं आपको देता हूं, सौ रुपये रोकड़ा। आपका काम सलट जाएगा, और मेरा भी काम बन जाएगा। [होंठों में ही] **फिर आप मांगोगे सौ रुपये, तब मैं दूंगा आपको दो-दो रुपये प्रति दिन, इस तरह भले और करना कंजूसी। फिर आपको मालुम होगा कि, आपका पाला पड़ा है..हम बदमाशों की 'अलाम चांडाल-चौकड़ी से'.....**

छंगाणी साहब – बड़ी मेहरबानी होगी, आपकी। इस रविवार को ही मैं ले आऊंगा, बाटा के बूट। फिर देखना जनाब, पांच मिनट में पहुंच जाऊंगा स्टेशन से अपने घर। फिर मेम साहब...

[अब रोहट स्टेशन निकल गया है, रशीद भाई को अब हो गया है बाबा का हुक्म। वे तो झट बैग से साबुन की टिकिया लेकर चले जाते हैं, पाख़ाना। इधर नए जूते आने की आशा में, छंगाणी साहब कल्पना के समुन्द्र में गौते खाते जा रहे हैं। अब उनकी पलकें, भारी होती जाती है। वे बैठे-

बैठे, सुनहरे स्वप्न में खो जाते हैं। स्वप्न में वे, अपने-आपको छैल बगीचे में पाते हैं। उनके बदन पर सफ़ेद सफ़ारी सूट पहना हुआ है, और पांवों में बाटा कंपनी के नए बूट पहने हुए है। इनकी भागवान झूले झूल रही है, और साथ में वह अपने पति छंगाणी साहब को याद करती हुई गीत गा रही है]

मेम साहब – [गीत गाती हुई, झूला झूल रही है] – "भंवर बागा में आइज्योजी, म्हने आवे थोरी ओलू..थे आइज्योजी।"

[छंगाणी साहब छुपते-छुपते आते हैं, फिर चुपचाप उनके पीछे जाकर अपने दोनों हाथों से उनकी आँखें बंद कर लेते हैं।]

मेम साहब – भगवन, आ गए ? आज़ जल्दी कैसे आये..

छंगाणी साहब – [आँखों से हाथ हटाते हैं, फिर कहते हैं] – भागवान, लो देखो मैं क्या लाया ?

[मेम साहब की निग़ाह गिरती है, उनके बाटा कंपनी के नए बूटों पर। फिर क्या ? मेम साहब तड़कती है, दामिनी की तरह। गुस्से से चिल्लाकर, कहती है]

मेम साहब – [गुस्से में चिल्लाकर, कहती है] – किससे पूछकर लाये, ये बाटा के बूट ? इस तरह पैसे उड़ाओगे, तो हो जाओगे कंगाल।

छंगाणी साहब – [भयग्रस्त होकर कहते हैं] – नाराज़ मत हो, भागवान। मैं मुफ..मुफ़्त में लाया..लाया...

[इधर इनके कंधे पर भारी दबाव महसूस होता है, वे चमकते हैं। उनके चौंकते ही, आ रहा सपना चकनाचूर हो जाता हैं। और वे ख़्यालों की दुनिया से, बाहर निकल आते हैं। अब वे आंखें मसलकर सामने देखते है, सामने उन्हें मोहनजी खड़े दिखायी देते हैं। जो उनका कंधा दबाते हुए, कह रहे हैं]

मोहनजी – [कंधा दबाते हुए, कहते हैं] - यह क्या ? मैं बेचारा कब से मांग रहा हूं पेन, और भा'सा आप कहते जा रहे हैं "मुफ़्त में लाया..मुफ़्त में लाया" ? तब दे दीजिये ना, आपका मुफ़्त का पेन। मुझे करना था फ़ोन, और इधर दयाल साहब कढ़ी खायोड़ा का मोबाइल काम कर नहीं रहा..ठीकरा लेकर आ गए, कमबख़्त ?

[ऊंघ से उठे छंगाणी साहब टकटकी लगाकर मोहनजी को देखते हैं, इस तरह मेणे की तरह देख रहे छंगाणी साहब को मोहनजी कहते हैं]

मोहनजी – अब मुझे उस आदमी के मोबाइल नंबर दयाल साहब से लेने होंगे, इसलिए आपके पास पेन माँगने आया हूं। [उनका कंधा झंझोड़ते हुए] क्यों मेणे की तरह, मुझे देखते जा रहे हैं ? दीजिये ना, आपका मुफ़तिया पेन।

[आब-आब होते हुए छंगाणी साहब, जेब से 'यूज़ एंड थ्रो' वाला पेन निकालकर उन्हें थमा देते हैं..जिसे वे अपने दफ़्तर से उठा लाये थे। तभी इंजन की सीटी सुनायी देती है, छंगाणी साहब खिड़की के बाहर झांकते हैं..उन्हें ऐसा लगता है, कि 'गुमटी तो पीछे रह गयी है'। इसका आभास पाते ही, वे चमकते हैं..]

छंगाणी साहब – [भौंचके होकर, कहते हैं] – अरे तापी बावड़ी वाले बालाजी, यह क्या हो गया ? पीर दुल्ले शाह हाल्ट निकल गया..? (हाथ जोड़कर) ए मेरे श्याम धणी, यह क्या कर डाला..आपने ? मुझे मालुम ही न पड़ा ? अब...

[मोहनजी चले जाते हैं, मगर इधर रशीद भाई केबीन में दाख़िल होते हैं। उन्होंने छंगाणी साहब का बोला गया जुमला, सुन लिया है। इस कारण छंगाणी साहब को, मोसा बोलने में वे पीछे नहीं रहते]

रशीद भाई – [बैग में साबुन की टिकिया डालते हुए, कहते हैं] – ओ छंगाणी साहब। आप तो लेते रहो, आराम से खर्राटे। अब, पीर दुल्लेशाह तो क्या ? पाली स्टेशन भले निकल जाएगा, और आप ऊंघ लेते-लेते पहुँच जाओगे खारची। देखो, मैं तो निपटकर आ गया, अब आप जाकर लघु-शंका से निवृत होकर आ जाइये। वापस आकर आप, पाली उतरने की तैयारी कर लीजिये।

[मोहनजी को छोड़कर सभी अपना बैग लिए, डब्बे के दरवाज़े के पास आ जाते हैं। अब मोहनजी को याद आता है कि, उन्हें जल्द जाकर दयाल साहब से मोबाइल नंबर लेने हैं । इसलिए, वे भी दयाल साहब के पास आकर खड़े हो जाते हैं। इंजन सीटी देता है, पाली की कृषि-मंडी और आवासन मंडल की कोलोनियां भी पीछे रह जाती है। अब मोहनजी, दयाल से कहते हैं]

मोहनजी – पाली आ गया है, जनाब। मगर मेरे पास कोई मेसेज नहीं, कि "डी.एम. साहब कब आयेंगे ?' ज़रूरत मुझे आज़ ही हुई है, मगर आपका मोबाइल हो गया ख़राब ? कुछ नहीं जनाब, आप काम लेते रहना इस ठीकरे को। अभी पाली स्टेशन पर महेश मिलेगा, तब मैं उससे पूरी जानकारी ले लूंगा।

[इतना कहकर, मोहनजी झट जाकर पास वाली खिड़की के पास खड़े हो जाते हैं।]

दयाल साहब – [मुस्कराते हुए कहते हैं] – कुतिया का ताऊ, साला पूरा डफोल निकला। इतना भी नहीं समझता, चैनल नहीं पकड़ रहा है अभी..खाक़ मोबाइल चलेगा ?

[पाली स्टेशन का प्लेटफोर्म आता दिखाई देता है, गाड़ी की रफ़्तार कम हो जाती है। भाऊ की केन्टीन के बाहर महेश और जस करणजी को खड़े देखकर, मोहनजी खिड़की से मुंह बाहर निकालकर ज़ोर से आवाज़ देते हैं]

मोहनजी – [महेश को आवाज़ देते हुए, ज़ोर से कहते हैं] – ए रे महेश कढ़ी खायोड़ा। वहीं खड़े रहना, मैं आ रहा हूं तेरे पास।

[यह महेश है, खारची डिपो का मुलाज़िम। जो पाली से रोज़ का आना-जाना करता है। ये जस करणजी है, डस्ट ओपेरटर पाली डिपो के। गाड़ी नहीं आने तक, ये यहाँ खड़े-खड़े चाय पीते रहते हैं। गाड़ी जाने के बाद, आकर खड़े हो जाते हैं, क्रोसिंग फाटक के पास। वहां स्कूटर पर आते भाना रामसा से लिफ्ट लेकर, वे दफ़्तर चले जाते हैं। अब गाड़ी रुक गयी है, सभी नीचे उतरते हैं। मोहनजी झट तेज़ चलते हुए, भाऊ की केन्टीन की तरफ़ क़दम बढ़ाते हैं। और साथ में वे, महेश को भी पुकारते जाते हैं।

मोहनजी – [महेश को आवाज़ देते हुए जाते हैं] – ए रे महेश, कढ़ी खायोड़ा। आ रहा हूं मैं, वहीं खड़े रहना।

[चलते-चलते रतनजी, जस करणजी की तरफ़ उंगली से इशारा करते हुए..रशीद भाई से कहते हैं।]

रतनजी – [जस करणजी की तरफ़, उंगली से इशारा करते हुए कहते हैं] – ये जस करणजी, यहाँ आकर क्यों खड़े हो गए ? अकेले खड़े-खड़े जनाब, चाय पीते जा रहे हैं ?

ओमजी – अरे यार रतनजी अपुन लोगों की याद आती है, इसलिए यहाँ पधारे हैं..! असल में याद आती है, अपुन लोगों की नहीं...अपुन लोगों के खाने के टिफ़िन की।

रशीद भाई – अरे जनाब, ये ऐसे आदमी है..जो रोटियाँ गिटेंगे अपनी। और खाने के बाद कहेंगे बिल्ली की तरह कि **“ये कैसी सब्जी बनायी काकीसा ने, काकीसा की मां की..[गाली की पर्ची निकालते हैं] ?”** अब, करें क्या ? अपनी रोटियाँ खाकर, देंगे भी अपुन को गालियाँ। कैसे-कैसे आदमी है, इस ख़िलक़त में ?

दीनजी – रशीद भाई, क्यों खिलाते हो रोटियाँ ? रोटियाँ की जगह, खिला दिया करो गालियां।

[द्रुत चाल चलते हुए मोहनजी पहुँच जाते हैं, महेश और जस करणजी के पास। पीछे-पीछे रतनजी, ओमजी, दीनजी और रशीद भाई भी पहुँच जाते हैं..भाऊ की कैंटीन के पास। उनके आते ही, महेश उनसे कहता है]

महेश – अरे गज़ब हो गया, दो दिनों बाद आज़ मोहनजी के दीदार हुए हैं। [मोहनजी से कहते हैं] जनाबे आली, आपके जाने के बाद हमारे डी.एम. साहब ने तशरीफ़ रखी। आपको वहां न पाकर, साहब आपसे बहुत नाराज़ होकर गए हैं। साथ में यह कहकर भी गए है कि, 'मोहन लाल को आते ही कहना, मुझे फ़ोन करें।'

मोहनजी – ऐसे वक़्त आपको फ़ोन करना चाहिए था, मुझे। अगर आप फ़ोन करते, तो मैं ज़रूर उनसे मुलाक़ात कर लेता ?

महेश – अरे भाईजान कैसे लगाता आपको फ़ोन, कभी आपने सही नंबर दिए क्या ?

[जस करणजी नज़दीक आकर, मोहनजी से कहते हैं]

जस करणजी – आपका जो होना था, वह हो गया। अब जाकर अपने इन साथियों को बचाओ। यह आपका बाप डी.एम., पाली डिपो में आ गया है। और इस ठोकिरे ने रशीद भाई, रतनजी और ओमजी के हाज़री कोलम में लाइन खींच दी है। मैंने उनको बहुत समझाया के "गाड़ी लेट है, इसलिए वे लोग वक़्त पर नहीं आ पाये। अब वे, आने वाले ही हैं।"

मोहनजी – अब तू आगे बोल, आगे उन्होंने क्या कहा ?

जस करणजी – इतना कहा और मेरा बाप बिफ़र गया, और फिर बोला तड़ाक से...कि, **"ये लोग रोज़ का आना-जाना करते हैं, अब इन सबको लगा देते हैं अजमेर..फिर देखता हूं, कैसे करते हैं अप-डाउन ?"**

[गाड़ी रवाना होने का वक़्त हो जाता है, इंजन सीटी देता है। महेश और मोहनजी दौड़ते-भागते, अपने डब्बे में दाख़िल होते हैं। गाड़ी रवाना हो जाती है, थोड़ी देर में ही वह नज़रों से ओझल हो जाती है। अब जस करणजी चाय का अंतिम घूँट लेकर, रतनजी, रशीद भाई और ओमजी से कहते हैं]

जस करणजी – खड़े क्या हो, मेरे बाप ? अब चलिए, दयाल साहब कभी पटरियां पार करके दफ़्तर पहुँच चुके होंगे। [ख़ाली कप काउंटर पर रखते हैं]

रतनजी – [रोवणकाळी (रोनी) आवाज़ में कहते हैं] – ये अफ़सर, करते क्या हैं ? निचोड़े हुए को, और निचोड़ते हैं। मगर अब हम लोगों में कहाँ रहा, रस ? जनाब, हम तो पुरानी मशीन के कल-पूर्जे हैं।

[थोड़ी देर बाद, प्लेटफोर्म पर खड़े दीनजी क्या देखते हैं ? रतनजी, रशीद भाई और ओमजी, पांव घसीटते-घसीटते दफ़्तर की ओर जा रहें हैं। उनको देखकर, दीनजी के मुख से स्वत: यह जुमला निकल जाता है]

दीनजी – [उनको जाते देखकर, कहते हैं] – लीजिये, ये पुरानी मशीन के कल-पूर्जे अब भी चल रहे है। अरे भगवान, अभी-तक इनमें जान बाकी है। (जस करणजी की ओर देखते हुए, कहते हैं) भाई जस करणजी, अभी-तक इनमें ज़रूर थोड़ा-बहुत रस बचा होगा। दफ़्तर पहुंचते ही, यह कमबख़्त डी.एम. निचोड़ लेगा इन्हें।

[थोड़ी देर बाद, मंच पर अन्धेरा फ़ैल जाता है।]

खंड १०, धूल भरी आंधी

लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

[मंच रोशन होता है, पाली स्टेशन का मंज़र सामने आता है। आज़ एफ़.सी.आई. के तीनों कर्मचारी रतनजी, ओमजी और रशीद भाई दफ्तर से छूटकर जोधपुर जाने के लिए पाली स्टेशन के प्लेटफोर्म पर आ चुके हैं। अब ये तीनों रतनजी, ओमजी और रशीद भाई उतरीय पुल की सीढ़ियों पर बैठे हैं। अचानक आभा में कम्पी चढ़ जाती है, अब तो पूरा आसमान धूल के कारण पीला दिखाई दे रहा है। चारों ओर यह धूल फ़ैल गयी है, अब जिधर देखो उधर ही पीला-पीला नज़र आ रहा है। यह धूल की खंक अस्थमा के रोगियों का दम उठाने में देरी नहीं करती, इस कारण रतनजी ताज़ी हवा सेवन करने ऊपर वाले स्टेप पर जाकर बैठ जाते हैं। फिर वहां से, आवाज़ देकर अपने साथियों से कहते हैं]
रतनजी – [आवाज़ देते हुए कहते हैं] – आ जाइये ऊपर, अगर उठ गया तो यहाँ कोई संभालने

वाला नहीं है। **वैसे भी अपनी ज़िंदगी चल रही है, गोलियों के ऊपर।**

[ओमजी और रशीद भाई झट सीढ़ियां चढ़कर, ऊपर वाले वाले स्टेप पर जाकर रतनजी के पास बैठ जाते हैं। बैठने के बाद, रशीद भाई कहते हैं]

रशीद भाई – देखिये, जनाब। आज़ आभा में उड़ गयी है, धूल।

रतनजी – पहले आप इसका जवाब दीजिये, के 'डस्ट ओपेरटर का महफ़ूम क्या है ?' कहिये, रशीद भाई ?

ओमजी – ये क्या बोलेंगे ? मैं बताता हूं, आपको। डस्ट यानि धूल, और ओपेरटर यानि उड़ाने वाला। कहिये जनाब, सही कहा या नहीं ?

रशीद भाई – मालिक, आप तो बिल्कुल सही बोलेंगे। जैसा आपका नाम है, वैसे ही गुण, ऊपर वाले ने आपमें भर रखे हैं। आप तो ठोकते ही बोलते हो, अगले का कर देते हैं..हरी ओम शरणम। मगर, अब ध्यान रखना...अफ़सरों के सामने, ऐसे मत बोलना।

ओमजी – बोल दिया, तो होगा क्या ? सत्य बोलने में, काहे की शर्म ? बोलिए, किस बात का आपको है, एतराज़ ?

रशीद भाई – अब बोल गए, तो अपुन सबको यह दफ़्तर छोड़ना पडेगा। अफ़सरों को, क्या कहना ? **ये लोग कभी कारण नहीं बताया करते, अगर मर्ज़ी हुई तो पीकर बनाकर भी अजमेर भेज सकते हैं। और कैसे ही, अपुन लोगों को पाली छुड़ा देंगे।**

रतनजी – बदली होने के बाद, ये ओमजी जनाब क्या कहेंगे....जानते हो रशीद भाई ?

रशीद भाई – कहना क्या ? यही कहेंगे के, **"ये सारे अफ़सर है, रिश्वत खाने वाले। धूल उड़ा दी, इस महकमें की।"**

ओमजी – देखिये, जनाब। आप तो जानते ही हैं, मेरा नाम है, ओम। मैं बोलता हूं सत्य। समझ गए, या नहीं ?

रशीद भाई – मैं समझ गया, उस्ताद। आप हो, राजा हरीश चन्द्र के अवतार। तब ही सत्यवादीजी बोले डी.एम. साहब से, के "गाड़ी, देर से आयी"। कहिये, आपको ऐसा कहा किसने ? के 'आप उनको, ऐसा जवाब दो। ऐसा कोई कारण बताया जाता है, लेट आने का ?

ओमजी – सच्च कहा, मैंने। मेरे सच्च कहने से, आपको मिर्चे क्यों लगी ?

रतनजी – मिर्चे यों लगती है, जनाब। फिर आपको, डी.एम. का क्या प्रत्युत्तर मिला ? यह मिला के '**जनाब ठीक है, आप रोज़ अप-डाउन करते हैं गाड़ी से। चलिए आप तीनों को लगा देते हैं, अजमेर या श्रीनगर। फिर आराम से करना, रोज़ का आना-जाना। बात यह है, सत्यावादीजी। ख़ुद मरोगे, और हमको भी साथ लेकर मरोगे।**

रशीद भाई – छोड़िये जनाब, आख़िर है तो अपने साथी। क्या करें यार, आख़िर गेहूं के साथ घूण भी साथ पिसा जाता है। समझ गए ? वो घूण, हम दोनों ठहरे। मगर, ओमजी आपको यह सोचना

चाहिए के..

ओमजी – मैं, क्या सोचूँ ? झूठ बोल दूं, रामा पीर का भक्त होकर ?

रतनजी – मेरे सत्यवादी, राजा हरीश चंद्रजी। आपको यह ध्यान रखना चाहिए, के "यहाँ के सारे लोकल कर्मचारियों ने कितनी बार, साहब के आने की सूचना आपको अवगत करवाई ?" और कहिये, 'आपको कितनी बार, कुछ कहकर बचाया ?'

ओमजी – एक बार भी नहीं। ये सारे कुतिया के ताऊ है, कौए। इन कौओं की तरह अपने-अपने आदमियों को फ़ोन पर इतला दे देते हैं, के 'साहब पधार गए हैं, आप फटके से दफ़्तर आ जाइये।' और अपुन लोगों को फ़ोन करने में, इनको आती है मौत।

रतनजी – अब समझ गए आप, ये कैसे लोग हैं ? इसलिये ऐसे वक़्त अपुन लोगों को, मुंह बंद करके रखना चाहिए। यही हमारे हित में है, ये लोग तो डी.एम. साहब के सामने, हमारे खिलाफ़ दो की चार बात बनाकर उनको उकसा दिया करते हैं। पता नहीं, ये अपने दिल में क्यों पाप पाल रहे हैं ? रामा पीर जाने, ये लोग किस जन्म का बदला ले रहे हैं ?

रशीद भाई – मगर यह देखो, इस डी.एम. के कारण हमारे दीनजी भा'सा का साथ छूट गया। यह ज़रूर, देण हुई अपने।

रतनजी – क्या करते, भाई ? अपुन सब तो हैं, करम फूटोड़े। कैसे करते, उनका साथ ? यह करमजला डी.एम. तो अपनी सीट से उठता ही नहीं, यार। राजू साहब इस भले आदमी के लिए, किलो भर गुलाब हलुवा, दस कोफ्ते, दो मिर्ची बड़े और रोहट की दस कचोरियाँ मंगवा दी भय्या।

ओमजी – मगर, होना जाना कुछ नहीं। इधर घड़ी में बजे शाम के छः, और मैंने पिलायी इसके ड्राइवर को रेड एंड व्हाइट सिगरेट। और उससे किया, आग्रह। के 'बापूड़ा, किसी तरह ले जा दे तेरे साहब को यहाँ से, नहीं तो हमारी यह लास्ट जम्मूतवी एक्सप्रेस गाड़ी चली जायेगी और इसके बाद जोधपुर जाने वाली कोई गाड़ी नहीं।

रशीद भाई – हां, बिल्कुल शत प्रतिशत बात सही कही आपने। जाते-जाते, उसने अपने ड्राइवर को हुक्म दे डाला "ए मिट्ठू सिंह। खाने का वक़्त बचा नहीं है, ये सारी मिठाई-नमकीन वगैरा रख दे गाड़ी में। जल्दी कर, कहीं और भी इंसपेक्शन करने जाना है।

रतनजी – अरे भाई, मुझे फ़िक्र सताने लगी, अब यह कहाँ जाकर करेगा इंसपेक्शन ? यह इतना भी नहीं जानता, रात के वक़्त गोदाम कहाँ खुला रहता है ? क्या यह डी.एम., रात के वक़्त गोदाम खुलवा सकता है ?

ओमजी – खुलवा सकता हैं, यार। जहां मोहनजी जैसे अफ़सर हो, वे कभी वक़्त देखते नहीं..बस, धुन चढ़ी और आ गए गोदाम चैक करने। इनके जैसे अफ़सर फ़िक्र करते रहते है घर बैठे, के 'इनके जोधपुर आने के बाद, डी.एम. खारची आकर उनका गोदाम तो नहीं खुलवा दे ? अगर खुलवा दिया, तब वे क्या करेंगे ?'

रतनजी – मोहनजी जितने ज़्यादा पढ़े हुए हैं, वैसी ही इन्होने पायी है बुद्धि। इतना तो कोई

गेला-गूंगा भी जानता है, बिना अफ़सर की इज़ाज़त गोदाम के ताले नहीं खुलते। इधर शाम के पांच बजे, उधर वाचमेन आकर लगा देता है ताला। फिर जनाब, कोई माई का लाल नहीं खुलवा सकता ताला।

ओमजी – क्या करे, बेचारे मोहनजी ? इसमें, इनका क्या दोष ? वे तो जब पोकरण में थे, तब इन्होंने नाईट ड्यूटी में जाकर वाचमेन की ड्यूटी चैक की थी। उसका परिणाम, बेचारे अभी-तक भुगत रहे हैं। इनके बड़े अफ़सर अक़सर रोज़ इनसे, स्पष्टीकरण मांग लिया करते हैं। बेचारे जवाब देते-देते, परेशान हो गए। मगर, वे इनको छोड़ते ही नहीं।

[इतने में १८-२० साल की सुन्दर लड़की आती है, ओमजी के पास। सुन्दर ज़रूर है, मगर इसने बोब कट बाल कटाकर अजीब सी सूरत बना दी है अपनी, और ऊपर से इसने पहन लिए हैं ऊंची एडी के चप्पल और मिनीस्कर्ट। आँखों पर लगा रखा है, काला ऐनक..घाणी के बैल की तरह। अब वह लटका-झटका करती हुई, ओमजी से इंग्लिश में पूछती है।

छोरी – [बोम्बे स्टाइल में, लटका-झटका करती हुई कहती है] – ब्रदर यूं टेल मी, जम्मूतवी ओन एक्यूरेट टाइम ?

ओमजी – [मारवाड़ी भाषा में कहते हैं] - ओ बाईसा। थाणा घिसड़-फिसड़ आघा बाळो, गाड़ी रौ पतौ करणो हुवै तौ पधारौ ठेसण माड़साब रै दफ़्तर मअें। म्हारौ क्यूं माथौ खावौ, अठै ऊब नै ?

रशीद भाई – कितना अच्छा होता, आज़ दीनजी भा’सा यहाँ होते ? इस बेचारी को, इंग्लिश में जवाब ज़रूर मिल जाता ?

ओमजी – उनकी यहाँ क्या ज़रूरत, क्या मुझे अंग्रेजी भाषा नहीं आती ? अरे जनाब मुझे आप अनपढ़ मत समझिये, मुझे भी आती है यह अंग्रेजी भाषा। मगर मैं इसको अंग्रेजी में बोलकर जवाब देना नहीं चाहता, क्या यह छोरी फिरंगियों की बेटी है ? क्या इसको, मारवाड़ी भाषा आती नहीं ? इस छोरी के दादा-पड़दादा सभी, यहाँ पाली में ही पैदा हुए हैं।

[ओमजी के बोले गए डायलोग, उस छोरी को कैसे पसंद आते ? वह आँखें तरेरती हुई, ओमजी को देखती है। अब यह नज़ारा देखते ही, ओमजी की मींजी जल जाती है। वे गुस्से में उस छोरी से कहते हैं]

ओमजी – [क्रोधित होकर, कहते हैं] – औ बाईसा, क्यूं आंखियां काड नै म्हने दैखौ हौ अठै ऊबा-ऊबा ? की बोलनो हुवै तौ बोलौ, पाधरा-पाधरा मारवाड़ी भासा में। नी तौ पधारौ सा, ठेसण माड़साब रै दफ्तर मांय।

[अब ओमजी उंगली का इशारा करते हुए, दिखाते हैं ‘कहाँ है, स्टेशन मास्टर साहब का दफ़्तर?’ पुलिए के नज़दीक, घेवरसा चाय का थैला लगाते हैं। वे इस वक़्त, पास वाले तख़्त पर आराम से लेटे हैं। इस तख़्त के पास, एक बीस साल का काणा छोरा खड़ा है। दिखने में यह छोरा, फैशनेबल लगता है। अपनी काणी आँख को छुपाने के लिए, वह आँखों पर काला ऐनक लगता है। इस ऐनक से, वह घाणी के बैल की तरह दिखायी देता है। अभी वह लबों पर रखी सिलगी हुई सिगरेट

से, धुंए के बादल निकालता जा रहा है। एक तो इस बेचारे की एक आँख है, नदारद। और ऊपर से इसके मां- बाप ने इसका नाम रखा है, नयन सुख। अचानक इस छोरे की निग़ाह, उस ख़ूबसूरत छोरी पर गिर जाती है। छोरी का दिखायी देना, आकाश में उड़ते कबूतरों को ज़मीन पर पड़ा अनाज दिखाई दे जाने के समान है। बस वह भी इन कबूतरों की तरह, रास्ते में बिना देखे पुलिए की सीढ़ियों की तरफ़ जाने की कोशिश करता है। जहां वह छोरी, ओमजी के निकट खड़ी है। फिर क्या ? वह उतावली में आगे बढ़ता हुआ, कुली नंबर तीन सौ पच्चीस यानि पूर्णसा से टिल्ला खा बैठता है। ये पूर्णसा है, इस छोरे के काकोसा। घुद्दा खाते ही, पूर्णसा उसको सुना बैठते हैं, बीबी फातमा की पुड़।]

पूरणसा – छोरे, तेरे आँखें है या बटन ? दिखाई नहीं देता क्या, भंगार के खुरपे ? पढ़ा दूंगा तूझे, वेताल-पच्चीसी। आख़िर बता मुझे, मैं हूं कौन ? सुन मैं हूं, कुली नंबर तीन सौ पच्चीस। समझा अब, या डालू तेरे कानों में उबलता हुआ तेल ?

[मगर वह ना तो उनकी तरफ़ देख़ता है, और ना कुछ कहता है..पूरणसा जैसे बूढों से, उसका क्या काम ? **सभी जानते हैं, उपासरा में कंघे का कोई काम नहीं।** बस वह तो बतूलिये की तरह सीढ़ियां चढ़ता हुआ, पहुँच जाता है उस हूर की परी के पास। फिर उस हूर की परी को पटाता हुआ कहता है]

नयन सुख – गुड इवनिंग, मेडम। प्लीज टेक टी, देयर आफ्टर आई लुक योर प्रोब्लम।

[उसकी सहमति देते ही वह झट, घेवरसा से ले आता है दो कप चाय। फिर क्या ? दोनों चाय की चुश्कियाँ लेते दिखायी देते हैं। वह छोरी चाय पीते-पीते, उस नयन सुख से कहती है]

छोरी – थैंक यू माई डिअर। यूं आर इंटेलिजेंट। [ओमजी, रशीद भाई व रतनजी की तरफ़ उंगली का इशारा करते हुए कहती है] दीज़ मेन इलिटरेट..गवांर।

रतनजी – [आँखें तरेरते हुए कहते हैं] – ओय लल्लो चप्पो बाईसा। हम लोगों को कैसे कह रही हो, इलिटरेट..गवांर ? यह आपकी अंग्रेजी की घिस-पिट, हम सब समझते हैं बाया। मगर आपकी तरह दिखावा नहीं करते हैं, हम। समझ गयी, बाईसा ? हमें आपकी तरह मारवाड़ी या हिंदी बोलने में, शर्म नहीं आती।

रशीद भाई – [मारवाड़ी भाषा में, बोलते हैं] – बाईसा। गतगेला व्हेग्या हौ, कांई ? मारवाड़ मअें जळम्या, अर थान्नै थाणी मारवाड़ी भासा बोलण मअें कैंनी आवै सरम ? भूलग्या थे, थान्नै भईजी रै साथै काम कीधोड़ा लोगां नै ?

रतनजी – वाह बाईसा, वाह। आप हमारे बारे में, ऐसी बातें करती हैं ? आप हमें नहीं जानती, मगर हम सभी आपको जानते हैं। आप हो, सेठ मकुन्द चंदसा की पोतरी रेखा बाईसा। कल आपकी नाक बहती थी, और कहती थी मुझे "रतन काकोसा, मीठी गोळी खावंनै बारै लिजावौ कन्नी।" आज़ वही हमारी लाडली बाईसा बन गयी, हमारे सामने लाड साहबणी ?

ओमजी – ऐसे लोगों के कारण ही हमारी मायड़ भाषा "राज़स्थानी" को मान्यता नहीं मिल रही है।

इन फैशनेबल लोगों के व्यवहार के कारण ही, इस भाषा की बोली और संस्कृति समाप्त होती जा रही है।

[छोरी रेखा चाय पीकर, ख़ाली कप नयन सुख को थमा देती है। इसके बाद वह इन तीनों को, सत्य बात बताने की कोशिश करती है।]

रेखा – बा'सा, आई नो वेरी वेल मारवाड़ी। बट आई कांट स्पीक, बीकोज़ आई एम रीडिंग इन कोंवेन्ट स्कूल। सोरी बा'सा, सोरी।

[अब मन में बहुत सोचते हैं, तीनों महानुभव...के **"इस लड़की को मारवाड़ी बोलने में कहाँ आती है, तक़लीफ़ ? मारवाड़ी न बोलना चाहती, तब कम से कम मातृभाषा हिंदी में तो बात कर सकती है ना ? मगर यहाँ तो यह गेलसफ़ी पाश्चात्यीकरण में ढलकर भूल गयी है देश-प्रेम और यहाँ की संस्कृति।** मगर, अब हमें क्या करना ? क्यों इन बच्चों को अपने मुंह लगाकर, अपनी जग हंसाई करवानी ?" यह सोचकर, तीनों चुप-चाप बैठ जाते हैं। अब घेवरसा को ख़ाली कप थमाकर आता है, नयन सुख। वापस आकर, उस छोरी रेखा से कहता है]

नयन सुख – मेडम। नाउ यूं गिव मी आर्डर। वाट डू आई, फोर यूं ?

रेखा – [लबों पर मुस्कान बिखेरती हुई, कहती है] – थैंक्यू माय डिअर। प्लीज ब्रिंग माय लगेज। फॉलो मी।

[फिर क्या ? नयन सुख स्टेशन के बाहर जाने के लिए अपने क़दम बढ़ाता जा रहा है। आगे-आगे चल रही है रेखा, और पीछे-पीछे चल रहा है नयन सुख...नौकरों की तरह, सर झुकाए। थोड़ी देर बाद वे दोनों, वापस प्लेटफोर्म पर आते दिखायी देते हैं। अब आगे-आगे वह रेखा चल रही है, और पीछे-पीछे मुंह झुकाए नयन सुख दोनों हाथों में अटेचियाँ उठाये चल रहा है। अब यह नयन सुख पूरणसा के हत्थे चढ़ जाता है, वे झट फूंकी जा रही बीड़ी को एक तरफ़ फेंककर उसका रास्ता रोक लेते हैं। अब वे, उससे कहते हैं]

पूरणसा – भईसा। यह कुलियों का धंधा, कब से शुरू किया है ? क्या आपने कुलियों का बिला, हासिल किया या नहीं ?

[सुनकर, वह अपना मुंह ठाकर उन्हें देख़ता है। उनको देखते ही, वह उन्हें पहचान जाता है]

नयन सुख – [मुंह उठाकर, कहता है] – अरे काकोसा, आप ? क्या आपने मुझे पहचाना नहीं ? अरे, मेरे प्यारे प्यारे काकाजी,..मैं हूं आपका ख़ास भतीजा, नयन सुख। अब तो पहचाना, मुझे ?

पूरणसा – [आंखें फाड़कर, उसे देखते हुए कहते हैं] – **उम्र हो गयी रे, बेटा। बूढ़े हो गए, आज़कल याद रहता नहीं। अब बोल, तूझे देखकर करें भी क्या ? तू तो यहां, ख़ूबसूरत छोरियों को देखकर उनकी सेवा में लगा रहता है। और उधर तेरे बाप यानि मेरे बड़े भईसा और भाभीसा इस बुढापे में मज़दूरी करके अपना पेट पाल रहे हैं ?** और,.बोल तो सही..

नयन सुख – अब क्या बोलूं, काकोसा ? आप जैसे बुज़ुर्गों के सामने, कैसे बोला जा सकता है ?

और कोई हुक्म मेरे लिए हो तो, काकाजी..फ़रमाइए।
पूरणसा – फ़रमाना अब क्या बाकी रह गया, बेटा ? ये तेरे बुढे मां-बाप तक़लीफ़ देख रहे हैं, और उनका जवान बेटा हसीन छोरियों की ख़िदमत करता जा रहा है। जा बेटा, जा। इस महारानी वसुंधरा की सेवा करता जा...!

[आगे खड़ी उस छोरी रेखा ने सुन लिया, पूरणसा का इतना लंबा व्याख्यान। फिर उसे महारानी वसुंधरा का नाम मिलते ही, वह पागल कुत्ती की तरह लाल-लाल आंखे की हुई पूरणसा के नज़दीक आती है, फिर उन्हें अंट-शंट बकती जाती है]
रेखा – [गुस्से में बकती हुई, कहती है] – डेमफूल। हू इज़ महारानी ? व्हाट वसुंधरा ?
[डरकर झट पूरणसा दो क़दम आगे बढ़ा देते हैं, उनको जाते देखकर वह रेखा क्रोधित होकर उनसे कहती है]
रेखा – [दामिनी की तरह कड़कती हुई, वह बेनियाम बकती है] – मिस्टर, स्टॉप।
[रेखा का यह ताड़का रूप देखकर, पूरणसा के पांव थर-थर कांपते हैं। दर के मारे, वे अपने दिल में सोचते जा रहे हैं के "यहाँ खड़े रह गये तो, इस बुढ़ापे में चरित्र पर दाग लगने की पूर्ण संभावना है। **आज़ का ज़माना औरतों का, अगर यहाँ भीड़ इकट्ठी हो गयी तो सभी लोग औरतों का पक्ष लेंगे। इन लोगों को, मेरे बुढ़ापे पर आयेगी नहीं दया। अरे राम रे, ये कुतिया के ताऊ तो मुझे ठोकते ही नज़र आयेंगे। अब मुझे यहाँ खड़े रहकर अपनी इज़्ज़त की बखिया उधेड़ने का नज़ारा पेश करना है, क्या ? अब-तक इस भतीजे को बहुत सीख दे दी है, मैंने। अब यहाँ से रुख्सत होना ही अपने हित में होगा।** यह सोचकर वे वहां से नौ दो ग्यारह हो जाते हैं। चलते-चलते रास्ते में, मज़में को देखकर थोड़ी देर वे रुकते हैं। फिर वहां खड़े लोगों से पूछकर मालुम करते हैं, के "यह मज़मा यहाँ क्यों लगा है ?" पूछने पर मालुम होता है, **"किसी खोजबलिये ने सुलगती बीड़ी कुली नंबर चार सौ बीस के मुंह पर फेंककर, की है कुचमादी। फिर क्या ? इस तरह बेचारे कुली के हजामत किये हुए गाल सुलगती बीडी से जल गए। जिसकी जलन नाक़ाबिले बर्दाश्त थी, बेचारा कुली गाल जलते ही, उस जलन को सहन नहीं कर सका। और सर पर रखे बोक्स को नीचे गिराकर, वह अपने गाल मसलने लगा। उस बेचारे को, क्या मालुम ? उसके हाथ से बोक्स छिटककर, कहाँ जाकर गिरा ? बदक़िस्मत से वह बोक्स, पीछे आ रहे आस करणजी टी.टी.ई. के पांवों पर जा गिरा।** बोक्स के गिरते ही, आस करणजी ज़ोर से चिल्लाये। और जाकर पकड़ा, उस कुली का गला।" अब यह पूरा मामला, पूरणसा के समझ में आ गया, के "यह कुचमादी करने वाला कोई और नहीं, वे ख़ुद हैं।" यह ख़ता उनसे, अनजाने में हो गयी है। अब उन्हें भय सताने लगा, अब अगर असल मामला किसी के सामने आ गया, तो वो कुली और आस करणजी उनकी क्या गत बनायेंगे ? इसकी कल्पना करते, उनके बदन पर भय की सिहरन दौड़ने लगती है। फिर क्या ? वे दौड़कर जा पहुँचते हैं, पुलिए की सीढियों पर..जहां रतनजी अपने साथियों के

साथ बैठे हैं। पूरणसा हाम्पते-हाम्पते, वहां जाकर उनके पास बैठ जाते हैं। उनके बैठते ही, रतनजी उनसे कहते हैं]

रतनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – पूरणसा, क्या हाल है, जनाब ? यहाँ कैसे पधारे, महारानीजी को छोड़कर ? जाओ..जाओ, महारानी की सेवा कीजिये..तगड़ी बख्सीस देगी। यार, यहाँ मेरे पास आपको देने के लिए कुछ भी नहीं। देने को है, ख़ाली रामजी का नाम। या फिर है, धक्के।

[ओमजी भी कम नहीं, वे उनको ताने देते हुए कहते हैं]

ओमजी – जनाब, आस करणजी के पांव दबाकर आ गए ? यार बोक्स तो कम वज़नी रहा होगा...? हल्का था, तो वज़नी पत्थर डालकर उनका पांव अच्छी तरह से दबा डालते ? कुछ नहीं...इनाम तो वे आपको ज़रूर देंगे, चाहे उनको बुलाना पड़े..जी.आर.पी.वालों को। अब जाइये, इनाम लेते आइये।

[अब बेचारे पूरणसा क्या जवाब देते ? शर्मसार होकर, गरदन झुकाये बेचारे बैठे रहते हैं। इतने में स्टेशन का उदघोषक घोषणा करता है]

उदघोषक – [घोषणा करता हुआ कहता है] – जोधपुर जाने वाली जम्मू-तवी एक्सप्रेस अपने निर्धारित समय से पंद्रह मिनट लेट है। मौसम विभाग की रिपोर्ट के अनुसार तेज़ आंधी आ सकती है, सभी यात्री सुरुक्षित स्थानों पर खड़े रहें। कोई रेल की पटरी क्रोस नहीं करें, पटरी पार करना रेलवे नियम के विरुद्ध है।

रतनजी – [घोषणा सुनकर, कहते हैं] – अब उठ जाइये, प्लेटफोर्म पर छप्पर लगा हुआ है। उसके नीचे आराम से खड़े हो जायेंगे। ताकि, आंधी-तूफ़ान से अपना बचाव हो जाएगा।

रशीद भाई – ऐसी धूल तो, रोज़ ही उड़ती है जनाब। वाह, यहाँ तो आ रही है मनभावनी..आनंद लाने वाली हवा। अहाsss हाsss सांस अच्छी तरह..[इतने में तेज़ हवा चलती है, जनाबे आली रशीद भाई की हालत हो जाती है पतली।] अरेsss अरेsss...

[रशीद भाई की बात पूरी होती नहीं, और इधर चलती है तेज़ हवा..और उधर चलता है भूतेला। अब भूतेला चलने से, रशीद भाई की बोलती बंद हो जाते है। और ये तेज़ हवा जनाब की टोपी उड़ाकर ले जाती है। यहाँ, बेचारे रतनजी की हालत और भी बुरी..? जनाब के टांगें धूज़ती जाती है **इस हवा के कारण, उनका कोमल बदन हिचकोले खाता जा रहा है। कभी उनका कोमल बदन इधर झुकता है, कभी उधर। इन हिचकोलों के कारण वे अपना बैग संभाल नहीं पा रहे हैं, तभी चलता है भूतेला..? इस भूतेले के कारण उनका बैग हाथ से छूट जाता है, और पुलिए के नीचे गिर पड़ता है। पुलिए के नीचे चटाई बिछाकर बैठा बजरंगी पहलवान कर रहा था विश्राम, जो अभी-अभी अखाड़े में कुश्ती लड़कर यहाँ आया ही था..उस बेचारे के ऊपर गिर जाता है रतनजी का भारी भरकम बैग। इतना भारी बैग ऊपर से गिरता है, यह कोई आम नहीं गिरा जिसका दर्द बर्दाश्त किया जा सके। यह तो रतनजी का भारी बैग ठहरा, जिसमें तरह-तरह का सामान भरा रहता है, दादी के मटके की तरह।** ऐसे भारी भरकम बैग के ऊपर गिरने से, जो दर्द पैदा होता

है..वह नाक़ाबिले बर्दाश्त है। इस कारण वह पहलवान, नाक़ाबिले दर्द के कारण मचाता जाता है कूकारोल। फिर वह, चीत्कारता हुआ कहता है]

बजरंगी पहलवान – [चीत्कारता हुआ, कहता है] – यह कौन है, कमबख़्त ? किसकी हिम्मत हो गयी, इस बंजरंगी पहलवान को ललकारने की ? अहहहsss.. [दर्द नाक़ाबिले बर्दाश्त होने से, वह चीत्कारता है] अरेsss... मेरी मां। किसका आटा वादी करता है, आज़ ? **ओ मेरे सामने तो आ जा, छलिये। छुप-छुप वार करने का क्या राज़ है ? तू छिप ना सकेगा, गेलसफ़ा..मेरी आत्मा की यह आवाज़ है।**

[रतनजी, ओमजी और रशीद भाई, भयभीत होकर दबे पांव रेलिंग थामे धीरे-धीरे पुलिए की सीढ़ियां उतरते हैं। फिर बेचारे दबी आवाज़ में एक-दूसरे से कहते हैं]

रतनजी – [भयभीत होकर, कहते हैं] – बुरा हुआ रे, रामा पीर। [रशीद भाई से कहते हैं] ओ सेवाभावी रशीद भाईजान, ज़रा इस बजरंगी के पास से मेरा बैग ले आइये। सोच लीजिये आप, या तो आप अपना सेवाभाव दिखलाइये, या फिर मैं जाऊं उसके पास अपनी पिटाई करवाने..आप पर ही निर्भर करता है, मुझे पिटवाना या आपका बैग लाना।

ओमजी – अरे ओ रतनजी। आप यों काहे बोल रहे हैं ? आप उस राक्षस के पास जाकर, अपनी हड्डियां काहे तुडवाना चाहते हैं ? सोच लीजिये, एक बार। इस **बुढ़ापे में ये हड्डियां, बहुत कठिनाई से जुड़ती है।**

रशीद भाई – [ओमजी पर, नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए कहते हैं] - यार ओमजी, फिर आप मुझे वहां भेजकर मेरी हड्डियां तुड़ वाना चाहते हैं ? [रतनजी की तरफ़ देखते हुए, कहते हैं] आप मेरे दोस्त हो या दुश्मन ? या आपकी बुद्धि का नाश हो गया ? अब आप अपने दिमाग़ में यह बात बैठा लीजिये, के **'इस रशीद के खोपड़े में अक्ल है, कोई गोबर नहीं भरा है।'**

रतनजी – [उनको उकसाते हुए कहते हैं] – वाह उस्ताद। क्या कहना है, आपका ?

रशीद भाई – [खुश होकर कहते हैं] – भले आप अपनी ठौड़ मुझे पिटवाने बजरंगी के पास भेज रहे हैं, मगर अब आप देखना..मैं क्या करता हूं, वहां जाकर ?

रतनजी – [उतावली करते हुए, कहते हैं] – कुछ जल्दी करो, यार। किसी तरह, लेकर आ जाओ मेरा बैग। आप, जानते नहीं ? गाड़ी आने का, वक़्त हो गया है।

रशीद भाई – [एक हाथ ऊंचा करते हुए, अमिताभ बच्चन की स्टाइल में कहते हैं] – "बेफिक्र हो जाओ, मेरे दोस्त। यह रशीद अभी अपनी जान हथेली पर रखकर, लाता है आपका बैग। आख़िर हम है, कौन ? बोलिए, बोलिए। चलिए हम बोल देते हैं..हम हैं, सेवाभावी रशीद।

[रशीद भाई बैग लाने के लिए वहां से रुख़्सत होते दिखायी देते हैं, उनके जाते ही रतनजी अपनी आदत से लाचार होकर कहते हैं]

रतनजी – [हंसते हुए, कहते हैं] – दफ़्तर में यह नामाकूल करता है, केबरा डांसर हेलन का स्वांग। और वहां यह गधा दिखाता है, एक-एक स्टेप हेलन के डांस का। अब यहाँ बेचारा बना

है, अमिताभ बच्चन का बाप ?
[इधर रशीद भाई अब पहुँच जाते हैं, घेवरसा के पास। वहां आकर, वे उनसे "जय रामजी सा" कहकर उनका अभिवादन करते हैं।]
रशीद भाई – जय रामजी सा। घेवरसा क्या हाल है, आपके ?
घेवरसा – [अभिवादन स्वीकार करते हुए, कहते हैं] – जय रामजी सा। अब कहिये कितने कप चाय भेजूं ?
रशीद भाई – चाय पीनी नहीं है, यार। मगर..
घेवरसा – [झुंझलाते हुए, कहते हैं] – फिर, क्या ? आप मेरा धंधा ख़राब करने पधारे हैं, जनाब ? [हाथ जोड़कर, कहते हैं] माफ़ कीजिये, **आप ठहरे सरकारी नौकर। गपें हांकना आप लोगों के लिए चल सकता है, मगर मेरे जैसे ग़रीब आदमी के लिए ऐसा संभव नहीं है। गाड़ी आ रही है, धंधे का वक़्त हो गया..मुझे अभी माफ़ कीजिये।**
रशीद भाई – आपने ग़लत समझा, मुझे। मैं पहले आपको, एक चाय के पैसे दे रहा हूं। [एक चाय के पैसे देते हुए कहते हैं] अब आप अपना कान इधर लाइए, मैं समझा देता हूं. आपको करना क्या है ? [घेवरसा के कान में फुसफुसाते हैं]
घेवरसा – [खुश होकर, कहते हैं] – आप फ़िक्र मत कीजिये। अभी करता हूं, आपका काम। आपको मालुम नहीं, क्या ? मेरे चाय के मसालों की सौरम पाकर, अभी यह बजरंगी आता है दौड़ता हुआ..मेरे पास।
रशीद भाई – कमाल है, तब ठीक है। अब यह काम आपको सुपर्द किया। मगर जनाब आपको याद रखना है, के **"यह बजरंगी, यहीं आपके ठेले के पास ही खड़ा होकर चाय पीये। और वह यहाँ आते वक़्त, वह हमारे रतनजी का बैग यहाँ लेकर नहीं आये।"** समझ गए, घेवरसा ?
घेवरसा – भरोसा आपको करना होगा, रशीद भाई। आप कहो जिसको बुलाकर मैं यहाँ चाय पा सकता हूं। क्योंकि मेरी चाय में है, खांसी, जुकाम, और बुख़ार का पक्का इलाज़। बड़े-बड़े रौबदार यहाँ खड़े रहकर, चाय पीते हैं। फिर यह बजरंगी किस खेत की मूली है, कुतिया का ताऊ ?
रशीद भाई – हंसते हुए कहते हैं] - अब आप काम कीजिये। धंधे का वक़्त है, गाड़ी आने वाली है। एक बार और देख लीजिये, यह बजरंगी पुलिए के नीचे ही बैठा है। अब मैं चलता हूं, आप ध्यान रखना।
[फिर वे चले जाते हैं, अपने साथियों के पास। उधर घेवरसा जाते हैं बजरंगी के पास, और कहते हैं]
घेवरसा – ताज़े मसाले कूट दिए हैं, बजरंगी अब आ जा ठेले के पास। और चाय पी ले, फटके से।
बजरंगी – [सर दबाता हुआ कहता है] – यहीं ला दीजिये ना, अभी मेरे सर में बहुत दर्द है।
घेवरसा – तूझे चाय पीनी हो तो, आ जा ठेले के पास। गाड़ी आने वाली है, मेरे पास वक़्त नहीं है...चाय लाने का। झट आ जा, मेरा धंधा खोटी मत कर।

बजरंगी – जैसी आपकी इच्छा, अभी आता हूं ठेले के पास। आप चलो, मैं पीछे आ रहा हूं।
[घेवरसा और बजरंगी पहुँच जाते हैं, ठेले के पास। घेवरसा से चाय लेकर, बजरंगी सुड़क-सुड़क की आवाज़ मुंह से निकालता हुआ चाय पीने लगता है। उधर रशीद भाई को इसी मौक़े की तलाश थी, वे झट पहुँच जाते हैं बजरंगी के बैठने की ठौड़। वहां पहुंचकर फटके से रतनजी का बैग उठाकर, सीधे चले जाते हैं अपने साथियों के पास।
रतनजी – [रशीद भाई से बैग लेकर कहते हैं] – रशीद भाई, भगवान आपका भला करे। अब आप साथियों की ख़ाली बोतलें ले जाकर, ठंडा पानी भरकर लेते आयें। जल्दी आना, अब गाड़ी आने वाली ही है।
[रशीद भाई बोतलें लेकर, जाते हैं शीतल जल के नल के पास। बोतलों में पानी भरकर, जैसे ही वे आगे क़दम उठाते हैं..तभी ख़ुदा जाने, कहाँ से आभा में काले बादल छा जाते हैं ? घड़ घड़ की आवाज़ करते बादल गरज़ने लगते हैं। फिर क्या ? तेज़ हवा के झोंकों के साथ ओले गिरते हैं। ख़ुदा की करामात, इधर बेचारे रशीद भाई ने ख़िदमत की और उधर उनकी टाट पर बरसते जाते हैं ओले। ये सफ़ेद भाटे यानि ओले उनकी टाट पर बजाते जा रहे हैं नगाड़ा। ओले गिरते ही उनको मालुम होता है, के "उनके सर पर टोपी नदारद है।" बेचारे फ़िक्र करते हुए साथियों के पास आते हैं। कुछ कहने के लिए, वे मुंह खोलना चाहते ही थे.. तभी रतनजी बोल उठते हैं]
रतनजी – अब आकर विश्राम कर लीजिये। बहुत पानी भर लिया, यार। अगर अब आप यहाँ शान्ति से नहीं बैठे, तो ये गरज़ते बादल आपकी टाट पर टना-टन नगाड़ा बजा देंगे।
रशीद भाई – [सबको, बोतले थमाते हुए कहते हैं] – अब आगे बोलो मत, मेरे साथ बहुत बुरी हुई। अभी रखा मैंने सर पर हाथ..तब मालुम हुआ के "टोपी नदारद है। शायद, वह तेज़ हवा उसे उड़ा ले गयी हो ?"
रतनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – अमिताभ बच्चन साहब। अब आप अपनी टोपी लाकर, अक्ल और बहादुरी का ख़िताब जीत लीजिये।
ओमजी – क्या देख रहे हैं, हमारा मुंह ? पुलिए के नीचे उड़कर गयी है, तुम्हारी टोपी। आ जाइये, टोपी लेकर। वहां जाकर बैठना मत, ताश खेलने वाले वालों के पास।
रशीद भाई – फ़िक्र कीजिये मत, मैं अभी गया और अभी आया।
[रशीद भाई पुलिए के नीचे आते हैं, वहां आकर वे क्या देखते हैं ? ताश खेलने वालों दल तीन पत्ती का खेल खेल रहे हैं। **इन ताश खेलने वालों में एक भाई तो ऐसा कुतिया का ताऊ निकला, जो बेचारे रशीद भाई के सर की टोपी को गद्दी बनाकर उस पर बैठ गया है। उसे देखकर, रशीद भाई की आँखें गुस्से से लाल हो जाती है। वे सोचते हैं, के "जहां माथे की टोपी या पगड़ी आदमी की इज़्ज़त मानी जाती है, वहां यह नामाकूल उस टोपी को अपनी पिछली दुकान के नीचे रखकर उस पर बैठ गया है ?** अब कहें, तो इस लंगूर को क्या कहें ? यहाँ बैठे ये सारे ताश खिलाड़ी ठहरे, बदतमीज़। जो खुले आम यहाँ बैठकर दारु पीते जा रहे हैं, और इन लोगों को

कहाँ शर्म ? जो खुले-आम अश्लील गालियां बोलते जा रहे हैं, ऐसे लोग क्या समझेंगे पगड़ी या टोपी की इज़्ज़त ?" इतना सोचकर उनसे बिना विवाद किये, चुप-चाप जाकर उस आदमी के सीट के नीचे से अपनी टोपी खींचकर निकाल लेते हैं। फिर टोपी लेकर झट पुलिए के नीचे से बाहर आते हैं, और टोपी पहनना चाहते हैं..उससे पहले आसमान से, ओले तड़ा-तड़ रशीद भाई की टाट पर गिरते हैं। इन ओलो की मार का दर्द, रशीद भाई सहन नहीं कर पा रहे हैं। फिर क्या ? वे दर्द के मारे कराहते जाते हैं, और अल्लाह मियाँ से शिकवा कर बैठते हैं]

रशीद भाई – [शिकवा गिला करते हुए, कहते हैं] – ख़ुदा रहम। या अल्लाह मैंने एक सच्चे मोमिन की तरह लोगों की ख़िदमत की है, और करता भी आ रहा हूं। उसके बाद भी आपने मेरे सर पर तड़ा-तड़ ओलों की बरसात ऐसे की है, जैसे आप मेरी टाट को नगाड़ा समझकर उसे बजाते जा रहे हो ?

[इतने में पुलिए के नीचे बैठी बुढ़िया, उनकी आह सुनकर बोल उठती है]

बुढ़िया – कलयुग आ गया है, मेरे भाई। अब किसी की भलाई मत करना। देख ले तेरे ऊपर ओले गिरे हैं, और मेरे बच्चों ने मुझे घर से बेदखल कर डाला। आज़ पड़ी हूं, इस पुलिए के नीचे। जो कल लोगों को छत नसीब कराती थी, उसे आज़ बिना छत बेसहारा भटकना पड़ता है। वाह रे भगवान, तेरे घर का न्याय।

[फिर क्या ? रशीद भाई दौड़कर पहुंचते हैं, अपने साथियों के पास। वहां इन साथियों का प्रवचन सुनकर, उनका दिल खट्टा हो जाता है।]

रतनजी – जो झूठ बोलता है, उसके ऊपर ही ओले गिरते हैं।

ओमजी – सच्च कहा, रतनजी आपने। खर्रास [झूठ बोलने वाले] आदमियों के ऊपर ही, ओले गिरते हैं।

रशीद भाई – [होंठों में ही कहते हैं] – यहाँ किसी की भलाई नहीं करनी चाहिए। क्या करें ? **मति मारी गयी मेरी, जो इन लाड साहब का बैग बजरंगी पहलवान के चंगुल से छुड़ाकर लाया। बजरंगी को पीटने का मौक़ा नहीं मिलने दिया। अब ये लाड साहब दो मिनट में भूल गए, मेरा किया अहसान ? ऐसे आदमी से, दूर रहना ही अच्छा है।**

[रशीद भाई का दिल भर आया, ग़म से। अब ग़मज़दा रशीद भाई झट उठाते हैं, अपना बैग। और आ जाते हैं, घेवरसा के ठेले के पास। ठेले के पास वाले तख़्त पर दयाल साहब, अनिल बाबू और ओमजी बैठे हुए हैं। और उनके आस-पास छंगाणी साहब, मछली विभाग के सतनराणजी खड़े हैं। गपों का पिटारा खुलता जा रहा है, हर कोई अपनी-अपनी फेंक रहा है। पीछे रहे गपोड़ी मास्टर रतनजी, वो भी आ गए हैं। इनके शामिल हो जाने से, गपों के पिटारे में चार चांद लग गए हैं। अब दयाल साहब कहते हैं]

दयाल साहब – यार ओमजी, तू कुछ बोलता नहीं ? हमेशा चुप रहता है, क्या बात है भय्या ?

[इन साथियों से तो, रशीद भाई पहले से नाराज़ थे। फिर क्या ? ओमजी की बखिया उधेड़ते हुए कह देते हैं]

रशीद भाई – ये नहीं बोलते हैं, जितना हो अच्छा है। बोलने के बाद, ये जनाब या तो बरसाएंगे पत्थर या फिर बरसाएंगे सम्पलोटिया।

दयाल साहब – रशीद, यह सम्पलोटिया क्या होता है ? शायद तू कहना चाहता होगा, सांप का बच्चा ? यार तूने ऐसा कहकर मुझे एक खौफ़नाक वाकया याद दिला दिया। कल शाम की बात है, मेरे घर के पिछवाड़े वाले बगीचे में एक टांका है..जिसका ढक्कन खोलकर मैंने क्या देखा...?

रशीद भाई – क्या देखा, जनाब ?

दयाल साहब – पानी लेने के लिए जैसे ही, मैंने बाल्टी अन्दर डाली। तब, क्या देखा ? वह..वह कोई सांप था, या कोई सांप का बच्चा ? यार फुंफकार मारता हुआ दिखायी दिया, और नासपीटा मुझे देखकर लगा पानी में तैरने..यार रशीद, मैं तो डर गया। अरे, मेरे लाल सांई झूले लाल। मेरी तो चीख निकल उठी, यार।

रशीद भाई – फिर क्या, कहीं आपको दिल का दौरा तो न पडा ?

दयाल साहब – दिल का दौरा पड़े, मेरे दुश्मन को। सारे पड़ोसी मेरी चीख सुनकर वहां इकट्ठे हो गए, और इधर आ गए घर वाले। सभी मुफ़्त की सलाह देने लगे, कोई कहे, टांका ख़ाली कर दो...और कोई कहे, सपेरे को बुला दो। मगर एक भी आगे नहीं आया, काम करने। ख़ाली सलाह देने से पेट भरा नहीं जाता, रशीद।

रशीद भाई – मैं देता हूं, आपको एक ऐसी सलाह। आपके ज़रूर काम आयेगी। ना तो करना है, टांका ख़ाली..और ना टाँके को ओवर फ्लो करना है। सपेरे को बुलाने की तो ज़रूरत ही नहीं। बस मालिक, आप ऐसा कीजिये के...

ओमजी – रहने दीजिये, आपकी सलाह। अभी आप दोगे, आदमी-मार सलाह। के, डालो बाल्टी टाँके के अन्दर..उस बाल्टी में सांप बैठ जाएगा, तब बाल्टी को खींच लेना। यहाँ तो सांप को देखते ही साहब को आता है, पसीना। अब साहब को ही सोचने दीजिये, उन्हें क्या करना है ?

रशीद भाई – [नाराज़ होकर कहते हैं] – या तो आप बोलते ही नहीं, और आप जब कभी बोलते हैं... तब पत्थर बरसाते ही बोलते हो। आख़िर, हुआ वाही। आपने मेरी बात को उड़ा दी ? मेरा कहना का, यह मफ़हूम नहीं था। मैं बेचारा कोई दूसरी बात कह रहा था, अब साहब का हुक्म हो तो मैं कोई सलाह पेश करूँ।

दयाल साहब – [लबों पर, मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – मुलाहिजा, पेश किया जाय। जनाबे आली, शहंशाहे हफ्वात जलालुद्दीन मोहम्मद रशीद साहेब। [नीमत-सलीम करते हुए कहते हैं] हुज़ूर को, इस नाचीज़ का सलाम मंज़ूर हो। जनाब से गुजारिश है, वे अपना मशवरा इस गुलाम को देने की कृपा करें।

रशीद भाई – साहब, इस तरह नीमत-स्लीम करके आप मुझे दोज़ख नसीब न कराएं। आप मेरे

आका, मैं आपका ताबेदार गुलाम..आप मुझे हुक्म दीजियेगा, मगर इस तरह इस धूल को सर पर चढ़ाकर मुझे आप गुनाहगार ना बनाएं।
दयाल साहब – अब बकना। या मारूं तेरे सर पर, चार ठोल ? फिर बोलेगा, क्या ?
रशीद भाई – यह कह रहा हूं, जनाब..के हिम्मत की कद्र होती है। इस खिलक़त में यह बात विख्यात है, के "हिम्मते मर्द, बादशाह की लड़की फ़कीर से विवाह।"
दयाल साहब – अरे गधे की दुम, मैं ना तो बादशाह हूं..ना मैं अपनी बेटी का विवाह फ़कीर से कराने वाला ?
रशीद भाई – साहब, काहे नाराज़ होते है। आपको बस यही करना है, आपको टाँके में डोरी से एक चूहा बांधकर लटकाना है..जैसे ही वह सांप उस चूहे को पकड़ेगा, आप तपाक से डोरी खींच लेना। फिर क्या ? यह आया जनाब, आपका सांप बाहर।
सतनराणसा – बेचारे साहब पर रहम करो, रशीद भाई। क्या, आपका दिमाग़ घास चराने गया है ? आप ऐसी सलाह दे रहे हैं रशीद भाई, मानो साहब गुणवत्ता अधिकारी नहीं होकर मछुआरे हो ? अब आप सब क्यों तक़लीफ़ करते हैं ? मैं बैठा हूं ना, मछली विभाग का..मैं कब काम आऊंगा ? [दयाल साहब से कहते हैं] कहिये साहब, मेरे लायक कोई काम..!
[जम्मू तवी एक्सप्रेस सीटी देती हुई, आती दिखायी देती है। सतनराणसा की आवाज़ गाड़ी की आवाज़ के आगे दब जाती है। उनकी आवाज़, अब सुनायी नहीं देती। थोड़ी देर में गाड़ी, प्लेटफोर्म पर आकर रुक जाती है। गाड़ी रुकने के बाद, ओमजी सतनराणसा के दिल में ऐसी काम करने की प्रबल तमन्ना देखकर कहते हैं]
ओमजी – जाइये सतनराणसा, डब्बे में जाकर सीटें रोकिये। अभी, आपके लिए यही काम है। मछुआरा बाद में बनना।
[सभी शयनान डब्बे में दाख़िल होते है, ख़ाली केबीन देखने के चक्कर में वे आगे बढ़ते जा रहे हैं। अचानक इन लोगों को एक ख़ाली केबीन दिखाई देता हैं, जहां खिड़की वाली सीट पर मोहनजी अकेले बैठे नज़र आते हैं। उनको देखकर, दयाल साहब और अनिल बाबू आगे बढ़ जाते हैं। मगर, रशीद भाई अपने साथियों को इसी केबीन में बैठने का आग्रह करते हैं।]
रशीद भाई – आइये, अपुन सब यहीं मोहनजी के पास ही बैठेंगे।
[फिर क्या ? उनके आस-पास की ख़ाली सीटों पर, सभी बैठ जाते हैं। अब रशीद भाई, मोहनजी से अभिवादन करते हैं]
रशीद भाई – जय बाबा री सा।
[मोहनजी ना उनकी तरफ़ देखते हैं, ना जवाब देते हैं और न अपने लबों पर मुस्कान छोड़ते हैं। बस वे तो खिड़की से मुंह बाहर निकालकर, बाहर झांकते हुए उन लोगों को एवोइड करते जा रहे हैं। रशीद भाई उन्हें कहाँ छोड़ने वाले ? वे उनके और नज़दीक खिसककर फिर एक बार और कहते हैं]

रशीद भाई – मोहनजी, जय बाबा री। यों क्यों मुंह बिगाड़कर, बैठ गए जनाब ? हम सब आपके साथी हैं, यानि आपकी गैंग हैं।

ओमजी – यानी, आपकी **अलाम चांडाल-चौकड़ी** के सदस्य।

रशीद भाई - नाराज़गी हुई होगी, तो उस चैकिंग करने वाले डी.एम. पर हुई होगी ? गुस्सा निकालना है तो उस डी.एम. पर निकालो, हम लोगों पर क्यों ? गाड़ी जाने वाली है, पानी की बोतल भरनी है तो बोल दीजिये।
[पानी भरने की बात सुनते ही जनाबे आली मोहनजी मुस्कराने लगे, फिर बैग से बोतल निकालकर शेष बचा हुआ पानी पी जाते हैं। फिर रशीद भाई को ख़ाली बोतल थमाकर, **वे पुन: कुबदी मोहनजी बन जाते हैं। झट खिड़की से बाहर ज़र्दे की पीक थूककर, नाक साफ़ करते हैं। बाद में चुप-चाप, रशीद भाई की कमीज़ से अपने हाथ साफ़ कर लेते हैं।** अब वे प्रेम से कहते हैं]
मोहनजी – **आप लोग तो मेरी गैंग हो, यानी मेंबर ऑफ़ माय रेस्पेक्टेड अलाम चांडाल-चौकड़ी।** आप लोगों से कैसे नाराज़ हो सकता हूं ? **यह डी.एम. तो रोज़ भटकता हुआ, आता जाता रहेगा। मगर मोहनजी रहेंगे..जैसे हैं, वैसे ही रहेंगे। वे तो ज्यों के त्यों ही रहेंगे, कढ़ी खायोड़ो। यों कैसे फेरा बदल दे, भाई ? यह नौ बजे वाली गाड़ी ही, अपुन को सूट करती है।** [हथेली पर ज़र्दा लेकर, उसे होठ के नीचे दबाते हैं]
रशीद भाई – इसमें, डी.एम. से डरने की क्या बात है ? क्या उसके दफ़्तर के मुलाजिम, रोज़ का आना-जाना नहीं करते हैं ? मेरे विचार से बीस प्रतिशत लोग, रोज़ का आना-जाना तो करते ही हैं। **जब यह डी.एम. उन लोगों की आदत नहीं बदल सकता, तब हम लोगों की आदत कैसे बदलेगा ?**
[यह मनभावनी बात सुनते ही, मोहनजी अपने लबों पर मुस्कान बिखेर देते हैं। फिर हंसते हैं, जिससे उनके उनके होठ के नीचे दबाया हुआ ज़र्दा उनके थूक के साथ उछलता है। जो सामने बैठे रतनजी के मुंह पर, आकर गिरता है। बेचारे रतनजी झट अपनी जेब से रुमाल बाहर निकालकर अपना मुंह साफ़ करते हैं। फिर झिड़कते हुए, रशीद भाई से कहते हैं]
रतनजी – [झिड़कते हुए कहते हैं] – यह क्या, आपका यहां बैठना ? रशीद भाई सिंगनल हो गया है, आपको पानी भरकर लाना है तो जाइये। मगर यहां बैठकर, बिना मौसम की बरसात क्यों करवाते हैं मेरे बाप ? नहीं जाना है, तो चुप-चाप बिराज़ जाइये।

[फिर क्या ? इस जर्दे की बे-मौसम बरसात से परेशान होकर गुस्साए रतनजी, जाकर दूसरी सीट पर बैठ जाते हैं। अब वे यहां, मोहनजी के मुख से हो रही ज़र्दे के फूलों की बरसात से बच सकते हैं। इधर बेचारे सेवाभावी रशीद भाईजान ठंडा पानी लाने के लिए नीचे उतरकर सीधे जाते हैं शीतल जल के नल के पास। टोंटी खोलकर जैसे ही बोतल भरते हैं, और उधर उन्हें सुनायी दे

जाती है गाड़ी की सीटी की आवाज़। बेचारे अस्थमा के मरीज़ रशीद भाई दौड़कर, चलती गाड़ी का हैंडल पकड़ते हैं। रास्ते में खड़ी भीड़ से धक्के खाते हुए, किसी तरह वे अपनी सीट पर पहुंचते हैं। अब स्टेशन छोड़कर, यह गाड़ी तेज़ रफ़्तार से पटरियों पर दौड़ती जा रही है। मोहनजी झट खिड़की से बाहर पीक थूककर, पुन: होंठ के नीचे ज़र्दा ठूंस लेते हैं। इसके बाद, वे दो दिन नहीं आने का करण बताते हुए आगे कहते हैं]

मोहनजी – [ज़र्दा होठ के नीचे दबाकर, कहते हैं] – देण ऊपर देण हो गयी, रशीद भाई। अब आगे क्या बयान करूं ? दो दिन नाणा रुक गया..अरे नहीं रे, खारची रुक गया..!

रशीद भाई – नाणा ही बोलिए, जनाब। आपको झूठ बोलना शोभा नहीं देता, सच्च कहता हूं झूठ बोलने से आपकी टाट पर बरसेंगे सफ़ेद भाटे [ओले]।

रतनजी – [हंसते हुए, कहते हैं] – अरे जनाब, रशीद भाई को इसका अच्छा-ख़ासा तुजुर्बा है। अभी पाली स्टेशन पर, आसमान से गिर रहे सफ़ेद भाटे इनकी टाट पर नगाड़ा बजा चुके हैं। मोहनजी, रशीद भाई के ये सत्य वचन है। सत्य बात कह दीजिये, काहे दोस्तों से छुपा रहे हैं सच्चाई ? कह दीजिये, दो दिन कहां भटकते रहे ?

मोहनजी – बात सच्च कही, जनाब। भागवान के पास बो मैं झूठ बोला, तब से इसका परिणाम सामने है। अब हो गयी देण, भागवान मुझ पर भरोसा करती ही नहीं। ऊपर से उन्होंने मुझको, झूठ के मगरमच्छ का ख़िताब दे डाला। अब मैं करूँ, तो कढ़ी खायोड़ो क्या करूँ ?

[ग़मागीन हो जाते हैं, मोहनजी। उनकी नयनों से अश्रु ढलकते जा रहे हैं, और उनका गला अलग से रुंद जाता है। उनकी यह दशा देखकर सभी चुप रहते हैं, केबीन में ख़ामोशी छा जाती है। **आख़िर मोहनजी पहलू में बैठे रशीद भाई की कमीज़ से अपने आंसू पौंछ डालते हैं, मानो यह रशीद भाई का कमीज़ न होकर मोहनजी का नेपकिन ही हो ?** इसके बाद वे, ख़ुद ही रुन्दते गले से कहते हैं]

मोहनजी – [रुन्दते गले से कहते है] – क्या कहूं आपको,..कल रात का वाकया ? थकाहारा घर पहुंचा, उस वक़्त घड़ी में बजे थे रात के करीब ग्यारह। मेरा जीव सुखी है या दुखी ? कुछ नहीं पूछा, भागवान ने।

रशीद भाई – खैरियत ज़रूर पूछी होगी जनाब, क्यों आप खर्रास बन रहे हैं ?

मोहनजी – झूठ नहीं बोल रहा हूं, मेरे बाप। वह तो दामिनी की तरह तड़ककर कहने लगी 'रात को देरी से आने का राज़ अब खुल गया है, गीगले का बापू। तीन-तीन औरतों के साथ आपने शादी की, फिर भी आपका दिल भरा नहीं ?' फिर मैंने ज़ब्हा का पसीना साफ़ करके पास रखे सोफे पर बैठना चाहा, मगर भगवान आकर बीच में खड़ी हो गयी और मुझे बैठने नहीं दिया रशीद भाई।

रशीद भाई – फिर क्या हुआ, जनाब ?

मोहनजी – भागवान ने कहा, के 'यह करमजली नर्स कौन है, जिसको आपने अपने मोह-जाल में

फंसा डाला ? मुझसे आप, संतुष्ट हो गए ? अब यह राज़ की बात जानकर मैं अब यहाँ नहीं रहूँगी। सुबह की पहली बस में बैठकर, चली जाऊंगी अपने पीहर इस गीगले को लेकर।'
रतनजी – राम राम, आपकी ऐसी बुरी आदतें हैं ? कब से कह रहा हूं, 'साहब, आप सुधर जाओ। न तो जनाब, आप बुढ़ापे में तक़लीफ़ देखेंगे..जानते हैं, आप ?

मोहनजी – [दुखी स्वर में] – क्या जानू रे, कढ़ी खायोड़ा ?

रतनजी – ये औरतें होती है, बड़ी शंकालु। ऐसी आदतें रही आपकी, तो आपका बुढ़ापा बिगड़ जाएगा, साहब।' मगर, करूं, क्या ? आपने मेरी एक बात भी, सुनी नहीं।
रशीद भाई – रतनजी, आप चुप-चाप बैठ जाइये। [मोहनजी से कहते हैं] साहब, आगे क्या हुआ ? बयान कीजिये। रतनजी का स्वाभाव ही ग़लत पड़ गया है, क्या करें..बीच-बीच में बोल-बोलकर, किस्से का मटियामेट कर देते हैं। बोलो, मोहनजी।
मोहनजी – फिर मैंने उनको नम्रता से कहा 'कुछ बोलिए, भागवान। आख़िर मुझसे ग़लती कहाँ हुई ? इतने अंगारे मत उगलिए अपने मुंह से, भले घर की बहू को ऐसा बोलना अच्छा नहीं लगता। अरे गीगले की मां, ऐसा मत समझो, मैं कुछ काम का नहीं हूं..काहे आप मुझे, भंगार की गाड़ी समझती आ रही हैं ?'

रशीद भाई – आगे क्या हुआ, जनाब ?

मोहनजी – [रोवणकाली आवाज़ में कहते हैं] - मगर यह सुनकर भागवान तड़ककर बोले, रशीद भाई आपको उनकी बात सुनकर बहुत ताज्जुब होगा।
रतनजी – [एक बार और बीच में बोलते हैं] – यह कहा होगा, के "डाल दो इस नर्स को घर में, और फिर मुझे दे दीजिये फांसी।" अरेऽऽ जनाब, फिर ग़लती हो गयी...बीच में बोल गया। आगे से, ऐसी गलती नहीं होगी। आप आगे का, किस्सा बयान कीजिये।
मोहनजी – भागवान ने कहा, के "अंगारे क्या ? मैं तो पूरा जलता हुआ पूला लाकर आप पर डाल दूंगी। क्या समझ रखा है, मुझे ? लोगों के सामने आप ऐसे सच्चे पति-परमेश्वर बनते हैं मेरे, तो बताइये आपके इस नीले बैग में क्या है ?" इतना कहकर, उन्होंने नीला बैग लाकर मेरे सामने रख दिया...
रशीद भाई – यह नीला बैग तो, नर्स बहनजी जुलिट का होना चाहिए। क्या आपके पास रह गया, क्या ?
मोहनजी – जी हां, वह गाड़ी में भूल गयी और मैं ले आया। सोचा दूसरे दिन मिलेगी, तब दे दूंगा उसे। मगर यहाँ तो बात बिल्कुल उल्टी हो गयी। भागवान कहने लगी, के "मुझे कहने में शर्म आ रही है, गीगले के बापू।" आगे उन्होंने यों कहा, के...

रतनजी – आप निसंकोच होकर कहिये, यहाँ शर्म रखने की कोई ज़रूरत नहीं। हम सब, आपके ही आदमी है।

मोहनजी – उन्होंने आगे कहा "इस बैग को जब मैंने पड़ोसन चूकली को दिखाया। राम राम, वह चूकली क्या कह रही थी..ऐसी बातें। उसने बैग से पैकेट निकालकर दिखाए मुझे, और कहा ये पैकेट परिवार नियोजन...

रतनजी – अब आगे कहिये, जनाब।

मोहनजी – उन्होंने आगे कहा "वह बेचारा गीगला इसे, गुब्बारा समझकर बाहर खेलने लगा। **इस बेचारे को ऐसे गुब्बारे से खेलता देखकर, गली-मोहल्ले के लोग, मुझ पर हंसने लगे। और आपस में यह कहते रहे, के 'गीगले के बापू रोज़ दफ़्तर जाते हैं, या कहीं दूसरी जगह बाड़ में मूतने जाते हैं ?"** अब इसके आगे क्या कहूं, मेरी दास्तान ?"

रशीद भाई – गाड़ी को चलती रखो, आपकी बातों की गाड़ी का गार्ड मैं हूं। मैं कहूं, जब इस गाड़ी को रोका करें। अब आप वापस, इस बातों की गाड़ी को रवाना कीजिये।

मोहनजी – मेरी इज़्ज़त की बखिया उधेड़ डाली..और आगे कहा, के "आप दो दिन खारची रुक गए, इसका पूरा राज़ मेरे पास आ गया है।" इसके बाद भागवान ने गीगले को पुकारा "कहाँ गया रे, गीगला ? जल्दी आ बेटा, बोक्स में तेरे और मेरे कपड़े डाल देती हूं। फिर कल सुबह पहली बस से चले जायंगे तेरे ननिहाल। याद रख, तू और मैं यहाँ नहीं रहेंगे।"

रशीद भाई – साहब, आपने यह क्या कर डाला ? घर में महाभारत मचा डाला, पहले ही कहता था...आप, सुधर जाओ।

मोहनजी – [नाराज़ होकर, कहते हैं] – आगे ही मैं भागवान के कारण परेशान हूं, ऊपर से रशीद भाई आप मुझ पर आरोप लगाते जा रहे हो ? असल में कारण तो यह है कि, मेरी ग्रह दशा ख़राब आयी है। जिस कारण, मुझे जगह-जगह लोगों के कॉमेंट्स सुननी पड़ते है।

रतनजी – ग्रह दशा आपकी नहीं, हमारी ख़राब आयी है। क्योंकि, अभी-तक हम आपका साथ करते आ रहे हैं। पहले भाभीसा कहती थे, के आप रुलियार हैं। मगर फिर भी, हमने आप पर भरोसा किया। मगर, अब तो सत्य बिल्कुल सामने आ रहा है।

मोहनजी – रुलियार रुलियार क्यों कह रहे हैं, जनाब ? यह रुलियार का ख़िताब मुझे इनके पीहर वालों की वजह से मिला है, इसी भागवान के मुंह से। उनके पीहर के गाँव में रहने वाले इस सौभाग मलसा के कारण ही मैं तक़लीफ़ पा रहा हूं, और यह झगड़ा भी इसी आदमी के कारण हुआ है।

रशीद भाई – बताइये, फिर सच्च क्या है ?

मोहनजी – रशीद भाई यह तो रामसा पीर की कृपा हुई, अचानक फ़ोन पर घंटी आयी। भागवान गयी फ़ोन के पास, और वापस आयी तब उनके चेहरे पर संतोष छाया हुआ दिखाई देने लगा। पास आकर, उन्होंने कहा "आगे से ध्यान रखना, अब आगे से आप इस सौभाग्या जैसे आदमी से

दूर रहना।"
रशीद भाई – फिर सच्चाई क्या थी, बताइये साहब।
रतनजी – बात कुछ और है, ग़लती आपकी ही लगती है। क्यों छुपा रहे हैं, आप ? बयान कर लीजिये, जनाब। नहीं तो हम समझेंगे, आप रुलियार ही हैं।
मोहनजी – एक बार कान खोलकर सुन लीजिये, वह फ़ोन सौभाग मलसा का ही था...वह कह रहा था 'उसका बैग जुलिट नर्स के बैग से बदल दिया गया, क्या पावणा उसका बैग जुलिट से वापस लेकर आये या नहीं ?' इतना कहकर, भागवान कहने लगी "फ़ोन सुनकर मुझे जास मिली, के आपका किसी के साथ चक्कर नहीं चल रहा है।"
रशीद भाई – वाहss जनाब, वाह। आख़िर, आपका पीछा छूटा। यह रुलियार ही, रुलियार के घर महाभारत मिटाने के काम आया।
[यह घटना याद करते हुए, मोहनजी के दिल में यह दुःख शूल की तरह चुभता जा रहा है। वे अपने दिल में, सोचते जा रहे हैं]
मोहनजी – [होंठों में ही कहते है] – यहाँ तो मेरी औरत मुझ पर भरोसा नहीं कर रही है, और इधर इन मित्रों ने भी मुझ पर भरोसा करना छोड़ दिया है। अब कैसी दशा हुई है, मेरी ? ए रामसा पीर, यह क्या कर डाला आपने ?
[अब मोहनजी का दिल-ए-दर्द अब नयनों में आकर, अश्रु बनकर नयनों से ढलकता जा रहा है। वे इस दुःख को भूलने के लिए, रुन्दते गले से गीत गाते हैं]
मोहनजी – [दर्द भरा गीत गाते हैं] – दोस्तsss दोस्त नाsss रहा sss प्यारsss प्यारsss ना रहा..ये ज़िंदगी हमेंsss तेरा एतबार ना रहा..
[यह गीत सुनकर, रशीद भाई का जीव कलपता जा रहा है। फिर क्या ? वे उनके छलकते आंसूओं को साफ़ करके, उन्हें दिलासा देते हैं]
रशीद भाई – यह क्या कर रहे हैं, साहब ? आख़िर आप मर्द हैं, औरत नहीं। अरे जनाब..इन आंसूओं की क़ीमत जानो, इन्हें व्यर्थ मत बहावो साहब।

रतनजी - जब हम आपके साथी बैठे है ना, आपके सुख-दुःख के साथी। फिर, आपको क्या दुःख ?

रशीद भाई – [दिलासा देते हुए, कहते हैं] - अब रोइये मत, उठिए चलकर हाथ-मुंह धो लीजिये। लूणी स्टेशन आ रहा है, अभी मैं सबके लिए एम.एस.टी. कट चाय मंगवाता हूं।
रतनजी – जी हां, पहले चाय पियेंगे सभी बैठकर। फिर करेंगे, सुख-दुःख की बातें। अब बोलिए ना, मोहनजी [उनकी हिचकी पकड़कर उनका मुंह ऊंचा करते हैं] यों क्या ? अब तो लबों पर मुस्कान बिखेर दीजिये ना, देखो ये ओमजी कैसे मंद मंद मुस्करा रहे है आपका कुम्हलाया हुआ मुंह देखकर ?

रशीद भाई – अरे जनाब, आप समझदार आदमी है। अब उठकर फाट-मुंह धो लीजिये, ग़मगीन रहने से क्या फायदा ? ज़िंदगी में आ रही समस्याओं का, डटकर मुक़ाबला कीजिये।
[मोहनजी का हाथ थामकर, उन्हें वाशबेसिन की तरफ़ ले जाते हैं। उनके चले जाने के बाद, रतनजी मुस्कराते हुए ओमजी से कहते हैं]
रतनजी – देखिये ओमजी, चाय का इंतज़ाम हो गया जनाब। रशीद भाई की तरफ़ से, चाय पक्की। बस अब तो दाल के बड़ो की कमी रह गयी, अब वह कमी आपकी तरफ़ से पूरी हो जाय लूणी स्टेशन पर..तो समझ लेंगे, के 'भली करी रामा पीर।'
[रामा पीर के भक्त ओमजी, भादवो के हर मेले में जाते हैं रामदेवरा..वह भी पैदल-पैदल। इनके सामने कोई रामा पीर का नाम ले ले, ये जनाब बहुत खुश हो जाते हैं। मुअज्ज़म यह बात प्राय: कहते हैं 'बाबा की कृपा से घर पर सब आनंद है, अब रतनजी की बात सुनकर वे बाबा को हृदय से दंडवत करते हैं। फिर, वे कहते हैं]
ओमजी – [बाबा को दिल से दंडवत करके, कहते है] – हुक्म बाबा का होना चाहिए, अरे जनाब आपको क्या कहूं ? बाबा के हुक्म के बिना, मैं एक क़दम आगे नहीं बढ़ाता।
रतनजी, यह लीजिये रुपये और लेकर आइये गरमा-गरम मूंग की दाल के बड़े। मर्ज़ी आये जितने बड़े मंगवावो, जय बाबा री सा।
[रतनजी को रुपये थमाते हैं, रुपये लेकर रतनजी अपने लबों पर मुस्कान बिखेर देते हैं। अब ओमजी खुश होकर, उन्हें आपबीती सुनाने बैठ जाते हैं।]
ओमजी – लीजिये सुनिए, रतनजी। आपको मेरी आपबीती सुनाता हूं। पांच वर्ष पहले, मैं अपने परिवार के साथ रामदेवरा जाने के लिए पैदल रवाना हुआ। रास्ते में हम भूल गए, रामदेवरा पहुँचने का सही रास्ता कौनसा है ? फिर क्या ? हम सबने अपने दिल से बाबा को दण्डवत-प्रणाम करके सही रास्ता दिखलाने की विनती की, और हुआ चमत्कार।
रतनजी [आश्चर्य-चकित होकर, कहते हैं] – सच्च कह रहे हो, जनाब ?
ओमजी – सच्च कह रहा हूं, जनाब। आप विश्वास नहीं करेंगे ? हमारे बिल्कुल सामने खेत-खलिहानों से लीले घोड़े पर कई असवार..सफ़ेद वस्त्र पहने हुए आये मेरे सामने। उन सवारों का मुखिया था, एक दाढ़ी वाला ओजस्वी आदमी। वह मुखिया हमारे सामने आया, जो बहुत रौबदार लगता था। आकर हम लोगों से पूछा, के 'कहिये, क्या बात है ?
रतनजी – जनाब, क्या आप सत्य कह रहे हैं ?
ओमजी – सत्य कह रहा हूं, रतनजी। आप विश्वास नहीं करेंगे, बाबा की कृपा हुई हम सब पर ! उन्होंने रामदेवरा जाने का सही रास्ता दिखला दिया। अरे जनाब, क्या कहूं आपको ? वे थोड़ी देर में ही, सभी असवार हमारी आँखों के सामने लोप हो गए। [इतना कहकर, बाबा रामसा पीर को दण्डवत करते हैं] जनाब, चमत्कार हो गया..
रतनजी – सच्च, कहीं सवारों का मुखिया बाबा रामदेव ही थे ?

ओमजी – सच है, बाबा ने मेरा हेला [पुकार] सुन लिया। वे ख़ुद, घोड़े पर बैठकर पधारे..! अहोभाग्य है मेरे, उन्होंने मुझको साक्षात दर्शन दिए।
[गाड़ी का इंजन सीटी देता है, अब गाड़ी की रफ़्तार कम हो जाती है। लूणी स्टेशन आ गया है, अब चारों तरफ़ से वेंडरों की आवाज़े सुनायी देती है। पुड़ी-सब्जी बेचने वाले शर्माजी अपना ठेला आगे बढाते हुए, रोवणकाळी आवाज़ लगाते जा रहे हैं।]
शर्माजी – [ज़ोर से रोवणकाळी आवाज़ देते हुए] – अेंऽऽऽ अेंऽऽऽ पुड़ी सब्ज़ी ले लो। दस रुपये पुड़ी सब्ज़ी खायके..! दाणा-मेथी का आचार मुफ़्त में, साथ में। [पगड़ी वाले को देखकर] ओ पगड़ी वाले भाईजान, ले लो पुड़ी-सब्ज़ी।
[अब शर्माजी आवाज़ देते हुए, मोहनजी वाले केबीन के पास से गुज़रते हैं। तभी वाश बेसीन के नल से मुंह धोते हुए मोहनजी दिखायी दे जाते हैं, उन्हें देखते ही वे कहते हैं..ज़ोर से।]
शर्माजी – [मोहनजी को आवाज़ देते हुए, कहते हैं] – ओ एफ.सी.आई. के अफ़सरों। दाणा-मेथी की अचार साथ में, मुफ़्त में डालूंगा..आप ले लीजिये, दस रुपये पाव पुड़ी-सब्जी।
[हाथ-मुंह धोने के बाद, मोहनजी नेपकिन से हाथ-मुंह पौंछ डालते हैं। फिर वापस अपने केबीन में आकर, अपनी सीट पर बैठते हुए कहते हैं]
मोहनजी – [सीट पर बैठते हुए, कहते हैं] – यह पुड़ी वाला, शरमा नहीं होकर साला निशरमा बन गया है। साला कमबख़्त कढ़ी खायोड़ा पुड़ी-सब्जी पुड़ी-सब्जी बार-बार बोलता ही जा रहा है...

ओमजी – साहब, क्या हो गया ? बेचारा दो पैसे कमा रहा है, अपुन को क्या ?

मोहनजी – अरे ओमजी आप समझते नहीं, इतनी बार बक-बककर इसने मेरी भूख को बढ़ा डाली। अब अच्छा रहे आप में से कोई कढ़ी खायोड़ा, इस कमबख़्त कड़ी खायोड़ा शर्माजी से पुड़ी-सब्जी ख़रीदकर मुझे खिला दे।
ओमजी – अरे जनाब, पुड़ी-सब्जी तो आप रोज़ खाते ही हैं..मगर ये दाल के बड़े लूणी स्टेशन पर कभी-कभी दिखाई देते हैं। [रतनजी से कहते हैं] रतनजी बड़े के रुपये रशीद भाई को थमा दीजिये..वे चाय लाते, बड़े भी लेते आयेंगे। अब आपको जाने की ज़रूरत नहीं।
[रशीद भाई उनसे रुपये लेकर, प्लेटफोर्म पर उतरते हैं। मोहनजी खिड़की से मुंह बाहर झांकते हैं, और उनकी नज़र प्याऊ के पास खड़े सौभाग मलसा पर गिरती है। उनको देखते ही, उनका कलेज़ा हलक में आ जाता है। रामसा पीर को याद करते हुए, वे उनसे मन्नत माँगते हुए होठों में कहते हैं]
मोहनजी – [होठों में ही कहते हैं] – ओ रामसा पीर, आपने यह किया किया ? इस शैतान को यहाँ क्यों लाये ? आपसे अरदास है, आप इस शैतान को गाड़ी में चढ़ने मत देना, बाबजी। मैं आपको, सवा रुपये का प्रसाद ज़रूर चढाऊंगा।

[इस शैतान सौभाग मलसा के दीदार पाते ही, उन्हें बीती हुई घटनाएं याद आने लगी। उनको याद करते-करते वे ख़्यालों की दुनिया में खो जाते हैं। मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच पर रौशनी फैलती है। गौतम मुनि और महादेवजी के मंदिर का मंज़र सामने आता है। आज़ तो मंदिर की सजावट देखने लायक है। मंदिर के चौक में बड़ी जाजम बिछी हुई है, यहां मेणा समाज के मोटवीर लोगों की बैठक चल रही है। इस बैठक में ठौड़-ठौड़ से समाज के पंच और समाज के प्रतिनिधि इकट्ठे हुए हैं। मंदिर के बाहर, एक विशाल बरगद का पेड़ है। पूजा करने आ रही मेणा समाज की औरतें इस बरगद के तने पर धागा बांधती जा रही है। आगे चौगान में अस्थायी दुकानें लगी हुई है, जहां घर-बिक्री का सामन बेचा जा रहा है। दुकानों के पास ही एक पुलिस चौकी बनी हुई ही। जिसमें सभी हवलदार सिविल ड्रेस में काम कर रहे हैं। कई जवान छोरे और छोरियों के रिश्ते मिलाने हेतु. उनके माता-पिता आपस में बात कर रहे हैं। कई युवक और युवतियां कहीं एकांत पाकर, एक-दूसरे के विचार जानने का प्रयास कर रहे हैं। पुलिस चौकी के आगे एक मेडिकल बूथ बनाया गया है, जहां लोग इलाज़ के लिये कतार बनाकर खड़े हैं। अचानक मेणा समाज के कार्यकर्ता ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए, मंदिर की सीढ़ियां चढ़ते दिखाई देते हैं। वे सीढ़ियां चढ़कर सीधे चौक में आते हैं, जहां समाज के पंचों की बैठक चल रही है। अब वे उन पंचों को, ख़ास ख़बर देते हैं।]

एक कार्यकर्ता – [हड़बड़ाता हुआ ज़ोर से कहता है] – पंचों, गज़ब हो गया। बहुत ज़्यादा सावधानी बरतने के बाद भी ये नकटे पुलिस वाले अपनी वर्दी पहनकर इस मेले में आ गए हैं। जनाब अब क्या करना है, जल्दी हुक्म दीजिये।

ख़ास पंच – अनाड़ीया लगा फ़ोन, अभी के अभी इस होम मिनिस्टर को। इतना कहने के बाद भी, इन्होंने क्यों भेजे वर्दी पहने पुलिस वालों को ? आख़िर, समाज के भी कुछ नियम होते हैं या नहीं ?

दूसरा पंच – पंचों के सरदार। मुझे तो सरपंच साहब ने कहा था, के 'पुलिस वाले सादी वर्दी में ही इस मेले में घुमेंगे।' मगर यहाँ तो इन्होंने, अपना वादा तोड़ डाला..? अरे राम राम इनका दुस्साहस तो देखिये, इन लोगों ने वर्दी पहने पुलिस कर्मियों को मेले में भेजकर हमारे मेणा युवाओं को भड़काया है।

तीसरा पंच – [जोश में आकर कहता है] – अरे जनाब, यह कोई सरकारी मेला है ? यह मेणा समाज का मेला है, इसमें लोगों की हिफ़ाज़त का काम हमारा है..फिर इन पुलिसियों का यहाँ क्या काम ? [समाज के बैठे मोटवीर लोगों को, संबोधित करते हुए] भाइयों, क्या आज़ इस समाज में इतना दम नहीं रहा क्या, हम अपने लोगों की हिफ़ाज़त ख़ुद न कर सकें ?

दूसरा पंच – [सबको संबोधित करता हुआ, कहता है] – भाइयों, कहिये यह सरकार आपसे क्या मांग रही है ? क्यों इस समाज के क़ायदों की परवाह न करके, मेले की व्यवस्था में खलल डाला ?

ख़ास पंच – [अनाड़िये को गुस्से में, कहता है] – अनाड़िये। अब तू फ़ोन बाद में लगाना, पहले जा मंदिर की साळ में। वहां बैठे हैं लठैतों को कह, "दो-चार घुम रहे पुलिस वालों को पकड़कर, जन्तराये..फिर उन नामाकूलों को बांधकर लाये, हमारे सामने।" बड़े आये लाड साहब, यहां मेले में खलल डालने वाले।

[अनाड़िया और उसके साथी झट रवाना होते है, मंच पर अंधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, वापस मंच पर रौशनी होती है। बरगद के पास एक खोखे [लकड़ी की बनी छोटी दुकान] की आड़ में सौभाग मलसा अपने तस्कर साथियों के साथ खड़े हैं। अचानक उनके मोबाइल पर घंटी आती है। जेब से मोबाइल निकालकर, ओन करते हैं। फिर वे उसे अपने कान के पास ले जाकर, बोलते हैं]

सौभाग मलसा – [कान के पास मोबाइल ले जाकर, कहते हैं] – हेलो कौन सरदार बोल रहे हैं, जनाब ?

मोबाइल में कमलकी की आवाज़ आती है – हुज़ूर, मैं सरदार नहीं। सरदार तो हुज़ूर आप हैं। मैं तो आपकी सेवक कमलकी हूं।

सौभाग मलसा – [मुंह बिगाड़कर, कहते हैं] – अरे राण्ड तू तो साली हर्राफ़, कमलकी सांसण निकली। बोल अब तूने फ़ोन क्यों किया, क्या काम है मुझसे ?

कमलकी – [फ़ोन पर बोलती है] – जी हां, मैं कमलकी ही बोल रही हूं। फ़रमाइए हुज़ूर, कैसे याद किया इस बंदी को ?

सौभाग मलसा – [फ़ोन में कहते हैं] – मैंने क्या कहा, तूझे ? तू भूल गयी, क्या ? अभी-तक वहीं बैठी है, क्या ? गयी नहीं ? या फिर तू गांजा चढ़ाकर, सो गयी ?

कमलकी – [फ़ोन पर कहती है] – नहीं जनाब, अभी-तक चढ़ाया नहीं है, गांजा। अब आप हुक्म देते हैं तो, मैं गांजा चढ़ाकर सो जाऊं ? आख़िर आपका हर हुक्म, मेरे सर-आँखों पर।

सौभाग मलसा – [फ़ोन में कहते हैं] – गतगेली मैं तो, मोहन लाल की बात कह रहा था। अब सुन, तू फ़ोन करने का कह रही थी ? फ़ोन किया, या नहीं ? मैं यह सोच रहा था, अब-तक तो तू तेरे ज़ाल में इस मोहन लाल को फंसाकर लेकर आ गयी होगी..भूतिया नाडी।

कमलकी – साहब, आपने जो मोबाइल नंबर मुझे दिए उस पर कई बार फ़ोन लगा चुकी हूं मैं। मगर, घंटी जाती रही और फ़ोन किसी ने नहीं उठाया...हुकूम, अब मैं क्या करूँ ?

सौभाग मलसा – [गुस्से में कहते हैं] – काली राण्ड। [गुस्से में कहते हैं] काम करना चाहती नहीं, अब मेरा नुक्सान हो गया तेरे कारण। फिर यह बता, यह मोहनिया कैसे कह रहा था, के "तेरा फ़ोन आया था।" अगर तूने फ़ोन नहीं किया, तब बता, आख़िर फ़ोन किया किसने ? गेलसफ़ी झालर। फ़ोन नहीं लगा, तब एक बार वापस फ़ोन करती मुझे ?

कमलकी – हुज़ूर, कई बार फ़ोन लगाया आपको। मगर हर बार आपका फ़ोन अंगेज़ आता रहा।

सौभाग मलसा - यह इतना महँगा मोबाइल, किस लिए दिया तूझे ? तेरे भरोसे मैं इस मोहनिये को छः हज़ार रुपये देकर रुख़्सत दी थी, अब मुझे ख़ुद को जाना होगा, भूतिया नाडी।

[सौभाग मलसा मोबाइल का स्विच बंद करते हैं, कमलकी से बात करने के बाद उनके दिल में मचती है, उतावली। के, कितनी जल्दी वे पहुँच जाए, भूतिया नाडी। अब इसके बाद वे अपने साथियों से कहते हैं]

सौभाग मलसा – [अपने साथियों से, कहते हैं] – सुनो रे, मैं जा रहा हूं भूतिया नाडी। कोई ज़रूरी काम मुझे याद आ गया है।

[सौभाग मलसा के दिल में मची हुई है, उतावली। वे अपने दिल में ही निर्णय ले बैठते हैं, के 'वहां जाते ही उस मोहनिये का गिरेबान पकड़कर, दिए हुए रुपयों को वसूल करूंगा और साथ-साथ गांजा के व्यापार के काग़ज़ात हासिल करके उसकी अक्ल ठिकाने ला दूंगा।' अब वे किसी साथी की बात को सुनते नहीं, कौन क्या बोल रहा है ? वे शीघ्र मोटर साइकल पर बैठकर, चाबी घुमाते हैं। फिर गाड़ी को किक मारकर, उसे स्टार्ट करते हैं। फिर फरणाटे से उसे चलाकर ले जाते हैं। पीछे से उनके साथी, आवाज़ देते रह जाते है। अब पीछे गाड़ी से उड़ रहे धूल के गुब्बार को, दिखते रह जाते हैं। उनके जाने के बाद उनका एक साथी दूसरे साथियों से कहता है]

एक साथी – अरे जनाब, मैं बोस को बता रहा था...के, गांजे के माल को यहाँ से निकालने का मैंने तगड़ा प्लान बना रखा है।

दूसरा साथी – लपकू यार कुछ तो बोल, चुप क्यों हो गया है ? ऐसा क्या प्लान बना डाला तूने ? और तूझे, बनाने की ज़रूरत कहां आन पड़ी ? प्लान बनाने काम है, बोस का। तू क्यों बना बीच में, मैं लाडे की भुआ ?

लपकू – बात यह है, भाई करम चन्द। के आज़ इस मेले में, कई सी.आई.डी. वाले घुम रहे हैं। इस कारण माल ठिकाना पहुंचाना कोई सरल काम नहीं रे, भाई। इस कारण अपने दो-तीन साथियों को पुलिस की वर्दी पहनाकर, मेले में खड़ा किया है मैंने।

करम चन्द – फिर, होगा क्या ?

लपकू – यह होगा, के "ये गेलसफे मेणा नक़ली पुलिस वालों को असली पुलिस वाले समझकर, उन पर करेंगे हमला। उस वक़्त अपुन, गांजे के माल को ठिकाने पहुंचा देंगे। बोल करम चन्द, कैसा बनाया प्लान ?

करम चन्द – अरे भाई लापकू, यह कोई प्लान है ? नक़ली पुलिस वालों के रोल में, अपुन के साथी ठोक खा जायेंगे ना ? बोस होते तो, जिस किसी को खाना होता तो उसे खिला-पिलाकर अपने साथियों का छुटकारा दिला देते। मगर, अब तो...

[यह सुनकर, खीजा हुआ लपकू बीच में बोलता है]

लपकू – [खीजा हुआ, कहता है] – क्यों खायेंगे रे, मार ? जब प्लान मैं बनाता हूं तो ऐसा तगड़ा बनाता हूं, सांप भी मर जाए और लाठी भी नहीं टूटे। अब तू यह बता, के यह रुपला और खीमला कब काम आयेंगे ? बस ये दोनों आकर, अपुन के साथियों को ले जाकर छुपा देंगे या फिर उनके कपड़े चेंज करवाकर बचा लेंगे उनको।

करम चन्द – [लपकू को शाबासी देता हुआ, कहता हैं] – शाबास। अभी अपने बोस होते तो, तूझे इस काम को अंजाम तक पहुंचाने की.. ज़रूर शाबासी देते। अरे शाबासी क्या, इनाम भी देते। [करम चन्द की बात सुनकर, सभी हंस पड़े। ये सारे तस्कर सौभाग मलसा की आदतें जानते हैं, के जनाबे आली इनाम तो बाद में देते हैं..मगर अगले के खोपड़े पर पहले चार ठोल मार दिया करते हैं। मंच पर अंधेरा छा जाता है, और थोड़ी देर बाद मंच पर वापस रौशनी फ़ैल जाती है। भूतिया नाडी का मंज़र सामने आता है, नाडी पानी से पूरी भरी हुई है। नाडी की पाळ पर एक चेतावनी का बोर्ड लगा दिखायी है। जिस पर चेतावनी लिखी हुई है, **वह यह है "यह भूतों की नाडी है, कोई आदम जात नाडी के पास नहीं आयें। अगर ग़लती से यहाँ आ गया और कालिया भूत की चपेट में वह आ जाता है, तब वह अपनी जान व माल के लिए ख़ुद जिम्मेदार होगा।"** नाडी से कोई बीस क़दम दूर, पुराने महल के खण्डहर दिखाई देते हैं। इस महल में एक पुराना कुआ नज़र आता है। इस कुए के अन्दर उतरने के लिए, एक लोहे की सीढ़ी लगी हुई है। अब दो आदमी इस सीढ़ी पर चढ़कर कुए की जगत पर आते हैं, दोनों आदमी अपने कंधो पर कपड़े की गाँठ ऊंचाये हुए हैं। अब ये दोनों महल के एक बड़े कमरे में दाख़िल होते हैं। अब वे अलमारी खोलकर मेक-अप का सामान निकालते हैं, इन दोनों में एक आदमी सत्ताईस वर्ष का रौबदार नौजवान है। इसको दाढ़ी [रीश] रखने का शौक नहीं है, चेहरा क्लीन सेव रखने का ज़रूर इसे शौक है। इसके रौबदार चेहरे को देखने से प्रतीत होता है, यह किसी कुलीन राज़वंश का युवक हो ? **दूसरा आदमी कम उम्र का ही लगता है, यह अठारह साळ का ख़ूबसूरत गोर वर्ण का युवक है। अभी-तक इसके चेहरे पर कहीं भी मर्दाना दाढ़ी-मूंछ आने के सकेंत नहीं है। यानि, जवानी की मसें फूटी नहीं है। इसके रुखसार चिकने और कश्मीर के सेब की तरह, लाल सुर्ख है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं, अगर इसे कोई जनाना वस्त्र पहना दे, तो यह ख़ूबसूरत हूर की परी की तरह दिखाई देने लगता है।** उस वक़्त यह किसी हालत में मर्द दिखायी नहीं देता, अगर कोई मर्द इसे देख ले, तब वह इस पर मोहित हुए बिना नहीं रहता। अब इस वक़्त ये दोनों आपस में वार्तालाप करते दिखाई दे रहे हैं।]

रौबदार युवक – [मुस्कराकर कहता है] – प्यारे मेरी जान, पहन ले यार अब घाघरा-ओढ़ना। और फिर बन जा तू, ख़ूबसूरत छोरी। [प्यारे का गाल खींचते हुए, कहता है] यार, अब आ गया है वक़्त, तेरे रोल अदा करने का।

प्यारे – [मुस्कराता हुआ, ठुमका लगाता है] – मगर साहब, मैं गुलाबो बी जैसी ख़ूबसूरत नहीं हूं। क्या कुवंर गुलाब सिंहजीसा, मैंने सही बात कही या नहीं ?

गुलाब सिंह – धत साला। गधा तू तो कैंची की तरह, ज़बान चला रहा है ? अब काम की बात कर, तेरा आशिक मोहन लाल आ रहा है भूतिया नाडी। अब यार, तेरी क्या तारीफ़ करूँ ? किस तरह तूने उस मोहन लाल को, मीठी-मीठी बातों का ज़ाल लगाकर उसे फंसा डाला ? वाह यार, क्या अदा है तेरी ? कायल हो गया, मैं तो।

[घाघरा, चोली और ओढ़ना आदि जनाना वस्त्र गाँठ से निकालकर पहनता है, फिर कहता है]
प्यारे – [जनाना वस्त्र पहनाकर, कहता हैं] – साहब, ज़रा सुनिए। आपकी मेहरबानी हुई, ना तो आपके नंबर लाये बिना मैं मोहनजी को कैसे पटाता ? मगर साहब, आप इनको बीच में फंसाकर हमारी मेरी रिश्तेदारी में झगड़ा मत करवाइये। फिर मुझे...
गुलाब सिंह – ए मेरे बहादुर सिपाही। तू यों कैसे बोल रहा है ? तूझे याद नहीं, प्रशिक्षण के वक़्त तूने क्या ली थी.. कसम ? भूल गया ? वतन के लिये अपनी क़ुरबानी देने, हर सिपाही को आगे रहना है। यह तो ख़ाली तेरी रिश्तेदारी है। मगर इसके साथ तू, अपनी रिश्तेदारी निभा सकता है।
प्यारे – कैसे निभाऊं, रिश्तेदारी ? जनाब, आप मुझे फंसा रहे हैं झोड़ में ?
गुलाब सिंह – गेलसफ़ा तेरा यह धर्म नहीं है, के तू तेरी मासी की बेटी बहन के पति के चरित्र की ख़ोज-बीन करे ?

प्यारे – क्या खोज करूँ, साहब ?

गुलाब सिंह - वे एक नंबर के रुलियार हैं। रुलियारों की तरह, सुन्दर औरतों के पीछे लट्टू बने चक्कर काट रहे हैं ? तूझे फ़िक्र नहीं, वे अपनी जमायी हुई गृहस्थी में आग लगाते जा रहे हैं ?
प्यारे – क्या कह रहे हैं, जनाब ? मेरे जीजाजी देवता समान है, इस दुनिया में दिया लेकर ढूँढ़ने निकलो..मगर, उन जैसा देवता समान आदमी आपको कहीं नहीं मिलेगा। ऐसे पत्नी-परायण आदमी के चरित्र पर आरोप लगाकर, साहब आप अच्छा काम नहीं कर रहे हैं ? कहिये, आपके दिल में ऐसी क्या बात है..जिसके कारण, आप उन्हें रुलियार कह रहे हैं ?
गुलाब सिंह – [गुस्से में कहता है] – नहीं तो उसे क्या कहूं, प्यारे ? वह आदमी, क्यों जुलिट के ऊपर डोरे डालता जा रहा है ?
प्यारे – [सर पर विग रखते हुए, कहता है] – यह हमारी जुलिट है, कौन ?
गुलाब सिंह – [गुस्से में कहता है] – हमारी कैसे कह रहा है, कुतिया के ताऊ ? यह जुलिट, केवल मेरी ही है..और किसी की नहीं, यह मेरे सपनों की रानी है समझ गया गेलसफ़ा ? [ग़मागीन होकर कहता है] इसको मैंने, पांच साल पहले खो दी। **इस ख़िलक़त में चल रही पैसे और झूठे सम्मान की आंधी ने, [रोनी आवाज़ में] मेरे सपने तोड़ डाले..**
प्यारे – सपने तो टूटने के लिए ही...
गुलाब सिंह – [गुस्से में कहते हैं] – नालायक, मेरे सपने कोई कांच का दर्पण नहीं है..जिसे कोई आकर तोड़ जाए। मेरी बात समझ, इस जुलिट को बहूरानी बनाना, मेरे पिताजी को मंजूर नहीं था..इसलिए उन्होंने साफ़ इनकार कर डाला।
प्यारे – इसमें नयी बात, क्या है ? आप हुकूम भैंसवाड़ा जैसे बड़े ठिकाने के कुवंर साहब हो, और वह रही होगी ओछे ख़ानदान मसीहा जाति की। फिर आप दोनों का मेल, आपस में कैसे बैठता ?

गुलाब सिंह – अरे प्यारे तू तो रहा, एक नंबर का गेलसफ़ा ? ले सुन, इस लड़की का नाम ख़ाली जुलिट है। यह लड़की असावड़ी ठाकुर साहब की इकलौती बेटी है, अब तूझे कुछ समझ में आया या नहीं ?

प्यारे – मुझे तो अब भी, दाल में काला नज़र आ रहा है। यह आपकी बात, मेरे समझ के बाहर है। उसका नाम आख़िर, जुलिट कैसे हो सकता है ? क्या आज़कल रावले में अपनी बाईसा का नाम, मसीहा मज़हब के नाम रखने लग गए ?

गुलाब सिंह – [अपने लबों पर, मुस्कान बिखेरता हुआ कहता है] – अब मुझे पूरे रहस्य पर पर्दा, हटाना होगा। ले सुन, यह पुराने ज़माने के प्यार की कहानी है। इस कहानी के नायक रहे हैं, असावड़ी ठाकुर साहब। वे अपनी जवानी में करते थे प्यार, किसी गोरी मेम से। मगर यह जात-पांत की पंचायत बीच में आ गयी, बेचारे उससे शादी नहीं कर पाए।

प्यारे – न्यात वाले न्यात की भलाई के बारे में ही सोचा करते हैं, जनाब वे खलनायक नहीं है।

गुलाब सिंह – दो प्रेमियों को मिलने नहीं देना, यह क्या है ? खलनायकी के सिवाय और क्या है ?

प्यारे - कई दफे चिकित्सक को रोगी की भलाई के लिए, उसे कुनैन जैसी कड़वी दवाई भी देनी पड़ती है। ताकि उसका रोग दूर हो जाय, इसलिए जनाब आप न्यात को दोष मत दें।

गुलाब सिंह – अब तू कहानी सुन, बेकार की मगजमारी कर मत। शादी न होने पर, दोनों को न्यात की इज़्ज़त बनायी रखने के लिए अपने प्यार की कुरबानी देनी पड़ी। मगर दिल में बसी यादें, ठाकुर साहब भूल नहीं सके। वक़्त बीतता गया, इनकी शादी भी हो गयी। और पहली औलाद एक लड़की हुई, एक बात तूझे कहना भूल गया...

प्यारे – कोई बात नहीं, जनाब। अब, कह दीजिये आप।

गुलाब सिंह – मैं यह कह रहा था, उस गोरी मेम का नाम जुलिट था। उसकी अमिट याद बनाने के लिए उन्होंने उस नवजात छोरी का नाम जुलिट रख दिया। अब तूझे सारा मामला, समझ में आ गया ना ?

प्यारे – मगर यह समझ में नहीं आ रहा है, आपका कांटा इस जुलिट से कैसे भिड़ा ? इसका सविस्तार वर्णन कर लीजिये, जनाब।

गुलाब सिंह – अब यहाँ ही बैठ जाऊं, तेरे पास..रामायण बांचने ? इतना समझ ले यार, कोलेज में साथ पढ़े और हो गया प्यार..और, क्या ?

प्यारे – जनाब, मुझे यह बात समझ में नहीं आ रही है..के, जुलिट इतनी ख़ूबसूरत व गुणवान है फिर आपके दाता उसको बहूरानी बनाना क्यों नहीं चाहते थे ?

गुलाब सिंह – रजवाड़ों के वक़्त असावड़ी ठिकाना, भैंसवाड़ा ठिकाना से छोटा माना जाता था। ये सभी बातें, पैसा और रसूख़ात की बातें है। दरबार से मिले ओहदे, को मंद्दे नज़र रखकर शादी के रिश्ते तय होते थे, और अब भी यही पुरानी परिपाटी चल रही है। जबकि लोकतंत्र आ चुका है।

इस तरह हमारा रिश्ता तय न होने से, मैं दाता से नाराज़ होकर चला गया।
प्यारे – फिर आपने सी.आई.डी. इंसपेक्टर की नौकरी ज्वाइन कर ली, इस तरह आपका और मेरा मिलना हुआ। अब मुझे सारी बात समझ में आ गयी, और यह भी जान गया के आप देश सेवा के लिए नौकरी कर रहे है। आपको पैसे की कोई कमी नहीं, केवल आप अपना वक़्त देश सेवा के लिए दे रहे हैं। शायद, आपके ज़ख्म पर महरम लग सके।
गुलाब सिंह – ले पहले सुन, मेरी बात। पीछे से जीसा बीमार पड़े, और उनको जोधपुर के एम.डी.एम. अस्पताल भर्ती करवाया गया। उस दौरान इस जुलिट की ड्यूटी वहीँ लगी हुई थी, जहां जीसा भर्ती थे। वहां पर इस जुलिट ने निस्वार्थ भाव से इनकी सेवा की, तब इसके गुण और मृदु स्वाभाव देखकर इनका हृदय परिवर्तन हो गया। मगर..
प्यारे – आगे क्या ? अगर-मगर कहकर, आप क्यों बातों की गाड़ी को रोक रहे हैं ? [मुंह का मेक-अप करता हुआ कहता है] अच्छी तरह शान्ति से बैठकर, अपनी बात को रखिये ना ?
गुलाब सिंह – बात यह है, बाद में इसने अपना तबादला 'मूविंग-स्टाफ' में करवाकर, ठौड़-ठौड़ लग रहे मेडिकल शिविरों में अपनी ड्यूटी देने लगी। इस कारण इससे, मिलना हो गया कठिन। अब यह रोज़ हमें सफ़र करती हुई दिखाई देती है, मगर मैं अब इससे कैसे मिलूं ?
प्यारे – मिलते क्यों नहीं, आपको किसने रोका है ? अब तो आपको फायदा ही उठाना है, जाइये..जाइये मिलकर आ जाइये..और, शादी की तारीख़ भी तय कर लीजिये।
गुलाब सिंह – प्यारे तू ख़ुद देख ले, इस हिज़ड़े के वेश में जाकर कैसे करूँ उससे बात ? रामसा पीर ने मिलाया, मगर मिलाकर भी उन्होंने ऐसे मिलाया..के, मैं उससे चाहकर भी नहीं मिल सकता। अब तू बोल, प्यारे। इस किन्नर के वेश में, मैं कैसे अपनी व्यथा उसे सुनाऊं ?
प्यारे – [हंसता हुआ कहता है] – सुनाइये, जनाब। आपको, किसने मना किया है ? किन्नर बन गए तो क्या हो गया, क्या किन्नर कोई इंसान नहीं है..आपकी नज़रों में ? अरे जनाब, बलैया लेते हुए सुनाइये, या नाच-गाकर..क्या फ़र्क पड़ता है, अब तो आप आदी हो गए हैं...
गुलाब सिंह – [बनावटी गुस्सा दिखाता हुआ, कहता है] – खोजबलिया। अब तू इस प्यारी के वेश में, मिलकर आ जा तेरे मां-बाप से ? फिर आकर कहना मुझे, के आप भी पधार जाओ इस वेश में...जुलिट के पास।
प्यारे – अब आप आगे कहिये, जनाब।
गुलाब सिंह - अब सुन, सफ़र करते वक़्त इस मोहनिये को देख़ता हूं मैं..देखकर, मेरा दिल जल जाता है। यह खोजबलिया, इस पर डोरे डालता ही दिखायी देता है। यह बेचारी है, भोली। यह क्या जाने, इसके अन्दर का कपट ?
प्यारे – [माथे पर बिंदी लगाता हुआ कहता है] – देखिये, आप मेरे जीजोसा को मोहनिया न कहें...वे मेरे आदरणीय जीजोसा है। चलिए, कहिये..फिर, क्या ? कोई सबूत आपके हाथ लगा, मेरे जीजाजी के ख़िलाफ़ ? के, जीजाजी रुलियार है..?

गुलाब सिंह – बताता हूं, यार। पहले, तू मेरी बात सुन। देख इधर, जोधपुर डिवीज़न में ठौड़-ठौड़ जन-सेवा हेतु मेडिकल के शिविर लगते रहते हैं। कभी पल्स पोलियो के, तो कभी क्षय निवारण। इस तरह तरह-तरह के मेडिकल शिविरों में ड्यूटी देती हुई जुलिट, देश की सेवा करती आ रही है।
प्यारे – हुज़ूर, फिर हम भी इससे दो क़दम आगे चलकर देश की सेवा करते आ रहे हैं।
गुलाब सिंह – ठीक कहा, प्यारे। और इधर अपुन ने भी वतन के लिए, लोगों की जान-माल की रक्षा करते हुए...इस सौभाग्या तस्कर का, प्रकरण हाथ में लिया है। यह सौभाग्या है, गांजे का बड़ा तस्कर।
प्यारे – मैं इसे जानता हूं, हुज़ूर। यह आदमी, मेरे मासोजी के गाँव का ही है। जब से यह पाकिस्तान जाने वाली थार-एक्सप्रेस चालू हुई है, तब से इसका धंधा पाकिस्तान के अन्दर तक फ़ैल गया है। मैं यह भी जान गया हूं, इस प्रकरण को हल करते-करते आपको आपकी देवी जुलिट के दर्शन हो गए हैं। [तैयार होकर, खड़ा हो जाता है अड़ीजंट।]
गुलाब सिंह – [प्यारे को देख़ता हुआ, कहता है] – सच्च कह रहा हूं, यार तू इन जनाने वस्त्रों में जुलिट का दूसरा रूप ही लगता है।
[जोश में आकर, गुलाब सिंह प्यारे को अपने बाहुपोश में झकड़ लेता है। वह उस जाल से छूटने की कोशिश करता है, और इस छूटने की कोशिश में उसके रुखसार लाल-सुर्ख हो जाते हैं। आख़िर वह पूरी ताकत लगाकर, उसके बाहुपोश से छूट जाता है। इस तरह लज्जा के मारे उसकी आंखें नीचे झुक जाती है। अब यह प्यारे से ख़ूबसूरत प्यारी बन चुका है। अब यह प्यारी अपनी मादक अदाएं दिखाती हुई, जाकर कमरे की खिड़की खोलती है। फिर, खिड़की से बाहर झांकती है। वह, क्या देखती है ? आभा में कम्पी चढ़ी हुई है, मगर थोड़ी देर में अब वायु-वेग कम हो गया है। वेग कम होते ही, धूल धीरे-धीरे ज़मीन पर झरने लगी है। उधर मोहनजी पैरों को घसीटते-घसीटते धीरे-धीरे, भूतिया नाडी के नज़दीक आते जा रहे हैं। इस भूतिया नाडी से दो या तीन फलांग दूर, सौभाग मलसा मोटर साइकल दौड़ाते आ रहे हैं। और उनके पीछे धूल भरी आंधी बनती जा रही है, उस धूल-भरी आंधी के पीछे क्या है ? कुछ नज़र नहीं आ रहा है। अब प्यारी को झांकते देखकर, गुलाब सिंह भी पीछे रहने वाला नहीं। वह भी उठकर, खिड़की के पास चला आता है। वह भी बाहर झांकता हुआ बरबस कह उठता है]
गुलाब सिंह – [खिड़की के बाहर, झांकता हुआ कहता है] – यह **धूल भरी आंधी** दूर होकर अब, तस्करी के राज़ उजागर करेगी। और मेरी ज़िंदगी में जुलिट वापस आकर, दूर कर देगी मेरी तन्हाई। [रामसा पीर को दिल से, दण्डवत करके कहता है] ए मेरे रामा पीर। आपने आकर मेरे हृदय में, आशा की ज्योति जला डाली। वाह, कैसी है यह “धूल भरी आंधी” ?
[मंच पर, अंधेरा फ़ैल जाता है।]

खण्ड ११

कालियो भूत लेखक – दिनेश चन्द्र पुरोहित

[मंच रोशन होता है, भूतिया नाडी का मंज़र सामने आता है। आंधी चलने से चारों तरफ़ धूल छा जाती है, जिससे नभ पीला दिखायी दे रहा है। चारों ओर फ़ैली हुई धूल के अलावा, अब कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। भूतिया नाडी की ओर जा रहे मोहनजी, चलते ही जा रहे हैं..रुकने का नाम ही नहीं। उनको तो बस, कमलकी के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता..वे उससे मिलने की आशा लिए चलते ही जा रहे हैं। इस कमलकी के मोह-ज़ाल में फंसे मोहनजी भूतिया नाडी पर लगा चेतावनी का सूचना-पट्ट भी पढ़ नहीं पाते, और बड़बड़ाते हुए नाडी की तरफ़ क़दम बढाते जा रहे हैं।]

मोहनजी – [होंठों में ही कहते हैं] – कैसी मुश्किल में फंस गए, रामा पीर ? अब तो कढ़ी खायोड़ा, मुझे तो लग गयी भूख। भूख लगने का अगर मालुम होता, तो काहे बैग को मेडीकल वालों की जीप में छोड़ आता ? मेले में मिली यह जुलिट, उसको बैग सम्भलाकर मैने उससे कहा 'मैं तो भूतिया नाडी में स्नान करने जा रहा हूं, क्योंकि मुझे लग रही है अधिक गर्मी। वापस आकर, मैं मेडिकल बूथ का बचा हुआ काम संभाल लूंगा। मगर यह काम निपटते ही, मुझे दे देना उपस्थिति प्रमाण-पत्र.. वो भले दो दिन का।' बेचारी जुलिट भली थी..मान गयी, मेरी बात। ऊपर से आते समय बहुत प्रेम से उसने कहा 'जल्दी आना जी।' अब देखो उसका भलापन, आते वक़्त उसने ट्वाल और लक्स साबुन की टिकिया..थमा दी मुझे। फिर क्या ? मोहनजी तो ये गए, और ये आये।

[अचानक आस-पास की झाड़ियां हिलती है, उस निर्जन स्थान पर उन झाड़ियों के हिलने से मोहनजी एका-एक चमकते हैं। बेचारे भयभीत हो जाते हैं, डर के मारे उनके मुख से चीख निकल उठती है।]

मोहनजी – [चीखते हुए, कहते हैं] – बचा रे रामा पीर, ज़रख आ गया..मैं तो अकेला हूं, अब मैं क्या करूंगा मेरी ओ मेरी जामण ?

[अचानक झाड़ियों के पीछे से, एक ख़ूबसूरत युवती निकलकर बाहर आती है। यह युवती ग्रामीण वेश-भूषा में हैं, और वह करीब सत्रह-अठारह साल की लगती है। वह कमर लचकाती हुई, धीरे-धीरे

मोहनजी के नज़दीक आती दिखायी देती है। थोड़ी देर में अब, आंधी का ज़ोर ख़त्म हो गया है। जिससे नभ में चढ़ी हुई धूल, धरती पर चादर की तरह बिछने लगती है। मोहनजी का पहना सफ़ारी सूट, धूल से भर जाता है। मगर, रसिक मोहनजी को इसकी कहां परवाह ? वे बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे हैं, इन धूल भरे कपड़ो का। वे तो उस ख़ूबसूरत बला को पटाने के लिए, तैयार हो जाते हैं। झट ज़ेब से सौभाग मलसा का दिया हुआ इत्र निकालते हैं, और उसे अपने वस्त्रों पर छिड़ककर..उसे वापस, ज़ेब के हवाले करते हैं। उधर आसमान में बादलों की ओट से बाहर आये सूर्य देव, दर्शन दर्शन दे रहे हैं। धीरे-धीरे अस्ताचल में जाने के लिए, उनका तेज़ कम होता जा रहा है, और वे लाल होते जा रहे हैं। कुछ समय बाद, सिंझ्या आरती का वक़्त हो जाता है। सूर्यास्त हो जाने से, आसमान में लालिमा छा जाती है। इस लालिमा की फ़ैली रौशनी में, वह बला अपने कोमल पांवों को धीरे-धीरे आगे बढ़ाती जा रही है। जलती हुई मोमबत्ती हाथ में लिए, वह सुन्दरता की बहारे बिखेरती हुई उनके सामने आती है। मोमबत्ती की मंद-मंद रौशनी में हंस जैसे उसके धवल वस्त्र, कटि तक छाये घने काले केश और उसके चन्द्र-मुख पर लहराती हुई उसकी जुल्फें उसकी सुन्दरता पर चार चाँद लगाती जा रही है। अब आंधी का ज़ोर ख़त्म हो जाने से, सरयू पवन बहती जा रही है। यह पवन इस बला को छूकर, चारों तरफ़ मनभावनी सुगंध फैला देती है। इस तरह मोहनजी इस सुगंध की तरफ़, खींचे चले ज रहे हैं। वे ऐसे वशीभूत हो रहे हैं, इस तरह उनके क़दम स्वत: उस सुन्दर बला की तरफ़ बढ़ जाते हैं। वह बला अपनी ओर मोहनजी को आते देखकर, मधुर सुर में गीत गाना शुरू कर देती है। गीत गा रही इस बला की सुन्दर केश राशि, काले बादलों की तरह उसके चंद्रमुख पर छाती जा रही है। हवा के वेग से उसके ये नागिन जैसे बाल कभी उसके चंद्रमुख को ढक देती है, तो कभी यह केश राशि दूर हटकर उसके चंद्रमुख का दीदार ऐसे होने दे रही है जैसे बादलों की ओट में खोया चाँद बादलों हटने से वह अपना सुन्दर मुख दिखला रहा हो ? ऐसी प्रकृति की मनोहर छटा देखते ही, मयूर अपने सुन्दर पंखों को फैलाकर नाचता जा रहा है। पपीहा पक्षी 'पिव पिव' का मधुर सुर निकालता हुआ, विरहणी को उनके प्रियतम की याद दिलाता जा रहा है। और साथ में उसके दिल की, विरहाग्नि को बढ़ाता जा रहा है। पूरी भूतिया नाडी के क्षेत्र में, मयूर और पपीहा के मधुर सुर गूंज़ रहे हैं]

मयूर – मै आवो मै आवो..! [ज़मीन पर पंख फैलाकर, वह नाचता जा रहा है]

पपीहा – पिव..आवो SS पिव आवो SS..!

[अब यह पपीहा एक डाल से उड़कर, दूसरी डाल पर जाता है। उस पपीहा के लगातार "पिव आवो, पिव आवो" के सुर निकाले जाने से वह बला अपने प्रियतम को भूल नहीं पा रही है, उस विहरिणी

की की दशा जल बिन मछली की तरह लग रही है। वह अपने दिल के अन्दर दहक रही विरहाग्नि को, कम करने के लिए मधुर सुर में गीत गाती हुई दिखायी दे रही है।]

वह बला – [बरगद की तरफ़ बढ़ती हुई, गीत गाती है] – आ जा..रेऽऽ आऽऽ जा। मेराऽऽ प्रेSSम दीवानाऽऽ.. आ जा रेऽऽऽ आऽऽ जा। दिल को जला मत, तू आ जा रेऽऽ आऽऽ जा..

[उसको बरगद की तरफ़ आते देखकर, मोहनजी अपने लबों पर मुस्कान बिखेर देते हैं। इस बला की ख़ूबसूरती को देखते हुए, उन्हें ऐसा लगता है, के 'वे अपना होश खोते जा रहे हैं।' **उसकी सुन्दरता में ऐसे खो जाते हैं, बस अब उनको हर तरफ़ वह ख़ूबसूरत बला ही दिखायी देती है।** वह बला बरगद के और नज़दीक आ रही है, और साथ में गाती जा रही है]

बला – [गाती हुई आगे बढ़ रही है] – करम के लेख ना मिटे रे, आ जा आ जा रे मेरे प्रेम दीवाने। आ जा रेऽऽ आ जा रेऽऽ..तुझको पुकारे मेरा प्यार..ओ दीवाने आ जा रे...

[मोहनजी आगे बढ़कर उस बला के कंधे पर हाथ रखने की कोशिश करते हैं, मगर जैसे ही वे उसके नज़दीक आकर उसके कंधे पर हाथ रखते हैं..मगर यह क्या ? वह बला हाथ नहीं आ पाती, वह तो बरगद की जटा पकड़कर, झूले खाती हुई आगे बढ़ जाती है। और बेचारे प्रेम-दीवाने मोहनजी, सूखे पत्ते की तरह आकर ज़मीन पर गिरते हैं। फिर, वे किसी तरह ज़मीन पर हाथ रखकर उठते हैं। अब वापस उस बला को पकड़ने का, एक और प्रयास करते हैं। मगर बदक़िस्मत से, वह उनके हाथ नहीं आती..वह झूले खाती हुई आगे बढ़ जाती है। फिर, यह क्या ? वह बला झूले खाती हुई, उस विरह गीत का अगला मुखड़ा गाती है।]

वह बला – [झूले खाती हुई, गा रही है] – जल जायेगा पंछी, तू नेड़ा मत आ रे। विरह की आग तूझे, भस्म कर देगी रे। आ जा रे आजा, मेरे प्रेम दीवाने..

[इस वीरान इलाके में इस बला के सुर, ऐसी तारवता लिए हुए हैं...जिसको इंसान क्या ? अन्य जीव-जंतु भी, उसके प्रभाव में आ रहे हैं। उधर इस बरगद की डाल पर, एक नाग रेंगता हुआ आगे बढ़ रहा है। जैसे ही वह सांप रेंगता हुआ पपीहा के काफ़ी नज़दीक पहुंचता है, और फिर अक्समात वह पपीहे पर छलांग लगा बैठता है..मगर, यह क्या ? पपीहा उड़ जाता है, और वह सांप धडाम से आकर उस बला के ऊपर गिरता है। डरकर वह चिल्लाती है, और डर के मारे वह बरगद की जटा को को छोड़ देती है। पकड़ छूटते ही वह बला आकर गिरती है मोहनजी के ऊपर, व भी उनके गले का हार बनकर। **मोहनजी के बदन पर लता की तरह लिपटी हुई यह बला, टकाटक मोहनजी को देखती है। थोड़ी देर बाद वह होश में आने का स्वांग करती है, फिर**

वह अपने-आपको पराये मर्द की गोद में पाकर शर्मसार हो जाती है। शर्म के मारे, उसके रुख़सार लाल-सुर्ख हो जाते हैं। वह झट अपनी ताकत लगाकर, मोहनजी के बाहुपोश से मुक्त हो जाती है। यह पपीहा इस कालंदर सांप का शिकार न बना, तब वह सांप धीमे-धीमे रेंगता हुआ बरगद के नीचे बने चूहे के बिल के पास कुंडली मारकर बैठ जाता है। अब जैसे ही चूहा, बिल से बाहर आता है..उसी वक़्त वहां शिकार के लिए तैयार बैठा यह कालंधर सांप, उसे पकड़कर निगल जाता है। आख़िर यह सांप पपीहा की जगह, उस चूहे को शिकार बना देता है। बस इसी तरह यह बला भी, मोहनजी को अपने मोह-ज़ाल में फंसाकर उन्हें अपना शिकार बनाने की योजना बना डालती है। मगर यह शिकार तो ख़ुद, उस बला का शिकार बनने को तैयार है। इस कारण उस बला के दूर हटते ही, वे मुस्कराकर उसे कह रहे हैं]

मोहनजी – [मुस्कराकर कह रहे हैं] – ए सुन्दरी, तू है कौन ?

वह बला – [शर्माती हुई कहती है] – साहब, मैं एक अबला नारी हूं। अपनी मां के भड़काने पर, मेरे घरधणी ने मुझे घर से बाहर निकाल दिया। मेरा ससुराल है, दो फलांग दूर..मीणों के झूपे में। [सर को रिदके से ढकती हुई] अब मैं बेचारी जगह-जगह भटक रही हूं, जंगल-जंगल। हाय राम, अब मैं क्या करूं ?

[मोहनजी नज़दीक आकर उसकी हिचकी पर अपनी उंगली रखते हैं, इधर बादलों की ओट से चन्द्रमा बाहर निकल आता है। उसकी किरणें उसके चंद्रमुख पर इस तरह गिरती है कि, उसका सुन्दर चेहरा और मदवाले उरोज मोहनजी को बावला कर देते हैं। अब वे इस नारी के और नज़दीक आकर, उसकी पेशानी चूम लेते हैं। उसकी पेशानी चूमकर, वे उसे कहते हैं]

मोहनजी – ए सुन्दरी। तेरे अन्दर मुझे, मेरी पत्नी लाडी बाई की सूरत दिखायी देती है। [बावले होकर कहते हैं] तू तो मेरी लाडी ही है, मेरी जान। ए मेरी लाडी, मेरी जीव की जड़ी। मेरे गीगले की मां, थोड़ा और पास जाओ। [और नज़दीक आकर अपने होंठ, उस बला के होंठों के पास ले जाने का प्रयास करते हैं]

[मोहनजी के होंठ नज़दीक आते ही, वह अपनी हथेली उनके होंठों पर रख देती है। फिर, वह बला कहती हैं]

वह बला – [उनके नज़दीक आते उनके होंठों पर, हथेली रखती हुई कहती है] – नहीं..नहीं। मेरे दीवाने, मैं लाडी नहीं हूं। मैं प्यारी हूं, यही मेरा नाम है। मुझे अच्छी तरह से जान लीजिये, पहचानिये मुझे...मैं कौन हूँ...? [होंठों में ही, कहती है] अरे जीजाजी। आपके दिमाग़ में सारे दिन,

मेरी बहन लाडी बेनसा छायी रहती है। आप जिस किसी ख़ूबसूरत नारी को देखते हैं, आपके लिए तो वही लाडी बाई बन जाती है ? है भगवान, आप इतना चाहते हैं मेरी बहन को ? क्या भाग्य पाए, मेरी बहन लाडी बेनसा ने ?

[मोहनजी के दिमाग़ में छायी हुई है, लाडी बाई। दिमाग़ में छायी हुई लाडी बाई, उनको असलियत देखने नहीं देती। वे लाडी बाई का जाप करते-करते भूल गए, अभी यहां वे किस मक़सद से आये हैं ? अब भूल गए वे, कर्नल रंजित के उपन्यास। और भूल गए, वे सारी जासूसी बातें। मोहनजी झट प्यारी को, अपने बाहुपोश में झकड़ लेते हैं। बाहुपोश में झकड़ते हुए, मोहनजी कहते हैं]

मोहनजी – [बाहुपोश में झकड़ते हुए, कहते हैं] – लाडी बाई मेरे जीव की जड़ी। मेरे ख़ानदान को चिराग़ देने वाली मेरे बेटे गीगले की मां, मैं आपका दास कढ़ी खायोड़ा मोहन लाल हूं..

[अब प्यारी, मोहनजी का मुंह देखती-देखती मुस्कराती जा रही है। फिर मोहनजी, पीछे रहने वाले कहाँ ? "नारी मुस्कराई, और पटी" बस, फिर क्या ? वे झट उस प्यारी को अपनी गोद में उठाकर बैठ जाते हैं, बरगद के चबूतरे के पर। फिर दबाते जाते हैं, प्यारी के कोमल पांव। पांव दबाते-दबाते, वे उससे कहते हैं]

मोहनजी – [पांव दबाते-दबाते कहते हैं] – लाडी बाई ये आपके पांव नहीं है, ये गुलाब के पुष्प की पंखुड़िया है। आप इनको ज़मीन पर मत रखना, ये मैले हो जायेंगे।

[आदतों से लाचार मोहनजी प्यारी के पांव दबाते-दबाते, अपने हाथ उसकी जांघो से ऊपर ले जाने की कोशिश करते हैं। तभी तड़ाक करता दामिनी की तरह, प्यारी का थप्पड़ उनके गालों पर रसीद हो जाता है। थप्पड़ लगाकर, प्यारी बोलती है आँखें तरेरकर।

प्यारी - [थप्पड़ लगाकर, कहती है] – दूर रखो, अपना वासता मुंह। बदबू आ रही है, आपके मुंह से। ऐसा लगता है, मेरे पास कोई हिड़किया कुत्ता [पागल-कुत्ता] आकर बैठ गया है ?

मोहनजी – [अपने गाल सहलाते हुए, कहते हैं] - लाडी बाई यों बेकार का गुस्सा मत कीजिये, मेरे मुंह से जो गंध आ रही है, वह बदबू नहीं है,,,.अरे लाडी बाई, यह तो ज़र्दे की सौरम है, राम कसम इसे बदबू कहकर आप देसी जर्दे को बेइज़्ज़त न करें। आपकी कसम, मैं सच्च कह रहा हूं, के...

प्यारी – [चिढ़ती हुई, कहती है] - यह कैसी सौरम, गीगले के बापू ? मुझे तो यह, कीचड़ से निकल रही दुर्गन्ध लगती है। अगर आप मेरे निकट आना चाहते हैं...

मोहनजी – [ख़ुश होकर, कहते हैं] – आपके पास आ जाऊं, क्या ?

प्यारी - [हाथ हिलाकर, मना करती है] – ना..ना..यह कैसी उतावली ? जाओ इसी वक़्त, और जाकर कूद पड़ो नाडी में। नहाने के बाद, नीम का दातुन लेकर अपने दांत साफ़ करना। समझे ?

मोहनजी – यहाँ कहाँ है, नीम का पेड़ ? [होंठों में ही] सारा मज़ा किरकिरा कर डाला, इस ख़ातून ने।

प्यारी – [झुंझलाती हुई, कहती है] – इतना भी न जानते ? यहाँ से पंद्रह क़दम आगे चलिएगा, आपको नीम का वृक्ष दिखाई दे जाएगा। उसकी डाल से दातुन तैयार कर लेना।

मोहनजी – [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – हुकूम, आप जैसा कहेंगी...वैसे ही मैं करूंगा। बस, एक बार कह दीजिये, आप इस कढ़ी खायोड़ा मोहन लाल की, जीव की जड़ी हैं।

प्यारी – [आँखें तरेरती हुई, कहती है] – क्या कहा ?

मोहनजी – [डरते हुए] – ना, ना...कुछ नहीं। बस, आप रुख़्सत दीजिये। अभी आपके हुक्म की तामिल करके जस्ट आ रहा है यह आपका गुलाम मोहन लाल।

[दो क़दम आगे चले ही थे, मोहनजी..और प्यारी को कुछ याद आ जाता है। वह उन्हें आवाज़ देकर, वापस अपने पास बुलाती है। फिर, उनसे कहती है]

प्यारी – [आवाज़ देती हुई कहती है] – ओ साहब, ज़रा रुकिए। यों कैसे जा रहे हैं, जनाब ? खोलिए, अपने वस्त्र।

मोहनजी – [ख़ुश होते हुए, कहते हैं] – क्या आप रज़ामंद हैं ? सच्च...? आ जाऊं, आपके पास ? ठीक है, अभी आपको दिखा देता हूं फिल्म..मोहनजी ख़ुश, और आप भी ख़ुश। फिर और क्या देखना, अपुन को ? मोहनजी ने ये उतारे वस्त्र, और बन जाते हैं दिगंबर..और क्या ? [अपने वस्त्र खोलने लगते हैं]

प्यारी – [होंठों पर मुस्कान बिखेरते हुई, कहती है] – अरे जनाब रुकिए, यहां नहीं। [दस कदम दूर इमली के पेड़ की तरफ़, उंगली का इशारा करती है] उस पेड़ के तले वस्त्र खोलकर, रख दीजिये। [ओढ़ने के पल्ले से नाक ढांपती हुई, कहती है] दूर हटो, मुझे आपके बदन से बदबू आ रही है। गीगले के बापू, जल्द नहाकर आ जाइये।

[मोहनजी जुलिट का दिया हुआ ट्वाल और लक्स साबुन की टिकिया लिए जाने की तैयारी करते हैं, तभी प्यारी की निग़ाह ट्वाल और लक्स टिकिया पर गिरती है, वह तत्काल उन्हें रोकती हुई कहती है]

प्यारी – यह ट्वाल और नहाने की टिकिया मुझे देकर जाइये, गीगले के बापू। [फिर ट्वाल और साबुन की टिकिया उनसे लेकर, उन्हें प्यार से टिल्ला देती हुई कहती है]

प्यारी – अब जाइये ना, मगर याद रखना..आपको अपने सारे वस्त्र, उस इमली के वृक्ष के नीचे ही रखने हैं। अब जाओ, जाओ..मेरा मुंह क्या देख रहे हो ? अब मैं अपना हाथ-मुंह लक्स टिकिया से मल-मलकर धोऊँगी, फिर इस ट्वाल से...[न जाने पर, वह प्यार से एक बार और टिल्ला देती है]

[मोहनजी जाते हुए दिखाई देते हैं, और सीधे पहुंच जाते हैं इमली के तले..वहां उस प्यारी की ख़ूबसूरती को दिल में संजोये, अपने पहने हुए कपड़े खोलते हुए नज़र आते हैं। मंच पर अब रौशनी मंद हो जाती है, जिसमें केवल परछाइयां उभरती नज़र आती है। सारे कपड़े खोलकर मोहनजी, उन कपड़ो को इमली के पेड़ के नीचे रख देते हैं। अब उनकी वस्त्र-हीन परछाई, फ़िल्मी-गीत गाती हुई नाडी की ओर बढ़ती दिखाई देती है।]

मोहनजी – [गीत गाते हुए जाते हैं] – "याद करेगी दुनिया, यह तेरा अफ़साना.." [अब दूसरा फ़िल्मी गीत गाना शुरू करते हैं] "हम दोनों, दो के बीच दुनिया छोड़ चले.."

[बेसुरा गीत गाते हुए मोहनजी, नाडी में कूद जाते हैं। फिर नंग-धड़ंग स्थिति में मछली की तरह नाडी में मस्ती से तैरते जा रहे हैं, और अपने मानस में उस प्यारी के सुन्दर बदन को छूने का अहसास करते जा रहे हैं। उसे याद करते-करते वे पुलकित हो रहे हैं, के 'नहाने के बाद उनको, उसके शरीर को छूने अवसर एक बार और मिलेगा ?' इस तरह कल्पना करते हुए, वे तैरते जा रहे हैं। उन्हें यह भी भान नहीं, के 'वह प्यारी चुप-चाप कब आकर, इमली के पेड़ के नीचे रखा मोहनजी का सफ़ारी सूट लेकर पहन चुकी है। अब वह अपने खोले गए जनाने कपड़े, ट्वाल और लक्स की टिकिया ओढ़ने की गांठ बनाकर उसमें में रख देती है। इस तरह मर्दाने कपड़े पहनकर, अब वह प्यारी से प्यारे लाल हवलदार बन गया है। इसके बाद बाद वह प्यारे लाल हवलदार गांठ को ऊंचाये, महल के खण्डहर की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा चुका है। मगर मोहनजी को कहां मालुम, इस प्यारे लाल की करतूत ? वे तो तन्मय होकर तैरते जा रहे हैं, और साथ में यह गीत 'याद करेगी दुनिया, यह तेरा अफ़साना..' बेसुरी आवाज़ में गाते जा रहे हैं। और साथ में वे प्यारी के बदन की सुगंध को अहसास करते हुए, वे उसे अपने बाहुपोश में लेने की तरकीब सोचते जा रहे हैं। इस कल्पना में रहते हुए, उनको यह भी भान नहीं होता के "संध्या ढल चुकी है, अब आसियत

का अंधेरा फैलता जा रहा है। और यह रात डरावनी रात में बदलती जा रही है। पेड़ो पर नीड़ डाले सारे परिंदे, अब अपने नीड़ में लौट चुके हैं। और अब निशाचरों की डरावनी आवाजें, भूतिया नाडी में गूज़ती जा रही है।" कभी-कभी इन वृक्षों की डालियों पर उल्टे लटके चमगादड़, शीआओsss की आवाज़ करते फरणाटें से उड़ जाते हैं...रात को, शिकार करने। अचानक मोहनजी को ऐसा लगता है, सामने की झाड़ियों के पीछे कोई जंगली जानवर चल रहा है ? उस जानवर के चलने की आवाज़ 'हड्डियों के चरमराने जैसी' सुनायी देती है, इस आवाज़ को सुनकर मोहनजी का दिल दहल जाते हैं। तभी एक बड़ी मछली तेज़ी से, उनकी रानों को छूती हुई निकल जाती है। इस मछली के गुज़रने से उन्हें, बिजली का झटका लगने का अहसास होता है। बेचारे मोहनजी घबरा जाते हैं, और उसी वक़्त वे नंग-धड़ंग स्थिति में बाहर निकल आते हैं। बाहर, मोहनजी क्या आये ? यहां भी..इस डरावनी आवाज़ को सुनकर, उनकी घबराहट बढ़ती जा रही है, कभी झाड़ियों के पीछे हड्डियों के चरमराने जैसी कड़क कड़क करती आवाजें सुनायी देती है, तो कभी जंगली भैंसों के रंभाने की आवाज़ नज़दीक आती हुई सुनायी देती है, उन्हें ऐसा लगता है कि, कोई भैंसों का झुण्ड नाडी में पानी पीने आ रहा है ? भैंसों के पीछे-पीछे सियारों के एक साथ कूकने की आवाज़ सुनायी देती है, तभी केसरी सिंह नाहर [बब्बर शेर] की दहाड़ सुनाई दे जाती है। इस दहाड़ को सुनकर, मोहनजी का पूरा शरीर जड़ी के बुख़ार की तरह कांपने लगता है। न जाने क्यों झाड़ियों के पीछे, तेंदुए की 'चिहुक चिहुक' करती आवाज़ आने लगती है ? ऐसा लगता है शिकार की टोह में, यह जंगली जानवर और नज़दीक आता जा रहा है। तभी चमगादड़ो का झुण्ड, पेड़ के झुरमुट से निकलकर एक साथ उड़ता है। जो मोहनजी के बालों को छूता हुआ, 'शीआओsss' की आवाज़ करता हुआ वहां से गुज़र जाता है। रामा पीर जाने यह वाकया अक्समात घटित होने के बाद, उनकी मानसिक स्थिति कैसी रही होगी ? आख़िर होश दुरस्त होने के बाद वे इमली के पेड़ के नीचे, अपने कपड़े ढूंढ़ने का निरर्थक प्रयास करते हैं। मगर, उन्हें कपड़े कहीं नज़र नहीं आते ? इतने में झाड़ियों के पीछे तेंदुए की चिहुक-चिहुक करती आवाज़, उनके कानों को और नज़दीक से सुनायी क्या देती है ? बेचारे मोहनजी के होश, फाख्ता हो जाते हैं। डरकर बेचारे पाळ पर कभी इधर दौड़ते हैं, तो कभी उधर। डरते-डरते मोहनजी को ऐसा लगता है, के 'वे बावले हो गए हैं...?' बस, फिर क्या ? भयभीत मोहनजी नंग-धड़ंग अवस्था में कभी इधर दौड़ते हैं, तो कभी उधर। अब वे डरे हुए, ज़ोर-ज़ोर से रामसा पीर को पुकारते-पुकारते..आसमान को, गूंजा देते हैं। तभी मंच पर, अंधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच पर रौशनी फैलती है। गौतमजी के मेले का मंज़र, सामने दिखायी देता है। मेले में, भगदड़ मची हुई दिखायी देती है। मेडिकल वालों का शिविर दिखाई देता है, जुलिट भगदड़ की आवाज़ सुनकर बाहर आती है। और देखना चाहती है..के, मामला क्या है ? वह देखती है, दो-चार पुलिस के हवलदार अपनी जान बचाते हुए, दौड़कर शिविर की तरफ़ आ रहे हैं। उनके पीछे-पीछे आठ-दस मेणा लाठी लिए हुए, उनको पीटने के लिए दौड़ते आ रहे हैं। इस शिविर में जनता की तरफ़ से, खीमला और रूपला नाम के दो स्वयंसेवक लगे हुए हैं। इस वक़्त

वे भी, इस भगदड़ को देख रहे हैं। इन पुलिस के हवलदारों के नज़दीक आते ही, वे इस जुलिट को शिविर में ज़बरदस्ती ले जाकर कुर्सी पर बैठा देते हैं..फिर, इलाज़ लेने आये सभी रोगियों को समझा-बुझाकर रुख़्सत देते हैं। फिर वे दोनों, वापस बाहर आ जाते हैं। बाहर आकर उन पुलिस के हवलदारों को शिविर के अन्दर आने देते हैं, फिर पीछे आ रहे लठैतों को वहीँ दरवाज़े के पास रोककर उन्हें समझा-बुझाकर कहते हैं]

खीमला – [लठैतों को समझाता हुआ, कहता है] – नौजवानों, ज़रा रुको। बताओ कहां से आ रहे हो, और कहां जा रहे हो ? कहीं, हमला तो नहीं हो गया...?

एक लठैत – खीमला भाई, बीच में आकर क्यों खड़े हो गए ? क्या, आपको ध्यान नहीं ? हमें सरदार के हुक्म से वर्दीधारी पुलिस वालों को जन्तराकर, ले जाना है पंचों के पास।

दूसरा लठैत – भाई खीमला, दूर हट जा। सुपर्द किये गए काम को, हमें करने दे।

रुपला – यहां क्या पड़ा है, मेरे भाई ? कुछ नहीं है, यहां। आपको वर्दीधारी पुलिस ही चाहिए, ना ? तो इसी वक़्त चले जाओ मेले की पुलिस चौकी। वहां आपको वर्दीधारी और बिना वर्दी, वाले सारे पुलिस वाले बैठे मिल जायेंगे। जिन वर्दीधारी पुलिस वालों को आप ढूंढ़ने आये हैं, वे भी वहीँ है..अभी-तक उन्होंने, कपड़े नहीं बदले होंगे ?

खीमला – फ़िक्र कीजिये मत, यहां आ गए तो हम दोनों यहीं बैठे हैं। उनको पकड़कर ला देंगे, आपके पास। आप सभी, हम दोनों पर भरोसा कीजिये।

[उन दोनों पर भरोसा करके, सभी लठैत पुलिस चौकी की तरफ़ दौड़ लगा बैठते हैं। ख़तरा टलने के बाद, दोनों ख़ुश होकर शिविर में दाख़िल होते हैं। अन्दर आकर वे शिविर में रखी डॉक्टरों और कम्पाउडरों की वर्दियां उठाकर, उन फर्जी पुलिस वालों को थमा देते हैं। यह ग़लत काम होते देखकर, जुलिट उठती है। और आगे बढ़कर, वह वापस उन वर्दियों को छीनने का प्रयास करती है। बनते काम में विघ्न पड़ते देख, वे दोनों इसे बर्दाश्त नहीं कर पाते। दोनों अपनी ज़ेब से रामपुरी चाकू निकालकर, उसे धमकाते हैं। रुपला अपना रामपुरी चाकू दिखाता हुआ, जुलिट को धमकाता हुआ कहता जा रहा है]

रुपला – [चाकू दिखाता हुआ, ज़ोर से कहता है] – चुप-चाप बैठ जा, जुलिट। नहीं बैठी तो यह चाकू, तेरे आर-पार। समझ गयी, या नहीं ?

[खीमला नज़दीक आता है। फिर वह धब्बीड़ करता, थप्पड़ जुलिट के गाल पर जमा देता है। फिर, वह उससे कहता है]

खीमला – [थप्पड़ रसीद करके, कहता है] – अब बीच में आयी, तो एक और ज़ोर से पड़ेगा धब्बीड़ करता थप्पड़। अब फटा-फट दे दे जीप की चाबी, नहीं तो फिर एक और...

[डरती-डरती जुलिट, जीप की चाबी खीमले को थमा देती है। फिर क्या ? इनके साथी थोड़ी देर में वर्दियां पहनकर बन जाते हैं, कोई डॉक्टर तो कोई कम्पाउंडर। उनके वर्दियां पहनने के बाद, लपकू आ जाता है वहां। तभी वह खीमला उस जुलिट को एक बार और, धमकाता हुआ उससे कहता है]

खीमला – [धमकाता हुआ, कहता है] – अब जा, अपना बैग लेकर आ। फिर चुप-चाप बैग लेकर बैठ जा, जीप की अगली सीट पर।

[जुलिट बैग लाकर, जीप की अगली सीट पर बैठ जाती है। इसके बाद खीमला, पास आते लपकू से कहता है]

खीमला - ए रे, लपकू। तेरा प्लान तो बड़ा तगड़ा बना रे, जैसे सुअर चर जाते हैं खेत को..और पीछे से, पाडो [भैंसों] को मार पड़ती रहती है। अब किसी को भनक नहीं पड़ेगी, के 'यह सारी कारश्तानी, हम लोगों की है।'

लपकू – बाद में करता रहना, मेरी तारीफ़ें। काम के वक़्त बेफिजूल की बातें करनी, अच्छी नहीं है रे। अब तू फटा-फट गांजे के कार्टून लेकर आ जा, और लाकर रख दे इस जीप में।

रुपलो – यार लपकू। जो माल पहले भेजा गया था, उस माल के और अभी जा रहे इस माल के रुपये तो देता जा।

लपकू – रुपये-पैसों का हिसाब करेंगे, सौभाग मलसा। यह काम बोस के जिम्मे है, अब तू फटा-फट लेकर आ जा कार्टून। [अपने साथियों से कहता है] अब आप लोग डॉक्टर और कम्पाउंडर बन गए हो तो, जाकर बैठ जाओ जीप में।

[रुपला और खीमला, अब गांजे के कार्टून जीप में लाकर रखते हैं। साथियों के बैठने के बाद, लपकू आकर ड्राइवर की सीट पर बैठ जाता है। गाड़ी स्टार्ट करता हुआ लपकू, रूपले से कहता है]

लपकू – देख रुपला, हम इस जुलिट को अपने साथ ले जा रहे हैं। इससे गाँव वालों को शक नहीं होगा, के अपुन इस जीपड़ी को गांजे के कार्टून पहुंचाने के लिए काम में ली है। और सुन, तेरी

इस नर्स जुलिट को बोस के साथ भेज देंगे वापस। जो काम बाकी रह जाय, उस काम को तुम-दोनों संभाल लेना आराम से।

[अब जीप रवाना होती है, थोड़ी देर में वह हवा से बातें करने लगती है। जीप के निकल जाने के बाद, रुपला और खीमला शिविर के बाहर आकर बैठ गए हैं। फिर वहां बैठे-बैठे, गुफ़्तगू करते जा रहे हैं]

खीमला – यार रुपला, लपकू बहुत होशियार हो गया है रे। गांजे के रुपये देकर गया नहीं, और ऊपर से बोस से बात करने का कह गया। हम इस कुतिये के ताऊ बोस से, बात करें भी कैसे ?

रूपला - उसका नाम लेते, हमारा मूत उतरता है। अगर यह कमबख़्त बोस यह सुन ले, के 'हम दोनों, उसके बारे में क्या-क्या बोल रहे हैं..?

खीमला – बात सही है, तेरी। वह नालायक, यह बात सुनकर हमें कुत्तो से नुचवा देगा..कमबख़्त।

रूपला – क्या करें, यार ? बोस से डरते, हम कुछ नहीं कर सकते। इसलिए, ज़बान संभालकर ही बोलना अच्छा।

[सामने से जीप का ड्राइवर, डोलर हिंडे की तरह झूमता हुआ आ रहा है..इनके पास]

ड्राइवर – [उनके पहलू में, बैठता हुआ कहता है] – खीमसा, डॉक्टर साहब पधारे या नहीं ? [ललाट से टपक रहे पसीने के एक-एक कतरे को, साफ़ करता हुआ कहता है] क्या करूं, खीमसा ? मेला देखने का मन हो गया, और वहां मिल गए पुराने यार-दोस्त...

खीमला – और, फिर क्या ? उनके साथ बैठकर, चढ़ा ली दारु दाखों की।

ड्राइवर – [मुस्कराता हुआ, कहता है] – कैसे बचता यार, उन लोगों से ? अरे जनाब, जानते हो ? जब चार दोस्त बैठ जाए, कहीं। **तब अपने-आप जम जाती है, महफ़िल और छलक जाते हैं दारु के जाम। वाह जनाब, दारु भी क्या चीज़ बनायी है...इस ख़ुदा ने ?**

खीमला – दारु, या कुछ और भी ?

ड्राइवर – जहां जमती है महफ़िल दारु दाखों की, वहां बिना नाच-गाने..मज़ा आने का सवाल नहीं, जनाब ? वहां पूरी व्यवस्था थी पक्की, मगर सारा मज़ा किरकिरा हो गया..ये खोजबलिये...

खीमला – मेणे आ गए क्या, आपके पिछवाड़े की ढोलकी बजाने...?

ड्राइवर – आप लोगों को, परिहास की मीठी चिमटियां काटने में मज़ा आता है ? यार [खीमले की तरफ़ देख़ता हुआ, कहता है] कभी जनाब आपने, ऐसे नाच-गाने होते कहीं देखे हैं..कभी ?

खीमला – अब इन नाच-गानों को, क्या देखना ? आप कहो तो मैं ख़ुद नाच लूं, और यह रूपला गीत गा लेगा। मगर ध्यान रखना, आप। हम दोनों पर बरसात करनी होगी, आपको..कड़े-कड़े नोटों की। बोलो मंज़ूर है, या नहीं ?

रुपला – इन बातों को छोड़िये अभी, खीमला भाई। पहले इनको थमा दो, बीड़ी। चार फूंक मारकर अपनी थकावट दूर कर लेंगे, फिर पूरा किस्सा बयान करके आपको सुना देंगे। कुछ रहम खाओ, इन पर..बेचारे ठोक खाकर, यहां तशरीफ़ लाये हैं।

[ज़ेब से बीड़ी का बण्डल निकालकर, रूपला एक बीड़ी ख़ुद लेता है और दूसरी बीड़ी थमा देता है ड्राइवर को..फिर तीसरी बीड़ी पकड़ा देता है खीमले को। अब तीनों ही बीड़ी जलाकर, धुंए के बादल बनाते जा रहे हैं। ड्राइवर बीड़ी का एक लंबा कश खींचकर, आगे कहता है]

ड्राइवर – [बीड़ी का लंबा कश खींचकर, कहता है] – मेरे साथ बहुत बुरा हुआ, रामा पीर। मैं करमठोक गया ही क्यों, इस मेले में ? इधर मैने अपने हलक में उतारा, दारु का एक जाम। और ये कमबख़्त मेणे आ गए वहां, लाठी लिए हुए। मेरे बदन पर ख़ाकी वर्दी देखकर, उन्होंने..

खीमला – [होंठों पर मुस्कान छोड़ता हुआ, कहता है] – फिर क्या ? जनाब की पिछली दुकान पर ढोलकी बजा दी, इन मेणों ने ?

ड्राइवर – [चौंकता हुआ कहता है] – आपको, क्या पता ? कहीं आप, वहां खड़े तो न थे ? मैं बेचारा ग़रीब आदमी ख़ाकी वर्दी पहने पी रहा था, दारु। अरे, रामा पीर। इन खोजबलियो ने पीट दिया मुझे, तेल पायी हुई लाठी से। [कमीज़ ऊपर करके पीठ पर लगे चोटों के घाव दिखलाता है] देखिये, मार-मारकर मेरी कमर नीली कर डाली इन कमीनों ने।

खीमला – [हंसता हुआ, दूसरी बार और कहता है] – फिर क्या हुआ, इन मीणों ने आपकी पिछली दुकान छोड़ दी क्या ? बोलिए जनाब, कमर की तरह पिछली दुकान क्यों नहीं दिखला रहे हैं..आप ? कहिये, फिर क्या हुआ ?

[“फिर क्या हुआ ?” जैसे शब्द बार-बार बोलकर, खीमले ने ड्राइवर का दिमाग़ ख़राब कर डाला, फिर क्या ? बेचारा ग़रीब ड्राइवर क्या कहे, ऐसे बेअक्ल के लौंडों को ? जिन्हें सात्वना के दो बोल बोलने तो दूर...मगर, ये कमबख़्त मुझसे परिहास करते जा रहे हैं ? मगर, यह क्या ? अचानक इस रूपले को उस पर रहम कैसे आ गया ? वह रहम खाता हुआ, ज़ोर से खीमले से डांटता हुआ कहता है।]

रूपला – [खीमले को डांटते हुए, कहता है] – ‘फिर फिर’ क्या बोलता है, कौए ? बेचारे की खैरियत पूछनी गयी धेड़ में, ऊपर से इस बेचारे का जला डाला पाव भरा खून...व्यंग-बाण चला-चलाकर।

ड्राइवर – रुपसा, आप सच कह रहे हैं। मैने इन लठैतों से कई बात कहा के ‘भाइयों, मैं पुलिस वाला नहीं हूं। मैं तो बेचारा, ग़रीब ड्राइवर हूं। मुझे मत मारो, बेटी के बापां।’ मगर मेरी एक नहीं मानी, उन्होंने..यहां ..अब यहाँ आकर, मैने अब ली है सांस।

खीमला – अब क्या करेगा, भाई ? नर्स बहनजी सा को मूव ट्यूब थमाकर, मसलायेगा अपनी कमर..? मुझे भी आती है, मसलनी...मेरे हाथ, बहुत अच्छे पड़ते हैं। ट्यूब नहीं हुई तो, क्या हुआ ? तेल मसल दूंगा, तुम्हारी पक्की हुई कमर पर। इतने में डॉक्टर साहब आकर, तेरी खैरियत पूछ लेंगे।

ड्राइवर – [होंठों में ही, कहता है] – आटा वादी करता है तेरा, खीमला ? डॉक्टर साहब के सामने, मेरी आपबीती का किस्सा बयान करके मुझे मरवा डालेगा..कमबख़्त ?

खीमला – फिर क्या करूं रेSS, सुबह से हम आप लोगों की सेवा में लगे रहे..एक निवाला रोटी का, नहीं गिटा ? अब मर रहे हैं भूखे, बेटी के बाप। मगर, आप अपनी दवा पीकर आ चुके हैं। रामा पीर की कसम, हम दोनों को यह दवा भी हासिल नहीं हुई है।

[ड्राइवर अपनी ज़ेब से निकालता है, एक कड़का-कड़क नोट दस का।]

खीमला – यह क्या ? इससे, अंगूरी क्या ? हाथकडी दारु की थैली भी, नहीं आती। डॉक्टर साहब के प्रकोप से आपको बचाने के लिए, अब विलायती दारु ही जमेगी मेरे बाप। अब इस सूखे कंठ में इससे कम, किसी किस्म की दारु असर नहीं करेगी। नहीं तो यार, यह लालकी मचल रही है...

[दस का नोट वापस अपनी ज़ेब में रखकर, अब ड्राइवर अन्दर की ज़ेब से एक सौ का नोट निकालकर थमा देता है। फिर हाथ जोड़कर, कहता है]

ड्राइवर – [हाथ जोड़कर कहता है] – लीजिये, अब पधार जाइये मालिक। अब आप वापस पधारना मत, यहां। डॉक्टर साहब और नर्स बहनजी सा के समाचार, मैं ख़ुद अपने-आप ले लूंगा।

[रुपये लेकर खीमला और रूपला रुख़्सत होते हैं, और अब जाते-जाते वे दोनों गीत गाते जा रहे हैं]

खीमला – [गीत गाता हुआ] – फागुन आयो रे, आयो SS रे आयो रे..फागुन आयो रे।

रुपला – [झूम-झूमकर, गाता है] – ठौड़ ठौड़ मदिरा के, अब छलकते जाते जाम रे SS..।

खीमला – [झूमकर गाता है] – लपक लपककर पीते हम तो, दारु मुफ़त का, के भायों दारु दाखों का।

खीमला – [ऊंची तान लेकर गाता है] - धूसो बाजे रे बाबोसा, आपके मेड मेणों का...के धूसो बाजे रे। रंग अबीर गुलाल उड़े रे, मेणी नाचे चौक में। चारों ओर भभक रहे हैं, दारु दाखों का के भायों दारु दाखों का।

रूपला – [गीत गाता हुआ] - फागुन आयो रे, आयो SS रे आयो रे..फागुन आयो रे। ठौड़ ठौड़ मदिरा के, अब छलकते जाते जाम रे SS..।

खीमला – [साथ देता हुआ, गाता है] - पीओ रे भय्या, दारु दाखों का...

[थोड़ी देर बाद, वे दोनों आंखों से ओझल हो जाते हैं। मंच पर, अंधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच पर रौशनी फ़ैल जाती है। अब बाबजी के झूपे का मंज़र, सामने दिखायी देता है। इस ढाणी में, मेढ़ मीणे रहते हैं। ये सभी मेढ़ मीणे, गौतम मुनि के भक्त हैं। कई सालों पहले, रूपला और खीमला के लकड़दाजी ने यह बस्ती बसायी थी। ये लकड़दाजी "बाबजी" के नाम से जाने जाते थे। इस करण, इस ढाणी का नाम "बाबजी की ढाणी" रखा गया। यह किदवंती है, के 'बाबजी की दाढ़ी, उनके पांव के तालू तक पहुंचा करती थी।' इनका नाम सुनकर, इस इलाके के सेठ-साहूकारों और ठाकुरों के रोंगटे खड़े हो जाया करते थे। कहा जाता है, वे नींद में सो रही ठकुराइनो के सर की चोटियां काटकर ले आते। उस वक़्त उनके आने से, किसी परिंदे को भी इनके आने की भनक नहीं पड़ती। इसके पास ही, 'मेणों का झूपा' नाम की ढाणी है। बाबजी की ढाणी से लगभग डेड-दो फलांग दूर, भूतिया नाडी है। अब संध्या ढल चुकी है, और आसियत का अंधेरा फैलता जा रहा है। रात चांदनी है, चांद की रौशनी में बहुत दूर से धूल उड़ती हुई दिखाई देती है। कुछ ही देर में मोटर साइकल साफ़-साफ़ नज़र आती है, जिस पर बैठे सौभाग मलसा मोटर साइकल की रफ़्तार बढ़ाते जा रहे हैं। अब गाड़ी बाबजी के झूपे के काफ़ी नज़दीक आ चुकी है, मोटर साइकल की

आवाज़ सुनकर ढाणी के निवासी अपने झोपड़ो से निकलकर बाहर आते हैं। फिर वे सभी, सौभाग मलसा के स्वागत-सत्कार तैयारी में जुट जाते हैं। इन लोगों में रूपला के भईजी लाखाजी मौजूद है, जो इस बस्ती के मुखिया है। **‘सिर पर सफ़ेद पगड़ी, घुटनों तक सफ़ेद दाढ़ी और सफ़ेद ही धोती-अंगरखी पहने लाखाजी इस चांदनी रात में जिन्न जैसे दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है, मानो इस चांदनी रात में कोई जिन्न अपना भोग लेने आया हो ?”** सौभाग मलसा मोटर साइकल से नीचे उतरकर, गाड़ी को खड़ी करते हैं। तभी ढाणी की औरतें मंगल गीत गाती हुई, आगे बढ़ती है। श्रद्धा से वे सभी, उनकी अगवानी करती है। हाथ में स्वागत थाल लिए, एक सुन्दर युवती आगे बढ़कर सौभाग मलसा की आरती उतारती है। कई औरतों के हाथ में ढोलकी और थालियां है, जिन्हें बजाती हुई, वे उनका स्वागत मंगल-गीत के साथ करती जा रही है। आरती उतारने के बाद, सौभाग मलसा ज़ेब से पांच हज़ार के नोट निकालकर, आरती की थाली में रख देते हैं। अब ढाणी के बड़े-बुजुर्ग उनको मान-मनुआर के साथ ढाणी के चौपाल में ले आते हैं, उनके पीछे-पीछे औरतें घूंघट निकाले चली आती है। चौपाल में एक बड़ा पलंग बिछा हुआ है, और उसके पहलू में बड़े बुजुर्गों के बैठने के लिए पांच-छः मूढ़े रखे हैं। सौभाग मलसा के पलंग पर बैठ जाने के बाद, सभी बड़े-बुजुर्ग मूढो पर बैठ जाते हैं। संकेत पाने पर सारी औरतें, नीचे ज़मीन पर बैठ जाती है। अब अपनी ज़ेब में हाथ डालकर, सौभाग मलसा इत्र लगा हुआ रुमाल बाहर निकालते हैं। फिर वे, उससे ज़ब्हा से टपक रहे पसीने के एक-एक कतरे को साफ़ करते हैं। पसीने को साफ़ करने के बाद, रुमाल को वापस ज़ेब में डाल देते हैं। फिर, पास पड़े स्टूल पर रखे पानी के ग्लास को उठाते हैं..और ऊपर से पानी पीकर, वापस उसे यथा-स्थान रख देते हैं। अब सौभाग मलसा हाथ का इशारा करते हैं, हुक्म पाकर मंगल गीत गा रही औरतें चुप-चाप बैठ जाती है। मंगल-गीत बंद होते ही, सौलह-सत्रह साल का किशोर चांदी की थाली लेकर आता है। इस थाली में, अंगूरी शराब से भरे चांदी के जाम रखे हैं। वह आकर स्टूल पर उस थाल को रख देता है। फिर झुकर, वह सौभाग मलसा का अभिवादन करता है। इनका इशारा पाकर, सौभाग मलसा और बैठे बड़े-बुजुर्गों को शराब के जाम थमा देता है। दारु पीते-पीते वे सब, अब इस किशोर का कमाल देखना चाहते हैं। सौभाग मलसा उस किशोर को, आवाज़ का कमाल दिखाने का इशारा करते हैं। इस किशोर का नाम है, झमकू। आदेश पाकर वह, पलंग के पास ही नीचे ज़मीन पर बैठ जाता है। फिर क्या ? झमकू सबसे पहले, रामसा पीर का जयकारा लगाता है। अब वह कई जंगली जानवरों की डरावनी आवाज़े, निकालनी शुरू करता है। अत: सबसे पहले वह आँखें बंद करके, जरख के चलने की आवाज़ निकालता है, यह आवाज़ ऐसी है मानो हड्डियां चरमरा रही हो ? इसके बाद, तेंदुए की आवाज़, और इसके बाद सियारों के झुण्ड के कूकने की आवाजें निकालता है। फिर परिंदों के उड़ने की आवाज़, निकाल बैठता है। उसके बाद वह शेर के दहाड़ने की गूंज सुनाकर, बैठे लोगों के दिल में भय समा देता हैं। चीता, तेंदुआ व जंगली कुत्तों की डरावनी आवाजें निकालकर, भय का वातावरण पैदा कर देता है। इसके बाद, एक बार और लकड़बग्गे के चलने की आवाज़ ऐसी

निकालता है, मानो हड्डियों के चरमराने की कड़क-कड़क करती आवाज़ कहीं से आ रही हो ? जंगली भैंसों के रंभाने की आवाज़ ऐसे निकालता है, मानो इनका झुण्ड नाडी पर पानी पीने आया हो ? इस तरह भयानक आवाजें सुनकर, बेचारे नन्हे बच्चे अपनी मां की गोद में सहमकर बैठ जाते हैं। इस ठंडी रात में, झमकू द्वारा निकाली गयी आवाजें कई कोसों दूर तक जाती है। और वहां धोरो से टकराकर, वापस लौट जाती है। इधर यह सायं-सायं की आवाज़ करते ये हवा के झोंके, बदन की सिहरन को बढ़ा रहे हैं। उधर लकड़बग्गे के चलने की आवाजें, दूर-दूर तक पहुँच जाती हैं। जो इस वनीय-क्षेत्र में लकड़बग्गों की, उपस्थिति का साक्ष्य देती जा रही है। अपना कमाल दिखाने के बाद, अब झमकू उठता है और सौभाग मलसा को तैयार किया गया हुक्का थमा देता है। इसके बाद, वह उनसे अर्ज़ करता है।

झमकू – [हाथ जोड़कर कहता है] – अन्नदाता हुकूम। खम्मा घणी आपका हुक्म, तामिल हो गया। इस ढाणी से कई कोसों दूर तक इंसान क्या, कोई जानवर भी नज़र नहीं आयेगा। अब मेरे लायक, और कोई हुक्म ?

[सौभाग मलसा झट ज़ेब से निकालते हैं छः हज़ार रुपये, फिर इन रुपयों को झमकू को देते हुए कहते हैं]

सौभाग मलसा – ले बेटा, तेरा इनाम। वाह रे, वाह। क्या गला दिया है, रामा पीर ने ? तेरे इस गले से निकले सुर, कई कोसों दूर जाते हैं। देख बेटा अब तूझे एक काम और सौंप रहा हूं, तू तेरे मोटियार हट्टे-कट्टे आदमियों को साथ लेकर पहुंच जा भूतिया नाडी। वहां तूझे करीब ५७-५८ साल का आदमी दिखायी देगा, जिसके...

झमकू – हुज़ूर, कोई निशानी हो तो बताइये..ताकि, हम सब मिलकर, उसे ऐसी फोड़ी चखाएंगे, ऐसी फोड़ी चखाएंगे के..

सौभाग मलसा – बेटा, पीटने की कोई ज़रूरत नहीं। उस आदमी का नाम है, मोहन लाल। काली सफ़ारी सूट, पहन रखी है उसने। बस अब तू और तेरे साथी, उस आदमी को पकड़कर यहां ले आओ। एक बार तू उसे हाज़िर कर दे, मेरे सामने..

झमकू – जो हुक्म, मेरे मालिक।

[थोड़ी देर बाद, झमकू अपने लठैत साथियों के साथ भूतिया नाडी की तरफ़ जाता हुआ दिखाई देता है। झमकू और उसके लठैत साथियों के जाने के बाद, वहां एक सरकारी जीप आकर रुकती है। लपकू और उसके साथी, उस जीप से नीचे उतरते हैं। इन लोगों के उतर जाने के बाद, अब

लपकू सम्मान के साथ जुलिट को नीचे उतारता है। फिर सभी सौभाग मलसा के सामने हाज़िर होते हैं, सौभाग मलसा इन लोगों को यहां देखकर नाराज़ हो जाते हैं। फिर, अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए कहते हैं]

सौभाग मलसा – [नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए, कहते हैं] – क्या इस ढाणी में, मेडिकल कैम्प रखा गया है..जो आप नर्स बैनजीसा को लेकर, यहां आ गए ?

लपकू – [हाथ जोड़कर, कहता है] – हुज़ूर इनकी आँखों पर पट्टी बांधकर लाता था, मगर मैने सोचा..के, यह अजनबी इंसानों में औरत जात है। इसको क्या मालुम, यहां आने के रास्ते ? फिर भी जनाब, इस जीप को घुमा-घुमाकर यहां लाया हूं। इस तरह हमारे काम में, किसी तरह का विघ्न नहीं आयेगा हुज़ूर।

सौभाग मलसा – लपकू मैं जो बात पूछ रहा हूं, तू उसी सवाल का जवाब दे। बाकी, बेकार की झकाल कर मत।

लपकू – इनको यहां लाना, बहुत ज़रूरी था मालिक। [साथियों के ऊपर नज़र डालता हुआ] तब ही मैं इन लोगों को और अपना माल, वहां से निकालकर ला सका। देखिये जनाब, इन लोगों ने कैसे-कैसे स्वांग रचे हैं ? कोई बन गया, डॉक्टर..तो कोई बन गया कम्पाउंडर ? इन कपड़ों के कारण ही, गाँव वाले इनको पहचान न सके।

सौभाग मलसा – [थोड़ा नरम पड़कर, धीरे से पूछते हैं] - किसी आदमी को मालुम तो नहीं हुआ, हमारे माल के बारे में ? करें, क्या ? इस मेले में, कमबख़्त सी.आई.डी. पुलिस अलग से तैनात है। इस कारण ही, पूछ रहा हूं लपकू...के **'माल हिफ़ाज़त से, अपने गोदाम में रख दिया गया या नहीं..?**

लपकू – जनाब, माल हिफ़ाज़त से रखने के बाद ही, इस जीप को इधर मोड़कर लाया हूं। अगर साथ में नर्स बहनजी को नहीं लाता, ख़ुदानख्वास्ता अपुन के सब लोग पकड़े जाते। मालिक गांव वाले संदेह कर लेते, और हमारा काम खटाई में पड़ जाता।

जुलिट – [उत्सुकता ज़ाहिर करती हुई] – कौनसा काम ?

सौभाग मलसा – नाटक का, ये बेचारे नाटक खेल नहीं पाते। [लपकू से कहते हैं] अब ठीक है, लपकू। आगे से मेरी बिना मेरी इज़ाज़त लिए, कोई काम किया मत कर। [अब मुस्कराते हुए,

जुलिट से कहते हैं] नर्स बहनजी सा, मेरे आदमियों की नादानी के करण आपको ज़हमत उठानी पड़ी।

[फिर क्या ? वे कुर्सी मंगवाकर, जुलिट को बैठाते हैं। फिर ज़ेब से निकालते हैं, चांदी की डिबिया। उसमें रखी चांदी के बर्क लगी, मसाले वाली मीठे पान की गिलोरी जुलिट को थमा देते हैं। और ख़ुद अपने लिए बर्क लगा मीठा पत्ता, जिसमें चेतना ज़र्दा मिला हुआ है..वह पान का बीड़ा, ख़ुद अपने मुंह में ठूंस लेते हैं। फिर वे, हाथ जोड़कर जुलिट से कहते हैं।]

सौभाग मलसा – नर्स बहनजी सा, कृपया आप मेरे आदमियों को माफ़ करावें। बेचारे इस ढाणी में नाटक खेलना चाहते थे, इसलिए इनको चाहिए थी डॉक्टर-कम्पाउंडरों की वर्दियां। ठोकिरे जानते नहीं, सरकारी नियम-क़ायदे। कमबख़्त उज्ज़ड़ ठहरे, इस कारण ज़बरदस्ती उठा लाये आपके कैम्प से..ये वर्दियां।

[अब सौभाग मलसा अपने साथियों को फटकारते हुए, उनसे कहते हैं]

सौभाग मलसा – [फटकारते हुए, कहते हैं] – क्यों रे, हरामखोरों। आप लोगों की नादानी के कारण, बेचारी नर्स बाईसा को तकलीफ़ उठानी पड़ी ? [लपकू से कहते हैं] लपकू, तू तो इनके पांव छूकर माफ़ी मांग। साले गधे, यह सारी ग़लती तेरी है।

[अब इनके हुक्म की तामिल करते, सभी तस्कर साथी जुलिट के पांव छूकर अपनी ग़लती के लिए माफ़ी मांगते हैं।]

लपकू – [पांव छूकर, कहता है] – माफ़ कीजिये, नर्स बहनजी सा। भारी ग़लती हो गयी, हमसे। आप फ़िक्र नहीं करें, मैं ख़ुद ये सारी वर्दियां आपके कैम्प में पहुंचा दूंगा।

जुलिट – हो गया, जो हो गया लपकू। अब तू आगे की सुध ले, फ़िक्र इस बात की है...अगर डॉक्टर साहब कैम्प में आ गए, और मुझे वहां नहीं देखा तो...? [पर्स से लिपस्टिक और छोटा दर्पण बाहर निकालकर, अपना मेक-अप ठीक करती हुई कहती है] मुझे वहां न पाकर, बेचारे डॉक्टर साहब क्या सोचेंगे ?

सौभाग मलसा – [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – नर्स बहनजी सा, एक बार आप कह दीजिएगा..के, हम लोगों को आपने माफ़ किया या नहीं ? [कान पकड़कर कहते हैं] हम लोगों से बहुत भारी ग़लती हो गयी, बहनजी सा।

जुलिट – सौभाग मलसा, आप अच्छे समझदार व्यवहार-कुशल आदमी हैं। मुझे कोई रंज नहीं, कृपया आप अपना दिल न दुखाएं। बस आप मुझे हमारी जीप के साथ, शिविर तक पहुंचाने की व्यवस्था कर दीजिये।

सौभाग मलसा – [ख़ुश होकर लपकू से कहते हैं] – लपकू जा जल्दी, नर्स बहनजी सा को जीप में बैठाकर इनके कैम्प में छोड़ दे। और सुन [पांच सौ रुपये थमाते हुए कहते हैं] ये ले, पांच सौ रुपये। जीप में तेल भरवाकर ही, इस जीप को इन्हें सुपर्द करना। [साथियों से कहते हैं] अब खोलिये, इन वर्दियों को। बहुत हो गया नाटक। [साथियों को आंख का इशारा करते हुए, कहते हैं] रख दो, इन्हें जीप के अन्दर।

[उनके साथी डॉक्टर-कम्पाउण्डरों के कोट खोलकर, जीप में रख देते हैं। अब लपकू, बहुत मान-मनुआर के साथ, जुलिट को जीप में बैठाता है। रवाना होते वक़्त सौभाग मलसा झट ज़ेब से हर्जाने के पांच हज़ार रुपये निकालकर, जुलिट को थामाते हैं। फिर हाथ जोड़कर, जुलिट से कहते हैं]

सौभाग मलसा – [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – नर्स बहनजी सा। ये हर्जाने के रुपये तो आपको लेने ही होंगे, क्योंकि ग़लती हम लोगों की है। फिर आप, नुक्सान क्यों भुगतेंगे ? [रूपये थमाते हुए, कहते हैं] यह लीजिये बहनजी सा, पूरे रोकड़े रुपये पांच हज़ार।

जुलिट – इसकी क्या ज़रूरत, सौभाग मलसा..बस आपने ग़लती मान ली, बहुत है।

[रुपये लेकर जुलिट उन्हें अपने पर्स में रख देती है, लपकू गाड़ी स्टार्ट करता है। अब वह गाड़ी हवा से बातें करती हुई, तेज़ रफ़्तार से चलती दिखाई देती है। मंच पर, अंधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच पर रौशनी फैलती है। अब सामने मंज़र आता है, महल के खण्डहर का। वहां अब यह प्यारे लाल, सीढ़ी से कुए में उतरता हुआ दिखाई देता है। उसके उतरने के बाद, प्यारे लाल को एक सुरंग दिखाई देती है। अब यह हवलदार, उस सुरंग में गांठ ऊंचाये चलता नज़र आता है। यह सुरंग इतनी चौड़ी है, के इसमें आसानी से घोड़े दौड़ सकते हैं। गौतम मुनि के मंदिर से करीब सौ क़दम दूर एक कुआ है, इसमें यह सुरंग खुलती है। इस कुए के नज़दीक कई झोपड़े है, और कई कच्चे मकान भी हैं। इस बस्ती से कुछ दूर ही, एक हवेली दिखायी देती है। इस हवेली के बाहर खड़ा होकर, वह तीन बार सीटी बजाता है। इसके जवाब में हवेली से, पपीहे की आवाज़ बाहर आती है। फिर क्या ? वह इशारा समझकर, झट हवेली के अन्दर दाख़िल हो जाता है। अन्दर पहुंचने के बाद, यह हवेली छोटी न होकर काफी बड़ी टणकार हवेली नज़र आती है। इस हवेली के अन्दर कई कमरे, गलियारे और होल है। अब यह प्यारे लाल सीधा पहुंच जाता है, होल

के अन्दर। इस बड़े होल में, नाच-गाने का पक्का इंतजाम दिखायी दे रहा है। उस होल में बैठने के लिए, कई गद्दे बिछाए गए हैं। एक गद्दे के पास, कई साज़ के सामान रखे हैं। एक गद्दे पर बुढा किन्नर बैठा-बैठा पान की गिलोरी चबाता जा रहा है, उसके पास ही पान की गिलोरियों से भरी चांदी की तश्तरी रखी है। जिसके पास ही, चांदी का हुक्का और पीकदान भी रखा है। गलियारे में कई किन्नर रंग-बिरंगी पौशाक पहने, होल की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा रहे हैं। अब होल में यह बुढा किन्नर पान की पीक, चांदी के पीकदान थूकता नज़र आ रहा है। फिर पास रखे, हुक्के की नली उठाता है। और, हुक्का गुड़गुड़ाता जाता है। अब एक-एक करके सारे किन्नर, होल में दाख़िल होकर गद्दों पर बैठ गए हैं। कई किन्नर साज़ के सामान उठाकर, बजाने लगे हैं। और अब साज़ के सुर से ताल-मेल बैठाता हुआ, सब्बू नाम का किन्नर नाचता जा रहा है। अब चम्पाकली भी, उसका साथ देने के लिए उठता है। फिर दोनों हाथ पकड़े, घुमर लेकर नाचना शुरू करते हैं। नाचते हुए दोनों किन्नर, कुशल नर्तकी के समान नज़र आ रहे हैं। कुछ देर बाद इस बूढ़े किन्नर को, सामने से प्यारे लाल आता दिखाई देता है। उसको देखकर बुढा किन्नर, ताली बजाकर नाच-गाना रुकवा देता है। अब प्यारे लाल, होल में दाख़िल होता है। वह गांठ को नीचे रखकर, हाथ ऊपर करके अंगड़ाई लेता है। तभी गुलाबा होल में दाखिल होता है, और आते ही..वह उसे अपने बाहुपोश में, झकड़ लेता है। फिर वह, उससे कहता है।]

गुलाबा – [बाहुपोश में झकड़कर, कहता है] – प्यारे मेरे दुलारे। मुझे लगता है, तू अपना काम पूरा करके आ गया है ? अब यार, तू फ़टाफ़ट ये मोहनजी के कपड़े उतारकर मुझे दे दे।

प्यारे लाल – [शर्माता हुआ कहता है] – अरे गुलाबो बी, क्या आप मुझे नंगा करेगी क्या ?

गुलाबा – [हंसता हुआ कहता है] – तूझे नंगा नहीं करूंगी, तो मैं काम कैसे करूंगी ?

[इतना कहकर, गुलाबा ज़ोर-ज़ोर से हंसता है। मगर बूढ़े किन्नर को, इन दोनों की हरक़ते अच्छी नहीं लगती। वह झट तकिये के नीचे रखी लुंगी निकालकर, उसे प्यारे लाल की तरफ़ फेंककर कहता है]

बुढा किन्नर – यह ले रे, लुंगी। लुंगी पहन ले, फिर जल्दी कपड़े बदल दे। इन मोहनजी के कपड़ो को संभला दे, गुलाबा बी को। [गुलाबा से कहता है] सुन ए, गुलाबा। फटा-फट, कपड़ो की तलाशी ले ले। अब आगे से ध्यान रख, अब ऐसी ओछी हरक़ते करना मत..मुझे तेरी छोरछिंदी हरक़तें पसंद नहीं। बस, तू अपने काम से मतलब रखा कर।

[गांठ खोलकर प्यारे लाल अपने जनाने वस्त्र निकालता है, फिर इन जनाने वस्त्रों को पहनकर वह वापस प्यारी बन जाता है। उधर गुलाबा मोहनजी की कमीज़ और पतलून की जेबें टटोलता है, उधर वह बुढा किन्नर प्यारी को अपने पहलू में बैठाता है। फिर उसके काम पर ख़ुश होकर, उसके ज़ब्हा पर बोसा लेता है। फिर उससे मज़ाक करता हुआ, कहता है।]

बुढा किन्नर – प्यारी, तू आज़ बहुत ख़ूबसूरत दिखायी देने लगी है। यह मोहन लाल तुझको कैसा लगा ? वाह प्यारी, तू तो इस मोहन लाल के दिल की रानी बन गयी। अब तेरा, क्या कहना ?

[तलाशी लेने पर, मोहनजी की कमीज़ और पतलून की ज़ेब से कई काम की चीजें मिलती है। जिसमें डायरी और ऐसे कई काग़ज़ात है, जो सौभाग मलसा और फ़क़ीर बाबा के धंधे से गहरे ताल्लुकात रखते हैं। इतनी सारी काम की चीजें एक साथ देखकर, गुलाबा ख़ुश होता है। फिर क्या ? वह डग-डग हंसता जाता है। उसको खिल-खिल हंसते देख, वह प्यारी नाराज़ हो जाती है। फिर वह गुस्से में कह देती है]

प्यारी – [गुस्से में कह देती है] – क्यों छक्के की तरह हंसती जा रही हैं, आप ?

गुलाबा – [हंसता हुआ जवाब देता है] – अरे गेलसफ़ी, अभी इस वक़्त अपुन सब हिज़ड़े ही हैं, यानि छक्के। फिर अपुन छक्के की तरह, क्यों नहीं हंसेगे ? अब, हंसना क्या ? तालियां भी पीटेंगे, जब तक सौभाग मल और फ़क़ीर बाबा का प्रकरण निपट नहीं जाए ?

[इतना कहकर, वह पांच बार तालियां बजाता है। तालियों की आवाज़ सुनकर, ५-६ किन्नर होल में दाख़िल होते हैं। अब वह गुलाबा सभी किन्नरों से कहता है]

गुलाबा – देखिये, आज़ का दिन बहुत महत्त्व पूर्ण है। अब आपको यह जानकर ख़ुशी होगी, के 'आज़ इस मोहन लाल के कपड़ो की तलाशी लेने पर, सौभाग मल और फ़क़ीर बाबा से मिलने वाले सारे वांछित दस्तावेज़ अपुन को मिल गए हैं।' अब आप सभी को, इसके सन्दर्भ में और क्या कहूं ?

प्यारी – कह दीजिये, **मेरे जीजाजी के खिलाफ़ जो ज़हर उगलना है..उगल दीजिये, गुलाबो बी। आपको, क्या फ़र्क पड़ता है ? आपको मज़ा आता है, किसी इज्ज़तदार आदमी का पानी उतार लेने में ?**

गुलाबा – पहले मेरी बात सुन, फिर बाद में तू बोलती रहना। यह गधा ऊपर से दिख़ता है, सीधा-सादा..जैसे यह हो, अल्लाह मियाँ की गाय ? यह जितना दिख़ता है ऊपर, उससे ज़्यादा तो यह ज़मीन के नीचे गड़ा हुआ है। साला मोहन लाल है, पूरा गज़ब का गोला।

प्यारी – गज़ब का गोला मत कहिये, आप।

गुलाबा – [होंठों पर मुस्कान बिखेरता हुआ, कहता है] – बीच में मत बोला कर, मेरी प्यारी जान। तू नहीं जानती, इसकी नीयत कैसी है ? यह कमबख़्त इतना होशियार है, प्यारी..के 'इसने चुप-चाप बैग से, डायरी और ज़रूरी काग़ज़ात निकालकर अपने कब्ज़े में ले लिए..! और उस बेचारी जुलिट को, वहम होने नहीं दिया..के, सीक्रेट क्या है ?' और अब...

बुढा किन्नर – [बीच में बोलता हुआ, कहता है] - अब तू पाबूजी की पुड़ की तरह रोंगत मत बांच, थोड़े में समझा दे इन सबको।

गुलाबा – मैं थोड़े में ही समझा रही हूं, बड़ी बी। आप फ़िक्र न करें। मैं कह रही थी, सौभाग मल के पास यह मोहन लाल..किस तरह, गेलसफे इन्सान की तरह घुमता रहा ? उसको पता नहीं, के **'यह गधा उसके काले कारनामों से, वाफ़िक हो चुका है।'** मगर, सौभाग मल रहा भोला। इस गधे को मौज-मस्ती के लिए, छः हज़ार रुपये दे डाले।

चम्पाकली – [रोनी सूरत बनाकर, थूक से बने बनावटी आंसू निकालकर कहता है] – हायSS, मोहन लाल सेठ। आप बड़े होशियार निकले, पहले मुझे ध्यान होता तो मैं चली आती प्यारी की जगह। और छीन लेती आपसे, पूरे छः हज़ार रुपये।

गुलाबो – [आंखें मटकाता हुआ, कहता है] – ए छमक छल्लो। बयान तो करने दे, ना ? अगर मैं तूझे, इस मोहन लाल के पास भेज देती..तो गेलसफ़ी, तुझको मसल डालता..फिर, तू रोती-रोती आती मेरे पास।

चम्पाकली – गुलाबो बी, मैं क्यों रोती..? मैं तो..

गुलाबा – [उसकी बात काटता हुआ कहता है] – अब तू चुप-चाप बैठ जा। ले अब मुझे बताने दे इनको, पूरी बात..[किन्नरों से कहता हुआ] सुनो, जब सौभाग मल को मालुम हुआ, के 'इस मोहनजी के पास कमलकी सांसण के मोबाइल नंबर आ गए हैं, और यह बेवकूफ उससे मिलना चाहता है।' बस, फिर क्या ?

चम्पाकली – आगे कहिये, गुलाबो बी।

गुलाबो – उसने बना डाला, तगड़ा प्लान..के, 'भूतिया नाडी पर, इस मोहन लाल को बुलाना है। फिर किस तरह इस कमलकी और मोहन लाल का, आपस में रोमांस करवाना है। इस तरह यह कमलकी इसको, अपने मोह-ज़ाल में फंसा देगी। रोमांस करते वक़्त यह कमलकी, मोहन लाल की जेबों से डायरी और धंधे से सम्बंधित काग़ज़ात निकाल लेगी।'

चम्पाकली – डायरी नहीं मिली, तो ?

गुलाबा - फिर मोह-ज़ाल में फंसे मोहन लाल से वह, पूरी जानकारी ले लेगी के 'उसने डायरी और सम्बंधित काग़ज़ात कहां रखे हैं ? या, उसने किसको को दे रखे हैं ? मगर बात हुई, कोई दूसरी। मुझे जैसे ही इसके प्लान के बारे में मालुम हुआ, और मैने ...

प्यारी – [बीच में बोलती है] – कह दीजिये, कैसे आपने मेरे भोले जीजाजी को अपने ज़ाल में फंसाने का प्लान..आख़िर, बना ही डाला।

गुलाबा – बीच में बोलकर, मेरी लय को तोड़ मत। [दूसरे किन्नरों से कहता हुआ] लीजिये सुनिए, जैसे ही मैने इस मोहन लाल को आस करणजी का मोबाइल मचकाते देखा..उसी वक़्त मैने प्यारी को फ़ोन लगाकर समझा दिया, अपना अगला प्लान।

सब्बू किन्नर – क्या प्लान था, आपका ?

गुलाबा – फिर यह हुआ, आस करणजी के मोबाइल पर इस प्यारी ने मोहन लाल से मीठी-मीठी बातें करनी शुरू की। और साथ में उसे भूतिया नाडी आने के लिए, तैयार कर डाला। आगे, अब क्या हुआ ? अगला हाल अब आप, प्यारी से सुनिए। प्यारी ख़ुद बतायेगी, अपने रोमांस के बारे में।

[प्यारी झट अपने सर को रिदके से ढकती है, फिर अपने पर्स से लिपस्टिक और कांच निकालकर चेहरे का मेक-अप सही करने लगती है। इसके ये हाल देखकर, बूढा किन्नर खीजकर कहता है]

बुढा किन्नर – [खीज़ता हुआ कहता है] – ये तेरे बनाव-श्रंगार बाद में करती रहना, यहां नहीं है तेरा आशिक मोहन लाल। जो तू, नखरे करती जा रही है ? अब बता, आगे क्या हुआ ?

प्यारी – [शर्माती हुई, कहती है] – वह लम्हा कितना हसीं था, मगर फ़िज़ूल गया...! मुझे शर्म आती है, बड़ी बी। यों कैसे, मैं अपनी प्रेम-गाथा सुना दूं ? [बूढ़े किन्नर के अलफ़ाज़ काम में लेती हुई कहती है] मुझे छोर-छिंदी बाते करनी, अच्छी नहीं लगती।

[कहते-कहते प्यारी के गाल, शर्म के मारे लाल-सुर्ख हो जाते हैं। पास खड़ा गुलाबा उसके लाल-सुर्ख गालों को चूम लेता है। फिर उसे पुचकारता हुआ, उसे कहता है]

गुलाबा – कह दे, मेरी जान। क्यों छुपा रही है, अपने दिल में ?

प्यारी – [शर्माती हुई, कहती है] – मेरी पतली कमर पर हाथ रखकर, मोहन लाल सेठ मेरे इन रसीले होंठों को चूमने के लिए अपने होठ नज़दीक लाये..और..[होंठ नज़दीक आने का अहसास करती हुई, आगे कहती है] आहाऽऽ...मैं तो अब आगे कुछ नहीं कह सकती, मुझे आ रही है शर्म।

चम्पाकली – [गुस्सा दिखाता हुआ, कटु शब्द सुना बैठता है] – अरे ए करमज़ली, यह क्या कर डाला तूने ? यह सेठ मोहन लाल मेरा है, तू दाग लगाकर कैसे आ गयी ?

प्यारी – [ज़ोर से हंसी का ठहाका लगाती हुई, कहती है] – दाऽऽग ? क्या..? क्या कहा, दाग लगाया ? अरी चम्पाकली, मैं चम्पाकली नहीं हूं..जो दाग लगाती रहूं, फिर गली-गली में यह गीत गाती चलूं के "लागा चुनरी में दाग, छुपाऽऽऊं कैसेऽऽ।" मगर, मैं हूं..

चम्पाकली – फिर, बोल दे। आख़िर, तू है क्या ?

प्यारी – मैं हूं प्यारी, चम्पाकली से सौ गुना ज़्यादा होशियार। उनके होंठ नज़दीक आते ही, मैंने उनके गाल पर यों [नक़ल करती-करती, पास खड़े चम्पाकली के गाल पर, धब्बीड़ करता थप्पड़ रसीद कर देता है] मारा मैंने धब्बीड़ करता झापड़। फिर कहा, ज़ोर से "आपके मुंह से, बदबू आ रही है।"

चम्पाकली – [अपना गाल सहलाता हुआ, कहता है] – इसके बाद क्या हुआ, प्यारी ?

प्यारी – बेचारे सेठ मोहन लाल, डर के मारे, धूजने लगे। और मुझसे कहने लगे "हुक्म दीजिये, मेहरारू। मैं आपकी, क्या ख़िदमत कर सकता हूं ?" तब मैंने कहा "खोलो अपने, तमाम कपड़े और कूद पड़ो नाडी में..नहाने के लिए।" स्नान कर लोगे, तब मैं आपसे बोलूंगी।

चम्पाकली – वाहऽऽ ए, प्यारी। तूझमें मर्द को शीशी में उतारने की, औरतों की सारी कलाएं आ गयी ? अरे तूने तो, उसके तमाम कपड़े खुलवा डाले ? अब इसके बाद, तूने क्या किया ?

प्यारी – फिर क्या ? सेठ मोहन लाल नाडी में कूदकर, बिना कपड़े पहने मछली की तरह तैरने लगे। फिर क्या ? मैं इसी मौक़े की तलाश में थी, चुप-चाप दबे पांव चलती हुई जा पहुंची वृक्ष तले..जहां सेठ मोहन लाल ने, अपने सारे कपड़े खोल रखे थे। बस मैने अपने ओढ़ने की गठरी बनाकर उसमें अपने जनाने वस्त्र और साबुन आदि लेकर..

चम्पाकली – [चकित होकर, कहता है] – यह कर डाला, तूने ? गेलसफ़ी, ट्वाल तो छोड़ आती ? है राम, तब बेचारे सेठ मोहन लाल की, क्या गत बनी होगी ?

प्यारी – अरे मैं चम्पाकली नहीं हूं, जो उनके लिए साबुन की टिकिया या ट्वाल छोड़कर चली आती ? पहने हुए जनाने वस्त्र खोलकर, ओढ़ने की गांठ में डाल दिए। फिर, सेठ मोहन लाल के मर्दाना कपड़े मैं ख़ुद पहनकर आ गयी यहां। अब आगे, क्या करना है ? अब यह बात, सविस्तार गुलाबो बी कहेगी।

गुलाबा – सुनिए, अब चम्पाकली के साथ, पूरी टीम जायेगी भूतिया नाडी। अब इस बार, हमें पूरी तैयारी करके चलना है। क्या कहूं, आपको ? ग्रेनेड, पिस्तोलें आदि, सब साथ लेकर चलना है।

चम्पाकली – [हंसता हुआ कहता है] – अब यह क्या, रासो ? तालियां पीटते-पीटते, अब गोली मारेंगे क्या ? [गीत गाती है] **"अंखियों से गोली मारे.."** अरे गुलाबो बी, अब हम, अपनी इन कजरारी आंखों से आसानी से गोली मार सकती हैं..और बेचारा आदमी, घायल हो जाता है। फिर, इन विस्फोटक चीज़ों की कहां ज़रूरत ?

गुलाबा – अब मज़ाक का वक़्त नहीं है, चम्पाकली। अब वक़्त ही ऐसा आ गया है, तू जानती नहीं ? भूतिया नाडी से करीब डेड फलांग आगे, सौभाग मल का अड्डा है..बाबजी का झूपा। वहां इन तस्करों की बैठक चल रही है। इस ढाणी में जब कभी इन तस्करों की बैठक होती है..तब गाने-बजाने का प्रोग्राम अवश्य होता है।

चम्पाकली – अब आप, आगे कहिये।

गुलाबा – आज़ ये इकट्ठे हुए सारे तस्कर, पकड़े जाने चाहिए। अब आप सभी प्लान के मुताबिक़, आगे जाओ। और मैं पीछे से, वहीँ आ रही हूं। मगर याद रखना, आप सभी बहनों को अपने मोबाइल ओन रखने है।

मंच के ऊपर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद, मंच पर वापस रौशनी फ़ैल जाती है। वस्त्रहीन मोहनजी, बरगद की जटा थामे खड़े हैं। इधर लकड़बग्गे के चलने की आवाज़ सुनायी देती है, इस

सन्नाटे में यह कड़क-कड़क हड्डियां चरमराने जैसी आवाज़ बहुत डरावनी लग रही है। इस आवाज़ को सुनकर, मोहनजी भयभीत हो जाते हैं। अब बचने के लिए, वे बड़े पत्थर के पीछे छुप जाते हैं। थोड़ी देर बाद, जंगली जानवरों की आवाज़ें सुनायी देनी बंद हो जाती है। अब मोहनजी पत्थर के पीछे से निकलते हैं, अब उनकी ऊंची चढ़ी हुई सांस सामान्य हो जाती है। वे होंठों में ही, बड़बड़ाते नज़र आते हैं।]

मोहनजी – [होंठों में ही, बड़बड़ाते हुए कहते हैं] – कैसी कोजी हुई रे, रामापीर ? अब अपुन नंग-धड़ंग घुमते भद्दे लग रहे हैं, मेरे बाप ? अरे रेऽऽ रेऽऽ दिल के अन्दर पाप समाया, राम राम रामा पीर आपने कठोर सज़ा दे डाली मुझे। अब माफ़ कीजिये, मेरे रामा पीर..ओ अजमालजी के कुंवर, रुणेचा के धणी। मेरी ग़लती माफ़ कीजिये, मेरे बाबजी..आपको, घणी घणी खम्मा।

[नाडी की पाळ पर चलते मोहनजी को दिखाई दे जाती है, काली गीली मिट्टी। वह भी भले, काली कीट मिट्टी। फिर क्या ? वे झट उस मिट्टी को अपने पूरे बदन पर मलते हैं, मलते-मलते वे अपने दिल में सोचते जा रहे हैं..]

मोहनजी – [दिल के अन्दर, सोचते जा रहे हैं] – ये दिगम्बरिये, फिर करते क्या हैं ? इसी काली मिट्टी को भबूत की तरह, अपने पूरे बदन पर मलकर कर लेते हैं सर्दी और मच्छरों से बचाव। फिर मैं कढ़ी खायोड़ा, क्यों पीछे रहूं मिट्टी मलने में ? मैं तो बन जाऊंगा दो मिनट में, **'मसाणिया बाबा कढ़ी खायोड़ा'।'**

[अगले पल, क्या देखते हैं ? दिल में ऐसे विचार लाते हुए मोहनजी, पूरे बदन पर काली गीली मिट्टी मलते जा रहे हैं। मलने के बाद, वे खड़े होकर आभा को देखते हैं। अब बादल हट जाने से, मोहनजी को पूर्णमासी के चन्द्रमा के दर्शन होते हैं। इस चन्द्रमा की रौशनी में उनकी निग़ाह, उनके काले नग्न बदन पर निग़ाह गिरती है। चांदनी रात में उनका यह नंगा बदन..? ऐसा स्यामल सा दिखाई देने लगता है, के 'उनको अब यह चन्द्रमा की चांदनी, खलने लगती है।' उन्हें तो यह अंधेरा, चांदनी से अच्छा लगने लगा। अब वे अपने काले बदन को देखते-देखते विचारमग्न हो जाते हैं, के **"वे कितने बदसूरत है, उनके सामने उनकी पत्नी लाडी बाई ऐसी लगती है..मानो वह कोई हूर की परी हो, और वे ख़ुद है सांवले यम-दूत सरीखे ? इस करण अब उनको इस चांदनी रात से तो, काली अमावस की रात ही अच्छी लगने लगी है।"** इस चांदनी रात में डालियों पर बैठे उल्लूओं की कुहुक-कुहुक आवाज़, अब उन्हें ज़हर के माफ़िक लगती है। उनको तो ऐसा लग रहा है, मानो ये परिंदे उनकी हंसी उड़ा रहे हैं। यह विचार दिल में आते ही, झट शर्म के मारे अपनी राने हथेलियों से ढक देते हैं। अपनी राने ढाम्पते हुए, वे उन उल्लूओं को देखते हुए कहते हैं]

मोहनजी – मुझे क्या देखते हो, कढ़ी खायोड़ो ? आप और हम एक से हैं, फिर आप ठिठोली क्यों करते हो मेरे बाप ?

[इतना कहकर, शर्म के मारे मोहनजी वापस बरगद तले उसकी जटा पकड़कर खड़े हो जाते हैं..ताकि, वहां छाये अंधेरे में किसी को दिखाई न दे ? मगर कुछ ही मिनट बीते होंगे, तेज़ हवा का झोंका आता है और बरगद की डालियां ज़ोर से हिलती है। डालियों के हिलने से, चन्द्रमा की चांदनी बरगद के चबूतरे पर गिरती है, वहां उन्हें प्यारी के हाथ का रखा हुआ पान का बीड़ा दिखाई देता है। **इस ख़िलक़त में नशा करने वालों की ऐसी दशा होती है, जब नशे की चीज़ उनके पास नहीं होती..तब उन्हें नशे की तलब, अवश्य परेशान कर डालती है।** यही दशा जनाबे आली मोहनजी की है, प्यारी द्वारा उनके कपड़े ले जाने से ज़र्दे की कोथली उनकी पतलून की ज़ेब में रह जाती है। अब नशे की चीज़ न होने से बेचारे मोहनजी, तलब के मारे परेशान हो जाते हैं। इस स्थिति में, उन्हें यह पान का बीड़ा क्या दिखायी दे गया ? बस, उन्हें ऐसा लगता है 'मानो, उन्हें जन्नत मिल गया है..!' बस, फिर क्या ? झट लपककर उसे उठा लाते हैं, और झट उसे अपने मुंह में ठूंस देते हैं। अब उनको, किस्मत पर भरोसा हो जाता है। वे अपने दिल में बाबा रामसा पीर को दंडोत करते हैं, और होंठो में ही कहते हैं **"रामा पीर ने उनकी इस दुर्दशा में भी, पान का बीड़ा भेजकर इनका ख़्याल रखा है।"** अब पान ठूंसते ही, उनका दिमाग़ काम करने लगता है। अब उनको याद आता है, प्यारी के होंठ लाल-सुर्ख थे..हो सकता है, वह पान का नशा करती हो ? और ग़लती से वह एक पान का बीड़ा, यहां रखकर भूल गयी हो ? कुछ नहीं, बाबा भली करेगा। अच्छा हुआ, बाबा रामसा पीर के मेहर से यह पान का बीड़ा मुझे मिला। यह सोचकर, वे इस संकट की वेला में भी मुस्कराते हैं। अब वे सोचते जा रहे हैं, के...]

मोहनजी – [होंठों में ही कहते हैं] – भला किया, रामा पीर ने। अब आराम से, वक़्त कट जाएगा। अरे रामा पीर, कहीं जंगली जानवर टहलते हुए इधर आ गए तो..? और कोई मुझे मारकर खा गया तो, मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा मेरे रामा पीर ? कुछ नहीं, बाबा रामसा पीर की जय हो। अब बरगद के पेड़ के ऊपर चढ़कर कर लेते हैं, अपना बचाव। अब यह विचार दिमाग़ में आते ही, वे झट जटाएं पकड़कर चढ़ जाते हैं बरगद के ऊपर। उनके चढ़ते ही, नीड़ में बैठी चिड़ियों की नींद खुल जाती है। और तब वे सब पंखों से फुर्रर रर की आवाज़ निकालती हुई, एक साथ आभा में उड़ जाती है। इनके उड़ने से दूसरे पक्षी भी अपना बसेरा छोड़कर, फरणाटे की आवाज़ निकालते हुए एक साथ उड़ना शुरू करते हैं। सामने से आ रहे सौभाग मलसा के साथी, बेचारे डर जाते हैं इस फरणाटे की आवाज़ से। और दूसरी बात यह है, के इन लोगों के सर से अड़कर ये पक्षी गुज़रे हैं। बेचारे इन साथियों का दिल, डर के बारे मारे ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगता है। एक तो यह सूनी रात, दूसरा यह स्थान ठहरा कालिए भूत का ? बस वे कालिए भूत की संभावना से ही भयभीत

हो जाते हैं, और उनका बदन कांपने लगता है। उस वक़्त उनके दिमाग़ में, भूतिया नाडी का कालिया भूत ऐसा छा जाता है, के **'वे हर छोटी से छोटी आहट को, कालिए भूत के आगमन की सूचना समझ बैठें हैं।'** फिर तो जनाब, मज़बूत दिल रखने वालों का भी कलेज़ा कांप जाता है। इन लोगों में लम्बी-लम्बी डींग हांकने वाले, झमकू के काकाजी "कानजी बा" का बदन तो पीपली के पान की तरह कांपता जा रहा है। उनका एक तरह से डरना भी वाज़िब है, क्योंकि बरगद से उड़ा एक चमगादड़ उनकी कमीज़ के ऊपर जो चिपक गया है। इस कारण वे डरकर, ज़ोर से चिल्लाते हैं, और बेचारे दौड़ लगा देते हैं बरगद की तरफ़। मगर, झमकू रख़ता है, मज़बूत दिल। यों तो वह, काकाजी को कैसे डरकर भागने देता ? वह झट दौड़कर, कानजी बा को पकड़ता है। इधर कानजी बा पहले से डर रहे हैं, उस कालिये भूत से। वे बेचारे सोच रहे हैं **"कहां आ गए, जीवड़ा ? यहां इस भूतिया नाडी में रहता है, महा राक्षस कालिया भूत।"** अब जैसे ही झमकू कानजी बा को पकड़ता है, और उन्हें लगता है के 'कालिया भूत, उनके पीछे लग गया है।' फिर क्या ? झट झमकू को धक्का देकर, वे अपने-आप को छुड़ा लेते हैं। फिर दौड़कर जा पहुंचते हैं, बरगद के तले। मगर यहां तो जनाब अलग से पैदा हो जाता है, नया खिलका। वह चमगादड़ कानजी बा को छोड़कर, चिपक जाता है झमकू की पिछली दुकान पर। फिर क्या ? अचानक आयी आफ़त से अनजान यह बेचारा झमकू डरकर ज़ोर से चिल्लाता है, अब उसे पूरा वसूक हो जाता है..के, **'इस नाडी में, कालिया भूत का वासा ज़रूर है।'** जो चमगादड़ बनकर, हम सबको डराता जा रहा है। और, फिर क्या ? वह डरकर, ज़ोर से बोलता है **"कालियो भूत।"** उसकी ऐसी हालत देखकर, उसके शेष साथी डरकर लाठियां वहीँ फेंक देते हैं। और बरगद के पेड़ की तरफ़ भागकर, अपनी जान की हिफ़ाज़त करते हैं। इस तरह सभी आदमी, बरगद तले पहुंचकर आराम की सांस लेते हैं। थोड़ी देर बाद, हलक में आया हुआ कलेज़ा..आता है, ठिकाने। फिर क्या ? वे सभी एक-दूसरे की, खैरियत पूछने लग जाते हैं। अब बरगद के पास आने पर, वह चमागादड़ उड़कर बरगद की डाली पर जाकर बैठ जाता है। फिर रामा पीर जाने, क्यों अभी-तक कानजी बा हाम्फते-हाम्फते इस खोजबलिया सौभाग मलसा को भद्दी-भद्दी गालियां देते जा रहे हैं ?]

कानजी बा – [हाम्फते-हाम्फते बोलते हैं] – **भूतिया नाडी भेजने वाले सौभाग्या..ss भंडलाग्या, तूने तो मेरी एक तरह से जान ही निकाल दी। गधा तू यह कहकर ख़ुश हुआ, के लेकर आओ मोहनजी को यहां। [ज़ोर से कहते हैं] अब यहां, कहां बैठे हैं मोहनजी ?**

[बरगद की डाल पर बिराजे मोहनजी, के कानों में कानजी के शब्द सुनायी देते हैं। और सुनते ही, वे बहुत ख़ुश हो जाते हैं। रामसा पीर को दिल से दंडोत करते, उनको देते हैं धन्यवाद।
के, **'रामसा पीर कोई तो ऐसा है कढ़ी खायोड़ा इस ख़िलक़त में, जो इस विपत्ति के वक़्त मुझे याद**

कर रहा है। ऐसा भला आदमी आख़िर है, कौन ?' इतना सोचकर, वे ज़ोर से गरज़ना करते हुए बोलते हैं।]

मोहनजी – [ज़ोर से गरज़ना करते हुए, वे कहते हैं] – लोऽऽ, मैं यह आयाऽऽ।

[और कूद पड़ते हैं, सौभाग मलसा के साथियों के ऊपर..जो बरगद तले खड़े हैं। **एक तो मोहनजी ख़ुद सांवले वर्ण के, मानो किसी कोयले की खान के कोयले हो ? उनका पूरा बदन काला, ऊपर से उनके बदन पर मली हुई काली मिट्टी अलग। फिर इनके मुंह में ठूंसा हुआ पान का बीड़ा..जिससे हो जाते हैं, उनके होंठ पूरे लाल-सुर्ख। ऐसा लगता है, यह राक्षस किसी जिंदे आदमी को खाकर आया है। उस आदमी के ताज़े खून से, इस राक्षस के होंठ हो गए हैं लाल-सुर्ख। और इन होंठों से टपकती जा रही है लाल पीक, जो ताज़े खून की बूंदो की तरह दिखाई दे रही है। अब ऐसे बदन के ऊपर, चन्द्रमा की किरणें गिरती है..फिर, क्या कहना ? अब तो ये जनाबे आली मोहनजी, वास्तव में साक्षात यम राज़ ही लगते हैं।** फिर होना, क्या ? बेचारे सभी उनसे डरकर भागते हैं, भागते-भागते वे किलियाते हुए कहते जा रहे हैं "मर गए, मेरी जामण। कालिया भूत आ गया।" बात सत्य है, कोई अपने सामने जिंदे जिन्न या ख़बीस को अक्समात अपने ऊपर कूदता देख ले, तो मज़बूत से मज़बूत कलेज़ा रखने वाले लोगों के हौसले पस्त हो जाया करते हैं। अब सामने जो मंज़र आ रहा है, उसकी कल्पना करना आसान नहीं है। आगे-आगे सौभाग मलसा के साथी, और उनके पीछे काले रंग के नंग-धड़ंग कालिया भूत बने मोहनजी..दौड़ते ही जा रहे हैं। ऊपर से, वे इनका पीछा करते हुए कहते जा रहे हैं]

मोहनजी – [पीछा करते हुए, ज़ोर से कहते जा रहे हैं] – रुको रेऽऽ रुको रेऽऽ। मैं भूखा हूं, रात से कुछ नहीं खाया है। मैं भूखा हूं..

कानजी बा – [दौड़ने की रफ़्तार बढ़ाते-बढ़ाते, कहते जाते हैं] – दौड़ो रे दौड़ो। कोई रुकेगा नहीं, पीछे आ रहा है..कालिया भूत। पूरा ही निगल जाएगा, दौड़ो रे दौड़ो।

[सौभाग मलसा को गालियां बकते, उनके साथी जान बचाकर दौड़ते जा रहे हैं। अचानक तालियां पीटते हिज़ड़े नज़दीक आते दिखाई देते हैं। **रामसा पीर ने कैसी कोज़ी की, आगे हिज़ड़े और पीछे कालिया भूत। इधर हिज़ड़ों के पास जाए तो वे कमबख़्त, इन सबका चीर-हरण करके इनको नंगा कर दे ? और पीछे जाए तो यह कालिया भूत, उन लोगों को पूरा ही निगल जाए..इधर कुआ, उधर खाई ?** सारे साथी रामसा पीर का ध्यान लगाते हुए, उन्होंने अपने हाथ ऊंचे कर डाले। और साथ-साथ वे डर के मारे, किलियाते जा रहे हैं ? रामसा पीर जाने, अचानक गुलाबा को न मालुम क्यों चढ़ जाता है जोश ? **वह उछलता है, और हवा में उसका घाघरा छाते की तरह लहराता है..और**

वह सीधा आकर, कानजी बा के ऊपर कूद पड़ता है। उसके नीचे आते वक़्त, बेचारे कानजी बा घाघरे के नीचे दब जाते हैं। इस तरह उनका किलियाना, स्वत: बंद हो जाता है। अब उधर, इस चम्पाकली का क्या कहना ? वह भी जोश में आ जाता है, वह आकर झमकू की लचकती कमर को इस तरह पकड़ता है..के, 'उसका डर के मारे नाचना-कूदना, अपने-आप बंद हो जाता है।' फिर क्या ? वह दोनों हाथों से उसके पायजामें को पकड़कर, उसका तीज़ारबंद [नाड़ा] खोल देता है..फिर उस तीजारबंद को हाथ में लेकर, उसे हंटर की तरह लहराता हुआ तांडव डांस कर बैठता है। डांस करता हुआ वह चम्पाकली, उस झमकू को डराता जा रहा है। अब बेचारा झमकू झमक-झमक करता हुआ, पायजामा थामे फुदकता जा रहा है। अक्समात काले भैरव समान मोहनजी को जोश आ जाता है, ऐसा लगता है उनके पिंड में भैरव देव ने प्रवेश कर लिया है। वे छलांग लगा देते हैं, झमकू के ऊपर। कूदते वक़्त, उनके मुख से रक्त समान पीक निकल जाती है। इस तरह सौभाग मलसा के साथियों को लगता है, के 'कालिया भूत बने मोहनजी के मुख से, किसी भक्षण किये गए इंसान का रक्त बहता जा रहा हैं ?' उनका यह भयानक रूप देखकर, झमकू का पूरा बदन कांप जाता है। और वह चिल्लाता है, ज़ोर से "मर गया, मेरी जामण। कालिया भूत खावे रेऽऽ।" अब तो इस झमकू को बचानी है, अपनी जान। किसी तरह से मोहनजी के चंगुल से बच जाता है, मगर कहां बीच में आ गया...यह बिना नाड़े का, पायजामा ? उस पायजामे को पकड़कर, उसका भागना भी हो गया है..मुश्किल ? बेचारा झमकू, भागता भी कैसे ? बस, फिर क्या ? झट पायजामे को फेंककर वह इस तरह भागता है, जैसे किसी बिल्ली को देख चूहा दौड़ जाता है ? मगर भागकर, वह जाए भी कहां ? गुलाबा उसका रास्ता रोककर, एक लात मारता है उसकी रानो पर...और उसके गिर जाने पर, दूसरी लात जमा देता है उसकी पिछली दुकान पर। लात खाते ही, झमकू हो जाता है चारों खाना चित्त। फिर मोहनजी चेत जाते हैं, झट ज़मीन पर पड़े झमकू का पायजामा उठा लेते हैं। मगर, उसका तीज़ारबंद नदारद ? तब वे तांडव डांस कर रहे चम्पाकली के हाथ से, नाड़ा छीन लेते हैं। नीम के डांखले से नाड़ा पिरोकर, पायजामा में डाल देते हैं। नाड़ा डालकर, वे झट पायजामा पहन लेते हैं। इधर इस खींच-तान में गुलाबा के हाथ में आ जाता है, झमकू का कमीज़। गुलाबा उस कमीज़ को मोहनजी के ऊपर फेंकता है, वे बेचारे आशामुखी की तरह इंतज़ार कर ही रहे थे..के कोई भला आदमी उन्हें कमीज़ लाकर दे दे तो, बाबा रामापीर उसका भला करे। फिर, क्या ? वे झट कमीज़ पहनकर, हो जाते हैं अड़ीजंट तैयार। **अब ये आशामुखी बने मोहनजी, गुलाबा को ढेरों दुआएं देते हैं।]**

मोहनजी – गुलाबा, तू जीता रह। कढ़ी खायोड़ा, रामा पीर तेरी लम्बी उम्र करे। तूने पायजामा लाकर मुझे दिया, रामा पीर करे तू लोगों का पतलून-पायजामा उतारता रह और मेरे जैसे नंग-धडंग लोगों को पहनाता रह..मेरे बाप।

[उधर दूसरे हिंजड़े, कहां ख़ाली बैठने वाले ? वे सभी हिंजड़े तो असल में जंग-ए-मैदान के जंगजू लगने लगे ? सौभाग मलसा के एक-एक साथी को पकड़कर, वे उन लोगों को छठी का दूध पिलाते जा रहे हैं। अब तो मोहनजी अगली लड़ाई के लिए, हो गए हैं तैयार। उधर कानजी बा की सांसें धौकनी की तरह चल रही है, वे ज़ेब से निकालते हैं, दारु की बोतल। फिर वे दो घूंट ही पीते हैं, तभी अगला हमला करने के लिए..यह चम्पाकली आ जाता है उनके नज़दीक। फिर क्या ? बेचारे कानजी बा उसी बोतल को फेंक देते हैं चम्पाकली के ऊपर, और इस तरह वे अपना बचाव कर लेते हैं। मगर चम्पाकली ठहरा, अलामों का चाचा। वह झट नीचे झुककर, अपना कर लेता है बचाव। तब कानजी बा की फेंकी गयी बोतल, उसके पास खड़े अमरिये के ऊपर गिरती है। यहां तो बोतल का ढक्कन अच्छी तरह से कसा नहीं गया है, इस कारण इस बोतल की थोड़ी दारु उस अमरिये के वस्त्रों पर गिर जाती है। यह गिरी हुई दारु झट वायु के संपर्क में आकर चारों तरफ़ फैला देती है, ऐसी गंध..जो हर दारुखोरे का, मन लुभाती जाती है। यह गंध, अमरिये को क्या ? यहां तो यह गंध, सभी साथियों को बावला बना देती है। अब ये लोग उस बोतल से एक-दो घूंट दारु पीकर, फिर उस बोतल को दूसरे साथी की तरफ़ उछाल देते हैं। अब हरेक साथी दो-दो घूंट दारु के पीकर, बोतल दूसरे साथी की तरफ़ बोतल उछालता हुआ मस्ती लेता जा रहा है, और सभी भूल गए हैं के **"सौभाग मलसा ने इन लोगों को, यहां क्यों भेजा है ?'** बस अब यहां "दारु पीकर बोतल फेंकना और बोतल केच करना" यही गेम थोड़ी देर तक चलता है, आख़िर बोतल में भरी दारु भी ख़त्म हो जाती है। इन लोगों ने दारु के दो घूंट क्या पी लिये हैं, अब इनको दारु पीने की इच्छा घटने के स्थान पर निरंतर बढ़ती जा रही है। क्योंकि इतने लोगों के बीच यह दारु, कहां पर्याप्त ? आख़िर बेचारा आशामुखी बना हुआ अमरिया, कानजी बा का मुंह ताकता है। कानजी बा ठहरे, पक्के दरुखोरे। **वे यहां आते वक़्त, लाखाजी के झूपड़े में पड़े जरीकन से छ: बोतले यहां भरकर लाये हैं। मगर उतावली के चक्कर में यहां हो जाती है, उनसे एक भूल..उन्होंने किसी से पूछा नहीं, के 'इस जरीकन में, क्या भरा है ?' एक तो यह बात है, पूरे दिन कानजी बा रहते हैं दारु के नशे में। इनको दारु और पेट्रोल में, कोई फ़र्क महसूस नहीं होता..? कारण यह है, लाखाजी ने सौभाग मलसा की गाड़ियों के लिए एक बड़ा जरीकन पेट्रोल से भरवाकर अपने झोपड़े में रखा है। और वे इन लोगों से कहना भूल गए, यह दारु का जरीकन न होकर पेट्रोल का है। बस अब नासमझी में कानजी बा, इसी पेट्रोल से भरी बोतले अपने साथियों को थमा देते हैं। इन साथियों को क्या मालुम, यह दारु न होकर पेट्रोल है ? वे बेचारे पहले से, दारु के दो घूँट पीकर मदमस्त हाथी की तरह मतवाले बन चुके हैं। ऊपर से यह कपड़ो के ऊपर गिरी दारु की गंध, उनके सर पर चढ़कर बोलने लगी है। इस कारण, अब वे सभी एक-दूसरे को गाली-गलोज करते हुए आपस में झगड़ते जा रहे हैं...के, तूने पहले दो घूँट दारु मुझसे ज़्यादा क्यों पी ? इधर कानजी बा ने थमा दी उन्हें, पेट्रोल से भरी बोतलें। फिर क्या ? वे एक-दूसरे के ऊपर, बोतल के ढक्कन खोलकर फेंकने लगे। इस तरह अब उनको कोई भान नहीं, इस झगड़े में सभी साथियों के**

कपड़ों पर ज्वलनशील पेट्रोल गिरता जा रहा है। ये सभी होली के हुड़दंग की तरह, एक-दूसरे के ऊपर बोतले फेंककर मस्ती लेते जा रहे हैं। सभी साथियों के ऊपर, मतवाले हाथी की तरह मद चढ़ चुका है। उधर मोहनजी हाथ डालते हैं, पायजामे की जेबों में। ज़ेब में हाथ डालते ही, उनके हाथ लग जाता है, एक बीड़ी का बण्डल और माचिस की डिबिया। एक तो यह बीड़ी का बण्डल, मोहनजी के मुफ़्त में हाथ आ गया..ऊपर से ख़ुद मोहनजी ठहरे, कंजूस नंबर एक। ज़र्दे जैसा सस्ता नशा करने वाले मोहनजी ने, कभी बीड़ी का नशा किया नहीं। इन्होंने तो केवल इस वाचमेन कानजी को, बीड़ी पीते ज़रूर देखा है। अब उनके दिमाग़ में इस नए नशे का, तुजुर्बा लेने का विचार पैदा होता है। फिर क्या ? वे एक-एक बीड़ी को माचिस से सिलागाकर दो-चार कश लेते हैं, फिर मस्ती लेते हुए उन सुलगती हुई बीडियों को वे सौभाग मलसा के साथियों के ऊपर फेंकते जा रहे हैं। फिर क्या ? सुलगती बीड़ियां उनके कपड़ों पर गिरे पेट्रोल और दारु को पाते ही, वे उनके कपड़ो को जलाने लगती है। इन जलते कपड़ो के कारण, अब उनका बदन भी जलने लगता है। अब इन साथियों की हालत, सांप-छछूंदर के समान बन जाती है। न तो वे इस जलन को बर्दाश्त कर पा रहे है, और ना वे इन जलते कपड़ो को उतारकर नंगे होने की हिम्मत जुटा पाते हैं ? बस, अब ये सारे गैंग के आदमी बंदरो की तरह कूदते-फांदते हैं। गुलाबा अपने साथियों को इशारा करता है, सभी साथी आगे बढ़कर उन सब गैंग के आदमियों को रस्सियों से बांधने लगते हैं। थोड़ी देर में ही सभी आदमी, रस्सियों से बांध लिए जाते हैं। अब रहम खाकर सभी हिज़ड़ों ने झट भौम से धूल उठाकर सौभाग मलसा के साथियों के सुलगते कपड़ों पर डाल देते हैं। इस तरह, आग ठंडी कर देते हैं। ऐसा लगता है, अभी-तक कानजी बा का नशा उतरा नहीं है। वे सौभाग मलसा को गालियां देते-देते, अब अपने साथियो भी गालियां देते जा रहे हैं। फिर अब, बेफालतू की गालियां सुने कौन ? नशा तो, उन्होंने भी किया है। वे भी उनको सुनाते जा रहे हैं, गालियां। इस तरह अब इनके बीच मच जाता है, जबरा वाक-युद्ध। अब वे एक दूसरे की ग़लतियाँ बताते बताते, झगड़ पड़ते हैं। वे सभी एक-दूसरे की कमज़ोरियां बताते हुए, भद्दी-भद्दी गालियां बकते जा रहे हैं। इस तरह काफ़ी देर बिना पैसे का मेला देखने के बाद, मोहनजी को अब अपने जूत्ते याद आ जाते हैं..जो उनको पांवों में कंकर चुभने से, सहसा याद आ गए हैं। वे बेचारे उन जूत्तों को, ढूढ़े भी कहां ? आख़िर बड़े पत्थर के पास जूत्ते रखने की बात, उन्हें याद आ जाती है। वे बड़े पत्थर के पास जाते हैं, जहां है चूहे का बिल। वहां रखे जूत्ते फटा-फट उठा लाते हैं, मगर जैसे ही वे उन जूत्तो में अपने पांव डालते हैं..उन्हें पावों में गुदगुदी महसूस होती है। जूत्तों में क्या है, कौन घुस गया है अन्दर ? बेचारे भयभीत होकर जूत्तों को फेंक देते हैं। फेंकते ही, उनमें से दो चुहियां कूदकर बाहर निकलती है। तब मोहनजी उन चुहियों को गालियां बकते हुए, अपना डायलोग सुना देते हैं।]

मोहनजी – रांडा, मर जाओ। मैं तो रहा भोला जीव, बचाया मुझे मेरे रामसा पीर ने। ओ रामसा पीर आपको घणी-घणी खम्मा, मेरे बाबजी।

गुलाबा – [हंसता हुआ, कहता है] – अच्छा हुआ, चुहिया ही घुसी इन जूतों में। मेरे सेठ मोहन लाल, कहीं कालंदर सांप नहीं घुसा आपके जूत्तो में..?

मोहनजी – यों क्या बोल रहा है, गुलाबा ? कढ़ी खायोड़ा, ऐसा बोल मत। गधेड़ा अगर सांप निकल जाता तो, भला आदमी तू तो मुझे मार डालता ?

गुलाबा – [हंसकर बोलता है] – सुनिए, मेरे सेठ। हम तो जनाब, सभी हैं हिज़डे। जैसी सेवा हम लोगों से होगी, वैसी कर लेंगे आपकी। [चम्पाकली से कहता है] जा ए, चम्पाकली। मोहनजी को ले जा दे, अपनी हवेली। और फिर, कीजिये इनकी ज़ोर की ख़ातिर।

चम्पाकली - आज की महफ़िल के ख़ास मेहमान समझकर, इनको ले जा रही हूं। इनको नहला दूंगी, अच्छे वस्त्र पहना दूंगी। फिर हम सब बहने खूब नाचेगी, गायेगी और इनको मिलेगा महफ़िल का आनंद।

प्यारी – चम्पाकली। तू फ़िक्र करना, मत। गैंग के आदमियों को हम ले जाकर, उन्हें बंद करवा देंगे हवालात के अन्दर। तू अकेली चली जा, मोहनजी को लेकर। बाकी हम सब चली जायेंगी,, बाबजी के झूपे।

[मोहनजी जाते हैं, चम्पाकली के साथ। गुलाबा हिजडा और उसकी हिज़डों की टीम बाबजी के झूपे की ओर जाती दिखाई देती है। मंच के ऊपर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच पर रौशनी फ़ैल जाती है। अब हिज़डों की हवेली का मंजर सामने दिखाई देता है। बडे होल में बूढ़े किन्नर के पहलू में, कई उछ्रंखल किन्नर बैठे हैं। बैठे-बैठे वे, बेचारे इस बूढ़े किन्नर से मज़ाक करते जा रहे हैं।]

सब्बू – यह क्या, बडी बी ? आप मर्दों को हिज़डे बना देती हैं, और हिजडों को बना देती हैं मर्द। यह क्या रासो चल रहा है, बडी बी ?

बुढा किन्नर – देख सब्बू, अभी तो मोहनजी "हिजडा" बनने गए हैं।

सब्बू – [आश्चर्य से कहता है] – क्या कहा, बड़ी बी ? ये रसिक मोहनजी...इस प्यारी के प्रेमी ? कहीं आपने कोई नशे की चीज़ तो नहीं खिला दी, उनको ?

बुढा किन्नर – [हंसता-हंसता कहता है] – ले देख, दरवाज़े की तरफ़। [ज़ोर से] बाअदब होशियार, हिन्दुस्तान-ए-किन्नर मल्लिका हसीं मोहतरमा मोहनी बाई क़दमबोसी कर रही है..होशियार।

[औरतों के कपड़े पहने मोहनजी, चम्पाकली के साथ होल में आते हैं। उनके रुख़्सारों पर लाली, और होंठों पर लिपस्टिक लगी हुई है। इस वक़्त वे नशे में दिखाई दे रहे हैं, क्योंकि उनके पांव लड़खड़ा रहे हैं। कभी वे इधर हिचकोला खा रहे हैं, कभी उधर। बेचारा चम्पाकली उनको संभालता हुआ, लाकर उनको गद्दे पर बैठा देता है। उनके पास चांदी की थाली रख देता है, जिसमें कई पान के बीड़े रखे हैं। वे उस थाली से एक-एक पान लेकर, अपने मुंह में ठूंसते जा रहे हैं। अब करते भी क्या, बेचारे ? **आख़िर मोहनजी है, आदत से लाचार..यह उनकी आदत मुफ़्त का माल खाने की है भी, बुरी। मुफ़्त की चीज़ को मोहनजी छोड़ नहीं सकते, भले पास रखे थाल में हो नशे के पान। नशीली चीज़ से उनको कोई लेना-देना नहीं, बस एक बात का उन्हें ध्यान रहता है के 'खाने की चीज़ पर, उनकी ज़ेब की पैसे नहीं लगने चाहिए ?'** उनको पान खाते देखकर, बुढा किन्नर ख़ुश होता है। और ख़ुश होकर, वह ढोलकी बजाने लगता है। फिर क्या ? मोहनजी का दिल ख़ुश करने के लिए, सब्बू तेज़ गति से नाचने लगता है। नाचता-नाचता वह मोहनजी के निकट आता है, फिर उन्हें झुककर पातरियों की तरह कोर्निश करता है। इस सब्बू में, तवायफों की अदाएं पाकर मोहनजी ख़ुश हो जाते हैं। फिर वे उठकर, झट सब्बू को अपनी बाहों में लेकर नाचते हैं। और नाचते-नाचते वे, गीत भी अलग से गाते जा रहे हैं।]

मोहनजी – [नाचते हुए गाते हैं] – प्यारी ए प्यारी, तू तो है जग की रानी। तूझे क्या कहूं मैं, प्यारी। तू तो है, मेरी लाडी। तेरे पास है काली सफ़ारी, और मेरे पास है नंगी देह। दे दे प्यारी आज मुझे तू, दे दे मेरी काली सफारी। मेरी लाज़ रखना, तेरे हाथ में.. तू तो है, मेरी लाडी। तेरे पास है मेरा दिल, और मेरे पास है रुली ज़िंदगी। दे दे मेरी काली सफारी, प्यारी ए प्यारी, तू तो है जग की रानी।

[पर्दे के पीछे प्यारी खड़ी है, उसके नयनों से ढलक रहे आंसूओं से कजरारे नयन नम हो जाते हैं। वह पास खड़ी चम्पाकली, से कहती है]

प्यारी – [एक-एक आंसू के कतरे को, हाथ से साफ़ करती हुई] – देख ए चम्पाकली, ये मोहनजी मुझे कितना याद कर रहे हैं ? तू कहती है, तो मैं उनके सामने चली जाऊं ?

चम्पाकली – अरे ए गधी नंबर ६३६, जनाना वस्त्र पहनकर क्या तूझमे औरतों के गुण आ गए ? ला दूं मोहनजी को यहां, फिर ले लेंगे तूझे अपने आगोश में। सोच ले, पहले। इसके बाद तेरी इज़्ज़त बचाने के लिए, कोई आगे आएगा नहीं।

[नशा वाले पान ज़्यादा ठोकने से, उनको नशा चढ़ जाना वाज़िब है। क्योंकि मोहनजी ठहरे ऐसे आदमी, जो कभी मुफ़्त की चीज़ नहीं छोड़ते। भले यहां रखे मीठे पत्ते के बीड़ो में, नशे की चीज़ डाली हुई है ? इस कारण मोहनजी को नींद आनी वाज़िब है, फिर क्या ? बेचारे मदहोश होकर, गद्दे पर आकर गिर पड़ते हैं। अब गुलाबा नज़दीक आता है, नाच गाना स्वत: बंद हो जाता है। आस-पास खड़े किन्नरों को, वह कहता है]

गुलाबा – सौभाग मल और उसके साथी पकड़े गए हैं, इन लोगों को मैं कोतवाली में छोड़कर आयी हूं। [चम्पाकली और प्यारी पर्दे के पीछे से निकलकर, सामने आ जाती है] ए चम्पाकली, अब तू मोहनजी को उनका सफारी सूट पहना दे। कपड़ो की तलाशी, पूरी हो गयी है। अब सुन, ख़ुश-खबरी यह है..

चम्पाकली – [मुस्कराकर कहती है] - क्या ख़ुश-ख़बरी है, बताइये ना।

गुलाबा – अब अपुन पूरी गैंग का मटियामेट कर देंगे, देख कल तू ऐसे करना..जब भी तूझे चपकू गैंग के आदमी दिखाई दे जाय, तब तू उनको यह सुनाते हुए कहना के "चपकू गैंग के आदमियों ने सौभाग मलसा की गैंग पर हमला किया, और सौभाग मलसा और उनके आदमियों को उठाकर वे ले गए।" इस तरह..

चम्पाकली – इस तरह, क्या ? आगे कहिये।

गुलाबा – इस तरह अपुन का कारनामा, किसी को मालुम नहीं होगा। फिर इन दोनों गैंग के आदमी आपस में लड़ते रहेंगे, और अपुन इनकी फूट का फ़ायदा उठाते रहेंगे।

चम्पाकली – मगर, विवाद का कारण क्या बताऊंगी ? अभी इस समय, दोनों गैंग के बीच सदभाव है..

गुलाबा – देख चम्पाकली, अभी मेरे पास जी.आर.पी. के थानेदार साहब प्रेम सिंहजी सा के भेजे समाचार आये हैं, के "इस चपकू गैंग के हलके के अन्दर, मंजु कंवर के बावन हज़ार रुपये और स्वर्ण आभूषण चुरा लिए गए हैं।"

चम्पाकली – कोई पकड़ा गया, या नहीं ?

गुलाबा – चपकू गैंग के रघुवीर सिंह और वीरेंद्र राव नाम के आदमी, पकड़े गए हैं। ये लोग मुसाफ़िरों को, उनके सामान ऊंचाने में मदद करते-करते वे उनका कीमती सामान बहुत कुशलता से चुरा लिया करते।

चम्पाकली - यह मैंने भी सुना है, गुलाबो बी। इस गैंग की खारची वाली टीम, एक रुट पर चोरी करने के बाद..वह उस रूट पर, कई महिनों तक वारदात नहीं करती। मगर इस बार इन लोगों ने मंजु बाई का माल चुराया है, और यह मंजु बाई है सौभाग मलसा की रिश्तेदार।

गुलाबो – बस, यह बात ही मैं तूझे समझाना चाहती हूं..के, तेरी फैलाई गयी अफ़वाह ज़रूर असर करेगी। क्योंकि, यह सौभाग मल मंजु बाई का रिश्तेदार है। अब तेरे दिमाग़ में यह बैठा ले, किसी तरह इन दोनों गैंग के बीच गैंग-वार हो जानी चाहिए।

चम्पाकली – जी हां, तब ही हम इस झगड़े का फायदा उठा सकती हैं। साथ-साथ, गैंग के बचे हुए आदमियों को भी, हम पकड़ सकती हैं।

सब्बू – अरे, गुलाबो बी। अगर सौभाग मल के समाचार इस चपकू गैंग के पास पहुंच गए हो तो, फिर...

गुलाबा – अरे..अरेSS कागली जैसे क्यों बोल रही है, सब्बू बाई ? पहले असल बात सुन ले यह सौभाग मल न तो इस मंजु बाई का रिश्तेदार है..अगर होता भी तो यह सौभाग मल कभी अपने धंधे में, रिश्तेदारी को लाता नहीं है।

चम्पाकली – तब क्या ?

गुलाबो – बस अपुन को केवल अफ़वाह फैलानी है, के "यह सौभाग मल, इस मंजु बाई का रिश्तेदार है। चोरी होने के बाद, इसने खोज-बीन करके इस वीरेंद्र और रघुवीर की जन्म-पत्री निकाल डाली। फिर यह पूरा ब्यौरा, जी.आर.पी. के थानेदार साहब प्रेम सिंहजी को दे डाला।

चम्पाकली – इस कारण ही, ये दोनों नालायक पुलिस के हत्थे चढ़े हैं। इस अफ़वाह के फ़ैल जाने से, यह फ़क़ीर बाबा ज़रूर इस सौभाग मल का दुश्मन बन जाएगा। फिर दोनों गैंग के बीच, ज़ोरों की जंग होगी, और इसका फ़ायदा हमको ज़रूर मिलेगा। गुलाबो बी, क्या आप यही बात कहना चाहती हैं ?

गुलाबा – एक बात और, तेरे दिमाग़ में बैठा देना के ‘यह मोहन लाल बैठा है पुलिस के हिरासत में...रिमाण्ड पर। इसलिए कहता हूं, उसके मिलने का सवाल ही नहीं..बस राज़ की बात, राज़ ही रहेगी। इस तरह फ़क़ीर बाबा अपनी गैंग के साथ पकड़ा जाएगा, और सौभाग मल के बचे-खुचे आदमी भी पकड़ लिए जायेंगे।

[अब दूसरे लोगों को हिरासत में लेने की बातें सुनते ही प्यारी का दिल खट्टा हो जाता है, के यह ‘गुलाबा बी दूसरे लोगों को गिरफ्तार करने की बात करती जा रही है, मगर ख़ास बात यह है कि, यह निपराध सिद्ध होने के बाद भी **मोहनजी को छोड़ने की कोशिश** क्यों नहीं कर रही है ?’ आख़िर, हताश होका वह हाथ जोड़कर, गुलाबा से कहती है]

प्यारी – [हाथ जोड़कर कहती है] – गुलाबो बी अब तो आप, मेरे जीजाजी को छोड़ दीजिये ना।

गुलाबा – अब मुझे भी भरोसा हो गया है, के ‘जुलिट इसको प्रेम से नहीं देखती।’ मगर फिर भी मैं एक बार, मोहन लाल की परीक्षा ज़रूर लूंगी। अब ऐसा करते हैं, इस मोहन लाल को इसके कपड़े पहना देते हैं। और तड़के इसे, खारची स्टेशन पर छोड़ देते हैं। नींद खुलने पर, यह अपने-आप चला जाएगा जोधपुर।

प्यारी - यों कैसे छोड़ रही है आप, गुलाबो बी ? अभी तो इनका बैग और टिफिन पड़ा है, जुलिट के पास। फिर कौन लाएगा, बैग और इनका टिफ़िन ?

गुलाबा – तू फ़िक्र मत कर, बैग और टिफ़िन मैं ले आयी हूं। बस तू अब, इस मोहन लाल की विदाई की तैयारी कर।

[मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच पर रौशनी फैलती है। और सामने आता है, खारची [मारवाड़-जंक्शन] स्टेशन का प्रथम श्रेणी का प्रतीक्षालय, जहां मोहनजी आराम से एक सोफे पर लेटे हुए दिखाई दे रहे हैं। अचानक, सीटी देती हुई जम्मू-तवी एक्सप्रेस प्लेटफोर्म पर आकर रुकती है। सीटी की आवाज़ से मोहनजी की नींद खुल जाती है। जगते ही उनकी नज़र, सामने सोफे पर बैठे यात्रियों पर गिरती है। वे मोहनजी की सूरत को देखकर, हंसते जा रहे हैं। बेचारे मोहनजी उन लोगों को हंसता पाकर चमक जाते हैं, के ‘यह क्या खिलका है ?’ इस वक़्त मोहनजी के मुंह पर औरतों का मेक-अप देखकर, एक यात्री दूसरे यात्री से कह रहा है]

एक यात्री – नहीं रे छोगा, मुझे तो यह आदमी हंडरेड परसेंट हिज़डा ही लगता है। देख इधर, कैसे लगायी है इसने..अपने गालो पर, लाली ?

छोगा – [हंसता हुआ, कहता है] – बात सही है रे, देख इधर इसके होंठों पर विदेशी लिपस्टिक अलग से लगी है।

[यह सुनते ही, मोहनजी भड़क जाते हैं। और फिर, उसको कटु वचन सुना देते हैं।]

मोहनजी – [भड़ककर कहते हैं] - मैं तो मर्द हूं, कढ़ी खायोड़ा। तू क्या है, जरख़ ?

छोगा – [हंसकर कहता है] – हम लोगों को, क्या भरोसा ? के, आप औरत हैं या मर्द ? मुझे तो आप, ना मर्द लगते हैं और ना औरत। हम यों कह सकते हैं, आप हिज़ड़े ही हैं।

[इतना सुनना, राठोड़ी मूंछ्या वाले मोहनजी के लिए नाक़ाबिले बर्दाश्त है। वे गुस्से में बकते हुए, कहते हैं]

मोहनजी – [क्रोधित होकर, कहते हैं] – नीचे झुककर, देख ले। देख लेSS, देख़ लेSS...

[अब चारों तरफ़ हंसी के ठहाके गूंजते हैं, जिससे बेचारे मोहनजी की नींद खुल जाती है। और उनकी आँखों के सामने, बीती घटना के चित्र आने बंद हो जाते हैं। वे खारची के वोटिंग-रूम की जगह, अपने-आपको रेल गाड़ी में पाते हैं। **सामने अपने साथियों को देखकर, उन्हें बहुत आश्चर्य होता है..के 'क्या अभी-तक वे, बीती हुई यादों को सपने स्वप्न में संजोते आ रहे थे..? अब उनको याद आता है, इस गाड़ी में बैठे वे आंसू ढलका रहे थे..तब ओमजी ने बड़े मंगवाने का आर्डर मारा और रशीद भाई ने एम.एस.टी.कट चाय लाने का।'** अब मोहनजी को पागल की तरह निहारते देख, रतनजी कहते हैं।]

रतनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – साहब, आपने यह क्या कर डाला ? दाल के सारे बड़े नीचे डाल दिए, और ऊपर से बेटी का बाप आप यों कहते जा रहे हैं..के, "नीचे झुककर, देख ले। देख लेSS, देख़ लेSS...

रशीद भाई – साहब, आपको खाना हो तो आप ही देख लीजिये। हम तीनों तो, अपने हिस्से के गरमा-गरम बड़े ठोक चुके हैं। और अपने हिस्से की, चाय भी पी गए। अब आपकी चाय ठंडी हो रही है, और बड़े आपने नीचे गिरा दिए हैं। जो तख़्त के नीचे चले गए, खाना हो तो आप ख़ुद नीचे झुककर एक-एक बड़ा बीन लीजिये..

ओमजी – करमठोक है साहब, बाबा के हुक्म से बड़े मंगवाए...इन्होने नीचे आँगन पर फेंककर, प्रसाद का निरादर किया है। ऊपर से जनाब, लेते जा रहे हैं खर्राटे ?

रशीद भाई – साहब, आपको नहीं खाने हैं तो आप नीचे झुककर एक-एक बड़े को बीन लीजिये, और फिर किसी भूखे मंगते-फ़क़ीर को दे दीजियेगा। बेचारा ग़रीब आपको दुआ देगा, जनाब।

[यह सुनकर मोहनजी फ़िक्र में डूब जाते हैं, के "ये मुफ़्त के बड़े कैसे मंगते-फकीरों को थमा दें ? कहीं इन बेवकूफों के बोलने से, कोई मंगता-फ़क़ीर इधर आ न जाय ? इस तरह मुफ़्त के बड़े, हाथ से निकल जायंगे ?" यह सोचकर, वे ज़ोर से चिल्लाते हुए कहते हैं]

मोहनजी – [ज़ोर से चिल्लाते हुए, कहते हैं] – बड़े, मैं क्यों नहीं खाऊं...? मैं तो भूखा हूं, कालिये भूत की तरह।

[इतना कहकर, वे नीचे झुकते हैं। और नीचे आंगन में पड़े, एक-एक बड़े को बीन लेते हैं। फिर क्या ? गपा-गप सारे बड़े खाकर, ऊपर से ठंडी चाय गटा-गट पी जाते हैं। केबीन में खड़ा एक देहाती, इनका यह स्वांग देख़ता जा रहा है। बरबस उसके मुंह से, ये शब्द निकल उठते हैं]

देहाती – अरे रेSS रेSS, ये साहब इंसान है या राक्षस ? मुझे तो लगता है, इनके पिंड में कालिया भूत आ गया है। जो कमबख़्त, कई बरसों से भूखा है। [दूसरे बैठे यात्रियों से कहता है] अरे मेरे बाप, आप इस केबीन में क्यों बैठे हैं ? यहां बैठे रहे, तो साहब के पिंड से यह कालिया भूत निकलकर आपका भख ले लेगा।

[इतना कहकर वह देहाती, दौड़कर चला जाता है दूसरे केबीन में। इस देहाती की बात सुनकर, कई यात्री अपना सामान उठाकर चल देते हैं दूसरे केबीनों की ओर। बेचारे ये यात्री भैरू बाबा का स्मरण करते हुए, दूसरे केबीनों की तरफ़ ऐसे दौड़ पड़े हैं..मानो किसी चूहे के पीछे बिल्ली आ रही हो..! फिर क्या ? वहां बैठे यात्रियों को, वे चिल्ला-चिल्लाकर सुनाते जा रहे हैं]

दौड़ रहे यात्री गण – [चिल्लाते हुए कहते हैं] – बचा रेSS, लूणी वाले भैरू बाबा। इस कालिये भूत से बचाओ, बाबजी। तेरे थान पर आकर सवा मणी करेंगे, बाबा।

[कहते-कहते कई लोग उस केबीन से गुज़रते हैं, जहां बैठे हैं कालबेलिये..जो मेहरान-गढ़ में आये आगंतुकों के समक्ष अपना प्रोग्राम प्रस्तुत करने जा रहे हैं, अत: अभी वे यहां बैठे गीत गाते हुए नृत्य का रियाज़ कर रहे हैं। इस रियाज़ में उनके मर्द गीत गा रहे हैं, और उनकी औरते नृत्य करती जा रही है।]

कालबेलिया के मर्द-औरत – [नाचते-गाते हैं] – **कालियो कूद पड़ियो मेला में, साइकल पंचर कर लायो हर्ररर हर्ररर र..! बाजो बाज रियो डूंगर में छोरी चटक-मटक ने हाली, कमर में लचक न पड़ जाई हर्ररर हर्ररर हर्ररर..कालियो कूद पड़ियो मेला में..!**

[उन कालबेलियों के नाच-गाने को देखकर, यात्री गण डरते हुए वहां से जाने का ही इरादा बना लेते हैं। उनको भय है, के **"कहीं यह कालिया भूत इनका गाना सुनकर, यहां धमककर आ नहीं जाए ?"** यहां तो ये कालबेलिये उसी कालिये भूत का गीत गाते जा रहे हैं, जिस कालिये भूत से ये यात्री भयभीत होकर इधर आये हैं। बस, फिर क्या ? वे सारे यात्री, गधे के सींग की तरह वहां से ओझल हो जाते हैं। इन लोगों के जाने के बाद, मोहनजी ज़ोर से ठहाके लगाकर हंसते हैं..एक बार तो इनके साथी इनके ठहाके सुनकर, भयभीत होकर यह सोच लेते हैं..के "कहीं इनके पिंड में, **कालिया भूत तो नहीं आ गया ?**" अब इंजन की सीटी सुनायी देती है, इस सीटी के आगे मोहनजी की हंसी दब जाती है। इधर अब, मंच पर अंधेरा छा जाता है।]

ओटाळपने के सबूत खंड - १२

लेखक - दिनेश चन्द्र पुरोहित

[मंच पर रौशनी फैलती है, भगत की कोठी से गाड़ी गुज़रती हुई दिखायी देती है। युरीनल के बाहर चम्पाकली खड़ा है, वह पर्स से मोबाइल बाहर निकालकर उसे मचकाता जा रहा है। किसी तरह, गुलाबे का नंबर मिल जाने पर वह उससे बात करता है। आख़िर, गुलाबा से उसका वार्तालाप पूरा हो जाता है। उधर वह गुलाबा किसी दूसरे केबीन में खड़ा है, वह अपना मोबाइल अपने पर्स में रखकर अगले केबीन में जाने के लिए क़दम आगे बढ़ाता है। रास्ते में आते हर केबीन में यात्रियों का मनोरंजन करता हुआ, रुपये-पैसे कमाता जा रहा है। कहीं वह ठुमका लगाता है, तो कहीं अपनी गायकी का हुनर काम में लेकर दिलकश ग़ज़लें और नज्में यात्रियों को सुनाता आ रहा है। इस तरह वह कई केबिनों से गुज़रता हुआ आख़िर में वह, इस चम्पाकली के पास आ जाता है। वहां इधर-उधर देखकर चम्पाकली तसल्ली कर लेता है, कि कोई इन दोनों को बातें करते हुए नहीं देख रहा है। अब वह विगतवार, पूरी जानकारी हासिल करने की कोशिश करता है।]

चम्पाकली – अब पधारे, आप ? कब से मचकाती जा रही हूं, यह मोबाइल ? मगर उस्ताद आपके दीदार होने की कोई संभावना नहीं ? क्या करें, गुलाबो बी ? आप तो बीबी, देवी लक्ष्मी की भक्तिन बन गयी हैं।

गुलाबो – अब बता ए, चम्पाकली। अभी क्यों बुलाया, मुझे ? सच्च बात तो यह है, तू बड़ी ओटाळ है चम्पाकली। तूझे, क्या पत्ता ? मैं अभी-अभी रुपये-पैसों की होती बरसात को छोड़कर तेरे पास आयी हूं। इन दिनों कई बरातें सफ़र कर रही है, गाड़ी में। तेरे कारण ही मुझे देवी लक्ष्मी को छोड़कर, यहां आना पड़ा।

चम्पाकली – गुलाबो बी, इस वक़्त हमारा ख़ास मक़सद क्या है ? बस, आप उसी पर ध्यान रखिये। बेफ़िज़ूल वक़्त बरबाद करने का अभी वक़्त नहीं है, इस वक़्त आपको ध्यान रखना है के 'इस केस का ख़ास पूर्जा है मोहनजी। उन पर आ रही है, आफ़त।' वह भी, आपके ओटाळपने के सबूत के ख़ातिर।

गुलाबो – ऐसी क्या बात है, चम्पाकली ? कहीं शर्माजी की लायी बासी लापसी, मोहनजी खा गये क्या ?

चम्पाकली - मोहनजी क्या खाये और क्या नहीं खाये, इस बात का हमें ध्यान नहीं रखना है। मगर यह ध्यान रखना है, कहीं आपके ओटाळपने की वजह मोहनजी मुसीबत में नहीं फंस गये... ?

गुलाबो – विगतवार बता, आख़िर बात क्या है ? ज्यादा बकवास, कर मत। तू तो राम, इस मोहन लाल के आस-पास घुमती-घुमती खोटी आदत बना डाली बेफ़िज़ूल बकवास करने की। अब ज़्यादा अपनी इम्पोर्टेन्स दिखलायी तो, मैं तूझे यहीं मचका दूंगी।

चम्पाकली – क्यों दिल जला रही हैं, आप ? [हंसी का ठहाका लगाता है] मैं तो यह कह रही थी, आप पहले अपने कानों के कपाट खोलिये। खोल दिए हो तो सुनिये, बीबी। आपने जैसा कहा, उसी तरह मैंने सारी बात चपकू गैंग के आदमियों के सामने रख दी।

गुलाबो – फिर क्या, कोई खिलका हुआ ?

चम्पाकली – जी हां, बहुत मज़ा आ गया बीबी। इन लोगों की गैंग में, वह है ना..?

गुलाबो – अरेSS, कौन ? बोल राम, बिना बोले मैं क्या समझ पाऊंगी ?

चम्पाकली – अरे बीबी, वही औरतों से गया बीता..बाईरोंडिया शादी लाल। जो अभी तक अविवाहित है, और रूलेट की तरह पूरी गाड़ी में घुमता रहता है। वह कुजात लड़कियों को देखते ही, अपनी ज़ेब से मंगल सूत्र निकालकर कहता है उनसे कि 'क्या आप मुझसे, शादी करोगी ?' इन लड़कियां ने उसको कई बार पकड़कर ठोक दिया, मगर..

गुलाबो – मगर, क्या ?

चम्पाकली – मगर यह बदमाश, सुधरने का नाम ही नहीं लेता।

गुलाबो – तूझे क्या मालुम, वह जान-बूझकर बेहूदी हरक़तें करता हो ? ताकि इस तरह वह, लोगों का ध्यान उनके क़ीमती सामान से हटाकर उनका ध्यान उसकी बेहूदी हरक़तों की तरफ़ लग जाय..ताकि उसकी गैंग को, क़ीमती सामान पार करने का मौक़ा मिल जाय और वे लोग माल लेकर चम्पत हो जाय...समझ गयी, मेरी छमक छल्लो ?

चम्पाकली – अब मैं आपको, अपनी आपबीती सुनाती हूं। एक दिन मैं खिड़की वाली सीट पर, बैठी थी। खिड़की से आ रही तेज़ धूप से बचने के लिये, मैंने घूंगट निकाल रखा था। तभी, यह शादी लाल..

गुलाबो – आगे बोल, इस शादी लाल ने आख़िर किया क्या ?

चम्पाकली – यह नालायक शादी लाल मेरा पीला चमकता ओढ़ना देखकर, झट मेरे पास आया और कहने लगा के 'मैं आपका साजन और आप मेरी सजनी, चलिए अपुन दोनों छैल बगीचे में घुम आयें।'

गुलाबो – फिर क्या ? उसने तेरा कोमल हाथ पकड़कर, चूम लिया होगा ?

चम्पाकली – नहीं बीबी, ऐसी कोई बात नहीं। जैसे ही मैंने अपना घूंगट हटाकर, अपना मुंह उसे दिखाया और कहा 'ले देख माता के दीने, मेरा मुंह। अब बोल, क्या चलूं अब तेरे साथ छैल बगीचे ?' मगर वह नकचढ़ा कहने लगा, कि..

गुलाबो – बता तू, उसने क्या कहा होगा ? आख़िर तू तो ख़ूबसूरत ही है, मेरी छमक छल्लो। अब बोल आगे, सुन्दरी।

चम्पाकली – वह ऐसा बोला, बीबी...कि, 'हीज़ड़े हो, मगर मुझे क्या ? मेरे लिए सब चलता है, चाहे वह बांझ औरत हो या हीज़ड़ा। अविवाहित रहता-रहता मैं तो सुन्दरी, अब हो गया आधा बुढा..आप ख़ुश हो तो, मैं आपको पहना दूं मंगल-सूत्र।

गुलाबो – फिर क्या हुआ, चम्पाकली ?

चम्पाकली – फिर क्या, बीबी ? मैंने पकड़ा, उसका गिरेबान। और उसके रुख़सारों पर, जमाये खींचकर चार लाप्पे। फिर कहा 'बुलाऊं पुलिस को, साला मेरी इज़्ज़त पर हाथ डाल रहा है हरामखोर ?

गुलाबो – फिर, आगे हुआ क्या ?

चम्पाकली – मुझे गुस्से में आग-बबूला होते देख, वह नालायक भाग गया।

गुलाबो – वाह री, चम्पाकली। तू तो, बहुत होशियार निकली। अब ख़ुश होकर मैं तेरे ऊपर, दो रुपयों की गोळ कर देती हूं। फिर बोल, आगे क्या हुआ ?

[चम्पाकली गुलाबो का बैग, खींचकर ले लेता है। फटा-फट उसे खोलकर, कहता है]

चम्पाकली – दो रुपये नहीं बीबी, मैं तो सारे रुपये लूंगी..जो इस बैग में आपने रख छोड़े हैं। बस आप यह समझ लेना, कि 'आपने इन सारे रुपयों की गोळ मुझ पर की है।'

गुलाबो – रख तेरे पास, अब आगे बोल..आगे क्या हुआ ?

चम्पाकली – अरे बीबी, मैं तो भूल गयी..क्या कह रही थी मैं ? अच्छा याद आया, मैं कह रही थी 'लातों के भूत बातों से नहीं माना करते।' तब ठोकिरे शादी लाल ने खाया, मेरे बाएं हाथ का झापड़। फिर, भाग गया नालायक अपनी जान बचाकर। उतावली में वह गधा भूल गया, पोलीथिन की नीली थैली।

गुलाबा - आगे बोल, क्या हुआ ?

चम्पाकली – उसके जाने के बाद, मैंने संभाली, उसकी नीली थैली। उस थैली में मुझे मिले, बीस हज़ार रुपये, एक मोबाइल और एक डायरी। ये सभी चीज़ें, मैं आपको दे चुकी हूं। याद है, आपको ? या आप, भूल गयी ?

गुलाबा – याद है, याद है। तेरे इसी कमाल के कारण, सौभाग मल और इस फ़क़ीर बाबा के गैंग की दास्तान मेरे सामने आयी है। इस कारण ही, दोनों गैंग पकड़ी गयी। मगर अपनी एक भूल से, यह फ़क़ीर बाबा हाथ आते-आते रह गया।

चम्पाकली – ऐसे कैसे, हाथ आने से रह गया ?

गुलाबो – यह कुचमादिया का ठीकरा, मेले में आया ज़रूर। मगर हमारा ध्यान सौभाग मल की तरफ़ होने से, यह फ़क़ीर बाबा और इसकी आधी गैंग पकड़े जाने से रह गयी। चलिए कुछ नहीं, आज़ शेष रहे आदमी पकड़े जायेंगे।

चम्पाकली – अब, कहां पकड़े जायेंगे ? जब आपके हाथ में था, उनका पकड़ा जाना। तब आप पकड़ नहीं पाए, अब तो बीबी..वे सावधान हो गए, होंगे ?

गुलाबा – तो क्या हो गया, कुतिया की ताई ? पहले मेरा बैग मुझे थमा, फिर काम की चीज़ तूझे दिखलाती हूं। [बैग लेकर, उस बैग से मुंह पर लगाने की झिल्ली निकालता है। फिर उस झिल्ली को, अपने मुंह पर फिट करता है] देख, अब मैं क्या बन गयी ?

चम्पाकली – [आश्चर्य करता हुआ] – वाह बीबी, वाह। आप तो वास्तव में, सौभाग मलसा कैसे बन गयी ?

गुलाबा – [बैग से कपड़े निकालता हुआ, कहता है] – ले देख, इन कपड़ों को। ये सौभाग मल के कपड़े हैं, जिन्हें मैं जेल जाकर ले आयी। लूणी स्टेशन आने के पहले मैं, सौभाग मल बन गयी और लूणी स्टेशन आने पर मैं जाकर खड़ी हो गयी प्याऊ के पास। वहां मुझे फ़क़ीर बाबा और उसकी गैंग के आदमी, आकर मुझसे मिले। मिलते ही मैंने, पढ़ायी उल्टी पट्टी।

चम्पाकली – आपने शायद, मोहनजी के खिलाफ़ भड़का दिया होगा ? बीबी, आपने बहुत बड़ी ग़लती की है। आपने मरा दिया, बेचारे मोहनजी को।

गुलाबो – बीच में मत बोला कर, अब सुन मैं क्या कहती हूं ? मैंने कहा फ़क़ीर बाबा से, यहां क्या लेने आये हो मेरे पास ? आपकी नीली थैली, उस कुतिया के ताऊ मोहन लाल के हाथ लग गयी है। मगर आपके भाग्य अच्छे हैं, अभी तक उसने आपके काले कारनामों की डायरी पुलिस को नहीं सौंपी है।

चम्पाकली – अरे यह क्या कर डाला, आपने ?

गुलाबो – चुप रह, आगे सुन। इन लोगों ने मोहन लाल को देखा तब इसके हाथ में वह पोलीथीन की नीली थैली मौजूद थी, इस कारण इन लोगों को मेरी बात पर वसूक हो गया..जब वह, डब्बे के दरवाज़े पर खड़ा था। बोल अब, इसके आगे और तूझे क्या कहूं ?

चम्पाकली – ऐसा क्या हो गया, बीबी ? कहीं मोहनजी ठोक तो नहीं खा गये, इन गैंग वालों से ?

गुलाबो – अरे चम्पाकली वह मोहन लाल है, वह कैसे ठोक खा सकता है ? यहां तो, फ़क़ीर बाबा और इनके साथियों की बारह बज गयी। जिस डब्बे में मोहन लाल बैठा था, वहां जी.आर.पी. वालों की टीम आकर बैठ गयी।

चम्पाकली – फिर, आगे क्या हुआ ?

गुलाबो – फिर, होता क्या ? डरकर वे, दूसरे डब्बे में चढ़ गए। उनके चढ़ जाने के बाद, मैं चलती गाड़ी का हेंडल थामकर डब्बे में चढ़ गयी। और सीधे युरीनल में आकर, कपड़े बदल डाले। इस तरह मैं वापस बन गयी, गुलाबो। इतनी देर तूने क्या किया, चम्पाकली ?

चम्पाकली – अब मुझे आपकी बात पर भरोसा हो रहा है, इतनी बात सुनकर अब मुझे एक बात याद आयी। शादी लाल के जाने के बाद, शर्माजी आये और साथ में लाये अपने पुत्र की शादी के बचे लाडू, घेवर और लापसी। फिर इन लाडू, घेवर और लापसी को उन्होंने, सब में बराबर वितरित कर डाली।

गुलाबो – आगे बता, क्या हुआ ?

चम्पाकली – अरे बीबी, लाडू और घेवर ठोक गए सभी मिलकर। लापसी किसी ने खायी नहीं, उसे अख़बार पर रखकर सबने बेचारे मोहनजी को थमा दी। लापसी लेकर मोहनजी बोले 'भाई मुझे कोई पोलिथीन की थैली दे दीजिये, ताकि यह लापसी मैं अपने घर ले जा सकूं। बच्चों को खिलाऊंगा, तो वे ख़ुश हो जायेंगे।

गुलाबो – फिर, क्या हुआ ?

चम्पाकली – मगर, थैली देवे कौन ? यहां तो इनके सभी मित्र पोलिथीन की थैलियों को, रखते हैं अपने काळज़े की कोर की तरह। इस कारण किसी ने उनको थैली दी नहीं, आख़िर मुझे दया आ गयी मोहनजी पर। मैंने सोचा, मोहनजी के नन्हे-नन्हे बच्चे लापसी खाकर ख़ुश हो जायेंगे।

गुलाबो – अरी चम्पाकली, तू तो बड़ी दयावान है। अब आगे बोल, आगे क्या हुआ ?

चम्पाकली – फिर बीबी मैंने झट शादी लाल की थैली का सारा सामान, अपने बैग में डाल दिया। और, ख़ाली नीली पोलीथीन की थैली आशामुखी मोहनजी को दे डाली।

गुलाबो – तू आगे बोल, क्या हुआ आगे ? फटा-फट बोल, मुझे आगे भी जाना है।

चम्पाकली – अब मैं यही कह रही हूं, बीबी..के, 'फ़क़ीर बाबा और उसके गैंग के आदमी, मोहनजी को इस नीली थैली के साथ देख चुके हैं। इस तरह उन लोगों को, आपकी कही गयी बात पर भरोसा हो गया। फिर..

गुलाबो – पहले तू अपनी कही हुई बात को, सिद्ध करने के लिए सबूत पेश कर। जिसके आधार पर मैं मान लूं, के 'तू सच्च कह रही है ?'

चम्पाकली – देखिये बीबी यह सब होने के बाद, मैंने सेनियो टेप रेकर्ड ओन करके अपने बैग में रखा। फिर उस बैग को गाड़ी में बैठे फ़क़ीर बाबा के साथियों के पास रखकर, मैं चली गयी युरीनल के अन्दर।

गुलाबो – आगे बोल, बार-बार बातों की गाड़ी को रोका मत कर। बोल, आगे क्या.. ?

चम्पाकली – जैसे ही मैं युरीनल घुसी, और पीछे से फ़क़ीर बाबा आया अपने साथियों के पास।

गुलाबो – आगे बोल चम्पाकली, क्या हुआ ?

चम्पाकली – बीबी, क्या कह रही थी मैं ? अरे याद आया, मैं तो झट घुस गयी युरीनल के अन्दर। मेरे जाते ही, फ़क़ीर बाबा आ गया वहां। वह अपने साथियों के पास बैठकर, मोहनजी को अपहरण करने की योजना समझाने लगा।

गुलाबो – वाह चम्पाकली, वाह। तूने तो, तगड़ा काम निकाला। अब तू, यों कर।

चम्पाकली – बीबी, अब क्या पोठा करूं ? [टेपरेकर्ड देता हुआ, कहता है] यह लीजिये, आपका सबूत। अब आप इस टेपरेकर्ड को ओन करके सुन लीजिये, उनकी पूरी योजना। अब आपको तसल्ली हो गयी, ना ?

गुलाबो – तसल्ली कहां ? काम बढ़ गया, राम....चम्पाकली। अब मैं तूझे एक काम दे रही हूं, अब तू जोधपुर स्टेशन पर मोहनजी और उनके साथियों को किसी तरह रोककर रखना।

चम्पाकली – कैसे रोककर रखूं, बीबी ? मुझे तो इनके साथी ओमजी जैसे शैतान को देखते ही, डर लगता है...

गुलाबो – अरे गधेड़ी, यह क्या कह रही है तू ? इस काम को पूरा करने के लिए, तू सारी सीखी हुई किन्नर-कलाएं काम में ले लेना। फिर ये किन्नर-कला, और कब काम आयेगी ? उतनी देर में, मैं जी.आर.पी. प्रभारी सवाई सिंहजी से मिलकर इस मोहन लाल की पूरी गैंग को हवालात में बैठाने का पक्का प्रबंध करके..मैं तेरे पास, आ जाऊंगी।

[अब गाड़ी का इंजन ज़ोर से सीटी देता है, गाड़ी की रफ़्तार कम हो जाती है। प्लेटफोर्म पर गाड़ी आती हुई दिखायी देती है। अब छंगाणी साहब झट पछीत से नीचे उतरकर, अपना बैग उठाते हैं। फिर चलती गाड़ी से झट कूदकर, उतर जाते हैं..प्लेटफोर्म पर। और अब वे तेज़ क़दम चलते हुए, झट पुलिया पार करते हैं। फिर वे, स्टेशन के मेन-गेट की तरफ़ बढ़ जाते हैं..क्योंकि, हमेशा की तरह इन्हें आज़ भी झट अपनी मेम साहब के निकट पहुंचना है। अब प्लेटफोर्म तीन पर आकर, गाड़ी रुकती है। डब्बे में बैठे यात्रियों का जमाव, उसके दरवाज़े पास हो जाता है। सभी उतावली करते हुए, झट गाड़ी से नीचे उतरने की कोशिश कर रहे हैं। इधर इस यात्रियों की भीड़ के कारण, बेचारे मोहनजी एक क़दम आगे बढ़ा नहीं पाते। तब क्रोधित होकर वे, उस भीड़ में खड़े लोगों को कड़वे शब्द सुना बैठते हैं।]

मोहनजी – [क्रोधित होकर कटु-शब्द सुनाते हैं] – दूर हटो रे, कढ़ी खायोड़ो। इधर मुझे हो रही है, तेज़ लघु-शंका। और तुम कढ़ी खायोड़ो, बीच-बीच में आते जा रहे हो ? अरे करमठोक इंसानों, मुझे युरीनल के अन्दर जाने दो।

रतनजी – [पीछे से आते हुए, कहते हैं] – अब आप स्टेशन के बाहर जाकर, मूत लेना।

[इतने में ओमजी मुंह फाड़े, बोल उठते हैं]

ओमजी – [ज़ोर से कहते हैं] – ओ मोहनजी, स्टेशन के बाहर जाकर मूतना मत। बाहर तो जनाब, एक भी युरीनल नहीं है। दीवार पर पेशाब की धार चलाते किसी पुलिसकर्मी ने देख लिया, तो रामा पीर की कसम..वह आपको पकड़कर, हवालात में बैठा देगा ?

रशीद भाई – [बीच में बोलते हैं] – तो अब क्या करेंगे, मोहनजी ? मैं तो जनाब, यही कहूंगा..आप डोरी बांधकर, बैठ जायें मालिक।

रतनजी – मोहनजी आप हमारी बात मान लीजिये, पेशाब करने के लिये मत जाइये। बात यह है, हम तो अभी उतर जायेंगे..फिर पीछे से, आपके बैग की रखवाली कौन करेगा ?

रशीद भाई – सही बात है, रतनजी। अभी हमारे उतरने के बाद, ये बोतले चुगने वाले छोरे आ जायेंगे डब्बे के अन्दर, और उनके साथ ये मंगते-फ़क़ीर भी आ जायेंगे। [मोहनजी से कहते हैं] ओ मोहनजी ख़ुदा जाने, कहीं किसी ने आपका बैग पार कर लिया..तो फिर आप, हमें दोष मत देना।

[अब भीड़ नीचे उतर चुकी है, मोहनजी अपना बैग उठाते हैं। उनको बैग उठाते देखकर, ओमजी झट बोल देते हैं]

ओमजी – लीजिये साहेबान, मोहनजी कितनी सावधानी बरत रहे हैं ? अब वे बैग लेकर ही, युरीनल में क़दम रखेंगे।

रशीद भाई – ओ मोहनजी, अपने साथ बैग ले जाने की ग़लती मत करना। पेशाब करते वक़्त, यह बैग बार-बार सामने आयेगा। और इस पर पेशाब के छांटे उछलकर इस पर गिर गए, तो ख़ुदा भी आपको माफ़ नहीं करेगा ? क्योंकि आप इस बैग में ही, खाने का टिफ़िन रखते हैं।

मोहनजी – [गुस्से में कहते हैं] – अब मुझे, पेशाब करने कहीं नहीं जाना है, मेरे बाप। बार-बार बीच में बोलकर, तुम कमबख़्तों ने मेरा पेशाब रोक डाला। अब चलो कढ़ी खायोड़ो, स्टेशन के बाहर।

[अब थोड़ी देर बाद, मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी पुलिया चढ़ती हुई दिखायी देती है। अब सभी सीढ़ियां चढ़कर पुलिए के प्लेटफोर्म [समतल-भाग] पर आ गये हैं। तभी चम्पाकली इनके आगे आकर, इनका रास्ता रोककर खड़ा हो जाता है। अब वह नाचता हुआ ठुमके लगाता है, कभी आकर मोहनजी के गाल खींच लेता है। कभी वह रशीद भाई की टोपी उनके सर से उठाकर, अपने सर पर रख लेता है। इधर जैसे ही रतनजी अपना क़दम आगे बढ़ाते हैं, और यह चम्पाकली उनके पास आकर उनकी बोतल निकाल लेता है...उनके बैग से। इस बार तो यह चम्पाकली ओमजी से भी नहीं डरता है, वह उनका एक गाल खींचकर उनके पिछवाड़े पर चिमटी काट लेता है। इस तरह वह ओमजी को बराबर खिज़ाता जा रहा है, आस-पास आने-जाने वाले यात्रियों के लिए तो यह, बिना पैसे का तमाशा बन गया है। वे सभी तमाशबीन बने यात्री, मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी को चारों ओर घेरा डालकर खड़े हो जाते हैं। और तालियां पीटते हुए, इस चम्पाकली का ज़ोश बढ़ाते जा रहे हैं। इन यात्रियों में कई यात्री बड़े रसिक निकले, वे मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी पर रुपयों की गोळ करके चम्पाकली को कड़का-कड़क नोट देते जा रहे हैं। इस

तरह चम्पाकली की झोली भरती जा रही है, कड़का-कड़क नोटों से। फिर क्या कहना, चम्पाकली का ? वह ज़ोश में आकर, गीत गाता हुआ ज़ोर से नाचना शुरू कर देता है]

चम्पाकली – [गीत गाता हुआ, नाचता है] – मत जा, मत जा, मत जा रे भोगी। पांव पड़ूं तेरे, सेठ मोहन लाल। मत जा, मत जा, मत जा रे भोगी। बाहर खड़े हैं तूझे उठाने, वक़्त थोडा है तेरे सामने। अब तो रुक जा, रुक जा, सेठ मोहन लाल। मत जा, मत जा, मत जा रे भोगी। पांव पड़ूं तेरे, सेठ मोहन लाल।

मोहनजी – [गीत गाते हुए, उसका जवाब देते हैं] – प्रीत का दर्द, तू क्या जाने..? ना है मर्द, ना है नारी। विरह का दर्द, तू क्या जाने ? सोच थोडा तू, अक्ल लड़ा के, बाट नाल रही मेरी मेहरारू। छोड़ रास्ता, हट जा रे किन्नर। हट जा, हट जा, रे किन्नर।

चम्पाकली – [गीत गाता हुआ, नाचता जाता है] – वह चमकता चन्दा, और ठंडी ठंडी लहरें। मनभावनी बहती गयी, उस चांदनी रात। पाळ सरवरे नंगे नाचे, बन कालिया भूत। सेठ मोहन लाल, कैसी थी वह रात ?

[गीत में कालिया भूत का नाम आते ही, मोहनजी घबरा जाते हैं..उन्हें लगा "कहीं यह किन्नर भूतिया नाडी पर घटित हुई घटना सबके सामने ज़ाहिर करता हुआ, उनके रोमांस का भेद न खोल दे ? फिर क्या ? झट उन्होंने चम्पाकली के होंठों पर हाथ रखकर, उसे चुप रहने का इशारा कर डाला। मगर, यह क्या ? मोहनजी के इस तरह उस किन्नर को चुप कराने के तरीके को देखकर, उनके साथी ज़ोर से ठहाके लगाकर हंसते हैं। इधर इस हंसी के किल्लोर को सुनकर, सवाई सिंहजी अपने पुलिस कांस्टेबलों को साथ लेकर वहां प्रगट हो जाते हैं। तभी गुलाबो भी वहां आकर, खड़ा हो जाता है। इन लोगों को देखकर, चम्पाकली का नाच-गाना स्वत: बंद हो जाता है। वहां खड़े तमाशबीन भी, एक-एक करके वहां से चले जाते हैं।]

सवाई सिंहजी – [डंडा फटाकरते हुए, कहते हैं] – यह क्या बदतमीज़ी है, मोहन लाल ? आज़कल वापस चार सौ बीसी करनी, शुरू कर दी क्या..? कर दूंगा साले, तूझे हवालात में बंद। क्या समझता है मोहन लाल, तुम अपने आप को ?

[मौक़ा देखकर, चम्पाकली सवाई सिंहजी के पास आकर कहता है] ***********

चम्पाकली – जनाब, आपसे क्या कहूं ? [मोहनजी और उनके साथियों की तरफ़, उंगली से इशारा करता हुआ] मोहनजी और इनके साथी पक्के नटवर लाल है, जनाब। ये लोग फर्जी चैकिंग पार्टी बनकर आये डब्बे में, और इन्होंने मुझ ग़रीब को लूट लिया।

सवाई सिंहजी – चुप बे हीज़ड़े। तू गाड़ी में लोगों को लूटता है, तुझको कौन लूटेगा ?

चम्पाकली – [रोवणकाळी आवाज़ में कहता है] – अरे जनाब, आपको क्या मालुम ? मेरे मेहनत के पैसे थे, जनाब। गाड़ी में नाच-गाकर, बहुत मेहनत करके पैसे इकट्ठे किये थे। इन्होने सारे रुपये-पैसे छीन लिए, हुज़ूर। मौक़े की वारदात के वक़्त, गुलाबो बी भी उस वक़्त उस डब्बे में हाज़िर थी। इनकी गवाही, भले काम आ जायेगी। हुज़ूर मेरे रुपये-पैसे दिलवा दीजिये, वापस।

गुलाबो – [नज़दीक आकर कहता है] – हुज़ूर अन्नदाता। न्याय दिलाइये, मैं अपनी गवाही ज़रूर दूंगी। [ताली बजाकर कहता है] जनाब, ये वे ही सेठ मोहन लाल है। जब हम दोनों मिलकर, नाच-गान से कमाये हुए रुपयों को गिन रही थी..

सवाई सिंहजी – आगे बोल, गुलाबा।

गुलाबो – [रोवणकाळी आवाज़ में, कहता है] – अब आगे क्या कहूं, अन्नदाता ? तब सेठ मोहन लाल अपने साथियों के साथ फर्जी चैकिंग पार्टी बनकर वहां आये, और आकर इन लोगों ने कई दिनों की हमारी कमाई लूट डाली..जनाब।

[इतना कहकर गुलाबा, चुप-चाप अपने पर्स में से ग्लिसरीन की शीशी निकाल लेता है। और उसका ढक्कन खोलकर, उसमें अपनी उंगली डूबा देता है..फिर उसका ढक्कन बंद करके, वापस पर्स में रख देता है। अब वह इस उंगली को, आंखों में लगाता है। आंखों में उंगली रखते ही, नक़ली आंसू ढलक जाते हैं। अब वह अपनी रोवणकाळी आवाज़ बनाता हुआ, आगे कहता है]

गुलाबो – [नक़ली आंसू ढलकाता हुआ, रोवणकाळी आवाज़ में कहता है] – साहब आप इन सबको हवालात में बंद कर लीजिये, तब तक आप इन्हें नहीं छोड़ना जब तक ये चोर-उचक्के हमारे रुपये वापस नहीं लौटा दे।

सवाई सिंहजी – [मूंछों पर ताव देते हुए, कहते हैं] – अच्छा मिस्टर नटवर लाल, दिखने में तुम सीधे लगते हो। मगर असल में हो तुम मिस्टर चार्ल्स शोभ राज़ के भतीजे, लुटेरे नंबर एक। [सिपाइयों को हुक्म देते हुए, कहते हैं] पकड़ लो, इन सबको। यह तो इन बदमाश, लुच्चे-लफंगों की गैंग लगती है। ले चलो इन्हें, अपने दफ़्तर।

[अचानक इनकी नज़र खाक़ी वर्दी पहने हुए ओमजी पर गिरती है, उनको देखते ही उनका सिर चकराने लगता है। वे नज़दीक आकर, एक हाथ से डंडा घुमाते हुए कहते हैं।

सवाई सिंहजी – होम गार्ड बना फिरता है, कमबख़्त। करता क्या है, साले चवन्नी क्लास ?

ओमजी – हुकूम, यह वर्दी नहीं है। जनाब, मैं तो अक़्सर ऐसे कपड़े ही सिलाई करवाकर पहनता हूं। मुझे पुलिस जैसे कपड़े पहनने, बहुत अच्छे लगते हैं।

सवाई सिंहजी – धत तेरे की। मुझे तो तूने भ्रम में डाल दिया, अब मुझे पक्का भरोसा हो गया है...

ओमजी – [ख़ुश होकर कहते हैं] – आपको भरोसा हो गया ना, कि 'हम बेक़सूर हैं ?' फिर, जनाब हम लोग अपने घर चले जायें ?

सवाई सिंहजी – जाते कहां हो, भंगार के खुरपों ? मैं यह कह रहा था, तुम पक्के चार सौ बीस..यानि मिस्टर नटवर लाल हो। [पास खड़े सिपाइयों से कहते हैं] ले जाओ रे इनको, और कर दो इनको हवालात में बंद। [गुलाबा से कहते हैं] ओय गुलाबे तू भी चल कमबख़्त, इस चम्पाकली को साथ लेकर।

गुलाबो – हुज़ूर, मुझे क्यों..?

सवाई सिंहजी – बयान कौन देगा, तेरा बाप ?

[अब चारों तरफ़ इनके सिपाई फैलकर, घेर लेते हैं मोहनजी और इनके साथियों को। अब सभी सवाई सिंहजी के साथ-साथ जी.आर.पी, दफ़्तर की ओर क़दम बढाते दिखायी देते हैं। इन सबके पीछे-पीछे, गुलाबो और चम्पाकली हंसी के ठहाके लगाते हुए चलते दिखायी देते हैं। पुलिया उतरते वक़्त इस स्थिति में अपने-आपको पाकर मोहनजी, दुःख के मारे आँसू ढलकाते हुए रोवणकाळी आवाज़ में साथ चल रहे रशीद भाई से कहते हैं]

मोहनजी – [रोते हुए कहते हैं] – अब और करना रशीद भाई, लोगों की सेवा। आपकी तरह मैं भी बना सेवाभावी, दूसरों के काम हमने मिलकर सलटाये..और, अब हमने पाये फोड़े। अब ठोकिरा आस करणजी अगर कहीं मिल जाये, तो उनके उतार दूं माली-पनां ?

[धीरे-धीरे पदचाप की आवाज़ आनी बंद हो जाती है, थोड़ी देर बाद मंच पर अंधेरा छा जाता है। कुछ देर बाद मंच पर रौशनी फ़ैल जाती है, पुलिया के बिल्कुल सामने ही जी.आर.पी. का दफ़्तर है..अब उसका मंज़र, सामने दिखायी देता है। इस दफ़्तर के आगे, छोटा सा बगीचा लगा है। बगीचे में एक छोटा चबूतरा है, जिस पर छोटा सा मंदिर बना है। इस मंदिर पर चमचमाती हुई

डिस्को लट्टूड़ीयां लगी हुई है, अब एक सिपाही आकर इस बगीचे में पानी का छिड़काव करता जा रहा है। बगीचे के अन्दर दो पत्थर के तख़्त लगे हैं, उसके निकट ही तीन कुर्सियां रखी है। दफ़्तर के दोनों गेट पर दो सिपाई डंडा लिये, राउंड काट रहे हैं। दफ़्तर के आगे, गलियारा बना हुआ है। जिसके पास, मोदी खाना और रसोड़ा है। इसके पहलू में, सवाई- सिंहजी का कक्ष है। इसके आगे, दफ़्तर के दूसरे कमरे भी आये हुए हैं। बिल्डिंग के एक ओर, पाख़ाना, युरीनल, और स्नानागार बने हुए हैं। जिसके आगे ही, गाड़ियां रखने का पार्किंग स्थान है। अब मोहनजी और उनके साथी, जी.आर.पी. के सिपाईयों के साथ इस बगीचे में दाख़िल होते हैं। इन लोगों का ध्यान रखने के लिये, कुछ सिपाही बगीचे में लगे तख़्त पर बैठ जाते हैं। बगीचे में छिड़काव हो जाने से, गीली दूब को स्पर्श करती हवा मनभावनी ख़ुशबू फ़ैला देती है। अब रतनजी का दिल, गीली दूब की ख़ुशबू पाकर ख़ुश हो जाता है। किसी गायक के लिए ऐसी सुगन्धित हवा, गायकी का मूड बनाने के लिए पर्याप्त है। बगीचे में बह रही यह शीतल वायु उनके मन-मयूर को, भजन गाने के लिये मज़बूर करती जा रही है। अब वे, अपने साथियों से गुफ़्तगू करते दिखाई दे रहे हैं]

रतनजी – अरे यार, क्या छिड़काव हुआ है बगीचे में ? इस छिड़काव से, मनभावनी भीनी-भीनी ख़ुशबू फ़ैल गयी है।

ओमजी – [मंदिर की तरफ़, उंगली से इशारा करते हुए कहते हैं] – वाह भाई, वाह। बाबा के मंदिर के ऊपर, क्या शानदार छोटे-छोटे डिस्को बल्व लगाए गए हैं ? मुझे तो अब ऐसा लगता है, आज़ बाबा का जागरण यहीं रखा गया है। देख लीजिये..क्या बढ़िया व्यवस्था हो रही है, जागरण की ?

रतनजी – क्या देखें, जनाब ? बात तो कांच की तरह साफ़ है। देख लीजिये, मंदिर में दिया-धूप होने का क्या तात्पर्य है ? मुझे तो इन पुलिस वालों के दिल में, प्रभु के प्रति भक्ति-भाव दिखायी दे रहा है। अब क्या करूं, यार ? दिल में सत्संग की भावना, उछाले खाती हुई प्रतीत हो रही है।

ओमजी – सच कहा, आपने। मेरा दिल, बाबा रामसा पीर के चार भजन गाने के लिए उतावला हो रहा है। जय रामसा पीर की, बाबा भला करे..बाबा रामसा पीर की जय हो। [मंदिर की तरफ़ देखते हुए, रामसा पीर को हाथ जोड़ते हैं]

रतनजी – यार ओमजी, आपने तो मेरी मन की बात कह दी। यहां, चार क्या ? दस भजन गा लेने चाहिये, हमें। यहां सत्संग हो जाय, तो आनन्द आ जायेगा ओमजी। फिर जनाब, यहां बहेगी मीठे-मीठे सुर की लहरें।

रशीद भाई – फिर भाईजान, आप पीछे क्यों रहते हैं ? हो जाओ शुरू, और दिखाओ अपनी गायकी का जौहर। आज़ फिर कर लीजिये पूरी अपनी दिल-ए-तमन्ना, राग अलापने की। ऐसा मौक़ा फिर कभी आयेगा नहीं, आख़िर आप हैं जागरण से निकाले हुए तड़ी-पार। बस आप यह सोच लीजिये, यहां जागरण में आपको बाहर निकालने वाला कोई नहीं।

रतनजी – [होंठों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – कोलेज के वक़्त की नासमझी की बातें छोड़िये, रशीद भाई। उन बातों को वापस याद मत दिलाओ, याद आते ही मेरे दिल में आग लग जाती है। कि, 'मैं जागरण से बाहर किया हुआ यानि मैं जागरण का तड़ी-पार हूं।'

रशीद भाई – वापस याद कर लीजिये, जवानी की बातों को। शायद इस बुढ़ापे में, उन बातों को याद करते आपके अन्दर जवानी का जोश उमड़ जाए ? [धीरे-धीरे, कहते हैं] फिर तो जनाब, बुढी घोड़ी लाल लगाम..आप वासती जवानी का लुत्फ़, उठाते रहना।

(पिछला जुमला धीरे से बोला गया, जो वे सुन नहीं पाते...फिर भी श्रीमानजी बोले गए जुमले को सही ठहराते हुए कह देते हैं ।

रतनजी – सही कहा, आपने। क्या, दिन थे ? अब वे दिन वापस आने वाले नहीं। करते रहते थे मटरगश्ती, कोई फ़िक्र नहीं थी उन दिनों में। भायली को रिंझाने के लिए जाते थे, जागरण में। उस वक़्त इस गले से, क्या सुर निकलते थे ? क्या बताऊं, आपको ?

[बातें करते-करते रतनजी बैठ जाते हैं, कुर्सी पर। कोलेज के वक़्त की यादों को दिल में संजोये हुए, वे खो जाते है यादो के सागर में। बगीचे की ठंडी-ठंडी चल रही हवा से, उनकी पलकें भारी होती जा रही है। कुछ ही पल में वे, नींद के आगोश में चले जाते हैं। अब कोलेज के दिनों के किस्से, चित्र बनकर उनके मानस-पटल पर छाते जा रहे हैं। मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद, मंच पर वापस रौशनी फ़ैल जाती है। अब जोधपुर विश्वविद्यालय ओल्ड कैम्पस का मंज़र, सामने आता है। जसवंत होल में, विदाई समारोह का कार्यक्रम चल रहा है। अब रतनजी और उनका मित्र छत्तर सिंह, पुस्तकालय भवन के पास से दबे पांव गुज़र रहे हैं। वे दोनों इस समय, चुचाप जसवंत होल का कार्यक्रम देखने की कोशिश में लगे हैं। पुस्तकालय के पास ही, रसायन प्रयोगशाला आयी हुई है। जहां रतनजी के पिताजी अनोप सिंहजी, तकनीकी सहायक का काम करते हैं। वे दोनों डर रहे हैं, 'कहीं इनको मालुम न हो जाय, कि वे जसवंत होल में हो रहे रंगारंग कार्यक्रम देखने जा रहे हैं ?' इस कारण, वे दोनों दबे पांव धीरे-धीरे आगे क़दम बढ़ा रहे हैं। इतने में इन दोनों को, पीछे से किसी के पुकारने की आवाज़ सुनायी देती है। दोनों पीछे मुड़कर, क्या देखते हैं ? कोई अठारह या बीस साल की सुन्दर युवती आ रही है, जिसने धवल चांदनी के

समान सफ़ेद सलवार-कुर्ती और दुपट्टा पहना रखा है। इस नवयुवती के बाल, साधना-कट कटे हुए हैं। इसके जुल्फें, फिल्म 'मेरा साया' की नायिका "साधना" की तरह, चेहरे पर छाई हुई है। ऐसा लगता है, मानो उसका चन्द्रमुख उसके काले-काले बादल रूपी केशों से ढका जा रहा है ? इस चन्द्रमुख के आगे से यह केश राशि दूर होती हुई, ऐसा आभास देती है मानो "बादलों की ओट से, पूर्णिमा का चन्द्रमा बाहर आ रहा है ?" इस चंद्रमुखी लड़की का नाम है, आशा। अब आशा नज़दीक आकर, कहती है]

आशा – रतन, मुझे स्टेज पर शास्त्रीय [क्लासिकल] डांस करने का रोल मिल गया है। मगर तू साथ में गाता, तो मज़ा आ जाता।

रतनजी – आशा, तेरे पिताजी इस विश्वविद्यालय में काम नहीं करते हैं...इस लिये तू अभी, इतनी चौड़ी होकर बोल रही है। मेरे पिताजी को मालुम हो जाय, कि उनका सपुत्र कोलेज के स्टेज पर गीत गा रहा है...तो वे ईंधन की लकड़ी लिये, मुझे पीटते नज़र आयेंगे ?

छत्तर सिंह – इसके पिताजी को, मालुम क्यों नहीं होगा ? यहां इसी रसायन प्रयोगशाला में, काम करते हैं। और वे बराबर ध्यान रखते हैं, कहीं उनका सपुत्र बिगड़ ना जाय ? क्या करें ? बेचारा रतन तो अभी ठहरा, नन्हा बच्चा। बीस-बाईस साल का हो गया, मगर आशा अभी इसके दूध के दांत टूटे नहीं है।

रतनजी – अरे यार छत्तर सिंह, फिर तू क्या है अपने वालिद के सामने ? तू क्या, बच्चों का बाप बन गया क्या ? जानता नहीं माता के दीने, मां-बाप की नज़रों में उनके बच्चे हमेशा बच्चे ही बने रहते हैं। भले उनके बच्चों की, चार-चार औलादे हो गयी है ?

आशा – [फिक्रमंद होकर, कहती है] – अब छोड़ इस बात को, अब यह बता तेरे पिताजी वास्तव में तूझे स्टेज पर गीत गाने नहीं देंगे ?

रतनजी – हां आशा, सच्च बात यही है..! मगर आशा, मैं करूं क्या ? ये संगीत के कार्यक्रम, गाना-बजाना, नाचना आदि उनको अच्छे नहीं लगते। यहां तो उनकी नज़रों में, कला की कोई क़द्र नहीं। जब भी इसका जिक्र चले, तब एक ही बात उनके श्रीमुख से निकलकर बाहर आती है, कि 'नाचना-गाना तवायफ़ों का काम है।'

आशा – इसके अलावा, और कोई प्रवचन तो देते होंगे ?

रतनजी – पिताजी कहते हैं, 'तू खूब ऊंची पढ़ाई करके, बड़ा अफ़सर बनना और ख़ानदान को रोशन करना। ख़ानदानी आदमियों को, नाच-गाने के शौक से बहुत दूर रहना चाहिये।'

[पिताजी का जिक्र करते-करते, रतनजी के कलेज़े पर डर छा जाता है। इस डर के कारण ज़ब्हा [ललाट] पर पसीना छलकने लगता है, अब वे पसीने के एक-एक कतरे को रुमाल से साफ़ करते हैं। फिर, वे आगे कहते हैं]

रतनजी – तू फ़िक्र मत कर, आशा। और, कहीं..

छत्तर सिंह – 'रंग जमायेंगे, फिर तूझे फ़िक्र करने की क्या ज़रूरत ? पिताजी कमाते हैं, और मैं बैठा-बैठा खाता हूं।' क्यों रे रतन, तू यही बात आशा को कहना चाहता है ना ?

रतनजी – देख छत्तर सिंह, अब तू चुपचाप बैठ जा। ना तो यह मेरा बाएं का थप्पड़, धब्बीड़ करता पडेगा तेरे गाल के ऊपर।

छत्तर सिंह – नाराज़ क्यों होता है, रतन ? तूझे, किसकी फ़िक्र ? तू तो ठकराई से यही कहता आया है, पढ़ने की क्या ज़रूरत ? 'अनपढ़ घोड़ा चढ़े, पढ्या मांगे भीख' फिर भाई रतन, अपुन क्यों मांगे भीख ? अपुन को तो रोज़ जाना चाहिये, जागरण में..और ख़ुश रखना है, आशा बाईसा को। क्या करना है, बेफ़ालतू पढ़ाई करके ?'

रतनजी – ए आशा, तू इस पागल की बातों पर ध्यान मत दे..यह तो, पूरा पागल है। तू फ़िक्र कर मत, देख तेरी सहेली बदनकौर के घर कल रात को सत्य नारायण भगवान का जागरण है। वहां मैं तूझे, अवश्य मिलूंगा। तू धीरज रख, जागरण का प्रोग्राम पूरा फिक्स है। बस तू वहां आना भूलना मत, वहां तू मुझसे सातों ही सुर सुन लेना।

[फिर, क्या ? आश्वासन पाकर आशा तो जसवंत हाल की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा देती है, और इधर..ख़ुदा जाने, कैसे अनोप सिंहजी को अपने लाडले रतन की आवाज़ सुनायी दे जाती है ? वे तेज़ आवाज़ में, रतनजी को पुकार बैठते हैं...]

अनोप सिंहजी – [रसायन प्रयोगशाला की खिड़की से बाहर झांककर, आवाज़ देते हैं] – ए रे सावंतिया, किधर जा रिया है ? इधर मर, कुचमादिया का ठीकरा।

[मगर इनकी आवाज़ सुनकर, अब वे दोनों यहां क्यों रुकेंगे ? यहां तो भईजी के दीदार पाते ही, उनके डर से इनका पेशाब उतरता है..? वहां इन दोनों के रुकने का, कोई सवाल ही नहीं। दोनों

झट हो जाते हैं, नौ दो इग्यारह। मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच पर रौशनी फ़ैल जाती है। रातानाडा शिव मंदिर के पड़ोस में आया, बदन कौर का मकान नज़र आता है। इस मकान की दीवारों पर, रंग-बिरंगे छोटे-छोटे लट्टूओं की कतारे लगी है। जो इस रात्रि में, झिल-मिल रौशनी देते जा रहे हैं। सूर्यास्त हुए, काफ़ी वक़्त बीत गया है। अब आभा में, आसियत का अंधेरा फैल गया है। चाँद-सितारों रूपी रत्नों का श्रृंगार की हुई आभा, सुन्दर परी की तरह सजी हुई है। मकान के अन्दर, बहुत चहल-पहल है। बदन कौर के पिताजी ने पूर्णिमा-व्रत का उजावणा किया है, इस कारण दोपहर को कथा रखी गयी और प्रसादी भी की गयी। अब रात को सत्यनारायण भगवान के जागरण की, तैयारी हो रही है। छत पर पानी का छिड़काव हो चुका है, और सत्संग करने वाले भक्तों के बैठने के लिए जाजमें बिछायी जा चुकी है। ठंडी-ठंडी मनभावनी वायु की लहरें, लोगों के दिल में उमंग पैदा कर रही है। पूर्व दिशा की ओर एक छोटी टेबल पर, भगवान सत्यनारायण की तस्वीर तथा राधा कृष्ण की मूर्तियां रखी गयी है। उनके आगे दिया-धूप और चांदी की थाली में पताशे, मखाने, मूंगफली और मिश्री का भोग रखा गया है। जाजम पर तबला-पेटी, मंजीरा [छम-छमिया], खड़ताल आदि साज़ के सामान रखे गये हैं। उनके पास ही एक थाली में रखी है, जिसमें रात्रि-जागरण करने वालों के लिये बीड़ी-सिगरेट, अफ़ीम की किरचियां और काली-मिर्च व मिश्री का मिश्रण वगैरा सभी आवश्यक चीजें रख रख दी गयी है। लाउडस्पीकर की भी व्यवस्था की जा चुकी है, जिससे जुड़े भूंगले को बिंडी पर रख दिया गया है। जिसका मुंह मोहल्ले की तरफ़ है, ताकि मोहल्ले वासियों को इसकी तेज़ आवाज़ सुनायी देती रहे। चाहे इन मोहल्ले वालों को मज़बूर होकर, अपने कानों में उंगली डालनी पड़े ? अब छत पर पहुंचने के लिए, रतनजी और उनकी मित्र मंडली सीढ़ियां चढ़ती जा रही है। और साथ में वे लोग संगम फिल्म का गीत "तेरे मन की गंगा, और मेरे मन की जमना का बोल राधा बोल, संगम होगा या नहीं.." गाते जा रहे हैं। इन लोगों के पीछे सीढ़ियां चढ़ते आ रहे, एक बुढ़ऊ को इनका यह गीत सुनायी देता है। वह समझ नहीं पा रहा है, इस गीत को ये बच्चे क्यों गा रहे हैं ? आख़िर यह गीत, इनकी भजन-मंडली द्वारा गाये जाने वाला भजन तो नहीं है ? उससे रहा नहीं जाता, और वह पूछ बैठता है।]

बुढ़ऊ – अरे छोरों..गट्टूड़ा बट्टूडा, क्या गा रहे हो तुम लोग ? बताओ, बताओ मेरे लाडकों।

छत्तर सिंह – [सीढ़ियां चढ़ता हुआ, कहता है] – बा'सा, हम लोग राधा-कृष्ण का भजन गा रहे हैं।

[इतना कहकर छत्तर सिंह, झट सीढ़ियां चढ़कर छत पर चला आता है। वहां पहुंचकर वह, झट नीचे रखी प्रसाद की थाली को टेबल पर रख देता है। उधर वह बुढ़ऊ ख़ुश होकर, रतनजी की मंडली को कहता जा रहा है..]

बुढ़ऊ – [ख़ुश होकर कहता है] – गाओ बेटा, गाओ। [भजन गाने की स्टाइल में, उस फ़िल्मी गीत को गाता है] तेरे मन की गंगाजी, और मेरे मन की जमनाजी..बोलो राधेजी संगम होगा या नहीं..

[अब उस बुढ़ऊ के दूसरे साथी जो पीछे-पीछे आ रहे हैं, वे भी उसका साथ देते हुए इस गीत को गाने लगते हैं। इन बूढ़ों की मंडली तो धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ती आ रही है, मगर रतनजी की पूरी टोली झट-पट पहुंच जाती है छत पर। और वहां आकर पहला काम करती है, साज़ के सामान पर कब्ज़ा जमाने की। इस तरह रतनजी माइक पकड़ लेते हैं, तो छत्तर सिंह थामकर बैठ जाता है हारमोनियम की पेटी। प्यारे मोहन तबले पर थाप देने लगता है, अट्टूड़ा और गट्टूड़ा छम-छमिया और खड़ताल बजाने बैठ जाते हैं। जब ये सभी बुढ़ऊ सीढ़ियां चढ़कर आते हैं छत पर, वहां की स्थिति इनके लिए नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाती है के 'उनकी उपस्थिति में कोई दूसरे आकर, साज़ के सामान पर कब्ज़ा कैसे जमा सकते हैं ?' उन लोगों को साज़ का सामान कब्ज़ा जमाये देखकर, इन खोड़ीले बुढ़ऊओं से बिना बोले रहा नहीं जाता..बस उनमें से झट भड़ास निकालता हुआ, दूसरा बुढ़ऊ कहता है]

दूसरा बुढ़ऊ – अरे ए रतन सिंह, इधर ला माइक।

रतनजी – फिर हम क्या करेंगे, बा'सा ?

तीसरा बुढ़ऊ – सेवा करना, सेवा करोगे तो पाओगे मेवा।

चौथा बुढ़ऊ – बेटा अट्टूड़ा गट्टूड़ा, ठंडा पानी पिलाओ। प्रसाद की पुड़ियाँ बनाओ, काम तो बहुत है बच्चों..करो उतना ही कम है।

तीसरा बुढ़ऊ – [रतनजी से] – बेटा रतन, अपने दोस्तों को साथ ले जा। और जाकर, चाय-वाय का इंतजाम करो बेटा।

छत्तर सिंह – फिर आप क्या करेंगे, बा'सा ?

[सभी बुढ़ऊ जाजम पर बैठ जाते हैं, फिर पहला बुढ़ऊ सभी बुढ़ऊ जनों से कहता है]

पहला बुढ़ऊ – हम लोग गायेंगे भजन, [दूसरे सभी बुढ़ऊओं से कहता है] लो भाइयों, गाओ पहला भजन गजाननजी महाराज़ का। [भजन गाना शुरू करता है] जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा। [अपने साथियों से, वापस कहता है] अरे क्यों चुप-चाप बैठ गए, खरगू की तरह ? देवो रे, मेरा साथ।

दूसरा बुढ़ऊ – [रतनजी से माइक छीनकर, कहता है] – इकट्ठे हो गए यहां, गधों की तरह ? यहां, क्या लड्डू मिल रहे है ? जाओ, जाओ। अपना काम देखो। [इतना कहकर, वह धक्का देकर रतनजी को उठाता है]

तीसरा बुढ़ऊ – ए रे छत्तरिया, बीड़ी-सिगरेट की थाली थमा दे रे इधर। अब तलब होने लगी है रे, अब तो अहले धुंए निकालेंगे सिगरेटों के। फिर गायेंगे, आराम से।

[छत्तर सिंह उन बुढ़ऊओं के सामने, थाली रख देता हैं। अब उस थाली से सभी बुढ़ऊ उठाते जा रहे हैं सिगरेटें, एक भी बुढ़ऊ बीड़ी के हाथ नहीं लगा रहा है ? फटा-फट वे माचिस से उन सिगरेटों को सिलगाकर, धुंए निकालते जा रहे हैं। थोड़ी देर में ही सिगरेटों के कई पाकेट ख़त्म हो जाते हैं, धुंए के उठते बादल से लोगों के लिए सांस लेना कठिन हो जाता है। यह मंज़र देखकर, रतनजी का दिल जलता है। इन बुढ़ऊओं का ऐसा व्यवहार देखकर, उन पर बहुत क्रोध आता है। कि, **'ये कमबख़्त अपने घर पर फूंकते हैं बीड़ियाँ, और यहां जागरण में मुफ़्त की सिगरेटें क्या हाथ लग गयी ? सभी उन पर हाथ साफ़ करते, थक नहीं रहे हैं ?'** फिर, क्या ? रतनजी झट उस थाली को वहां से हटाकर, कहते हैं]

रतनजी – [ज़ोर से, कहते है] – क्या कर रहे हो, बा'सा ? पूरी उम्र गुज़र गयी बीड़ियाँ फूंकते-फूंकते, अब यहां हाथ लग गयी मुफ़्त की सिगरेटें.....और आप सब बन गए, राजा भोज। क्यों बेचारे यजमान का ख़र्च बढ़ाते जा रहे हैं, अपना शौक पूरा करने के लिए ?

[पहला बुढ़ऊ झट रतनजी को अपने नज़दीक बुलाता है, फिर उनके कान में फुसफुसाता हुआ कहता है]

पहला बुढ़ऊ – [कान में फुसफुसाकर, कहता है] – क्यों बखिया उधेड़ रहा है, कुछ तो हमारी इज़्ज़त का ख़्याल कर ? बेटा रतन तुझको पीनी है तो बेटा तू भी पी ले रे, और दो-दो सिगरेटें तेरे दोस्तों को भी थमा दे। ऐसी बातें अन्दर ही रहने दे, बाहर चौड़ी करने की कोई ज़रूरत नहीं।

दूसरा बुढ़ऊ – यह तो तेरे और हमारे बीच, चुपचाप रहकर अपना काम पूरा कर लेने का सौदा है। बस बेटा, चुप रहकर फ़ायदा उठा लेना ही अच्छा है। तुम लोग भी सिगरेट फूंकते हुए धुंए के छल्ले बनाओ, और हम भी मज़ा ले लेंगे धूम्र-पान का।

रतनजी – यह बात तो ठीक है, बा'सा। मगर हम लोग भी, भजन गाना चाहते हैं।

दूसरा बुढ़ऊ – धीरज रखो, बेटा। पहले हम लोग गजानन देव का पहला भजन गा लेते हैं, फिर तुम लोगों का ही नम्बर है। ले रतन अब जगह छोड़, और ले जा तेरे दोस्तों को..और जाकर, चाय बनाकर लेकर आ जाओ।

पहला बुढ़ऊ – जा रे, रतन। अब हम लोगों को गाने दे, रे।

तीसरा बुढ़ऊ – जल्दी जा, वक़्त ख़राब मत कर।

[पहला बुढ़ऊ तबले पर थाप देने लगता है, तो दूसरा उठाता है मंजीरा। फिर तीसरा, कब कम पड़ने वाला ? वह झट उठाता है, हारमोनियम की पेटी। साज़ के साथ निकलने लगते हैं, सुर। उधर इनका मुखिया पकड़ता है, माइक..और ज़ोर-ज़ोर से गाने लगता है। अब इनके सुर भूंगले में गूंजते हैं, 'गजानन पालने में झूले ओ गजानन..' इधर यह सुर उठता है, और मकान के बाहर इधर-उधर विचरण कर रहे सारे गधे एक जगह इकट्ठे होकर, ढेंचू, ढेंचू के सुर ज़ोर से निकाल बैठते हैं। उधर रतनजी और उनके दोस्त दुमदुमे के पास आकर, बैठ जाते हैं। इस दुमदुमे पर, बाल्टी में पीने का ठंडा पानी भरकर रख दिया गया है। इन बुढ़ऊओं का सुर 'पालने में झूले गजानन..' उठता है, और उधर रतनजी एक हाथ की मुट्ठी दबाते हैं, फिर दूसरे हाथ से इस हाथ की कोहनी पकड़कर उसे हिलाते हैं झूले के माफ़िक। तभी सीढ़िया चढ़ते आ रहे एक बुढ़ऊ की निग़ाह इस तरह के इशारा कर रहे रतनजी पर गिरती है, इन इशारों को देखते ही वह बुढ़ऊ चमकता है। फिर, क्या ? वह इनके नज़दीक आकर, इनसे कहता है..]

नया बुढ़ऊ – क्या कर रहे हो, छोरों ?

रतनजी – [मुस्कराते हुए कहते हैं] – हिंडोला [झूले] में झूला रहे हैं, गजानन देव को।

छत्तर सिंह – बा'सा, ज़रा रतन का नाच देखकर जाइए। बहुत अच्छा नाचता है, जनाब।

नया बुढ़ऊ – नहीं बेटा, मुझे तो अपने साथियों के पास जाना है। उनके पास बैठकर, भजन गाने में उनका साथ देना है। आप लोग नाचो, बेटा नाचो।

[अब नया बुढ़ऊ, अपने साथियों के पास आकर कहता है]

नया बुढ़ऊ – [जाजम पर बैठता हुआ, कहता है] – देखो रे, भाया। अपने मोहल्ले के छोरे बहुत होशियार हो गए हैं, नाचने में। आपको क्या कहूं, दोस्तों। ये बच्चे ऐसे नाचते हैं, जैसे मधुवन में राधा-कृष्ण की जोड़ी नाचती है।

[इतने में सारे बुढ़ऊ भजन का अगला मुखड़ा गाना शुरू करते हैं, सभी बुढ़ऊ साज़ बजाते हुए गाते दिखायी देते हैं]

सारे बुढ़ऊ - [अगला मुखड़ा गाते हुए] - "रिद्धि-सिद्धि थोरे संग बिराजे ओ, माणक-मोती लावे ओ देवा"

[छत्तर सिंह मर्द-औरत के एक साथ सोने की एक्टिंग करके दिखाता है, इस तरह वह इस भजन की अलग ही व्याख्या देता दिखायी देता है। वक़्त बीतता जा रहा है, काफ़ी वक़्त बीत जाने के बाद..अब घड़ी के दोनों कांटें, बारह के निशान पर आकर मिल जाते हैं। अब घड़ी में मध्य रात्रि के बारह बजे हैं। अब सारे बुढ़ऊ झेरे खाने लगे, नींद के कारण उनकी पलकें भारी होती जा रही है। बस, रतनजी को इसी मौक़े की तलाश थी। झट हथेली पर अफ़ीम की किरचियां रखकर, एक-एक बुढ़ऊ के पास जाकर मनुआर करते हैं। फिर क्या ? हरेक बुढ़ऊ किरची उठाकर अपने मुंह में रख़ता जा रहा है, और साथ में 'ॐ नम: शिवाय' अलग से बोलता जा रहा है। थोड़ी ही देर में, उनके मुखिया के हाथ से माइक छूट जाता है। रतनजी झट माइक थामकर, जागरण का मंच जीत लेते हैं। अब सारे बुढ़ऊ अब, झेरे खाते नज़र आ रहे हैं। अब रतनजी के साथी, इन लोगों के हाथ से साज़ के सामान लेकर उन पर कब्ज़ा जमा चुके हैं। सभी साथी, साज़ बजाते हुए दिखाई दे रहे हैं। रतनजी ठहरे, कुबदी नंबर एक। कुबद को अंजाम देने के लिए, अब वे फ़िल्मी तर्ज़ पर भजन गाते जा रहे हैं। जिसकी तान के पीछे ये झेरे खा रहे बुढ़ऊ, पीछे के सुर देते जा रहे हैं। अब इस चांदनी रात में, रतनजी ऊंची तान छोड़ते हैं। अब इनके सुर, इनकी भायली आशा के कानों में गिरते हैं। वह झट..काली मिर्च और मिश्री का मिश्रण लेकर, मुंडेर [छत] पर चली आती है। और वहां बावली की तरह, रतनजी के पास आकर खड़ी हो जाती है। उसे अपने पास बैठाकर, रतनजी अपनी ज़ेब से चांदी की डिबिया निकालते हैं। उस डिबिया में रखी पान की गिलोरियों से, बर्क लगी हुई दो पान की गिलोरी निकालते हैं। फिर एक ख़ुद अपने मुंह में ठूंसते हैं, और दूसरी गिलोरी देते हैं आशा को। पान की गिलोरी चबाते-चबाते, आशा के होंठ लाल सुर्ख हो जाते हैं। अब वह रतनजी के पास बैठकर, तन्मयता से उनके गाये भजन सुनती है। **इन दोनों को देखकर ऐसा लगता है, मानो सौन्दर्यता की देवी "बनी ठनी", अपने प्रेमी किशनगढ़ महाराजा रतन सिंह [कवि नागरी दास] के पास बैठी है ?** कुछ वक़्त गुज़रता है, उसकी सहेली बदन कौर सीढ़ियां चढ़कर छत पर चली आती है। और आकर, आशा से कहती है]

बदन कौर – [नज़दीक आकर, कहती है] – ए आशा। तूझे लेने आ गए हैं, तेरे ताऊजी। नीचे चल, वे बाहर खड़े तेरा इंतज़ार कर रहे हैं।

[जैसे किसी प्रेयसी की दुर्दशा उसके प्रेमी के बिछुड़ने से हो जाती है, आशा की भी वही दशा होती जा रही है। उसके नयनों से, अश्रु सरिता बहने लगी। अब होने वाला बिछोव का दर्द, नाक़ाबिले बर्दाश्त होता जा रहा है। नयनों से आंसू गिराती हुई, वह अवरुद्ध गले से बदन कौर से कहती है]

आशा – [आंसू गिराती हुई, कहती है] – भायली, ऐसे मीठे सुरों को छोड़कर मुझे कहीं जाने की इच्छा नहीं होती। अब ताऊजी को, इनकार कैसे करूं ? इनकार कर दिया, तो वे नाराज़ हो जायेंगे।

[प्रीत का सोमरस पीये हुए नयनों से, आंसू गिरते जा रहे हैं..इन गिर रहे आंसूओं को देखकर, रतनजी का दिल-ए-दर्द नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाता है। वे इन गिरते आंसू रूपी मोतियों को, अपने रुमाल से साफ़ कर डालते हैं। इस तरह वे इन मोतियों को, ज़मीन पर गिरने नहीं देते। फिर उसे दिलासा देते हुए, कहते हैं]

रतनजी – यह कैसा, पागलपन ? आज़ नहीं तो कल फिर मिलेंगे, कोलेज के अन्दर। अभी ताऊसा को नाराज़ मत कर, आशा।

[आशा से बिछुड़ना रतनजी के लिए, नाक़ाबिले बर्दाश्त है। उनका दिल नहीं चाहता, कि 'आशा यहां से चली जाय।' दिल चाहता है, वे उसके सर और गालों को हाथ से सहलाते हुए दिलासा दे दें..मगर लोक-लाज़ के डर से, वे ऐसा कर नहीं पाते। फिर क्या ? आशा उठकर बदन कौर के साथ, रुख़्सत होती दिखायी देती है। उस जा रही आशा को देखते-देखते, उनकी आँखें नम हो जाती है। अब वे उस बिछोह को बर्दाश्त करते हुए, उद्धवजी और गोपियों के बीच होने वाले सम्वाद पर तैयार किया गया भजन ऊंची तान लेकर गाते हैं। **"आंखों से झरने बहते, कहो नी.." मुखड़ा आते ही, उनके नयनों से अश्रुधारा इस तरह बहती है..जिसे वे रोक नहीं पाते ? उनके लिए 'श्री कृष्ण व गोपियों के वियोग' विषय पर तैयार किया गया "उद्धव-गोपी संवाद" भजन, उनके दिल को असर करता जा रहा है..उसके सुर ऐसे लगते हैं..मानो उनके दिल को चीरकर, वे ऊंचे सुर उनके कंठ से निकले हो ?** कुछ ही देर में, आशा उनकी नज़रों से ओझल हो जाती है। अब रतनजी "उसके जाने का कारण" बुढ़ऊ रिश्तेदार [ताऊजी] को मानकर बिछोव का दोषी उन्हें समझ लेते हैं। उन पर आये क्रोध का कहर, इन सभी बुढ़ऊ लोगों पर ढहाने लगते हैं। फिर क्या ? वे प्रतिशोधात्मक क़दम, वे इन सभी बुढ़ऊ लोगों की इज़्ज़त उधेड़ने के लिए उठा लेते हैं..! उनको मालुम है, ये बुढ़ऊ पिछले सुर की टेर बराबर देते जा रहे हैं, भले ये बुढ़ऊ झेरे ही खा रहे हैं ? फिर क्यों नहीं, इनके साथ कुबद की जाए ? अब वे, दू-अर्थी संवाद के भजन गाने शुरू करते हैं। उनका विचार, शत प्रतिशत सही साबित होता है। क्योंकि अब, उनकी गायी हुई हर लाइन के बाद बुढ़ऊ टेर देते जा रहे हैं।

रतनजी – [दू-अर्थी भजन गाते हुए] – चामड़ी री पुतली भजन कर ए sss

सभी बुढ़ऊ – [झेरे खाते हुए, टेर देते हैं] – अें SS अें SS जी ओsss जी ओsss...

रतनजी – [गाते हुए] – चामड़ा रा हाथी-घोड़ा, चामड़ा रा ऊंट, चामड़ा रा बाजा बाजे, बाजे च्यारू खूट...

सभी बुढ़ऊ – [टेर देते हुए, मुखड़ा वापस गाते हैं] – ओ sss ओ SS जीओ जीओ चामड़ा रा बाजा बाजे ओsss बाजेsss ओsss बाजे च्यारू खूट ओsss जीओsss जीओsss जीओsss बाजेsss

[अफ़ीम की पिनक में, सभी बुढ़ऊ ज़ोर-ज़ोर से देने लगे तान। इस तरह रतनजी सभी बुढ़ऊ से, लगा-लग टेर दिलवाते जा रहे हैं। जब इन बुढ़ऊ की टेर देने की आवाज़ भूंगले में गूंज़ती है, तब छत पर सो रहे मोहल्ले के निवासियों को नींद उछट जाती है। जगने के बाद जब मोहल्ले वालों ने, सारे बुढ़ऊओं की आवाज़ को ध्यान से सुनी। आवाज़ सुनते ही वे, इन सभी बुढ़ऊओं को पहचान जाते हैं। वे अब आश्चर्य चकित होकर, इन बुढ़ऊओं को बुरा-भला कहते हैं। उनको इस बात का आश्चर्य है, फागुन माह आया नहीं, फिर ये बुढ़ऊ कैसे गा रहे हैं फागुन के गीत ? फिर वे बिंडी के पास इकट्ठे होकर करते है, परायी पंचायती।]

एक चालीस साल का आदमी – [पड़ोसी से बात करता हुआ] – ये बुढ़ऊ लोग तो, सारे शरारती निकले ? रात की नींद ख़राब कर डाली, इन्होने। खींवजीसा। अब मैं तड़के उठकर कैसे पकडूंगा, जयपुर की गाड़ी ?

खींवजी – आपका जयपुर जाना, फिर कभी हो जाएगा..मगर मोहल्ले के सारे बुढ़ऊ बिगड़ गए तो, क्या करेंगे रामसा ? अब, बोलते क्यों नहीं ?

रामसा – भोगने फूटे हुए हैं इन बुढ़ऊओं के, यह कोई भजन है "चामड़ा रा बाजा बाजे..." मुझे तो कहते हुए लाज़ आती है।

खींवजी – 'साठा बुद्धि न्हाटे' मैं यही कहूंगा, रामसा। बन्दर बूढा हो जाता है, मगर छलांग लगाना नहीं भूलता। बस, ये सारे बुढ़ऊ जन अपने मोहल्ले के ऐसे ही है।

रामसा की बहू – **खींवजी की बहू। मैं तो हूं आधी पागल, जब गट्टूड़ा के बापू ने कहा था "जागरण में जाने वाले या तो होते हैं निक्कमें या फिर होते हैं रुलियार।" उस वक़्त मैंने**

इनकी बात पर भरोसा किया नहीं। मगर अब मुझे पूरा भरोसा हो गया है, ये सारे बुढ़ऊ जन रुलियार ही है। इसलिए, ये एक भी जागरण नहीं छोड़ते।

खींवजी – हां भाभी, हर जागरण में यही बुढ़ऊ जन मिलते हैं। आप, कहीं जाकर देख लो।

[रतनजी की यह रात, खाली कुबद करने में ही बीती। दू-अर्थी सावन और फागुन के गीतों का प्रयोग, कितना बढ़िया इन भजनों में किया गया...ऐसा प्रयोग, होली पर्व पर शलील गीत गाने वाले माई दासजी भी नहीं कर सकते। फिर क्या ? इधर बजे सुबह के चार, और इन बुढ़ऊओं का उतर जाता है अफ़ीम का नशा। फिर क्या ? इन लोगों की आंखों से उतर जाती है नींद, और वे जागरण का मंच संभाल लेते हैं। फिर रतनजी और उनके दोस्त झट चाय तैयार करके, ले आते हैं इन बुढ़ऊओं के पास। सभी बुढ़ऊओं ने चाय से भरे प्याले उठा लिए हैं, और अब वे चुस्कियां लेते हुए चाय पीते जा रहे हैं। चाय पीने के बाद, सभी बुढ़ऊ जन ने दियासलाई से सिगरेटें सिलगा दी है। अब वे सिगरेटों से धुंए के छल्ले बनाते हुए, इधर-उधर की गपें भी ठोकते जा रहे हैं। तभी राज़ रणछोड़जी के मंदिर से, मंगला के भजनों की आवाज़ सुनायी देती है। फिर क्या ? बुढ़ऊ जन झट, 'सत्य नारायण की आरती' की तैयारी करते हैं। आरती करने के बाद, इन बुढ़ऊओं का मुखिया रतनजी और उनके दोस्तों को हुक्म देता है, कि 'वे झट प्रसाद की पुड़िया बनाकर, सबको वितरित कर दें।']

बुढ़ऊ का मुखिया – [रतनजी से, कहता है] – रतन सिंह, तूने खूब गा लिए भजन। तू गाकर सन्तुष्ट हो गया, ना ? अब, आप लोग सभी प्रसाद बांटने की तैयारी करो। फटा-फट प्रसाद की पुड़िया बनाओ, और सबको बांटो।

[रतनजी और उनके मित्र प्रसाद की पुड़िया बनाकर, सबको बांटते दिखायी देते हैं। उधर सारे बुढ़ऊ लोग, भगवान की जय-जयकार करते जा रहे हैं।

बुढ़ऊ का मुखिया – [ज़ोर से जय बोलाता हुआ] – बोलो रे बेलियों, अमृत वाणी।

सभी बुढ़ऊ – [ज़ोर से, एक साथ बोलते हैं] – हर हर महादेव।

[जागरण के नियम के अनुसार जयकारा तीन बार लगाते हैं, अत: सभी बुढ़ऊ दो बार और जयकारा लगाते हैं]

बुढ़ऊ का मुखिया – [ज़ोर से बोलता है] – बोलो रे बेलियों अमृत वाणी।

सभी बुढ़ऊ – [ज़ोर से, एक साथ बोलते हैं] – हर हर महादेव।

बुढ़ऊ का मुखिया – [ज़ोर से, बोलता है] – बोलो रे बेलियों अमृत वाणी।

सभी बुढ़ऊ – [ज़ोर से, एक साथ बोलते हैं] – हर हर महादेव।

बुढ़ऊ का मुखिया – [ज़ोर से, बोलता है] – आज़ के आनंद की..!

सभी बुढ़ऊ – [एक साथ, बोलते हैं] – जय हो।

[प्रसाद की पुड़िया लेकर, सभी बुढ़ऊ जन रवाना होते दिखाई देते हैं। दूसरे दिन रतनजी के घर पर, उनके सारे मित्र इकट्ठे हो जाते हैं। और फिर करते हैं, जागरण में बीती घटना का जिक्र।]

रतनजी – देखिये मित्रों। कैसी बीती रे, इन खोड़ीले बुढ़ऊओं के साथ ? फिर वापस करना, खोड़ीलाई ? ये लोग, क्या समझते हैं ? **मेरा नाम रतन सिंह है। मैं हूं, ओटाळपने का उस्ताद।**

[इतने में मोहल्ले में, कई लोगों के ज़ोर-ज़ोर से बोलने की आवाज़ सुनायी देती है। रतनजी को ऐसा लगता है, 'कई लोग चौपाल पर बैठे बुढ़ऊओं को, फ़टकार रहे हैं ? या कोई, उन पर ताना कस रहा है ? इन आवाज़ों को सुनकर, रतनजी अपने दोस्तों से कहते हैं]

रतनजी – [ख़ुश होकर, कहते हैं] – चलो चलो, खिड़की के पास। वहां चलकर, देखते हैं...इन बुढ़ऊ जन की इज़्ज़त की बखिया, कैसे उधेड़ते हैं ये मोहल्ले वाले ?

[खिड़की से झांक रहे रतनजी और इनके दोस्तों को, मोहल्ले की चौपाल का चबूतरा दिखायी देता है। उस चबूतरे पर बैठे इन बुढ़ऊओं को, मोहल्ले के लोग फ़टकारते दिखायी दे रहे हैं]

रामसा – पप्पूड़े के भईजी, क्या बात है ? रात को आप क्या पीकर बैठे थे, जागरण में ? कैसे चहक रहे थे, आप ? कहीं बा'सा, आपने अफ़ीम तो नहीं ठोक ली, अपने दोस्तों के साथ बैठकर ?

खींवजी – बात यह है, रामसा। कि, पप्पूड़े की मां बा'सा के ऐसे गुण देखकर इनसे पहले चली गयी, भगवान के घर। अब यह वासती जवानी है, बड़ी ख़राब। अफ़ीम की किरची बिना, इनका काम चलता नहीं। जागरण में मुफ़्त में मिल जाती है, अफ़ीम की किरचियां और फूंकने के लिए बेहतरीन सिगरेटें।

रामसा की बहू – [घूंगट निकाले, कहती है] – गट्टूड़ा के पापा। मैं तो यही कहूंगी, बा’सा का मन वापस शादी करने का हो गया है। क्या करे, बेचारे ? कुछ कर नहीं सकते, तो क्या हो गया ? फाटा बोलकर दिल की बाफ निकालते हैं, बेचारे।

बुढ़ऊ का मुखिया – [क्रोधित होकर, कहता है] – आप सभी, मेरे बच्चों की उम्र के हैं। आपके माता-पिता ने सिखाया नहीं कि ‘बड़ो से बात कैसे की जाती है ?’ कहीं तुम लोग, भंग पीकर तो यहां नहीं आ गए ?

रामसा – ऐसे बड़े-बूढ़े बनते हैं आप, फिर रात को ऐसे भजन आप लोगों ने कैसे गाये ? ये कैसे भजन है ? [गाने का अभिनय करते हुए कहते हैं] “चामड़ा रा बाजा बाजे, बाजे च्यारू खूट” अब कहिये, इस भजन का क्या मफ़हूम है ?

दूसरा बुढ़ऊ – हमने तो ऐसे भजन गाये नहीं, हम तो ले रहे थे ऊंघ। फिर, गाये किसने ? [अपने साथियों पर, नज़र डालता हुआ कहता है] बोलो भाई, किसने की ऐसी कुबद ?

बुढ़ऊ का मुखिया – [याद करता हुआ, कहता है] - माइक तो था, इस बदमाश रतनिये के पास।

[अब वह सोचने बैठ जाता है, फिर याद आते ही ज़ोर से कहता है]

बुढ़ऊ का मुखिया – [ज़ोर से, कहता है] – अरे भाइयों, इस कुबदी ने ही शरारत कर डाली हमारे साथ। इस रतनिये को माइक दिया नहीं हमने, बस यही कारण है...इस नालायक ने बदला निकाला है, हमारे साथ।

तीसरा बुढ़ऊ – तब जनाब, आज़ से इस रतन सिंह और इसके दोस्तों को जागरण से निकाला जाता है..यह हमारी भजन मंडली का ऐलान है।

रतनजी – [ज़ोर से, कहते हैं] – मुझे मत निकालो रे.., मुझे मत निकालो रे...!

[रतनजी को ऐसा लगता है, कोई उनके कंधे को ज़ोर से हिला रहा है। इस तरह कंधे को झंझोड़ने से, उनकी आँख खुल जाती है। वे आँखें मसलते हुए जागृत होते हैं, और सामने क्या देखते हैं..? आस-पास खड़े उनके साथी उनका कंधा झंझोड़कर उनको उठा रहे हैं। और उनको बड़बड़ाते देखकर, पास खड़ा हवलदार मुस्कराकर उन्हें कह रहा है..]

हवलदार – ओ बाबू साहब। आपको कैसे निकालें बाहर ? आपको तो बंद करेंगे अभी, हवालात के अन्दर। मालिक, आपको यह कुर्सी बैठने को क्या मिल गयी ? वाह भाई, वाह। इस कुम्भकर्ण को

भी पीछे छोड़ दिया, आपने..नींद लेने में। अब उठ जाइये, जाकर मिल लीजिये सवाई सिंहजी से। ऐसी नींद तो जानवर भी नहीं लेते हैं, भाई।

[उस हवलदार की आवाज़ सुनकर, दूसरे बैठे हवलदार ज़ोर से हंसते हैं। अब उन्हें इस तरह हंसते देखकर, अब रतनजी क्या बोल पाते ? जनाब रतनजी तो, शर्मसार होते जा रहे हैं। अब वे, सर झुकाकर बैठ जाते हैं। अचानक मोदीखाने से मोदीजी की आवाज़, यहा बैठे सिपाइयों को सुनायी देती है। आवाज़ सुनकर वह हवलदार, मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी को सवाई सिंहजी के पास हाज़िर होने का हुक्म देता है।]

हवलदार – अब आप सभी जाइये, और सीधे जाकर साहब के पास हाज़िर हो जाइए।

[मगर इन बेचारों को क्या मालुम, सवाई सिंहजी कहां बैठते हैं ? इधर मोहनजी ठहरे, अफ़सर। वे क्यों अदने से हवलदार का हुक्म, मानेंगे ? उधर रतनजी और रशीद भाई जानते नहीं, सवाई सिंहजी का कमरा किधर है ? वे बेचारे सवाई सिंहजी के कमरे के स्थान पर, मोदीजी के कमरे में घुस जाते हैं। ओमजी ठहरे, अपनी मर्ज़ी के मालिक। वे तो वहीँ खड़े रह जाते हैं, गलियारे में। इस गलियारे में, उन्हें कहीं हवलदार का डंडा मिल जाता है। उसे उठाकर वे गलियारे में, हवलदार की तरह राउंड काटने लग जाते हैं। मोदीखाने में दाख़िल होने पर, उन्हें मोदीजी बैठे दिखायी देते हैं। उनको घेरकर, तीन-चार पुलिस वाले बैठे हैं। रसोड़दार [महराज़] की व्यवस्था न हो पाने से, मोदीजी नाराज़ होकर उन पुलिस वालों को कटु वचन सुना रहे हैं]

मोदीजी – अरे कमबख़्तों घनचक्कर की तरह पूरे दिन भटकते रहते हो, पूरे जोधपुर शहर में। मगर मेरा कहा काम करने में आपको आती है, मौत। कितनी बार कहूंगा, आप लोगों को ? कि, 'महराज़ का, बंदोबस्त करना है।' मगर आप लोग इस कान से सुनते हैं, और दूसरे कान से निकाल देते हैं। अब, सुन लेना मेरी बात।

एक पुलिस वाला – अरे बोलिए, मोदीजी। नहीं तो फिर आप, लोगों से हमारी शिकायत करते रहेंगे ?

मोदीजी - [गुस्से में, कहते हैं] – या तो तुम लोग व्यवस्था कर दीजिये एक रसोड़दार की, नहीं तो रामा पीर की कसम..खाना आप लोगों से ही बनवाऊंगा। फिर कहना मत, बेचारे ग़रीब हवलदारों को नाहक परेशान कर रहा हूं मैं ?

एक पुलिस वाला – [पास बैठे पुलिस वाले से, कहता हैं] - घर पर, अपनी घर वाली से हो गए होंगे परेशान। अब यहां बेचारे, घर वाली पर आये क्रोध को हम लोगों पर उतार रहे

हैं।

[उस पुलिस वाले की बात सुनकर, वह दूसरा पुलिस वाला अपने होंठों पर मुस्कान बिखेर देता है। फिर दोनों, एक साथ हंस पड़ते हैं। हंसते हुए उनकी नज़र, कमरे में दाख़िल हो रहे रतनजी पर गिरती है। रतनजी की सूरत, पहनावा और उनके रहने का ढंग देखकर, वे उन्हें रसोड़दार महराज़ ही समझ लेते हैं। रतनजी ठहरे दुबले-पतले, कमीज़ से बाहर आयी हुई यज्ञोपवीत, सर पर चोबेजी की तरह गांठ दी हुई चोटी..यह सारा व्यक्तित्व किसी रसोड़दार महराज़ का ही हो सकता है। इनको देखते ही, पुलिस वाले और मोदीजी हो जाते हैं ख़ुश। एक पुलिस वाला, मुस्कराता हुआ कहता है]

पुलिस वाला – [मुस्कान बिखेरता हुआ, ज़ोर से कहता है] – अरे मोदीजी देख लीजिये, जनाब। आपके रसोड़दार महराज़, आ गए हैं। मोदीजी अब ताना देना बंद कीजिये, और मंगवा लीजिये दो किलो गुलाब-जामुन चतुरजी की दुकान से। फिर लगाओ भोग, बाबा रामसा पीर को।

मोदीजी – [रतनजी से, कहते है] – इतनी देर से पधारे, महराज़ ? आपका इंतज़ार करते-करते, मैं हो गया परेशान। [उठकर, रतनजी को रसोड़े की चाबी देते हैं] यह लीजिये चाबी, रसोड़े की। अब आप पहले यह बताकर जाइये, पहले आप क्या बनाओगे ?

[रतनजी झट मोदीजी से रसोड़े की चाबी लेकर उनकी बात पर, आश्चर्य चकित होकर उनका मुंह ताकते हैं ? **'वे समझ नहीं पा रहे हैं, यह मोदी क्या कहता जा रहा है ? शायद यह मोदी, मुझे पहचान नहीं पाया है ? इन बातों से, अपुन को क्या लेना-देना ? बस अब तो मुझे ऐसी जुगत लड़ानी है, जिससे हम चारों यहां से छूटकर अपने घर पहुंच सके ?'** इतना सोचकर, वे मुस्कराते हुए मोदी से कहते हैं]

रतनजी – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – मोदीजी, जय श्याम री सा। आप देखिये बाहर, मौसम कैसा सुहावना है। इन पेड़-पौधो को देखकर, मन-मयूर नाच उठता है। बस ऐसे मौसम में जनाब, दाल के बड़े बन जाए..तो मालिक, आप सब बड़े खाकर ख़ुश हो जायेंगे। जनाब, फ्रिज में मूंग की दाल पीसी हुई होगी ?

[दाल के गरमा-गरम बड़ों का नाम सुनकर, पास बैठा पुलिस वाला ख़ुश हो जाता है। वह ख़ुश होकर, कहता है]

पुलिस वाला – [ख़ुश होकर, कहता है] – आनंद से बनाओ, महराज़। कल ही दाल पिसाकर, फ्रिज में रखी है। दाल के गरमा-गरम बड़े, वाह भाई वाह। मज़ा आ जाएगा।

[सीट से उठकर, अब वह पुलिस वाला मोदीजी से कहता है]

पुलिस वाला – मोदीजी, अब हम सभी बाहर जाकर बैठते हैं। आपको कोई काम हो, तो हमें बुला लेना। [अपने साथियों से] चलो भाई, चलो। कहीं साहब वापस न आ जाए, इधर घुमते-घुमते।

[सभी पुलिस वाले कमरे से, बाहर चले जाते हैं। मोदीजी से ली हुई रसोड़े की चाबी को अच्छी तरह से संभालकर, रतनजी रशीद भाई को साथ लिए रसोड़े की तरफ़ चल देते हैं। रसोड़े का ताला खोलकर, वे दोनों अन्दर दाख़िल होते हैं। अब रशीद भाई अपने बैग से, जमालगोटे की पुड़िया और केंवड़ा जल की शीशी निकालकर रतनजी को दिखलाते हैं। फिर उन्हें जमालगोटे की पुड़िया देकर, केंवड़ा जल की शीशी अपने पास रख लेते हैं। अब वे, उनसे कहते हैं]

रशीद भाई – आप जितने ओटाळ हैं, मैं उससे कम नहीं तो क्या..? सवाया तो, ज़रूर पड़ता हूं। यह लीजिये, जमालगोटे की पुड़िया। [जमालगोटे की पुड़िया देते हैं] इसे आप मूंग की दाल में मिलाकर, बड़े तल लेना। इतने में...

रतनजी – [फ्रिज खोलते हुए, कहते हैं] – आगे बोल, क्या कहना चाहता है ?

रशीद भाई - मैं ठंडे जल में, केंवड़ा जल डालकर सिपाईयों पिला देता हूं। जनाब देखिये, मुझे रहती है कब्जी। इसलिए यह जमालगोटे की पुड़िया, मैं अक़सर अपने बैग में रख़ता हूं।

रतनजी - [फ्रिज से, पीसी हुई दाल बाहर निकालते हैं] – अरे मियां, मुझे सब ध्यान है। तू क्या रख़ता है, और क्या नहीं रख़ता ? मैं तेरी पूरी जानकारी रख़ता हूं, अब आगे मत बोल। मुझे काम करने दे, और तू जाकर सिपाईयों को ठंडा पानी पिला।

[इतना कहकर रतनजी अलमारी से परात बाहर निकालकर उसमें पीसी हुई दाल डालते हैं, फिर उस दाल में जमालगोटा और अन्य मसाले डालकर दाल के बड़े बनाने की तैयारी शुरू करते हैं। उधर रशीद भाई फ्रिज से बर्फ निकालकर, बाल्टी में रखते हैं। फिर मटकी से पानी बाल्टी में लेकर, उसमें केंवड़े जल की कई बूंदे डाल देते हैं। फिर पुलिस वालों को पानी पिलाने के लिए, उस बाल्टी में लोटा डाल देते हैं। अब वे बाल्टी ऊंचाये रसोड़े से बाहर आते हैं, और बाहर राउंड काट रहे सिपाईयों को पानी पिलाने का काम शुरू कर देते हैं।]

रशीद भाई – [सिपाईयों को आवाज़ देते हुए, उन्हें पानी पिलाते जा रहे हैं] – पीजिये हुज़ूर, ठंडा-ठंडा पानी। बहादुर जवानों, देश की रक्षा करने वालों पीजिये ठंडा-ठंडा केंवड़े का पानी। ओ मेरे देश की रक्षा करने वाले बहादुर सिपाईयों, पीते रहो ठंडा-ठंडा पानी। और करते रहो, देश की रक्षा।

[इधर अपने मोहनजी बगीचे में बैठे-बैठे, सिपाईयों को अपनी ईमानदारी के किस्से सुनाते जा रहे हैं। **इस तरह मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी, अपने-अपने स्थान पर पेश करती जा रही है "ओटाळपने के सबूत।"** अब मंच पर, अंधेरा फ़ैल जाता है।]

मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी - खंड १३

लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

[मंच रोशन होता है, जी.आर.पी. दफ़्तर का मंज़र सामने दिखाई देता है। मोहनजी बगीचे में विचरण कर रहे हैं। अब वे माली रूप चंदसा को बगीचे का काम करते देख, वे उनके नज़दीक जाते हैं। अभी इस वक़्त रूप चंदसा, बगीचे के पेड़-पौधो को पानी दे रहे हैं। उनके पास आकर, वे रूप चंदसा से कहते हैं]
मोहनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – रूप चंदसा, यार कढ़ी खायोड़ा। बहुत अच्छा मनमोहक बगीचा लगाया है, आपने। यहां तो यार, मुझे बैठने की बहुत इच्छा होती है।

[ज़ेब से ज़र्दा निकालकर हथेली पर रखते हैं, फिर दूसरे हाथ से लगाते हैं फटकारा। फिर तैयार ज़र्दे को ठूंसते है, अपने होंठ के नीचे। ज़र्दा ठूंसने के बाद, वे रूप चंदसा से कुछ कहना चाहते हैं। मगर यहां जैसे ही ये मोहनजी कुछ बोलना चाहते हैं, और उनके मुंह खोलने के पहले ही रूप चंदसा दूर हट जाते हैं। **यहां तो रूप चन्दसा बड़े होशियार निकले, वे पहले ही जान जाते हैं के "मोहनजी अब बोलते वक़्त, उन पर अपने मुंह से ज़र्दा ज़रूर उछालेंगे।"** मगर यहां मोहनजी को, कोई फ़र्क पड़ने वाला नहीं। चाहे कोई भी उनके बारे में, कुछ भी सोचे ? वे तो बिना सोचे ही झट मुख खोलकर, कह देते हैं।]
मोहनजी – [मुंह से ज़र्दा उछालते हुए, कहते हैं] – ऐसा बगीचा तो आप मेरे बंगले में लगा दो, तो रूप चंदसा मज़ा आ जाय ?
रूप चंदसा – [थोड़ा दूर हटकर, कहते हैं] – साहब रहने दीजिये, यहां मेरे पास है बहुत काम। अरे जनाब, आप जानते नहीं ? मेरे पास, बिल्कुल भी वक़्त नहीं है..कभी तो बुला लेते हैं मुझे, कलेक्टर साहब। कभी बुला लेते हैं मुझे, रेलवे के कमिश्नर साहब। क्या करूं, जनाब ? आदमी एक हूं, मगर मुझे बुलाने वाले दस। किस-किस के पास जाकर, उनकी ख़िदमत करूँ ?
मोहनजी – देखिये रूप चंदसा, कढ़ी खायोड़ा। मैं आपसे यह कह रहा था...
रूप चंदसा – [बात काटते हुए, कहते हैं] - देखो सा। आप मुझे कढ़ी खायोड़ा मत कहा करें, जनाब मैं कढ़ी की सब्जी खाकर नहीं आया हूं। मैं तो कांदे की सब्जी ठोककर आया हूं। कल ही मैं

परिहार नगर गया था, वहां मेरे काकी ससुरसा का मकान है...
मोहनजी – [बात काटते हुए कहते हुए, कहते हैं] – देखिये रूप चंदसा, कढ़ी खायोड़ा। मैं आपसे यह कह रहा था...
रूप चन्दसा – [बात काटते हुए कहते हैं] – मुझे बार-बार आप कढ़ी खायोड़ा मत कहा करो, एक बार और कह देता हूं के 'मैं कढ़ी की सब्जी खाकर नहीं आया हूं। मैं तो जनाब, कांदे की सब्जी ठोककर आया हूं।' अब पूरी बात सुनो..

मोहनजी – कहिये, आगे।

रूप चंदसा - काकी ससुरसा के यहां क्या बढ़िया बगीचा लगाया..[थूथका न्हाखते हुए कहते हैं] थू थू..मेरी नज़र न लग जाये, हुज़ूर मैंने कल देखा 'क्या कांदे लगे हुए थे उनके बगीचे में..?'
[इतना कहकर, रूप चन्दसा जाकर नल की टोंटी बंद करते हैं। फिर बोक्स खोलकर खुरपी निकालते हैं, अब वे क्यारियों में खुरपी देते हुए मोहनजी से कहते हैं]
रूप चंदसा – [खुरपी देते हुए, कहते हैं] – मैं जब रवाना होने लगा, तब काकी ससुरसा ने ज़बरदस्ती मेरी थैली में पांच किलो देशी कांदे डाल दिए। और कहा 'पावणा, कांदा रोज़ खाया करो, इससे लू नहीं लगेगी।' आज़ भी घर वाली ने कांदे की सब्जी बनायी, जो मैं ठोककर आया हूं। मोहनजी, आप कांदे की सब्जी क्यों नहीं खाते ?
मोहनजी – रूप चंदसा, कढ़ी खायोड़ा। मैं तो रोज़ खाना चाहता हूं, देशी कांदे की सब्जी।
रूप चंदसा – एक बार और कह दिया आपने मुझे, कढ़ी खायोड़ा ? आपको कितनी बार समझाऊं के 'मैं कढ़ी की सब्जी खाकर नहीं आया हूं, बल्कि मैं देशी कांदे की सब्जी ठोककर आया हूं।'
मोहनजी – माफ़ कीजिये, अब आगे से मैं आपको पावणा कहकर ही बतालाउंगा। क्योंकि, आप हमारे मोहल्ले के दामाद हैं। अब आप जब-जब ससुराल आओ तब आप, मेरे ग़रीब-खाने ज़रूर पधारें। और आकर, बगीचा-वगीचा ज़रूर लगाएं। मेरे बगीचे में भी कांदे..
रूप चंदसा – अरे ससुरसा, पावणा तो मेहमान होते हैं। उनसे क्या काम लेते हो, जनाब ? उनको, आदर से बैठाया जाता है। पावणा आते हैं तब, बाज़ार से मिठाई मंगवाकर उनको खिलाई जाती है..और आप मुझे बगीचा लगाने की बात, क्यों कहते जा रहे हैं ?
[रूप चंदसा बेचारे, ऐसे क्या बोले ? गलियारे में राउंड काट रहे ओमजी उनकी बात सुनकर खिल-खिलाकर ज़ोर से हंसते हैं। इतने में रतनजी आकर, बड़े की प्लेटें ओमजी को देकर चले जाते हैं। फिर क्या ? ओमजी बड़े की प्लेटें लेकर, मोहनजी और रूप चंदसा के निकट आकर कहते हैं]
ओमजी – [निकट आकर, कहते हैं] – मिठाई मंगवाने की बात मत कीजिये, रूप चंदसा। अरे जनाब, आप जानते नहीं..ख़र्च करने की बात करने पर, मोहनजी भाग जायेंगे। ये कोसों दूर रहते हैं, खर्चे से।

[बड़ों से भरी दो प्लेटें मोहनजी को थमाकर, कहते हैं]
ओमजी – [बड़े से भरी प्लेटें थमाते हुए, कहते हैं] – ये लीजिये जनाब, बड़े से भरी प्लेटें। अब आप इन राउंड काटने वाले सिपाईयों को थमा दीजिये, मगर एक हिदायत आपको दे देता हूं..इन बड़ों को खाना तो दूर, आपको चखना भी नहीं है। अगर खा लिए बड़े, तो आपके लिए ये बड़े तकलीफ़देह रहेंगे। एक बार खरा-खराकर कह देता हूं, आपको।
रूप चंदसा – ठीक कह रहे हैं, ओमजी। [मोहनजी से कहते हैं] अब आपको बड़े नहीं खाने है, तो यह एक प्लेट मुझे थमा दीजिये।
मोहनजी – [नखरा करते हुए, कहते हैं] – उंहूं ऊंऽऽऽ हूंऽऽऽ..ना भाई ना। पहले आप काकी ससुरजी से, पांच किलो देशी कांदे लाने का वादा कीजिये। फिर आपको, भर-पेट बड़े खाने को दूंगा।
रूप चंदसा – [हंसते-हंसते कहते हैं] – ऐसी सस्ती चीज़ क्या मंगवाते हो, यार मोहनजी ? [ज़ोर से छींक खाते है] अेंऽऽ छीऽऽ छीऽऽ... ऐसा कहकर जनाब, आपने अपना मुंह ख़राब किया।

मोहनजी – फिर, क्या मंगवाऊ यार ?

रूप चंदसा – हुज़ूर, मैं यह कह रहा था कि, 'जनाबे आली आप मिठाई मंगवाते, ये कांदे तो आप घर जाते वक़्त...काकी ससुरजी की दुकान से, ख़रीद लेते।' जानते हैं, आप ? हनुमानजी के मंदिर से सटी हुई, उनकी दुकान है..सब्जी की।
मोहनजी – [मन में धमीड़ा लेते हुए, कहते हैं] – अरे मेरे रामसा पीर। ये रूप चंदसा तो मेरे उस्ताद निकले। लेने में राज़ी, और देने में रामजी का नाम। बराबर यह कढ़ी खायोड़ा, बिल्कुल है मेरे जैसा।
[अचानक उनकी निग़ाह उतरीय पुल से उतरते हुए, एक सज्जन पर गिरती है। वे सज्जन, इनके जान-पहचान वाले लगते हैं। उनको देखते ही, वे उन्हें आवाज़ देते हुए उनके सामने जाते हैं]
मोहनजी – [आवाज़ देते हुए, उनके सामने जाते हैं] – ओ पुरोहितजी सरदार..ओ पुरोहितजी सरदार। इधर आइये, मालिक। मैं एफ़.सी.आई. का मोहन लाल बोल रहा हूं।
[ये सज्जन, जोधपुर एफ.सी.आई. डिपो के मैनेजर "आनंदजी पुरोहित" हैं। इनकी आदतों के कारण इनके विभाग वाले इनको "चलता फिरता दफ़्तर" कहते हैं। ये जनाब कभी सुबह से लेकर शाम तक दफ़्तर में नहीं बैठते। भूल-चूक से कोई दफ़्तर का मुलाजिम या कोई इनका मिलने वाला, कहीं मिल जाए और कह दे इनको के "जनाब, आज़ आप दफ़्तर में मिल जायेंगे ?" सुनकर पुरोहितजी ज़ेब में हाथ डालकर गुलाब का इत्र लगा रुमाल निकालकर मुंह के पास ले जायेंगे, फिर जनाब बहुत गंभीर होकर यह कहेंगे के "अरे यार, आज़ तो आप बिल्कुल मत आओ दफ़्तर। मैं वहां बैठा मिलूंगा नहीं, ख़ाली आप गौते खायेंगे। अरे जनाब, कैसे समझाऊं आपको ? आज़ तो मालिक, जीजी ने अनाज की रिपोर्ट लेकर बुलाया है। आप नहीं जानते, अभी चल रहा है

विधानसभा सत्र। यों ही गौते खाओगे, वहां आकर।" अब आपको यह बताएं, ये "जीजी" है कौन ? यह मोहतरमा है, जिला जोधपुर सूर-सागर इलाके की एम.एल.ए. सूर्य कांताजी व्यास। इनको पुष्करणा ब्राहमण न्यात में, "जीजी" के नाम से बतलाया करते हैं। और आनंदजी पुरोहित है, इनके दामाद। वह भी, मुंहलगे। ऐसा कोई काम नहीं आया इनके सामने, जिसे वे अपनी सासजी से न करा पाए। मुलाज़िमों की बदलियां करवाने का लेखा-जोखा, प्राय: इनके बैग में रहता है। जिले को छोड़िये, ये तो जिले के बाहर कर्मचारियों की बदलियां कराने के मेटर भी अपने पास रखते हैं। इनको मुंह पर याद है..कितनी पोस्टें भरी हुई है, और कितनी ख़ाली है ? भरी हुई पोस्टों पर कौन बिराज़मान है, और वे बिराज़मान आदमी अपने पीछे किस एम.एल.ए. या एम.पी. का हाथ रखते हैं ? यह पूरी रिपोर्ट, इनके पास रहती है। अपने मोहनजी अपनी इच्छा से, जोधपुर से बदली करवाकर खारची पधारे हैं। अब वे बदली करवाकर पछता रहे हैं, के 'क्यों उन्होंने ख़ुद की इच्छा के आधार पर, अपना स्थानान्तरण करवाया ?' ऐसे वक़्त आशा के दीप की तरह पुरोहितजी सरदार का दीदार होना, इनके लिए एक ख़ुश-ख़बरी है। अब उनको देखते ही, उन्होंने पुरोहितजी सरदार को आवाज़ दी है। आनंदजी पुरोहित का आगमन होता है। पुरोहितजी को देखते ही सारे हवलदार, सावधान की मुद्रा में आ जाते हैं। ऐसा लगता है, कोई बड़े रसूख़दार मुअज्ज़म तशरीफ़ लाये हैं। मोहनजी कुर्सी लाकर, इनको बैठाते हैं। और उनके पहलू में रखी कुर्सी पर, वे ख़ुद बैठ जाते हैं। फिर एक दाल के बड़ो की प्लेट उनको थमाते हैं, और दूसरी ख़ुद लेकर बड़े खाने शुरू करते हैं। और इस तरह भूल जाते हैं, ओमजी की दी गयी चेतावनी।]

मोहनजी – [दाल के बड़ो की प्लेट थमाते हुए, कहते हैं] – लीजिये भा'सा, आपके मनपसंद दाल के बड़े। अरोगिये जनाब, कहीं ठंडे न हो जाय ? अब खाने में, देर न कीजिये।

[मोहनजी और पुरोहितजी, गरमा-गरम दाल के बड़े खाते दिखाई देते हैं। और उधर रशीद भाई, दफ़्तर के पास खड़े सिपाईयों को ठंडा पानी पिलाते जा रहे हैं। अब दाल के बड़ो के साथ सबको, सुगन्धित ठंडा-ठंडा जल पीने की तलब बढ़ती जा रही है। वे सभी बार-बार, उस ठंडे जल को पीते जा रहे हैं। फिर भी, उनकी प्यास मिटने का कोई सवाल नहीं ? उधर मोहनजी, पुरोहितजी से वार्तालाप करते दिखायी दे रहे हैं।]

मोहनजी – यार भा'सा, अपने साथियों को कैसे भूल गए हैं ? लम्बे समय तक साथ रहे हैं, जनाब। कभी ख़त न लिखो, तो कम से कम फ़ोन..

पुरोहितजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए कहते हैं] – प्रिंस। अब तू झूठा मोह दिखला मत, काम की बात कर। तू मुझसे क्या चाहता है, वह बात कर। तूझे आज़ पहली बार नहीं देखा है, मैंने। मैं तेरी एक-एक रग से, वाक़िफ़ हूं। बिना मतलब, तू किसी को बुलाता नहीं..इतनी मनुआर करके। तू तो ऐसा कमबख़्त है, जो घर पर मौज़ूद होने के बाद भी फ़ोन पर कहला देता है के तू घर में नहीं है।

मोहनजी – [उनके पांव दबाते हुए, कहते हैं] – अरे भा'सा, यों काहे नाराज़ हो रहे हैं आप ? मेरा

मफ़हूम यह नहीं है, फिर आप हुक्म करते हैं तो मैं अपनी समस्या आपके सामने रख देता हूं। के, 'अपनी इच्छा से बदली करवाकर खारची आया..मगर, यहां खारची में आकर मैंने बहुत तक़लीफ़ें देखी है। देखिये जनाब, सुबह सुबह..'
पुरोहितजी – [पांव छुड़ाते हुए, कहते हैं] – ले छोड़, मेरे पांव। ले देख अब तू आ गया है, मतलब की बात पर ? अब तू मेरी बात सुन, तेरे..
मोहनजी – [बीच में बोलते हैं] – अरे जनाब, पहले आप मेरी बात सुनिए। सुबह-सुबह पकड़ता हूं, सात बजे रवाना होने वाली अजमेर जाने वाली गाड़ी। और जनाब, खाने-पीने का कोई ठिकाना नहीं।
[अब मोहनजी ग़मगीन हो जाते हैं, ग़मज़दा मोहनजी एक गम भरी नज़्म सुनाते हैं]
मोहनजी – [नज़्म सुनाते हैं] – "छोटा तकां सूं किलो देखतां आदत पड़गी, पण दो टका कमावण सारुं इण आदत में बाधा पड़गी। सिंजारा गाड़ी सूं आवूं जद निरो इंदारो पड़ जावै। भगत री कोठी सूं देखूं, पण किलो नज़र नी आवै। घरै पूगू जद गीगा-गीगी, साम्है आय लिपट जावै। गाड़ी में पोंछू जा पैली, पण जगा हाथ नी आवै। ऊबौ-ऊबौ आवूं जावूं पग नैरा दुकाऊ। कैवूं पुरोहितजी आज़ थान्नै, आऊंड़ा ढळका नै। बदली करवा दौ म्हारी, बाबो भली करेला।"
पुरोहितजी – [गुस्से में कहते हैं] – तेरे लक्षण तो ऐसे है, के तूझे दो झापड़ मारूं खींचकर। करम फूटोड़ा...तेरी कोई मदद करनी चाहता भी हो, तो भी वह मदद नहीं कर सकता।
[मोहनजी रोनी सूरत बनकर, सीधे-सादे भोले आदमी की तरह अपने दोनों कान पकड़कर कहते हैं]
मोहनजी – [कान पकड़कर कहते हैं] – भा'सा, ऐसा क्या गुनाह हो गया मुझसे ? आख़िर इंसान हूं, कहीं ग़लती हो गयी हो तो मैं माफ़ी मांगता हूं..माफ़ कीजिये, मुझे।
पुरोहितजी – मैं तो तूझे माफ़ दूंगा, मगर गधे तूने तो उस यूनियन के सचिव को नाराज़ कर डाला। तूने बिना टिकट लगा लिफाफा भेज दिया, उसको ? अब तू चाहता है, वह सचिव अब तेरी मदद करेगा ? तू तो बड़ा होशियार निकला, उस बेचारे के लगवा दिया डबल चार्ज। अब तू कहता है, तेरी बदली कराने का कहूं उसे ?
मोहनजी – भा'सा, इसमें मेरा क्या दोष ? मैं ठहरा, नादान। यही समझा मैंने, जनाब। **अगर चिट्ठी बेरंग भेजी जाय, तो ज़रूर सचिव महोदय को मिल जायेगी। और अपना काम, मिनटों में हो जाएगा।**
पुरोहितजी – मिनटों में ज़रूर होगा, मोहनिया...मिस्टर प्रिंस, तूझे भेज देंगे पंजाब या कश्मीर। फिर पूरी नौकरी में तू वापस आ नहीं पायेगा, जोधपुर। बाद में जोधपुर के लिए तरसेगा, मूर्ख। काम करता है, उल्टे, अपनी आदत से बाज़ नहीं आता।
[मोहनजी अपनी ऐसी रोनी सूरत बना देते हैं, मानो किसी ने उनके रुख़सारों पर धब्बीड़ करते कई थप्पड़ जमा दिये हो ? अब पुरोहितजी, उनको दिलासा देते हुए कहते हैं]
पुरोहितजी – गेलसफ़ा, तूझे क्या पता ? बड़ी मुश्किल से हाथा-जोड़ी करके उस सचिव को मनाया

मैंने। करें भी, क्या ? आख़िर तू मेरे साथ रहा हुआ है, यार। इतना तो करना ही पड़ता है तेरे लिए, चाहे तू कभी मेरा मुंह मीठा करता नहीं।
मोहनजी – मीठा मुंह क्यों नहीं कराऊंगा, भा'सा ? [खाने का टिफ़िन खोलते हुए कहते हैं] आपका मुंह भर दूं, लापसी से। आप भी मुझे क्या याद रखेंगे, भा'सा ? [टिफ़िन में रखी लापसी दिखलाते हैं] मेरे जैसा कढ़ी खायोड़ा, पैसे ख़र्च करने वाला आदमी आपको मिला। कहिये जनाब, क्या कहना है आपका ?
पुरोहितजी – [मुंह बिगाड़कर कहते हैं] – मुंह मीठा, वह भी इस वासती बासी लापसी से ? जैसा तू है, वैसे ही तेरे विचार है। मिस्टर प्रिंस, यू आर ऑफिसर ओफ एफ.सी.आई.। तुम गांव के मोथे नहीं हो, क्या समझे मिस्टर प्रिंस ?
[अचानक, पुरोहितजी के पेट में दर्द उठने लगता है। वे कराहते हुए, पेट को दबाते जा रहे हैं। अब पेट में मरोड़े [एठन] ऐसे चलते हैं, जिससे बेचारे पुरोहितजी का मुंह उतर जाता है। अब यह दर्द नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाता है, जिससे बेचारे ज़ोर से कराहते जा रहे हैं। उनकी ऐसी स्थिति देखकर, पास खड़े पुलिस के सिपाही इधर-उधर दौड़कर आते-जाते हैं। कोई उनके लिए पानी ला रहा है, तो कोई उनके लिए लोंग-सुपारी इलायची। इस तरह वहां ख़लबली मच जाती है।]
पुरोहितजी – [पेट की पीड़ा सहन करते हुए, कराहते कहते हैं] – अरे मेरी मांsss, यह कैसा पेट में जान-लेवा दर्द हो रहा है रेsss आss..हाss..?
[जी मचलता है, झट उठते हैं और कोने में जाकर उल्टी करते हैं। फिर एक बार नहीं, कई बार वोमिटिंग होती है। हवलदार दौड़कर पानी लाता है, और उन्हें पानी के कुल्ले करवाता है। यह मंज़र देख़ता हुआ एक हवलदार परेशान होकर, पास खड़े अपने साथी दूसरे हवलदार से कहता है]
एक हवलदार – [दूसरे हवलदार से कहता है] – मुझे बहुत बुरा लग रहा है, भाई। आज़ सवाई सिंहजी, जनाबे आली मोहनजी को यहां लाये ही क्यों ? ये जनाब मोहनजी न होकर, वास्तव में अघोरमलसा है। ये जहां भी बैठते हैं, वहां गन्दगी अपने-आप फैल जाती है।
दूसरा हवलदार – भाई कचोरी लाल देण तो अब होगी, जब जीजी यहां आकर धरने पर बैठ जायेगी। अभी हम लोगों की किस्मत ही खोटी है, यार। थार एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाने के लिए, जीजी अभी स्टेशन पर ही आयी हुई है।
कचोरी लाल – [भयभीत होकर कहता है] – कैसे भी..यार रूप लाल, तू कुछ कर। लिम्का लाकर, पीला दे भा'सा को। इस तरह, अपनी टोपी सलामत रह जाएगी। जा, जल्दी भाग यहां से ..और, जल्दी ला लिम्का।
रूप लाल – मैं कुछ नहीं कर सकता, कचोरी लाल। तू ही कुछ कर, मेरे भाई। कुछ नहीं.., तो जाकर साहब को इतला कर, भा'सा की तबीयत ख़राब होने की।
[इतना कहते ही, उसके पेट में आने लगते हैं मोरोड़े। फिर क्या ? वह चिल्लाता हुआ कहता है, ज़ोर से..]

रूप लाल – [चिल्लाता हुआ कहता है] – अरे राम रे, मेरे पेट में उठ रहे हैं मरोड़े। भगवान जाने, मेरे पेट में दर्द क्यों होने लगा ?
[अब रूप लाल के पेट में मरोड़े होने लगे, तेज़। दर्द नाक़ाबिले बर्दाश्त होने की स्थिति में, वह अनाप-शनाप बकता जा रहा है]
रूप लाल – [पेट पकड़कर कराहता हुआ कहता है] – मर गया, मेरी जामण। अरे राम, इस रसोड़दार के बच्चे ने न मालुम क्या मिला दिया इन बड़ो में ? अभी जाकर उसे पकड़कर उसकी पूजा करता हूं, मेरे गंगा राम से। अरे कचोरी लाल अब तू ही भा'सा का ध्यान रखना, अर र र, मुझे तो हो रही है दीर्घ शंका। [पेट दबाता है] अरे भगवान, मैं जा रहा हूं निपटने..अरे रे रे।
[वापस कचोरी लाल क्या कह रहा है, अब यह सुनने की रूप लाल को कहां ज़रूरत ? वह बेचारा दीर्घ शंका को दबाये, दौड़कर जा पहुंचता है...पाख़ाने के पास। बाहर खूंटी पर लटक रहे ट्वाल को उठाकर लपेट लेता है, और पेंट खोलकर लटका देता है उसे..खूंटी पर। फिर शीघ्र पहुंच जाता है, पाख़ाने के दरवाज़े के पास। मगर, वहां तो ऐसा लगता है..कोई दूसरा रासा चल रहा है। वहां पाख़ाने के बाहर, सिपाईयों की लम्बी कतार लगी है। कतार में खड़े सिपाईयों की हालत हो रही है, पतली। वे बार-बार आकर पाख़ाने के दरवाज़े पर दस्तक देते हैं, मगर अन्दर बैठा सिपाही दरवाज़ा खोलकर बाहर नहीं आ रहा है। वहां खड़े रूप लाल के पेट में, और तेज़ी से मरोड़े उठते जा रहे हैं। इधर उसके पेट में दर्द उठ रहा है, और उधर दीर्घ शंका का दबाव बढ़ता ही जा रहा है..जिसे वह रोकने में, असमर्थ है। फिर क्या ? दीर्घ शंका पर नियंत्रण बेकाबू होने से, वह आकर पाख़ाने के दरवाज़े पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक देता हुआ कहता है]
रूप लाल – [दरवाज़े पर, ज़ोर से दस्तक देता हुआ कहता है] – कौन है, अन्दर ? फटके से निकल जा, बाहर। नहीं निकलता है तो, साला मेरे हाथ की फोड़ी खायेगा।
[इधर ओमजी बड़े की प्लेटें सिपाईयों को थमाते-थमाते जा पहुंचते हैं, वहां। अब वहां खड़े होकर वे इस खिलके को देखते हैं, और अपने **अटालपने के सबूतों** पर हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाते हैं। मगर किस्मत ख़राब ओमजी की, अचानक वहां तशरीफ़ ले आते हैं सवाई सिंहजी। वे इन्हें वहां खड़े देखकर, कड़कती आवाज़ में उनसे कहते हैं]
सवाई सिंहजी – [कड़कती आवाज़ में पूछते हैं] – ओय जवान, यह होम गार्ड की वर्दी पहनकर यहां क्यों खड़ा है ? [याद करने का अंदाज़, दिखाते हुए कहते हैं] अच्छा, कमीशनर साहब ने लगायी होगी स्पेशियल ड्यूटी। एक काम याद आ गया, अरे ओ जवान..
[तभी थार एक्सप्रेस के यात्रियों का माल चैक हो जाने की सूचना लाने का काम उन्हें याद आ जाता है, वे ओमजी को हुक्म देते हुए कहते हैं]
सवाई सिंहजी – माल गोदाम जाकर पता लगाना, के थार एक्सप्रेस में बैठने वाले यात्रियों का सामान चैक हो गया या नहीं ?
ओमजी – [सलाम ठोककर, कहते हैं] – हुकूम, अभी पता लगाकर आता हूं।

[सवाई सिंहजी ठहरे, भुल्लकड़ जीव। उन्होंने ख़ुद ओमजी को भेजा था, जी.आर.पी. दफ़्तर। और अब ख़ुद ही भूल गए, जनाब ? इस तरह आदेश देकर वे चले आते हैं, अपने कमरे में। अब कमरे का ए.सी. स्टार्ट करके वे अपनी सीट पर बैठ जाते हैं। इतने में दौड़ता हुआ रूप लाल आता है, सवाई सिंहजी के कमरे में। आकर, करता भी क्या ? बेचारा रूप लाल पाख़ाने में दाख़िल न हो सका, अत: अब वह सवाई सिंहजी के सामने कराहता हुआ कहता है।]

रूप लाल – [कराहता हुआ कहता है] – साहब, मेरे पेट में ज़बरदस्त मरोड़े उठ रहे हैं। मुझे आप अभी, जल्दी छुट्टी दे दीजिये।

सवाई सिंहजी - [आँखें तरेरकर कहते है] – मिस्टर, यह क्या बहाने-बाजी ? क्या, तुम्हारी ड्यूटी पूरी हो गयी ? जाओ, अपना काम करो।

रूप लाल – [रोनी सूरत बनाकर, कहता है] – आप जाकर देख आइये, पाख़ाने की हालत। अरे जनाब, सिपाईयों की लम्बी कतार लगी है बाहर। भगवान जाने क्यों, एक साथ सबको दीर्घ शंका की समस्या आन पड़ी ? यह दीर्घ शंका मेरे लिए, नाक़ाबिले बर्दाश्त है। अगर आपने मुझे छुट्टी नहीं दी, तब जनाब...

सवाई सिंहजी – तब तू, क्या कर लेगा ? मुझको धमकी दे रहा है, उल्लू के पट्ठे ?

रूप लाल – हुज़ूर मैं धमकी नहीं दे रहा हू आपको, सत्य बात अब यही है...के, छुट्टी दे दीजिये मुझे, नहीं दी तो आपको गंदीवाड़ा साफ़ करने के लिए किसी मेहतर को..यहीं, बुलाना पड़ेगा। फिर कह देता हूं जनाब, यह गंदीवाड़ा करने की ग़लती मेरी नहीं होगी।

[दफ़्तर में सिपाईयों के बीच यह धमा-चौकड़ी ऐसी मचती है, किसी का ध्यान इन तीनों कुबदियों की तरफ़ नहीं जाता, के 'वे तीनों कुबदी इस वक़्त क्या कर रहे हैं ?' इस समय ओमजी चुप-चाप इशारा करते हैं, मोहनजी को। रशीद भाई इशारा करते हैं, रतनजी को के "भय्या मैदान साफ़ है, फटके से बैग लेकर निकल पड़ो।" इशारा पाकर यह चंडाल चौकड़ी, अपना बैग उठाये स्टेशन के बाहर आ जाती है। किसी तरह इस दफ़्तर से बाहर आकर, यह चंडाल चौकड़ी चैन की सांस लेती हैं। मगर मना करने के बाद भी बड़े चेपने वाले मोहनजी, अब टसकाई से कहते हैं]

मोहनजी – [टसकाई से कहते हैं] – रुको रे...! कहां जा रहे हो, कढ़ी खायोड़ो ? मुझे हुई है, अब दीर्घ शंका।

रशीद भाई – [खीजे हुए कहते हैं] – मना करने के बाद भी, आपने बड़े क्यों खाए ? **मुफ़्त का माल खाने की खोटी आदत आपने ऐसी डाल दी, ख़ुदा जाने अब क्या होगा ? ख़ुद मरोगे, और हमको भी लेकर डूबोगे ?** अब भुगतो या फिर सोचो, आगे क्या करना है ?

रतनजी – इनको रुकने मत दीजिये, इनके पीछे अपुन भी मरेंगे..यार, बड़ी मुश्किल से आये हैं बाहर। मोहनजी से यों कहिये, के 'अब होने वाली दीर्घ शंका को यहीं दबा लीजिये..ना तो ये कमबख़्त हवलदार यहां आ गए तो, ज़रूर अपने गंगा राम से सबका पिछवाड़ा सूजा देंगे...?'

[इधर अब ओमजी झट जाकर स्टेण्ड से लेकर आ जाते हैं, अपनी मोटर साइकल। फिर कहते हैं,

मोहनजी से..]
ओमजी – [गाड़ी स्टार्ट करते हुए, कहते हैं] – बिराजिये, मोहनजी। अब बापूड़ा यहां बैठे रह गए तो, सभी मारे जायेंगे ?
[गाड़ी पर मोहनजी को बैठाकर, अब ओमजी गाड़ी को तेज़ रफ़्तार से दौड़ाते जा रहे हैं। हमेशा बेचारे मोहनजी गर्ज़ करते हैं, ओमजी की..के "मुझे गाड़ी पर बैठाकर, छोड़ दीजिये..!" और ओमजी झट मना करते हुए, कह दिया करते हैं "जनाब, मेरी गाड़ी चलती है प्योर पेट्रोल से। आप पेट्रोल डलवा दीजिये, गाड़ी में..फिर आप जहां कहेंगे, वहां छोड़ दूंगा आपको।" मगर अब किस्मत चमकी है, मोहनजी की। आज़ वे गर्ज़ करके, मोहनजी को ज़बरदस्ती गाड़ी पर बैठाकर ले जा रहे हैं। अब रास्ते में मोहनजी को लगती है, ठंडी हवा। फिर, वे टसका करते हुए कहते हैं]
मोहनजी – [टसका करते हुए, कहते हैं] – अहाऽऽ अहाऽऽ मरुं रे ऽऽऽ। रुक जाइये, ज़रा..!
ओमजी – [गाड़ी चलाते हुए, कहते हैं] – चुप-चाप बैठ जाओ, मोहनजी। पिछली दुकान को दबा लो, दीर्घ शंका का निवारण घर जाकर कर लेना। अभी मुझे गाड़ी चलाने दीजिये, नहीं तो जनाब आप ख़ुद नीचे गिरोगे और बापूड़ा मुझको भी साथ लेकर गिरोगे। अरे बेटी का बाप यहां तो इस गाड़ी के ब्रेक भी नहीं है, अब ख़ुद मरोगे और मुझको भी ले डूबोगे।
मोहनजी – तब क्या करूं, कढ़ी खायोड़ा ?
ओमजी – अब आप लीजिये, बाबा का नाम। सुरुक्षित पहुंचा दूंगा, जनाब। बोलिए जनाब, बाबा रामसा पीर कीऽऽऽ..
मोहनजी – [दीर्घ शंका को दबाते हुए, धीरे-धीरे कहते हैं] – जय हो।
[ओमजी को रुख़्सत देने के बाद, दोनों साथी तेज़ गति से चलते जा रहे हैं। रतनजी तो रातानाडा की तरफ़ जाते हैं, और रशीद भाई अपने क़दम सिटी-बस स्टेण्ड की ओर बढ़ा देते हैं। वहां मंडोर जाने वाली बस तैयार खड़ी है, फिर क्या ? जनाब झट चढ़ जाते है, बस में। ख़ुदा रहम, ख़ुदा रहम कहते-कहते बेचारे अपनी सीट पर आकर बैठते हैं। तभी उनको आस-पास बैठने वाले पैसेंजरों की आवाजें सुनायी देती है।]
एक पैसेंजर – यार रफ़ीक़, चोराए पर क्या फाइटिंग हो रही थी ? ऐसी फाइटिंग, अमिताभ बच्चन भी नहीं कर सकता मियां।
रफ़ीक़ – ऐसा क्या हो गया, नूर मियां ? मैं भी उधर से गुज़र के आ रिया हूं।
नूरिया - अचरच होता है, मियां। उन फकीरियो ने, ख़ुदा जाने कैसे तमंचा निकाला..अपने-अपने झोले से ? [रिवोल्वर चलाने का अभिनय करता हुआ, कहता है] ऐसे गोली मारी ठेंऽऽ ठेंऽऽ ठेंऽऽ..! फिर हिज़ड़ों ने ज़वाब में गोली मारी ऐसेऽऽऽ [एक्शन करता हुआ, बोलता है] ट्वीऽऽऽट ट्वीऽऽऽट।
[पहलू में बैठी नूरिया की खातूने खान [बीबी] फातमा से चुप-चाप बैठा नहीं जाता, वह बीच में बोल पड़ती है]
नूरिया की बीबी फातमा – हाय अल्लाह। ओ रफ़ीक़ भाईजान, एक हिज़ड़े ने कमाल कर डाला ?

क्या जोश भरा था, उसमें ? उसने तो दस-दस फकीरों को, कूद-कूदकर मारा।
[नूरिया से कहती है] ओ जमालिया के अब्बा, तुम घर पर बंदूकड़ी लाकर क्या नाम काड दिया अपने अब्बू का ? यहां तो उस हिज़ड़े ने, दस-बीस फकीरों को बख़ में ले लिया ? कभी ऐसी लड़ाई देखी, तुमने ?
रफ़ीक़ – फिर क्या हुआ, आपा ?
बीबी फातमा – फिर, होना क्या ? फ़िल्मी स्टाइल से आ गयी पुलिस, सब फकीरों को पकड़कर हिरासत में ले गयी। अरे मुझे तो यह भी पता नहीं पडा, वह जोशीला हिज़डा आख़िर था कौन ? उसको देखकर, सिपायों ने क्यों ठोका सलाम ? कुछ तो बोलो, जमाले के अब्बू..क्यों मुंडा फेरकर बैठे हो ?
[इतनी बातें सुनकर, रशीद भाई अन्दर ही अन्दर सहम जाते हैं। फिर उन सबको दो नंबर की फटकार पिलाते हुए, कहते हैं]
रशीद भाई – [दो नंबर की डांट लगाते हुए, कहते हैं] – आप लोगों से, चुप-चाप बैठा नहीं जाता ? क्यों अफवाह का बाज़ार, गर्म करते जा रहे हो ? कहीं सी.आई.डी. पुलिस को मालुम हो गया तो, आप सबको हिरासत में लेकर अन्दर बैठा लेगी।
[अभी तो बेचारे रशीद भाई, इन पुलिस वालों की गिरफ्त से बचकर आये हैं। इस तरह इन लोगों की बातें सुनकर, वे और भयभीत हो गए हैं। कहीं इनकी बातें सुनकर ये कमबख़्त पुलिस वाले, इधर आकर इनकी पिछली दुकान डंडे से पीटकर सूजा न दें ? वे उसे, सूजा क्या देंगे ? वे तो इनको पकड़कर, बैठा देंगे हवालात में। और ऊपर से उन पर, हिरासत से भागने का आरोप भी जड़ देंगे ? मार तो पड़ेगी ही, ऊपर से इनकी इज़्ज़त की बखिया अलग से उधड़ जायेगी ? यह डर ज्यों ज्यों बढ़ता जा रहा है, त्यों त्यों इनकी फ़िक्र भी बढ़ती जा रही है। इस तरह, वे इन बेवकूफ सवारियों के बारे में सोचते जा रहे हैं।]
रशीद भाई – [अन्दर ही अन्दर, धमीड़ा लेते हुए कहते हैं] – गधों। तुम लोगों को आती है, बातें। और यहां मुझे, अपना जीव बचाना है। ठोकिरा...कहीं ये पुलिस वाले, यहां नहीं आ जाय ?
[अब बड़े बुज़ुर्ग जैसे रशीद भाई के चेहरे पर छाये खौफ़ देखकर, रफ़ीक़ और नूरिया उन्हें हाथ जोड़कर कहते हैं]
रफ़ीक़ – [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – माफ़ कीजिये, बड़े मियां।
नूरिया – [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – हुज़ूर माफ़ कीजिएगा, अब नहीं बोलेंगे। [ड्राइवर से कहते हैं] भाईजान, मोड़ा हो रिया है..अब गाड़ी चलाइये, जनाब अब देर मत कीजिये।
[ड्राइवर होर्न दबाता है, फिर गाड़ी को स्टार्ट करता है। कुछ ही मिनटों में गाड़ी सडकों पर दौड़ने लगती है। मंच पर, अंधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच पर रौशनी फैलती है। जी.आर.पी. दफ़्तर का मंज़र सामने दिखायी देता है। बगीचे के अन्दर, सवाई सिंहजी और आनंदजी पुरोहित कुर्सियों पर बैठे हैं। उनके पास, कई सिपाही खड़े हैं। अचानक आस करणजी हाम्फते हुए, आते

दिखाई देते हैं..और बगीचे में बैठे पुरोहितजी के ऊपर, उनकी नज़र गिरती है। वे इस समय, लिम्का की दो बोतले ख़ाली कर चुके हैं। अब वे ख़ाली बोतलों को ज़मीन पर रखते हैं, फिर ज़ोर से डकार लेते हैं। डकार लेने के बाद, पुरोहितजी कहते हैं।]

पुरोहितजी – [डकार खाकर, कहते हैं] – आहSSS, अब आया, पेट ठिकाने। [सवाई सिंहजी की ओर देखते हुए कहते हैं] अब आप यह बताइये, आप बार-बार तमंचा लेकर सिपाईयों के साथ बाहर क्यों जाते हैं, और फिर वापस अन्दर आ जाते हैं..फिर, बाहर चले जाते हैं ?

सवाई सिंहजी – क्या कहा आपने, तमंचा ? अजी पुरोहितजी, तमंचे का क्या मफ़हूम है ? कहीं यह वह टिकड़ी छोड़ने का तमंचा तो नहीं है, जिसे दीपावली पर बच्चे काम लेते हैं ?

पुरोहितजी – [हंसते हुए कहते हैं] – अरे जनाब, आप नहीं जानते..मारवाड़ी भाषा में तमंचे का मफ़हूम होता है, रिवोल्वर। अब आप यह कहिये, ये पत्रकार लोग आपका साक्षात्कार लेकर फोटूएं क्यों खींचते जा रहे हैं ? जबकि ये पत्रकार लोग, जीजी के आस-पास घुमा करते हैं। मगर यहां तो माया, कुछ अलग ही लगती है।

सवाई सिंहजी – क्या भाई, मैं इंसान नहीं हूं ?

पुरोहितजी – यह तो मुझे पता नहीं..के, आप इंसान हैं या जानवर ? अब यह तो जानवरों के डॉक्टर ही बता पायेंगे, उनसे पूछना पड़ेगा।

सवाई सिंहजी – क्यों भाई, क्या मैं इंसान नहीं हूं ? जनाब, मैं भी भगवान का बनाया हुआ इंसान हूं। मुझसे भी पत्रकार वार्ता कर सकते हैं, और मेरी भी फोटूएं खींच सकते हैं।

पुरोहितजी – मुझे यह तो पता नहीं, आप इंसान हैं या कोई और ? इस सवाल का ज़वाब तो जनाब, वेटेनरी डॉक्टर ही दे सकता है, मैं बेचारा एफ.सी.आई. महकमे का डिपो मैनेजर क्या कह सकता हूं ? गेहूं या चावल की किस्म की जांच करनी हो तो, मैं आपके काम आ सकता हूं। कहिये, मेरे लिए कोई काम हो तो..हुक्म कीजिये ?

[नज़दीक आते आस करणजी, सुन लेते हैं, के 'पुरोहितजी अभी क्या कह रहे थे ?' अब वे पास आकर, पुरोहितजी के पास पड़ी कुर्सी को खींचकर बैठ जाते हैं। अब वे, सवाई सिंहजी से कहते हैं]

आस करणजी – [कुर्सी पर बैठकर कहते हैं] – सवाई सिंहजी, आप पुलिस अधिकारी हैं। जो क़ानून की रक्षा करते हैं। [पुरोहितजी से कहते हैं] पुरोहितजी सा, आप इनके पास गेहूं-चावलों की बात लेकर कैसे बैठ गए ? इंसानों को चाहिए, अनाज। इंसानों के पास जाकर, ऐसी बातें कीजिये। ये अनाज की बातें, इंसानों से करनी अच्छी है। इनसे ऐसी बात, हरगीज़ नहीं।

सवाई सिंहजी – अरे भा'सा, आप ऐसी उखड़ी बातें क्यों कर रहे हैं ? आपको भी, क्या मैं इंसान नहीं लगता हूं ?

आस करणजी – आप बड़े पुलिस अफ़सर हैं, क़ानून की रक्षा करने वाले आप हैं। आपसे ज़्यादा, क़ानून का जानकार है कौन ? यहां बैठे सज्जनों में, आपसे ज़्यादा क़ानून के बारे में कौन जानता है ? के, 'क़ानून की देवी की आँखों पर, पट्टी बंधी हुई है।'

सवाई सिंहजी – क्या कह रहे हैं, भा'सा ? समझ में नहीं आ रहा है, आख़िर आप कहना क्या चाहते हैं ?
आस करणजी – सही कह रहा हूं, जनाब। जहां उसूल या नियम-क़ायदे हैं, वहां दिल नाम की कोई चीज़ नहीं होती। बोलिए जनाब, आपके पास दिल नाम की कोई चीज़ है ?
[आस करणजी की बात सुनकर, सवाई सिंहजी को छोड़कर सभी मींई निम्बली की तरह हंसते हैं। फिर सभी, सवाई सिंहजी का मुंह इस तरह ताकते हैं..मानो वे किसी अज़ूबे को, देखते जा रहे हैं ? मगर सवाई सिंहजी को यह बात समझ में नहीं आती, के 'आख़िर, बात क्या है ?' खैर, आस करणजी को असली मुद्दे पर आना पड़ता है।]
आस करणजी – एक हिज़ड़े की शिकायत सुनकर आपने, बेचारे मोहनजी और उनके साथियों को कैसे बैठा दिया...अन्दर ? मुझे भी आपने, पूछने की कोई ज़रूरत नहीं समझी ? के, आख़िर यह मामला क्या है ? बेचारे इज्ज़तदार इंसान की इज़्ज़त धूल में मिला दी, आपने ? अब सुनिए, जनाब। इन लोगों ने इन हिज़ड़ों से कोई जुर्माना नहीं लिया है, लिया है तो..ख़ाली लिया है चन्दा 'टीटीयों के सम्मलेन' का, वह भी मेरे कहने पर।
[यह बात सुनते ही, चारों तरफ़ श्मसान सी शान्ति छा जाती है। मगर, आस करणजी चुप रहने वाले पूत नहीं। वे अपने बोलने का भोंपू, बराबर चालू रखते हैं]
आस करणजी – [ज़ोर से कहते हैं] – मेरे कहने पर उन्होंने चन्दा इकट्ठा किया, मेरी मदद के लिए। फिर, आपको इससे क्या लेना-देना ? इस तरह इन लोगों को अन्दर बैठाना, क्या आपको शोभा देता है ? [बैग से रशीद बुकें निकालते हुए, कहते हैं] लीजिये, ये देखिये चंदे की रसीद बुकें। अब देख लीजिये, आपके सबूत। अब आपको कोई कहे, के आप इंसान हैं या...
[सवाई सिंहजी आस करणजी से चंदे की रसीद बुकें लेकर, उन्हें देखते हैं। फिर, वापस आस करणजी को थमा देते हैं। इसके बाद, बेचारे बिना तोड़ क्या बोलते ? बस, सर पर हाथ रखकर बैठ जाते हैं।]
आस करणजी – ऐसे भले इंसानों को आपने दुःख पहुंचाया है, यह इतनी छोटी सी बात मालुम आप मालुम नहीं कर पाए ? इन लोगों की ईमानदारी देखिये, ये कभी बेचारे एम.एस.टी. नहीं बनवा पाते, तब ये लोग टिकट लेकर ही गाड़ी में सफ़र करते हैं..इन हिज़ड़ों की तरह, मुफ़्त की यात्रा नहीं करते।
सवाई सिंहजी – [लंगड़ा तर्क प्रस्तुत करते हुए, कहते हैं] – आपको, क्या पता ? **शायद, ये हिज़ड़े भी टिकट लेते हों ? मान लिया जाय, ये लोग टिकट नहीं लेते है..फिर आप जैसे ईमानदार टी.टी.ई., इन हिज़ड़ों को छूट क्यों देते आये हैं ? अगर आपने बेटिकट सफ़र करने की छूट न दी, तो फिर आप इन बेटिकट सफ़र करने वाले हिज़ड़ों को पकड़कर क्यों नहीं लाते हमारे पास ?**
आस करणजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – सवाई सिंहजी सा। कभी आपको, इन हिज़ड़ों से पाला पड़ा ? पाला पड़ा हो तो, आप इतने चौड़े होकर कभी नहीं बोलते।

पुरोहितजी – पाला पड़ता तो..? सवाई सिंहजीसा, आपकी इज़्ज़त की, बखिया उधेड़ देते ये हिज़ड़े। [आस करणजी से कहते हैं] आस करणजी सा, सभी अपनी इज़्ज़त का रोना रोते हैं। कोई इनके पास, नहीं फटकता। तभी मालिक, आप भी इन हिज़ड़ों से दूरी बनाए रखते हैं।
आस करणजी – [झुंझलाते हुए, कहते हैं] – आप अच्छी तरह से, मेरी बात सुनों। ये लोग आपके इन हिज़ड़ों की तरह, कभी बेटिकट यात्रा नहीं करते। कभी आपने सुना क्या, इन हिज़ड़ों ने कभी टिकट लिया है ? लिया हो तो बताइये, मुझे ? अब आपके दिल में, कोई शंका तो नहीं है ? आपका दिल साफ़ हो गया, या नहीं ? जाइये, अब लेकर आ जाइये हमारे मोहनजी और उनके साथियों को..!
सवाई सिंहजी – [सर थामते हुए कहते हैं] – आप ले जाइये मोहनजी, और इनके तीनों बंदरों को..[देवी जगदम्बे मां को, याद करते हुए कहते हैं] अरे दुर्गा मां, ऐसे खपचियों को क्यों भेजा यहां ? इन लोगों ने आकर, मेरा सर-दर्द बढ़ा दिया ? [दर्द के कारण, कराहते हुए कहते हैं] अहss, oh my god।
[रूप लाल और कचोरी लाल, सामने से आते दिखायी देते हैं। अब कचोरी लाल यहां आकर, हड़बड़ाता हुआ कहता है।]
कचोरी लाल – [हड़बड़ाता हुआ कहता है] – साहब, मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी भाग गयी है।
रूप लाल – हुकूम, आप अब इस चांडाल-चौकड़ी को वापस पकड़कर लाने का हुक्म दीजिये। जनाब, अब आपको क्या कहूं ? **इन लोगों ने सभी हवलदारों के धोतिये और पोतिये खोल दिए, जनाब। अरे नहीं हुज़ूर, सभी हवलदारों की पतलून खुलवाकर भाग गए जनाब।**
[इतना सुनते ही, सवाई सिंहजी को आयी ज़ोर की हंसी। वे ठहाका लगाकर ऐसे ज़ोर से हंसते हैं, जिससे उनको हंसते देखकर मोहनजी के हितेषी आस करणजी नाराज़ हो जाते हैं। अब वे क्रोधित होकर, कहते हैं]
आस करणजी – सवाई सिंहजी सा, ये आपके टुरिये एक नंबर के खर्रास [झूठ बोलने वाले] है। अब आप यह बताइये, के 'मोहनजी और उनके साथी आपके कस्टडी में थे या नहीं ?' अगर थे, तब वे कैसे भाग सकते हैं ? या तो वे आपकी कस्टडी में अन्दर पड़े होंगे, या फिर आप लोगों ने इनका बेरहमी से फर्जी एनकाउंटर कर डाला होगा ?
रूप लाल – [घबराता हुआ कहता है] – नहीं टीटी बाबूजी सा, ऐसी बात नहीं है। सत्य बात तो यह है, यह पूरी **चांडाल-चौकड़ी** ओटाळपने की उस्ताद है। हमारी आंखों में धूल डालकर, यह पूरी चौकड़ी नौ दो ग्यारह हो गयी है।
आस करणजी – [गुस्से से काफ़ूर होकर, कहते हैं] – आप टूरिया लोगों ने बहुत ज़्यादा पेट भर लिया है, अब करा लीजिये टिकट..आरक्षित जाजरू [पाख़ाना] का। पेट साफ़ होने में लगता है, पूरा दिन। फिर, आप किसी आदमी को अन्दर जाने मत देना। और उस जाजरू के दरवाज़े के ऊपर चिपका देना एक काग़ज़, यह लिखकर..के, 'आरक्षित जाजरू श्री मोहनजी' ताकि कोई दूसरा आदमी

उसके अन्दर दाख़िल न हो सके।

सवाई सिंहजी – रहने दीजिये, आस करणजी...

आस करणजी – [क्रोधित होकर कहते हैं] – कैसे रहने दूं, जनाब ? आज़कल टी.वी. के कई चैनलों में ऐसी ही ख़बरें आती रहती है, फर्जी एनकाउंटर करने की। फिर आप कहिये, मैं कैसे धीरज धारण करके बैठ जाऊं ?

सवाई सिंहजी – अरे भा'सा, आप ऐसे कैसे कह सकते हैं ? आप तो आराम से बैठे हैं, कुर्सी पर ? फिर, क्या रोना ?

आस करणजी – मुझे अब आपने, ऐसे कैसे कह दिया ? अब इस ग़रीब आदमी को, गरीबों की हितेषी जीजी के पास जा होगा। जीजी ही ऐसी एक मात्र जन-प्रतिनिधि है, जो मुझे न्याय दिला पायेगी। अरे जनाब, अब क्या कहूं आपको ? कैसे समझाऊं ? इस वक़्त सरकार ने इमरजेंसी लागू नहीं की है, जिसके आधार पर आप मर्जी आये तब किसी को अन्दर बंद बैठा दें ?

सवाई सिंहजी – और कुछ कहना बाकी रह गया, क्या ?

आस करणजी – कहूंगा, जनाब। क्या आप मुझे डराकर, मेरी ज़बान बंद कर सकते हैं ? सोच लीजिये, जनाब। कल से विधान-सभा-सत्र चालू होगा, जीजी ज़रूर विधान-सभा में इस ग़रीब की आवाज़ उठायेगी। इस वक़्त जीजी और कई पत्रकार, और टी.वी. चैनल वाले यहां आये हुए हैं। मैं जाता हूं अभी, उनके पास। [पुरोहितजी को, आँख से इशारा करते हैं] क्यों पुरोहितजी, ठीक है ना ?

पुरोहितजी – [आस करणजी का कंधा थपथपाते हुए, कहते हैं] – शत प्रतिशत सही कहा, भा'सा। यह जीजी, हम जैसे ग़रीब दीन-दुखियों की बात सुना करती है। जैसा इस दफ़्तर को जागरुक सुना, वैसा यह है नहीं। मैं ख़ुद, इस दफ़्तर का शिकार हो गया हूं...

सवाई सिंहजी – [घबराकर कहते हैं] – आप क्या कह रहे हैं, कहां बैठे हैं आप ? [कुर्सी से उठते हैं]

पुरोहितजी – मुझे आप धमकी दे रहे हैं, क्या ? सुन लेना, मैं डरने वाला आदमी नहीं हूं। मैं सच कह रहा हूं, सवाई सिंहजी। तबीयत ख़राब कर डाली...आपने, मेरी। आपको, क्या मालुम ?

सवाई सिंहजी – बताओ, आख़िर बात क्या है ?

पुरोहितजी – यह कह रहा हूं, के 'आपके दफ़्तर वालों ने, न मालुम क्या बड़ो में डालकर मुझे खिला दिया ? ए रामापीर, मेरी तबीयत ख़राब कर डाली इन्होंने।' यहां तो फ़ूड-पोइजनिंग का प्रकरण बनता है, सवाई सिंहजी सा। अभी जाता हूं मैं, जीजी के पास। अब आगे, क्या होगा ? वह रामसा पीर जाने, या आपका दिल जाने।

[पुरोहितजी की बात सुनते ही, सवाई सिंहजी के पास कोई ज़वाब नहीं। आख़िर बेचारे, सर पर हाथ रखकर वापस कुर्सी पर बैठ जाते हैं। थोड़ी देर पहले वे, रूप लाल की तबीयत देख चुके हैं। उनको वसूक हो जाता है, कुछ तो मामला है ही। उधर दफ़्तर के बाहर, पत्रकारों की चहलक़दमी ने उनको और भयभीत कर डाला..! बेचारे घबरा जाते हैं, और उनके दिल धड़कन बढ़ जाती है।

घबराकर, वे पुरोहितजी से कहते हैं..]

सवाई सिंहजी – [छाती पर हाथ रखे कहते हैं] – पुरोहितजी आपको ज़रा तक़लीफ़ दे रहा हूं, प्लीज़ आप डाक्टर बनर्जी को फ़ोन लगा दीजिये ना..मेरे दिल की धड़कन, न जाने क्यों बढ़ती जा रही है..?

पुरोहितजी – देखिये जनाब, मेरी तबीयत की परवाह कीजिये मत..मुझे, कुछ नहीं हुआ है। अगर आपकी तबीयत ख़राब हो गयी है, तो मैं एक चुटकी में आपकी तबीयत ठीक करता हूं। देखिये जनाब, उतरीय पुल की तरफ़..

[अब सवाई सिंहजी को, सारे पत्रकार गेट की तरफ़ जाते दिखाई देते हैं। उनको जाते देखकर, सवाई सिंहजी के दिल को ठंडक मिलती है। धीरे-धीरे उनके दिल की धड़कन, स्वत: सामान्य हो जाती है। अब उनको पूरा वसूक हो गया है, इधर दफ़्तर की तरफ़ कोई नहीं आ रहा है। सवाई सिंहजी का चेहरा देखते हुए, पुरोहितजी मुस्कराकर कहते हैं..]

पुरोहितजी – [मुस्कराते हुए कहते हैं] – कोई नहीं आयेगा, इधर। धीरज रखिये, जनाब। **अब सवाई सिंहजी सुनो, मेरी बात। ऐसा लल्लू-पंजू कलेज़ा मत रखो, यार। आख़िर, आप एक बहादुर पुलिस अधिकारी हो यार। अब, किस बात का घबराना ?**

[इतने में, आस करणजी के मोबाइल पर घंटी आती है। आस करणजी मोबाइल ओन करके कान के पास ले जाते हैं, फिर कहते हैं..]

आस करणजी – [मोबाइल से बात करते हुए, कहते हैं] – हेलो, कौन जनाब फ़रमा रहे हैं ?

मोबाइल से मोहनजी की आवाज़ आती है – "पहचाना नहीं, जनाब ? मैं हूं मोहन लाल...कढ़ी खायोड़ा, अरे जनाब यों आप हमें कैसे भूल जाते हैं ?

आस करणजी – [मोबाइल से बात करते हुए] – अरे मालिक, आप तो मोहनजी कढ़ी खयोड़ा हैं ? जय श्याम री सा, मोहनजी। अभी आपको ही, याद कर रहे थे।

मोहनजी – [मोबाइल से आवाज़ आती है] - याद तो हम करेंगे, आप जैसे टी.टी,ई. दोस्त मिले कभी हमें ? आपकी मदद क्या की, जनाब ? बस, तक़लीफ़ें ही तक़लीफ़ें...

आस करणजी – [मोबाइल से बात करते हुए] – क्या कहा, आपने ? मेरे कारण आपने कष्ट उठाये, यह कैसे हो सकता है बेटी के बाप ?

मोहनजी – [मोबाइल से आवाज़ आती है] – सवाई सिंहजी कढ़ी खायोड़ा, जिन्हें आप अपना दोस्त कहते हैं..उन्होंने, मेरी इज़्ज़त उतार डाली।

आस करणजी – [मोबाइल पर हंसते हुए बात करते हैं] – अरेssss सा, इज़्ज़त तो औरतों की जाती है। [हंसते हैं] जनाब, आप कब औरत बन गए ? कहीं आप दिल्ली जाकर, सेक्स चेंज का ओपरेशन करवाकर तो नहीं आ गए ?

मोहनजी – [गुस्से में मोबाइल में कहते हैं] – आप करवा लीजिये अपना ओपरेशन, हमारा सीना अभी धड़कता है, ख़ूबसूरत औरतों को देखकर। मगर..

आस करणजी – [मोबाइल से बात करते हुए] – अच्छा जनाब, अच्छा। अब काम की बात, कीजिये।
मोहनजी – [मोबाइल से आवाज़ आती है] – **हम कोई कम नहीं है, भा'सा ? पूरे एक नंबर के ओटाळ है, हम। इन पुलिस वालों की पतलून खुलवाकर, हो गए नौ दो ग्यारह। समझ गए, आप ? हमारी चांडाल-चौकड़ी एक नंबर की ओटाळ है।**
आस करणजी – [मोबाइल से बात करते हुए] – अच्छा जनाब, आप छूटकर आ गए, अपने ओटाळपने के ख़ातिर ? **मालिक, अब आप मेरे माली-पन्ने उतारेंगे तो नहीं बैठकर ?** चलिए अब आप काम की बात कीजिये, वरना आपके मोबाइल का चार्ज बढ़ता जायेगा। कहिये जनाब, कैसे फ़ोन किया ?
मोहनजी – [मोबाइल से आवाज़ आती है] – बात यह है, आपके किसी रिश्तेदार ने पाली का गुलाब हलुवा भेजा है। मगर उनको गोपसा मिले नहीं, और दीनजी भा'सा को थमा गए यह गुलाब हलुवा। और उन्होंने लाकर मुझे थमा दिया, के मैं आपको दे आऊंगा ? अब आप घर आ जाइये, और ले जाइये अपना गुलाब हलुवा।
आस करणजी – [मोबाइल से बात करते हुए] – आप यह बताइये, यह हलुवा आख़िर भेजा किसने ?
मोहनजी – [मोबाइल से आवाज़ आती है] – आपकी कोटी मासी ने, जिसकी..
आस करणजी – [मोबाइल से बात करते हुए] – सुनायी नहीं दे रहा है, जनाब। वापस कहिये, मालिक।
मोहनजी – [मोबाइल से आवाज़ आती है] – आपकी कोटी मासी जिनकी छोरी फुरकली है, उसके बेटे के ससुराल से २१ रंदे मिठाई आयी है। कोटी मासी पाली स्टेशन पर आयी, उन्होंने यह एक आधा किलो गुलाब हलुवे का डब्बा..दीनजी के साथ, आपके लिए भेजा है। अगर गोपसा उन्हें मिल जाते तो, वे उनके साथ ही यह डब्बा भेजते। दीनजी ने यह डब्बा मुझे थमा दिया, और..
आस करणजी – [मोबाइल से बात करते हुए] – कुछ नहीं, आप ले आये डब्बा गुलाब हलुवे का। क्या हो गया, एक ही बात है। आधे घंटे में हाज़िर होता हूं, आपके रावले। सुनो मेरी बात, तब-तक आप काली-मिर्च के मसाले वाली चाय उबालकर रखना। अब मालिक, फ़ोन रख़ता हूं। जय श्री कृष्ण।
[इतनी बात करने के बाद, आस करणजी मोबाइल को बंद करके अपनी ज़ेब में रखते हैं। फिर ख़ुश होकर, वे सवाई सिंहजी से कहते हैं]
आस करणजी – [ख़ुश होकर, कहते हैं] – अब मीठा मुंह ज़रूर होना चाहिए, सवाई सिंहजी सा। मोहनजी पहुंच गए हैं, अपने घर। आपकी समस्या मिटी, अब इसी वक़्त मंगवा लीजिये मिठाई..और चढ़ाइए प्रसाद, माताजी को। क्योंकि, पुरोहितजी भी बैठे हैं। नहीं तो फिर, इनका मुंह मीठा कब होगा ?

[अब सवाई सिंहजी ख़ुश होकर ज़ेब से रुपये निकालकर, पहलू में खड़े रूप लाल को थमाते हैं। रुपये लेकर, रूपलाल जाता हुआ दिखाई देता है। अब मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच पर रौशनी फ़ैल जाती है। प्लेटफोर्म नंबर पांच दिखाई देता है, जहां रेलवे की घड़ी सुबह के साढ़े आठ बजने का समय बता रही है। प्लेटफोर्म पर मंगते-फ़क़ीर, इधर उधर खड़े यात्रियों से भीख मांगते दिखाई दे रहे हैं। अब प्लेटफ़ोर्म नबर चार पर जैसलमेर जाने वाली गाड़ी खड़ी दिखाई देती है, यह इस वक़्त संटिंग होकर पानी लेकर आ चुकी है। वेंडरों ने अपने ठेले इस गाड़ी के निकट लाकर, रख दिए हैं। अब वे ग्राहकों को लुभाने वाली आवाजें, लगाते जा रहे हैं। तभी एक उतावली करता हुआ एक जवान यात्री, पटरियां पार करके इस गाड़ी के डब्बे में दाख़िल होता है। फिर बिना देखे वह दरवाज़ा खोलकर सीधा प्लेटफोर्म नंबर चार पर कूदता है। उसी वक़्त एक पुड़ी-सब्जी बेचने वाला वेंडर, अपना ठेला उसी दरवाज़े के पास ले आता है। दरवाज़े के पास ठेला लाते ही, एक खिलका हो जाता है। वह यात्री कूदता है, मगर बीच में ठेला आ जाने से वह सीधा आकर गिरता है ठेले के ऊपर। उसका मुंह सीधा आकर फंस जाता है, आलू की सब्जी से भरी डेकची [पतेली] के अन्दर। गरमा-गरम सब्जी से उसका मुंह जलता है..जो अलग, ऊपर से उस वेंडर के उलाहने और सुनने पड़ते हैं बेचारे को। असल में ताज़ी तैयार की गयी सब्जी, का सत्यानाश हो गया है ? बेचारा वेंडर, आख़िर चुप कैसे रहता ? क्योंकि, सब्जी का हुआ नुकसान नाक़ाबिले बर्दाश्त है। वह उसकी गरदन पकड़कर डेकची से उसका मुंह बाहर निकालता है, फिर उसे सीधा खड़ा करके उसे ज़ोर से फटकारता है]

वेंडर – [उसका गिरेबान पकड़कर, कहता है] – ला, आलू की सब्जी के पैसे। गधे तुझको चलना नहीं आता, नाश कर डाली मेरी पूरी सब्जी।

यात्री – [होंठों में ही कहता है] – जला है, मेरा मुंह। इधर मैं करने वाला था, इस लंगूर पर हर्जाने का दावा। उससे पहले यह कुत्तिया का ताऊ, आ गया मुझसे पैसे मांगने ?

[इतने में प्लेटफोर्म पर घुमता एक पुलिस वाला, ठेले के नज़दीक आता है। फिर क्या ? उस यात्री का गिरेबान छुडाकर, उसे अपने क़ब्ज़े में ले लेता है। फिर चालान-डायरी निकालकर, उसे कहता है]

पुलिस वाला – भईसा, ज़िंदगी से धाप गए क्या ? गैर कानूनी कूद-फांद करते, आपको शर्म नहीं आयी ? पटरियां पार करके, इधर क्यों आये ? आया नहीं जाता, उतरीय पुल चढ़कर ? ऐसे क्या आराम तलबी बन गए, आप ? पांव टूटे हुए है, क्या ? अब आप ढाई सौ रुपये भरिये, ज़ुर्माने के। और साथ में, इस बेचारे ग़रीब पुड़ी वाले की हुई हानि की..कीजिये, भरपाई।

[कहां फंस गया, यह भोला प्राणी ? वह बेचारा उस पुलिस वाले को कुछ ज़वाब देता ? उससे पहले प्लेटफोर्म पर, एक खिलका होता दिखाई देता है। उस खिलके को देख, वह बेचारा अपना दुःख भूल जाता है। और उसे, हंसी अलग से छूट जाती है। सामने, मौलवी साहब दिखाई देते हैं। उनके दोनों हाथ पकड़कर, उनकी दोनों बेगमें दोनों तरफ़ से खींच रही है। और इस तरह खींच रही है,

जैसे दो टीमें रस्सा-कशी की प्रतियोगिता में रस्सी खींच रही हो ? इन दोनों बेगमों के बीच में, बेचारे मौलवी साहब बुरे फंसे हुए हैं ? उनकी हालत अब, वीणा के कसे जा रहे तारों के समान होती जा रही है। **उन्हें ऐसा लगता है, "मानो वे दोनों बेगमें उनके हाथ खींच नहीं रही है, बल्कि हाथ उखाड़ रही है ?"** बेचारे मौलवी साहब दर्द के मारे, ज़ोर से चिल्लाते जा रहे हैं। दर्द-भरी आवाज़ में, वे कहते हैं]

मौलवी साहब – [दर्द नाकाबिले बर्दाश्त होते ही, चिल्लाते हुए कहते हैं] – हाय अल्लाह्। मार डाला रे, कढ़ी खाय के। अरी मर्दूद, वह उदघोषक क्या बोलता जा रहा है ? उसकी तरफ़ ध्यान दो, काहे मेरा हाथ तोड़ रही हो कमबख़्त ?

दूसरी बेगम – मियां, काम की बात करो। बस, आप घर चलिए। नहीं जाना है, पीर दुल्लेशाह की मज़ार पे।

एक बेगम – [हाथ खींचती हुई कहती है] – ओ बड़े मियां, तुमको इसी गाड़ी से पीर दुल्ले शाह की मज़ार पर शिरनी चढ़ाने चलना है। तब बाबा मुझे चांद सा लड़का, मेरी गोद में डालेगा।

दूसरी बेगम – [हाथ खींचती हुई, कहती है] – बड़े मियां, एक बार कह दिया आपको..घर चलो। मज़ार पर चलने का, बाबा का हुक्म नहीं हुआ है। छोटी की गोद भरने की, कहां ज़रूरत ? अल्लाह मियाँ ने चार-चार औलादे, मुझे दे रखी है..फिर, उसका क्या अचार डालोगे ? जानते नहीं, कितनी महंगाई है आज़कल ?

[अब बेचारे मौलवी साहब, किधर जाए ? बेचारे मौलवी साहब के हाथ, दोनों तरफ़ से खींचे जा रहे है ? इनकी ऐसी दशा देखकर, वह यात्री अपनी दशा को भूलकर ज़ोर के ठहाके लगाकर हंसता है। अब उस यात्री को पागल आदमी की तरह हंसते देखकर, वह पुड़ी वाला वेंडर पुलिस वाले से कहता है]

वेंडर – यह कैसा प्लेटफोर्म है, जनाब ? यहां तो घुमते हैं, मंगते-फ़क़ीर..या फिर, इसके जैसे पागल आदमी। यह पागल आदमी, मेरा हर्जाना कैसे भरेगा ? चलो भाई चलो, यहां रूककर केवल अपना धंधा ख़राब करना है।

पुलिस वाला – तू ठीक कह रहा है, मेरे भाई। यह आदमी वास्तव में पूरा पागल है, यह क्या जुर्माना भरेगा ? इसको ज़्यादा कहा तो, यह आदमी केवल हमारे कपड़े फाड़कर चला जाएगा। ए रामापीर, आज़ किसका मुंह देखा ? अभी-तक, मेरी दोनों जेबें ख़ाली पड़ी है।

वेंडर – सच कहा, जनाब। आपकी जेबें भी ख़ाली, और मेरा भी माल एक पैसे का बिका नहीं। भगवान जाने, अब पूरा दिन कैसे निकलेगा ?

[वेंडर तो आगे बढ़ा, और पुलिस वाले ने अपना मुंह किया मौलवी साहब की तरफ़। उसने सोचा, यहां कुछ नहीं मिला तो शायद वहां कुछ मिल जाए ? वहां बड़ी बेगम मौलवी साहब का रास्ता रोककर आगे खड़ी हो गयी है, फिर वह चिल्लाकर कह रही है]

बड़ी बेगम – [ज़ोर से कहती है] – मियां तुमको, अपने चारों नेकदख़्तर की कसम। गाड़ी में

चढ़िया तो।
छोटी बेगम – [बड़ी बेगम को धक्का देती हुई, उसे दूर हटाती है] – दूर हटो जीजी, तुमको कह दिया ना..मेरे मामले में दख़ल दिया तो, अल्लाह पाक की कसम मसलकर रख दूंगी तुमको। कह देती हूं, तेरी सात पुश्तों को मेरी बददुआ लगेगी जीजी।
बड़ी बेगम – मुझसे तो तुम, दूर ही रहा करो। देख री छोटी, मियां को हाथ नहीं लगाना। एक बार पहले, कह देती हूं।
छोटी बेगम – [मौलवी साहब का हाथ खींचती हुई, कहती है] – ले यह लगाया हाथ, मियां को। क्या कर लिया है, तूने ?
बड़ी बेगम – [पांव से जूती निकालकर दिखाती है] – अब लगा, हाथ। ऐसी मारूंगी, तूझे तेरी नानी याद आ जायेगी।
[अचानक मौलवी साहब को, पुलिस वाला नज़दीक आता दिखायी देता है। वे उसे देखते ही, अपना हाथ छुड़ाते हुए कहते हैं]
मौलवी साहब – [हाथ छुडाने की कोशिश करते हुए, कहते हैं] – क्या कर रही हो, बेग़म ? वह पुलिस वाला, तुमको देख रहा है...
[मौलवी साहब की बात सुनकर, वह पुलिस वाला उन लोगों के पास आकर कहता है]
पुलिस वाला – [पास आकर कहता है] – देख रहा नहीं, देख लिया है मैंने..जुर्म होते। अब आप लाइए, ढाई सौ रुपये शान्ति भंग करने के। अब कहिये, स्टेशन पर आप लोगों ने शांति भंग क्यों की ? अब भर दीजिये, जुर्माना। नहीं तो तुम लोगों को अन्दर बैठाकर आता हूं, पुलिस की हिरासत में।
बड़ी बेग़म – [आँखे तरेरती हुई, कहती है] – वर्दी पहनकर, क्या आ गया तू ? डरती हूं क्या, तेरे बाप से ? हमको क़ानून बता रहा है, नामाकूल ? पहले गंगलाव तलाब में मुंह धोकर आ जा, फिर पूछ अच्छी तरह से..बड़े मियां को, के मैं कितनी भारी पड़ती हूं ? कुछ बात चढ़ी, तेरे भोगने में ? [पुलिस वाले की तरफ़ खारी-खारी नज़रों से देखती हैं] देख क्या रहा है, टुकर-टुकर ? अब बाका फाड़कर क्या ऊबा है, कमबख़्त ?
पुलिस वाला – क़ानून से खिलवाड़ करना, बहुत महंगा पड़ता है बीबी फातमा।
बड़ी बेग़म – [नाराज़ होकर, कहती है] – अरे ओSS, घास-मंडी की नाली के कीड़े। क़ब्र में जाने की तैयारी करके आया है, क्या ? कमबख़्त, इस गुलशन बीबी को बीबी फातमा कहने की जुर्रत कैसे की रेSS नाशपीटे ?
पुलिस वाला – [थोड़ा विनम्र बनता हुआ कहता है] – इस बात को आप कानों में मत डालिए, गुलशन बेग़मसा। मेहरबानी करके जुर्माना भर दीजिये, आप मुझको मज़बूर न करें कानूनी कार्यवाही..
गुलशन बीबी – [हाथ नचाती हुई, कहती है] – नहीं तो क्या कर लेगा रेSS, अभी क्या बोल रहा है

तू ? कौनसा जुर्म हो गया रे, भंगार के खुरपे ? कसम पीर बाबा दुल्लेशाह की, आगे तूने कुछ बोला तो तूझे मुंह देखने लायक नहीं छोडूंगी। [पांव की जूती निकालकर, कहती है] इधर मर कमबख़्त, शरीफ़ औरत को छेड़ रहा है ?
[वह तो गुस्से से काफ़ूर होकर, पाँव से जूती निकालकर अपने हाथ में लेती है। फिर, यह क्या ? गुलशन बीबी के हाथ में पाँव की जूती देखते ही, वह पुलिस वाला सरपट भागता है। मगर वह गुलशन बीबी, कब कम पड़ने वाली ? झट जूती हाथ में लिए, उस पुलिसकर्मी के पीछे कूकरोल मचाती हुई दौड़ती है। अब बेचारे पुलिस वाले में कहां इतनी हिम्मत, बीच में रुकने की ? वह सरपट दौड़ता जा रहा है, दौड़ता-दौड़ता वह आगे देख़ता है न पीछे ? वह बेचारा तो, अपनी जान बचाने के वास्ते तेज़ी से दौड़ता है। बदक़िस्मत से वह रास्ते में टिल्ला खा जाता है, चम्पाकली से। इस हिंजड़े को वहां पाकर, पीछा कर रही गुलशन बेग़म के क़दम स्वत: रुक जाते हैं..और झट, पीछे मुड़कर चली जाती है अपने मियाँ के पास। ऐसा कौन आदमी या औरत होगा, जो हिंजड़े को..अपनी इज्ज़त, धूल में मिलाने का मौक़ा देगा ? इस वक़्त चम्पाकली, शीतल जल के नल से पी रहा था पानी। टिल्ला लगते ही, पानी के छींटे चम्पाकली के मुंह पर लगते हैं..जिससे बेचारे के मुंह का मेक-अप ख़राब हो जाता है। मेक-अप ख़राब हो जाने से, चम्पाकली हो जाता है...नाराज़। उसकी यह हालत देखकर, आस-पास खड़े यात्री हंस पड़ते हैं। फिर क्या ? उसका बदन, गुस्से से कांपने लगता है। अब वह प्लेटफोर्म पर खड़े दूसरे हिज़ड़ों को आवाज़ दे देकर, उन्हें अपने पास बुलाने की कोशिश करता है। अब रास्ते में चारों ओर से, कई हिज़ड़े आते दिखाई देते हैं। इतने सारे हिज़ड़ों को आते देखकर, वह पुलिस वाला घबरा जाता है। और वह सोचता है **'हिज़ड़ों के आगे किसका चलता है, ज़ोर ?' बस इज़्ज़त बचाने के लिए, वह तेज़ी से दौड़ता है। और पुलिए के पास आकर, लम्बी सांस लेता है।** आज़ तो बेचारा पुलिस वाला, अच्छा फंसा ? बेचारे के हाथ में, आया कुछ नहीं..शगुन भी फोरे हुए ? **बिना लिए-दिए नामुरादों ने, इतना दौड़ाकर बे फ़िज़ूल कसरत करवा दी ? इस पुलिस वाले से तो अच्छा है, रेसकोर्स का घोड़ा..जो दौड़कर लाता है इनाम।** यह पुलिस वाला ठहरा, करमठोक। अचानक इस पुलिस वाले के ऊपर निग़ाहें गिर जाती है, चार महिला कांस्टेबल की। जो इस वक्त पुलिए की रेलिंग थामे खड़ी है, और उनके मुंह में चबायी जा रही है पान की गिलोरियां। **ये महिलाएं ऐसी शैतान है, जो अपने आपको इस महकमें में लेडी डॉन से कम नहीं समझती। यानि ये, हर पुरुष कांस्टेबल पर हावी होना चाहती है।** अब इस हांफ रहे पुलिस वाले को देखकर, ये शैतान की खालाएं ज़ोर से ठहाके लगाकर हंसती है..! फिर उस बेचारे का उपहास करती हुई, उसको व्यंग-भरे जुमले सुनाती जा रही है। वे एक दूसरे से, कहती है..]
एक महिला कांस्टेबल – [पास खड़ी महिला कांस्टेबल से कहती है] – ए राम, तूने अभी कुछ देखा क्या ? फुलिया मुझे तो यह नज़ारा देखकर, बहुत मज़ा आया।
फुलिया – हां ए रामी, इस खोजबलिये खोड़ीले-खाम्पे को अच्छी-खासी शिक्षा मिल गयी है। कल

यह बाका फाड़कर कह रहा था, ‘**स्टेशन पर, महिला पुलिस की क्या ज़रूरत ? यहां केवल पुरुष पुलिस से ही, काम चलाया जा सकता है।**’ अब देख लिया इसने, औरतों से झगड़े करने का क्या परिणाम होता है ? मर्दों को तो, इन औरतों से दूर ही रहना चाहिए।
रामी – [उस पुलिस वाले की ओर देखती हुई उसे चिढ़ाती हुई जीभ निकालती है, फिर कहती है] – अब और जाना, उस बीबी फातमा के पास।
[रामी के इतना कहते ही, वहां खड़ी सभी महिला कांस्टेबल ज़ोर से हंसती है। इनका हंसना तो आख़िर, यह पुलिस वाला बर्दाश्त कर कर लेता..मगर उनकी लालकी [ज़बान] से छूट रहे व्यंग-बाण नाक़ाबिले बर्दाश्त ठहरे। उन व्यंग बाणों को सहना, उबलते कड़वे तेल को कान में उंडेलने के बराबर है। इस कारण बेचारा वह पुलिस वाला झट सीढ़ियां चढ़कर पहुच जाता है, पुलिए के प्लेटफोर्म के ऊपर। मगर यहां, अलामों के चाचा मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी मौजूद..जो उसे देखकर, खिल-खिल हंसती जा रही है ? अब यहां खड़े रतनजी, ठहरे कुबदी नंबर एक। वे उस पुलिस वाले की ओर देखते हुए, अपने साथियों से ज़ोर-ज़ोर से कह रहे हैं।]
रतनजी – [साथियों से कहते हुए] – देखिये, उस रोवणकाले हवलदार साहब को। [उस पुलिस वाले की तरफ़, उंगली से इशारा करते हुए] चलिए, जनाब का हाल-चाल पूछ लेते हैं।
ओमजी – [ज़ोर से पुलिस वाले को, आवाज़ देकर कहते हैं] – ओ हवलदार साहब, खैरियत है ? पेट की कब्ज़, साफ़ हो गयी या नहीं ? कहीं वापस, पाख़ाने में दाखिल होना है ? अभी-तक आप दौड़ लगाते जा रहे हैं, लगता है अभी-तक आपका पेट साफ़ नहीं हुआ है ?
रतनजी – [ज़ोर से कहते हैं] - पेट साफ़ होने में पूरे दो दिन लगते है, हवलदार साहब। बस अब आप मोहनजी का नाम लेकर, जाजरू [पाख़ाना] का आरक्षण करवा लीजिये। फिर आप किसी और को, जाजरू में जाने मत देना।
[रतनजी की बात सुनकर, सभी साथी ज़ोर-ज़ोर से हंसते हैं। इन लोगों की हंसी की आवाज़ सुनकर, वह पुलिस वाला इनकी तरफ़ देख़ता है। इन लोगों पर नज़र गिरते ही, पुलिस वाला बड़बड़ाता हुआ जी.आर.पी. दफ़्तर की ओर क़दम बढ़ा देता है। इस तरह वह फटा-फट जाने के लिए, पुलिए की सीढ़िया उतरता जा रहा है..और साथ में, बड़ाबड़ाता भी जा रहा है।]
पुलिस वाला – [बड़बड़ाता हुआ, पुलिया उतरता है] – राम, राम। कहाँ फंस गया, यार ? **यह तो है, अलाम मोहनजी की अलाम चांडाल-चौकड़ी**। अरे रेSS यहां रुकना नहीं, रुक गए तो रामा पीर की कसम..तक़लीफ़ देखनी होगी। **कल खाए इनके बनाए हुए दाल के बड़े, इनके कारण बार-बार चक्कर काटने पड़े जाजरू के। अब तो रामसा पीर ही बचायें, इन जिंदे भूतों से।**
[बेचारा पुलिस वाला, तेज़ी से क़दम बढ़ाता हुआ जी.आर.पी. दफ़्तर के पास पहुँच जाता है, वहां आकर बेचारा लम्बी सांसे लेता है। अब प्लेटफोर्म नंबर दो पर सीटी देती हुई हावड़ा एक्सप्रेस आती है, कुलियों का झुण्ड पुलिए से उतरता हुआ दिखायी देता है। अब मोहनजी, पुलिया चढ़ते दिखाई देते हैं। वे इधर-उधर देखते हुए सीधे पहुंच जाते हैं, अपने साथियों के पास।

मोहनजी – रतनजी, कढ़ी खायोड़ा। आप लोग, यहां बैठे हैं ? और मैं गेलसफ़ा बना हुआ, पूरा प्लेटफोर्म देख आया ..?

रतनजी – गाड़ी आये, तब पुल से नीचे उतरना चाहिए। इतनी सी बात, हर समझदार आदमी जानता है।

ओमजी – क्या पागलों सी बात कर रहे हो, रतनजी कढ़ी खायोड़ा ? [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए कहते हैं] ये मोहनजी समझदार आदमी तो नहीं है, मगर ये "महा पुरुष" ज़रूर है।

[मोहनजी बहुत ख़ुश होते हैं, के "आज़ ओमजी ने उनका तकिया कलाम "कढ़ी खायोड़ा" अपना लिया है। अब वे ख़ुश होकर, कहते हैं]

मोहनजी – [ख़ुश होकर, कहते हैं] – आज़ तो मैं ओमजी कढ़ी खायोड़ा, आपकी बहुत तारीफ़ करूंगा। क्योंकि, आपने मेरा तकिया कलाम "कढ़ी खायोड़ा" को अपना लिया है। अब मैं कढ़ी खायोड़ा रामसा पीर से अर्ज़ करता हूं, के 'ओमजी मेरे पक्के शिष्य बन जाए।'

ओमजी – [मुस्कराकर कहते हैं] – मोहनजी, कढ़ी खायोड़ा। बात तो सही है, आप मेरे गुरु हैं..नहीं नहीं..गुरुगंटाल हैं। महापुरुष क्या ? आप तो मालिक, पुरुष भी नहीं हैं।

रशीद भाई - [हंसते हुए, कहते हैं] – सुना साहब, आपके शिष्य ने अभी क्या कहा ? [ओमजी से कहते हैं] यार ओमजी, क्यों धीमे-धीमे बोल रहे हैं ? ज़रा, ज़ोर से कहिये।

मोहनजी – [मुस्कराकर कहते हैं] – सुना नहीं, रशीद भाई ? ओमजी मेरी तारीफ़ कर रहे हैं, के 'मैं गुरुगंटाल हूं। और मैं महापुरुष भले हूं ही, [कान पर हाथ रखते हुए] आगे, क्या कहा ? अरेSS, यह क्या कह दिया ओमजी कढ़ी खायोड़ा ? मैं पुरुष ही नहीं हूं, तब फिर मैं क्या हूं ? क्या, मैं हिज़डा हूं ?'

ओमजी – जनाब, नाराज़ मत होना। आप जैसे पढ़े-लिखे दानिशमंद व्यक्ति, इस ख़िलक़त में मिलते कहां है ? आपके जैसे ज्ञानीजन ने, कभी महाभारत नाम का महा-ग्रन्थ पढ़ा होगा ?

मोहनजी – हां पढ़ा है रे, कढ़ी खायोड़ा। अब आप आगे कहिये, जनाब।

ओमजी – सुनिए, जनाब। अज्ञातवास में अर्जुन राजा विराट के दरबार में रहा था, बोलो सच कहा या नहीं ? अगर मैं सच्च कह रहा हूं, तब आप कह दीजिये 'ठीक है।'

मोहनजी – सही फ़रमाया है, ओमजी कढ़ी खायोड़ा। बिल्कुल सही कहा, अर्जुन बड़ा बहादुर था..वह राजा विराट के दरबार में रहा था, अब आगे कहिये ओमजी कढ़ी खायोड़ा।

ओमजी – क्या कहे, जनाब ? उसने राजा विराट की बेटी को, संगीत और नृत्य की शिक्षा दी। अब आप कहिये, **जनाब..जो व्यक्ति किसी व्यक्ति को ज्ञान देता है, उस ज्ञान देने वाले व्यक्ति को हम क्या कहेंगे ? उस ज्ञान लेने वाले के साथ, उसका क्या रिश्ता होगा ?**

मोहनजी – वह गुरु कहलायेगा, कढ़ी खायोड़ा। इसके अलावा, और उसे क्या कह सकते हैं ? अब आप आगे कहिये, जनाब।

ओमजी – सुनिए, जनाब। अर्जुन बना, उस राज़कुमारी का गुरु..अब कहिये, अर्जुन कैसा था ?

मोहनजी – [परेशान होकर कहते हैं] – अर्जुन कैसा था, अर्जुन कैसा था ? कह कहकर मेरा सर-दर्द बढ़ा दिया, आपने। कह दिया यार, अर्जुन बड़ा अच्छा किरदार था। वैसा ही मैं हूं, कढ़ी खायोड़ा। अब आगे कहो, कढ़ी खायोड़ा।
ओमजी – अर्जुन नाम के किरदार ने हिज़डा बनकर, राज़कुमारी को संगीत और नृत्य की शिक्षा दी। अब आप कहिये, क्या हिज़डा ख़राब होता है ? अगर आपको हिज़डा बना दिया, तो कौनसा ग़लत काम किया ? अर्जुन वृहन्नलता नाम का हिज़डा बना, तब आप कहिये 'क्या उसने, कोई खोटा काम किया ?'
मोहनजी – नहीं रे, कढ़ी खायोड़ा। कोई खोटा काम नहीं किया, वह तो महापुरुष था..पुरुष नहीं था।
रशीद भाई – मोहनजी ठीक है, सही बात कही ना ओमजी ने ? आप सहमत हो ? आप वैसे ही महापुरुष हैं या नहीं, जैसा अर्जुन था ?
मोहनजी - हां भाई, इसमें ग़लत बात क्या कही ? अर्जुन महापुरुष था, मगर पुरुष नहीं था, बस मैं भी वैसा ही हूं कढ़ी खायोड़ा। बस, यह बात बिल्कुल शत प्रतिशत सही है। मैं भी अर्जुन की तरह, तुम लोगों को तालीम दिया करता हूं..
[सभी उनकी बात सुनकर, ज़ोर से ठहाके लगाकर हंसते हैं। मोहनजी बेचारे बांगे आदमी की तरह, उन लोगों के मुंह ताकते रह जाते हैं।]
मोहनजी – [सभी को कहते हैं] – सही कहा, ओमजी ने..फिर तुम गधेड़ो कढ़ी खायोड़ो, क्यों बेफिज़ूल हंसते हो मुझ पर ? पागलो जैसे हंसना, क्या यह समझदार इंसानों का काम है ?
रतनजी – [मुस्कराते हुए कहते हैं] – मोहनजी। क्या आपने मंज़ूर कर लिया, अब आपको किसी तरह की प्रोब्लम तो नहीं है ?
[मोहनजी के कुछ नहीं बोलने पर, अब रतनजी दूसरे साथियों की तरफ़ मुंह करते हुए कहते हैं]
रतनजी – [दूसरे साथियों से कहते हुए] – क्यों हंसते जा रहे हो, पागलों की तरह ? अब कढ़ी खायोड़ा...
[अब इंजन की सीटी सुनायी देती है, उसके आगे आगे रतनजी क्या कह रहे हैं..कुछ सुनायी नहीं देता। अहमदाबाद-मेहसाना जाने वाली लोकल गाड़ी प्लेटफोर्म नंबर पांच पर आकर रुकती है। अब सभी सीढ़ियां उतरकर, प्लेटफोर्म नंबर पांच पर आते हैं। मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच पर वापस रौशनी फ़ैल जाती है। अब गाड़ी के शयनान डब्बे में, मोहनजी खिड़की के पास वाली सीट पर बिराज़ जाते हैं। और उनके पहलू वाली सीटों पर, रतनजी और ओमजी बिराज़ जाते हैं। रशीद भाई भी सामने वाली सीट पर, बिराज़ गए हैं। पास वाली फोल्डिंग टेबल को खोलकर, मोहनजी खाने का टिफ़िन उस पर रख देते हैं। अब आदत से लाचार मोहनजी, खिड़की से मुंह बाहर निकालकर ज़र्दे की पीक थूकते हैं...और वह पीक सीधी जाकर गिरती है, मौलवी साहब की छोटी बेग़म के रिदके [दुपट्टे] के ऊपर। जो खिड़की के पास ही खड़ी रहकर, अपने शौहर को पीर बाबा दुल्लेशाह की मज़ार पर चलने के लिए रजामंद कर रही है। रिदके पर

पीक गिरते ही, वह ज़ोर से चिल्लाती हुई मोहनजी से कहती है।]
छोटी बेग़म – [ज़ोर से चिल्लाती हुई, कहती है] – अरेSS, ओ नापाक दोज़ख़ के कीड़े। क्या कर डाला रे तूने, मेरे ओढ़ने का ? कमबख़्त, नापाक कर डाला रेSS ? क्या यह तेरे बाप का, पीकदान है ? [मौलवी साहब से कहती है] बड़े मियां, अब कैसे जाऊंगी पीर बाबा की मजार पर ? इन नापाक कपड़ो में बाबा की मज़ार पर जाना, शरियत के ख़िलाफ़ है।
बड़ी बेग़म गुलशन बीबी – [ख़ुश होकर कहती है] – हर किसी से ख़ता हो जाती है, ग़लती आख़िर इंसानों से ही होती है। सुन, **"कभी बुरा नहीं जाना किसी को अपने सिवा, हर ज़र्रे को हम आफ़्ताब समझे हैं"** अब समझा, तूने ? इस नामाकूल को माफ़ करना ही अच्छा है, छोटी।
छोटी बेग़म – कैसे माफ़ कर दूं, जीजी ? इसने जान-बूझकर मेरी ओढ़नी नापाक की है, अब इस ओढ़नी को पहने जा नहीं सकती। अब ऐसे ही, इस नामाकूल को ऐसे कैसे छोड़ दूं ? [मुंह बिगाड़कर, कहती है] वाह, जीजी वाह। क्या कह दिया, तुमने ? अब तुम बड़ी फकीरणी बनकर कह रही हो, कर दूं इसे माफ़ ? यह कमबख़्त, क्या लगता है तुम्हारा ?
बड़ी बेगम गुलशन बीबी – ख़ुदा के हुक्म को मान, छोटी। ख़ुदा ने कहा है, **सच्चे दिल से इंसान की ख़ता को माफ़ करना चाहिए, इससे जन्नत-ए-दर नसीब होता है।** तू अच्छी तरह जानती है...अब तो ओढ़नी पाक होने से रही, अब तू घर चल। अगले जुम्मेरात ज़रूर चलेंगे, बाबा की मज़ार पर।
मौलवी साहब – सच्ची बात कही है, तेरी जीजी ने। ले चल, अब घर चलें।
[तीनों जाने के लिए अपने क़दम बढ़ाते हैं, तभी खिड़की से मुंह बाहर निकालकर..मोहनजी झट, अपनी कैंची की तरह चलती ज़बान को चला देते हैं]
मोहनजी – [खिड़की से मुंह बाहर निकालकर, मोहनजी कहते हैं] – मैंने जान-बूझकर नहीं थूका है, जैसे आप काळी राण्ड की तरह लाल-पीली हो रही हैं ?
[इतना सुनते ही, छोटी बेग़म झट रूककर, सिंहनी की तरह ग़रज़ती हुई मोहनजी को धमकाती है]
छोटी बेग़म – [ग़रज़ती हुई, पांव से चप्पल निकालकर कहती है] – इधर मर, बकर ईद के बकरे। अभी तूझे हलाल करती हूं। [बड़ी बेग़म से कहती है] जीजी, तेरे को मज़ा आ रहा है ? अब देख ले, इस नामुराद के लक्खन..अभी भी चुप नहीं बैठा है, यह घास मंडी की नाली का कीड़ा। चल मेरे साथ, उसको पीटते हैं। इस नामुराद की अक्ल, ठिकाने आ जायेगी। [चप्पल पहन लेती है]
[मगर अब यहां खड़े रहकर, तमाशा तो करना नहीं, बस..? झट छोटी बेग़म का हाथ पकड़कर मौलवी साहब और बड़ी बेगम गुलशन बीबी, उसे घसीटते हुए पुलिए की तरफ़ ले जाते हैं। थोड़ी देर बाद, वे तीनों पुलिए की सीढ़ियां चढते नज़र आते हैं। यह मंज़र देख रहे रतनजी अपने बाएं हाथ की मुट्ठी दबाकर, उससे दायें हाथ की हथेली पर ज़ोर से फटकारा लगाते हैं। इस तरह वे पम्प मारने का इशारा करते हुए, नचाते जाते हैं अपनी अंगुलियां। रशीद भाई इनके इशारे को समझकर, अपना मूड-ओफ कर देते हैं। फिर इनकी तरफ़ से ध्यान हटाते हुए, वे खिड़की के बाहर

झांकने लगते हैं। उधर मोहनजी ने अपना टिफ़िन खोल दिया है, और वे रोटी का एक-एक निवाला तोड़कर कढ़ी की सब्जी में डूबा-डूबाकर खाना खा रहे हैं। रोटी खाते-खाते वे रतनजी से कहते हैं]

मोहनजी – [खाना खाते हुए, कहते हैं] – क्यों मज़ाक कर रहे हो, रतनजी ? रशीद भाई जैसे सेवाभावी, इस ख़िलक़त में मिलने मुश्किल है। आपके द्वारा इतना खिजाने के बाद भी, आपके लिए देख रहे हैं बाहर..

रतनजी – मगर, क्यों देख रहे है जनाब ?

मोहनजी – अरे यार, यह देखने के लिए...कहीं जम्मू-तवी, लेट आयी हुई कहीं दिखाई दे जाय ? तब अपुन सब उस गाड़ी में बैठकर, पाली जल्दी पहुंच जाए।

रतनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – साहब..ये जनाब ऐसे हैं, जो आपको जम्मू-तवी के स्थान पर दिल्ली एक्सप्रेस में बैठा देंगे। और आप रोटी खाते वक़्त देखोगे नहीं, गाड़ी किधर जा रही है ?

ओमजी – और फिर आप लोगे, आराम से नींद। फिर आपका क्या कहना, जनाब ? खारची की जगह, ये सेवाभावी आपको पहुंचा देंगे दिल्ली। ऐसे है ये आपके, सेवाभावी।

[गाड़ी रवाना हो जाती है, अब रशीद भाई बाहर झांकना बंद कर चुके हैं। और इधर ओमजी ख़ाली सीट पर आराम से लेट गए हैं, और इन्होने अपना बैग सिर के नीचे रखकर उसे तकिया बना डाला है। अब वे आराम से नींद ले रहे हैं, और इनके खर्राटे गूंजते जा रहे हैं। अब गाड़ी की रफ़्तार बढ़ती जा रही है। मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच पर रौशनी फैलती है। गाड़ी पटरियों के ऊपर तेज़ी से दौड़ रही है। ओमजी के खर्राटों की आवाज़, और पछीत पर सो रहे छंगाणी साहब के खर्राटों की आवाज़..दोनों आपस में, तालमेल बैठा रही है। इधर गाड़ी की छुक-छुक की आवाज़, इन दोनों के खर्राटों से..बराबर संगत करती जा रही है। मोहनजी ने अब खाना खा लिया है, वे अब टिफ़िन को बंद कर रहे हैं..टिफ़िन को बंद करते हुए वे रतनजी से कहते हैं]

मोहनजी – रतनजी, बात आपकी मार्के की है। आपकी बात मानने वाले को फ़ायदा होता है, [खिड़की से हाथ बाहर निकालकर, हाथ धोते हैं] इस पर नहीं चलने से जनाब, हम एम.एस.टी. वाले कई तक़लीफ़ें देखते आये हैं।

रतनजी – जनाब, आप यों ही मुझे राई के पर्वत मत मत चढ़ाइए, आप साफ़-साफ़ ही कह दीजिये..आपका कहने का, क्या मफ़हूम है ?

मोहनजी – [टिफ़िन को, बैग में रखते हुए कहते हैं] – आपका मत है, सबसे पहले तहकीकात कर लीजिये, के 'गाड़ी किस प्लेटफोर्म पर आ रही है ?' इस तरह पूछ-पूछकर ही गाड़ी में बैठना चाहिए, नहीं तो अगर दूसरी गाड़ी में बैठ गए तो तक़लीफ़ देखना हमारा नसीब बन जाएगा। फिर यदि ज़ेब में पैसे नहीं हुए, तो रामा पीर जाने टी.टी.ई. के सामने हमारी क्या गत बनेगी ?

रशीद भाई – इन बातों को सुनकर ऐसा लगता है, आप कभी किसी ग़लत गाड़ी में बैठने का तुजुर्बा ले चुके हैं।

मोहनजी – हां रेSS, रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा। जिस बेचारे के साथ ऐसी घटना घटित होती है, उस बेचारे का दिल ही जानता है। पांच दिन पहले की बात है, मैं और मेरे साथी हमेशा की तरह पहुंचे खारची स्टेशन पर गाड़ी पकड़ने। सामने खड़ी गाड़ी को हमने समझ लिया, वह गाड़ी बीकानेर-बांद्रा टर्मिनल होगी ?

रतनजी – फिर क्या हुआ, जनाब ?

मोहनजी – हमने आव देखा ना ताव, झट चढ़ गये उस गाड़ी में। अरे कढ़ी खायोड़ो, आपको क्या कहूं ? किसी से न पूछा..न किसी से मालुम किया, के 'गाड़ी कहां जा रही है ?'

रशीद भाई – फिर, क्या ? खाना-वाना खाया, और खूंटी तानकर सो गए ?

मोहनजी – यही काम किया रेSS, कढ़ी खायोड़ा। फिर करता, क्या ? क़रीब आधा घंटा बिताया होगा, तभी गाड़ी रुकी..और, लगा ज़ोर का धक्का। इस धक्के से मेरी नींद खुल गयी, मैंने सोचा..के..पाली स्टेशन आ गया होगा ? अच्छा हुआ, बाहर जाकर पानी की बोतल भरकर ले आयें।

रतनजी – अच्छा होता रामा पीर, रशीद भाई आपके साथ होते तो यह तक़लीफ़ आपको करनी नहीं पड़ती।

रशीद भाई – [खीजे हुए कहते हैं] – ख़ुदा रहम। मुझे क्यों बैठा रहे हैं, ग़लत गाड़ी में ? मैंने आपका, क्या बिगाड़ा ?

मोहनजी – क्यों बीच में बोलकर मेरी लय तोड़ रहे हैं, आप ? अब सुनिए, कढ़ी खायोड़ा। जैसे ही मैंने खिड़की के बाहर झांका, मुझे तो यह स्टेशन कोई दूसरा ही स्टेशन लगा। मेरी तो सांसे ऊपर चढ़ गयी, बेटी के बापां। अब क्या करूं, रामा पीर ?

रतनजी – सांसे ऊंची चढ़ गयी..? कहीं, आपका हार्ट फेल तो नहीं हो गया ?

मोहनजी – कढ़ी खायोड़ा, आप मुझे क्यों मौत दिखला रहे हैं ? सुनो, मैंने पास बैठे यात्री से पूछा, के "पाली स्टेशन आ गया, क्या ?" वह गधा सुनकर ऐसे हंसा, जैसे कोई काबुल का गधा हंस रहा हो ढेंचू ढेंचू करता हुआ ?

रतनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – अरे रेSS, मालकां। अभी आप अपनी बिरादरी वालों की बात मत सुनाइये, अभी आप यह बताइयेगा..आगे, क्या हुआ ? कहीं आप दिल्ली तो ना पहुंच गए, चांदनी चौक में ?

मोहनजी – अरे जनाब रतनजी वह तो यों बोला, के "पाली जाना है तो आप अभी गाड़ी से उतर जाइएगा, नहीं उतरे तो आप सीधे दिल्ली पहुंच जाओगे। अरे जनाब यह पाली स्टेशन नहीं, यह है सेन्दड़ा स्टेशन।"

रतनजी – अरे जनाब, मोहनजी। आप अकेले इस चक्कर में फंस गये, या आपने अपने साथियों को भी फंसा डाला ? मुझे तो उस बेचारे भोले पंछी महेश की फ़िक्र है, वह आपके ज़ाल में ज़रूर फंसा होगा ? उसको बहुत अधिक शौक है, आपका साथ करने का।

मोहनजी – क्या यार रतनजी, ऐसे बोल रहे हैं आप ? मैं कोई अकेला नहीं चलता गाड़ी में, मगर यहां बात कुछ अलग ही है, आप सुनो तो सही..कढ़ी खायोड़ा। यह आपका भोला पंछी महेश ही, इस गाड़ी में बैठने की उतावली कर रहा था।

रतनजी – [आश्चर्य से कहते हैं] – क्या कह दिया आपने, महेश उतावली कर रहा था गाड़ी में बैठने की ?

मोहनजी – कह रहा था 'चढ़ जाओ, चढ़ जाओ गाड़ी में..' कहता-कहता, मुझे परेशान कर डाला, के 'चढ़ जाओ गाड़ी में, नहीं तो गाड़ी रवाना हो जायेगी।'

रशीद भाई – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – अब आप यह कहिये, नीचे उतर गए अच्छी तरह से..या फिर चलती गाड़ी से उतरकर, ज़मीन पर खाए रगड़के ? और साथ में उस बेचारे महेश को भी लेकर, नीचे पड़े होंगे ?

मोहनजी – अरे जनाब, मेरे हाथ के तोते उड़ गए। मैं देखने लगा, आसमान। मुंह से ये शब्द निकलते रहे के "ओ मेरे रामसा पीर, अब क्या करूं ? जोधपुर जाने वाली, बीकानेर बांद्रा टर्मिनल चली गयी तो..?" मगर रखी मैंने हिम्मत, आपके जैसे रतनजी..कोई मैंने, हाम्फू-हाम्फू नहीं किया ?

रतनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – अब आराम से बैठकर, कर लेना हाम्फू-हाम्फू। यहां आपको, मना करने वाला कोई नहीं। कहिये, आगे क्या हुआ ?

मोहनजी – बस रामसा पीर ने हमारी गाड़ी चलायी, कहीं पैदल चले तो कहीं जीप में बैठे..अरे भाई, कहीं हमें बैल गाड़ी में तो कहीं टेक्टर में भी बैठना पड़ा। बेटी के बाप, किसी तरह हम सोजत पहुच गए। वहां हमने पकड़ी, सीधी पाली जाने की बस। पाली पहुंचते ही मेरे साथी चले गए अपने घर। और मैं टेम्पो पकड़कर, सीधा आया रेलवे स्टेशन।

रशीद भाई – गाड़ी मिल गयी, या आपको स्टेशन पर मंगतों-फकीरों के साथ सोना पड़ा ?

मोहनजी – बाबा रामसा पीर की कृपा से मिल गयी, जम्मू-तवी एक्सप्रेस। मगर वह भी, तीन घंटे लेट। जब मैं जोधपुर स्टेशन पर पहुंचा, तब घड़ी में बजे थे रात के बारह।

रतनजी – अरे रामसा पीर, यह क्या कर डाला आपने ? वो वक़्त तो भूतों के घुमने का था..

मोहनजी – मैं ख़ुद ज़िंदा कालिया भूत हूं, मैं किसी से डरने वाला पूत नहीं हूं..जनाब, मैं ख़ुद लोगों को डरा दिया करता हूं। पहले सुनो, आगे क्या हुआ ? ज़ेब के अन्दर केवल दो-तीन रुपये, इस वक़्त सारे टेम्पो और सिटी बसें चलनी बंद हो गयी। फिर हिम्मत रखकर, पैदल रवाना हुआ..

रतनजी – ठीक है, जनाब। कहीं रास्ते के बीच आपने, रात्रिकालीन गश्ती पुलिस वालों के डंडे ज़रूर खाए होंगे ? या फिर आपने लगाई होगी मेराथन दौड़, भौंकते कुत्तो के साथ ? क्या कहूं, आपको ? बाबा रामसा पीर के दर्शनार्थ आप रामदेवरा जाने की, आप कभी नहीं करते पद-यात्रा। अच्छा हुआ, जनाब..बाबा की कृपा से, यहीं आपकी हो गयी पद-यात्रा।

[दोनों हंसते हैं]
मोहनजी – क्या आप, जानते नहीं ? बीच रास्ते, मेरा तो टूट गया चप्पल अलग से। आप काहे हंसते जा रहे हैं, काबुल के गधों की तरह ? सुनिए, फिर क्या ? चप्पल को हाथ में लिए, पैदल-पैदल घर पहुंचा।
रशीद भाई – ऐसी रोज़ के तक़लीफ़ों के स्थान पर, साहब आपकी बदली जोधपुर हो जाए..तो कितना अच्छा ? बड़े अफ़सरों की झाड़ से भी आप बचे रहेंगे, और भाभीजी भी ख़ुश हो जायेगी..अलग से।
मोहनजी – रशीद भाई, कढ़ी खायोड़ा। मत याद दिलावो, इन बड़े अफ़सरों की। वानरी को बिच्छु काट जाय, जैसी बात करते हैं आप ? आप तो यार, तुली सिलागाने की बात करते जा रहे हैं। आपकी बातों से, मुझे याद आती है...जोधपुर कार्यकाल के, लांगड़ी साहब की..वे सारी बातें।
रतनजी – ऐसी क्या बात हो सकती है, जो हम लोगों को मालुम नहीं है ? लांगड़ी साहब तो बहुत सीधे अधिकारी रहे हैं...
मोहनजी – [बात काटते हुए, कहते हैं] – जनाब, क्या आपने परसों का अख़बार देखा ? बेचारे लांगड़ी साहब की सेवानिवृति में घटता था, केवल एक दिन..! किस्मत ने ऐसा पल्टा खाया यार, उनको मिलना चाहिए था सेवानिवृति का आदेश। मगर मिल गया उनको, टर्मीनेशन का आदेश।
रशीद भाई – [बरबस, कह उठते हैं] – यह कैसे हो सकता है, जनाब ?
मोहनजी – कैसे नहीं, हो सकता ? जैसा करेंगे, वैसा भरेंगे। नौकरी में उन्होंने दोस्त कम बनाए, और दुश्मन बनाए ज़्यादा। कोई जांच का मामला था, बेचारे साहब की लम्बी नौकरी पर खींच दी गयी लाल लाइन।
रतनजी – फिर आप क्यों होते हैं, ख़ुश ?
मोहनजी – क्या फ़र्क पड़ता है, मुझे ? रतनजी कढ़ी खायोड़ा मैं क्यों होऊंगा, ख़ुश या नाख़ुश ? कहिये, आप। मुझे क्या मिलता है, ऐसा करने से ? मैं तो मेरे हाल में मस्त रहता हूं, यह सभी लोग जानते हैं..के, **'मोहनजी एक ईमानदार अफ़सर हैं..कामचोर नहीं है। फिर कोई उनको छेड़ता है, वह आदमी तक़लीफ़ ही पाता है। जैसा करोगे, वैसा ही भरोगे।'**
रशीद भाई – क्यों जनाब, फिर आप में ऐसी क्या ख़ासियत है ?
मोहनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – सुनिए, जनाब। मोहन लाल ओटाळ है, ओटाळ ही नहीं ओटाळो का सरदार है। तभी आप सबको, लोग किस नाम से पुकारते हैं ? लोग कहते हैं "लीजिये देखिये, वो आ रही है मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी।"
[मोहनजी की बात सुनकर, सभी ठहाके लगाकर ज़ोर से हंसते हैं। इनके ज़ोर-ज़ोर से खिल-खिल हंसने से बर्थ पर लेटे छंगाणी साहब सोचते हैं, 'शायद वे सभी उन पर ही हंसते जा रहे हैं ?' बेचारे छंगाणी साहब, दुखी होकर कहते हैं]
छंगाणी साहब – बेटी के बापां, मुझे क्यों उठा रहे हैं..आप ? आप लोगों में किसी को बर्थ पर

सोना था, तो पहले आप बोल देते मुझे।

रतनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – आपकी तरह सोते ही रहेंगे, तो ज़रुर हम लोग खारची पहुंच जायेंगे..मगर, हमें वहां जाना नहीं। अब उठकर आ जाइये नीचे, पाली स्टेशन आने वाला ही है।

[यहां चल रही गुफ़्तगू के कारण मालुम नहीं पड़ा, के 'बीच के सारे स्टेशन निकल चुके हैं।' अब इंजन ज़ोर से सीटी देता है, पाली स्टेशन आता हुआ दिखायी देता है। प्लेटफोर्म नंबर एक पर आकर गाड़ी रुकती है, मोहनजी के साथी, नीचे प्लेटफोर्म पर उतरते हैं। स्टेशन के नज़दीक आयी हुई "राज़कीय माध्यमिक विद्यालय, मिल क्षेत्र पाली" में बच्चों की प्रार्थना हो चुकी है, अब उन्हें कक्षाओं में भेजने के लिए ड्रम बज रहा है। बच्चे क़दम मिलाते हुए अपनी कक्षाओं की तरफ़ जाते दिखाई दे रहे हैं। उनके शारीरिक शिक्षक की आवाज़ लाउडस्पीकर पर गूंज रही है, के "लेफ्ट राईट लेफ्ट, लेफ्ट राईट लेफ्ट..!" इधर खिड़की के पास बैठे मोहनजी, अपने साथियों को क़दम मिलाकर चलते देख रहे हैं। उधर स्कूल के लाउडस्पीकर से, आवाज़ बराबर सुनायी दे रही है "लेफ्ट राईट लेफ्ट, लेफ्ट राईट लेफ्ट.." मोहनजी हाथ हिलाते है, ऐसा लगता है "वे अपनी **चांडाल-चौकड़ी** की, सलामी ले रहे हैं।" उनकी गैंग हाथ हिलाकर पांव घसीटती हुई ऐसे चल रही है, मानो उनकी चांडाल-चौकड़ी अपने सरदार को सलामी देती हुई गुज़र रही है ? यह मंज़र भाऊ की कैंटीन के पास खड़े जस करणजी देख रहे हैं, वे अपने पास खड़े भाना रामसा को सुनाते हुए बोल रहे हैं]

जस करणजी – "लेफ्ट राईट लेफ्ट, लेफ्ट राईट लेफ्ट..!"

भाना रामसा – क्या बात है रे, जस करण ? अभी-तक अफ़ीम का नशा, उतरा नहीं क्या ?

जस करणजी – [मोहनजी और उनकी चांडाल-चौकड़ी की तरफ़, उंगली का इशारा करते हुए कहते हैं] – इधर देखिये, उस्ताद। इनको देखकर, आपका भी नशा हवा बनकर उड़ जाएगा।

[भाना रामसा, उधर क्या देखते हैं ? बस उन लोगों को, देखते ही वे ठहाके लगाकर ज़ोर से हंसते हैं। फिर किसी तरह, अपनी हंसी दबाकर वे कहते हैं]

भाना रामसा – [हंसी दबाकर कहते हैं] – वाहSS मोहनजी, वाह। गज़ब की सलामी ले रहे हैं, जनाब। [उनकी चांडाल-चौकड़ी को देखते हुए, कहते हैं] अरे अब चली, सलामी देती हुई **मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी**।

[थोड़ी देर बाद, इंजन सीटी देता है। गाड़ी प्लेटफोर्म छोड़कर आगे बढ़ जाती है, मंच पर अंधेरा छा जाता है।]

काळज़े की कोर [खण्ड १४]

लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

[मंच पर रौशनी फैलती है, पाली स्टेशन का मंज़र सामने आता है। प्लेटफोर्म की घड़ी दिन के ढाई बजने का वक़्त बता रही है। प्लेटफोर्म पर खड़े यात्री बैंगलूर चेन्नई एक्सप्रेस के आने का इंतज़ार कर रहे हैं। गर्मी बहुत अधिक बढ़ चुकी है, ऐसा लगता है..जैसे आसमान से, सूरज आग के गोले बरसा रहा है ? पसीने से तर-बतर यात्रियों के कपड़े ऐसे लग रहे हैं, मानो बरसात से उनके वस्त्र गीले हो गये हों ? ये यात्री, ठंडे पानी की मशीन के निकट चले आते हैं। पानी पीने के लिये नल चालू करते हैं, तब गरमा-गरम पानी बाहर आता है। ऐसा लगता है, मशीन अधिक काम लिए जाने से अब बाहर आ रहा पानी ठंडा नहीं हो रहा है। तभी एक लम्बा और मोटा आदमी आर.एम.एस. दफ़्तर वाले दरवाज़े से बाहर निकलकर प्लेटफोर्म पर आता है, जो सीधा आकर उस तख़्त [बेंच] पर अपना बैग सिर के नीचे रखकर लेट जाता है। इस तख़्त के पास ही, घेवरसा ने चाय का ठेला लगा रखा है, वे इस विशाल काया वाले आदमी को लेटे देखकर, चुप रहना ही अपनी समझदारी मानते हैं। असल में घेवरसा ठहरे, यात्रियों से टोचराई करने वाले खोड़ीले-खाम्पे। जो किसी भी यात्री को इस तख़्त पर बैठने या लेटने नहीं देते हैं, इस तख़्त पर बैठे या लेटे यात्री को वे डांटकर दूर हटा दिया करते हैं। मगर अब इस बलवान आदमी से झगड़ा करना, उनके हित में नहीं। इसलिये, वे चुप ही रहते हैं। घेवरसा के ठेले से कोई पांच क़दम दूर, पानी पीने का नल लगा है। वहां घेवरसा चाय की जूठी ग्लासें और प्याले ले जाकर, उन्हें धोना शुरू करते हैं। उस नल के कुछ नज़दीक, फर्श पर कुछ दारु पीये हुए मज़दूर बैठे ताश के पत्ते खेल रहे हैं। इनका यहां बैठकर, ताश के पत्ते खेलना घेवरसा को कतई पसंद नहीं। इन दारुखोरों के यहां बैठे रहने से, यहां चाय के ठेले के पास खड़े रहकर कोई मुसाफ़िर चाय पीना नहीं चाहता। इस कारण मुसाफ़िर अपने बैठने के स्थान पर, चाय मंगवाया करते हैं। इस तरह बार-बार स्थान-स्थान पर चाय पहुंचाते रहने से घेवरसा के पाँवों में दर्द होने लगा है। यही कारण है, ये दारुखोरे इन्हें फूटी आँख नहीं सुहाते। एक तो इनका धंधा चौपट हो जाना, और दूसरा जगह-जगह चाय पहुंचाना अब घेवरसा के लिये सरल रहा नहीं। चाय के जूठे बरतन धोते वक़्त, पानी के छींटे उन दारुखोरों के बदन पर गिर जाते हैं। दारुखोरे छींटे लगते ही, घेवरसा को खारी-खारी नज़रों से देखते हैं। उनका इस तरह खारी-खारी नज़रों से देखना, घेवरसा को काहे पसंद आता ? फिर क्या ? उस विशाल काया वाले आदमी पर आये क्रोध को, इन दरुखोरों पर उतारने के लिये, अब वे ठेले पर रखे हवलदार जीव राज़सा का डंडा उठाकर ले आते हैं। अब तो वे उस गंगा राम से उन दारुखोरों की पिटाई करते हुए, घेवरसा उन्हें मां-बहन की भद्दी-भद्दी गालियां बकते हैं। इस नल के पीछे, रेलवे का बिजली-घर है। उसके बाहर खड़े जीव राज़सा हवलदार, अपने गंगा राम को ढूंढ़ रहे हैं..जो इनको मिल नहीं रहा है। तभी उनकी निग़ाह में, दारुखोरों की पिटाई करते घेवरसा दिखायी दे जाते हैं। अब उन्हें याद आता है, वे चाय पीते वक़्त 'उस गंगा राम को, उस ठेले पर भूल आये थे।' अब इस डंडे को इस मक्खीचूष घेवरसा के हाथ में पाकर, क्रोध के मारे उनका रोम-रोम जल उठता है। अब उनके दिल में, घेवरसा के प्रति नाराज़गी बढ़ती जाती है। यह गंगा

राम ठहरा, उनकी वर्दी का एक हिस्सा। उसे किसी सिविलियन के हाथ में पाकर पुलिस वालों का गुस्सा बढ़ना स्वाभाविक है...जहां किसी पुलिस वाले की वर्दी पर कोई हाथ लगा दे, तो ये पुलिस वाले तिलमिला जाते हैं। और अब इस घेवरसा के हाथ में गंगा राम का पाया जाना, जीव राज़सा के लिए नाक़ाबिले बर्दाश्त है। उनको इस बात पर भी गुस्सा आने लगा, इन दारुखोरों को मचकाने का काम पुलिस वालों का है..फिर यह सिविलियन उनके काम और हक़ के क्षेत्र में, हस्तक्षेप कैसे करता जा रहा है ? फिर क्या ? गुस्से से भरे हुए जीव राज़सा झट जाकर, घेवरसा के हाथ से अपने **काळज़े की कोर** यानि 'गंगा राम' को छीनकर उन दारुखोरों की पिटाई ख़ुद करने लगते हैं। अब पिटाई ठहरी एक पुलिस वाले के हाथ की, जो एक सिविलियन से ज्यादा असरदार होती है। मार खाते ही सारे दारुखोरे, ताश के पत्ते वहीँ छोड़कर नौ दो ग्यारह हो जाते हैं। **इस तरह इस वाकया से ऐसा लगता है, जिस पर वश नहीं चलता..उससे दूरी बनायी रखनी, पड़ती है। उस पर आये क्रोध को किसी दूसरे कमज़ोर इंसान पर निकालना, एक मानव-स्वाभाव है।** विशाल काया वाले इंसान पर घेवरसा का वश चलता नहीं, इसलिये उन्होंने दारुखोरों पर अपना क्रोध निकाल दिया है। उनका क्रोध उस विशाल काया वाले आदमी पर आना वाज़िब है, क्योंकि वह उनके तख़्त पर लेट गया है। उसके लेट जाने से, वे तख़्त पर लेटकर आराम कर नहीं पाए..बेचारे गाड़ी नहीं आये उस वक़्त तक, इस तख़्त पर लेटकर आराम कर लेते। इसी प्रकार जीव राज़सा को घेवरसा की तैयार की गयी मसाले वाली चाय की तलब, उन्हें मज़बूर कर डालती है के 'वे घेवरसा से सम्बन्ध नहीं बिगाड़ें।' यही कारण है, वे घेवरसा को अनाप-शनाप नहीं बककर, अपना सारा क्रोध उन दारुखोरों पर उतार देते हैं। कहावत सही है, **"कुम्हार का जब कुम्हारन पर वश नहीं चलता, तब वह बेचारे गधे के कान खींच लेता है।"** दारुखोरों के चले जाने के बाद, अब दोनों एक-दूसरे की तारीफ़ करते हुए गुफ़्तगू का दौर शुरू करते हैं।]

घेवरसा – जीव राज़सा। क्या करें, जनाब ? **ये लातों के भूत बातों से नहीं मानते,** अब इन पर पड़े जूत्त..और भग गए, माता के दीने।

जीव राज़सा – [नज़दीक आकर, कहते हैं] – आपसे तो सभी डरते हैं, घेवरसा। आपके डर से, कोई इस तख़्त पर..

[इतना कहते ही उनकी निग़ाह उस तख़्त पर लेटे आदमी पर गिरती है, उसे देखकर डर के मारे उनकी ज़बान तालू पर आकर चिपक जाती है। अब वे, उस आदमी के नज़दीक जाते हैं। वहां खड़े होकर, हाथ जोड़ते हुए कहते हैं..]

जीव राज़सा – [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – पायालागू भा'सा। [ज़बान पर मिश्री घुले हुए शब्दों में ऐसे कहते हैं] जनाब आज़ देर से, कैसे पधारे..स्टेशन पर ?

[वह आदमी सामने देख़ता है, सामने जीव राज़सा को पाकर ज़ेब से रुमाल निकालकर ऐनक के कांच साफ़ करता है। इस तरह ध्यान न देने से, जीव राज़सा वापस दूसरी दफ़े पायलागन करके कहते हैं।]

जीव राज़सा – [प्रणाम करते हुए, कहते हैं] – सेणी भा’सा। मेरा पायलागन मालुम होवे। मालिक आपसे ही कर रहा हूं, अर्ज़। क्यों देख रहे हैं आप, इधर-उधर ?

[अब सेणी भा’सा आँखों पर ऐनक चढ़ाकर जीव राज़सा की तरफ़ देखते हैं, फिर रौबीली आवाज़ में कहते हैं]

सेणी भा’सा – [अंगड़ाई लेते हुए, रौबीली आवाज़ में कहते हैं] – अंऽऽहाऽऽ, हां भाई जीव राज़ मज़ा में है ? क्या हाल है, तेरे ?

जीव राज़सा – हुकूम, आपकी मेहरबानी से सभी राज़ी-खुशी। मगर भा’सा यह बताओ, के ‘आज़ आप लेट कैसे आये ?’

सेणी भा’सा – ख़ाली दिमाग़ क्यों खा रहा है, जीवराज़ ? चाय-वाय का इंतज़ाम कर पहले, फिर यहां रख हल्दी राम भुजिया का पैकेट।

जीव राज़सा – जी हां, और कोई हुक्म ?

सेणी भा’सा – [आंखें तरेरकर, कहते हैं] – तूने सुना नहीं, जीव राज़ ? क्या कहा, मैंने ?

जीव राज़सा – कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है, जनाब। [पास खड़े घेवरसा से कहते हैं] घेवरसा, भा’सा जो चीज़ कहे, चाय, भुजिया सभी लाइये इनके पास। इनकी कोई शिकायत नहीं आनी चाहिये। इनसे कहने कोई ज़रूरत नहीं, ओळी मेरे खाते में मांड दीजियेगा। [सेणी भा’सा से कहते हुए] अब ठीक है, भा’सा ?

सेणी भा’सा – हंऽऽऽ हां हां।

जीव राज़सा – [उतावली करते हुए, कहते हैं] – जल्दी लाइयेगा, घेवरसा। काहे देरी कर रहे हैं ?

[अब घेवरसा चाय से भरी ग्लास और भुजिया का पैकेट लाकर, सेणी भा’सा को थमाते हैं।]

घेवरसा – लीजिये मालिक, और कोई मेरे लिए हुक्म ?

सेणी भा’सा – [चाय और भुजिया का पैकेट लेते हुए, कहते हैं] – घेऽऽवर। करता जा सेवा ब्राह्मणों की, तू हमेशा पाता रहेगा मेवा।

घेवरसा – जो हुकूमसा। [होंठों में ही, कहते हैं] जी जनाब, आपकी सेवा का मेवा पा रहा हूं । मेरे पूरे तख़्त पर लेटकर, कब्ज़ा जमा दिया आपने ? अगर आप ना लेटते तो, मैं गाड़ी न आये तब-तक थोड़ा लेटकर आराम कर लेता ? आपके बाप का क्या जाता ? आ गये सरकारी जमाता, दफ़्तर छोड़कर ?

सेणी भा’सा – अरे घेवर, क्या बड़-बड़ा रहा है ? मन में क्या गालियाँ बकता जा रहा है रे, गधे ?

घेवरसा – [स्टोव बंद करते हुए, कहते हैं] – कुछ नहीं मालिक, बैठा-बैठा ‘राम-राम’ जप रहा हूं।

सेणी भा’सा – [चाय पीकर ग्लास रखते हैं, फिर कहते हैं] - यही काम आयेगा, हेवार। [भुजिया खाते हुए, आगे कहते हैं] राम राम जप ले, घेवर।..दो नाम, मेरी तरफ़ से भी जप लेना।

[सेणी भा’सा आख़िर है, कौन ? इनका असली नाम है, सम्पत राज़सा। मगर ये घर में बोले जाने वाले नाम से, विख्यात हो गए हैं। इनको असली नाम से कोई पहचानता नहीं, बस ये सेणी भा’सा के नाम से ही पहचाने जाते हैं। दफ़्तर में जाने के बाद हस्ताक्षर करने के अलावा, इनका कोई काम नहीं। जो भी काम होता है, वह फील्ड में होता है। फील्ड का काम निपटते ही सेणी भा’सा, झट आ जाते हैं स्टेशन पर। वहां गाड़ी आये या न आये, तब-तक प्लेटफोर्म पर इधर-उधर घुमना, स्टेशन मास्टर साहब और वहां बैठे टी.टी.ई. महानुभवों से बातें करते करना..इस तरह, जनाब का वक़्त आराम से कट जाता है। फिर भी कुछ वक़्त बच जाय, तब ये जनाब कैंटिन से डबल रोटी और नमकीन लेकर, खा लिया करते हैं। फिर वहीं खड़े रहकर, कैंटिन मैनेजर सिन्धी माणू [भाऊ] से गपें लगाते हुए चाय भी पी लिया करते हैं। इतने सारे काम निपटने के बाद भी अगर वक़्त मिल जाय, तो जाकर घेवरसा के सोने की ठौड़ उस तख़्त पर आकर लेट जाया करते हैं। वहां लेटे-लेटे, आती-जाती गाड़ियों को देखते रहते हैं। उन गाड़ियों से चढ़ने-उतरने वाले सारे टी.टी.ई. भा’सा के जान-पहचान वाले, वे इन्हें यहां देखकर इन्हें बतलाया बिना नहीं रहते। कोई इनसे पूछते, के ‘भा’सा कैसे हैं, आप ?’ कोई कहता ‘भा’सा, क्या हाल है आपके ?’ इस तरह सभी टी.टी.ई. इनके हाल-चाल पूछने के बाद ही गाड़ी में चढ़ते हैं। भा’सा इन टीटीयों से, बड़े प्रेम से ऐसे मिला करते हैं..मानो “वे सारे उतरने-चढ़ने वाले टी.टी.ई., इनके स्टाफ़ के ही बंधु हो।” भा’सा का व्यक्तित्व कुछ ऐसा है, अक़सर लोग इनको टी.टी.ई. समझने की ग़लती कर बैठते हैं। गाड़ी के शयनान डब्बे में चढ़े हुए सारे एम.एस.टी. वालों को, ये टी.टी.ई. लोग नीचे उतार दिया करते हैं। मगर भा’सा को देखते ही, वे इन्हें बड़े प्रेम से अपने पास बैठाकर गुफ़्तगू में मशगूल हो जाया

करते हैं। कई बार ये बूट पोलिस करने वाले छोरे इन्हें टी.टी.ई. समझकर इनके बूट मुफ़्त में चमका दिया करते हैं। ऐसा भी होता है, कई बार..यात्री अपना टिकट चैक करवाने के लिए, इनको टिकट थमा देते हैं। भा'सा की इतनी मान-मनुआर, आख़िर हैं क्यों ? एम.एस.टी. वालों के मध्य, बड़े राज़ की बात है। कोई कहता है, ये जनाब जोधपुर शहर की एम.एल.ए. सुर्य कांताजी के भाणजे हैं, तो कोई कहता है जनाब रेलवे के ड्यूटी कंट्रोलर राजेन्द्रजी पुरोहित के सालाजी है। मगर आज़-तक किसी ने, इस रहस्य से पर्दा नहीं उठाया है ? अभी तक, यह राज़ की बात ही है। क्या कहें ? इन टीटीयों को छोड़ो, गाड़ी में घुम-घुमकर सलाद बेचने वाले वेंडर और हर स्टेशन पर मौज़ूद जी.आर.पी. पुलिस वाले भी भा'सा को बहुत मान देते हैं। गाड़ी में सलाद बेचने वाले भा'सा को देखते ही, वे अपने लबों पर मुस्कान बिखेर देते हैं। और अख़बार पर सलाद रखकर, वे भा'सा को ज़बरदस्ती मुफ़्त में थमा देते हैं। यह ठाट-बाट, मनुआर और रौब, फिर भा'सा क्यों अपनी बदली जोधपुर करवाने का प्रयास करेंगे ? मगर भा'सा है, आख़िर दिलदार। हर ज़रूरतमंद की, मदद किया करते हैं। तशरीफ़ लाइए इधर, भा'सा किस तरह एक ग़रीब-मज़लूम की मदद करते हैं..देख लीजिएगा। और, सुन लीजिएगा..सामने रेलवे बिजलीघर से ज़ोर से भड़-भड़ की आवाज़ आती है। तभी उस दफ़्तर से एक टेक्नीश्यन बाहर आता है, बाहर आकर वहां बैठे यात्रियों से कहता है]

टेक्नीश्यन – [ज़ोर से, कहता है] – भाइयों। तेज़ वोल्टेज़ आने से, मशीन ख़राब हो गयी है। अब आप लोग, बैठे रहिये चार घंटो तक..अब पानी ठंडा होने वाला नहीं।

[एक फ़क़ीर जग में नल से पानी भरकर, सेणी भा'सा के पास आकर खड़ा हो जाता है। इस फ़क़ीर ने अपने बदन पर, लुंगी और फटा हुआ कुर्ता पहन रखा है। अब वह भा'सा के निकट खड़े होकर, कहता है]

फ़क़ीर – साहब, इतनी गर्मी..? हाय अल्लाह, ख़ुदा रहम। ओ मेहरबान, या तो मशीन चालू करवा दीजिये..या फिर ख़ुदा के लिए, कहीं से बर्फ मंगवा दीजिये।

[फ़क़ीर को प्यासा मरता देखकर, भा'सा का दिल दया से भर जाता है। वे उसको अपने नज़दीक बुलाकर उसे कहते हैं]

सेणी भा'सा – नीचे बैठ जा, फ़क़ीर बाबा। अभी तेरे लिए, बर्फ मंगवाता हूं ।

[फ़क़ीर उनके पास आकर, ज़मीन पर बैठ जाता है। तभी भा'सा को बिजलीघर के बाहर खड़ा, आर.एम.एस. दफ़्तर का मुलाजिम अरुण दिखायी दे जाता है। उसे देखते ही भा'सा, झट उसे ज़ोर से आवाज़ देते हैं]

सेणी भा'सा – [ज़ोर से आवाज़ देते हुए, कहते हैं] – ए रे, अरुणीया। इधर आ रे, माता के दीने।

[उस वक़्त अरुण अपनी हथेली पर सुर्ती रखकर, उस पर ज़ोर की थप्पी लगा रहा था। भा'सा की तेज़ आवाज़, अरुण को शेर के दहाड़ने के समान लगती है। बेचारा भय से आक्रंत होकर दहल जाता है। हथेली पर रखी सुर्ती होठ के नीचे जानी चाहिए, मगर चली जाती है उसके नाक के अन्दर। फिर क्या ? छींको की झड़ी लग जाती है। छींकता हुआ आता है, भा'सा के निकट। रुमाल से नाक साफ़ करता हुआ, भा'सा से कहता है]

अरुण – [रुमाल से नाक साफ़ करता हुआ, कहता है] – फ़रमाइये भा'सा। हुक्म कीजिये, भा"सा। मेरे लिए, कोई काम हो तो..?

सेणी भा'सा – क्या हुकम है ? क्या हुकम है ? कहता कहता आ गया, डोफा ? यह क्या दशा बना रखी है तूने, अपनी ? बहू रोटियां बनाकर खिलाती नहीं क्या, तूझे ? ऐसा दुबला हो गया, तू ?

अरुण – भा'सा, आख़िर करें क्या ? भागवान यानि आपकी बहू की बदली सांडेराव स्कूल में हो गयी है, इसीलिए तड़के उठकर बस पकड़नी पड़ती है उनको। इसीलिए कभी खाना वे बनाती है, तो कभी मैं। इस तरह तक़लीफ़ देखते हुए, वक़्त काट रहे हैं।

से'णी भा'सा – अरे डोफा, अभी इस वक़्त जीजी एम.एल.ए. है..ठोकिरा, उनकी सिफारिश लगवाकर बीनणी की बदली पाली क्यों नहीं करवा देता ?

अरुण – अरे हुज़ूर, एम.एल.ए. को लेकर, चाटूं क्या ? भागवान की स्कूल जिला-परिषद के अधीन है, अब इस महकमें से अनापत्ति प्रमाण-पत्र लाये बिना शहर की स्कूल में तबादला होता नहीं, और अब यह अनापत्ति प्रमाण-पत्र लाना आसान काम नहीं रहा।

फ़क़ीर – [उतावली करता हुआ, कहता है] – अरे साहब, जल्द मंगवावो ना बर्फ। कितनी गर्मी है, अल्लाह आपको सलामत रखे।

सेणी भा'सा – [फ़क़ीर से कहते हैं] – मंगवाता हूं, तुम बैठो बाबा। अभी आता है, बर्फ। [अरुण से कहते हैं] अरुणीया, यह ले पांच रुपये। [पांच रुपये देते हैं] साइकल पर बैठकर, जा मिल-गेट। और लेकर आ, बर्फ।

अरुण – [पांच रुपये लेकर, कहता है] – यह गया, भा'सा। अभी आया वापस, खोटे सिक्के की तरह।

[अरुण जाता हुआ दिखायी देता है, और सामने से दीनजी भा'सा आते हुए दिखायी देते हैं। दीनजी भा'सा नज़दीक आते हैं।]

दीनजी – [नज़दीक आकर, कहते हैं] – भा'सा जय श्री कृष्ण, आज़ आप देरी से कैसे आये ? आपके आये बिना, यह रेलवे स्टेशन सूना पड़ा है। आपके आने पर, यहां कुछ चहलपहल दिखाई देती है।

[बोलती-बोलते वे हाम्फ जाते हैं, लम्बी-लम्बी सांसे लेते हुए आकर तख़्त पर बैठ जाते हैं...सेणी भा'सा के, पहलू में]

सेणी भा'सा – देरी से आये, देरी से आये कहने की की रट लगा दी आपने ? आप कहां जल्दी आकर बैठ गए, यहां ? ऐसा कहकर, दीनजी भा'सा क्यों इस ग़रीब पर ज़ुल्म ढाह रहे हैं ?

दीनजी – जनाब, पानी के महकमें वालों की आदत है..जल्दी आने की। मगर हमारा महकमा ठहरा एज्युकेशन। यानि 'ए' 'ज्यू' 'कै' 'शन'। बोलिये, इसका मफ़हूम क्या है ? मफ़हूम है "हमारे अफ़सर जैसा कहे, वैसा ही कीजिये।" सुनिए हमारे अफ़सर कहे अभी जल्दी है, काम निपटाइए। यह लीजिये, बैठ गए काम करने।

सेणी भा'सा – सच कहा, आपने। आपके महकमें की बात है, न्यारी। आख़िर ठहरा, बुद्धिजीवियों का महकमा।

[इन लोगों की गुफ़्तगू बढ़ती देखकर, प्यासा मरता फ़क़ीर हो जाता है, परेशान। इनकी झकाल, ख़त्म होने का नाम ही नहीं ? ऊपर से सेणी भा'सा ने, इस बेचारे फ़क़ीर को अलग से बैठा दिया यहां ? इधर दूर-दूर तक, अरुण कहीं नज़र नहीं आ रहा है ? अब बार-बार इस फ़क़ीर का उतावली करते हुए, इसका उचकना वास्तव में वाज़िब है।]

फ़क़ीर – अरे साहब, हज़ूरे आलिया। तिरसा मर रिया हूं मैं, अब अल्लाह कसम आपकी यह गुफ़्तगू कब ख़त्म होगी ?

[वह बेचारा फ़क़ीर उठना चाहता है, मगर सेणी भा'सा उसका कंधा पकड़कर उसे वापस बैठा देते हैं। फिर, उसे डपटते हुए कहते हैं]

सेणी भा'सा – [डपटते हुए, कहते हैं] – सीधा-सीधा बैठ जा, फ़क़ीर बाबा। कह दिया तूझे एक बार, बर्फ आ रहा है, फिर..

[आगे सेणी भा'सा क्या कहते ? उनको सामने से अरुण आता हुआ दिखायी देता है, उसे देखते ही वे ज़ोर से चिल्लाकर कहते हैं]

सेणी भा'सा – [ज़ोर से, उसे आवाज़ देते हुए कहते हैं] – डोफा। ऐसे क्या चल रहा है, डोलर हिंडे की तरह ? फ्रीज़ में जमाकर लाया है..[भद्दी गाली बोलते हुए कहते हैं] तेरी मां का..

अरुण – [समीप आकर, नाराज़गी से कहता है] – यह लीजिये भा'सा, आपका बर्फ। अब डालो इस बर्फ को, इस फ़क़ीर की...[गाली बोलता है] में। फकीरों के लिए, क्यों हमें गालियां देते जा रहे हैं भा'सा ? [होंठों में कहता है] यह फ़किरिया नालायक माता का दीना, आ गया कहां से ? नालायक के कारण, ऐसे लोगों की गालियां सुननी पड़ती है।

[अरुण सेणी भा'सा को बर्फ थमा देता है, फिर भा'सा उस फ़क़ीर के जग में बर्फ डाल देते हैं। बर्फ लेकर वह फ़क़ीर उठता है, मगर जैसे ही वह फ़क़ीर उठता है..उसकी लुंगी उसके पाँव के अंगूठे में, अलूज जाती है। बेचारा फ़कीर आज़ गलती से, लुंगी की गांठ लगाना भूल गया। अब उतावली में वह फ़क़ीर अपना पाँव आगे बढ़ा देता है, जो आगे लेटे काबरिये कुत्ते के ऊपर रख देता है। पाँव के नीचे कुचले जाने पर, वह कुत्ता दर्द के मारे किलियाता है। फिर झट उठकर वह, फ़क़ीर की पिंडली को काट जाता है। फिर क्या ? दर्द के मारे, वह फ़क़ीर ज़ोर से चिल्लाता है। **इधर गांठ नहीं दी जाने से, लुंगी खुलती नज़र आती है। फिर क्या ? या तो जग नीचे गिराकर नंगे होने से बचे, या फिर वह जग में रखे बर्फ़ को बचाए ? बस उसके सामने, एक ही विकल्प बचता है। अपनी इज्ज़त को सलामत रखना ही, उसे वाज़िब लगता है। झट वह जग को कुत्ते के ऊपर गिराकर, दोनों हाथ से लुंगी थाम लेता है। इस तरह, वह नग्न होने से बच जाता है।** अब बर्फ का सत्यानाश होते देखकर, भा'सा हो जाते हैं नाराज़। और लाल-पीले होकर, उस फ़क़ीर का गला पकड़ लेते हैं। फिर देते हैं, उसे...भद्दी-भद्दी गालियां।]

सेणी भा'सा – [फ़क़ीर की गरदन पकड़कर, कहते हैं] – ए फ़क़ीरड़े ज़ेब के पैसे ख़र्च करके बर्फ मंगवाया था, और तू मां का...[गाली की पर्ची निकालते हैं] मुफ़्त का माल समझकर बर्फ को नीचे गिरा दिया, हरामखोर।

फ़क़ीर – [गला छुड़ाता हुआ, कहता है] – अरे साहब, छोडो मुझे। आप मुझे, गाली क्यों देते हैं ? मेरी क्या ग़लती ? जग नहीं गिराता, तो सबके सामने नंगा हो जाता क्या ?

सेणी भा'सा – [गला छोड़कर, कहते हैं] – साला मंगता फ़क़ीर, तूझे किसकी लाज़ ? तू तो साला, पहले से फ़क़ीर ठहरा ? तूझे कपड़ो से, क्या लेना-देना..? हो जाता, नंगा ?

[आस-पास खड़े यात्री सेणी भा'सा की बात सुनकर, ज़ोर का ठहाका लगाकर हंसते हैं।]

फ़क़ीर – हुज़ूर हम फ़क़ीर बाबा ज़रूर हैं, इसीलिये हमें क्या करना है कपड़ो का ? अल्लाह ने आसमान की चादर व ज़मीन का बिछोना दिया है..वह ही कपड़ा, हमारे लिए पर्याप्त है। जनाब, हमारे लिए इन सांसारिक कपड़ो में रहना और बिना कपड़ो में रहना दोनों बराबर है। आप जैसे इंसानों के लिए होती है शर्म, बस इसी को बचाने के लिए गिरा दिया बर्फ़।

इतना कहकर, फ़क़ीर ख़ाली जग उठाता है और लुंगी को थामे वहां से चला जाता है।

[सन्नाटा छा जाता है, आख़िर इस सन्नाटे को तोड़ते हुए घेवरसा कहते हैं]

घेवरसा – हम लोगों की इज़्ज़त कायम रखने के लिए, बेचारा फ़क़ीर प्यासा रह गया। वाह रे, फ़क़ीर बाबा। तू तो कमाल का निकला रे..सभ्य-समाज की लाज़-शर्म बचाने के लिए, तेरी यह क़ुरबानी व्यर्थ नहीं जायेगी।

[दयाल साहब दौड़ते-भागते आते दिखायी देते हैं, उनकी नज़र सर्वोदय नगर वाली फाटक पर गिरती है..जिसे गेट-मेन बंद कर रहा है। इधर बहुत दूर से, गाड़ी सीटी देती हुई दिखाई देती है। सीटी की आवाज़ सुनकर, अब दयाल साहब के दिल की क्या हालत हुई होगी ? या तो वे ख़ुद जाने, या उनका लाल सांई जाने। बेचारे प्लेटफोर्म दो की चारदीवारी फांदकर प्लेटफोर्म दो पर आते हैं। अब पटरियां पार करने की उनकी मंशा जानकर, प्लेटफार्म नंबर एक पर..तख़्त पर बैठे दीनजी भा'सा दयाल साहब को, आवाज़ देते हुए ज़ोर से कहते हैं]

दीनजी भा'सा – [ज़ोर से आवाज़ देते हुए, कहते हैं] – दयाल साहब। प्लेटफोर्म के नीचे कूदना मत, आपको पटरियां पार नहीं करनी है। यह अपनी, जोधपुर जाने वाली गाड़ी नहीं है। यह तो जनाब, मालगाड़ी है।

दयाल साहब – [लम्बी साँसे लेते हुए, कहते हैं] – आ हाऽऽ हाऽऽ ..लाल सांई झूले लाल आज़ बचा दिया मुझे, पापड़ तोड़कर। न तो अभी मैं, इस माल गाड़ी के नीचे आ जाता ?

[तभी तेज़ी से, मालगाड़ी गुज़रती दिखायी देती है। अब मालगाड़ी के गुज़रने के बाद, जोधपुर जाने वाली गाड़ी के आने की संभावना बढ़ जाती है। अत: दयाल साहब प्लेटफोर्म एक पर जाने के लिए, पुलिए की ओर क़दम बढ़ाते हैं..तभी उनके रास्ते को काट जाती है, एक काली बिल्ली। वह म्याऊं म्याऊं की आवाज़ निकालती हुई, उनके आगे से गुज़र जाती है। दयाल साहब विज्ञान के जानकार होने के बावजूद ठहरे, दकियानूसी..! बिल्ली क्या गुज़री, उनके आगे से ? जनाब का दिल बैठ जाता है, के 'शगुन अच्छे न रहे, अब सही वक़्त गाड़ी मिलने से रही।' यह ख़याल दिमाग़ में आते ही, वे ऊंची सांस लेते हैं। फिर ज़ोर से, दीनजी भा'सा से कहते हैं]

दयाल साहब – [ज़ोर से, दीनजी से कहते हैं] - ख़ुश हो गए भा'सा, बिल्ली को भेजकर ? मेरे शगुन अच्छे न रहे, अब गाड़ी सही वक़्त नहीं आयी तो इसके दोषी आप ख़ुद होंगे। यह सब, आपके कारण हो रहा है।

दीनजी – साहब मेरे कारण नहीं, जनाब आपका प्यार पाकर यह बिल्ली स्वत: आपके पास आयी होगी ? मेरे भेजने से, शेर भी नहीं आता आपके पास। यह हो सकता है, कहीं उसे आपके वस्त्रों में चूहे की गंध आ रही हो ? शायद कहीं आपने बगीचे की टंकी से, सांप पकड़ने के लिए रशीद भाई से चूहे मंगवाकर उस टंकी में डाले हो ?

दयाल साहब – ऐसा है, आपके पास भी आ जायेगी बिल्ली..आपका प्रेम पाकर। फिर आप भी पाल लीजिये, बिल्ली। इतना शौक है तो..

दीनजी – ऐसा है, जनाब। बिल्ली को छोड़िये, मैं एक जबरे बिलाव को पाल चुका हूं ।

सेणी भा'सा – [आश्चर्य करते हुए, कहते हैं] – जबरा बिलाव..? क्या कहा, भा'सा..जबरा बिलाव ?

दीनजी – इसमें आश्चर्य की क्या बात है, भा'सा ? **जनाब आप इस बिलाव को छोड़िये, आप हुज़ूरे आलिया शेर, चीता, भालू, हाथी कुछ भी पाल सकते हैं। मगर आपके दिल में होना चाहिए, इन जानवरों के लिए थोड़ा सा प्यार।**

सेणी भा'सा – हुज़ूर, मुझे तो आप बख्सिये। आप अपने पाले हुए बिलाव की गाथा ज़रूर सुना दीजिये, मुझे।

दीनजी - जिस बिलाव को मैंने पाला था, उसकी गाथा दर्द भरी है। जो इंसान के झूठे आडम्बर, स्वार्थ और बनावटी रूप का उज़ागर करती है।

सेणी भा’सा – विस्तार से सुनाइये, जनाब। बिलाव आया कहां से, और उसके साथ कौन-कौनसी घटनाएं घटी ? जो मानव और जानवर के स्वाभाव को, उज़ागर करती है।

दीनजी – यह जिक्र उन दिनों का है, जब मैं पाली के सरकारी क्वाटर में रहता था। उस दौरान क्वाटर के चारों ओर, मैंने शानदार बगीचा तैयार किया। भा’सा, आपको क्या कहूं ? क्या बढ़िया सुगंध छोड़ती पुष्प की लताएं व पौधे, लगाये इस बगीचे में..अरे जनाब मालती, हरसिंगार, मधु-मालती, गुलाब, पर्दा बेल वगैरा पादपों को जब आप देखेंगे..तब आप अपने मुंह से कह देंगे, वाह वाह..

सेणी भा’सा – भा’सा, मुझे बगीचे की सुगंध नहीं चाहिए। मुझे आप, बिलाव की गाथा सुनाइये।

दीनजी – गाथा कह रहा हूं, भा’सा। उतावली क्यों करते हैं, जनाब ? सुनिए, बगीचे में २५ छायादार वृक्ष तैयार किये। उनकी डालियों पर परिंदों के निवास के लिए, घोंसले व परींडे लटकाये। अरे जनाब, इन घोंसलों में रायकाणी, गोरैया, सोहन चिड़िया वगैरा नस्ल की चिड़ियाएं आकर बसेरा करने लगी।

सेणी भा’सा – [सर पर हाथ रखते हुए, कहते हैं] – कुछ और…?

दीनजी - इस बगीचे में सीमेंट के चबूतरे बने थे, उन पर प्रात: ज्वार-बाजरी के दानें बिखेर देता था। वहां चिड़िया, कबूतर, तोते आदि पक्षी झुण्ड के झुण्ड आकर दाना चुग लिया करते। लोबी का दरवाजा बगीचे में खुलता था, उसको खोलते ही ये सारे परिंदे उड़कर ऐसे सामने आते..मानो वे स्वागत के लिए, वहां पहले से मौज़ूद हो।

सेणी भा’सा – अभी-तक बिलाव का जिक्र नहीं आया है, जनाब। बिलाव के बारे में, कुछ कहिये ना।

दीनजी – धीरज रखिये, भा’सा। सुनिए, रोज़ रात के ८ बजे एक बिलाव आता था बगीचे में। वह लोबी के दरवाज़े के पास आकर, म्याऊं म्याऊं की आवाज़ निकालता हुआ दरवाज़ा खटखटाता था। उसकी आवाज़ सुनते ही, मैं दरवाज़ा खोलकर..कटोरी भरा दूध, उसके सामने रख देता। वह दूध पीकर, रवाना हो जाता।

सेणी भा’सा – इस गाथा में कहां है, जानवरों का प्रेम ? मुझे तो जनाब, कही दिखायी नहीं दिया ?

दीनजी – सुनिए। दूध पीकर वह बिलाव हर कमरे में चक्कर काटता, और बाद में मेरे पांवो में प्रेम से लोटता हुआ अपनत्व दर्शाता। मैं उसके बदन को, हाथ से सहलाता। इस तरह रोज़...

सेणी भा'सा – मगर, आगे क्या ?

दीनजी भा'सा – पड़ोस के क्वाटर नंबर एक में, जंगबहादुर सिंहजी का परिवार रहता था। ये जनाब, सेशन कोर्ट में नाज़ीर के पद पर कार्य करते थे। इनके तीन पुत्रियां थी। क्वाटर नंबर ६ में मुंसिफ़ कोर्ट के सरकारी वकील [ए.पी.ओ.] माथुर साहब का परिवार रहता था, इनके दो पुत्रियां थी..जिनके नाम, विनिता और सुनीता रखे गए।

सेणी भा'सा – बाकी का भी बखान कर दीजिये, जनाब।

दीनजी – लीजिये, अभी करता हूं..आप सुन लीजिये, शौक से। और क्वाटर नंबर दो में आयुर्वेदिक विभाग के दफ़्तरे निगार तुलसी दासजी का परिवार रहता था, उनके एक छोटा सा बेटा व एक एक बेटी थी। बेटे का नाम था, छोटा पप्पू। वह बहुत शैतान था।

सेणी भा'सा – मगर, आगे क्या ?

दीनजी भा'सा – जंगबहादुर सिंहजी के क्वाटर की खिड़की के पास, एक पाइप लगा था। छत पर रखी पानी की टंकियों से, पानी ओवरफ्लो होकर इसी पाइप से बाहर आता। इस पानी को काम में लेने के लिए, मैंने वहां पुष्पों का शानदार बगीचा तैयार किया। उस बगीचे में गुलदाउदी, मेरी गोल्ड, चमेली मोगरा आदि पुष्पों के पौधे तैयार किये।

सेणी भा'सा – आगे कहिये, भा'सा।

दीनजी - सुबह-सुबह वह बिलाव, पानी देते वक़्त मेरे पास आकर खड़ा हो जाता। मैं इधर इस बगीचे के पौधो को पानी दे रहा होता, और उधर माथुर साहब वहां आ जाते पीपल को सींचने के लिए। पानी सींचकर, वे मेरे पास आकर बगीचे के पुष्प मुझसे मांगकर लेते......

सेणी भा'सा – मुफ़्त के पुष्प लेते ? बाज़ार से खरीदते क्यों नहीं, जनाब ?

दीनजी – जहां मुफ़्त के पुष्प मिलते हैं, वहां बाज़ार जाकर कौन ख़रीदेगा..पुष्प ? सुनिए, एक रोज़ वकील साहब के आते ही मैंने इस बिलाव को जाने का इशारा किया। इशारा पाते ही वह बिलाव झट वहां से रुख्सत हो गया। फिर जाकर वह, लोबी के दरवाज़े के पास खड़ा हो गया। इस मंज़र

को देख रहे माथुर साहब, आश्चर्य से कहने लगे "भा'सा, यह कैसे हो गया ? क्या आप, जानवरों को वशीकरण करना जानते हैं ?

सेणी भा'सा – सच कह रहे हो, भा'सा ?

दीनजी – सत्य है। मैंने माथुर साहब से कहा **'वशीकरण नहीं जनाब, प्रेम से ये जानवर स्वत: आकर्षित होकर आपके पास भी आ सकते हैं। इसमें, कोई आश्चर्य की बात नहीं।** बस शर्त यही है...

सेणी भा'सा – फिर क्या ? आगे कहिये, जनाब।

दीनाजी – फिर मैंने आगे कहा कि, '**आपको इन बेज़ुबान जानवरों से रखना होगा, प्रेम..। आपके प्रेम रुपी बंधन से आकर्षित होकर आपके पास भी आ सकते हैं वकील साहब, बस आपको अपना दिल साफ़ रखना होगा।'**

सेणी भा'सा – बात आपकी सौ फीसदी सही है, इस मामले में वशीकरण की कोई ज़रूरत नहीं। देखिये आप रोज़ गाय-कुत्तों को रोटी देते हैं, वे सही वक़्त आपके दरवाज़े पर आकर खड़े हो जाया करते हैं।

दीनाजी भा'सा – यह बात समझदार आदमी ही समझ सकता है, मगर स्वार्थ, लोभ माया में फंसे लोग कभी इस प्रेम को समझ नहीं पाते। उनके लिए, पैसा ही सब-कुछ होता है। माथुर साहब भी इसी तरह के आदमी ठहरे, शो-बिज़नस वाले..जिनको प्रेम-भावना की कोई कद्र नहीं।

सेणी भा'सा – प्रेम ही इस ख़िलकत का अनुपम रत्न है, जिसे इसकी पहचान है..वही सच्चा जौहरी है।

दीनजी – आगे सुनिए, तब माथुर साहब बोले 'मुझे भी बिलाव से प्रेम है। मैं भी बिलाव को दूध पिलाऊंगा।' फिर वे धीमे से बोले 'फिर मकान में चूहे नहीं रहेंगे।' इस तरह सेणी भा'सा, माथुर साहब का स्वार्थ स्वत: सामने आ गया। [पुल की तरफ़ देखते हुए] लीजिये सेणी भा'सा, दयाल साहब सीढ़ियां उतरकर आ रहे हैं। अब बिलाव की बातें, बाद में करेंगे।

[दयाल साहब, पुलिया उतरकर आते हैं। प्लेटफोर्म पर लगी घड़ी, शाम के साढ़े चार बजने का वक़्त बता रही है। आज़ गाड़ी लेट है। यात्रियों की भीड़, प्लेटफोर्म पर बढ़ चुकी है। इतने में उदघोषक, रेडिओ पर घोषणा करता है]

उदघोषक – [घोषणा करता हुआ कहता है] – बैंगलूर-चेन्नई एक्सप्रेस, शीघ्र ही प्लेटफार्म नंबर दो पर आ रही है। जोधपुर जाने वाले यात्री गण उतरीय पुल का इस्तेमाल करके, प्लेटफोर्म नंबर दो पर चले जायें। कोई भी यात्री पटरियां पार नहीं करें, पटरी पार करना कानूनी अपराध है।

दयाल साहब – [नाराज़गी के साथ कहते हैं] – ओ भा'सा। अब देख लो, गाड़ी प्लेटफोर्म नंबर दो पर आ रही है, अब मुझे वापस इन पांवो को तक़लीफ़ देनी होगी। यह सब आपके कारण हुआ, यदि आप बिल्ली को मेरे सामने नहीं भेजते, तो शायद ऐसा नहीं होता। [अंगड़ाई लेते हुए, कहते हैं] अरे लाल सांई झूले लाल, क्या करूं ? अब वापस, उतरीय पुल चढ़ना होगा।

[बैग उठाये दयाल साहब, पुल चढ़ने के लिए क़दम आगे बढाते हैं। उनके जाते ही, आर.एम.एस. दफ़्तर वाले गेट से रतनजी, ओमजी और रशीद भाई बाहर निकलकर इधर इस तख़्त के पास आते दिखायी देते हैं। अब सेणी भा'सा, दीनजी से कहते हैं]

सेणी भा'सा – आगे क्या हुआ, जनाब ? क्या माथुर साहब ने, उस बिलाव को दूध पिलाया या नहीं ?

दीनजी – देखिये जनाब, गाड़ी आ रही है। और आप जानते ही हैं, भारी शरीर होने के कारण मैं दौड़कर गाड़ी पकड़ नहीं सकता। इस कारण अब अगली गाथा गाड़ी के अन्दर ही बांचेंगे। आप आगे चलिए, मैं पीछे आ रहा हूं ।

रतनजी – [नज़दीक आकर कहते हैं] – भा'सा, आप यहां बैठे हैं ? जनाब प्लेटफोर्म पर ठौड़-ठौड़ जाकर, आपको ढूढ़ने की भरसक कोशिश की है..मगर अब यहां आने पर, आपके दीदार हुए। क्या कहूं, आपसे ? ढूंढ़ते-ढूंढ़ते, इन आखों में दर्द होने लगा। अब संभालो, अपने सेवाभावी रशीद भाई को।

सेणी भा'सा – भा'सा मैं जा रहा हूं पटरियां पार करके, प्लेटफोर्म नंबर दो पर। अब आप संभाल लेना, अपने सेवाभावी रशीद भाई को। और इनको बैठाकर, तसल्ली से खैरियत पूछ लीजिये। लीजिये, मैं तो यह गया..प्लेटफोर्म नंबर दो पर।

[सेणी भा'सा जाते हुए दिखायी देते हैं, और रशीद भाई मुंह चढ़ाकर बैठ जाते हैं दीनजी भा'सा के पास। अब रशीद भाई तुनककर, कहते हैं]

रशीद भाई – [तुनककर कहते हैं] – मैं कोई, संभालने की चीज़ हूं ? ख़ुदा ने इनायत किये है, ये दो हाथ और दो पांव। ज़रूरतमंदों की मदद करने से, ये मेरे हाथ-पांव घिस नहीं जाते ? आपको ज़रूरत हो सेवा की, तो कह दीजिये मुझे। जैसी मेरी क़ाबिलियत होगी, मैं आपकी मदद कर लूंगा।

रतनजी – [रशीद भाई से, कहते हैं] - मुझे नहीं करवानी आपसे सेवा, जैसे आप मोहनजी को पानी पिला-पिलाकर उन्हें बनाते जा रहे हैं अकर्मण्य। वैसा, मुझे नहीं बनना। अब बेचारे..

रशीद भाई – काहे शर्म करते हैं, कह दीजिये..मोहनजी को, कैसा बना डाला ? मन में मत रखो, भड़ास...

रतनजी – अब पाली स्टेशन आते ही, मोहनजी प्लेटफोर्म पर निगाहें फेंकते हुए रशीद भाई को आवाज़ देते हैं [मोहनजी की आवाज़ की नक़ल उतारते हुए, उनकी आवाज़ में बोलते हैं] 'ए रे रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा। पानी की बोतल तो भरता जा...!' मगर, रशीद भाई क्यों सुनेंगे ? उनको तो [दीनजी भा'सा की तरफ़ देखते हैं]..

दीनजी भा'सा – आगे कहिये, जनाब। मेरा मुंह काहे ताक रहे हैं, आप ? कहीं आप अगला जुमला बोलना, भूल गए क्या ?

रतनजी – उनको तो जाना है दफ्तर, भा'सा आपके स्कूटर पर बैठकर।

दीनजी – फिर, आगे क्या ? चलिए, रशीद भाई नहीं आते हैं..तब जनाबे आली मोहनजी, क्या करते हैं ?

रतनजी – करे क्या ? करे गोबर, और क्या ? फिर बेचारे, प्लेटफोर्म पर खड़े दूसरे यात्रियों को आवाज़ देते हैं [नक़ल उतारते हुए, कहते हैं] 'ओ बाबू साहब, ज़रा पानी की बोतल भरकर देना जी।'

दीनजी – जब रशीद भाई उनके लिए बोतल भरकर नहीं लाते, तब दूसरे अज़नबी यात्री पानी की बोतल भरकर क्यों लायेंगे ? क्या वे इनके मासी के बेटे भाई हैं, जो प्रेम से..?

रतनजी – आख़िर, मोहनजी ख़ुद बोतल लेकर उतरते हैं प्लेटफोर्म पर। फिर शीतल जल के नल के पास जाकर, जैसे ही पानी भरकर खड़े होते हैं, और तभी गाड़ी प्लेटफोर्म छोड़ देती है..फिर, बेचारे मोहनजी की क्या हालत होती होगी ? रामसा पीर जाने।

दीनजी – हां रतनजी, रशीद भाई तो होनहार सेवाभावी है। मगर..

रशीद भाई – [गुस्से में कहते हैं] – रतनजी, काहे मेरी मज़ाक उड़ा रहे हैं आप ? अब मैं इस सेवाभावी टाइटल को देता हूं, लाप्पा। सेवा करते-करते, मैंने तक़लीफ़ें ही पायी है। अब तो भय्या, कहीं सेवा मुक्ति केंद्र खुल जाय तो मैं वहां बची हुई ज़िंदगी बसर कर लूंगा।

दीनजी – ऐसी कौनसी देण हो गयी आपके, जो आप ऐसे बोल रहे हैं ?

रशीद भाई – आदत से लाचार..मेरा जीव, बस...अब मानता नहीं। बहुत कर ली सेवा, अब करूं क्या..दीनजी ? अब, मुझसे सेवा होती नहीं।

दीनजी – आदत से लाचार ? आप ऐसे क्यों हो रहे हैं, दुखी ?

रशीद भाई – मेरा दिल-ए-दर्द मुझे मालुम है..[टोपी हटाकर सर पर लगी चोटें, दिखलाते हैं] ये देखिये मेरे सर को, कहाँ-कहाँ लगी है चोटें...? यह सिर इन शैतान कौओं की चोंचो का प्रहार झेल चुका है..उसी को पीड़ा का अहसास होता है, जिसने ये प्रहार झेले हों।

ओमजी – देखिये जनाब जिसके सर पर कौआ चोंच मारता है, वह आदमी भाग्यशाली होता है।

रशीद भाई – [गुस्से में] – ऐसे ख़ुशअख्तर आप भी बन जाइए, कौए की..

दीनजी – यार रशीद भाई, क्यों करते जा रहे हैं..आप, इनसे इतनी झकाल ? इनसे झकाल करने के पहले बिदामें खाई हुई होनी चाहिए ? [बैग से सोफरामाइसन ट्यूब निकालकर, उन्हें देते हैं] यह लीजिये, ट्यूब। अपनी चोटों पर, मसल दीजिये।

[रशीद भाई उनसे ट्यूब लेकर, सर की चोटों पर मसलते हुए कहते है]

रशीद भाई – देखिये, उदघोषक बोल गया है 'गाड़ी प्लेटफोर्म नंबर दो पर आ रही है। अब गाड़ी आने में ज़्यादा देर नहीं है। अब चलिए, प्लेटफोर्म नंबर दो पर।

[सभी अपने बैग उठाकर उतरीय पुल चढ़ते हैं, और प्लेटफोर्म नंबर दो पर आते हैं। इस प्लेटफोर्म पर, कई ग्रेनेनाईट के तख़्त लगे हैं। एक तख़्त पर, सेणी भा'सा और दयाल साहब बैठे हैं। गाड़ी शीघ्र आने की सूचना पाकर, कई यात्री प्लेटफोर्म पर चहलक़दमी का रहे हैं। अब सभी, दयाल साहब के पास आते हैं।]

रशीद भाई – [नज़दीक आकर, हाथ जोड़ते है] – साहब, नमस्कार।

दयाल साहब – नमस्कार भाई, नमस्कार। बैठिये जनाब, आ ही गए तो।

[सेणी भा'सा और दयाल साहब थोड़ा एक तरफ़ खिसक जाते हैं, ख़ाली जगह पर सभी बैठ जाते हैं। अब बैठने के बाद, दीनजी भा'सा रशीद भाई से कहते हैं]

दीनजी – अब अच्छी तरह से बैठ गए रशीद भाई, अब कहिये क्या हुआ ?

सेणी भा'सा – नहीं जनाब, पहले दीनजी भा'सा किस्सा कहेंगे के 'आगे उस बिलाव का, क्या हुआ ?'

[बिलाव का नाम सुनते ही दयाल साहब को, उनका रास्ता काटने वाली बिल्ली याद आ जाती है। अब वे दीनजी भा'सा की तरफ़ खारी-खारी नज़र से उन्हें देखते हुए, कहते हैं]

दयाल साहब – [दीनजी को देखते हुए, कहते हैं] – क्या कहना, बिल्ली का ? आयी और चली गयी। भा'सा ने भेजी थी, मेरे शगुन ख़राब करने के लिए। देख लो, अभी-तक गाड़ी नहीं आयी है। यह सब, शगुन ख़राब करने से हुआ है।

दीनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – साहब, आपका रास्ता रोकने वाली बिल्ली की बात नहीं कर रहे हैं। सेणी भा'सा तो उस बिलाव का किस्सा कहने का निवेदन कर रहे हैं, जो सरकारी क्वाटरों में घुमा करता था। [सेणी भा'सा से कहते हुए] सेणी भा'सा, गाड़ी में बैठकर आराम से किस्सा बयान करेंगे। अभी तित छोड़ो, भा'सा। आराम करने दीजिये, ना।

रशीद भाई – दीनजी, आप आराम कीजिये। मुझे थमा दिया आपने, सेवाभावी का टाइटल। [सबसे कहते हैं] अब आप सभी दे दीजिये अपनी ख़ाली बोतलें, ठंडा पानी भरकर लेता आऊं..आप सब के लिए।

रतनजी – कहां जा रहे हैं, जनाब ? सारे दिन आपको पानी-पानी के सिवाय, कुछ दिखायी नहीं देता ? राणकपुर एक्सप्रेस आ रही है, सुन लीजिये आप..उसकी आवाज़ सुनायी दे रही है ?

[सीटी की आवाज़ सुनायी देती है, आवाज़ सुनकर रतनजी रशीद भाई से कहते हैं]

रतनजी – देख लो, आ रही है गाड़ी। अभी पटरियां पार करते-करते आप, मौत को गले लगा लेते ?

[सीटी देती हुई, राणकपुर एक्सप्रेस प्लेटफोर्म नंबर एक पर आती है]

ओमजी – यह लीजिये, मेरी बात सच्च हो गयी है। बाबा रामसा पीर की कृपा से राणकपुर एक्सप्रेस आ गयी है, प्लेटफोर्म नंबर एक पर। इस कारण रशीद भाई अब ठंडा पानी लाने के लिए, प्लेटफोर्म नंबर एक पर जा नहीं सकते..

रतनजी - बस जनाब, वे मेहनत करने से बच गए। तब ही...

ओमजी – मैं कहता हूं, कौआ भाग्यशाली आदमी के सर पर चोंच मारता है।

रशीद भाई – मेरा शरीर है, नाशवान। इस शरीर से जितनी बन पड़े, मुझे सेवा करनी चाहिए। मेहनत से बच गए, कहने से काम नहीं चलता। मुझे सेवा करनी होगी, तो मैं उतरीय पुल चढ़कर ठंडा पानी लेकर आ जाऊंगा।

दीनजी – आपको फ़िक्र नहीं है, जनाब। मगर, हम लोगों को आपकी फ़िक्र है। ऐसा शौक है तो आप, बाद में लेकर आ जाना..पानी। अभी रतनजी की बोतल में, पानी बचा है..अभी हम, उससे काम चला लेंगे। अभी आप यह बताये, आपके सर पर कौए ने चोंच क्यों मारी ? कहीं आपने कोई छेड़कानी की होगी, उसके साथ।

[रशीद अंगड़ाई लेते हैं, फिर होठ के नीचे तैयार ज़र्दा रखते हुए कहते हैं]

रशीद भाई – आज़ दोपहर का वक़्त था, हम लोगों ने खाना खाया..फिर लेट गए नीम तले। तब नीम पर कांव-कांव करते कौए, उसके चारों ओर मंडराने लगे। मैंने सामने देखा, एक कुत्ता दबे पांव नीम की तरफ आ रहा था। ये कौए उसको बार-बार चोंचे मारते जा रहे थे, इसके बाद...

ओमजी – फिर क्या ? मैंने उठाया, पत्थर। और निशाना लगाकर, उस कुत्ते पर फेंका। तब ये जनाब मुझे कहने लगे “ओमजी, कुत्ते को पत्थर मारकर आपने पाप किया है।” ज़वाब देते हुए मैंने कहा “रशीद भाई, आप ऐसे सेवाभावी बने हैं..तब आपको घोंसले से नीचे गिरा यह कौऐ का चूज़ा, आपको दिखाई क्यों नहीं दे रहा है ?

रतनजी – आगे ओमजी ने यही कहा ‘उस चूज़े का शिकार करने वाले इस कुत्ते को, पत्थर मारकर भगा दिया, मैंने। यह काम पुण्य का है, या पाप का ? आप ख़ुद ही, निर्णय कर लीजिये जनाब।”

रशीद भाई – इतना सुनकर, मैंने वृक्ष के नीचे देखा..वहां कौए का छोटा बच्चा “कैं कैं” की आवाज़ करता, फुदक रहा था। उस बेचारे के पंख पूरे आये नहीं, इस कारण उसके मां-बाप उसके ऊपर

"कौं कौं" की आवाज़ करते उस पर मंडरा रहे थे। इतने में तगारी लिए आ गया, चाय की होटल वाला छोरा कानिया।

रतनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – वह कमबख़्त कानिया बोला, के "अंकलजी इस तगारी को रख लीजिये अपने सर पर, टोप की तरह। इसके बाद आप इस बच्चे को उठाकर, इसके नीड़ में रखना..क्योंकि आप, कौए की आदतें जानते नहीं। इसलिए मैं आपको, चेतावनी के तौर पर कह रहा हूं।

रशीद भाई – मुझे क्या पता था ? यह छोरा मुझे बचने का साधन बता रहा है, या मेरी मज़ाक उड़ा रहा है ? नासमझ बनकर मैंने कह दिया उसे, के "कानिया, क्या तू मुझे डोफा समझता है ? मेरे उस्ताद दयाल साहब से, मैंने अच्छी तरह से सीख लिया है के, **दस्ताने पहनकर ही, पक्षी के चूज़े के हाथ लगाना चाहिए..मुझे ज़रूरत नहीं, इस तगारी की।**

रतनजी – आगे ये डेड होशियार रशीद भाई, कहते हैं "बिना दस्ताना पहने इस चूज़े को छुआ तो इस चूज़े के जर्म्स, मेरे हाथों पर आ सकते हैं। इस तरह दस्ताने पहनकर, चूजे की बीमारी से बचा जा सकता है। अबे ए डेड होशियार, तू मेरे सर पर तगारी रखवाकर..मेरी इज़्ज़त की, बख़िया उधेड़ना चाहता है ?"

दीनजी – आगे, क्या हुआ ?

रशीद भाई – मैंने उस भले छोरे की बात नहीं मानी, झट हाथ में दस्ताना पहनकर उस कौए के चूज़े को उठाया, फिर घोंसले में रखने के लिए झट पेड़ पर चढ़ने की कोशिश करने लगा..तभी आयी मुसीबत। ख़ुदा रहम, ख़ुदा रहम।

रतनजी – [हंसते हुए, कहते हैं] – फिर क्या ? कौए का जोड़ा, इनके पीछे पड़ गया। **भईजी डेड होशियार सेवाभावी का माथा सूजा दिया, चोंचे मार-मारकर। मगर, डेड होशियार महोदय इतनी चोंचे खाने के बाद भी, आख़िर जनाब पेड़ पर चढ़ गए..और चूज़े को घोंसले में रखकर ही, इन्होंने दम लिया।**

दीनजी – वाह रशीद भाई, वाह। क्या कहना है, आपका ? **आपको दधीची का ख़िताब मिलना चाहिए, एक ने अपनी हड्डियां दान दी तो दूसरे ने 'पर हित में अपना माथा हाज़िर कर दिया, धर्म के काम के लिए।'**

रशीद भाई – [ख़ुश होकर, कहते हैं] – भा'सा शुक्रिया, मगर यह कुचमादी का ठीकरा कानिया क्या बोला ? के, 'अंकलजी आप इस कौए के बच्चे को अपनी हथेली पर बैठाकर, इस दफ़्तर के चारों ओर चार चक्कर काट लीजिये..तो मैं आपको, एक सौ एक रुपये दूंगा। बोलो, आपको शर्त मंज़ूर है या नहीं ?'

रतनजी – तब मैंने उससे कहा, के "डोफा, पहले यहां रख इस हथेली पर एक सौ एक रुपये। फिर तू तो चार-चार चक्कर कहता रह जाएगा, और तेरे अंकलजी चक्कर काट लेंगे पूरे दस।"

रशीद भाई – कानिया के भईजी, कानिये को एक रूपया भी नहीं देते उसे ख़र्च करने के लिए। और यह कुतिया का ताऊ शर्त लगाने चला, एक सौ एक रुपयों की। तब मैंने उससे कहा, के "पहले तू जाकर तेरे भईजी को बुलाकर यहाँ ला, फिर उनके सामने तू लगाना शर्त। फिर तू चार-चार चक्कर कहता रह जाएगा, और मैं काट लूंगा पूरे दस चक्कर।"

रतनजी – आगे मैंने कह दिया, के "अगर तू रुपये नहीं देगा, तो तेरे भईजी की ज़ेब से निकालकर हम वसूल कर लेंगे।

ओमजी – इतना सुनते ही, वह छोरा सर पर पांव रखकर दौड़ा..बतूलिये की तरह। उसको ऐसा लगा, 'मानो उसके भईजी जलावन की लकड़ी लिए, उसके पीछे दौड़ते आ रहे हैं ?' फिर मैंने सेवाभावी महानुभव से कहा, "भाई सेवाभावी अब आप भूल जाओगे, ना...किसी की सेवा करनी।"

रशीद भाई – मैंने कह दिया, के "मैं ऐसा पूत नहीं, जो बाधा आने पर भलाई का मार्ग छोड़ दे ? अरे, जनाब। यह कौए की जोड़ी मेरा कितना ही खून निकाल ले, मगर मैं सेवा का मार्ग नहीं छोडूंगा।" इतना कहकर मैंने अपने सर पर लोहे की तगारी रखी, फिर चढ़ा पेड़ पर..

दीनजी – एक बार और, चढ़ गए ? अरे यार, आपको तो बीमारी लग गयी..बार-बार चढ़ने की ? कुछ तो शर्म कीजिये, जनाब। यह उम्र नहीं है, बार-बार चढ़ने की।

रतनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – अरे दीनजी, मैं इनको बार-बार कह-कहकर थक गया, के "यह कोई उम्र है आपकी, बार-बार उतरने-चढ़ने की ? **अब तो जनाब, सुनने की उम्र है।** [ठहाका लगाकर, कहते हैं] सुनिए जनाब, उदघोषक घोषणा कर रहा है..

रशीद भाई – [खीजते हुए कहते हैं] – कैसे क्या ? एक-दो बार, क्या ? बीस बार उतरूंगा-चढूंगा, आख़िर मुझे घोंसले में देखना बाकी रह गया कि, 'बच्चा घोंसले में अच्छी तरह से रखा गया, या नहीं ?' चढ़ती बार तो भा'सा, मैं जानता हूं इन कौओं की क्या हालत हुई होगी ? जब उन्होंने

लोहे की तगारी पर, चोंचे मारी होगी ? अब आप-लोग आराम से सुन लीजिएगा, इस डोफे उदघोषक की आवाज़।

उदघोषक – [घोषणा करता हुआ, कहता है] – बैंगलूर-चेन्नई एक्सप्रेस, प्लेटफोर्म नंबर एक पर शीघ्र आ रही है। यात्री गण उतरीय पुल का प्रयोग करें, पटरियों को पार करके आना-जाना रेलवे नियम के विरुद्ध है। नियम के उल्लंघन करने पर, सज़ा हो सकती है।

रतनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरकर, कहते हैं] – लीजिये बधाई हो, रशीद भाई। अब आप ख़ुदा रहम, ख़ुदा रहम बोलना मत। अल्लाहताआला ने, आपकी उतरने और चढ़ने की तमन्ना पूरी कर दी है।

रशीद भाई – क्या कहा, जनाब ?

रतनजी – मैंने कहा 'अच्छी तरह सुन लेना, रशीद भाई। जनाब आपका उतरने-चढ़ने का शौक देखकर अल्लाह ताआला ने, गाड़ी वापस प्लेटफोर्म नंबर एक पर बुला ली है।' [दीनजी से कहते हैं] भा'सा, आप चढ़ने के लिए तैयार हैं ? पुलिया चढ़ते-चढ़ते अब आप करना मत, हाम्फू-हाम्फू।

दीनजी भा'सा – देखिये रतनजी, इस तरह शरीर की अवस्था पर हंसा नहीं जाता।

रतनजी – अब रोवो, अपने शरीर को लेकर ? पहले कहता था, शरीर को आरामदेह मत बनाओ। रोज़ घुमने जाया करो, न जाया जाता तो चलिए मेरे साथ रामदेवरा की पद यात्रा में। कीजिये मत, फ़िक्र। आपको आराम से, ले जाऊंगा।

दीनजी – अरे जनाब पहले आप यह बताएं, के 'आप कभी किसी असक्षम आदमी को, पद यात्रा पर ले गए..या, नहीं ?

रतनजी – क्या कह रहे हैं, दीनजी भा'सा ? यहां तो मैंने, लूले क्या ? पांगले क्या ? डोकरे क्या, डोकरियों को क्या ? सब को यह पद-यात्रा, आराम से यात्रा करवायी है। इस सेवा के लिए, मुझे हिन्दू सेवा मंडल ने चुना है। आप मेरे साथ चलिए, आराम से ले जाऊंगा रामदेवरा। फ़िक्र करना मत, भा'सा। देखिये आप, मैं आपको ऐसे संभाल लूंगा..

[रतनजी झट खड़े हो जाते हैं, और लूले-पांगले लोगों के चलने की नक़ल करते हैं। और साथ-साथ कहते जाते हैं, के...]

रतनजी – [लूले-पांगले आदमियों के चलने का, अभिनय करते हुए बोलते जाते हैं] – आप ऐसे चलेंगे भा’सा, तब मैं आपको ऐसे संभाल लूंगा। फिर मैं आपको इस तरह पकड़ लूंगा, ताकि आप नीचे गिरेंगे नहीं। [मगर जैसे ही वे पीछे मुड़कर देखते हैं, न तो वहां रशीद भाई दिखाई देते हैं और ना दीनजी भा’सा। फिर क्या ? वे प्लेटफोर्म पर पागलों की तरह निगाहें फेंककर, उन दोनों को ढूंढ़ने की कोशिश करते हैं। इनको ऐसा करते देखकर, ओमजी हंसते हैं]

रतनजी – क्यों हंसते जा रहे हो, छक्के की तरह ? बता नहीं सकते, वे दोनों रुख़सत हो गए। फिर मैं यहां खड़ा, पागलों की तरह किसे सुनाता जा रहा हूं ? क्या, इन दीवारों को ?

ओमजी – रतनजी आपका प्रवचन बहुत अनमोल है, ज्ञानी-दानिशमंद व इल्म वाले इंसानों को ही समझ में आ सकता है। बेचारे रशीद भाई और दीनजी भा’सा में, कहां इतनी क़ाबिलियत ?

रतनजी – फिर, आप क्यों रुक गए ? आप भी, चले जाते।

ओमजी – मेरी बोतल आपके पास है, आप इसे दे देते..तो मैं भी, चला जाता। मुझे कोई चाव नहीं, आपका भाषण सुनने का ? बोतल दे दीजिये, और फिर चलिए प्लेटफोर्म नंबर एक पर। वहां चलकर, गाड़ी के यात्रियों को सुनाते रहना..आपका अनमोल भाषण। सच कहता हूं, आप तो हो..मोहनजी के माजने के।

[बैंगलूर-चेन्नई एक्सप्रेस सीटी देती हुई दिखाई देती है, थोड़ी देर में वह प्लेटफोर्म नंबर एक पर आकर रुक जाती है। अब दोनों प्लेटफोर्म नंबर दो से नीचे उतरकर, पटरियां पार करते हैं। फिर बैंगलूर-चेन्नई एक्सप्रेस के शयनान डब्बे में, दाख़िल हो जाते हैं। ये सारे शयनान डब्बे एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, इन सब डब्बों में आने-जाने का रास्ता खुला है। अब मोहनजी अपने इन साथियों को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एस-४ डब्बे में आ जाते हैं। वहां दरवाज़े के पास खड़ा है, गुलाबो। वह इनको देखकर, हंसता है। मोहनजी भोला मुंह बनाकर, उससे हंसने का कारण पूछते हुए कहते हैं]

मोहनजी - गुलाबा, तू और मैं एक जैसे हैं यार। जैसा तू है, वैसा ही मैं हूं। तू घुमता है पूरी गाड़ी में, और मैं भी घुमता हूं रे कढ़ी खायोड़ा..सभी शयनान डब्बो में। फिर यार, तू क्यों हंसता जा रहा है ठोकिरा..मुझे देखता-देखता ? बोल यार, अब खड़ा-खड़ा क्यों देख रहा है मुझे, कहीं तेरे पिछवाड़े में चूनिया तो नहीं काट रहे हैं कढ़ी खायोड़ा ?

गुलाबो – [लबों पर मुस्कान बिखेरता हुआ, कहता है] – सरकारी ससुराल की हवा कैसे लगी रे, मेरे सेठ मोहन लाल ? अब और करेगा रे, टिकट चैक ? क्या एक बार और खिला दूं तूझे, ससुराल की हवा ?

[पछीत [बर्थ] पर **सो रहे छंगाणी साहब का एक बूट, रशीद भाई युरीनल के पास लाकर छुपा देते हैं। अब वहां खड़े हैं मोहनजी, उनको क्या पता..यह किसका बूट है ? गुलाबा के खीजाते ही वे, उस बूट को उठाकर उसके ऊपर फेंक देते हैं। मगर गुलाबा ठहरा, पूरा गज़ब का गोला। वह ठोकिरा झट बूट को केच कर लेता है, फिर उसे लेकर गाड़ी के बाहर भाग जाता है।** केबीन में बैठे ओमजी और रशीद भाई को, मोहनजी की गुस्से से भरी आवाज़ सुनायी देती है।]

मोहनजी – [गुस्से में, चिल्लाते हुए] – छक्के की औलाद। इधर मर, कढ़ी खायोड़ा। [गुलाबे के ऊपर बूट फेंकते हैं] मुझे ससुराल की हवा खिलाने वाला, तू है कौन ?

[युरीनल जाने हेतु छंगाणी साहब उठते हैं, और एक पांव में बूट डालकर फिर दूसरे पांव में बूट डालना चाहते हैं..मगर, अब यह दूसरा बूट उन्हें कहीं दिखाई दे..तो वे, उसे पहने ? तभी मोहनजी केबीन में दाख़िल होते हैं, इस वक़्त ओमजी छंगाणी साहब से पूछ रहे हैं ?]

ओमजी – क्या ढूंढ़ रहे हैं, जनाब ? कहीं आप ससुराल से आये बूट को तो, नहीं ढूंढ रहे हैं ? जिसे आप, अपने **काळज़े की कोर** की तरह रखते आये हैं ? अब क्या कहूं, जनाब ? उसे तो यह गुलाबा उठाकर ले गया, जनाब।

मोहनजी – [केबीन में दाख़िल होते हुए, कहते हैं] – मालिक छंगाणी साहब, कहीं युरीनल के पास पड़ा लावारिश बूट आपका तो नहीं था ?

रशीद भाई – फेंकने के पहले, मोहनजी आप सोच लेते..बूट किसका है ? आपको, क्या पता ? **बेचारे छंगाणी कितने जतन से बीसों पैबंद लगाकर, अपना काम चला रहे थे, आख़िर वह बूट इनके ससुराल से आया हुआ बूट था..यानि इनकी काळज़े की कोर।**

[गाड़ी का इंजन सीटी देता है, दीनजी, रतनजी, गोपसा और ताश खेलने वालों की इनकी पूरी टीम डब्बे में दाख़िल होती है। ऐसा लगता है, गाड़ी रवाना होने वाली है। इस कारण, ओमजी झट छंगाणी साहब को चेताते हुए उनसे कहते हैं..]

ओमजी – दौड़िए छंगाणी साहब, गुलाबे के पीछे। गाड़ी रवाना हो रही है, जनाब। जल्दी कीजिये। आपका बूट न मिला तो, आपकी मेम साहब आपको छोड़ेगी नहीं।

मोहनजी – [रशीद भाई से, कहते हैं] – यार रशीद भाई, अब आपका सेवाभाव दिखलाने का वक़्त आ गया है। आप दौड़िए उस गुलाबे हिंजड़े के पीछे, और ले आइये...!

[किसी यात्री ने, रास्ते में एक बड़ी संदूक रख दी है..जिसके पास ही इमरजेंसी वाली खिड़की है। उस खिड़की से ठंडी हवा आ रही है, यह जानकर मोहनजी उसी संदूक पर बैठ जाते हैं। बैठने के बाद वे खिड़की से बाहर झांकते हैं। तभी, ओमजी कहते हैं]

ओमजी – कुछ तो बताइयेगा, मोहनजी..रशीद भाई क्या लेकर आयें ? कोई खाने की चीज़ है, क्या ?

मोहनजी – [हंसते हुए कहते हैं] – हां रे, ओमजी कढ़ी खायोड़ा। खाने की मस्त चीज़ है रे, भाई ओमजी। आपको खानी है, क्या ?

रतनजी – [सीट पर बैठते हुए, कहते हैं] – वह भी छंगाणी साहब का भारी भरकम जूता, बीस पैबंद लगा हुआ ? अरे जनाब, वह भी इनके ससुराल से आया हुआ...इनके काळज़े की कोर, समझ गए ?

[इतने में गुलाबा आता है खिड़की के पास, और छंगाणी साहब का बूट फेंकता हुआ कहता है]

गुलाबा – [बूट फेंकता है, जो सीधा आकर मोहनजी के थोबड़े पर गिरता है] – अरे ओ सेठ। देने की चीज़ देते नहीं, आप ? लीजिये आपके खाने की चीज़, आपको ही मुबारक।

[बूट आकर सीधा गिरता है, मोहनजी के चका-चक चमक रहे थोबड़े पर। फिर क्या ? बेचारे दर्द के मारे, ज़ोर से चिल्लाते है। उनको चिल्लाते देखकर, छंगाणी साहब अब अलग से फरमाते हैं]

छंगाणी साहब – जूता आ गया, जनाब ?

मोहनजी – [अपने रुख़सारों को दबाते हुए, कहते हैं] – जूता आपका आ गया, जनाब। मगर, खाना मुझे पड़ा। [बूट को छंगाणी साहब के ऊपर फेंकते हुए, कहते हैं] यह लीजिये जनाब, आपके काळज़े की कोर।

[यह बूट आकर सीधा गिरता है, छंगाणी साहब के मुंह पर। अब वे अपने रुख़सारों को दबाते हुए, कहते हैं]

छंगाणी साहब – [ज़ोर से चिल्लाकर, कहते हैं] – ओ तापी बावड़ी वाले, बालाजी बाबजी। यह क्या कर डाला, बेटी का बाप ? सवामणी का प्रसाद भेजना तो दूर, और यह क्या खाने के लिये भेज दिया आपने..बाबजी सा ?

ओमजी – इसे ही समझ लीजिये, जनाब..के, क्या खाया ? खाया, बाल गोपाल का प्रसाद। बापूड़ा, अब आप यही समझ लीजिये। और लोगों को, कहना मत..के, क्या खाया ? खायी होगी, आपने...अपनी ख़ुद की चीज़..यानि, **काळज़े की कोर।**

[गाड़ी रवाना हो गयी है, रोज़ तो छंगाणी साहब दीनजी भा'सा से मांग-मांगकर खाते थे, बाल गुपाल का प्रसाद। अगर नहीं मिलता तो जनाब, मुंह चढ़ाकर बैठ जाया करते और किसी से बोलते नहीं। आज़ खायी उन्होंने अपने जूते की प्रसादी, उस जूते की प्रसादी..जिसे बहुत जतन से पैबंद लगा-लगाकर, वे उसकी उम्र बढ़ाते आ रहे हैं। ये वे ही जूते हैं, जो इनके ससुराल से आये हुए हैं..यह बात याद आते ही, उन्हें याद आ जाती है अपनी मेम साहब की। अब उनको फ़िक्र हो जाती है, **"कब जोधपुर स्टेशन आयेगा, कब घर पहुंचेगे और कब उनकी दिल की रानी मेम साहब से मुलाक़ात होगी ?"** सोचते-सोचते, वे वक़्त देखने के लिए हाथ पर बंधी घड़ी को देखते जा रहे हैं..और साथ में अपने गालों को, दबाते हुए कहते हैं]

छंगाणी साहब – [अपने गालों को दबाते हुए, कहते हैं] – अरे बालाजी बाबजी, मेरी तो बज गयी, बारह। अब..

[सामने की बर्थ पर लेटे चंदूसा, अंगड़ाई लेते हुए कहते हैं]

चंदूसा – [अंगड़ाई लेते हुए, कहते हैं] – **जनाब बारह उस वक़्त बजती, जब आप जूता खोकर पहुंच जाते मेम साहब के पास। खैर अच्छा हुआ जनाब, आपका जूता सही-सलामत आपके पास लौट आया।** बच गयी आपकी, **काळज़े की कोर यानी ससुराल के जूते**। संभाल लीजिये, इन जूतों को। अब आप, बार-बार घड़ी को मत देखिये, मेम साहब कुछ नहीं कहेगी। ***क्योंकि, ससुराल से आये जूते बच गए हैं..!***

[मंच पर, अन्धेरा छा जाता है।]

नाटक "यह चांडाल-चौकड़ी, बड़ी अलाम है" का अंतिम खंड १५

"बाबा भली करे।"

– लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

[मंच पर रौशनी फ़ैल जाती है, बैगलूर-चेन्नई एक्सप्रेस गाड़ी पटरियों पर तेज़ी से दौड़ रही है। अब इस गाड़ी का शयनान डब्बा दिखाई देता है। एक केबीन की बर्थ पर छंगाणी साहब लेटे दिखाई दे रहे हैं, ऐसा लगता है उन्होंने अपने बूट पहन लिए हैं। बूट पहनने के बाद, उन्हें पक्का भरोसा हो गया है के "अब कोई एम.एस.टी. होल्डर, उनके बूट छुपाने की शरारत नहीं कर पायेगा..!" इस कारण वे पूर्ण रूप से, निश्चिन्त हो चुके हैं। इनके सावधानी बरतने के बाद, दूसरी बर्थ पर लेटे चंदूसा भी सावधानी कुछ ज्यादा ही बरत रहे हैं। जैसे ही उनको, नीचे की सीट ख़ाली दिखायी देती है...जनाब झट नीचे उतरकर, उस सीट पर लेट जाते हैं। उनको भय है, "कहीं मोहनजी इधर आ गए तो, वे उन्हें इस तख़्त पर सोने नहीं देंगे।" उधर दूसरे तख़्त पर, ओमजी खूंटी तानकर सो जाते हैं। अब बाकी रही, आमने-सामने वाली खिड़की वाली सीटें..जिन पर, करीब सत्रह साल के दो शरारती छोरे बैठे हैं। वे बराबर मोहनजी की कुबदी [शैतानी] हरक़तों पर, नज़र गढ़ाए बैठे हैं। अब मोहनजी आते हैं, इस केबीन में ख़ाली सीट न मिल पाने से...वे बीच मार्ग में पड़े बॉक्स पर, जम जाते हैं। मगर उनका दिल करता है, "किसी तरह खिड़की वाली सीट पर कब्ज़ा ज़माकर वहां बैठ जाए।" अब वे, दिल में सोची हुई शैतानी हरक़त को अंजाम देने के लिए उठते है। और बार-बार खिड़की के पास जाकर, बाहर पीक थूकते हैं। उनकी मंशा यह है, "इनके बार-बार पीक थूके जाने पर, ये दोनों छोरे परेशान होकर...अपनी सीट छोड़ देंगे, और वे फ़ौरन खिड़की वाली सीट पर कब्ज़ा जमा लेंगे।" मगर ये दोनों शरारती छोरे, शरारत के मामले में मोहनजी को चार क़दम पीछे छोड़ने वाले ठहरे। अब ऐसा होता है, जैसे ही मोहनजी बॉक्स से उठते हैं..एक छोरा उठकर बैठ जाता है, अपने साथी के पास..वहां बैठकर वह उसके कान में कोई बात फुसफुसाकर कहता है। वह छोरा अपने साथी को, क्या कह रहा है ?' इससे मोहनजी को कोई सारोकार नहीं। बस मोहनजी, इस हाथ लगे मौक़े को खोना नहीं चाहते। **वे उस छोरे की छोड़ी हुई सीट पर जस्ट 'म्यूजिकल चेयर वाले गेम की तरह' बैठ जाना चाहते हैं, मगर यह छोरा तो ठहरा.. कुचमादी का ठीकरा । उनके बैठने के पहले, वह जाकर अपनी सीट पर बैठ जाता है। इस दशा में मोहनजी की बुरी 'हास्यास्पद स्थिति' बन जाती है, बेचारे संतुलन खोकर धब्बीड़ करते गिर पड़ते हैं उस छोरे की गोद में।** ***उनके गिरते ही छोरा चमकता है, मगर बेचारे मोहनजी गोद में गिरते ही दर्द के मारे चिल्लाते हुए उछलते हैं। ऐसा लगता है, "मानो किसी कुदीठ आदमी ने उनके पिछवाड़े में बिच्छु-कांटी का कांटा चुभा दिया है ?" इस तरह उनके उछलने से, दोनों छोरे ख़िल-खिलाकर हंस पड़ते हैं।*** उन दोनों को हंसते देखकर, मोहनजी गुस्से में उस छोरे को फटकारते हैं।]

मोहनजी - [गुस्से में डांटते हुए, कहते हैं] – ठोकिरा, कढ़ी खायोड़ा। सीधा बैठ नहीं सकता, आलपिन चुभाकर बड़े-बुजुर्गों से करता है मज़ाक ? शर्म नहीं आती, तूझे ? अब पागलों की तरह, ख़िल-ख़िल हंसता जा रहा है..बेवकूफ।
सामने बैठा छोरा – काकाजी। आप कब रहे, अल्लाह मियां की गाय ? हमारी उम्र के थे, तब आप कब चुप-चाप बैठे रहते थे ? कुचमादी करने की आदतें, अब भी इस उम्र में आपने नहीं छोड़ी ?
[इतने में दूसरा छोरा आँखों पर थूक लगाकर, फर्जी आंसू निकाल बैठता है। और ज़ोर-ज़ोर से, रोने का अभिनय करता है..इस तरह रुदन करता हुआ वह, पूरे डब्बे को अपने सर पर उठा लेता है। रोता हुआ यह कुबदी छोरा, मोहनजी को साथ में कहता जा रहा है..]
पहला छोरा – [रोने का अभिनय करता हुआ, कहता है] – काकाजी, ज़रा शरीर को हल्का कीजिये। मेरे ऊपर बैठकर, मेरी हड्डियों का कचमूर निकाल डाला आपने।
[इतना कहकर वह छोरा, फिर झूठे आंसू बहाता हुआ रोने लगता है। इसका रुदन सुनकर, पड़ोस के केबीन में सो रहे रतनजी की नींद खुल जाती है। कौन रो रहा है ? इसकी जांच करने के लिए, वे इस केबीन में चले आते हैं। यहां आते ही, वे उस छोरे के सर पर अपना हाथ रखकर उसे दिलासा देते हैं..]
रतनजी – [रुदन कर रहे छोरे के सर पर हाथ रखकर, कहते हैं] – बेटा, तूझे किसने पीटा ? ऐसा है कौन कुदीठ आदमी, जिसने राज़पुत्र जैसे बच्चे को रुला दिया ? अगर वह दुष्ट सामने आ जाय तो, मैं उस नालायक का कीमा बना डालूं ?
[फिर क्या ? दिलासा मिलते ही, वह छोरा फर्ज़ी आंसू साफ़ करके कहता है..]
पहला छोरा – [रोनी आवाज़ में, कहता है] – बा'सा ओ बा'सा। [मोहनजी की तरफ़ उंगली से इशारा करता हुआ] काकाजी को पीटिये। मेरे ऊपर बैठ गए, बा'सा। ऊपर बैठकर, मुझे पोदीने की चटनी की तरह पीस डाला।
दूसरा छोरा – देखिये बा'सा। अगर किसी बेचारे फूल जैसे कोमल बच्चे के ऊपर गिर जाए सौ मन वज़नी धान की बोरी, तब बा'सा उसकी क्या हालत होगी ? अब आप ही बताएं, बा'सा।
[एफ़.सी.आई. दफ़्तर में मोहनजी को दिन-भर, धान की बोरियां गिनना, धान की क्वालिटी देखनी, आंकड़े तैयार करना वगैरा काम करने होते हैं। अब ख़ुद के लिए धान की बोरी की उपमा दिये जाने से वे भड़क जाते हैं, फिर उस छोरे को फटकारते हुए ज़ोर से कहते हैं..]
मोहनजी - [फटकारते हुए, कहते हैं] – कुचमादी के ठीकरे। कढ़ी खायोड़ा बता मुझे, किस धान की बोरी गिरी ? देशी, या स्पेशल आस्ट्रेलिया गेहूं की बोरी ? गधे, तूझे क्या पत्ता, धान की कौन-कौनसी किस्में होती है ? आया बड़ा, धान की बोरी की उपमा देने वाला ?
दूसरा छोरा – [लबों पर मुस्कान बिखेरता हुआ, कहता है] – अरे काकाजी, क्या हाफ-माइंड जैसी बात कर रहे हैं आप ? मुझे तो ऐसा लगता है, चूहे मारने वाली बदबूदार गोलियों की बोरी ही गिरी है..बेचारे, इस राज़पुत्र जैसे बच्चे के ऊपर।

[चूहे मारने की बदबूदार गोलियों का नाम भी, बड़ा अजीब है ? दोनों छोरे हंसते जा रहे हैं, और उनको हंसते देखकर रतनजी भी अपनी हंसी रोक नहीं पाते। अब, इन बच्चों के क्या मुंह लगना ? यह सोचकर, रतनजी झट मोहनजी का हाथ पकड़कर उठाते हैं। फिर उनका हाथ थामकर, कहते हैं..]

रतनजी - [हाथ पकड़कर, कहते हैं] – अब चलिये, यहां से। क्यों इन बच्चों के मुंह लग रहे हैं, आप ? ये बच्चे क्या, आपकी उम्र के है ? सीट ही चाहिए, आपको ? चलिए पड़ोस के केबीन में, कई सीटें ख़ाली पड़ी है। मर्ज़ी हो वहां बैठना, कम से कम आप हमें...शान्ति से, सफ़र करने दीजिये।

[रतनजी एक हाथ से मोहनजी का बैग लेकर, दूसरे हाथ से उनका हाथ पकड़कर ले आते हैं, अपने पड़ोस वाले केबीन में। इस केबीन की ख़ाली सीटों पर दीनजी, गोपसा और उनके ताश खेलने वाले साथी बैठे हैं। वहां आकर, रतनजी मोहनजी से कहते हैं..]

रतनजी – अब आंखें फाड़कर देख लीजिये, मोहनजी..इतनी सारी पड़ी है, ख़ाली सीटें। अब डालो, इनका अचार। [दीनजी से कहते हैं] यार दीनजी, थोडा उधर खिसकिये। [गोपसा से कहते हैं] आप भी खिसको गोपसा, और अब पत्ते खेलने बंद कीजिये..जनाबे आली मोहनजी, तशरीफ़ लाये हैं।

[**मोहनजी इस केबीन में क्या आ गए, मानो बादशाह अकबर तशरीफ़ लाये हैं..?** फिर क्या ? गोपसा भी कोई कम नहीं, झट चोबदार के लहजे में ज़ोर से आवाज़ देते हुए कहते हैं..]

गोपसा – [ज़ोर से आवाज़ देते हुए, कहते हैं] – होशियार। एफ़.सी.आई. के साहब-ए-आलम, जनाबे आली मोहनजी क़दमबोशी कर रहे हैं..! सावधान..तख़लिया। [ताश के पत्ते उठाते हैं, और उनके दूसरे साथी भी सीट छोड़कर उठ जाते हैं] लीजिये बैठिये महाराज़, रैयत के धणी। अब आप इन गुलामों को, रुख्सत दीजिये।

[खड़े होकर अदब से कमर झुककर, गोपसा कोर्निश करते हैं]

मोहनजी – इस वक़्त इन खिड़कियों से तेज़ धूप आ रही है, आज़ तो गोपसा ऐसा लग रहा है..मानो आसमान से सूर्य, आग के गोले बरसाता जा रहा है ? अब मैं खिड़की के पास कैसे बैठ सकता हूं, गोपसा ?

गोपसा – [झुककर कोर्निश करते हुए, कहते हैं] – हुज़ूर की ख़िदमत में, धूप को रुख्सत देने की इज़ाज़त चाहता हूं।

[खिड़कियों पर लगे पर्दों को नीचे गिराकर, खिड़की बंद कर देते है। फिर गोपसा अपने साथियों को साथ लेकर चले जाते हैं, दूसरे केबीन में। अब मोहनजी बैठ जाते हैं, रतनजी के पहलू में। थोड़ी देर बाद, सेणी भा'सा भी आकर दीनजी भा'सा के पहलू में बैठ जाते हैं। रशीद भाई को अस्थमा की बीमारी है, इसलिए वे सिंगल खिड़की वाली सीट पर आकर बैठ जाते हैं..ताकि, वे आराम से ताज़ी हवा का लुत्फ़ उठा सके। अब सलाद बेचने वाला इस केबीन में दाख़िल होता है, उसको देखकर सेणी भा'सा उसे सलाद लाने का हुक्म देते हैं।]

सेणी भा'सा – इधर आ रे, डाल चंद।
डाल चंद – आया, हुज़ूर।
[अख़बार के पन्ने पर ककड़ी और टमाटर के टुकडे चाकू से काटकर, उन पर मसाले का छिड़काव करता है। फिर यह तैयार किया गया सलाद, सेणी भा'सा को थमाता हुआ उनसे कहता है]
डाल चंद – [सलाद थमाते हुए, कहता है] – हुज़ूर कई दिनों से, मालिक आपके दर्शन गाड़ी में नहीं हो रहे हैं ? हुज़ूर, खैरियत है ?
सेणी भा'सा – [सलाद लेते हुए, कहते हैं] – भाई डालचंद, मुझे तो आज़कल वक़्त मिलता नहीं। दफ़्तर में आज़कल अवाम की बहुत शिकायतें आ जाया करती है, क्या कहूं तुम्हें ? छोटी-छोटी शिकायतों को लेकर यह अवाम पहुंच जाती है, इन एम.एल.ए., और एम.पी. जैसे जन-प्रतिनिधियों के पास।
डाल चंद – इनको जाने दीजिये, जनाब। आपको, क्या करना जी ?
सेणी भा'सा – क्या बोल रहा है, डाल चंद ? इधर इस भयानक गर्मी में पानी की भारी किल्लत, सुनते-सुनते परेशान हो जाते हैं यार। करें क्या ? इनकी समस्या का समाधान करते-करते काफ़ी देर हो जाया करती है, इस कारण एक्सप्रेस गाड़ी को पकड़ नहीं पाता। फिर कैसे मिलूं रे, डोफ़ा तूझे ? तू तो फिरता है, इन एक्सप्रेस गाड़ियों के अन्दर।
डाल चंद – फिर जनाब, आज़ कैसे मुलाक़ात हो गयी आपसे ?
सेणी भा'सा – बात यह है, मैं आया तो देरी से ही..मगर, मेरी क़िस्मत अच्छी रही एक्सप्रेस गाड़ी लेट थी जो मिल गयी डाल चंद। अब तू खड़ा-खड़ा बातें करता ही रहेगा, या जाकर कुछ कमायेगा ? अब जा, थोड़ा गाड़ी में घुम और कमाई कर। ख़ाली गपें हांकने से, तेरा पेट भरेगा नहीं।
डाल चंद – [ककड़ी-टमाटर से भरी टोकरी को, सर पर रख़ता हुआ कहता है] – हुज़ूर, आपकी मेहरबानी से कमा रहा हूं। आपकी सुफ़ारस लगी, और ये टी.टी.ई. लोग मुझे घुमने देते हैं इन एक्सप्रेस गाड़ियों में। अब मेहरबानी बनी रखना, हुज़ूर। [आवाज़ लगाता हुआ, जाता है] ले लो भय्या, सलाद। ताज़ी-ताज़ी ककड़ी, ताज़े टमाटर।
[डाल चंद चला जाता है, दूर से उसकी आवाज़ गूंज़ती जा रही है। अब सेणी भा'सा सलाद को सभी साथियों के बीच में रखते हुए, कहते हैं।]
सेणी भा'सा – [साथियों के बीच सलाद रखते हुए, कहते हैं] – हाथ बढ़ाइये, अरोगिये। [दीनजी से कहते हुए] दीनजी, यार बोलो ना। आगे क्या हुआ, आपके बिल्ले का ?
[दीनजी को छोड़कर, सभी सलाद के टुकड़े उठाकर खाने लगते हैं। दीनजी खिड़की से बाहर देखते हुए, कह रहे हैं]
दीनजी – भा'सा, अभी-तक लूणी स्टेशन आया नहीं है। चलिये, शेष कहानी बांच ही लेते है। अब सुनिए, जनाब। वह बिल्ला सरकारी क्वाटरों में घुमता रहता था, किसी के लिये वह अज़नबी नहीं था।

सेणी भा'सा – ऐसी क्या ख़ासियत थी, उस बिल्ले में ?
दीनजी – अरे जनाब, वह बिल्ला तो बड़ा जबरा था, जो रास्ते में खड़े कुत्तों से भी नहीं डरता..उनको देखकर, वह गुर्राया करता। उसका यह रूप देखकर, कुते डरकर भाग जाया करते। क्वाटरों में रहने वाले बच्चों का वह दोस्त बन गया, कोई उसे रोटी खिलाता तो कोई पिलाता दूध। मगर जंग बहादुरजी की घरवाली से, वह.....
सेणी भासा – अब कह दीजिये, जनाब। ऐसी क्या ख़ास चीज़ खाता था, उनसे ?
दीनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – जंग बहादुरजी की घरवाली की दी हुई सूखी रोटियां भी, बड़े प्रेम खाया करता। अरे जनाब, वह तो अकरमजी की रसोई में घुसकर गूंधे हुए आटे को भी नहीं छोड़ता..उसे भी, खा जाता।
सेणी भा'सा – करमठोक ठहरा, वह बिल्ला। दूध-मलाई की ठौड़ खा जाता, सूखी रोटियां और गूंधा हुआ आटा। अब कहिये, आगे क्या हुआ ?
[इंजन ज़ोर से सीटी देता है, और अब गाड़ी की रफ़्तार कम हो जाती है। थोड़ी देर में लूणी स्टेशन आ जाता है, प्लेटफोर्म पर आकर गाड़ी रुक जाती है। अब, दीनजी कहते हैं..]
दीनजी – लीजिये लूणी स्टेशन आ गया, अब शेष गाथा बाद में बांच लेंगे।
मोहनजी – हां भा'सा, सही बात है। बाद में सुना देना, आप। [सलाद खलास हो जाने से, वे कागज़ को खिड़की से बाहर फेंक देते है] अब चाय-वाय का इंतज़ाम हो जाना चाहिये, कढ़ी खायोड़ा।
दीनजी – मोहनजी क्यों बासी चाय पीने की बात कह रहे हैं, आप ? [बैग से काजू-दाख, बिदाम, मिश्री आदि प्रसाद से भरी पोलीथिन थैली निकालकर कहते हैं] अब मोहनजी, बिदाम, काजू, दाख और मिश्री का भोग लगाइए।
[बिल्ले की गाथा वापस चालू होती न देख, सेणी भा'सा उठ जाते हैं। फिर कानों में यज्ञोपवित डालकर, पाख़ाने की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा देते हैं। उनके जाते ही, रशीद भाई कहते हैं..]
रशीद भाई – भा'सा बाल गोपाल का प्रसाद लाये, क्या ?
[रतनजी व मोहनजी का हिस्सा रखकर, दीनजी बाकी का प्रसाद रशीद भाई को थमा देते हैं। फिर कहते हैं..]
दीनजी – रशीद भाई, मोहनजी और रतनजी को यह प्रसाद मैं दे दूंगा। बस आप [शेष प्रसाद रशीद भाई को थमाते हुए] शेष साथियों को, यह प्रसाद बांटकर आ जाइये। ये सभी, पड़ोस के केबिनों में बैठे हुए हैं।
[रशीद भाई प्रसाद लेकर चले जाते हैं, पड़ोस के केबीन में। उनके जाने के बाद, दीनजी रतनजी से कहते हैं।]
दीनजी – [रतनजी से कहते हैं] – रतनजी, यह लीजिये अपना हिस्सा। [प्रसाद देने के लिए, हाथ आगे करते हैं]
रतनजी – [नखरे करते हुए, कहते हैं] – नहीं लेता।

दीनजी – अरे सा, ले लीजिये प्रसाद। बाल गोपाल का प्रसाद है, जनाब इसका निरादर नहीं किया जाता। जनाब, ले लीजिये। ना तो आप गाड़ी के सभी एम.एस.टी. होल्डर्स से कहते रहेंगे, के "भा'सा ने बाल गोपाल का प्रसाद, मुझे खिलाया नहीं। ये सारे लोग हैं, फड़सा। इनको खिला दिया, सारा प्रसाद।"

रतनजी – [गुस्से में कहते हैं] – अब आपको क्या कहूं, भा'सा ? आपके जैसा निशर्मा नहीं है, इस ख़िलक़त में। आंखें होते भी आप समझ नहीं रहे हैं, के 'मैं यह प्रसाद, क्यों नहीं खा रहा हूं ?

[पड़ोस के केबीन में बैठे ओमजी और रशीद भाई को, रतनजी के कहे एक-एक शब्द सुनायी दे जाते हैं। वे दोनों अच्छी तरह से जानते हैं, "वे इस प्रसाद को, खाना क्यों नहीं चाहते हैं ?"]

रशीद भाई - [ज़ोर से कहते हैं] – रतनजी, आज़ नक़ली दांत लाना भूल गये ? तो क्या हो गया, जनाब ? ले लीजिये, यार। बाल गोपाल के प्रसाद का, निरादर मत कीजिये। चबा नहीं सकते, तो क्या हो गया ? मिश्री और दाखें चूष लीजिये, और बिदामों को इमामदस्ते में कूटकर खा लीजिये।

ओमजी – यह मेवा है, रतनजी। खा लीजिये, जनाब। बदन में ताकत लाने का काम करती है, ये बिदामें। ***चाबी नहीं जाती, तब आप इन्हें गिट लीजिये जनाब। कार ही करेगी, बस आप निरादर मत कीजिये।***

दीनजी – देख लो। मैं बार-बार, गरज नहीं कर सकता। आपको लेना है, तो ले लीजिये। अन्यथा यह सारा प्रसाद, मोहनजी को दे दूंगा। फिर, ये चाहेंगे तो आपको दे देंगे। [मोहनजी को प्रसाद थमाकर, उनसे कहते हैं] लीजिये जनाब, आप दोनों का प्रसाद..!

मोहनजी – लाइए भा'सा, लाइए। यह प्रसाद वितरण-सम्बन्धी सेवा का काम, अब मुझे ही करना होगा। [प्रसाद लेकर, अब वे उसमें से बिदामें चुग-चुगकर खाते हैं। यह मंज़र देखकर, दीनजी विस्मित होकर कहते हैं..]

दीनजी – यह क्या कर रहे हैं, मोहनजी ? आप अकेले ही ठोक रहे हैं, बिदामें ? फिर, रतनजी को क्या खिलाओगे ?

[मोहनजी टाळ-टाळकर बिदामें खाते जा रहे हैं, और रतनजी उन्हें जहरीली नज़रों से देखते जा रहे हैं।]

<u>मोहनजी – [बिदामें पूरी खलास करके, कहते हैं] – आक थू..आक थू [फर्श पर थूकते हुए] पैसे भी खर्चे, और लाये नक़ली माल। ये कोई, बिदामें है..?</u>

दीनजी – [आश्चर्य से, कहते हैं] – आप यह क्या कह रहे हैं, मोहनजी ?

मोहनजी – यह कहा जनाब, ये मोम की बिदामें नहीं है। मैं केवल खाता हूं, मोम की बिदामें। वह भी, संदीणा में डलवाकर। अभी इस बार भी सर्दी में, भागवान ने संदीणा के लड्डू तैयार किये हैं।

रतनजी – खर्रास मत बनिए, जनाब। झूठ बोलना, पाप है। मोम की बिदामों को छोडिये आप...घृत कुमारी काम लेकर, बनवाये होंगे संदीणा के लड्डू। इसलिए कहता हूं, थोडा राम को सर पर रखकर बोलिए, जनाब।

[रशीद भाई प्रसाद बांटकर वापस आ गए हैं, केबीन में। रतनजी की बात उनके कानों में पड़ते ही, वे बीच में बोलकर करने लगे परायी पंचायती।]

रशीद भाई – अब कौन बोल रहा है, झूठ। [रतनजी को देखते हुए] बोलो रतनजी, प्रसाद लिया या नहीं ?

[रशीद भाई को, रतनजी से किसी तरह का ज़वाब नहीं मिलता। तब वे, दीनजी से कहते हैं..]

रशीद भाई – सबको, बाल गोपाल का प्रसाद दे दिया गया। फ़िक्र मत कीजिये, सेणी भा'सा को भी मिल गया प्रसाद। [रतनजी की तरफ इशारा करते हुए, कहते हैं] जनाबे आली ने, प्रसाद ले लिया क्या ?

रतनजी – [बीच में बोलते हुए, गुस्से से कहते हैं] – प्रसाद ? कैसे लूं, यह प्रसाद..? यह बात आपको भी मालुम होनी चाहिये, के 'मैं क्यों नहीं ले रहा हूं...? मगर भा'सा तो रह गये भोले, इनको आदमी की कोई पहचान नहीं ? बिदामें खिलायी, तो किसे ? खर को..

रशीद भाई – [उछलकर कहते है] – यह क्या कह दिया, आपने ?

रतनजी – [तेज़ी खाते हुए, कहते हैं] – कहा, और कहूंगा..मगर, आपको क्यों बताऊं ? यह बात, मैंने क्यों कही ? आपने सुना नहीं, या आप बहरे हैं ? भगवान ने दो कान मुझको भी दे रखे हैं, और आपको भी। उन कानों की खिड़कियां खोलने की तक़लीफ़ कीजिये जनाब, और सुन लीजिये एक बार और..के **'भा'सा ने बिदामें खिलायी है, खर को..!' समझ में, आया..?**

[पड़ोस के केबीन में बैठे ओमजी उनके जुमले को सुनकर ठहाका लगाकर ज़ोर से हंसते हैं। फिर अपनी हंसी को रोकते हुए, जनाब कहते हैं..]

ओमजी की आवाज़ आती है – सच्च कहा रतनजी, काबुल में तो गधे बिदामें ही खाया करते हैं। इसलिए भा'सा ने, खर को बिदामें खिलाकर कोई गुनाह नहीं किया। [मोहनजी से कहते हुए] जनाबे आली मोहनजी, एक बात आपको कह देता हूं के "आपको कुछ भी, खिला दो..उससे ना तो होता है पाप, और न होता है पुण्य।"

तभी सीटी देती हुई मालानी-एक्सप्रेस, सामने के प्लेटफार्म पर आती हुई दिखायी देती है। जैसे ही गाड़ी रुकती है, गाड़ी बदलने के लिये यात्री उतरते दिखायी देते हैं। इन यात्रियों के आगे-आगे एक बेलदार गधों पर बजरी लादे, आता दिखायी देता है। अब ये गधे इस शयनान-डब्बे के काफ़ी नज़दीक आ चुके हैं, और उनका "ढेंचू-ढेंचू" का सुर गूंज़ने लगता हैं। उन गधों को देखते हुए, ओमजी कहते हैं..]

ओमजी – मोहनजी, तशरीफ़ ला रहे हैं..आपके, काबुल वाले बिरादर। नीचे उतरकर, मिल लीजिये उनसे।

[इनके जुमले को सुनकर, सभी ठहाके लगाकर ज़ोर से हंसते हैं। उधर मालानी एक्सप्रेस से उतरे यात्री इस डब्बे की तरफ़ आते दिखायी देते हैं, उनको रोकने के लिये टी.टी.ई. आस करणजी और किसनजी आकर खड़े हो जाते हैं..डब्बे के, दरवाज़े के पास। वहां खड़े आस करणजी चुप रहने

वाले नहीं, वे हाथ हिलाते हुए ज़ोर-ज़ोर से उन लोगों को हिदायत देते हुए कह रहे हैं...]
आस करणजी – [हाथ हिला-हिलाकर, ज़ोर से कहते हैं] – ओल इंडिया..कोई नहीं आयेगा, यह डब्बा आरक्षित है..ओल इंडिया, कोई नहीं आयेगा..!
[तभी गाड़ी प्लेटफोर्म छोड़कर धीमे-धीमे आगे बढ़ती है, मगर अभी भी आस करणजी बोलते जा रहे हैं..वे, चुप होने वाले नहीं। आख़िर किसनजी, उनका हाथ थामकर कहते हैं..]
किसनजी – [हाथ थामकर, कहते हैं] – यहां से रुख्सत लीजिये, मालिक। अब ओल इंडिया ने, स्टेशन छोड़ दिया है..
आस करणजी – [होठों के नीचे ज़र्दा दबाकर, कहते हैं] – ठंडी हवा चल रही हैं, जनाब। थोड़ी हवा, खाने दीजिये ना..! काहे परेशान कर रहे हैं, आप ?
<u>किसनजी – हवा ? अरे मालिक, यह हवा अपुन लोगों की खाने की चीज़ नहीं है। हवा तो हम लोगों को खिलाया करते हैं, जो गाड़ी में बेटिकट सफ़र करते हैं।</u>
आस करणजी – फिर क्या खाये, मालकां ? मेरे भाणजे के मामी-ससुरसा, किसनजी मालक। आपसे हमारे दो क्या, तीन रिश्ते जुड़े हैं। मालकां, अब कुछ मीठा मुंह तो होना चाहिए...
किसनजी – मालकां, यही बात मैं आपको कह रहा था। अब सेणी भा'सा को साथ लेकर चलते हैं वातानुकूलित डब्बे में, वहां ताश भी खेलेंगे और साथ में खायेंगे अजमेर से लाया हुआ सोहन-हलुआ।
[तभी पाख़ाने का दरवाज़ा खोलकर, कानों में यज्ञोपवित डाले सेणी भा'सा बाहर आते हैं। फिर वाश-बेसिन के पास आकर अपने हाथ धोते हैं। हाथ धोने के बाद, कानों पर चढ़ायी हुई यज्ञोपवित को कानों से निकालकर उसे बनियान में डालते हैं..फिर वे कहते हैं..]
सेणी भा'सा – पगेलागूसा। भा'सा, खैरियत है ? इधर आपने याद किया मुझे, और यह शैतान हाज़िर हो गया हुज़ूर। फ़रमाइये जनाब, कौन-कौनसी मिठाइयां खिला रहे हैं आप-दोनों ?
किसनजी – ऐसी क्या बात है, सेणी भा'सा ? आपके आगे मिठाई क्या चीज़ है, मालकां ? आपको तो हम मिठाई से तौल दें, आख़िर आप हो हमारे **काळज़े के टुकड़े।** लीजिये सुनिये, अजमेर से मैं लेकर आया सोहन हलुआ..और आस करणजीसा मालक लेकर आये हैं, मथुरा के पेड़े।
सेणी भा'सा – वाह सा, वाह। क्या चीज़ लाये हैं, मालक ? मथुरा के पेड़े, बस यह ख़ास प्रसाद है जनाब..जो बाल गुपाल को, बड़े प्रेम से चढ़ाया जाता है। अब तो मालकां अपुन सब ज़रूर ठोकेंगे, प्रसाद।
आस करणजी – मालकां, अब बातें करने में वक़्त ख़राब मत कीजिये। चलिए वातानुकूलित डब्बे में, वहां ताश खेलेंगे और साथ में अरोगेंगे मिठाई।
[तीनों महानुभव वातानुकूलित डब्बे की तरफ़ जाते हुए दिखायी देते हैं, धीरे-धीरे पदचाप की आवाज़ सुनाई नहीं देती। मंच पर अंधेरा छा जाता है, थोड़ी देर बाद मंच वापस रोशन होता है और सामने शयनान डब्बे का मंज़र दिखायी देता है। केबीन में दयाल साहब अपनी सीट पर बैठे

हैं, तभी उनके मोबाइल पर घंटी आती है। मोबाइल ओन करके वे उसे अपने कान के पास ले जाते हैं, और कहते हैं...]

दयाल साहब – [मोबाइल से बात करते हुए] – हल्लो। मैं दयाल बोल रहा हूं जी, आप साहब कौन..? [मोबाइल से आवाज़ आती है, उसे सुनकर वे झट खड़े हो जाते हैं] साहब नमस्कार, साहब नमस्कार। इस नाचीज़ को कैसे याद किया, हुज़ूर ?

[बड़े साहब की बात सुनकर, दयाल साहब का चेहरा कमल के फूल की तरह ख़िल जाता है। वे ख़ुश होकर, उनसे कहते हैं..]

दयाल साहब – [ख़ुश होकर कहते हैं] – शुक्रिया, जनाब हुक्रिया। हां जी...हां जी। अजी साहब, आपका हुक्म, सर आँखों पर। ....

[मोबाइल बंद होते ही, वे उसे अपनी ज़ेब में रख देते हैं। फिर वे ख़ुश होकर, पड़ोस के केबीन में अपने साथियों के पास जाने के लिए अपने क़दम बढ़ाते हैं। अब-तक इस केबीन में ओमजी भी पधार गए हैं, और वे भी गुफ़्तगू में शामिल हो गए हैं। दयाल साहब केबीन में आकर, दीनजी भा'सा से ख़ुश होकर कहते हैं....]

दयाल साहब – [ख़ुश होकर, कहते हैं] – भा'सा। कमाल हो गया, बाल गुपाल का प्रसाद इधर लिया...और उधर हो गया, कमाल।

मोहनजी – [व्यंग से भरा ताना देते हुए, कहते हैं] – यही हुआ होगा, आख़िर ? बगीचे में सांप या सम्पलोटिया निकलकर, सामने आ गया होगा ? और होना, क्या ?

दयाल साहब – [कड़े लब्जों में, कहते हैं] – सांप निकलेगा उसके घर, जो करेगा बुरे काम। सुनो, अभी बड़े साहब का फ़ोन आया..उन्होंने कहा है, मेरा तबादला जोधपुर हो गया है।

दीनजी – [ख़ुश होकर, कहते हैं] – बधाई हो, बधाई हो।

रशीद भाई – ऐसी खुशियां, सभी को मिले। हुज़ूर, आज़ तो बोवनी अच्छी हुई।

रतनजी - दयाल साहब, अब आपकी तरफ़ से मिठाई पक्की ?

ओमजी – मिठाई तो बाद में खा लेंगे, पहले जनाबे आली मोहनजी को संभालो। देखिये इस समाचार को सुनकर, इनका मुंह कैसा हो हो गया ? मानो, किसी ने इनके रुख़सारों पर धब्बीड़ करता थप्पड़ जमा दिया हो ?

मोहनजी – [गुस्से में कहते हैं] – सब बिक गए, साले। सभी बदमाश है, ठोकिरे कढ़ी खायोड़े। दो दिन पहले मैं जयपुर गया था, [भद्दी गाली की पर्ची निकालकर, बाद में आगे कहते हैं] इनकी मां की.....कमबख्तों को बहुत ऊंचा लिया, मगर ठोकिरा कढ़ी खायोड़ा..निकाले नहीं, मेरे ट्रांसफर आर्डर ?

रतनजी – साहब, आप दो दिन पहले ससुराल जाने की बात कह रहे थे ? ससुराल जाते-जाते जयपुर कैसे पहुंच गये, जनाब ?

रशीद भाई – रतनजी, साहब बिल्कुल सत्य कह रहे हैं। अब आपको जुम्मे रात के दिन की बात

बताता हूं, सुनिये। बाद नमाज़ के वक़्त मेरे पास आया था, एक फ़ोन।
ओमजी – किसका फ़ोन आया, जनाब ? शायद, किसी रिश्तेदार का होगा ? और, किसका आ सकता है ?
रशीद भाई – संघ के सेक्रेटरी साहब का आया था, फ़ोन। [खीजते हुए कहते है] क्या आपके पास ही आ सकता है, संघ वालों के फ़ोन ? मेरे पास, नहीं आ सकते ? सुनो, उन्होंने कहा के 'मोहनजी जयपुर आये थे हेड ऑफिस में, और सीधे आकर वे बड़े साहब से मिले और उनसे कहा..'
रतनजी – आख़िर मोहनजी करेंगे, क्या ? तेरी-मेरी शिकायतें, और क्या ? यानि, मोती पिरोकर आ गये...
मोहनजी – [उछलते हुए] – मैंने कुछ नहीं कहा, मुझ पर विशवास रखो, कढ़ी खायोड़ा।
रशीद भाई – [ज़ोर से कहते हैं] – आपने कैसे नहीं कहा, बड़े साहब से ? आपने यही कहा, 'हम तीनों पाली, आराम से बैठे हैं...हमने चाहकर, पाली बदली करवायी। अब हम रेल गाड़ी में बैठकर आराम से, ठीक बारह या एक बजे पहुंच जाते हैं दफ़्तर..!'
रतनजी – फिर दफ़्तर में आकर 'सबसे पहले पीते हैं चाय, वह भी मसाले वाली। उसके बाद टिफ़िन खोलकर गिटते हैं रोटियां। इतने में घड़ी में बज जाते हैं, दोपहर के दो या ढाई।'
ओमजी – फिर क्या ? 'बैग उठाकर, पहुंच जाते हैं स्टेशन, जोधपुर जाने के लिये।'
दयाल साहब – [मुस्कराते हुए] – 'गाड़ी आये जल्दी या देर से, मगर उसका इंतज़ार उतरीय पुल की सीढियों पर बैठकर करेंगे। यह इतनी बढ़िया जगह है, जहां बैठकर आराम से गुफ़्तगू कर सकते हैं। क्यंकि यहां इनको, कोई कहने वाला नहीं।' क्यों मोहन लाल, मैं झूठ तो नहीं कह रहा हूं ?
मोहनजी – [आब-आब होते हुए] – कोई पूछ ले जनाब, के 'दयाल साहब कैसे हैं ? तब ऐसे नहीं कहा जाता, के आप बीमार हैं..!'
दयाल साहब – अरे मोहन लाल, तू मुझे क्यों बीमार बना रहा है..कमबख़्त ?
मोहनजी – दयाल साहब, एक बार मेरी बात सुन लीजिये..मैं उदाहरण के तौर पर कह रहा हूं।

दयाल साहब – उदहारण पेश करना है तो, झट कर यार।

मोहनजी – तब सुनिए, हुज़ूर।बात यह है कि, **'ऐसा कहने कहने से अगला हितेषी आदमी फ़िक्रमंद हो जाता है, इसलिए जनाब दयाल साहब आपके चंगे न होने पर भी कहना पड़ता है के 'दयाल साहब, खैरियत से है।'** नहीं तो जनाब, अगले हितेषी को कितना दुःख...
ओमजी – [बात पूरी करते हुए] – हितेषी को कितना दुःख पहुंचेगा..इसलिए कहना पड़ता है, के वे 'मज़े में है..ये सब पिकनिक मनाने पाली आते हैं।' क्यों मोहनजी, यही बात कही आपने ?
मोहनजी – [मुस्कराते हुए, असली मुद्दे पर आ जाते हैं] – मेरे काम में, देर कैसे हो गयी ? ठोकिरा

कढ़ी खायोड़ा, मरो कमबख्तों..! मैं ग़रीब आदमी कहां से लाऊं इतने रुपये ? रुपये होते तो मैं भी इन लोगों की तरह, इन अफ़सरों का मुंह भर देता नोटों से।

दयाल साहब – [क्रोधित होकर, कड़वे लफ्ज़ कह डालते हैं] – क्या कहता है, मोहन लाल ? ज़बान पर लगाम लगा, **जब खारची बड़े साहब आते हैं तब तू उनसे कितनी बार मिलता है..बता अब ? बता मोहन लाल, तेरी दफ़्तर में कितनी साख है ?**

मोहनजी – बहुत है, मेरी साख। ढेर सारी, जितनी धान की बोरियां अपने डिपो में नहीं है उससे ज्यादा मेरी साख है।

दयाल साहब – रहने दे, मोहन लाल। सभी अफ़सर जानते हैं, तुम क्या करते हो ? **'लोगों की चुगली खाना' हो गयी है, तुम्हारी आदत। जगह-जगह जाकर, तुम मेरी करते हो बुराई ? क्या, मुझे मालुम नहीं ?**

मोहनजी – मैं क्यों खाऊंगा, आपकी चुगली ? रामा पीर की कसम, आपकी बुराई की हो तो..अगर की हो तो तो टूटे आपकी टांग, टूटे आपके हाथ..

रतनजी – [बीच में बात काटते हुए, कहते हैं] – अरे, ओ मोहनजी। ज़बान संभालकर, बात कीजिये [झट उछलकर समीप आते हैं] ऐसे बोलो, के 'अगर बुराई की हो तो, टूटे मेरे घुटने टूटे मेरी टांग, टूटे मेरे..'

मोहनजी - [चेहरे पर मुस्कान लाते हुए, कहते हैं] – फिर आख़िर, मैं कह क्या रहा हूं ? [रतनजी की ओर उंगली करते हुए कहते हैं] आपके कहे अनुसार ही, कह रहा हूं। के 'टूटे आपके घुटने, टूटे आपकी टांग, टूटे आपके...!' अब बोलो, और कुछ कहना ?

रशीद भाई – [ज़ोर से कहते हैं] - चुप हो जाओ, रतनजी। चुप-चाप बैठ जाओ, अपनी सीट पर। [रतनजी को ज़बरदस्ती बैठाते हैं, उनकी सीट पर] मोहनजी जैसे विद्धवान, दानिशमंद जैसा आप इन्हें जानते हैं। आगे से सीख ले लो, मोहनजी जैसे महापुरुष को समझाना आपके वश में नहीं है।

ओमजी – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – ये ठहरे, महापुरुष। ऐसे महापुरुषों को क्या कहा जाता है, बताइये ? [गाते हुए कहते हैं] 'मूर्ख को माला दीनी फेंकता फिरे रे, अज्ञानी को ज्ञान दिया कहता फिरे रे।' [गंभीर होकर] मैं यह कहता हूं, के **'मूर्ख को समझाना मुश्किल है, मगर मारना आसान है।'**

[उनके इतना कहते ही, मोहनजी को छोड़कर सभी ज़ोर से ठहाके लगाकर हंसते हैं। उनके द्वारा लगाए जा रहे ये ठहाके, मोहनजी के लिए नाक़ाबिले-बर्दाश्त है। बस अब जनाबे आली मोहनजी, क्रोध के अंगारे उगलते दिखाई देते हैं। फिर क्या ? अब महापुरुष हाथ में जूता लिये लपकते हैं, बेचारे ओमजी को पीटने।]

मोहनजी – [पांव से जूता उतारकर, हाथ में लेते हैं] – ले बता भाई ओम प्रकाश। कौन है, मूर्ख ? आज़ तो मैं उसे पीटूंगा, ज़रूर.....बोल, ओम प्रकाश कौन है मूर्ख ?

[डरकर ओमजी दौड़ लगाते हैं, और पाख़ाने में घुसकर अपना बचाव कर लेते हैं। पीछे से दयाल साहब मुस्कराते हुए, कहते हैं..]

दयाल साहब – [मुस्कराते हुए] – ऐसी बात है, तो पीट ले अपना सर। लो मैं तो जाता हूं, मेरे जाने के बाद पीट लेना अपना सर। अब तो यहां रुकना, ख़तरे से ख़ाली नहीं। [दीनजी से कहते हैं] भा'सा, बाद में मिलूंगा। कल आओ तब, बालगुपाल का बीड़ा ज़रूर लेते आना। बस जाते वक़्त, मेरे शगुन अच्छे हो जायें...तो अच्छा रहे।

[इतना कहने के बाद, दयाल साहब झट घुस जाते हैं अपने केबीन के अन्दर। उनके जाने के बाद, थोड़ी देर तक श्मसान सी शान्ति छाई रहती है। ***मगर अब मोहनजी से बिना बोले रहा नहीं जाता, ऐसा लगता है 'मानो जनाब के पिछवाड़े में, चुनिये काटते जा रहे हैं?' झट उठकर वे, खिड़की से मुंह बाहर निकालकर पीक थूकते हैं। फिर साथियों की तरफ़ मुंह करके, थूक उछालते हुए कहते हैं..***]

मोहनजी – [थूक उछालते हुए, कहते हैं] – रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा, मैंने कुछ ग़लत तो नहीं कह दिया..किसी को ?

[**जहां होती हो, जूत्तों की बरसात ? वहां रशीद भाई चुप रहने में, अपनी समझदारी समझते हैं। बस, वे बेचारे चुप-चाप बैठ गये हैं। अब वे ना तो कुछ बोल रहे हैं, और ना वे उनकी तरफ़ देख रहे हैं।** तब मोहनजी उनका मुंह खुलवाने के लिये, उनको पटाने की योजना बना डालते हैं..अब वे, उनसे कहते हैं।]

मोहनजी – मेरे हितेषी तो आप ही हो, रशीद भाई। यार कढ़ी खायोड़ा, कुछ तो बोलो यार। यों क्या, चुप-चाप गधे की तरह बैठ गए ?

रशीद भाई – [खीजते हुए, कह देते हैं] – मुझे गधा मत कहिये, जनाब। मुझे किसी को परेशान करना, आता नहीं। और न हूं मैं, आपका काबुल वाला बिरादर..

मोहनजी – कौनसा बिरादर ?

रशीद भाई – जनाब वही...जो ढेंचू-ढेंचू के, मीठे सुर में गाने वाला। अब आप एक बात अपने दिमाग़ में बैठा लीजिये, मैंने कढ़ी खायी नहीं है। मुझे बार-बार आप कढ़ी खायोड़ा कहकर, मेरा सर मत खाया करें।

[रशीद भाई के अनमोल वचन सुनकर, मोहनजी आश्चर्य चकित होकर रशीद भाई का चेहरा देखने लग जाते हैं। उनको इस तरह अपनी ओर ताकते देखकर, रशीद भाई झुंझलाते हुए कह देते हैं..]

रशीद भाई – [झुंझलाते हुए, कहते हैं] – मैं आपके जैसा खोड़ीला-खाम्पा नहीं हूं, और ना मुझको आती है आपकी तरह टोचराई करनी [पिंच करना]। मुझे तो सबसे मेल-मिलाप रखना पड़ता है, जनाब।

[इतने में केबीन की पछीत से उठकर, चंदूसा नीचे आते हैं...और आकर, रशीद भाई के पास वाली सीट पर बैठ जाते हैं। फिर वहां बैठकर, करने लगते हैं परायी पंचायती।]

चंदूसा – रशीद भाई, आपने बिल्कुल सच्च कहा है। आपको सबसे रसूख़ात रखना पड़ता है, क्योंकि आप ठहरे मिलनसार। वैसे भी आपको, लोगों ने दे रखा है ख़िताब "सेवाभावी" का।

रतनजी – अरे चंदूसा, रशीद भाई का सेवाभाव गया तेल लेने। मिलनसार तो आप ख़ुद हैं, मिलनसारिता आपके चेहरे से झलकती है।

चंदूसा – मुझे तो आप लोग कहो ही मत, मिलनसार। **इस मिलनसारिता को निभाते, हथाई पर बैठे वल्लभजी भा'सा की खैरियत पूछी। ये खोजबलिये यह सुनते ही ज्वालामुखी की तरह भड़क उठे, और भड़ककर कहने लगे..**

रतनजी – ऐसा क्या बक दिया, जनाब ने ?

चंदूसा – भद्दी-भद्दी गालियां देते हुए कहने लगे 'क्यों रे, मुझे क्या हुआ ? तूझे क्या मैं बीमार लगता हूं ? डोफा, तू चाहता क्या है, मैं बीमार पड़ जाऊं ? तू आकर मेरी सेवा करेगा, क्या ? कुतिया के ताऊ, आ गया यहां..नालायक, मां के..[भद्दी गालियों की पर्ची निकालते है] बड़ा आया तेल लगाने..भाग यहां से..'

[इतना सुनकर रशीद भाई अपनी हंसी दबा नहीं पाते, और वे ठहाके लगाकर ज़ोर से हंसते हैं। अब रशीद भाई का मुख कमल के फूल की तरह खिल जाता है। इनका मुख इस तरह खिला हुआ पाकर, चंदूसा कहते हैं..]

चंदूसा – लीजिये जनाब, अब रशीद भाई का मुख कमल के फूल की तरह ख़िल गया है।

रतनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – जनाब आप, क्या बात कह रहे हैं ? सच है, **आज़कल यह कमल मुसलमानों को लुभाने लग गया है।** इन मुसलमानों के थोक-बंद वोट, इस बार बी.जे.पी. को मिलने वाले हैं। [रशीद भाई से कहते हैं] क्यों रशीद भाई, सच कहा ना ?

रशीद भाई – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – बात तो सही है, तभी इनकी पार्टी के हाईकमान ने बना दिया है, मुझे..मोहल्ला-समिति का, अध्यक्ष। जनाब, अब आपको क्या कहूं ? ये कमबख़्त मोहल्ले वाले मेरा असली नाम भूलकर, अब मुझे कमल खां कहकर पुकारने लगे हैं।

मोहनजी – [रशीद भाई से थोडा दूर हटते हुए, कहते हैं] – धुर-धुर कादो-कीच। दूर हट रे, तेरे अन्दर से कीचड़ की बदबू आ रही है..कहां कीचड़ में लोट लगाकर आ गया, जानता नहीं कमल कीचड़ में खिलता है ? अब मुझे यहां से उठना ही होगा, छी छी..आ रही है, कीचड़ की बदबू..

रशीद भाई – क्यों दूर हटते हो, मोहनजी ? अभी-तक मैं कीचड़ से भरकर, आया नहीं हूं। मगर आपके पास बैठ गया, तो ज़रूर 'मैं आपके द्वारा उछाले जा रहे थूक और ज़र्दे की बदबू से, ज़रूर वास जाऊंगा।' इस कारण, मैं ख़ुद दूर हट जाता हूं। यह ज़र्दा व थूक तो जनाब, कीचड़ से...

रतनजी – [जुमला पूरा करते हुए] – कीचड़ से भी, ज्यादा बदबूदार है। अगर आप इस बदबूदार ज़र्दा व थूक से भर गए, तो सच्च कहता हूं रशीद भाई..मैं उठकर, किसी दूसरे केबीन में चला

जाऊंगा। मैं आपके पास नहीं बैठूंगा, **मुझे तो जनाब यह पिछवाड़े से छूटती हुई तोप और इस ज़र्दे की बदबू एकसी लगती है।**

मोहनजी – [मुंह बिगाड़कर, कहते हैं] – चलिए, मैं ही चला जाता हूं। अब जाकर मैं, किसी दूसरे केबीन में बैठ जाऊंगा। फिर आप लोग मेरी नहीं, आप अपनी बदबू लेते रहना..बैठे-बैठे।

[केबीन का वातावरण ठीक हो जाने पर, ओमजी केबीन में पधार गए हैं और मोहनजी के नज़दीक आकर बिराज़ गए हैं।]

ओमजी – [नज़दीक आकर, मुस्कराते हुए कहते हैं] – नहीं जनाब, आप कैसे रुख्सत हो सकते हैं ? आप तो हमारे जीव की जड़ी हैं, कढ़ी खायोड़ा। कहिये, मैंने सच कहा या नहीं ?

[दोस्तों के बीच मोहनजी के सम्बन्ध मधुर रहते हैं, वे झट भूल गए हैं के "अभी वे पांव का जूता लिए ओमजी को पीटने के लिए उतारू हुए थे ?' इस कारण मोहनजी अपना तकिया कलाम "कढ़ी खायोड़ा" सुनकर, पुलकित हो उठते हैं। उनके चेहरे पर, मुस्कान छा जाती है। इतने में रशीद भाई, अलंकारी भाषा का प्रयोग करते हुए कहते हैं..]

रशीद भाई – आप और हम कैसे रह सकते हैं, अलग-अलग ? कभी पतंगा, शमा से दूर रह सकता है ?

चंदूसा – पतंगा शमा के पास जाकर, जलकर भस्म हो जाता है। क्या मोहनजी के योग, अब ऐसे ही आ गए हैं जलने के ? कुछ नहीं, जल गए तो मांग लेंगे ट्यूब अपने सेवाभावी रशीद भाई से। नहीं तो दीनजी भा'सा लेकर आ जायेंगे, डिसपेंसरी से यह बरनोल ट्यूब।

रतनजी – पैसे से ख़रीदी हुई चीज़, मोहनजी को अच्छी लगती नहीं। इसलिए भा'सा ज़रूर, सरकारी डिसपेंसरी से मुफ़्त में लेकर आ जायेंगे..बरनोल ट्यूब।

[अब मोहनजी सबके मुंह ताकने लगते हैं, वे समझ नहीं पाते..आख़िर माज़रा क्या है ? ये लोग मेरी तारीफ़ कर रहे हैं, या मेरी हंसी उड़ाते जा रहे हैं ? इतने में ओमजी, आग में घास का पूला डालते जैसे शब्दों में कह देते हैं..]

ओमजी – देखिये चंदूसा, मैं तो हूं शनि। ये रतनजी और रशीद भाई है, राहू और केतू। हम तीनों ग्रह अगर किसी आदमी को एक साथ लग जाये, तो चंदूसा उस अगले आदमी की क्या हालत होगी ? बस, आप पूछो ही मत। अब चंदूसा आप यह समझ लीजिये, हम ऐसे ही चिपकू ग्रह हैं के...

रशीद भाई – [मोहनजी की तरफ देखते हुए, कहते हैं] - साथ नहीं छोड़ते हैं, समझ गये मोहनजी ? आप जहां जायेंगे, हम तीनों ग्रह एक साथ आपके साथ पीछे-पीछे..समझ गए, मोहनजी ? आप जहां बदली करवाकर जायेंगे, हम भी आपके पीछे-पीछे...

मोहनजी – [झुंझलाते हुए, कहते हैं] – फिर चले जाइए आप भी जयपुर, क्यों चूकते हो ऐसा मौक़ा ? काट लीजिये जनाब, एक जयपुर का चक्कर। फिर इस ग़रीब को क्यों परेशान कर रहे हैं, यहां बैठकर ?

ओमजी – जयपुर जाना ज़रूर चाहते हैं, वहां जाकर सीधा मिलूं बड़े साहब से। मगर, करूं क्या ? अब उनको कहूं, क्या ?

रशीद भाई – मगर भाई, अब बाधा क्या है ? कहीं किसी खडूसिये ने चुगे हुए धान में, कंकर मिला दिये क्या ?

ओमजी – बात कुछ ऐसी ही है, कल ही मैंने युनियन के सक्रेटरी से फ़ोन पर बात की। उनसे कहा 'भाई साहब, मेरी बदली जोधपुर करवा दीजिये ना। मगर ऐसा ज़वाब दिया उन्होंने, मेरी पूरी आशा ही समाप्त हो गयी।' अब क्या बताऊं, आपको,? बात ऐसी है, 'खीर बनायी जतन से, चरखा दिया जलाय। आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा।'

चंदूसा – कुत्ता खा गया ? [आश्चर्य चकित होने का अभिनय करते हुए, कहते हैं] ऐसा है कौन, जनाब ? कोई खडूसिया आकर, कई महीनों की मेहनत पर पानी डाल गया ? आख़िर, ऐसा बलोकड़ा [ईर्ष्यालु] है कौन ?

[मोहनजी पर वहम करते हुए, सभी मोहनजी को देखते हैं...! उनको इस तरह विस्मित होकर देखते रहने से, मोहनजी अपनी हंसी दबा नहीं पाते..वे खिड़की से बाहर झांकते हुए, मींई मींई निम्बली की तरह हंसते जाते हैं। थोड़ी देर तक सन्नाटा छाया रहता है, फिर बिना बोले उनसे रहा नहीं जाता। अन्दर मुंह लेकर अब वे, ताना देते हुए कहते हैं..]

मोहनजी – आंखें तरेरकर क्यों मेणे की तरह देखते जा रहे हो, मुझे ? इसमें, मेरा क्या दोष ? आप लोग, बड़े चतुर निकले ? आप लोगों ने मुझे बिना बताये अपने तबादले का आवेदन, अग्रेषित करवाकर भिजवा दिये जयपुर ?

रतनजी – मोहनजी, क्यों झूठ बोलते जा रहे हैं आप ?

मोहनजी – चुप रहो, रतनजी। आप लोगों ने इतना भी मुझसे नहीं पूछा, के "मोहनजी, जोधपुर बदली करवाने की अर्जी आप कब भेज रहे हैं ?' मगर आप कढ़ी खायोड़ो, आपने यह कैसे सोच लिया, के 'यह मोहनजी तो है, पागल। इसे क्या पता पड़ता है, यदि हम लोग चुप-चाप जयपुर अपनी अर्जी भेजकर..ख़ुद-ख़ुद की बदली, करवा लें जोधपुर...?'

[इतना कहकर मोहनजी ज़र्दे को अपने होठ के नीचे दबाते हैं, फिर गम्भीर होकर आगे कहते हैं..]

मोहनजी – [गंभीर होकर कहते हैं] – अब आप लोग अपने दिमाग़ में यह बात बैठा लेना, के 'यह मोहन लाल है, कुबदी नंबर एक। यह आपको इस तरह कैसे छोड़ सकता है, बिना अपना चमत्कार दिखाये ?'

ओमजी – अब यह बात बिल्कुल साफ़ हो गयी है, के 'बिल्ली ना तो किसी को खाने देती है, और ना वह ख़ुद खाती है। मगर, चीज़ का सत्यानाश करके चली जाती है।' इनके कारनामें के कारण, हमारा आवेदन-पत्र इस आपत्ति के साथ लौटकर आ गया के 'आपका ठहराव पूरा हुआ नहीं, आवेदन वापस लौटाया जाता है।'

[ओमजी की बात सुनकर, मोहनजी ख़ुश हो जाते हैं के 'अच्छा सबक मिल गया, इन लंगूरों

को।' बस, अब वे होंठों में ही मुस्कराते जा रहे हैं। उन तीनों की रोवणकाळी सूरत देखकर, उनका रोम-रोम पुलकित हो उठता है। तब, रतनजी उनके मुंह पर ही कह देते हैं..]

रतनजी – क्या करे, जनाब ? हमारा तो योग बना हुआ है आराम से बैठने का, मगर दफ़्तर में सारे दिन क्या करें ? आपके जैसे अफ़सर बैठे हैं, टोचराई करने वाले, जो आराम से बैठने देते नहीं।

रशीद भाई – इधर यह सरकार देती नहीं मास्क, उधर ये हितंगिये अफ़सर करते नहीं डिमांड। फिर क्या ? हम लोगों ने अपना मुंह बंद रखते हुए, चुप-चाप इस अस्थमा की बीमारी को मोल ले ली..!

रतनजी – आप अफ़सर लोग बैठे रहते हैं, कूलर के पास..ठंडी-ठंडी हवा खा रहे हैं। आपको, क्या पत्ता, आपके अधीनस्थ कर्मचारियों के क्या हाल है ? आप जैसे अफ़सर जीमते हैं, रावले। कभी बदन से पसीना निकालते कोई काम दफ़्तर में किया हो, तो आपको मालुम हो..के 'आराम क्या चीज़ होती है..?'

मोहनजी – देखिये, रतनजी कढ़ी खायोड़ा। मुझे भी यह सरकार नहीं देती है, ऐसी सुविधा ? वह डी.एम. ख़ुद बैठा है, वातानुकूलित कमरे में और घुमता रहता है वातानुकूलित कारों में।

रतनजी – आप अपनी बात कीजिये, जनाब। कभी इस सुविधा लेने के लिये, आपने डी.एम. से कभी बात की या नहीं ?

मोहनजी – अरे यार क्या कहें उनसे, या उनके पास अपनी डिमांड रखें ? यहां तो उनका एक ही ज़वाब रहता है, के 'बज़ट नहीं है।' तब मैं आपकी तरह सवाल करता हूं, के 'जनाब, आप बैठे हैं वातानुकूलित कमरे में। तब, बज़ट तो होगा ही ?'

रशीद भाई – जी हां, फिर उन्होंने क्या कहा ?

[मोहनजी खिड़की से मुंह बाहर निकालकर, पीक थूकते हैं। फिर मुंह अन्दर लाकर, आगे कहते हैं..]

मोहनजी – [होठ के नीचे ज़र्दा दबाकर, आगे कहते हैं] – होता क्या, वे ही ढाक के पत्ते तीन और क्या ? इन उच्च अधिकारियों में है कहां, इतनी ताकत..जो सुविधा दे सके ? सुविधा उपलब्ध कराने वालों में होता है, डेड बेंत का कलेजा। और साथ में रहना पड़ता है ईमानदार, बिल्कुल मेरे जैसा।

ओमजी - जी हां, आपने सही कहा। यह ईमानदारी का ठप्पा, आपके ऊपर ही लगा हुआ है।

मोहनजी – [ख़ुश होकर, आगे कहते हैं] – ठीक है, ओमजी कढ़ी खायोड़ा। मैं यही बात आपसे कह रहा था, इस ठप्पे के कारण ही मैं अलग़ से तला जा रहा हूं। यह सरकार तो रही भोली, ऐसे कुदीठ आदमियों को रोटी खाने के लिए यह नौकरी दी। मगर ये डोफे बहुत होशियार निकले, इस सरकार को घुण की तरह खोखली बना डाली।

रतनजी – उन लोगों में, आपकी भी गिनती होती होगी ? आप भी उनसे कम पड़ने वाले नहीं,

उनसे आप चार क़दम आगे ही रहते होंगे ?

मोहनजी – रतनजी दफ़्तर के टाइम की ज़रूर करता हूं, चोरी। मगर इनकी तरह मैं करता नहीं, पैसे के घोटाले। आप तो जानते ही है, ये बातें..के "स्टोक में कभी धान की कमी आ जाती है, किसी लोस के कारण.."

रतनजी – फिर आप क्या करते हैं, जनाब ? स्टोक बराबर कैसे रखते हैं, आप

मोहनजी – झट ख़ुद के पैसे ख़र्च करके, बाज़ार से धान मंगवा लिया करता हूं। इस तरह मैं, पूरा एक्यूरेट स्टोक रख़ता हूं।' इस आदत के कारण कढ़ी खायोड़ा, मैं घर फूंककर तमाशा देख़ता हूं।

रतनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – आप कैसे घर से भुगत सकते हैं, जनाब ? आप जैसे आदमी लूणी स्टेशन पर एक कप चाय नहीं पिला सकते, वे कैसे घर के पैसे ख़र्च करके लोस पूरा करेंगे ?

रशीद भाई – [मुस्कराते हुए मोहनजी का डायलोग, उनकी की आवाज़ में बोलते हैं] – आपको कैसे अच्छी लगती है, यह बासी चाय ? आपको मालुम नहीं, ये वेंडर क्या करते हैं ?

चंदूसा – [मोहनजी की आवाज़ में, उनका ही अधूरा जुमला बोलते हैं] – सूर्य नगरी एक्सप्रेस के आने के वक़्त जो चाय बनती है, उसी चाय को ये वेंडर दिन-भर काम में लेते हैं। अब ऐसी बासी चाय आपको पाकर, क्या आपको मारना है ? [अपनी आवाज़ में कहते हैं] जनाबे आली मोहनजी, क्या आप यही बात कहना चाहते हैं ?

रतनजी – मोहनजी आप चाय पिलाते हैं, तो बासी चाय भी पी लेंगे। मगर, कोई पिलाने वाला तो हो..? वह भी, प्रेम से पिलाने वाला ? यह तो आप भी जानते हैं, के...

चंदूसा – आपके कहने का मफ़हूम क्या है ?

रतनजी – यह कह रहा हूँ चंदूसा कि, **'चबीना मैं चबा नहीं सकता। चूषने की कोई चीज़ हो तो चूष लूं, चाटने की कोई चीज़ हो तो चाट लूं। कोई भला आदमी साज़ बजा रहा हो, तो नाच लूंगा। और कोई काम कहो, वही कर लूंगा।'**

ओमजी – जी हां, बस..कोई आर्डर मारने वाला आदमी, तो होना चाहिए ?

चंदूसा – चलिए, मैं आर्डर मरता हूँ, आप ज़रा नाचकर दिखलाइये।

रतनजी – इस रतन प्यारे का डांस मुफ़्त में देखने को नहीं मिलता, आप जैसे साहेबान नोटों की थैली ख़ाली करें तो, यह बन्दा कोई भी नृत्य हो प्रस्तुत कर सकता है। कहिये, तैयार हैं आप ?

ओमजी – नोटों की थैली खोलने...

[मगर, यह क्या ? चंदूसा की बोलती हो जाती है बंद, जेब में ढेर सारे नोट हो तो उनकी यह ज़ुबान खुले। अब रतनजी चुप रहने वाले कहाँ ? जनाब झट कह उठे..]

रतनजी – चलिए, चंदूसा तो आर्डर मारेंगे नहीं। अब मोहनजी से पूछ लिया जाय..हुज़ूर क्या आप तैयार हैं ? कहिये, हुज़ूर कहिये। जनाब दिल होना चाहिए, पैसे ख़र्च करने का। तब तो हम पी लेंगे पंद्रह दिन पुरानी लस्सी, जो फ्रिज में रखी हुई हो। कोई खिलाये रसगुल्ला तो वो भी खा लेंगे, चाहे उसमें खांड की चासनी डाली हुई हो।

ओमजी – कहीं जनाब, आप लूणी के रसगुल्लों की बात तो नहीं कह रहे हैं ?

रतनजी – और क्या ? कोई ऐसा सेवाभावी, तो होना चाहिये। मगर ये भले आदमी अब मुझे लोहे के चने चबाने की बात कहेंगे, जिसकी अब ताकत बदन में रही नहीं।

मोहनजी – [गंभीर होकर कहते हैं] – देखो भाई, मैं तो हूं ईमानदार अफ़सर। मेरी ऊपर की कमाई है नहीं, ज्यों आप कहते जाओ और मैं ख़र्च करता जाऊं। मुझे भी, अपने नन्हे बच्चों को पालना है। घर में एक-मात्र कमाने वाला हूं, मुझे कुछ हो गया तो मेरे बच्चों को कौन पालेगा ?

ओमजी – [मुंह नज़दीक लाते हुए, कहते हैं] - बात तो आपने सोलह आन्ने सही कही, क्योंकि रिटायर भी आप जल्दी होने वाले हैं।

मोहनजी – [मुंह से ज़र्दा और थूक उछालते हुए, कहते हैं] – बस यही कारण है, ओमजी कढ़ी खायोड़ा।

[ज़र्दा और थूक की बरसात से बचने के लिए, ओमजी झट अपना मुंह दूर ले जाते हैं..मगर, मोहनजी के क्या फर्क पड़ने वाला ? वे तो बोलते हुए, ज़र्दा और थूक उछालने में पीछे रहने वाले नहीं।]

मोहनजी – मुझे फ़िक्र है, कढ़ी खायोड़ा। रिटायर होने के बाद, मैं अपने छोटे-छोटे बच्चों को कैसे पालूंगा ? [खिड़की के बाहर पीक थूकते हैं] एक बात कह देता हूं, **भले कुछ भी हो..मैंने कभी अपने सफ़ेद कपड़ो के ऊपर, भ्रष्टाचारी होने का दाग लगने नहीं दिया।**

रशीद भाई – अरे साहब, आपने सफ़ेद कपड़े नहीं पहने हैं, बल्कि आपने काले रंग का सफारी सूट पहन रखा है। वह भी, लक्की नंबर एक।

ओमजी – अरे मालिक, क्या कहें ? काले वस्त्र के ऊपर कोई दाग लगता ही नहीं, कैसा भी दाग हो वो आसानी से छुपा लेता है। क्यों जनाब, बात सही कही या नहीं ?

मोहनजी – काले वस्त्र पहनने का मुझे कोई परहेज नहीं है, मेरे बाप कढ़ी खायोड़ो। क्योंकि काले तो ख़ुद श्रीकृष्ण भी है, कहते हैं आज़ भी वे वृन्दावन में राधाजी के संग विचरण करते हैं।

रतनजी – काले रंग का तो जनाब मींढा भी होता है, और वह साल में दो बार मूंडा जाता है। मगर आप ठहरे महापुरुष, साल में एक बार भी मूंडे नहीं जाते।

मोहनजी – यही बात मैं आपको समझा रहा था, कढ़ी खायोड़ा। अच्छा हुआ, आपने मुझे याद दिला दी। मेरे ऊपर के अफ़सर मुझे कहते हैं, "बोलिए प्रिंस मोहन लाल। क्या देते हो, मुझको ?

जिसके एवज़ में, मैं तुम्हारे लिए लगा दूं कूलर ?”
रतनजी - और आगे क्या कहा, उन्होंने ?
मोहनजी – उन्होंने कहा, “बोलो मोहन लाल तुम कुछ हमारा ध्यान रखोगे, तो कूलर क्या बड़ी चीज़ है ? तुम्हारे कमरे को, वातानुकूलित बना दूंगा।”
रशीद भाई – बाद में, आगे क्या हुआ जनाब ?
मोहनजी - होना क्या, कढ़ी खायोड़ा ?‘ मैं अपने उज़ले-बुर्क वस्त्रों के ऊपर, कैसे दाग लगा दूं ? इनके लिए, क्यों मैं इन ठेकेदारों को परेशान करूं ?’ क्या याद नहीं है, तुम्हें ? अपुन जब, भगत की कोठी के डिपो में थे तब...
रशीद भाई – जनाब, हम तो भूल गए। आप वापस कहकर, याद दिला दीजिये।
मोहनजी – इस तरह अफ़सर लोग, मुझसे हो गए नाराज़। फिर, होना क्या ? इनके कोप से बचने के लिये, मुझे खारची डिपो में आपे-थापे बदली करवानी पड़ी। [दुखी होकर] ए रामा पीर, अब इस खारची से कैसे पीछा छूटेगा ? [ऊपर देखते हुए, हाथ जोड़कर कहते हैं] ओ मेरे रामसा पीर अजमालजी के कुंवर, अब मेरा क्या होगा ? कब होगी, मेरी बदली ?
[दिल-ए-दर्द अब आँखों में जा पहुंचा, मोहनजी का गला अवरुद्ध होने लगा..बस कसर एक ही बाकी रही, बस उनकी आँखों से आंसू नहीं गिरे। इतने में उन्हें हंसी का किल्लोर सुनायी देता है, मोहनजी सामने क्या देखते हैं ? सामने दयाल साहब आकर खड़े हो गए हैं, और वे हंसी के ठहाके लगाकर कह रहे हैं, के...]
दयाल साहब – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – मोहन लाल सांई, अब रोकर अपना दिल मत दुखा। आख़िर रामा पीर ने सुन लिया, तेरा हेला [अरदास]। तेरे तबादले के आदेश, मेरे आदेश के साथ ही निकले हैं। बस, मैं तूझे कहना भूल गया था। अब तो तू रोज़ देखेगा, जोधपुर का क़िला।
[समाचार सुनते ही, मोहनजी का चेहरा कमल के फूल की तरह ख़िल जाता है। मगर, यहां बैठे रामापीर के भक्त “ओमजी”। वे जयकारा लगाने में, पीछे रहने वालों में नहीं। वे रामसा पीर को धोक देकर, ज़ोर से जयकारा लगाते हैं।]
ओमजी – [दोनों हाथ ऊपर ले जाते हुए, ज़ोर से कहते हैं] – बोलो रे, बोलो रामसा पीर की...
सभी – [ज़ोर से बोलते हैं] – जय हो। जय हो।
ओमजी – [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – **बाबा भली करे।**
मोहनजी – [हाथ जोड़कर, कहते हैं] – बाबा सबका भला करे। जय बाबा की। [ओमजी से कहते हैं] ओमजी, आपका और मेरा प्रकरण एक समान है। क्योंकि, दोनों के रिटायरमेंट पास-पास है। कढ़ी खायोड़ा, अब आप भी जयपुर जाकर धोक देकर आ जाइये। सौ फीसदी, आपका काम हो जायेगा।
दयाल साहब – जी हां, मैं अभी यही कहने इधर आया..के ‘इस वक़्त उन लोगों के ही तबादले हो रहे हैं, जिनकी सेवानिवृति तिथि नज़दीक है।’ [मोहनजी से] **क्यों मोहन लाल, सही कह रहा हूं या**

नहीं ? अब तो तू मेरे बगीचे में, सांप को नहीं बुलायेगा ? अब सबको पिला दे, चाय।
रतनजी – अब तो मोहनजी आपको पिलानी होगी मसाले वाली चाय, वह भी एम.एस.टी. कट।
[अब तो ऐसा मालुम हो रहा है, मोहनजी ख़ुश हो गए हैं और "वे झट ही पैसे ख़र्च करने के लिए, इन लोगों की शीशी में उतरने वाले हैं ?" बस, फिर क्या ? फटके से ज़ेब में हाथ डालकर निकाल लेते है, एक कड़का-कड़क नोट दस का। फिर उसे रशीद भाई को थमाते हुए, दानवीर कर्ण की तरह अलग से कहते हैं..]
मोहनजी – [नोट थमाते हुए, कहते हैं] – लो रशीद भाई, पिला दो सबको एम.एस.टी. कट मसाले वाली चाय।
[गाड़ी की रफ़्तार कम हो जाती है, सालावास स्टेशन आने पर गाड़ी रुक जाती है।]
रतनजी – [लबों पर मुस्कान छोड़ते हुए, कहते हैं] – लीजिये जनाब, आज़ भी मोहनजी ने सालावास जैसी ठौड़ पर आर्डर मारा है..के, लेकर आओ एम.एस.टी. कट चाय।
ओमजी - ठोकिरा, जहां चाय की दुकान को छोड़ यहां एक ढाबा भी नहीं..कहां से लायेगा अब यह चाय, यह आपका सेवाभावी...?
रशीद भाई – नोट कड़का-कड़क है, साहब का। बहुत दिनों से इनकी ज़ेब को गर्मी देता रहा, कुछ नहीं भाइयों, अपुन सब जोधपुर स्टेशन पर पी लेंगे चाय और कर लेंगे स्नेह-मिलन।
[अब कहीं, यह दुनिया का सातवां अचूम्भा दिखाई न दे जाय ? एम.एस.ती. गपास्टिक रेडियो यह ख़बर प्रसारित न कर दे, के "आज़ कंजूसों के उस्ताद मोहनजी ने सभी दोस्तों को चाय पिलाकर, कंजूसों के इतिहास में अपने नाम के आगे कालिख पोत दी है ?" कंजूसों की ज़ेब से पैसे निकलवाना, कोई आसान काम नहीं। बहुत कोशिशों के बाद इनकी ज़ेब से निकला है, यह नोट। अब इस कड़का-कड़क नोट को रशीद भाई देखते-देखते, होते जा रहे है चितबंगे। वे तो अपनी ज़ेब से उस नोट को, बार-बार निकालकर देखते जा रहे हैं। बस अब यही मौक़ा है, मोहनजी के लिये..नोट को, बाज़ की तरह झपटने का। बस, फिर क्या ? होशियार मोहनजी, अब यह मौक़ा कैसे चूकते ? जैसे ही रशीद भाई उस नोट को देखने के लिए, अपनी ज़ेब से निकालते हैं...तभी वे बाज़ के तरह, उस नोट पर झपाट्टा मारकर उनसे छीन लेते हैं। फिर नोट को अपनी ज़ेब के हवाला करके, वे मुस्कराते हुए कहते हैं..]
मोहनजी – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] - अरे यार, क्या करते हो रशीद भाई कढ़ी खायोड़ा ? कम से कम जोधपुर स्टेशन नहीं आये तब-तक तो, इस ज़ेब को गरम रहने दीजिये।
[ढ़ाक के पत्ते वही तीन, कंजूस अपनी कंजूसी छोड़ नहीं सकता। बस मोहनजी ने कंजूसी का यह शानदार करिश्मा दिखलाकर, आखिर कंजूसों के इतिहास में कंजूसो का उस्ताद नामक ओहदे को बकरार रखा। यह मंज़र देखकर सभी, मोहनजी को खारी-खारी नज़रों से देखते जा रहे हैं। तभी मोहनजी मुस्कराते हुए, कहते हैं..]
मोहनजी – [मुस्कराते हुए कहते हैं] – क्यों मेणे की तरह मुझे देखते जा रहे हो, कढ़ी खायोड़ो ?

कह दिया ना आप लोगों को, के 'चाय पिला दूंगा।' क्या अब, आप मेरी जान लेकर मुझे छोड़ोगे ? ख़ाली चाय ही, पीनी है आप लोगों को..?

ओमजी – जान क्या लेवें साहब, आपकी ? आप तो ऐसे आदमी हैं, जो केवल लेने में ही आगे रहते हैं। और देने में, रामजी का नाम। आपकी ज़ेब से पैसे निकलवाना, कोई आसान काम नहीं। ख़ुद को कोल्हू के बैल की जगह जुतवाकर तेल निकालना, और आपकी ज़ेब से पैसे निकलवाना दोनों बराबर है।

रशीद भाई – आप तो जोधपुर स्टेशन आते ही कह देंगे, के 'आप लोगों को चाय पिला दी तो, फिर मेरे पास सिटी-बस का किराया भी नहीं बचेगा। फिर कढ़ी खायोड़ा, क्या आप मुझे पैदल घर भेजेंगे ?'

[इन लोगों के वार्तालाप से छिड़ी बहस से, इन लोगों की आवाज़ के सुर तेज़ होते जा रहे हैं। जिससे, पछीत पर सो रहे 'छंगाणी साहब' की नींद खुल जाती है। नींद के खुलते ही उन्हें याद आती है, उनकी **"कलेजे की कोर"** यानि ससुराल से आये जूते। जिनकी वे बीसों पैबंद लगवाकर, वे उनकी उम्र बढाते जा रहे हैं। अब वे उन पर हाथ फेरकर तसल्ली कर लेते हैं, के 'कोई खोडीला-खाम्पा यहां आया नहीं..जो टोचराई करता हुआ, उनके कलेज़े की कोर यानि जूतो को कहीं छुपाकर आ गया हो ?' तसल्ली होने के बाद, वे बरबस बोल उठते हैं..]

छंगाणी साहब – [जूतो पर हाथ फेरते हुए, कहते हैं] – सलामत है, जय हो तापी बावड़ी वाले बालाजी की। बाबजी सा आपने सलामत रखे, मेरे जूते। खम्मा घणी, मेरे बाबजी।

[इधर चंदूसा अंगड़ाई लेकर, उठते हैं। उठते ही वे छंगाणी साहब को जूतो पर हाथ फेरते देखकर, मुस्कराते हैं। उनकी बात को सुनते ही, वे छंगाणी साहब से कहते हैं..]

चंदूसा – संध्या आरती की वेला, आप क्यों जूतो पर हाथ लगा रहे हैं ?

छंगाणी साहब – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – अरे चंदूसा, सावधानी रखनी पड़ती है। अभी-तक मेम साहब लाये नहीं, बाटा कंपनी के नए बूट।

[इतना कहकर छंगाणी साहब नीचे आकर, चंदूसा के पास बैठ जाते हैं। फिर, वे कहते हैं..]

छंगाणी साहब - वे कह रहे थे चंदूसा, के 'बरसात के दिनों को जाने दीजिये, नहीं तो वे बूट ख़राब हो जायेंगे..इसलिए, बाद में खरीद लेंगे।' बोलो चंदूसा, ठीक है ? बोलो, मैंने क्या कहा ?

चंदूसा – [ज़बरदस्ती हूंकारा भरते हुए, कहते हैं] – जी हां, जनाब आप कह रहे थे..के, बरसात के दिनों को जाने दीजिये। बाद में खरीद लेंगे, जूते..नहीं तो, जूत्ते ख़राब हो जायेंगे।' ठीक है जनाब, आप यही बात मेरे मुख से कहलाना चाहते थे ?

छंगाणी – ठीक है, चंदूसा। बाद में चंदूसा, मेम साहब ने ऐसे कहा...

[उन दोनों के बीच चल रही गुफ़्तगू मोहनजी के कानों को सुनायी दे जाती है, उस गुफ़्तगू को सुनकर मोहनजी ज़ोर से कहते हैं..]

मोहनजी – पहले जाकर लघु शंका का निवारण कर लीजिये, छंगाणी साहब। नहीं तो यह गाड़ी

रवाना होने को है, फिर आप चेन पकड़े घुमते रहना ठौड़-ठौड़। अगर आप नहीं जाना चाहते हैं, तो बहुत ही अच्छा। चलो मैं जाकर आ जाऊं, युरीनल।

[छंगाणी साहब की, कहां है उठने की इच्छा ? जब एक बार मेम साहब का टोपिक चल जाय, उसके बाद वे कभी उसे अधूरा छोड़कर उठते नहीं। फिर क्या ? जनाबे आली छंगाणी साहब व्यस्त हो जाते हैं मेम साहब का पुराण सुनाने, और मोहनजी युरीनल की तरफ़ जाते दिखायी देते हैं। तभी सामने की पटरी पर, एक मालगाड़ी तेज़ी से गुज़रती हुई दिखायी देती है। युरीनल के नज़दीक वाले केबीन में, जुलिट अकेली बैठी दिखायी देती है। अब एक वृद्ध आदमी पुलिस के जवानों के साथ, इस केबीन में दाख़िल होता है। उसके पीछे-पीछे दो हट्टे-कट्टे सफ़ेद कपड़े पहने जवान, इस केबीन में दाख़िल होते हैं। जुलिट को देखते ही, वह वृद्ध आदमी उसके पास आकर बैठ जाता है। सफ़ेद कपड़े पहने जवान, युरीनल के नज़दीक जाकर खड़े हो जाते हैं। और वहां खड़े-खड़े इधर-उधर निगाहें डालकर तसल्ली कर रहे हैं, के 'कोई व्यक्ति, इधर आ तो नहीं रहा है ?' गाड़ी चल देती है। अब वह वृद्ध आदमी, जुलिट से बात करता हुआ दिखायी देता है।]

जुलिट – मैं सच कहती हूं, उनके साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। आख़िर तुमने ऐसी गंदी बात, अपने दिमाग़ में सोच भी कैसे ली ? तुम्हारा दिमाग़, क्या घास चरने गया है ? छोटी सी बात समझ नहीं पाते, के "एक रोगी और नर्स के बीच, क्या रिश्ता होता है ?" ख़ाक...भाड़ झोंकी, इस सी.आई.डी. महकमें में आकर।

वृद्ध – मैं जब तक पूरी जांच-पड़ताल नहीं कर लूं, जुलिट...तब-तक मैं, तुम पर कैसे भरोसा करूं ? अब क्या कहूं, जुलिट ? रेलगाड़ियों में घुमते-फिरते, मैं कई उल्टी-सीधी बातें सुनता आया हूं..तुम्हारे बारे में। मगर...

जुलिट – [बात काटती हुई, कहती है] – तुम इतना भी नहीं जानते, या जानना नहीं चाहते ? निरे उल्लू ठहरे, तुम। एक सेवाभावी नर्स को, मां, बहन, भुआ, भतीजी वगैरा सभी के रोल, निभाने पड़ते हैं, ताकि वह मरीज़ के अन्दर जीने की ख्वाहिश पैदा कर सके। उस मरीज़ में आत्म-बल पैदा हो सके, जिससे वह बीमारी से लड़ने की ताकत को..वह अपने अन्दर, जुटा सके।

वृद्ध – वाह जुलिट, वाह। तूने तो नर्सिंग ट्रेनिंग करने के साथ-साथ, अभिनय-कौशलता भी हासिल कर ली है ? अब तूझे समझना, कोई आसन काम नहीं रहा।

जुलिट – चुप रहो, पहले बात पूरी सुन लिया करो। **तुम नहीं जानते नर्स का कर्तव्य है, वह रोगी के ऊपर प्रेम बरसाकर पहले उसकी पीड़ा कम कर दे। जिससे उस रोगी में, बीमारी से लड़ने की शक्ति आ जाय। जिसके लिये..**

वृद्ध – और, कुछ कहना ?

जुलिट – सुन लीजिये, एक बार। बार-बार, कहूंगी नहीं। **अपना-पन या सात्वना के, दो बोल ही काफ़ी है। जनाब फिर, ऐसा मैंने क्या कर डाला..? एक ट्यूब ही मसली है, मैंने। बोलिये, ऐसा कौनसा ग़लत काम कर डाला मैंने ?**

[किसी के द्वारा उसके ऊपर झूठे आरोप थोप दिए जाना, जुलिट के लिये तक़लीफ़देह बन जाता है। जो उसके लिये, नाक़ाबिले-बर्दाश्त है। दुःख के मारे उसके नयनों में आंसू आकर रुक जाते हैं, तभी उसे युरीनल से बाहर निकलते हुए मोहनजी दिखायी दे जाते हैं। उनको देखते ही वह, उन्हें ज़ोर से आवाज़ देकर कहती है..]

जुलिट – [ज़ोर से आवाज़ देती हुई, कहती है] – ओ मोहनजी, इधर आकर समझाओ इन्हें..आपका और मेरे बीच, क्या रिश्ता है ?

[कोई ग़लती नहीं होने के बाद भी, इतने सारे आरोप..? अब सहन करने की ताकत, जुलिट के अन्दर नहीं रहती। बेचारी, फफक-फफककर रोती जा रही है। उसकी यह हालत देखकर, मोहनजी को उस पर रहम आने लगा। यह मंज़र देखकर, वे ख़ुद दुखी हो जाते हैं। वाश-बेसिन के पास जाकर हाथ धोते हैं, फिर आकर जुलिट के सामने वाली सीट पर बैठ जाते हैं। अब वे उसके सर पर हाथ फेरकर, उसको समझाते हुए कहते हैं..]

मोहनजी – [सर पर हाथ फेरते हुए, कहते हैं] – बोल बेटी, क्या बात है ? यह बुढ़ऊ, तूझे क्यों परेशान करता जा रहा है ?

[उसके बोलने के पहले, गीत गाने वाला एक मंगता डफली बजाता हुआ केबीन में दाख़िल होता है। उसके दर्द भरे सुर, जुलिट के कानों में गिरते हैं। जिससे उसके दिल का दर्द बढ़ता जाता है, वह भूला नहीं पाती के "इस वृद्ध ने उस पर, झूठा आरोप कैसे लगा दिया ?" उधर मोहनजी, उस मंगते के गाये जा रहे दर्दीले गीत का मर्म समझते जा रहे हैं।]

गीत गाने वाला मंगता – [डफली बजाता हुआ, गाता है] – औरत ने जन्म दिया, मर्दों को। मर्दों ने, उसको बाज़ार दिया। जब चाहा कुचला मचला, जब चाहा दुतकार दिया..

[बैग से पैसे निकालकर, जुलिट उस मंगते को देती है। पैसे लेकर, वह मंगता दूसरे केबीन में चला जाता है। उसके जाने के बाद, मोहनजी जुलिट को समझाते हैं...]

मोहनजी – [जुलिट को समझाते हुए, कहते हैं] – तू बोल बेटा, एक बाप और बेटी के बीच क्या रिश्ता होता है ? तू मेरी बेटी सरीखी है। मगर यह बोल, तू यह बात क्यों पूछ रही है मुझे ? [उस वृद्ध की ओर देखते हुए, कहते हैं] तू बोल भाई, तू क्यों कर रहा है तंग..इस बाई को ?

वृद्ध – [लबों पर मुस्कान बिखेरता हुआ, कहता है] – ग़लती हो गयी, अब आगे से तंग नहीं करूंगा।

[दिलासा पाकर, जुलिट फफक-फफककर रोने लगती है। मोहनजी उसके आंसू पोंछकर, उसे दिलासा देते हुए समझाते हैं..]

मोहनजी – [जुलिट को समझाते हुए, कहते हैं] – ए जुलिट बाई। इस दुनिया के लोग ठहरे, स्वार्थ के पुतले। यह समाज, इन मर्दों को कुछ नहीं कहता। जब चाहे ये मर्द किसी भी बाड़ में जाकर, मूतकर वापस आ सकते हैं। मगर औरतों की छोटी-छोटी बातों को, राई का पहाड़ बनाकर...उनकी बदनामी का ठीकरा, उनके सर फोड़ते आये हैं।

[जुलिट दिलासा पाकर सामने बैठे मोहनजी की तरफ़ देखती है, मोहनजी आगे कहते हैं]
मोहनजी – इन मर्दों को उनकी ग़लती का अहसास, कराने के लिए कभी कोई समाज का बन्दा अपने क़दम आगे नहीं बढ़ाता। **यह समाज, मर्दों को उनके जन्म से यही सिखाता आया है के "औरत तुम्हारे पांव की, पगरखी है.."**
वृद्ध – [आश्चर्य से सवाल करता है] – पगरखी ? समझ में नहीं आ रहा है, आप क्या कह रहे हैं ?
मोहनजी – कान खोलकर पहले सुना कर, खोटी आदत पड़ गयी तेरी बीच में बक-बक करने की ? सुन..पगरखी का मफ़हूम है, जूत्ती। देखा जाय, इन पुरुषों के आदर्श ठहरे भगवान राम। उन्होंने अपनी जीवन संगिनी पर विश्वास नहीं किया, **धोबी के कहने पर सावत्री जैसी अपनी जीवन-संगिनी के चरित्र पर आरोप लगाकर उसे महलों से बाहर कर दिया। इस घटना के पहले, इन्होने....**
जुलिट – [रोवणकाळी आवाज़ में, पूछती है] – क्या किया, जनाब ?
मोहनजी – लोगों को दिखाने के लिए, बेचारी जीवित सीता को जलती चिता पर बैठाकर उसकी अग्नि-परीक्षा ली।
जुलिट – आग के लिए कोई सगा नहीं, वह तो केवल जलाने का ही काम करती है।
मोहनजी – अब मैं आपको यह समझाना चाहता हूं, के 'अग्नि-परीक्षा लेने के बाद उसे पवित्र मान लिया गया, फिर लोगों को दिखाने के लिए उसे महलों से बाहर निकालने की कहां ज़रूरत थी ?' क्या कहूं, जुलिट बाईसा ? उस वक़्त वह, गर्भवती अलग से थी।
वृद्ध – गर्भवती औरत को इस तरह बाहर निकालना, क्या मानवता है ?
जुलिट – [वृद्ध की तरफ़ देखती हुई, कहती हैं] – अरे जनाब, पहले मोहनजी की बात को पूरी होने दें। [मोहनजी की तरफ़ देखती हुई कहती है] जादूगर जादू का खेल दिखलाता है, तब सभी खड़े तमाशबीन ख़ुश होकर तालियां पीटते हैं। मगर मोहनजी, कोई तमाशबीन उस जादूगर का भक्त नहीं बनता।
मोहनजी – जुलिट बाईसा, अब आगे कहिये।
जुलिट – यही खेल जब कोई धर्म से जुड़ा कोई व्यक्ति दिखला देता है, तब उसके आस-पास इन भक्तों का मज़मा एकत्रित हो जाता है। फिर, क्या जनाब ? उसके दिखाये गए खेल को ये भक्त, चमत्कार मानकर उस व्यक्ति को भगवान का दर्जा दे डालते हैं।
[इतने में एक वह युरीनल के निकट खड़ा सफेदपोश पुलिस वाला, इस चल रही चर्चा के बीच में बोल जाता है..]
पुलिस वाला – बड़े लोगों की बड़ी बातें होती है, जनाब। धर्म-ग्रंथों में यह लिखा हुआ है, के 'राजा ईश्वर का रूप होता है..अब आप यह सोचिये, के रामजी ठहरे राजा। किसकी मां ने अजमा खाया है, जो राजा को कुछ कह सके ? मगर यहां तो बात ही कुछ अलग लगती है, उनके धाम पधारने

के बाद भी इनके भक्त इनकी महिमा का बखान करते आ रहे हैं।'
वृद्ध – अरे खोजबलिया, तू आख़िर कहना क्या चाहता है ? वही बात कहा कर, क्यों गुड़ में लपेटकर बात को परोस रहा है माता के दीने ?
पुलिस वाला – मैं यह कहना चाहता हूं, जनाब। अब चाहे देश में प्रजातंत्र का राज़ है, मगर इन धर्म-कर्म वाले कट्टरपंथियों पर कोई लगाम कसी नहीं जा सकती। अब आप इधर बोल रहे हैं, और उधर ये भगवा पंथी राज़नैतिक दल वाले और इनके सम्बन्धी संगठन के कार्यकर्ता आकर आपके माली-पनां उतार सकते हैं। तब उस वक़्त, आपको बचाने वाला यहां कोई नहीं आयेगा।
वृद्ध – देख चम्पा लाल, हमारा देश लोकतांत्रिक गण राज्य है। यहां सबको बोलने की आज़ादी है रे, डोफा। इनको भी, अपनी तकरीर रखने का पूरा हक़ है। तू इनको, भयभीत मत कर।
मोहनजी – यह बात है, तो फिर सुन लीजिये मेरी तकरीर। मैं कह रहा था, के महिमा बखान करती-करती इस प्रजा ने उनको बना डाला है भगवान। अब आप ही सोचिये, ये महाशय ठहरे शक्तिशाली और साधन-सम्पन्न आदमी। उस वक़्त इनके खिलाफ़ कोई बात, अपने मुंह से बाहर निकालनी इतनी सहज नहीं थी।
वृद्ध – आपकी बात सही साबित हो सकती है, जनाब। आख़िर, किसी की हिम्मत कैसे होगी राजा के विरुद्ध बोलने की। अब आप, आगे कहिये।
मोहनजी – रामजी इस बात को, अपने कानों में नहीं डाली होगी ? के 'इस वाकया का असर, उनकी प्रजा और उनके भक्तों के ऊपर कैसा रहेगा ?' बस वे तो स्वर्ग में बैठे-बैठे, अपना गुण-गान करवाते जा रहे हैं।
वृद्ध - उनके पद-चिन्हों पर, आज़ भी उनकी प्रजा व उनके भक्त चल रहे हैं। उन्होंने कहीं स्पष्ट नहीं किया, क्या गर्भवती पत्नी का त्याग करना न्यायसंगत है या नहीं ?
[कह तो डाला उस वृद्ध ने, मगर उसके दिल में उथल-पुथल मचने लगी। आज़कल अग्निरोधक वस्त्र पहनकर, अग्निकर्मी आग से अपना बचाव कर लिया करते हैं। ऐसा माना जा सकता है, उस युग में भी सीता के पास ऐसे ही वस्त्र थे। **लंका जाने के पहले, उसने अग्निरोधक वस्त्र पहन रखे थे। ऐसे वस्त्र उसे, सती अनुसूया से मिले थे। इसका प्रमाण, वाल्मीकि रामायण में मिलता है। ऐसे वस्त्रों को देते वक़्त सती अनुसूया ने सीता से कहा था, के 'इन वस्त्रों पर मैल चढ़ना तो क्या, इन पर आग और जल का भी असर नहीं होता।' लंका विजय करने के बाद रामजी ने सीता की अग्नि-परीक्षा ली, तब उस वक़्त सीता के जलने का सवाल ही पैदा नहीं होता। क्योंकि उस वक़्त उसने, सती अनुसूया के दिए अग्निरोधक वस्त्र पहन रखे थे। इस तरह रामजी ने उपस्थित लोगों को एक जादूग़र की तरह जादू का खेल ही दिखाया था। जो वास्तव में, चमत्कार नहीं था।** आज़ भी लोग, कई धार्मिक साधुओं को चमत्कारी मानकर उन्हें ईश्वर का दर्जा देते आये हैं..वे भी केवल इस तरह के, जादू के खेल ही दिखाया करते हैं। अपनी कमीज़ की बाहों में वस्तुओं को छिपाए रखते हैं, और हाथ की सफ़ाई का प्रयोग करते हुए वे अपनी हथेली पर उन

वस्तुओं को प्रगट करते हैं। इस तरह इस जादू के खेल को ये भक्त चमत्कार मानकर, प्रभावित हो जाते हैं। ये भोले भक्त इतने प्रभावित हो जाते हैं, के झट 'वे इनको भगवान का दर्जा दे देते हैं।' इसके प्रत्यक्ष उदाहरण स्वयं सत्य सांईबाबा थे, जो इस तरह के जादू के खेल अपने भक्तों के समक्ष प्रदर्शित करते थे। कभी वे हथेली पर भभूत प्रकट करते, तो कभी वे शिव लिंग। मध्य काल में चिता पर, सतियों को जलाये जाने के कई चित्र चित्रकारों ने उपलब्ध करवाये हैं, जिनमें कहीं सती अपने मृत पति को गोद में लिए चिता पर बैठी है। सतियों के मंदिरों में ऐसी कई सतियों की मूरत या चित्र मौज़ूद है, जहां सती अपने मृत पति को गोद में लिए जल रही है। मगर ये चित्र या मूरत वास्तविकता नहीं दर्शाते, जबकि सत्य यह है **"उस वक़्त स्वार्थी धर्म के ठेकेदार, इन औरतों को अफ़ीम के प्याले पिला देते। जिससे नशे की अवस्था में, उन्हें जलने का भान नहीं होता। फिर इन अबला औरतों को ऐसी अवस्था में, जला दिया जाता। उस काल के कई चित्रकारों ने ऐसे भी चित्र उपलब्ध करवाए हैं, जिनमें चिता पर बैठी औरत को अक्समात चेतना आ जाती..तब वह जलने का विरोध करती हुई, चिता से उठने का प्रयास करती। मगर उस दौरान, ये धर्म के ठेकेदार चारों तरफ ज़ोर-ज़ोर से ढोल बजवा दिया करते। जिससे उन अबलाओं की आवाज़, उपस्थित लोगों को सुनायी नहीं देती। ऐसी अवस्था में कई बार ये धर्म के ठेकेदार, चिता के चारों ओर अपने आदमियों को खड़ा करके ऐसा घेरा तैयार कर देते, जिससे उपस्थित जन-समुदाय इस चिता को देख नहीं पाता। फिर ये लोग चेतन हुई इन अबलाओं को लाठियों से पीट-पीटकर, वापस उन्हें चिता की तरफ़ धकेल देते।** ऐसे अमानवीय लोमहर्षक कांडों को देखकर, राजा राममोहन राय ने प्रयास करके सती-प्रथा समाप्त करने का क़ानून पार्लियामेंट से पारित करवाया। इसके बाद अब उस वृद्ध की आँखों के आगे आधुनिक काल में, दहेज़ के नाम से जलायी जा रही अबलाओं के चित्र फिल्म की तरह सामने आते हैं। अब यह वृद्ध समझ नहीं पा रहा है, आज़ भी कन्या भ्रूणहत्या के प्रकरण बराबर सामने क्यों आ रहे हैं ? न तो जनता में जागृति पैदा हो रही है, और ना सरकार इन हत्याओं को रोकने के लिए कोई ठोस क़दम उठा पा रही है ? लोगों को वंश चलाने के लिए पुत्र की ज़रूरत बनी रहती है, इस कारण लड़की के कुदीठ ससुराल वाले गर्भवती बहू का अवैधानिक तरीके से भ्रूण परीक्षा करवा लेते हैं। और कन्या भ्रूण होने पर, वे लोग इस गर्भवती बहू को दवाइयां देकर उसका गर्भपात करवा देते हैं। इस तरह पैदा होने वाली कन्या को जन्म से पहले ही, उसे मार दिया जाता है। चाहे पौराणिक काल में औरत को देवी का रूप प्रदान किया गया है, मगर वास्तविकता यह है कि **'समाज में आज़ भी उसे, मर्द के पांव की जूत्ती ही समझता आ रहा है। जूत्तियां पुरानी पड़ने पर बदल दी जाती है, उसी तरह औरत के पुत्रवती न होने पर..मर्द नयी शादी करके, अपनी पहली औरत की स्थिति नौकरानी से बदतर बना देता है। कई बार किसी विधवा या किसी बुढ़िया की सम्पति हड़पने के लिए, ये समाज के ठेकेदार साजिश करके उसे डायन घोषित कर देते हैं। फिर उसे, मार-पीटकर जला डालते हैं..या उसे गाँव की सीमा से बाहर, खदेड़ देते हैं।'** ऐसे किस्सों के कई चित्र, वृद्ध के

मानस-पटल पर छा जाते हैं। अब वह वृद्ध समझ नहीं पा रहा है, एक तरफ़ नारी को देवी या लक्ष्मी समझा जाता है, और दूसरी तरफ़ उसे समाज अपनी स्वार्थ-पूर्ति के लिये उसे डायन घोषित करके उस पर नाना प्रकार के ज़ुल्म ढाह देता है..इस समाज का यह दो तरफ़ा व्यवहार, वृद्ध के लिए समझ पाना मुश्किल हो जाता है। वह यह भी समझ नहीं पा रहा है, **एक तरफ़ ये राज़ नेता सती-प्रथा का विरोध करते हैं और दूसरी तरफ़ सतियों के स्मारक पर जाकर अपना सर झुकाकर महिमा-मंडन करने का ग़लत काम कर बैठते हैं। समाज के लोगों का यह दोहरा व्यवहार, समाज के पतन का कारण बनता जा रहा है।** इन वाकयों के बारे में सोचता हुआ, वह वृद्ध ग़मगीन हो जाता है। उधर तकरीर पेश कर रहे मोहनजी का गला, ग़म से अवरुद्ध हो जाता है। उनके ख़ुद की आँखों के आगे, तीन-तीन शादियां रचाने के सारे वाकये छा जाते हैं। बस शादियां रचाते वक़्त उनका एक ही विचार रहा, "किसी तरह, उनके वंश को चलाने वाले पुत्र का जन्म हो।" ख़ानदान को आगे चलाना बहुत ज़रूरी है, इस मत को मानते हुए वारिस पैदा करने के लिये उनको तीन शादियां करनी पड़ी..वे भी कम थी, उनके विचार के अनुसार। इनकी पहली पत्नी बिना बच्चे पैदा किये रामजी के घर चली गयी, बच्चे पैदा न होने पर दूसरी को इन्होने छोड़ दी। बाद में तीसरी लाडी बाई से ब्याव किया, वह बहुत ज्यादा सुन्दर है। इस लाडी बाई ने, इनके ख़ानदान-ए-चिराग़ "गीगले" को जन्म दिया। इस तरह अब, लाडी बाई का दर्ज़ा बढ़ जाता है। **वे अपने कलेज़े के टुकड़े की तरह, लाडी बाई से प्यार करते हैं। भले इन दोनों के मध्य उमर का फासला, बहुत ज़्यादा है। मगर मोहनजी लाडी बाई को, अपने कलेज़े की कोर की तरह रखते हैं। वह जितनी ख़ूबसूरत है, उतनी ही ख़ूबसूरत जुलिट है। लाडी बाई से मोहनजी इतनी प्रीत करते हैं, उसके आगे समुन्द्र का पानी भी कम है। मोहनजी जब कभी किसी ख़ूबसूरत नारी को देखते हैं, उसी वक़्त इनकी आँखों के आगे लाडी बाई का चित्र छा जाता है..और वे तुरंत लाडी बाई से मिलने को, आतुर हो जाते हैं...!** के 'कितनी जल्दी घर जाकर, लाडी बाई से मिले ?' अब उनके सामने यह प्रश्न पैदा होता है, 'यदि लाडी बाई बदसूरत होती तो, क्या मोहनजी उनसे इतना प्यार करते या नहीं ?' अब वह वृद्ध मोहनजी के चेहरे को देख़ता हुआ, उनके मन के भावों को पढ़ने की कोशिश करता जा रहा है। और साथ में वह, मुस्कराता भी जा रहा है। अचानक वह, उनके कंधे पर अपना हाथ रख देता है। बाद में चेहरे पर लगी नक़ली दाढ़ी [रीश] और मूंछ हटाकर, अलग से गुलाबा हिज़ड़ा की आवाज़ निकालता हुआ कहता है..]

वृद्ध – [गुलाबा हिज़डा की आवाज़ निकालता हुआ, कहता है] – कहां खो गए, मेरे मोहन लाल सेठ ? मुझे पहचाना, या नहीं ?

[मोहनजी चमकते हैं, और उस वृद्ध की आवाज़ को वे पहचान जाते हैं। इस आवाज़ को सुनकर, उनकी विचारों की कड़ियां टूट जाती है। उस वृद्ध को देखते ही, वे ख़ुद ज़ोर से ठहाका लगाकर हंस पड़ते हैं। वे हंसते-हंसते, कहते हैं..]

मोहनजी – [हंसते-हंसते, कहते हैं] – अर रSS र र रेSS, ठोकिरा कढ़ी खायोड़ा। तू तो गुलाबो

हिज़डा निकला। मेरी झूठी शिकायत करने वाला, कमबख़्त तूने मुझे हवालात में कैसे बैठा दिया ? अब ठोकिरा मैं तूझे ऐसा फोड़ूंगा, सात जन्म तक तूझे याद रहेगी मेरी पिटाई।

[बाएं पांव में पहने जूत्ते को बाहर निकालकर, वे अपने हाथ में लेते हैं। मगर वह गुलाबा हिज़डा, यानी गुलाब सिंह रहता है..सावधान। झट उनके हाथ से जूत्ता छीनकर, गुलाबा यानि गुलाब सिंह कहता है]

गुलाबो – [मोहनजी का हाथ पकड़कर, कहता है] – हां रे, मोहन लाल सेठ। मैं गुलाबा ही हूं। और मैं सी.आई.डी. इंस्पेक्टर, गुलाब सिंह भी हूं। समझ गये, मालिक ? हम लोगों को कई बार, हिज़ड़ों जैसे अनचाहे रोल भी करने होते हैं। क्योकि, आख़िर हम लोगों को करनी है..अपने देश की सेवा।

[मोहनजी अब अपने बाएं पांव में, वापस जूत्ता पहन लेते हैं। उधर गुलाब सिंह ज़ेब से अपना परिचय-पत्र निकालकर, मोहनजी को थमा देते हैं। फिर कहते हैं..]

गुलाब सिंह – [परिचय-पत्र थमाते हुए, कहते हैं] - लीजिये मालिक, अच्छी तरह से देख लीजिये इस परिचय-पत्र को। हम लोगों के कारण ही, आपको ढेरों तक़लीफ़ें देखनी पड़ी। मगर, हम करते क्या ? मज़बूर थे, जनाब। हमें इतला मिली, के 'चपकू गैंग आपका अपहरण करने वाली है।' फिर, क्या ?

मोहनजी – [हंसी का किल्लोर छोड़ते हुए, कहते हैं] – उस फकीरड़े की, क्या औकात ? अपहरण तो तूने मेरा किया है, रे। हम लोगों को हवालात के अन्दर, बैठाकर।

गुलाब सिंह – एक बार कह दिया जनाब, आपको..के 'हम उस वक़्त मज़बूर थे।' क्योंकि, गांजे जैसे ग़ैर-कानूनी धंधे के सम्बंधित हिसाब-किताब और उनकी गैंग की करतूतों की डायरी..आपके हाथ लग गयी। जो मिलनी थी, सौभाग मलसा से..अब आपको समझ में आ गया ना ? आप खतरे से खेल रहे थे, मालिक।

मोहनजी – चोटा कहीं का। तूने मेरी ज़ेब में हाथ डालकर, तूने ही काग़ज़ात निकाल लिये होंगे ? इसकी सज़ा तो तूझे ज़रूर दूंगा, मगर अभी तू आगे बोल गुलाबा। अरे नहीं रे,गुलाब सिंह..अब, आगे बोल।

गुलाब सिंह – बात समझ में आ गयी आपको, या नहीं ? तब मुझे सवाई सिंहजी से मिलकर बनाना पड़ा, तगड़ा प्लान, आपको महफ़ूज़ रखने के लिए आपको हवालात में बैठाना पड़ा। उस वक़्त हवालात से ज़्यादा सुरुक्षित, कौनसी जगह थी, मालिक ? तब..तब..

मोहनजी – तब..तब..क्या बोलता जा रहा है, कढ़ी खायोड़ा ? बोल आगे, काहे तूने ब्रेक लगाकर बातों की गाड़ी को रोक दी ? ख़ाली मुफ़्त में दिमाग़ खाता जा रहा है, मेरा ? अब तेरे सर पर मारूं जूत्ते चार, तब तेरी ज़बान खुलेगी।

गुलाब सिंह – मालिक धीरज रखिये, आगे कह रहा हूं। आप लोगों को हवालात के अन्दर बैठाकर, हम जा पहुंचे स्टेशन के बाहर..वहां जाकर चपकू गैंग का किया एनकाउंटर। उसमें हमें, पूरी-पूरी सफलता मिली है। मगर जैसे ही हम दौड़कर आये, जी.आर.पी. दफ़्तर में...

मोहनजी – [मुस्कराकर कहते हैं] – बोल आगे, चुप क्यों हो गया ?
गुलाब सिंह – अरे जनाब, हमने क्या देखा ? आप सभी हो गये गायब, आप और **आपकी पूरी चांडाल-चौकड़ी को क्या कहे मालिक ? पूरीSS, कुबदी नंबर एक है।**
मोहनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – और यह भी बोल आगे, **ओटाळ नंबर एक। सिपाइयों की खोल दी हमने, पिछली दुकान। और भाग छूटे, क्या अब तू यही यश देना चाहता है..? अब कढ़ी खायोड़ा तेरे दिमाग़ में यह बात बैठा देना, के 'आगे से, मुझसे अड़ना मत।'**
[इतना कहकर, मोहनजी ज़ोरों का ठहाका लगाते हैं, अब गुलाब सिंह मोहनजी से अपना परिचय-पत्र लेकर उसे अपनी ज़ेब के हवाले करते हैं। फिर मोहनजी के व्यक्तित्व का कशीदा पढ़ते हुए, आगे कहते हैं।]
गुलाब सिंह – मालिक, आपकी क्या तारीफ़ करूं ? जो भी कहूं, वह भी कम है। आपकी मेहरबानी से हमारा मिशन सफल हुआ, न तो इस कमबख़्त सौभाग मल और फ़क़ीर बाबा की गैंग एक साथ कैसे पकड़ी जाती ?
मोहनजी – [मुस्कराते हुए, कहते हैं] – मुझे बहुत खुशी हुई है, गुलाब सिंह कढ़ी खायोड़ा। अब तू हिज़ड़े से मर्द बन गया है, मगर अब तू यह बताता जा के उस प्यारी और चम्पाकली के क्या हाल-चाल हैं ?
गुलाब सिंह – [आवाज़ बदलकर, कहते हैं] – ओ मोहन लाल सेठ। क्या हाल है, आपके ? वापस रसिक बन गये, क्या ? रुलियार कहीं के, आपको शर्म नहीं आती..?
जुलिट – [बीच में बात काटती हुई, कहती है] – अरे गुलाब सिंह। यह प्यारी है, कौन ? और कौन है, यह चम्पाकली ? मोहनजी, क्या छुपे रुस्तम तो नहीं ?
[गुलाब सिंह ताली बजाते हैं, ताली की आवाज़ सुनते ही दोनों सफ़ेदपोश जवान आकर झट मोहनजी से बिल्कुल सटकर खड़े हो जाते हैं। अब वे दोनों, मोहनजी की सूरत देखकर हंस पड़ते हैं। **मोहनजी उन दोनों को घूरकर देखते हैं, जैसे ही उनकी नज़र उस ख़ूबसूरत जवान पर गिरती है..उसको देखते ही वे उसे पहचान जाते हैं, और उन्हें भूतिया नाडी पर प्यारी के साथ बिताये गए रोमांस का एक-एक पल अलग से याद आ जाता है। रोमांस के साथ, उनको वे सारी हरक़ते भी याद आ जाती है..जो भूतिया नाडी में उन्होंने की थी। अब वे हरक़तें याद आते ही बेचारे मोहनजी, आब-आब हो जाते हैं।** फिर अपनी झेंप मिटाते हुए, उस खूबसूरत जवान का हाथ पकड़ लेते हैं..और दूसरे हाथ से, उसकी गरदन पकड़ते हैं। अब वे लज्ज़ा से गढ़ते हुए, उससे कहते हैं]
मोहनजी – [आब-आब होकर, कह देते हैं] – साला प्यारे लाल, तू मुझसे मज़ाक करता है रे कढ़ी खायोड़ा ? **मेरी बीबी का भाई होकर, तू तो गधा का गधा ही रहा। कढ़ी खायोड़े, तूझमें अक्ल नाम की कोई चीज़ नहीं। अब तू सीधा रहने वाला नहीं, अब तू घर में कलह करायेगा क्या ?**
प्यारे लाल – [अपनी गरदन छुड़ाने की कोशिश करता हुआ, कहता है] – छोड़ दीजिये, जीजाजी। आपको मेरी जीजी की कसम, अगर गरदन नहीं छोड़ी तो मैं..

मोहनजी – न तो तू क्या करेगा रे, कढ़ी खायोड़ा ?
प्यारे लाल – नहीं तो पूरी बात बता दूंगा, जीजी को। अभी तक मैंने कुछ भी नहीं बताया, जीजी को। अपना जूत्ता निकालकर आप, इस कुत्ते कमीने चम्पा लाल की पूजा कीजिये।
मोहनजी – इसकी पूजा क्यों करूं रे, कढ़ी खायोड़ा ?
प्यारे लाल - यह कुचक्र इसी कमीने ने चलाया था, आपको फंसाने का। जीजाजी आपको दण्ड देना है तो, इसे दीजिये। यह कमीना आपके पास खड़ा है, पकड़िये..जीजाजी।
[फिर, क्या ? प्यारे लाल की गरदन छोड़कर, मोहनजी चम्पा लाल की गरदन पकड़ने की कोशिश करते हैं। मगर यह शैतानों का चाचा चम्पा लाल, उनके हाथ आने वाला कहां ? वह कुचमादी का ठीकरा तो भाग छूटता है, और भागता-भागता अलग से कहता जा रहा है..]
चम्पा लाल – [भागता-भागता, कहता है] – वाह जीजाजी, वाह। भूतिया नाडी की पाळ पर, आप कैसे नाचे नंग-धडंग होकर ? [गुलाबा की आवाज़ की नक़ल करता हुआ, कहता है] मोहन लाल सेठ, क्या आपकी चड्डी का नाड़ा खोल दूं आकर ?
[भागकर वह, दूसरे केबीन में चला जाता है। उसके जाने के बाद, जुलिट गुलाब सिंह से कहती है]
जुलिट – मगर गुलाब सिंह, मुझे यह समझ में नहीं आया..आख़िर, प्यारी और जुलिट का क्या माज़रा है ?
गुलाब सिंह – कुछ नहीं, यह तुम्हारे काम की बात नहीं है। तुम अपना दिमाग़ मत खपाओ, बस तुम यही मान लो के यह प्यारे लाल बना प्यारी और चम्पालाल बना चम्पाकली। और मैं बना, गुलाबा। इस प्रकरण को हल करने के लिए, हम सभी को ये सारे स्वांग रचाने पड़े। अब आ गया, तूझे समझ में ?
[अब रहस्य पर ढके सारे पर्दे हट जाते हैं, सारा माज़रा समझ में आने के बाद अब जुलिट ज़ोर से ठहाके लगाकर हंसती जा रही है। इस तरह हंसते रहने से, उसके रुख़सार कश्मीरी सेब की तरह लाल सुर्ख हो जाते हैं। अब हाथ जोड़कर, गुलाब सिंह मोहनजी से कहते हैं..]
गुलाब सिंह – [हाथ जोड़कर कहते हैं] – मालिक, आपका क्या कहना ? इस **खिलक़त में ऐसा कौन है, जो आपसे ज़बान लड़ा सके ? अप तो बेचारे पुलिस वालों की पिछली दुकान, बेवक्त खुलवा डाली ? मगर हमारे रहमदिल सवाई सिंहजी अपनी पूरी पलटन के साथ, खड़े हैं जोधपुर स्टेशन पर...और वह भी पुलिस बेंड के साथ, आपका स्वागत करने के लिए।**
मोहनजी – ए रे गुलाब सिंह कढ़ी खायोड़ा, मुझसे मज़ाक मत किया कर। मेरी शादी हो चुकी है, अब ठोकिरा तू किसका बैंड-बाज़ा बजा रहा हैं ? गधेड़ा, तूझे तो मेरे मेरे जूते खाने की आदत बन गयी है।
गुलाब सिंह – मालिक बात को पूरी सुना करो, सुनकर फिर बोला करो। **आप बिना सुने ही, झट जूत्ता लेकर तैयार हो जाते हैं ? [धीमे-धीमे कहते हैं] धान की जगह, अब आप जूत्ते बनाने लग गए..क्या ? शायद कहीं आपने, मोची की दुकान तो नहीं खोल दी...?**

[गुलाब सिंह के लबों को हिलते देख, मोहनजी समझ लेते हैं "ठोकिरा गुलाब सिंह उनकी शान में गुस्ताख़ी करता जा रहा है ?"]
मोहनजी – [क्रोधित होकर, कहते हैं] – ठोकिरा तू अपने होंठों में क्या बुदबुदा रहा है, गधेड़ा ? ए रे कढ़ी खायोड़ा गुलाब सिंह, अब तो शर्म कर, गधे। मेरी मेहरबानी से अब तू मर्द बन चुका है, अब तू हिज़डा रहा नहीं।
गुलाब सिंह – [अपने लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – जनाब मैं यह कह रहा था, के "रेलवे मिनिस्टर साहब लालू प्रसादजी यादव ने अपने ख़ास प्रतिनिधि को भेजा है, तहे दिल से आपका स्वागत करने के लिए। वे प्लेटफार्म पर खड़े हैं, जनाब। वहां एक जलसा रखा गया है, उस जलसे में आपको अपनी पूरी चांडाल-चौकड़ी के साथ आना है। और, मेरी अर्ज़ है..

मोहनजी – झट बोल दे, नहीं तो मैं तूझे और तेरे साथियों को वह दवा दूंगा..जो सिपाइयों को दी थी, उनका पेट साफ़ करने के लिये। फिर तुम सभी हिज़ड़े..अरे नहीं रे, अब तो तुम लोग मर्द बन गये हो। ना..ना..अब तुम लोगों को मैं, हिज़डा नहीं कहूंगा। यह ज़रूर कहूंगा, दवा लेने के बाद तुम लोग एक पाख़ाने को....
गुलाब सिंह – [आश्चर्य चकित होकर, कहते हैं] - पाख़ाने से, हमारा क्या काम ?
मोहनजी – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – पूरा दिन लगता है पेट साफ़ करने के लिये, अब गुलाब सिंह तुम उस पाख़ाने को आरक्षित करवा लेना। और उसके बाहर यह लिख देना, आरक्षित पाख़ाना सी.आई.डी. पुलिस जरिये मोहनजी..!
जुलिट – [हंसी का ठहाका लगाकर, कहती है] – फिर गुलाब सिंह तुम सभी लोग, पूरे दिन पाख़ाने को काम लेते रहना। यह सज़ा तुम लोगों के लिए बेहतर है, मोहनजी को परेशान करने की। [वापस हंसती हैं] आख़िर तुम लोगों ने, बेचारे मोहनजी की हालत कैसी बदतर कर डाली...?
गुलाब सिंह – [मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – छोड़िये जनाब, मैं कह रहा था..जब आप जोधपुर ड्यूटी जोइन करो तब, आप..
मोहनजी – [तेज़ी खाते हुए] – गुलाब सिंह कढ़ी खायोड़ा, तूझे किसने कह दिया के मेरी बदली जोधपुर हो गयी ? [होंठों में ही] अब यह काबुल का गधा तैयार हो गया, मुझसे ट्रांसफर की मिठाई खाने..? अरे कमबख़्त मैंने अपने साथियों तक को चाय नहीं पायी, और तूझे खिलाऊंगा मिठाई ? वाह रे वाह, मेरे कढ़ी खायोड़े शेर।
गुलाब सिंह – [लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए, कहते हैं] – अपना दिल छोटा मत कीजिये, मैं आपसे मिठाई नहीं मांगूगा। आपकी हर ख़बर हमारे पास रहती है, आख़िर हम ठहरे सी.आई.डी. विभाग के।
जुलिट – दिल को थामे रखिये, जनाब। अब इस वक़्त गुलाब सिंह, गुलाबो हिज़ड़े के रूप में नहीं है। होता तो आपके कपड़े खुलवाकर, मिठाई खा जाता।

मोहनजी – गधेड़ा मैं कितनी दफ़े पाख़ाना जाता हूं, यह भी रिपोर्ट बनाता होगा तू ? बना दी है तो, अपने उच्च अधिकारियों के पास मत भेजना। नहीं तो फिर, यह मेरा जूता है और तू है।
गुलाब सिंह – अब आप मज़ाक मत कीजिये, पहले आप मेरी बात सुनिये..पहले आप यह बताइये, हम लोग किस विभाग के हैं ? हम हैं सी.आई.डी. विभाग के, इसलिए सभी ख़बरें हम लोगों को रखनी होती है। इसलिए आप बार-बार, हमारी बात सुनकर चौंका न करें। सुनिये, आपको हमारा एक काम करना है..
मोहनजी – कढ़ी खायोड़े, अब क्या काम बाकी रह गया ? मेरा पूरा कस तो तुम लोग ले चुके, अब तो ख़ाली पोठे [गोबर] करने बाकी रह गये हैं।
गुलाब सिंह – मालिक आप पोठे भी करोगे, आख़िर बचपन से आप गाय-भैंसों के साथ रहे हैं..इस कारण आप, पोठे ही करोगे जनाब। इसके अलावा, आपसे क्या उम्मीद की जा सकती है ? अब सुनिये, जनाब। हमारे बड़े अफ़सर चाहते हैं, के 'आप जोधपुर रहते वक़्त, अक़सर जोधपुर स्टेशन आते रहें....'
मोहनजी – अब तू मुझे किस मुसीबत में फंसा रहा है, कढ़ी खायोड़ा ?
गुलाब सिंग – [मोहनजी की बात पर ध्यान न देते हुए] – और पाकिस्तान जाने वाली थार एक्सप्रेस के यात्रियों पर, आपको कड़ी नज़र रखनी है। अगर काम पड़े इस काम के लिए, तो आपको पाकिस्तान की भी यात्रा करनी होगी।
मोहनजी - मुझे क्यों पाकिस्तान भेज रहा है, कढ़ी खायोड़ा ? मैंने तेरा क्या बिगाड़ किया है ?
[गाड़ी का इंजन सीटी देता है, अब गाड़ी की रफ़्तार कम हो जाती है। गुलाब सिंह ज़ेब से चांदी की डिबिया निकालते हैं, फिर उसमें से पान की गिलोरी निकालकर अपने मुंह में ठूंसते हैं। फिर फिल्म डॉन के नायक अमिताभ बच्चन की नक़ल उतारते हुए, कहते हैं..]
गुलाब सिंह – [हथेली आगे करते हुए, कहते हैं] – क्या करें, जनाब ? किन्नर रहते-रहते ग़लत आदत डाल दी हमने..
मोहनजी – [घबराये हुए, कहते हैं] – दूर हट, नामर्द। तब ही तू मेरे रुख़सारों को सहलाता, और कभी तू..
गुलाब सिंह – [हंसी का ठहाका लगाकर, कहते हैं] – अरे जनाब, आप मुझे ग़लत मत समझो। मैं ऐसा-वैसा नहीं हूं, अब डरो मत। मैं तो जनाब, पान चबाने की ग़लत आदत का जिक्र कर रहा था। अरे राम राम, आप मेरे बारे में ऐसे ग़लत विचार इस भूसे भरे दिमाग़ में रखते हैं ?
[ज़ुलिट के साथ-साथ, प्यारे लाल भी हंसने को मज़बूर हो जाता है। गुलाब सिंह आंखें तरेरकर, प्यारे लाल की तरफ देखते हैं। वह बेचारा सहम जाता है। अब गुलाब सिंह, पान को चबाते-चबाते कहते हैं..]
गुलाब सिंह – [मोहनजी की तरफ़ देखते हुए, कहते हैं] – मालिक, आप तो गुणों की खान हैं। हमारे विभाग के सभी लोग, आपकी तारीफ़ करते हैं। जनाब **मैं सत्य कहता हूं, आप जैसे दिखायी**

देते हैं..वैसे, आप नहीं हैं। वे लोग मूर्ख हैं, जो आपकी आदतों को देखकर आपको पागल कहते हैं।
मोहनजी – साला, काबुल का गधा। मेरी कौनसी आदत खोटी देखी है रे, कढ़ी खायोड़ा ? क्या मैं छोरियां छेड़ता हूं, या मैं दारु पीकर नालियों में पड़ा रहता हूं ? बोल कौनसी ख़राब आदत ख़राब है, मुझमें ?
गुलाब सिंह – पहले मेरी बात सुन लिया करो, कान खोलकर। सुन लीजिये, जनाब। **पागलों जैसी बातें करनी और मर्जी आये जहां पीक थूक देना। ये सारी बातें, लोगों को मूर्ख बनाने की है। इस व्यवहार को लोग समझ नहीं पाते, मगर मैं सौ फीसदी सत्य बात कहता हूं के 'आप जैसा समझदार व मतलब में होशियार इंसान कहां मिलता है, इस ख़िलक़त में ?'**
[इतनी बात करने के बाद, गुलाब सिंह सीट से उठते हैं। इसके बाद अपने होंठों पर मुस्कान बिखेरते हुए, आगे कहते हैं]
गुलाब सिंह – बस, अब मुझे यही कहना है के, 'हमें आपकी यही अदा, बहुत पसन्द आयी।' अब आप अगले मिशन को कामयाब कीजिये, जनाब। बस अब **आपको, थार एक्सप्रेस से यात्रा करने वाले पाकिस्तानी दलालों पर कड़ा ध्यान रखना है। अगर आपने ऐसा नहीं किया, तो मैं सच्च कहता हूं आपको..यह गुलाबा वापस आकर खींच लेगा, आपकी चड्डी का नाड़ा।**
[मगर यहां मोहनजी ठहरे कुत्ती चीज़, ऐसे वे इस गुलाब सिंह के हाथ आने वाले नहीं। पहले वे अपने होंठों पर मुस्कान बिखेरते हैं, फिर टसकाई [गंभीर होकर] से ज़वाब देते हैं..]
मोहनजी – उस वक़्त कढ़ी खायोड़ा, मेरे ऊपर पूरे डिपो का चार्ज रहेगा। ना बाबा ना, मेरे पास कहां रहेगा इतना समय ? मैं कुछ नहीं कर सकता, मुझे मत फंसा रे गुलाब सिंह कढ़ी खायोड़ा।
गुलाब सिंह – [मुस्कराते हुए कहते हैं] – मैं सब जानता हूं, जनाब। आप पहले इसी दफ़्तर में थे..तब आप कब तो आप दफ़्तर में आते थे, और कब अपने घर लौटते थे ? कितनी बार, आप मारते थे गौत ? मुझसे ये सारी बातें छिपी नहीं है, अब आप समझ गए जनाब। इन आदतों के कारण ही, आपका मनपसंद कार्य आपको सौंपा जा रहा है।
[यह सुनकर मोहनजी आंखें तरेरकर, गुलाब सिंह को देखते जाते हैं। मगर गुलाब सिंह परवाह नहीं करते हैं, के मोहनजी उनको किस नज़र से देख रहे हैं ? वे तो आगे कहते ही, जा रहे हैं..]
गुलाब सिंह – एक बात और कह दूं, आपको ? आपको अपने विभाग की ओर से, फ़िक्र करने की कोई ज़रूरत नहीं। आपके विभाग के बड़े साहब से, हमारी बात हो गयी है। उन्होंने आपको पूरी छूट भी दे दी है, इस काम को करते हुए जब इच्छा हो तब दफ़्तर जाना है..बस, आपको हमारा काम ज़रूर पूरा करना है।
जुलिट – [सीट छोड़ती हुई, अलग से कहती है] – मान जाइये मोहनजी, गुलाब सिंह का कहना मानना आपके हित में है। वैसे भी आप एक नंबर के..क्या कहते हैं उसे ? जो एक जगह, टिकता नहीं। हां याद आया जी, उसे कहते हैं फिटोल। बस, आप वह ही हैं।
मोहनजी – [हंसते हैं, फिर मुस्कराकर कहते हैं] – जुलिट तू कुछ भी बोल, मर्जी आये जो

बोल। **चाहे तो कह दे, के मेरे पांव में है भवंरा। जो मुझे ख़ाली, एक जगह बैठने देता नहीं। पहले रोज़ करते थे, जोधपुर और खारची के बीच की यात्रा। और अब करेंगे, पाकिस्तान और जोधपुर के बीच आने-जाने की यात्रा।** मगर, मेरी एक शर्त है..

जुलिट और गुलाब सिंह - [एक साथ कहते हैं] – मंज़ूर है, अब कहिये क्या शर्त है आपकी ?

[मोहनजी झट खड़े हो जाते हैं, और उन दोनों के सर पर आशीर्वाद देने के लिए अपना हाथ रखते हैं। फिर कहते हैं..]

मोहनजी – [आशीर्वाद देते हुए, कहते हैं] – तुम दोनों की जोड़ी सलामत रहे, अब अपनी शादी में मुझे बुलाना भूलना मत।

[सुनकर, जुलिट शर्म से अपनी नज़रें झुका लेती है। फिर दोनों ख़ुश होकर, मोहनजी के पांव छूते हैं। मोहनजी अब उनको, ढेर सारी आशीष देते हैं। गुलाब सिंह, मोहनजी से कहते हैं..]

गुलाब सिंह – मालिक, जुलिट की माताजी का कोई मां-जाया भाई नहीं है। इसलिए आपको अब हमारी शादी में जुलिट का मामा बनकर, उसे चूड़ा पहनाना है। इसके ननिहाल के सारे रिवाज़, आपको ही निभाने होंगे।

मोहनजी – ज़रूर, ज़रूर। बाई के लिए तो, हमारी ज़ान हाज़िर है।

गुलाब सिंह - [गुलाबा की आवाज़ में, कहते हैं] - समझ गये, मामू प्यारे। कंजूसो के सेठ, अब ज़ेब ढीली करने के लिए तैयार हो जाओ..मामा बनकर। [धीरे से कहते हैं] मामू प्यारे, आ गए प्यारे रंग में भंग डालने..बांगी कहीं के।

मोहनजी – क्या कहा, गुलाब सिंह कढ़ी खायोड़ा ?

जुलिट - [हंसती हुई कहती है] – कुछ नहीं मामूजान, ज़रा थोड़ी सी आपकी तारीफ़ कर डाली..!

[सभी हंसी के ठहाके लगाते हैं, थोड़ी देर बाद मोहनजी इन सबको जाते हुए देखते हैं। जाते-जाते गुलाब सिंह की, लौटती आवाज़ उनके कानों को सुनायी देती है..]

गुलाब सिंह की दूर से आवाज़ सुनायी देती है – ये मोहनजी, कोई भूलने वाली चीज़ नहीं है। बड़ी कुत्ती चीज़ है, कमबख़्त।

मोहनजी – [गुस्सा करते हुए, बड़बड़ाते हैं] – गुलाब सिंह गेलसफ़ा कढ़ी खायोड़ा, तू तो हिज़ड़ा था, तब ही तू ठीक था। अब वापस आ, मेरा छः नंबर का जूता तैयार है, तूझे ठोकने के लिये..

[गाड़ी का इंजन सीटी देता है, उसकी तेज़ आवाज़ के आगे मोहनजी की आवाज़ सुनायी नहीं देती। थोड़ी देर बाद, वे अपने साथियों के पास अपने केबीन की ओर जाते दिखाई देते हैं। मंच पर, अंधेरा छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच पर वापस रौशनी फ़ैल जाती है। अब शयनान डब्बे का मंज़र सामने दिखाई देता है, इस डब्बे में मोहनजी और उनके सभी साथी बैठे दिखाये देते हैं। तभी एक नौ साल का लड़का आता है, अब वह फर्श पर बैठ जाता है। फिर बदन से अपना फटा

हुआ कुर्ता उतारकर, बैठा-बैठा उससे फर्श साफ़ करता हुआ वह आगे बढ़ता है। वह लड़का लूले-पांगलों की तरह अपने बदन को घसीटता हुआ, अब इस केबीन में आ जाता है। **रशीद भाई ठहरे सेवाभावी, वे जान नहीं पाते इस लडके की असलियत ? इसे लूला-पांगला ही समझकर, उसके सफाई करने के काम को पर-हित में की जा रही सेवा समझ लेते हैं।** अब जनाब...उस पर रहम दिखाते हुए दयाल साहब से कहते हैं..]

रशीद भाई – [दयाल साहब से कहते हुए] – देखो साहब, रेलवे के कर्मचारी इन डब्बों में सफ़ाई करते नहीं। अब यह सेवाभावी पांगला छोरा, कितनी तक़लीफ़ें देखकर डब्बे के फर्श को साफ़ करता जा रहा है।

दयाल साहब – अरे, रशीद। यह छोरा ना तो है तेरा जैसा सेवाभावी, और न है इसे पोलियो। और न है यह, ग़रीब। इसका तो रोज़ का धंधा है, भीख मांगने का। अभी देखना तुम, दरवाज़े के पास जाकर..यह कमबख़्त, सीधा खड़ा हो जायेगा।

चंदूसा – अरे साहब, ऐसे कई लडके हैं..जो पूरी गाड़ी में यात्रियों से मांग-मागकर, पैसे इकट्ठे करते रहते हैं। फिर खारची आने पर ये लोग बैठकर करते हैं, इन पैसों का हिसाब। इसके बाद ये कमबख़्त, सिनेमाघर जाकर देखते हैं...हर नयी लगने वाली, फिल्म। अरे जनाब, ऐसे छोरे कैसे हो सकते हैं..ग़रीब ?

दयाल साहब – बिल्कुल सच्च कहा, चंदूसा। मैंने ख़ुद ने एक वाकया देखा है, जिसे मैं भूल नहीं सकता। इस जोधपुर प्लेटफोर्म पर मैंने, एक भिखारन को देखा..जो मैली-कुचली थैली से कई पांच-पांच सौ के नोट निकालकर, उन्हें गठरी में रख रही थी। मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ, अरे सांई..कैसे-कैसे इंसान भरे पड़े हैं, इस भारत में ?

रतनजी – किस बात का ताज्जुब, जनाब ? बम्बई में रहने वाले भिखारी तो जनाब, कार रखते हैं और साथ में वे आयकर भी भरते हैं।

चंदूसा – बम्बई की बात छोडो, रतनजी। इस जोधपुर स्टेशन के बाहर एक भिखारी बैठता है, जिसके पास तीन-तीन कारें हैं। सुबह कार में आता है, और शाम को उसे कार लेने आती हैं। अरे जनाब, उसके तीन-तीन बेगमें है। बहुत पैसे वाला है, जनाब।

दयाल साहब – सच्च कहा चंदूसा, आपने। मैंने ख़ुद ने एक ऐसा ही वाकया देखा, अपने दोस्त की कपड़े की दुकान पर। वहां एक भिखारी आया, दोस्त ने उसको एक रुपया देना चाहा..मगर, उसने भीख लेने से साफ़ इनकार कर दिया। फिर, उसने कहा..

रतनजी – अजी, साहब। यह ऐसा कैसा भिखारी है, जिसने भीख के पैसे लेने से इनकार...?

दयाल साहब – पहले सुनो, मेरी बात। उसने आगे कहा "सेठ साहब, कपड़ा दिखाइये। मुझे खरीदना है, जनाब।" दोस्त ने उसकी हालत देखकर सस्ते कपड़े दिखलाने शुरू किये, तब रतन सिंह उसने क्या कहा..सुना, तुमने ? उसने कहा "सस्ता कपड़ा क्यों दिखलाते हो, कुछ महंगा कपड़ा दिखलाइये।" फिर..

रशीद भाई – वाह भाई, वाह। भिखारी के पास, इतने सारे रुपये..? **<u>खुदा की पनाह, अब क्या भेद रहेगा ? हमारे, और भिखारी के बीच ? जब कोई भिखारी रहेगा नहीं, तब रमजान के महीने में हम किसे खैरात देकर सवाब लेंगे ?</u>**
दयाल साहब – पहले सुन, रशीद। दोस्त ने दिखाये क़ीमती वस्त्र, तब उस मरदूद ने बड़ी मुश्किल से एक महंगा कपड़ा पसंद किया। और कहने लगा, 'इसे पेक कर लीजिये।' फिर उसने पैसे देने के वक़्त, पूरे सौ रुपये कम दिए..
रशीद भाई – फिर क्या हुआ, कहीं उसने उधारी खाते में अपना नाम लिखवा तो नहीं लिया ? या फिर, सौ रुपये का चैक देकर चला गया ?
दयाल साहब – रशीद पहले सोचा कर, वो भिखारी है..बिना साख, कैसे लिखायेगा अपना नाम ? सुन, आगे। जब दोस्त ने बाकी के रुपये मांगे, तब उसने क्या कहा ? **उसने कहा "मुझसे क्या रुपये मांगते हो ? मैं तो, एक अदना सा भिखारी हूं।"** उसका ज़वाब सुनकर, दोस्त उसका मुंह ताकने लगा।
[दयाल साहब से किस्सा सुनकर, सभी ठहाके लगाकर ज़ोर से हंसते हैं। अब उस छोरे ने समझ लिया, के 'जो दूसरे भिखारियों की पोल खोलते जा रहे हैं..वे साहेबान, मुझे क्या भीख देंगे ? यहां तो तिलों में तेल नहीं, ये लोग तो इतने होशियार है..ये तो मेरे अन्दर से, तेल निकाल बैठेंगे ?' बस, फिर क्या ? वह दौड़कर, जा पहुंचता है..डब्बे के, दरवाज़े के पास। वहां शान्ति से नीचे बैठ जाता है, फिर अपनी सभी जेबों से रुपये निकालकर उन सारे रुपयों को..वह चोर ज़ेब में, रख़ता जाता है। उन रुपयों में कई पांच सौ और हज़ार के नोट, कई सौ-सौ के नोट और ढेर सारी रेज़गी..इतने सारे रुपये देखकर, सभी को आश्चर्य होता है। अपना काम निपटाकर वह छोरा, दूसरे डब्बे में भाग जाता है। यह करिश्मा देखकर, सभी ज़ोर से हंसते हैं। दीनजी नोवल को अपने बैग में रखते हैं, फिर दयाल साहब से कहते हैं..]
दीनजी – दयाल साहब। कौन कहता है, अपना देश ग़रीब है ? साधु-संतों के मठों में अपार करोड़ो की दौलत पड़ी है, और ये लोग ऐशोआराम की ज़िंदगी व्यतीत कर रहे हैं।

रतनजी – अरे हुज़ूर, एक तरफ़ है यह अंध भक्त जनता, और दूसरी तरफ़ है कुटिल राज़नेता और इन पाखंडी अधु-संतों का गठजोड़..? **<u>इन अंध भक्तों की आँखें खुलवाना और दूसरी तरफ़ ऐसे पाखंडी कपटी लोगों को पकड़कर, सज़ा दिलवाना अब इस लोकतंत्र में असंभव है।</u>**
ओमजी – ये साधु नहीं, स्वाधु है। इन स्वाधुओं ने सत्ताधारी दल के साथ ऐसा गठ बंधन बना रखा है, जो एक दूसरे के हितों को साधते रहते हैं। **सरकार इनकी हिफाज़त के लिए, इनको पुलिस-गार्ड भी उपलब्ध करवाती है..और ये लोग..? इन सत्ताधारी लोगों की काली कमाई को, एक नंबर में बदलने का काम करते हैं।**
[अब आस करणजी और सेणी भा'सा वातानुकूलित डब्बे से निकलकर, मोहनजी वाले केबीन में

आ चुके हैं। जनाबे आली आस करणजी भा’सा की निगाह में, प्रसन्नचित मोहनजी आ जाते हैं। उनका मुंह, कमल के फूल की तरह खिला हुआ है। यह देखकर, उनको बहुत आश्चर्य होता है। फिर क्या ? वे दोनों गुफ़्तगू करने के लक्ष्य से, आकर मोहनजी के आस-पास आकर बैठ जाते हैं। बैठने के बाद, आस करणजी मोहनजी से कहते हैं..]

आस करणजी – [उनके पास बैठकर, कहते हैं] - मोहनजी, जय श्याम री सा। **वाह मालिक, आज़ इस तरह आपके लबों पर मुस्कान कैसे..? कहीं देवी जुलिट के दीदार तो न हो गए, आपको ?**

[मोहनजी एक शब्द नहीं बोलते, बस चुचाप नज़रे चुराए...खिड़की के बाहर, देखते रहते हैं। तब आस करणजी, एक बार वापस बोलते हैं]

आस करणजी – अरे मोहनजी मालिक, क्या खरगू की तरह बैठ गये चुपचाप ? ज़रा ‘जय श्याम री’ तो बोल दीजिये।

रतनजी – आस करणजी भा’सा, आप मोहनजी को छोडिये। उनकी जगह मैं बोल देता हूं, “भा’सा, जय श्याम री सा।” अब आप श्याम की कृपा से, ऐसे समाचार सुनेंगे..आप, सुनकर आप ख़ुद कहेंगे “मोहनजी, चढ़ाइये बालगोपाल को प्रसाद।”

[यह तो श्याम की लीला ठहरी, मोहनजी ने तो नकटाई धार ली। वे अब, क्यों बोलेंगे ? नकटाई तेरा आसरा, उन्होंने ख़र्च करना करना सीखा ही नहीं। वे तो खर्चे से बहुत दूर ही रहते हैं, चाहे कितना भी अच्छा समाचार उन्हें सुनने के लिये मिल जाये ? मगर, ऐसे प्राणी “हम डाल-डाल तुम पात-पात” को चरितार्थ करते रहेंगे। आख़िर दीनजी ज़ोर से, मोहनजी से कहते हैं..]

दीनजी – [ज़ोर से कहते हैं] – मोहनजी, क्या यार सोचने बैठ गये ? अब आप चुप-चाप मत बैठिये, बिल्ली की तरह ? जोधपुर बदली हुई आपकी, खुशी हुई आपको। फिर अपना मुंह क्यों छिपाते जा रहे हैं आप, इन औरतों की तरह ? कह दीजिये आस करणजी भा’सा को, के ‘आपकी बदली, जोधपुर हो गयी है।’

[बिल्ली का नाम सुनते ही, सेणी भा’सा को याद आ जाता है दीनजी भा’सा का अधूरा छोड़ा गया बिलाव का किस्सा। फिर, क्या ? वे झट, उचककर कहते हैं..]

सेणी भा’सा – [उछलकर, कहते हैं] – मुंह मोहनजी छिपा नहीं रहे हैं, बल्कि आप छिपा रहे हैं। बिलाव की थोड़ी-थोड़ी कहानी कहकर, मुझे आप देते आ रहे हैं फुटास की गोली। अब भा’सा, ऐसा नहीं चलेगा। जोधपुर स्टेशन आने वाला है, अब यह कथा अधूरी नहीं रहनी चाहिये।

दीनजी – आगे, होना क्या ? [छंगाणी साहब की तरफ़ देखते हुए, मेम साहब शब्द पर ज़ोर देते हुए कहते हैं] मेरे मेम साहब का तबादला हो जाता है, जोधपुर। और मुझे करना पड़ता है आप लोगों के साथ, यह रोज़ का आना-जाना। सुनो एक दिन यह हुआ, के...

सेणी भा’सा – कहिये, आगे क्या हुआ ?

दीनजी भा’सा – एक दिन मैं पाली रुक गया, और वह बिल्ला मुझे कहीं दिखायी नहीं दिया। तब मैंने अकरमजी से, उस बिल्ले के बारे में पूछा..तब अकरमजी माथुर साहब की प्रकृति बताते हुए,

इस तरह कहने लगे के "भा'सा, आपके जाने के बाद एक दिन वह बिल्ला किसी से जंग लड़कर आया था। उसका पूरा बदन रक्त से लथ-पथ था, उसके बदन पर कई घाव थे..."
रशीद भाई – ख़ुदा रहम, बेचारे बिल्ले की यह बुरी हालत ?
दीनजी – अकरमजी ने आगे यह कहा, के 'बिल्ले ने यह सोचा होगा, के 'माथुर साहब, भा'सा के मिलने वाले हैं। जो उस पर रहम खाकर, उसके बदन पर दवाई लगा देंगे ? मगर..?'
रशीद भाई – मगर क्या ? क्या हुआ, उस बिल्ले का ? क्या माथुर साहब ने दवाई लगायी या नहीं ? आगे कहिये, जनाब।
दीनजी – वह भोला जानवर समझ न सका, के 'इस ख़िलक़त में स्वार्थ और दिखावा बहुत बढ़ गया है।' माथुर साहब ने, उस खून से लथ-पथ बिल्ले को देखा। फिर लकड़ी लेकर, बतूलिये की तरह उस बिल्ले को पीटने..उसके, पीछे दौड़े। उसके बाद, वह मासूम बिल्ला इन सरकारी क्वाटरों में कभी दिखायी नहीं दिया।
रशीद भाई – माथुर साहब ठहरे, स्वार्थी इंसान। वे भा'सा के बगीचे से चाहते थे, मुफ़्त में पुष्प। जब तक पुष्प मिलते रहे, तब-तक भा'सा की तारीफ़ करते रहे। और अपने गमलों में, पौधे मुफ़्त में लगवाते रहे। और उस वक़्त, करते रहे इस बिल्ले की तारीफ़।
रतनजी – भा'सा के जोधपुर जाने के पश्चात, उनकी बनावटी प्रीत हो गयी ख़त्म। और बाद में लोगों से कहते रहे, के "भा'सा तो पागल थे, जिन्होंने ठौड़-ठौड़ पौधे लगाकर जंगल बना डाला।" **बस इस ख़िलक़त में यह प्रेम, रेलगाड़ी के मुसाफ़िरों की भांति रहता है।**
चंदूसा – ठौड़-ठौड़ के इंसान यहां मिलते हैं, जब वक़्त आता है..तब, बिछुड़ जाते हैं..! यह तो एक ऐसी सराय है, जनाब। जहां लोग आते रहते हैं, और जाते रहते हैं।
रशीद भाई – फिर, यह ख़िलक़त है क्या ? ख़ुदा की बरक़त है। यहां जीवों का जन्म होता है, और यहां अंतिम सांस लेकर वे इस ख़िलक़त को छोड़ देते हैं। बस पीछे उनकी यादे शेष रह जाती है, उनके प्रेम और मोहब्बत की। इसी से यह, ख़िलक़त चलता रहता है।
चंदूसा – वो बेचारा बिल्ला, इस मोहब्बत का प्यासा था..ईश्वर का पैदा किया हुआ यह अबोल जीव, इन इंसानों के लोभ, स्वार्थ, और क्रूरता के आगे..छोड़ देता है, इस ख़िलक़त को। मगर, इंसानों का क्या ? उन्होंने कोई सीख नहीं ली, आख़िर यह मोहब्बत है क्या ?
[सन्नाटा छा जाता है, इस सन्नाटें को तोड़ते हुए रतनजी कहते है..]
रतनजी – यार, ज़िंदगी का सफ़र गाड़ी के मुसाफिर की तरह है। आज़ मिले और कल बिछुड़ गये।
ओमजी – [बैग उठाते हुए, कहते हैं] – यह तबादला होने का काग़ज़, आख़िर है क्या ? बाबा के हुक्म से ही यह काग़ज़ मिलता है, फिर क्या ? यह उठाया बिस्तर, और यह चल दिये..! उस ऊपर वाले के ऊपर, किसी का ज़ोर नहीं चलता है..जनाब।
छंगाणी साहब – जितना लिखा है, गाड़ी का अन्न-जल। तब-तक सफ़र हमें करना होगा..फिर क्या ? लिखा अन्न-जल पूरा होते ही, यह रोज़ का आना-जाना..स्वत: समाप्त हो जायेगा। [मोहनजी से

कहते हैं] जनाबे आली मोहनजी, क्या यह सच है ?
[मोहनजी सुनकर, हो जाते हैं, उदास। उनका मुंह उतर जाता है, उनकी आँखों के सामने वे सारे मंज़र आते हैं..कैसे वे साथियों के साथ प्रेम, झगड़े व टोचराई करते रहे ? ये सारे वाकये याद आते ही मोहनजी का दिल बिछोव के दर्द से भर जाता है, अब उनके लिए "अब यह ग़म, नाक़ाबिले बर्दाश्त होता जा रहा है।" इस ग़म को कम करने के लिये, मोहनजी ज़ेब से मिराज़ ज़र्दे की पुड़िया निकालते हैं। फिर उस तैयार सुर्ती को हथेली में लेकर, अपने होठ के नीचे दबाते हैं। तभी डफली बजाता हुआ मंगता, केबीन में दाख़िल होता है। रामसा पीर समाधि लेने समाधिस्थल में प्रवेश करने जा रहे थे, तब जो गीत गाया जा रहा था..वह गीत, अब वह मंगता गाता जा रहा है।]
गीत गाने वाला मंगता – [अवरुद्ध गले से, गीत गाता है] – **मैं तौ चाल्या म्होरे गाम, था सगळा नै राम राम। कुण हिन्दू नै कुण मुसलमान, सगळा जीव है एक समान। ईश्वर अल्लाह तेरो नांम, सबको सुमति दे भगवान।**
[यह गीत सुनते ही, मोहनजी बहुत ग़मगीन हो जाते हैं, कभी वे बेचारे देखते हैं दीनजी भा'सा का चेहरा..और आता है ख़याल, कैसे अरोग रहे थे दीनजी भा'सा का लाया बालगुपाल का प्रसाद ? कभी वे देखते हैं, छंगाणी साहब का चेहरा..और दिल में ख़याल आता है, कैसे उन्होंने छंगाणी साहब को खिलाया था उनके सर पर..ससुराल से आये, जूते का प्रसाद ? ऐसी कई बीती घटनाएं उनके ख़यालों में आने लगती है, और उनको ग़म में डालती जा रही है। **अब मोहनजी को मालुम हो जाता है, अब साथियों से विदा लेने का वह वक़्त आ गया है। उनको एक ही फ़िक्र सताती जा रही है, अब उनके साथी...वापस, कब मिलेंगे ?** ग़मगीन मोहनजी, अब अवरुद्ध गले से कहते हैं..]
मोहनजी – [अवरुद्ध गले से कहते हैं] – दीनजी भा'सा, अब मेरा अन्न-जल उठ गया है। खूब खाया, आपका लाया हुआ 'बिदामों वाला बालगुपाल का प्रसाद।' अब बाबा का हुक्म मिल गया, [गीत गाते हुए, कहते हैं] 'मैं तौ चाल्या म्होरे गाम, था सगळा नै राम राम।' **रामसा पीर, आप सबकी दिल-ए-ख्वाहिश पूरी करें..बाबा भली करे।**
[इतना कहकर, मोहनजी सबको हाथ जोड़ते हैं। फिर, वे सबसे विदाई लेते हैं। तभी गाड़ी का इंजन ज़ोर से सीटी देता है, गाड़ी की रफ़्तार धीमी हो जाती है। अज तो सभी का भाग्य अच्छा है, क्योंकि गाड़ी प्लेटफोर्म नंबर एक पर आकर रुक जाती है। ख़ुदा के मेहर से, उतरीय पुल चढ़ने की आज़ कोई ज़रूरत नहीं। उधर प्लेटफोर्म एक पर मोहनजी के स्वागत-सत्कार में, बैंड-बाजे बज रहे हैं। सवाई सिंहजी का रसाला, अड़ीजंट खड़ा है। जन-समुदाय और विशिष्ठ जन, मालाएं लिए हुए खड़े हैं। वे अपनी आंखें मोहनजी के दीदार पाने के लिए, इधर-उधर घुमाते जा रहे हैं। रेलवे मिनिस्टर साहब के ख़ास प्रतिनिधि जन-प्रतिनिधियों से घिरे हुए, मोहनजी का इंतज़ार कर रहे हैं। अब अपने बैग थामे मोहनजी की टीम, गाड़ी से उतरती है। उतरते ही, मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी एक साथ रामसा पीर का जयकारा लगाती हैं।]

मोहनजी की चांडाल-चौकड़ी – [एक साथ, जयकारा लगाती है] – जय बाबा री।
प्लेटफोर्म पर खड़ा जन समुदाय एक साथ जयकारा लगाता हुआ, मोहनजी की तरफ़ बढ़ता है।]
सभी – [एक साथ कहते हैं] – **बाबा भली करे।**
जन समुदाय – [ज़ोर से जयकारा लगाता है] - **जय बाबा री सा।**
[मंच पर अंधेरा छा जाता है।]

(समाप्त)

जय बाबा री सा। बाबा भली करे।

पाठकों, मेरी लिखी गयी पुस्तक "यह चांडाल-चौकड़ी, बड़ी अलाम है" ने आपका भरपूर मनोरंजन किया होगा। अब आपसे निवेदन है, आप मेरे ई मेल dineshchandrapurohit2@gmail.com और dineshchandrapurohit2018@gmail.com पर अपनी राय भेजकर बताएं कि, आपको यह पुस्तक कैसी लगी ?

आपके ख़तों की इंतिज़ार में

दिनेश चन्द्र पुरोहित